सिर्फ़
पाँच मिनट का मद्रसा
क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में
(इस्लामी महीनों की तरतीब पर)
इस्लामी तारीख़
एक फ़र्ज़ के बारे में
एक सुन्नत के बारे में
एक अहम अमल की फ़ज़ीलत
एक गुनाह के बारे में
दुनिया के बारे में
आख़िरत के बारे में

بسم اللہ الرحمن الرحیم

सिर्फ़
पाँच मिनट का मद्रसा

(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

پانچواں ایڈیشن

ماہِ شوال المکرم ۱۴۳۳ھ مطابق ماہِ ستمبر ۲۰۱۲ء

Compiler	مرتب
AHEM Charitable Trust	اہم چیریٹیبل ٹرسٹ

Contact : Idara-e-DEENIYAT, Opp. Maharashtra College, Bellasis Road, Mumbai Central, Mumbai - 4000 08
Tel. : 022 - 23051111 • Fax : 022 - 23051144
Website : www.deeniyat.com • E-mail : info@deeniyat.com

पेश लफ़्ज़

दीने इस्लाम ज़िन्दगी गुज़ारने का एक कामिल व मुकम्मल दस्तूर है । जिस में तमाम इन्सानों के लिए ज़िन्दगी के हर मोड़ पर मुकम्मल रहनुमाई मौजूद है, नीज़ दीन बहुत आसान है और इस के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारना भी आसान है , इसी में दोनों जहां की कामयाबी का राज़ छुपा हुआ है, इस के बग़ैर हमें न दुनिया में कामयाबी मिल सकती है और न आख़िरत में । इस लिए दीन को मज़बूती से पकड़े रहना और उस पर अमल करना इन्तेहाई ज़रूरी है। यही चीज़ हमें गुमराही और शैतानी रास्तों पर चलने से बचा कर खैर और भलाई पर बाकी रख सकती है । हज़रत नबीए करीम ﷺ ने हदीसे पाक में हमें इसी बात की तालीम फर्माई है, चुनान्चे इर्शाद फ़र्माया : मैं तुम्हारे दर्मियान दो चीज़ें छोड़ कर जा रहा हूँ, जब तक तुम उन को मज़बूती से थामे रहोगे गुमराह न होगे : (१) किताबुल्लाह (क़ुर्आने करीम) (२) अल्लाह के रसूल ﷺ की सुन्नत। [मुअत्ता इमाम मालिक :१३९५ ,अन उमर बिन खत्ताब ﷺ]

उम्मते मुस्लिमा को अल्लाह तआला की किताब और रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत से करीब करने की गर्ज़ से यह किताब **"सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा, क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में"** के नाम से मुरत्तब की गई है, जिस में दीन के पाँच अहेम शोअ्बों (ईमानियात, इबादात, मुआमलात, मुआशरत, और अख्लाकियात) से मुतअल्लिक बातों को क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में दस अनावीन के तहत जमा किया गया है । इन बातों को जमा करने में इस बात का खास लिहाज़ रखा गया है के मुख्तसर वक्त में उम्मत के सामने दीने इस्लाम की अहेम और ज़रुरी बातें आजाएँ, ताके उम्मत में दीन का शुऊर बेदार हो, इस को सीखने और इस पर अमल करने का शौक व रगबत पैदा हो, नीज़ उम्मत जहालत व गुमराही से छुटकारा पाकर इल्म की दौलत से माला माल हो और आखिरत की तरफ मुतवज्जेह हो कर उस की तय्यारी की फिक्र कर सके।

इस किताब को इस्लामी महीनों और दिनों के एतबार से तय्यार किया गया है और मख्सूस महीनों और दिनों के फ़ज़ाइल वग़ैरह को पहले ही ज़िक्र किया गया है, ताके इन के मुतअल्लिक पहले से मालूमात हासिल हो जाए और फिर इस के मुताबिक इस पर अमल कर सकें, लिहाज़ा गुज़ारिश है के इस किताब को इन महीनों और दिनों के एतबार से पढ़ा जाए । इस को हर मस्जिद में किसी भी फर्ज़ नमाज़ के बाद, स्कूलों और कॉलेजों में असम्बली के दौरान, मदारिस और घरों में भी पढ़ा जाए ताके ज़ियादा से ज़ियादा लोग फायदा उठा सकें ।

नीज़ किताब से इस्तिफादे को आसान करने की गर्ज़ से किताब के आखिर में हर उन्वान के तहत आने वाले मज़ामीन की फहरिस्त दी गई है जो अनावीन की तरतीब पर ही है ।

अल्लाह तआला से दुआ है के तमाम लोगों को दीन पर चलने और उस के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफीक अता फर्माए और हमारी कोशिश को क़बूल फर्मा कर इस किताब को उम्मत के हक में नाफेअ बनाए और हमारे लिए ज़खीर-ए-आख़िरत बनाए ।(आमीन)

किताब में बयान किए गए दस अनावीन का मुख्तसर तआरुफ

१ इस्लामी तारीख इस उन्वान के तहत इस जिल्द में अंबियाए किराम की ज़िन्दगी के हालात को बयान किया गया है ताके मालूम हो के उन हज़रातने दीन की तबलीग व इशाअत और लोगों तक अल्लाह तआला के पैगाम को पहुंचाने मैं कैसी कैसी कुर्बानियाँ दीं हैं और इस राह मैं पेश आने वाले हालात और तकलीफों को बरदाश्त कर के किस कदर सबर व शुक्र का मुज़ाहेरा किया है। खास तौर पर नबी आखिरुज़्ज़मा ﷺ की मुबारक ज़िन्दगी को तफसील से बयान किया गया है, कियों के आप की सीरते तय्यिबा पूरी इन्सानियत के लिए काबिले तक्लीद नमुना है।

२ अल्लाह की कुदरत /हुज़ूर ﷺ का मुअजिज़ा अल्लाह की कुदरत से कायनात के खालिक व मालिक की मखलूकात और उन की खुसूसियात में गौर व फिक्र का जज़बा पैदा होगा और उस की बेमिसाल कारीगरी को सुन कर ईमान में ताज़गी पैदा होगी । साथ ही आप ﷺ के मुअजिज़ात का ज़िक्र किया गया है, इस को पढ कर अपने बलंद मर्तबा पैगम्बर ﷺ की अज़मत व बुज़ुर्गी का एहसास होगा और हमारी ईमानी कैफियत में इज़ाफा होगा ।

३ एक फर्ज़ के बारे में फर्ज़ और वाजिब की अहेमियत व ज़रुरत के पेशे नज़र इस उनवान के तहत फराइज़ व वाजिबात और इन के मुतअल्लिक ज़रुरी बातों का ज़िक्र किया गया है, जिस पर अमल करना हर मुसलमान के लिए निहायत ज़रुरी है ।

४ एक सुन्नत के बारे में इस उनवान के तहत हुज़ूर ﷺ की ज़िन्दगी के आमाल और कुर्आन व हदीस से साबित शुदा दुआओं का ज़िक्र किया गया है, ताके इन्सान अपनी ज़िन्दगी के हर लम्हे को हुज़ूर ﷺ के तरीकों के मुताबिक गुज़ार सके ।

५ एक अहेम अमल की फज़ीलत इस उनवान के तहत फराइज़ व वाजिबात के साथ दीगर आमाल व अफआल पर उम्मत को खड़ा करने के लिए इन के फज़ाइल और इन पर अल्लाह तआला के इनामात का तज़किरा किया गया है ।ताके अमल का शौक व रगबत पैदा हो।

६ एक गुनाह के बारे में इस उनवान के तहत शरीअत के मना करदा आमाल व अफआल और इन के करने पर सज़ा व अज़ाब को बयान किया गया है, ताके इन्सान इस से दूर रह कर ज़िन्दगी गुज़ारे और दुनिया व आख़िरत की ज़िल्लत व रुस्वाई से बच सके ।

७ दुनिया के बारे में इस उन्वान के तहत कुर्आनी आयात और हुज़ूर ﷺ के कौल व अमल की रौश्नी में दुनिया और दुनियावी चीज़ों की हकीकत और उस से अलग थलग रह कर ज़िन्दगी गुज़ारने की रगबत दिलाई गई है , ताके इन्सान दुनिया में मशगूल हो कर दीन व शरीअत से गाफिल न हो जाए।

८ आखिरत के बारे में इस उन्वान के तहत मरने के बाद की ज़िन्दगी के हालात, दुनिया में किए हुए आमाल का जज़ा व सज़ा और उन की सूरतों का ज़िक्र किया गया है, ताके इन्सान इस को सामने रख कर आखिरत की तय्यारी कर सके ।

९ कुर्आन/तिब्बे नब्वी से इलाज इस उन्वान के तहत मुख़्तलिफ बीमारियों के बारे में तिब्बे नब्वी से इलाज और कुर्आनी आयात की खुसूसियात को बयान किया गया है। इस से जहाँ दूसरे फायदे होंगे, वहीं इस्लाम के मुतअल्लिक मुकम्मल दस्तूरे ज़िन्दगी और कामिल निज़ामे हयात होने का यक़ीन भी पैदा होगा।

१० कुर्आन की नसीहत/नबी ﷺ की नसीहत दीन मुकम्मल खैर ख्वाही का नाम है, इसी मुनासबत से इस उन्वान के तहत कुर्आन व हदीस की जामेअ् नसीहतों को बयान किया गया है।

इस किताब को पढ़ने का तरीक़ा

इस किताब को पढते वक्त मन्दरजा ज़ैल बातों को मल्हूज़ रखें :

मुनासिब है के तालीम करने से पहले एक मर्तबा ज़रूर मुताला कर लें।

खड़े हो कर पढ़ना बेहतर है।

मुम्किन हो तो माइक पर पढ़ें।

''बिस्मील्लाहिर्रहमानिर्रहीम'' पढ कर तालीम शुरू करें।

रोज़ाना शुरू में ''सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा कुआर्न व हदीस की रौशनी में'' ज़रूर पढ़ें।

उस दिन की इस्लामी तारीख ज़रूर पढ़ें जैसे : १२ रबीउल अव्वल।

अनावीन के शुरू में दिये हुए नंबर ज़रूर पढ़ें जैसे : नम्बर एक।

रोज़ाना दसों मज़ामीन पढ़ें।

एक से ले कर दस तक नंबरात तरतीबवार पढ़ें।

मोज़ू और उस के तहत ज़ैली उन्वान को पढ़ने में ज़रा फ़स्ल रखें।

इस तरह पढ़ें । बिस्मील्लाहिर्रहमानिर्रहीम..... सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा कुआर्न व हदीस की रौशनी में....१२ रबीउल अव्वल....नंबर एक....इस्लामी तारीख....हज़रत मोहम्मद ﷺ.........फिर नंबर २.....हुज़ूर ﷺ का मुअजिज़ा.....

लहजे को हस्बे ज़रूरत व मज़मून बनाने की कोशिश करें।

आखिर में अल्लाह तआला से अमल की तौफीक की दुआ माँग कर, इख्तितामे मज्लिस की दुआ पढ कर खत्म करें।

मुहर्रमुल
हराम

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१) मुहर्रमुल हराम

नंबर (१): इस्लामी तारीख — अल्लाह तआला ने क़लम को पैदा किया

अल्लाह तआला हमेशा से है और हमेशा रहेगा , हर चीज़ को अल्लाह तआला ही ने पैदा किया और एक दिन उसी के हुक्म से सारी काइनात खतम हो जाएगी। कुर्आने पाक में अल्लाह तआला फरमाता है के हर चीज खतम हो जाएगी और सिर्फ आप के इज़्ज़त व बुज़ुर्गी वाले रब की ज़ात बाक़ी रहेगी।[सूर-ए-रहमान २६ ता २७] हज़रत उबादा बिन सामित ॐ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "(इस दुनया की तमाम चीज़ों में) सब से पहले अल्लाह तआला ने क़लम को पैदा फ़र्माया और उसे लिखने का हुक्म दिया, तो उस ने अरज़ किया : ऐ मेरे रब! मैं क्या लिखूँ ? अल्लाह तआला ने उसे क़यामत तक की पूरी काइनात की तक़्दीर लिखने का हुक्म दिया।"[अबू दाऊद : ४७००] फिर उस ने उस वक़्त से क़यामत तक होने वाली तमाम चीज़ों को लिख दिया। एक दूसरी हदीस में रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह तआला ने मख़्लूक़ की तक़्दीर को ज़मीन व आसमान की पैदाइश से पचास हज़ार साल पहले लिखा है।" [मुस्लिम : ६७४८] उस वक़्त से क़यामत तक दुनया में जो कुछ होता है या होगा, क़लम उन चीज़ों को बहुक्मे ख़ुदावन्दी पहले ही लिख चुका है।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — आस्मान

अल्लाह तआला ने हमारे उपर मज़्बूत आस्मान बनाया, रौशनी के लिये उस में चाँद, सूरज और चमकदार सितारे बनाए और उसीने बग़ैर सहारे के उस को ज़मीन पर गिरने से रोक रखा है, जब के इनसान हलकी सी चीज़ को भी बग़ैर सहारे के रोक नहीं सकता, मगर अल्लाह तआला ने हज़ारों साल से आस्मान को बग़ैर सुतून के रोक कर अपनी ज़बरददस्त क़ुदरत का इज़्हार किया और लोगों को उस में ग़ौर व फिक्र करने की दावत देते हुवे फ़र्माया : (क्या वह नहीं देखते के) आस्मान को (बग़ैर सुतून के) कैसे बुलन्द किया गया है ? [सूर-ए-ग़ाशिया : १८]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — चंद बातों पर ईमान लाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तक कोई बन्दा इन चार बातों पर ईमान न लाए, तो वह मोमिन नहीं हो सकता। (१) इस बात की गवाही देके अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं। (२) (इस की भी गवाही देके) मैं अल्लाह का रसूल हूँ उस ने मुझे हक़ के साथ भेजा है। (३) मरने और फिर दोबारा ज़िन्दा होने का यक़ीन रखे। (४) तक़्दीर पर ईमान लाए। [तिर्मिज़ी : २१४५, अन अली ॐ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — सुन्नत पर अमल करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने मेरी सुन्नत से मुहब्बत की (यानी उस पर अमल किया), तो उस ने मुझ से मुहब्बत की और जिस ने मुझ से मुहब्बत की वह जन्नत में मेरे साथ होगा।" [तिर्मिज़ी : २६७८, अन अनस ॐ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	सुबह के वक़्त दुआ पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स सुबह के वक़्त यह पढ़ेगा शाम तक वह शैतान से महफ़ूज़ रहेगा :((أَعُوْذُ بِاللهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ)) तर्जमा : मैं शैताने रजीम से अल्लाह तआला की पनाह चाहता हूँ जो सुनने वाला और जानने वाला है। [अमलुलयौम वल्लैलह, लि इब्ने सुन्नी : ४९]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	पड़ोसी को सताना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "वह आदमी जन्नत में दाखिल न हो सकेगा, जिस के ज़ुल्म व सितम से उस के पड़ोसी महफूज़ न हों।" [मुस्लिम: १७२, अन अबी हुरैरह رضی اللہ عنہ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	हलाल और हराम को समझो

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अन्क़रीब एक ज़माना ऐसा आने वाला है, जिस में आदमी को यह भी परवाह न रहेगी के माल हराम है या हलाल।" [बुखारी : २०५९, अन अबी हुरैरह رضی اللہ عنہ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत में मुजरिमों की हालत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "आमाल का रजिस्टर सामने रख दिया जाएगा, तो उस वक़्त तुम मुजरिमों को देखोगे के वह लोग उन (आमाल नामों) में लिखी हुई चीज़ों से डर रहे होंगे और अफसोस से कह रहे होंगे : हाए हमारी कम बख़्ती ! यह कैसा दफ्तर और रजिस्टर है? जिस ने न कोई छोटा अमल छोड़ा है और न बड़ा अमल, सब ही इस में महफ़ूज़ है।" [सूर-ए- कहफ : ४९]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	इलाज तक़दीर के खिलाफ़ नहीं

हज़रत अबू खिज़ामा رضی اللہ عنہ बयान करते हैं के एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह के रसूल ! हम लोग जो झाड़ फूंक और दवाओं का इस्तेमाल करते हैं और परहेज़ करते हैं, तो इस से तक़्दीरे इलाही की मुख़ालफत तो नहीं होती ? रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "यह भी तक़्दीरे इलाही है।" [तिर्मिज़ी : २१४८]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माया है :" यह कलाम बड़े रहमान और निहायत रहम करने वाले की तरफ से नाज़िल किया गया है, यह एक ऐसी किताब है जिस की आयतें साफ साफ बयान की गई हैं, (ऐसा कुर्आन है), जो अरबी (ज़बान) में है, ऐसे लोगों के लिये है जो समझदार हैं, (यह कुर्आन) ख़ूशख़बरी देने वाला (अज़ाब से) डराने वाला है।" [सूर-ए- हाम मीम सज्दा: २ ता ४]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

② मुहर्रमुल हराम

नंबर ①: इस्लामी तारीख़ | ज़मीन व आस्मान की पैदाइश

अल्लाह तआला ने पूरी काएनात और उस की तमाम चीज़ों को बेमिसाल पैदा किया है। कुर्आने करीम में ज़मीन व आस्मान की पैदाइश का तज़केरा कई जगह आया है और बाज़ जगह सराहत के साथ मज़कूर है के किस को कितने दिनों में पैदा किया है। उन तमाम आयतों को सामने रखने के बाद पता चलता है के पहले ज़मीन का माद्दा तय्यार किया गया और वह अभी इसी हालत में था के आस्मान के माद्दे को धुएं की शक्ल में बनाया गया, फिर ज़मीन को मौजूदा शक्ल व सूरत पर फैलाया गया और साथ ही उस की तमाम चीज़ें पैदा की गईं, उस के बाद सातों आस्मानों को बनाया गया। इस तरह ज़मीन व आस्मान और उन के दर्मियान की चीज़ें वुजूद में आईं। यह सारा काम कुल छः दिन में मुकम्मल हो गया। खुद अल्लाह तआला कुर्आन में फर्माता है : "हम ने ही ज़मीन व आस्मान और उन के दर्मियान की चीज़ों को छः दिन में पैदा किया और हमें उन की पैदाइश में थकन का कोई एहसास न हुआ।"

[सूर-ए-क़ाफ : ३८]

नंबर ②: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा | सितारों का झुक जाना

हज़रत उस्मान बिन अबिलआस ؓ की वालिदा फर्माती हैं के मैं आप ﷺ की विलादत के वक़्त हाज़िर थी, जब आप ﷺ पैदा हुए तो मैं ने देखा के सारा घर नूर से भर गया, सितारे क़रीब आगए और लटक आए थे , यहाँ तक के मुझे गुमान होने लगा के अब यह मुझ पर गिर पड़ेंगे।

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : २९]

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में | नमाज़ के लिये पाकी हासिल करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ पढ़ने का इरादा करो (अगर तुम बावुज़ू न हो) तो (वुज़ू करने के लिये) अपने चेहरे को धोओ और अपने हाथों को कोहनियों समेत (धोओ) और अपने सरों पर (भीगा हाथ) फेरो और अपने पैरों को भी टख्नों समेत (धोओ) और अगर तुम जनाबत की हालत में हो, तो (नमाज़ से पहले सारा बदन) पाक कर लो।"

[सूर-ए-माइदा : ६]

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में | दुआ करना एक इबादत है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "मुझ से दुआ माँगो मैं तुम्हारी दुआ कुबूल करूँगा।"

[सूर-ए- मोमिन : ६०]

और रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "((الدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةُ)) दुआ ही इबादत है।"

[तिर्मिज़ी : ३३७२, अन नुअ्मान बिन बशीर ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | नुक़सान से बचने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स इस दुआ को सुबह व शाम तीन मर्तबा पढ़ लिया करे, उसे कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा : ((بِسْمِ اللهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَيْئٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ)) तर्जमा : शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से, जिस के नाम की बरकत से ज़मीन व आस्मान की कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुँचा सकती, वह सुनने वाला और जानने वाला है।

[तिर्मिज़ी : ३३८८, अन उस्मान बिन अफ्फान ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | सूद खाना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो लोग सूद खाते हैं, तो (कल क़यामत के दिन) क़ब्रों से उस शख़्स की तरह उठेंगे जैसे किसी को जिन भूत ने लिपट कर पागल बना दिया हो।"

[सूर-ए-बक़रह : २७५]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया पर राज़ी होना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "क्या तुम लोग आखिरत की ज़िन्दगी के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी होगए ? दुनिया का माल व मताअ तो आखिरत के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं" (इस लिये किसी इन्सान के लिये मुनासिब नहीं है के वह आखिरत को भूल कर ज़िन्दगी गुज़ारे या दुनिया के थोड़े से साज़ो सामान की खातिर अपनी आखिरत को बरबाद करे)। [सूर-ए-तौबा : ३८]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | मुर्दे की हालत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब मुर्दे को लोग उठा कर चलते हैं, तो अगर वह नेक होता है, तो वह कहता है : मुझे जल्दी आगे बढ़ाओ और अगर वह बुरा होता है, तो वह कहता है: अरे मेरी हलाकत आई, तुम कहां लेजा रहे हो ? उस की आवाज़ को जिन व इन्स के सिवा अल्लाह तआला की तमाम मख्लूक़ात सुनती है; अगर उस की आवाज़ इन्सान सुन ले, तो बेहोश हो जाए।"

[बुखारी : १३१४, अन अबी सईद खुदरी ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | हर मर्ज़ का इलाज

हज़रत उस्मान गनी ﷺ से मर्वी है के मैं एक मर्तबा बीमार हुआ, तो रसूलुल्लाह ﷺ इयादत के लिए तशरीफ़ लाए और यह दुआ पढ़ कर दम किया और जाते हुए फ़र्माया : ऐ उस्मान ! यही पढ़ कर दम कर लिया करो। ((بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ، اُعِيْذُكَ بِاللهِ الْاَحَدِ الصَّمَدِ الَّذِىْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ مِنْ شَرِّ مَا تَجِدُ))۔

[इब्ने सुन्नी : ५५३]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "लोगों को दीन सिखाओ और खुश खबरियाँ सुनाओ और दुश्वारियाँ पैदा न करो; और जब तुम में से किसी को गुस्सा आए तो उसे चाहिये के खामोशी इख्तियार करे।"

[मुस्नदे अहमद : २१३७, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(३) मुहर्रमुल हराम

नंबर (१): इस्लामी तारीख — फरिश्ते अल्लाह की मख़्लूक़ हैं

फरिश्ते अल्लाह तआला की मख़्लूक़ हैं, जो नूर से पैदा हुए हैं। वह हमारी नज़रों से ग़ाएब हैं। कभी अल्लाह की नाफर्मानी नहीं करते। अल्लाह तआला ने उन को मुख़्तलिफ कामों पर लगा रखा है, वह हर वक़्त उन्हीं कामों में लगे रहते हैं। फरिश्ते बेशुमार हैं, उन की सही तादाद अल्लाह तआला ही को मालूम है, उन में चार फरिश्ते मशहूर व मुक़र्रब हैं (१) हज़रत जिब्राईल ﷺ जो अल्लाह की किताबें और अहकामात पैगम्बरों के पास लाते थे। (२) हज़रत इसराफील ﷺ जो क़यामत में अल्लाह तआला के हुक्म से सूर फूँकेंगे। (३) हज़रत मीकाईल ﷺ जो बारिश का इन्तेज़ाम करने और मख़्लूक़ को रोज़ी पहुँचाने पर मुक़र्रर हैं। (४) हज़रत इज़राईल ﷺ जो मख़्लूक़ की जान निकालने पर मुक़र्रर हैं। इसी तरह इन के अलावा भी बहुत सारे फरिश्ते हैं, जो अल्लाह तआला की हम्द व सना और उस की पाकी बयान करने में लगे रहते हैं।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — दूध

अल्लाह तआला ने लोगों की ग़िज़ा के लिये दूध का इन्तेज़ाम फर्माया और उस के लिये गाय, भैंस, ऊँट, बकरी जैसे जानवर पैदा किये, जो अपने बच्चों को भी दूध पिलाते हैं और इन्सानों के लिये दूध और ग़िज़ाई ज़रूरत को भी पूरा करते हैं। ग़ौर फ़रमाएं ! तमाम चौपाए एक ही तरह की घास खाते हैं, मगर उन जानवरों के गोबर और ख़ून के दर्मियान से साफ सुथरा और ग़िज़ा से भरपूर सफेद दूध कौन निकालता है? यक़ीनन इन्सानों के लिये लज़ीज़ और पाक साफ दूध का इन्तेज़ाम करना अल्लाह की कुदरत और उस की अजीब कारीगरी है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — गुस्ल में पूरे बदन पर पानी बहाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "(जिस्म) के हर बाल के नीचे नापाकी होती है, लिहाज़ा तुम बालों को धोओ और बदन को अच्छी तरह साफ करो।" [तिर्मिज़ी : १०६, अन अबी हुरैरह ؓ]

फायदा : गुस्ल में पूरे बदन पर पानी का पहुंचाना फर्ज़ है। इस लिये ख़ुसूसन सर के बालों, दाढ़ी वग़ैरह की जड़ में पानी पहुँचाना चाहिये और औरतों को अपने बाल खोल कर गुस्ल करना चाहिये, ताके पानी बालों की जड़ों तक पहुँच जाए।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — वुज़ू में दाढ़ी का खिलाल करना

हज़रत अनस ؓ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ जब वुज़ू फ़र्माते, तो हथेली में पानी लेते, उसे

ठोड़ी के नीचे दाखिल करते हुए (उंगलियों से) दाढ़ी का खिलाल करते और फर्माते : इसी तरह मेरे रब ने हुक्म दिया।

[अबू दाऊद : १४५]

नंबर ५ : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — दो महबूब कलिमे

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "दो कलिमे ऐसे हैं जो ज़बान पर बड़े हल्के फुल्के हैं मगर आमाल के तराज़ू में बड़े वज़नी हैं, अल्लाह तआला को बेहद पसन्द हैं, वह दो कलिमे यह हैं : ((سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ، سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ))-

[बुख़ारी : ७५६३, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर ६ : एक गुनाह के बारे में — टख़ने से नीचे कपड़ा पहनना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने अपना तहेबन्द तकब्बुर के तौर पर (ज़मीन पर) घसीटा, तो ऐसे आदमी को दोज़ख़ में रौंदा जाएगा।"

[मुस्नदे अहमद : १७६१२, अन हुबैब अलगिफारी]

नंबर ७ : दुनिया के बारे में — आखिरत के अमल से दुनिया हासिल करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स आखिरत के किसी अमल से दुनिया चाहता है तो उस के चेहरे पर फिटकार होती है, उस का ज़िक्र मिटा दिया जाता है और उस का नाम दोज़ख में लिख दिया जाता है।"

[मुअ्जमे कबीर : २०८५, अन जारूद رضي الله عنه]

नंबर ८ : आखिरत के बारे में — मुसलमानों से जन्नत का वादा

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अल्लाह तआला ने मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों से ऐसे बाग़ों का वादा कर रखा है, जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, यह लोग हमेशा उन बाग़ों में रहेंगे और ऐसे उम्दा मकानों का वादा फर्माया, जो हमेशा रहने वाले बाग़ों में होंगे।" [सूर-ए-तौबा : ७२]

नंबर ९ : तिब्बे नब्वी से इलाज — तीन चीज़ों में शिफा है

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "शिफ़ा तीन चीज़ों में है : शहद पीने में, पछना लगाने में और आग से दागने में।" और मैं अपनी उम्मत को दागने से मना करता हूँ" (लिहाज़ा दाग कर इलाज करने से बचना चाहिए)।

[बुख़ारी : ५६८०]

नंबर १० : कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : " ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरते रहो और सीधी सच्ची बात कहा करो अल्लाह तआला तुम्हारे नेक आमाल को क़बूल करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करेगा वह बड़ी कामयाबी को पहुँचेगा।"

[सूर-ए-अहज़ाब : ७० ता ७१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ | जिन्नात की पैदाइश

कुर्आन व हदीस मे जिनों का तज़केरा कसरत से आया है, इन्सानों से पहले ही उन की पैदाइश हो चुकी थी, अल्लाह तआला ने इन को आग से पैदा फ़र्माया, एक तवील ज़माने तक वह ज़मीन में आबाद रहे, फिर उन्होंने फसाद मचाना और खून बहाना शुरू किया, तो अल्लाह तआला ने फरिश्तों के ज़रिये उन्हें समन्दर के जज़ीरों और दूर दराज़ पहाड़ों की तरफ भगा दिया। इबलीस भी जिन्नात में से था लेकिन कसरते इबादत की वजह से फरिश्तों का सरदार बना दिया गया था। लेकिन जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम عليه السلام के सामने सज्दा करने का हुक्म दिया तो उस ने तकब्बुर किया और सज्दा करने से इन्कार कर दिया। चूनान्चे अल्लाह तआला ने धुतकार कर उस को दुनिया में भेज दिया और उस से तमाम नेअ्मतें छीन ली। इस तरह तकब्बुर ने उसे हमेशा के लिये ज़लील व रुस्वा कर दिया। हुज़ूर ﷺ इस दुनिया में इन्सान व जिन्नात दोनों की हिदायत व रहेनुमाई के लिये भेजे गए थे। चुनान्चे अहादीस में जिनों को इस्लाम की दावत देने का ज़िक्र मौजूद है और कुर्आने करीम में जिन्नात की एक जमात के ईमान लाने का भी तज़केरा मौजूद है।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा | आप ﷺ का सीना चाक किया जाना

हज़रत अनस رضي الله عنه फर्माते हैं के (बचपन में) रसूलुल्लाह ﷺ बच्चों के साथ खेल रहे थे, इतने में हज़रत जिब्रईल عليه السلام आए और आप ﷺ को पकड़ कर ज़मीन पर लिटा दिया, फिर आप ﷺ के सीने को चाक करके दिल निकाला और फिर दिल में से खून का एक लोथड़ा निकाला और फर्माया : यह शैतान का हिस्सा है। फिर दिल को सोने की तशतरी में रख कर ज़मज़म के पानी से धोया और फिर दिल को बंद कर के उस की जगह वापस रख दिया, हज़रत अनस رضي الله عنه फर्माते हैं के मैं आप ﷺ के सीने पर उन टाकों का असर भी देखता था। [मुस्लिम : ४१३, अन अनस बिन मालिक رضي الله عنه]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | नमाज़ छोड़ने पर वईद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "नमाज़ का छोड़ना आदमी को कुफ्र से मिला देता है।"

[मुस्लिम :२४६, अन जाबिर رضي الله عنه]

एक दूसरी हदीस में आप ﷺ ने फर्माया : "ईमान और कुफ्र के दर्मियान नमाज़ छोड़ने का फर्क है।"

[इब्ने माजा : १०७८, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | हिदायत के लिये दुआ

अल्लाह तआला से हिदायत तलब करने के लिये इन अलफाज़ में दुआ करनी चाहिये :

﴿اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ﴾

तर्जमा : ऐ अल्लाह हमें सीधे रास्ते की हिदायत फर्मा। [सूर-ए- फातिहा : ५]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | नमाज़ के बाद की तस्बीहात

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स हर नमाज़ के बाद ३३ मर्तबा ((سُبْحَانَ اللّٰهِ)), ३३ मर्तबा ((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ)) ३३ मर्तबा ((اَللّٰهُ أَكْبَرُ)) यह ९९ मर्तबा हुए और ((لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ)) यह मिल कर सौ हुए पढ़ेगा तो उस के गुनाह माफ हो जाएँगे ख़्वाह समन्दर के झाग के बराबर हों।" [मुस्लिम : १३५२, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | इस्लाम के अलावा कोई दीन मक्बूल नहीं

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख़्स इस्लाम के अलावा किसी दूसरे दीन को पसन्द करेगा तो उस का वह दीन हरगिज़ क़बूल न किया जाएगा और वह आख़िरत में नुक़सान उठाने वालों में शामिल होगा।" [सूर-ए- आले इमरान : ८५]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | काफिरों के माल से तअज्जुब न करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम इन (काफिरों) के माल और औलाद से तअज्जुब में मत पड़ना, क्योंकि अल्लाह तआला दुनिया ही की ज़िन्दगी में इन काफिरों को अज़ाब में मुब्तला करना चाहता है और जब उन की जान निकलेगी, तो कुफ्र की हालत में मरेंगे।" [सूर-ए-तौबा : ५५]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | क़ब्र के तीन सवाल

एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मोमिन बन्दा जब क़ब्र में पहुँचता है, तो उस के पास दो फरिश्ते आते हैं और उस को बिठाते हैं फिर उस से पूछते हैं के तेरा रब कौन है? वह कहता है के मेरा रब अल्लाह है। फिर पूछते हैं के तेरा दीन क्या है ? वह कहता है : मेरा दीन इस्लाम है, फिर पूछते हैं : तुम्हारा नबी कौन है? वह कहता है मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ।"

[अबू दाऊद : ४७५३, अन बरा बिन आज़िब ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | खजूर से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "ज़चगी की हालत में तुम अपनी औरतों को तर खजूरें खिलाओ और अगर वह न मिलें, तो सूखी खजूरें खिलाओ।" [मुस्नदे अबी यअ्ला : ४३४, अन अली ؓ]

फायदा : बच्चे की पैदाइश के बाद खजूर खाने से औरत के जिस्म का फ़ासिद ख़ून निकल जाता है और बदन की कम्ज़ोरी ख़त्म हो जाती है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम में से किसी के हाथ से लुक़्मा गिर जाए तो उसे उठाले और साफ करके खाले, शैतान के लिये उसे न छोड़े और खाने के बाद जब तक उंगलियों को न चाट ले हाथ को रूमाल से न पोंछे, इस लिये के मालूम नहीं के किस दाने में बर्कत है।" [मुस्लिम : ५३०१, अन जाबिर ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(५) मुहर्रमुल हराम

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत आदम ﷺ

हज़रत आदम ﷺ वह पहले इन्सान हैं जिन से दुनिया में बसने वाले इन्सानों की इब्तेदा हुई है। अल्लाह तआला ने उन का ख़मीर तय्यार करने से पहले फरिश्तों से कहा : "अन्क़रीब मैं मिट्टी से एक ऐसी मख्लूक़ पैदा करने वाला हूँ जिसे ज़मीन में हमारी खिलाफत का शर्फ हासिल होगा।" चुनान्चे हज़रत आदम ﷺ का ख़मीर मिट्टी से गूंधा गया, फिर अल्लाह तआला ने उस में रूह फूँक दी, तो उसी वक़्त वह ज़िन्दा इन्सान बन गए, उन के सामने फरिश्तों को सज्दा करने का हुक्म दिया, तो तमाम फरिश्ते अल्लाह तआला के हुक्म की इताअत करते हुए सज्दे में गिर गए मगर शैतान ने अपनी बड़ाई और तकब्बुर की वजह से सज्दे से इन्कार कर दिया और कहने लगा :" मैं उस से बेहतर हूँ क्योंकि आप ने मुझे आग से पैदा किया और आदम ﷺ को मिट्टी से पैदा किया है।" इस तरह शैतान अल्लाह के हुक्म को न मान कर हमेशा के लिये अल्लाह की लानत का मुस्तहिक़ बन गया और उसी वक़्त से वह आदम ﷺ और उन की औलाद का दुश्मन बन गया।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — ज़मीन और उस की पैदावार

अल्लाह तआला ने इतनी बड़ी ज़मीन को इन्सानो के बसने के लिये बनाया और उस पर भारी पहाड़ों को खड़ा कर के हिलने से महफ़ूज़ कर दिया, फिर उस पर पेड़ पौदे, जान्दार, मुख्तलिफ क़िस्म के फल फूल, सब्ज़ियाँ और खाने की चीज़ें पैदा फर्माई, ज़मीन पर घर बनाने और उस को खोद कर पानी निकालने के लिये नर्म बना दिया, अल्लाह ही ने इस ज़मीन को हमारे चलने फिरने और ज़रूरतों को पूरा करने के क़ाबिल बनाया, उस में से रंगबिरंगे फल फूल, मुख्तलिफ किस्म की सब्ज़ियाँ, मेवे और गल्ले उगाए। ग़र्ज़ यह के ज़मीन एक है लेकिन अल्लाह तआला की क़ुदरत का करिश्मा है के एक ही ज़मीन से इन्सानों और हैवानों की मुख्तलिफ ज़रूरियात को पूरा किया।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सुबह की नमाज़ अदा करने पर हिफाज़त का ज़िम्मा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने सुबह (यानी फ़ज्र) की नमाज़ अदा की, वह अल्लाह की हिफ़ाज़त में है।"

[मुस्लिम : १४९३, अन जुंदुब बिन अब्दुल्लाह ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — पूरे सर का मसह करना

हज़रत मिक़दाम बिन मादीकरिब ؓ बयान करते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को वुज़ू फर्माते हुए देखा, जब सर के मसह पर पहुँचे, तो अपनी हथेली को सर के अगले हिस्से पर रखा और गुज़ारते हुए गुद्दी तक गए फिर यहाँ से लौटे वहाँ तक जहाँ से शुरू किया था (यानी फिर गुद्दी की तरफ से मसह करते हुए पेशानी की तरफ हाथ को लाए)।

[अबू दाऊद : १२२]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	इस्लाम में बेहतर आमाल

एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से सवाल किया के कौन सा अमल इस्लाम में बेहतर है? रसूलुल्लाह ﷺ ने जवाब में फ़र्माया : "खाना खिलाना और (हर मोमिन को) सलाम करना, चाहे तुम उस को पहेचानते हो या न पहेचानते हो।" [बुख़ारी : ६२३६, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि.]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	गुनाह की वजह से रिज़्क से महरूमी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "बेशक आदमी गुनाहों की वजह से रिज़्क से महरूम कर दिया जाता है।" [मुस्नदे अहमद : २१८८१, अन सौबान रज़ि.]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	हलाल रोज़ी कमाओ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "रोज़ी को दूर न समझो, क्योंकि कोई आदमी उस वक़्त तक नही मर सकता जब तक के जो रोज़ी उस के मुक़द्दर में लिख दी गई है वह उस को न मिल जाए। लिहाज़ा रोज़ी हासिल करने में बेहतर तरीक़ा इख़्तियार करो, हलाल रोज़ी कमाओ और हराम को छोड़ दो।" [मुस्तदरक : २१३४ अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि.]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जहन्नम में हमेशा का अज़ाब

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "बिला शुबा जिन लोगों ने हमारी आयात व अहकाम का इन्कार किया अन्क़रीब हम उन को एक सख़्त आग में दाख़िल करेंगे ; (वहाँ उन की मुसलसल यह हालत होगी के) जब एक दफ़ा उन की खाल जहन्नम में झुलस जाएगी तो हम पहली खाल की जगह फ़ौरन दूसरी नई खाल पैदा कर देंगे ताके यह लोग अज़ाब का मज़ा चखते रहें।" [सूर-ए-निसा : ५६]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बीमारी से बचने की तदबीर

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम्हारे बरतन में मक्खी गिर पड़े, तो उस को पहले पूरी तरह डुबा दो, फिर निकाल कर फेंको, क्योंकि उस के एक पर में शिफ़ा है, तो दूसरे में बीमारी है।" [बुख़ारी : ५७८२, अन अबी हुरैरह रज़ि.]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम लोग अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान ले आओ और उस माल में से (राहे ख़ुदा) में ख़र्च करो, जिस माल में तुम को उस ने दूसरों का क़ाइम मक़ाम बनाया है, जो लोग तुम में से ईमान ले आएँ और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करें तो उन को बड़ा सवाब मिलेगा।" [सूर-ए-हदीद : ७]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुरआन व हदीस की रौशनी में)

६ मुहर्रमुल हराम

नंबर १: इस्लामी तारीख — हज़रत आदम ﷺ का दुनिया में आना

हज़रत आदम ﷺ जन्नत में तन्हा रहते हुए बेचैनी महसूस करने लगे, तो तसल्ली के लिए अल्लाह तआला ने उन की बाईं पसली से हज़रत हव्वा ﷺ को पैदा किया और दोनों को हुक्म दिया के इस दरख्त के अलावा जन्नत की तमाम नेअ्मतों का इस्तेमाल करो। शैतान ने वस्वसा डाल कर बहकाया के इस दरख्त की खुसूसियत यह है के इस का फल खाने के बाद तुम हमेशा जन्नत में रहोगे, चुनान्चे शैतान के धोके में आकर उन्होने इस दरख्त का फल खा लिया, अल्लाह तआला ने इस ग़लती की वजह से जन्नत का लिबास उतार कर दोनों को दुनिया में भेज दिया। हज़रत आदम ﷺ अपनी ग़लती पर बहुत शर्मिन्दा हुए और एक मुद्दत तक तौबा व इस्तिग़फार करते हुए अल्लाह के सामने रोते रहे, फिर अल्लाह तआला ने उन की तौबा क़ुबूल फ़र्माई। उस के बाद दुनिया में हज़रत आदम ﷺ और हव्वा ﷺ से नस्ले इन्सानी का सिलसिला शुरू हुआ।

नंबर २: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — चाँद के दो टुकड़े होना

कुफ्फारे मक्का ने रसूलुल्लाह ﷺ से यह दरख्वास्त की के (अपनी नुबुव्वत की) कोई निशानी बतलाइये? तो आप ﷺ ने (चाँद की तरफ उंगली से इशारा कर के) चाँद का दो टुकड़े हो जाना दिखलाया।

[बुखारी : ३६३७, मुस्लिम : ७०७६ अन अनस ﷺ]

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — हज की फ़र्ज़ियत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया :" ऐ लोगो ! तुम पर हज फ़र्ज़ कर दिया गया है , लिहाज़ा उस को अदा करो।"

[मुस्लिम : ३२५७, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर ४: एक सुन्नत के बारे में — मेज़बान को दुआ देना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र ﷺ ने फर्माया : "रसूलुल्लाह ﷺ हमारे वालिद के पास मेहमान हुए, तो हम ने आप ﷺ के लिये खाना तय्यार किया। जब आप ﷺ वापस हुए तो हज़रत बुस्र ﷺ के वालिद ने हुज़ूर ﷺ की सवारी की लगाम पकड़ कर दुआ की दरख्वास्त की। आप ﷺ ने यह दुआ फर्माई।

((اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيْمَا رَزَقْتَهُمْ فَاغْفِرْ لَهُمْ فَارْحَمْهُمْ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! इन को तूने जो रिज़्क़ दिया है, उस में उन के लिये बरकत अता फर्मा और उन की मग्फिरत फ़र्मा और उन पर रहम फ़र्मा।

[मुस्लिम : ५३२८]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | माहे मुहर्रम में रोज़ा रखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "माहे रमज़ान के बाद सब से अफज़ल मुहर्रम के महीने का रोज़ा है और फर्ज़ नमाज़ों के बाद सब से अफज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है (यानी तहज्जुद की नमाज़)।"

[मुस्लिम : २७५५, अन अबी हुरैरह रज़ि.]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | यतीमों का माल खाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है :"जो लोग यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं, वह लोग अपने पेटों में आग ही भर रहे हैं और यह लोग अन्क़रीब आग में दाखिल होंगे।" [सूर-ए-निसा : १०]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया का फायदा वक़्ती है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : " ऐ लोगो ! तुम्हारी नाफ़र्मानी और बग़ावत का वबाल तुम ही पर पड़ने वाला है, दुनिया की ज़िन्दगी के सामान से थोड़ा फायदा उठालो, फिर तुम को हमारी तरफ वापस आना है, तो हम उन सब कामों की हक़ीक़त से तुम को आगाह कर देंगे जो तुम किया करते थे।"

[सूर-ए-यूनुस : २३]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | मोमिन के लिये क़यामत के दिन की मिक़्दार

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मोमिनीन पर क़यामत का दिन ज़ोहर और अस्र के दर्मियानी वक़्त के बराबर होगा।" [मुस्तदरक हाकिम : २८३, अन अबी हुरैरह रज़ि.]

खुलासा : क़यामत का एक दिन दुनिया के पचास हज़ार साल के बराबर होगा लेकिन ईमान वाला उसे ज़ोहर व अस्र के दर्मियानी वक़्त के बराबर महसूस करेगा।

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | नज़्रे बद का इलाज

हज़रत आयशा रज़ि. फ़र्माती हैं जिस की नज़र लगी हो उस से वुज़ू कराया जाए फिर उसी पानी से वह शख़्स जिस को नज़र लगी है, गुस्ल करे।" [अबू दाऊद : ३८८०]

नोट : जिस के बारे में यह गुमान हो के उस की नज़र लगी है तो उस के वुज़ू के पानी से गुस्ल कराया जाए।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया :"अगर तुम अल्लाह तआला पर इस तरह भरोसा करो, जैसा के भरोसा करने का हक़ है, तो तुम को भी इसी तरह रोज़ी मिले जैसे चिड़यों को मिलती है के वह सुबह खाली पेट जाती हैं और शाम को पेट भर कर वापस आती हैं।" [तिर्मिज़ी : २३४४, अन उमर बिन ख़त्ताब रज़ि.]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

⑦ मुहर्रमुल हराम

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ | क़ाबील और हाबील

क़ाबील और हाबील हज़रत आदम ﷺ के दो बेटे थे। दोनों के दर्मियान एक बात को लेकर झगड़ा हो गया। क़ाबील ने हाबील को क़त्ल कर डाला, ज़मीन पर यह पहली मौत थी और इस बारे में अभी तक आदम ﷺ की शरीअत में कोई हुक्म नहीं मिला था । इस लिये क़ाबील परेशान था के भाई की लाश को क्या किया जाए। अल्लाह तआला ने एक कव्वे के ज़रिये उस को दफन करने का तरीक़ा सिखाया। यह देख कर क़ाबील कहने लगा : हाए अफसोस ! क्या मैं ऐसा गया गुज़रा हो गया के इस कव्वे जैसा भी न बन सका। फिर उस ने अपने भाई को दफन कर दिया। यहीं से दफन करने का तरीक़ा चला आ रहा है। हुज़ूर ﷺ ने क़ाबील के मुतअल्लिक फर्माया : "दुनिया में जब भी कोई शख़्स ज़ुल्मन क़त्ल किया जाता है तो उस का गुनाह हज़रत आदम ﷺ के बेटे (क़ाबील) को ज़रूर मिलता है, इस लिये के वह पहेला शख़्स है जिस ने ज़ालिमाना क़त्ल की इब्तेदा की और यह नापाक तरीक़ा जारी किया"। [मुस्नदे अहमद : ३६२३] इसी लिये इन्सान को अपनी ज़िन्दगी में किसी गुनाह की इजाद नही करनी चाहिये ताके बाद में उस गुनाह के करने वालों का वबाल उस के सर न आए।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत | सूरज

सूरज अल्लाह तआला की बनाई हुई एक ज़बरदस्त मख़्लूक़ है। उस से हमें रौश्नी और गर्मी हासिल होती है, वह रोज़ाना मश्रिक़ से निकलता है और मग्रिब में डूबता है। लेकिन अल्लाह तआला क़यामत के क़रीब उसे अपनी कुदरत से मश्रिक़ के बजाए मग्रिब से निकालेगा, उस की लम्बाई चौड़ाई लाखों मील है और वज़न के एतेबार से ज़मीन के मुक़ाबले में लाखों गुना ज़्यादा है। इतने वज़नी और बड़े सूरज का मुक़र्ररा निज़ाम के तहत चलाना और करोड़ों मील की दूरी से पूरी दुनिया को रौश्नी और गर्मी अता करना अल्लाह तआला की कुदरत की बड़ी निशानी है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | दीन में नमाज़ की अहेमियत

एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के रसूल ! इस्लाम में अल्लाह के नज़दीक सब से ज़्यादा पसन्दीदा अमल क्या है ? आप ﷺ ने फर्माया : "नमाज़ को उस के वक़्त पर अदा करना और जो शख़्स नमाज़ को (जान बूझ कर) छोड़ दे उस का कोई दीन नहीं है और नमाज़ दीन का सुतून है।"

[बैहक़ी फी शोअबिल ईमान : २६८३ अन उमर ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | वुज़ू में कानों का मसह करना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने (वुज़ू) में अपने सरे मुबारक का मसह फर्माया और उस के साथ दोनों कानों का भी, (इस तरीके पर) के कानों के अन्दरूनी हिस्से का तो शहादत की उंगलियों से मसह फर्माया और बाहर के हिस्से का दोनों अंगूठों से।

[सही इब्ने हिब्बान : १०९३]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	आशूरा के रोज़े का सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ से मुहर्रम की दस्वीं तारीख़ के रोज़े के मुतअल्लिक़ पूछा गया, तो आप ﷺ ने फ़र्माया : "यह रोज़ा पिछले साल (के गुनाहों) का कफ्फ़ारा बन जाता है।"

[मुस्लिम : २७४७, अन अबी क़तादा ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	बिला ज़रूरत मांगने का वबाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने सवाल किया हालाँके उस के पास इतना मौजूद था जिस से उस की ज़रूरत पूरी हो सकती थी, तो वह क़यामत के दिन इस हाल में आएगा के उस का चेहरा ऐबदार और (उस पर) खराश होगी।"

[अबू दाऊद : १६२६, अन इब्ने मसऊद ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	हुज़ूर ﷺ के घर वालों का सब्र

हज़रत इब्ने अब्बास ؓ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ और आप ﷺ के घर वाले बहुत सी रात भूके रहते थे, उन के पास रात का खाना नहीं होता था, जब के उन का खाना आम तौर से जौ की रोटी होती थी।

[तिर्मिज़ी : २३६०]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	परहेज़गार लोगों के लिये ख़ुशख़बरी

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "बेशक परहेज़गार लोग (जन्नत के) बाग़ों और चश्मों में होंगे। (उन को कहा जाएगा) के तुम उन बाग़ों में अमन व सलामती के साथ दाखिल होजाओ और हम उन के दिलों की आपसी रंजिश को (इस तरह) दूर कर देंगे के वह भाई भाई बन कर रहेंगे और वह तख़्तों पर आमने सामने बैठा करेंगे।"

[सूर-ए-हिज्र : ४५ ता ४७]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	दुबले पन का इलाज

हज़रत आयशा ؓ फ़र्माती हैं के जब मेरी वालिदा ने मुझे रसूलुल्लाह ﷺ के पास रुख़्सत करने का इरादा किया तो मेरे दुबलेपन का इलाज करने लगीं, मगर कोई इलाज कारगर न हुआ, फिर मैं ने तर खजूरों के साथ ककड़ी खाना शुरु किया तो मैं मोअ्तदिल जिस्म वाली हो गई, यानी दुबलापन दूर हो गया।

[इब्ने माजा : ३३२४]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "क्या यह लोग ज़मीन में चल फिर कर नहीं देखते के उन से पहले लोगों का क्या अन्जाम हुआ, अल्लाह ने उन को हलाक कर डाला और उन काफ़िरों के लिये भी इसी क़िस्म के हालात होने वाले हैं, इस लिये के अल्लाह तआला अहले ईमान का दोस्त है और काफ़िरों का कोई दोस्त नहीं है।"

[सूर-ए-मुहम्मद : १० ता ११]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(८) मुहर्रमुल हराम

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत शीस ﷺ

हाबील के क़त्ल के बाद अल्लाह तआला ने हज़रत आदम ﷺ को हज़रत शीस ﷺ जैसा नेक फ़रज़न्द अता फ़र्माया। वह हज़रत आदम ﷺ के सच्चे जानशीन हुए और आगे चल कर पूरी नस्ले इन्सानी का सिलसिला इन्हीं से चला, अल्लाह तआला ने उन को नुबुव्वत से नवाज़ा और पचास सहीफे उन पर नाज़िल फ़र्माए। जब हज़रत आदम ﷺ का इन्तेक़ाल हुआ तो जिब्रईल ﷺ के हुक्म से हज़रत शीस ﷺ ही ने नमाजे जनाज़ा पढ़ाई, उन्होंने हज़ूरा नामी औरत से निकाह किया और उन से एक लड़का और एक लड़की पैदा हुई, हज़रत शीस ﷺ ने अपनी ज़िन्दगी मक्का में गुजारी और हर साल हज व उमरा करते रहे। उन को दिन रात में मुख़्तलिफ इबादतों का तरीक़ा सिखाया गया था और एक बड़े तूफान के आने और सात साल तक रहने की खबर दी गई थी। हज़रत शीस ﷺ ने नौ सौ बारा साल की उम्र पाई, जब इन्तेक़ाल का वक़्त करीब आया, तो अपने बेटे अनूश को अल्लाह के अहकाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुजारने की वसिय्यत फ़र्माई, वफात पाने के बाद अपने वालिदैन के पहलू में जबले अबी कुबैस के गार में दफ्न किए गए।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअजिज़ा — बैतुलमक़दिस के बारे में खबर देना

जब रसूलुल्लाह ﷺ मेअराज से वापस आए और कुफ्फारे मक्का को बताया के मैं रात को बैतुल मक़दिस गया और फिर वहाँ से सातों आस्मानों पर गया और वहाँ की सैर की, तो कुफ्फार ने उस का इन्कार कर दिया और बैतुलमक़दिस के बारे में सवाल करने लगे। अल्लाह तआला ने अपने रसूल के लिये बैतुलमक़दिस तक के सारे पर्दे हटा दिये यहाँ तक के हुज़ूर ﷺ उस की तरफ देखते जाते और उस की निशानियाँ बतलाते जाते।

[मुस्लिम : ४२८, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ؓ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — गिर्वी रखी हुई चीज़ से फ़ायदा न उठाना

हज़रत इब्ने मसऊद ؓ के पास एक शख्स आए और कहा के एक घोड़ा (मेरे पास) गिर्वी रखा गया था, लेकिन मैं उस पर सवार हो गया (तो क्या मेरे लिए गिर्वी रखे हुए घोड़े पर सवार होना जाइज़ है ?) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ؓ ने फ़र्माया : "उस घोड़े से तुम ने जितना फ़ायदा उठाया वह सूद है।"

[कन्ज़ुल उम्माल :१५७४९]

फ़ायदा : गिर्वी रखी हुई चीज़ से फ़ायदा उठाना जाइज़ नहीं, लिहाज़ा उस से बचना ज़रुरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — तक्बीरे तहरीमा के बाद की दुआ

जब नमाज़ के लिये तक्बीरे तहरीमा (अल्लाहु अक्बर) कह कर हाथ बाँधे तो यह दुआ पढ़े :

((سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हम तेरी पाकी बयान करते हैं और तेरी तारीफ करते हैं तेरा नाम बर्कत वाला और तेरी शान बड़ी बुलन्द है और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। [अबू दाऊद : ७७६, अन आयशा]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | दस्वीं मुहर्रम का रोज़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "रोज़ा रखने में किसी दिन को किसी दिन पर कोई फज़ीलत नहीं, मगर माहे रमज़ान को और आशूरा के दिन को" (यानी इन दोनों को दूसरे दिनों पर फज़ीलत हासिल है।) [तबरानी कबीर : ११०९१, अन इब्ने अब्बास]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में | जान बूझ कर क़त्ल करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख्स किसी मुसलमान को जान बूझ कर क़त्ल करदे, तो उस की सज़ा जहन्नम है, वह उस में हमेशा हमेश रहेगा और अल्लाह तआला का गुस्सा और उस की लानत उस पर होगी और अल्लाह तआला ने ऐसे शख्स के लिये बड़ा अज़ाब तय्यार कर रखा है।"

[सूर-ए-निसा : ९३]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में | दुनियावी ज़िन्दगी पर खुश न होना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अल्लाह तआला जिस को चाहता है बेहिसाब रिज़्क़ देता है और जिस को चाहता है तंगी करता है और यह लोग दुनिया की ज़िन्दगी पर ख़ुश होते हैं (और उस के ऐश व इशरत पर इतराते हैं) हालांके आखिरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी एक थोड़ा सा सामान है।" [सूर-ए-रअ्द : २६]

नंबर (८) : आखिरत के बारे में | सब से पहला सवाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "क़यामत के दिन बन्दे से सब से पहले यह हिसाब लिया जाएगा के क्या मैं ने तेरे जिस्म को सेहत नही बख़्शी थी और तुझे ठंडे पानी से सैराब नहीं किया था।"

[तिर्मिज़ी : ३३५८, अन अबी हुरैरह]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज | बड़ी बीमारियों से हिफाज़त

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स हर महीने तीन दिन सुबह के वक्त शहद चाटेगा तो उसे कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी।" [इब्ने माजा : ३४५०, अन अबी हुरैरह]

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम किसी की कमज़ोरियों की तलाश में न रहा करो और जासूसों की तरह किसी के ऐब मालूम करने की कोशिश भी न करो।" [बुख़ारी : ६०६४, अन अबी हुरैरह]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(१) मुहर्रमुल हराम

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हजरत इदरीस ﷺ

हज़रत इदरीस ﷺ मशहूर नबी हैं, वह हज़रत आदम ﷺ की वफ़ात से तक़रीबन सौ साल बाद और हज़रत नूह ﷺ से एक हज़ार साल पहले शहर बाबुल में पैदा हुए। उन्होंने हज़रत शीस ﷺ से इल्म हासिल किया। इल्मे नुजूम, इल्मे हिसाब, सिलाई, नाप तौल, असलिहा साज़ी और फन्ने तहरीर व किताबत के मूजिद और बानी हज़रत इदरीस ﷺ हैं। उन के ज़माने में मुतअद्दद ज़बानें बोली जाती थीं, अल्लाह तआला ने उन को सारी ज़बानें सिखाईं, चुनांचे वह लोगों से उन्हीं की ज़बान में बात चीत किया करते थे। कुर्आने पाक में उन का इस तरह ज़िक्र किया गया है के वह बड़े सच्चे और सब्र करने वाले नबी थे। उन को कुर्बे खुदावन्दी का ऊँचा मर्तबा अता किया गया था। मोअर्रिख़ीन ने आप के अख्लाक का तज़किरा इस तरह किया है के गुफतगू में सन्जीदा, ख़ामोश तबीअत थे, चलते वक़्त ज़मीन पर निगाह रखते और बात करते वक़्त शहादत की उंगली से बार बार इशारा फर्माते थे, पूरी ज़िन्दगी दावत व तब्लीग में गुज़ार दी।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — चाँद के फवाइद

अल्लाह तआला ने हमारे फायदे के लिये चाँद बनाया, वह हमें ठंडी ठंडी रौश्नी देता है, जिस से पेड़ पौदे फल फूल और दानो में रस पैदा होता है। अल्लाह तआला ने उस की गर्दिश के लिये मंज़िलें मुक़र्रर कर रखी हैं, वह हर रोज़ एक मंज़िल तय करता है और आखिर में घटते घटते खजूर की पुरानी शाख की तरह रह जाता है। जहाँ चाँद की रौश्नी और उस की गर्दिश से बेशुमार दुनियवी फायदे हासिल होते है, वहीं उस के ज़रिये इबादत और हज वग़ैरह के औक़ात भी मालूम हो जाते हैं। ग़र्ज़ चाँद का रौश्नी फैलाना और उस का घटते बढ़ते रहना कुदरते खुदावन्दी की ज़बरदस्त निशानी है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — पाँचों नमाज़ें अदा करने पर बशारत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया के अल्लाह तआला फर्माता है :" मैं ने आप की उम्मत पर पाँच नमाज़ें फर्ज़ की हैं और इस बात का अहेद कर लिया है के जो शख़्स इन (पाँचों नमाज़ों) को वक़्त पर पाबन्दी से अदा करेगा तो मैं उस को जन्नत में दाखिल कर दूँगा और जो उसे पाबन्दी से अदा नही करेगा, तो उस के लिये मेरे पास कोई अहेद नहीं।"

[अबू दाऊद : ४३०, अन अबी क़तादा ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — गर्दन का मसह करना

हज़रत तल्हा अपने दादा से रिवायत करते हैं के वह बयान करते थे के उन्होने रसूलुल्लाह ﷺ को वुज़ू करते हुए देखा के आप ﷺ ने सर का मसह किया और फिर दोनों हाथों को (मसह करते हुए) गुद्दी पर फेरा।

[सुनने कुबरा लिलबैहक़ी : ६०/१]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	माहे मुहर्रम में रोज़े का सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने माहे मुहर्रम में एक दिन का रोज़ा रखा, तो उस को हर रोज़े के बदले तीस दिन के रोज़े का सवाब मिलेगा।"

[तबरानी सग़ीर : ९६०, अन इब्ने अब्बास رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	शराब पीना

हज़रत इब्ने उमर رضي الله عنه ने फर्माया : "अगर कोई शख्स शराब पी कर नशे की हालत में मर गया, तो (गोया के वह) काफिर मरा।"

[नसई : ५६७१, अन इब्ने उमर رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया में सादगी इख्तियार करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : ऐ आयशा ! अगर तुम (क़यामत के दिन) मुझ से मिलना चाहती हो, तो बस तुम्हारे लिये इतना ही माल काफी है, जितना एक मुसाफिर के पास होता है और अपने आप को मालदारों की सोहबत से बचाए रखना और पुराने फटे हुए कपडे को पैवन्द लगा कर इस्तेमाल करती रहना।

[तिर्मिज़ी : १७८०, अन आयशा رضي الله عنها]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	जन्नत के फल

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जन्नत में लोगों की यह हालत होगी के उन पर (जन्नत के) दरख्तों के साए झुके हुए होंगे और जन्नत के फल उन के इख्तियार में दे दिये जाएँगे।" (यानी जहाँ से जो फल चाहेंगे खाएँगे)।"

[सूर-ए-दहर : १४]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	नमाज़ में शिफा

हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه फर्माते हैं के मैं नमाज़ से फारिग़ होकर आप ﷺ की खिदमत में आ कर बैठ गया फिर आप ﷺ ने मेरी तरफ तवज्जोह फर्माते हुए इर्शाद फर्माया : क्या तुम्हारे पेट में दर्द है ? मैं ने कहा : जी हाँ या रसूलल्लाह ! तो आप ﷺ ने फर्माया: उठो नमाज़ पढ़ो, क्यों कि नमाज़ में शिफा है।

[इब्ने माजा : ३४५८]

नोट : नमाज़ अहेम तरीन इबादत होने के साथ बहुत सी रूहानी और जिस्मानी बीमारियों का इलाज भी है, इस लिये नमाज़ को इबादत समझ कर ही अदा करना चाहिये।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम उन लोगों की तरह मत हो जाना जो आपस में एक दूसरे से जुदा होगए और इख्तेलाफ करने लगे जब के उन के पास साफ साफ दलाइल आ चुके थे, ऐसे ही लोगों के लिये बड़ा अज़ाब होगा।"

[सूर-ए-आले इमरान : १०५]

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत इदरीस عليه السلام की दावत

हज़रत इदरीस عليه السلام जवान हुए तो अल्लाह तआला ने आप को नुबुव्वत से नवाजा और तीस सहीफे नाज़िल फर्माए, नुबुव्वत मिलते ही आप ने दावत व तबलीग का काम शुरू कर दिया, मुसलसल दावत देने के बावजूद थोड़े से लोगों ने ईमान क़बूल किया और अक्सर लोग झुटलाने और सताने में लगे रहे, जब लोगों का ज़ुल्म व सितम हद से बढ़ गया, तो अल्लाह तआला के हुक्म से अहले ईमान को लेकर बाबुल से मिस्र चले गए और दरियाए नील के किनारे आबाद होगए और आखरी वक़्त तक लोगों के दर्मियान उन्ही की ज़बान में अल्लाह का पैगाम और दीनी दावत का फरीज़ा अन्जाम देते रहे। उन की शरीअत और दावत का खुलासा यह था के तौहीद पर ईमान लाओ, आखिरत की नजात के लिये अच्छे अमल करो, तमाम कामों में अद्ल व इन्साफ करो, अय्यामे बीज़ के रोज़े रखो, ज़कात अदा करो, नशा आवर चीज़ों से परहेज़ करो, शरीअत के मुताबिक़ अल्लाह की इबादत करो वगैरह। वह आखरी वक़्त तक लोगों को दीन की दावत और अच्छे कामों की नसीहत करते हुए तीन सौ पैंसठ साल की उम्र में अपने खालिके हक़ीक़ी के दरबार में पहुँच गए।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — अबूजहल पर खौफ

एक मर्तबा अबूजहल ने लात व उज़्ज़ा की क़सम खाकर कहा के अगर मैं ने मुहम्मद ﷺ को ज़मीन पर नाक रगड़ते : यानी सज्दा करते हुए कभी देख लिया तो अपने पैरों से (नऊज़ु बिल्लाह) उस की गर्दन रौंद डालूँगा। इत्तेफाक़ ऐसा हुआ के एक रोज़ आप ﷺ नमाज़ पढ़ रहे थे के अबूजहल अपना इरादा पूरा करने की ग़र्ज से आगे बढ़ा फिर अचानक उल्टे पाँव वापस आगया, जैसे हाथों से कोई चीज़ रोक रहा हो। लोगों ने उस से माजरा पूछा तो उस ने कहा : मैं ने अपने और मुहम्मद ﷺ के दर्मियान दहेकती आग की खन्दक़ देखी और बड़ा खौफनाक मंज़र और पर देखे। आप ﷺ ने फर्माया के अगर अबूजहल मेरे क़रीब आ जाता तो फरिश्ते उस के टुकड़े कर के ले जाते।

[मुस्लिम : ७०६५, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — पर्दा करना फर्ज़ है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "(ऐ औरतो !) तुम अपने घरों में ठहरी रहा करो और दौरे जाहिलिय्यत की तरह बे पर्दा मत फिरो।"

[सूर-ए-अहज़ाब : ३३]

फायदा: तमाम मुसलमान औरतों के लिए ज़रुरी है के जब किसी सख्त ज़रुरत के तहत घर से निकलें, तो अच्छी तरह पर्दे का खयाल रखते हुए बाहर जाएं; क्योंकि पर्दा करना तमाम औरतों पर फर्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ें

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : " ऐ मआज़ ! मैं तुम को वसिय्यत करता हूँ के किसी नमाज़ के बाद इस

दुआ को न छोड़ना : ((اَللّٰهُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِکْرِكَ وَ شُکْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! अपना ज़िक्र व शुक्र करने और अच्छे तरीक़े से इबादत करने पर मेरी मदद फ़र्मा।

[अबू दाऊद : १५२२, अन मआज़ बिन जबल ﷺ]

नंबर ५ : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	नमाज़े चाश्त

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स चाश्त की दो रकातों की पाबन्दी करता है, तो उस के गुनाहों की मग़्फ़िरत करदी जाती है, चाहे वह समन्दर के झाग के बराबर हों।"

[तिर्मिज़ी : ४७६, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर ६ : एक गुनाह के बारे में	कुफ्र व शिर्क का नतीजा जहन्नम है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो भी अल्लाह के साथ शरीक ठहराएगा, उस पर अल्लाह तआला ने जन्नत हराम करदी है और उस का ठिकाना जहन्नम है और ऐसे ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं है।"

[सूर-ए-माइदा : ७२]

नंबर ७ : दुनिया के बारे में	दुनिया की चीज़ें ख़त्म होने वाली हैं

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो कुछ तुम्हारे पास (दुनिया में) है वह (एक दिन) ख़त्म हो जाएगा और जो अल्लाह तआला के पास है वह हमेशा बाक़ी रहने वाला है।" [सूर-ए-नहल : ९६]

नंबर ८ : आख़िरत के बारे में	रूस्वाई का अज़ाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क़यामत के दिन बन्दे को ऐसी शर्मिन्दगी लाहिक़ होगी के वह पुकार उठेगा : या रब ! आप मुझे जहन्नम में भेज दें यह मेरे लिये इस ज़िल्लत व रुसवाई से ज़ियादा आसान है, जो मुझे अब पहुँच रही है, हालाँकि उस को मालूम होगा के दोज़ख़ में कितना सख़्त अज़ाब है।"

[मुस्तदरक हाकिम : ८७२०, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ]

नंबर ९ : तिब्बे नब्वी से इलाज	इरकुन्नसा (Sciatica) का इलाज

हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़र्माते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को फ़र्माते हुए सुना के इरकुन्नसा का इलाज अरबी बकरी (दुंबे) की चक्ती है, जिसे पिघलाया जाए, फिर उस के तीन हिस्से किए जाएं और रोज़ाना एक हिस्सा नहार मुंह पिया जाए। [इब्ने माजा : ३४६३]

फ़ायदा : दुंबे की दुम पर गोल उभरी हुई चर्बी के हिस्से को चक्ती कहते हैं।

नंबर १० : नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अबूज़र को नसीहत फ़र्माई के कुर्आने करीम की तिलावत और अल्लाह के ज़िक्र का एहतेमाम किया करो, इस अमल से आस्मानों में तुम्हारा ज़िक्र होगा और यह अमल ज़मीन में तुम्हारे लिये हिदायत का नूर होगा। [बैहक़ी फी शोअबिल ईमान : ४७३७, अन अबी ज़र ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

११ मुहर्रमुल हराम

नंबर १: इस्लामी तारीख़ — हज़रत नूह ﷺ

हज़रत आदम ﷺ की वफात के एक हज़ार बरस तक लोग अल्लाह तआला की तौहीद पर क़ाएम थे, फिर बाज़ नेक बन्दों के इन्तेक़ाल के बाद लोगों ने उन के मुजस्समे बना लिये और धीरे धीरे उन की पूजा शुरू हो गई। इस तरह पूरे अरब व अजम में शिर्क व बुत परस्ती की बुनियाद पड़ गई। जब लोग अल्लाह तआला की इबादत छोड़ कर शिर्क व बुत परस्ती में मुब्तला हो गए, तो उन की हिदायत के लिये अल्लाह तआला ने हज़रत नूह ﷺ को नबी व रसूल बना कर भेजा। हज़रत नूह ﷺ का शुमार दुनिया के अज़ीम तरीन अम्बिया में होता है। वह सब से पहले नबी और रसूल हैं। हज़रत इदरीस ﷺ की तीसरी पुश्त में हज़रत आदम ﷺ की वफात के एक हज़ार पच्चीस साल बाद दजला व फुरात की वादी के दर्मियान मुल्के इराक़ में पैदा हुए। अल्लाह तआला ने क़ुर्आने पाकी में ४३ मक़ाम पर उन का तज़केरा फ़र्माया है।

नंबर २: अल्लाह की क़ुदरत — बादल

अल्लाह तआला तेज़ हवाओं के ज़रिये बिखरे हुए बादलों को फ़ज़ा में जमा कर के एक दूसरे से मिला देता है, फिर उन बादलों को बर्फ के पहाड़ों की शक्ल दे देता है, जिन की मोटाई सैकड़ों फ़िट हो जाती है। इन बिखरे हुए बादलों को बर्फ के पहाड़ों की शक्ल में जमा करना और भारी बादलों को फ़ज़ा में रोके रखना, फिर कभी उन को ओलों की शक्ल में गिरा कर जमीन पर तबाही मचा देना और कभी पानी की शक्ल में बरसा कर पेड़ पौदों का उगाना अल्लाह तआला की क़ुदरत की कितनी बड़ी निशानी है।

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — बीवी की वरासत में शौहर का हिस्सा

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है: "तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियों के छोड़े हुए माल में से आधा हिस्सा है, जब के उन की कोई औलाद न हो और अगर उन की औलाद हो, तो तुम्हारी बीवियों के छोड़े हुए माल में चौथाई हिस्सा है (तुम्हें यह हिस्सा) उन की वसिय्यत और कर्ज़ अदा करने के बाद मिलेगा।"

[सूर-ए-निसा: १२]

नंबर ४: एक सुन्नत के बारे में — वुज़ू का पानी खड़े हो कर पीना

हज़रत हुसैन ﷺ बयान करते हैं के उन के वालिद हज़रत अली ﷺ ने वुज़ू किया और वुज़ू का बचा हुआ पानी खड़े होकर पिया। मैं ने तअज्जुब किया! मुझे देखा और कहा के तअज्जुब की क्या बात है? मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को इसी तरह करते हुए देखा है।

[नसई: ९५]

फायदा: वुज़ू से बचा हुआ पानी और आबे ज़मज़म खड़े हो कर पीना सुन्नत है।

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | **शुक्रिया अदा करने की दुआ**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस शख़्स के साथ भलाई का मामला किया गया और फिर उस ने भलाई करने वाले को ((جَزَاكَ اللّٰهُ خَيْرًا)) कह दिया, तो गोया उस ने शुक्रिया का हक़ अदा कर दिया।"

[तिर्मिज़ी : २०३५, अन उसामा बिन ज़ैद ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | **झूटी गवाही शिर्क के बराबर**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "झूटी गवाही अल्लाह के साथ शिर्क करने के बराबर है।" यह बात रसूलुल्लाह ﷺ ने तीन दफा इर्शाद फर्माई।"

[अबू दाऊद : ३५९९, अन खुरैम बिन फातिक ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | **दुनिया को मक़सद न बनाना**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस शख़्स का मक़सद दुनिया कमाना हो और वह उसी के लिये सफर करता हो, उसी का खयाल दिल में रहता हो, तो अल्लाह तआला ग़रीबी और भूक का डर उस की आँखों के सामने कर देते हैं (हर वक़्त इस से डरता है के आमदनी तो बहुत कम है! क्या होगा? कैसे गुज़ारा होगा?) और उस के औक़ात को इसी फिक्र में परेशान कर देते हैं और मिलता उतना ही है जितना मुक़द्दर में होता है।"

[तरग़ीब व तरहीब : २४६३, अन अनस ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | **क़यामत का ज़लज़ला**

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है :" ऐ लोगो ! अपने रब से डरो बेशक क़यामत का ज़लज़ला बड़ी ही होलनाक चीज़ है। जिस रोज़ तुम उस ज़लज़ले को देखोगे, तो यह हाल होगा के हर दूध पिलाने वाली औरत अपने दूध पीते (बच्चे को) भूल जाएगी और तमाम हमल वाली औरतें अपना हमल गिरा देंगी और तुम लोगों को नशे की सी हालत में देखोगे; हालांके वह नशे की हालत में न होंगे, लेकिन अल्लाह तआला का अज़ाब बड़ा ही सख़्त है।"

[सूर-ए-हज : १ ता २]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | **बीमारी से बचने की तदबीर**

हज़रत जाबिर ؓ बयान करते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को फर्माते हुए सुना के बर्तनों को ढांक दिया करो और मशकीज़े (यानी बर्तन वग़ैरह) का मुँह बन्द कर दिया करो, क्योंकि साल में एक ऐसी रात आती है, जिस में वबा उतरती है पस जिस बर्तन या मशकीज़े का मुँह खुला रहता है तो उस में दाख़िल हो जाती है।

[मुस्लिम : ५२५५]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है :"ऐ ईमान वालो ! तुम कई गुना बढ़ा कर सूद मत खाया करो और अल्लाह से डरते रहो ताके तुम कामयाब हो जाओ।"

[सूर-ए-आले इमरान : १३०]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रोशनी में)

(१२) मुहर्रमुल हराम

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत नूह عليه السلام की दावत

जब लोगों की नाफ़र्मानी और बुत परस्ती दुनिया में आम होगई, तो अल्लाह तआला ने उन की हिदायत व रहेनुमाई के लिये हज़रत नूह عليه السلام को नबी बनाया। उन्होनें लोगों को नसीहत करते और दीन की दावत देते हुए फ़र्माया : तुम सिर्फ़ अल्लाह की इबादत व बन्दगी करो, वह तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा। इस नसीहत को सुन कर क़ौम के सरदारों ने जवाब दिया : हम तुम्हें रसूल नहीं मानते, क्योंकि तुम हमारे ही जैसे आदमी हो नीज़ तुम्हारी पैरवी ज़लील व हक़ीर और कम दर्जे के लोगों ने कर रखी है। हज़रत नूह عليه السلام ने फ़र्माया : अल्लाह तआला के यहाँ सआदत व नेक बख़्ती का दारोमदार दौलत पर नहीं, बल्के अल्लाह की रज़ामन्दी और इख़्लासे निय्यत पर है। मैं तुम्हें यह दावत माल व दौलत की उम्मीद पर नहीं, बल्के अल्लाह के हुक्म और उस की रज़ा के लिये दे रहा हूँ। वही मेरी मेहनत का अज्र व सवाब अता फ़र्माएगा। ग़र्ज हज़रत नूह عليه السلام दिन रात इन्फ़िरादी व इज्तेमाई और ख़ुसूसी व उमूमी तौर पर एक तवील अर्से तक क़ौम को शिर्क व कुफ़्र और अल्लाह तआला की नाफ़र्मानी से डराते रहे, मगर वह बाज़ तो क्या आते ; बल्के उल्टा अज़ाबे इलाही का मुतालबा करने लगे।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — दरख़्त का हुज़ूर ﷺ को इत्तेला देना

एक मर्तबा किसी ने हज़रत मसरूक़ رحمه الله से पूछा के जिस रात जिन्नातों ने हुज़ूर ﷺ का क़ुर्आन सुना था, उस रात आप ﷺ को जिन्नातों की हाज़री की इत्तेला किस ने दी थी? तो हज़रत मसरूक़ رحمه الله ने फ़र्माया : मुझे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه ने ख़बर दी है के उस रात रसूलुल्लाह ﷺ को जिन्नातों के बारे में एक दरख़्त ने बताया था। [बुख़ारी : ३८५९]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ी पर जहन्नम की आग हराम है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स पाँचों नमाज़ों की इस तरह पाबन्दी करे के वुज़ू और औक़ात का एहतेमाम करे, रुकूअ और सज्दा अच्छी तरह करे और इस तरह नमाज़ पढ़ने को अपने ज़िम्मे अल्लाह तआला का हक़ समझे तो उस आदमी को जहन्नम की आग पर हराम कर दिया जाएगा।" [मुस्नदे अहमद : १७८८२, अन हन्ज़ला उसैदी رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — जहालत से पनाह माँगने की दुआ

जहालत से बचने के लिये इस दुआ का एहतेमाम करना चाहिये :

﴿ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴾

तर्जमा : अल्लाह की पनाह माँगता हूँ इस बात से के मैं जाहिलों में से हो जाऊँ। [सूर-ए-बक़रह : ६७]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	नेअ्मत के मिलने पर अल्हम्दुलिल्लाह कहना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब अल्लाह तआला किसी बन्दे को किसी नेअ्मत से सरफ़राज़ फ़रमाए और वह उस पर ((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ)) कहे, तो जो उस ने हासिल किया है उस से भी बेहतर दिया जाएगा।" [इब्ने माजा : ३८०५, अन अनस ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	अल्लाह के साथ शरीक करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो शख़्स अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक करेगा, तो अल्लाह तआला उस पर जन्नत हराम कर देगा और उस का ठिकाना जहन्नम है और ऐसे ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं होगा।" [सूर-ए-माइदा : ७२]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया चाहने वालों का अन्जाम

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है: "जो कोई (सिर्फ़) दुनिया ही चाहता है, तो हम उस को दुनिया में जितना चाहते हैं, जल्द दे देते हैं, फिर हम उस के लिये दोज़ख़ मुक़र्रर कर देते हैं, जिस में ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ ढकेल दिये जाएँगे।" [सूर-ए-बनी इस्राईल : १८]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जन्नतियों का हाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जन्नत में लोग खाएंगे और पिएंगे, लेकिन न तो पेशाब पाख़ाना करेंगे और न ही नाक छींकेंगे, बल्के उन का खाना इस तरह हज़्म होगा के डकार आएगी, जिस से मुश्क की खुशबू फैलेगी और उन को अल्लाह की ऐसी तस्बीह और तक्बीर बताई जाएगी जिस को पढ़ना इतना आसान होगा, जितना दुनिया में तुम्हारे लिए सांस लेना आसान होता है।"

[मुस्लिम : ७१५४, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मिस्वाक के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मिस्वाक ज़रूर किया करो, क्योंकि इस से अल्लाह की खुशनूदी हासिल होती है और आँख की रौश्नी तेज़ होती है।"

[अलमोअ्जमुल औसत लित्तबरानी : ७७०९, अन इब्नेअब्बास ؓ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम में से कोई शख़्स वफ़ात पाजाए तो, उसे अपने घर में देर तक न रोको, उस को जल्द दफ़न करो और दफ़नाने के बाद उस के सर की तरफ़ (खड़े होकर) सूर-ए-बक़रह का शुरू हिस्सा और उस के पाँव की तरफ़ (खड़े होकर) सूर-ए-बक़रह का आख़री हिस्सा पढ़ो।

[बैहक़ी फी शोअ्बिल ईमान : ८९८६, अन अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ]

फ़ायदा : शुरू हिस्से से मुराद الٓمّٓ से مُفْلِحُوْنَ तक और आख़री हिस्से से मुराद ((اٰمَنَ الرَّسُوْلُ)) से ((فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ)) तक है।

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

१३ मुहर्रमुल हराम

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — क़ौमे नूह पर अल्लाह का अज़ाब

हज़रत नूह ﷺ साढे नौ सौ साल तक अपनी क़ौम को दावत देते रहे और क़ौम के अफराद बार बार अज़ाब का मुतालबा करते रहे, साथ ही अल्लाह तआला ने हज़रत नूह ﷺ को ख़बर दी के अब मौजूदा ईमान वालों के अलावा कोई और ईमान नहीं लाएगा। तो उन्होंने दुआ की : ऐ अल्लाह! अब इन बदबख़्तों पर ऐसा अज़ाब नाज़िल फ़र्मा के एक भी काफिर व मुशरिक ज़मीन पर ज़िन्दा न बचे। अल्लाह तआला ने उन की दुआ क़ुबूल फ़र्मा ली और हुक्म दिया के तुम हमारी निगरानी और हुक्म के तहत एक कश्ती तय्यार करो, चुनान्चे एक कश्ती तय्यार की गई, फिर अल्लाह तआला के हुक्म से ज़मीन व आस्मान से पानी के दहाने खुल गए और देखते ही देखते ज़मीन पर पानी ही पानी जमा हो गया, उस वक़्त हज़रत नूह ﷺ बहुक्मे ख़ुदावन्दी मोमिनीन और जान्दारों में से एक एक जोड़े को ले कर कश्ती में सवार होगए, बाक़ी तामाम काफिर व मुशरिक पानी के इस तूफान में हलाक होगए, छः महीने के बाद कश्ती १० मुहर्रमुलहराम को जूदी पहाड़ पर ठहरी तो हज़रत नूह ﷺ अहले ईमान को लेकर अमन व सलामती के साथ ज़मीन पर उतरे और फिर अल्लाह तआला ने उन्हीं से दुनिया की आबादी का दोबारा सिलसिला शुरू फ़र्माया, इसी लिये आप को "आदमेसानी" कहा जाता है।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — ज़म ज़म का पानी

अल्लाह तआला ने दुनिया में समन्दर, झील, ओले, बारिश और चश्मों का पानी पैदा फ़र्माया है, लेकिन ज़म ज़म का पानी पैदा कर के अपनी क़ुदरत का ज़बरदस्त इज़हार फर्माया है। दीगर पानी की तरह इस में भी प्यास बुझाने की सलाहियत है लेकिन खास बात यह है के इस में भूक मिटाने और बीमारी से शिफा देने की भरपूर सलाहियत मौजूद है। दीगर पानी बहुत जल्दी सड़ कर नाक़ाबिले इस्तेमाल हो जाता है, लेकिन ज़म ज़म का पानी सड़ने और ख़राब होने से हमेशा महफ़ूज़ रहता है। इस पानी में भूक, प्यास मिटाने और बीमारियों से शिफा देने की सलाहियत पैदा करना, अल्लाह तआला की क़ुदरत की बड़ी निशानी है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — हज किन लोगों पर फर्ज़ है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अल्लाह के वास्ते उन लोगों के जिम्मे बैतुल्लाह का हज करना (फर्ज़) है जो वहाँ तक पहुँचने की ताक़त रखता हो।" [सूर-ए- आले इमरान :९७]

नंबर (४): *एक सुन्नत के बारे में*	दाईं कर्वट सोना

हज़रत बरा बिन आज़िब ﷺ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ जब बिस्तर पर तशरीफ लाते, तो दाईं कर्वट पर आराम फ़र्माते।

[बुख़ारी : ६३१५]

नंबर (५): *एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत*	सख़ावत इख़्तियार करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह तआला सख़ी है और सख़ावत को पसन्द करता है। अच्छे अख़्लाक़ को पसन्द करता है और बुरे अख़्लाक़ को ना पसन्द करता है।"

[कंज़ुलउम्माल : ४३५००, अन तलहा बिन उबैदुल्लाह ﷺ]

नंबर (६): *एक गुनाह के बारे में*	कोई चीज़ ऐब बताए बग़ैर बेचना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स कोई ऐबदार चीज़ उस का ऐब बताए बग़ैर बेचेगा, वह बराबर अल्लाह की नाराज़गी में रहेगा और फरिश्ते उस पर लानत करते रहेंगे।"

[इब्ने माजा : २२४७, अन वासिला बिन अस्क़ा ﷺ]

नंबर (७): *दुनिया के बारे में*	दुनिया की नेअ्मतों का ख़ुलासा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम में से जिस शख़्स को सेहत व तन्दुरुस्ती हासिल हो और अपने घर वालों की तरफ से उस का दिल मुतमइन हो और एक दिन का खाना उस के पास मौजूद हो, तो समझ लो के दुनिया की तमाम नेअ्मत उस के पास मौजूद है।"

[इब्ने माजा : ४१४१, अन उबैदुल्लाह बिन मिहसन ﷺ]

नंबर (८): *आख़िरत के बारे में*	अहले जन्नत की नेअ्मत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "बेशक अहले जन्नत (ऐश व राहत के) मज़े ले रहे होंगे, वह और उन की बीवियाँ सायों में मसहेरियों पर तकिये लगाए बैठे होंगे और उन के लिये उस जन्नत में हर क़िस्म के मेवे होंगे और जो वह तलब करेंगे उन को मिलेगा।" [सूर-ए-यासीन ५५ ता ५७]

नंबर (९): *तिब्बे नब्वी से इलाज*	ज़ैतून के तेल के फवायद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "ज़ैतून का तेल खाओ और उसे लगाओ, क्यों कि उस में सत्तर बीमारियों से शिफा है, जिन में से एक कोढ़ भी है।" [कन्ज़ुल उम्माल : २८२९५, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (१०): *कुर्आन की नसीहत*	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो जैसा के उस से डरने का हक़ है और मरते दम तक इस्लाम पर क़ाएम रहना।" [सूर-ए-आले इमरान : १०२]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

१४ मुहर्रमुल हराम

नंबर १ : इस्लामी तारीख — क़ौमे आद

"आद" अरब की एक क़दीम तरीन क़ौम का नाम है, इस का ज़िक्र क़ुर्आने पाक में २५ मर्तबा आया है, यह क़ौम जुनूबी अरब में आबाद थी और अम्मान से ले कर यमन तक १३ बिरादरियों में फैली हुई थी, उन के मुल्क की राजधानी यमनी शहर "हज़र मौत" थी, उस का ज़माना हज़रत नूह ؑ के तक़रीबन चार सौ साल बाद और हज़रत ईसा ؑ के तक़रीबन दो हज़ार साल पहले का है। यह अपने ज़माने की ताक़तवर क़ौम थी और फ़न्ने तामीर में बड़ी महारत रखती थी, पहाड़ों को तराश कर शान्दार इमारतें बनाना उन का महबूब मशग़ला था, यह क़ौम माल व दौलत के नशे में ऐश परस्ती में मुब्तला हो गई थी, कमज़ोरों पर ज़ुल्म करना, हक़ बात की मुख़ालफ़त और माल व दौलत और अपनी ताक़त पर घमंड करना उन की फ़ितरत बन गई थी, जब उस क़ौम की ज़ुल्म व ज़्यादती और शिर्क व बुत परस्ती हद से बढ़ गई, तो अल्लाह तआला ने हज़रत हूद ؑ को नबी बना कर उन की हिदायत के लिये भेजा।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हुज़ूर ﷺ के पसीने की ख़ुशबू

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ फ़र्माते हैं एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ हमारे यहाँ तशरीफ़ लाए और क़ैलूला फ़र्माया, जब आप ﷺ को पसीना आया तो मेरी वालिदा एक शीशी लाईं और पसीना पोंछ कर जमा करने लगीं, इस दौरान आप ﷺ की आँख खुल गई, आप ﷺ ने पूछा : उम्मे सुलैम ! तुम यह क्या कर रही हो? उन्होंने अर्ज़ किया : मैं आप के पसीने को जमा कर रही हूँ, ताके हम इसे ख़ुशबू के तौर पर इस्तेमाल करें।"

[मुस्लिम : ६०५५]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — शौहर की वरासत में बीवी का हिस्सा

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "इन औरतों के लिए तुम्हारे छोड़े हुए माल में चौथाई हिस्सा है, जब के तुम्हारी कोई औलाद न हो और अगर तुम्हारी औलाद होतो, उन के लिए तुम्हारे छोड़े हुए माल में आठवां हिस्सा है (उन को यह हिस्सा) तुम्हारी वसिय्यत और क़र्ज़ को अदा करने के बाद मिलेगा।"

[सूर-ए-निसा : १२]

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — सुबह के वक़्त की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम सुबह करो तो यह दुआ पढ़ो : ((اَللّٰهُمَّ بِكَ اَصْبَحْنَا وَبِكَ اَمْسَيْنَا وَبِكَ نَحْيَا وَبِكَ نَمُوْتُ وَاِلَيْكَ النُّشُوْرُ)) तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हम ने तेरी ही मदद से सुबह की और तेरी ही मदद से शाम की, तेरी ही (मर्ज़ी से) हम ज़िन्दा हैं और तेरी ही मर्ज़ी से हम मरेंगे और तेरे ही पास (क़यामत के दिन) उठ कर जाना है।"

[अमलुल यौम वल्लैलह लिइब्ने सुन्नी : ३५, अन अबी हुरैरह رضی اللہ عنہ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	इस्तेख़ारा करना नेक बख़्ती की अलामत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "इब्ने आदम की नेक बख़्ती और सआदत में से यह है के वह अल्लाह तआला से अपने कामों में इस्तेख़ारा करे और आदमी की बदबख़्ती में से यह है के अल्लाह तआला से इस्तेख़ारा करना छोड़ दे।"

[मुस्तदरक : १९०३, अन सअद बिन अबी वक्कास ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	ज़कात न देने का अंजाम

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग सोना या चाँदी जमा कर के रखते हैं और उस को अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च नहीं करते (ज़कात अदा नहीं करते) आप उन को दर्दनाक अज़ाब की ख़बर सुना दीजिये के जिस दिन उस सोने चाँदी को आग में तपाया जाएगा, फिर उस से उन की पेशानियों और उन के पहलुओं और उन की पीठों को दागा जाएगा (और) कहा जाएगा, यही है वह (सोना, चाँदी) जिस को तुम ने अपने लिये जमा किया था, तो (अब) अपने जमा किये हुए का मज़ा चखो।"

[सूर-ए-तौबा : ३४ ता ३५]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	माल व औलाद दुनिया की ज़ीनत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "माल और औलाद यह सिर्फ दुनिया की ज़िन्दगी की एक रौनक़ है और (जो) नेक आमाल हमेशा बाक़ी रहने वाले हैं वह आप के रब के नज़दीक सवाब और बदले के एतेबार से भी बेहतर हैं।" (लिहाज़ा नेक अमल करने की पूरी कोशिश करनी चाहिये और उस पर मिलने वाले बदले की उम्मीद रखनी चाहिये)

[सूर-ए-कहफ : ४६]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जहन्नम की गर्मी

हज़रत उमर ؓ बयान करते हैं के जिब्राईल ؑ ने रसूलुल्लाह ﷺ से कहा : "मुझे उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को हक़ के साथ भेजा है ! अगर जहन्नम से एक सूई के नाके के बराबर सूराख़ कर दिया जाए, तो उस की गर्मी से रूए ज़मीन पर रहने वाले सब मर जाएँ।"

[तबरानी औसत : २६८३]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बवासीर और जोड़ों के दर्द का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अंजीर खाओ, क्योंकि यह बवासीर को ख़त्म करता है और जोड़ों के दर्द में मुफीद है।"

[कन्ज़ुल उम्माल : २८२७६, अन अबी ज़र ؓ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

हज़रत अबू हुरैरह ؓ फर्माते हैं : "मेरे ख़लील रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे तीन चीज़ों की वसिय्यत फ़र्माई है, मैं उन को मरते दम तक नहीं छोड़ूंगा : (१) हर महीने तीन नफली रोज़े रखने की (२) नमाज़े चाश्त (कम अज़ कम) दो रकातें पढ़ने की (३) सोने से पहले वित्र पढ़ने की।"

[बुख़ारी : ११७८, अन अबी हुरैरह ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(१५) मुहर्रमुल हराम

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत हूद ﷺ की दावत

जब क़ौमे आद शिर्क व बुत परस्ती में हद से बढ गई, तो अल्लाह तआला ने हज़रत हूद ﷺ को नबी बना कर उन की हिदायत के लिये भेजा। उन्होंने क़ौम के लोगों को तौहीद व इबादते इलाही की दावत दी, शिर्क व बुत परस्ती और लोगों पर ज़ुल्म व ज़ियादती करने से मना किया। क़ौम ने उन की नसीहत क़ुबूल करने के बजाए झुटलाना शुरू कर दिया, हज़रत हूद ﷺ ने उन्हें अल्लाह तआला के अज़ाब से डराया तो वह लोग मज़ाक़ उड़ाते हुए कहने लगे के अगर तुम अपनी दावत में सच्चे हो, तो हमारे पास अज़ाब लेकर आओ अल्लाह तआला ने इस हट धर्मी और मुतालबे पर तीन साल तक क़हत साली के अज़ाब में मुब्तला कर दिया। जिस की वजह से उन के बाग़ात व खेतियाँ सब बरबाद हो गई, इतनी बड़ी तबाही से इबरत हासिल करने के बजाए उस बदबख्त क़ौम की बग़ावत व सरकशी और ज़ियादा बढ गई, बिलआखिर दोबारा अल्लाह तआला का ग़ज़ब भड़क उठा और एक हफ्ते तक चलने वाली तूफानी हवाओं ने उन का नाम व निशान मिटा कर रख दिया। क़ौमे आद की हलाकत के बाद हज़रत हूद ﷺ अहले ईमान को लेकर यमन के शहर "हज़र मौत" चले गए और यहाँ पचास साल तक दावत व तब्लीग़ का फरीज़ा अन्जाम देने के बाद ४६४ साल की उम्र में इन्तेक़ाल फ़र्माया।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — ज़मीन व आस्मान को छ: दिन में पैदा करना

कुर्आन के बयान के मुताबिक अल्लाह तआला ने सातों ज़मीन व आस्मान और उन के दर्मियान की तमाम चीज़ों को सिर्फ छ: दिन में पैदा फर्माया और इतने बड़े काम में उसे थकन भी नहीं हुई, जब के आज के तरक़्क़ी याफ्ता साइंसी दौर में बड़ी बड़ी मशीनों के ज़रिये एक बिल्डिंग बनाने में बरसों लग जाते हैं और उस की तामीर में बड़े बड़े माहिर इन्जीनियर और सैंकड़ों मज़दूर काम करते हैं, मगर अल्लाह तआला ने तन्हा सातों आस्मान और पूरी काएनात को सिर्फ छ: दिन में बना कर अपनी ज़बरदस्त कुदरत का मुज़ाहेरा फर्माया है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — अल्लाह हर एक को दोबारा ज़िन्दा करेगा

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अल्लाह ही वह है जिस ने तुम को पैदा किया और वही तुम्हें रोज़ी देता है, फिर (वक़्त आने पर) वही तुम को मौत देगा और फिर तुम को वही दोबारा ज़िन्दा करेगा।"

[सूर-ए-रूम : ४०]

फायदा : मरने के बाद अल्लाह तआला दोबारा ज़िन्दा करेंगे, जिस को "बअस बअदल मौत" कहते हैं, इस के हक़ होने पर ईमान लाना फर्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	हुज़ूर ﷺ के सलाम का अन्दाज़

हज़रत मिक़्दाद رضي الله عنه ज़िक्र करते है के आप ﷺ रात को तशरीफ लाते और इस तरह सलाम करते के जागने वाला तो सुन लेता और सोने वाला बेदार न होता। [मुस्लिम:५३६२]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	गुस्सा दूर करने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब किसी को गुस्सा आए तो वह

((أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ))

पढ ले गुस्सा जाता रहेगा।" [मुस्लिम : ६६४६, अन सुलेमान बिन सुरद رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	क़तअ् रहमी करने वाला जन्नत से महरूम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "क़तअ् रहमी करने वाला जन्नत में दाखिल नहीं होगा।"

[मुस्लिम : ६५२०, अन जुबैर बिन मुतइम رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	कौन सा माल बेहतर है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब सूरज निकलता है, तो उस के दोनों जानिब दो फरिश्ते रोज़ाना एलान करते हैं : ऐ लोगो ! अपने रब की तरफ मुतवज्जेह हो जाओ जो माल थोड़ा हो और वह काफी हो जाए, वह बेहतर है, उस ज़ियादा माल से जो अल्लाह तआला के अलावा दूसरी चीज में मशगूल करदे।" [मुस्नदे अहमद : २१२१४, अन अबी दर्दा

नंबर (८): आखिरत के बारे में	अहले जहन्नम की तमन्ना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जिस दिन यह गुनहगार लोग फरिश्तों को देखेंगे, उस दिन उन के लिये कोई खुश्खबरी नहीं होगी और उन की ख़तरनाक शक्लें देख कर कहेंगे के हमारे और उन फरिश्तों के दर्मियान कोई आड़ क़ाएम कर दी जाए।" [सूर-ए -फुरक़ान : २२]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मेहंदी का इस्तेमाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "बालों के लिये मेहंदी इस्तेमाल करो, क्यों कि यह तुम्हारी जवानी, हुस्न व जमाल और मर्दाना कुव्वत को बढ़ाता है।" [कन्ज़ुल उम्माल:१७३००, अन अनस رضي الله عنه]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम पर फर्ज़ किया जाता है के जब तुम में से किसी के मरने का वक़्त आजाए, अगर वह कुछ माल भी छोड़ रहा हो तो वह अपने माँ बाप रिश्तेदारों के लिये इन्साफ के साथ वसिय्यत कर जाए। इस हुक्म का पूरा करना खुदा से डरने वालों के लिये ज़रूरी है।"

[सूर-ए -बक़रह : १८०]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

१६ मुहर्रमुल हराम

नंबर १: इस्लामी तारीख़ — क़ौमे समूद

क़ौमे समूद का ज़िक्र क़ुर्आन मजीद में २३ मर्तबा आया है। क़ौमे आद की हलाकत के बाद यह अरब की मशहूर और क़दीम तरीन क़ौम है। इस का नसब हज़रत नूह ﷺ के बेटे साम से मिलता है, हिजाज़ व शाम के दर्मियान वादिए क़ुरा के मैदान में उन की आबादियाँ थी, जिन के खंडरात व निशानात आज भी मौजूद हैं। इन का दारूलहुकूमत मदीना तय्यबा से शिमाल की तरफ मक़ामे हिज्र में था, जिसे अब "मदाइने सालेह" कहते हैं। इस क़ौम का ज़माना हज़रत इब्राहीम ﷺ से पहले का है, यह अपने वक़्त की मोहज़्ज़ब, तरक़्क़ी याफ्ता, ताक़तवर और बड़ी मालदार क़ौम थी, पहाड़ों को तराश कर बड़ी बड़ी इमारतें बनाना और संग तराशों को भारी मज़दूरी दे कर बड़े बड़े बुत बनवाना इन की ज़िन्दगी का महबूब मश्ग़ला था, इन के दिलों में बुतों की इतनी अक़ीदत व मुहब्बत पैदा होगई थी के अल्लाह तआला को छोड़ कर इन्हीं की पूजा को अपनी नजात का ज़रिया समझने लगे थे। जब उस क़ौम की शिर्क व बुत परस्ती हद से बढ़ गई, तो अल्लाह तआला ने उन की हिदायत व इस्लाह के लिये हज़रत सालेह ﷺ को रसूल बना कर भेजा।

नंबर २: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — सब से बड़ा मुअ्जिज़ा क़ुर्आन है

क़ुर्आने करीम सब से बड़ा मुअ्जिज़ा है, जो आप ﷺ को दिया गया, ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ फर्माते हैं : "जितने पैग़म्बर गुज़रे हैं, उन में से हर एक को ऐसे ऐसे मुअ्जिज़े दिये गए, जिन को देख कर लोग ईमान लाए (बाद के ज़माने में उन का कोई असर न रहा) और मुझ को जो मुअ्जिज़ा अल्लाह तआला ने दिया है वह "क़ुर्आन" है, जिस को वही के ज़रिये मुझ पर उतारा है (इस का असर क़यामत तक बाक़ी रहेगा), तो मुझे उम्मीद है के क़यामत के दिन मेरे मानने वालों की तादाद दूसरे पैगम्बरों के मानने वालों से ज़ियादा होगी।

[बुख़ारी : ४९८१, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ में किबला की तरफ रुख करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है: "तुम जहाँ कहीं भी रहो (नमाज़ में) अपने चेहरों को उसी (बैतुल्लाह शरीफ)की तरफ किया करो।"

[सूर-ए-बक़रह : १४४]

(यानी: किबले की तरफ रुख कर के नमाज़ अदा करना फर्ज़ है।)

नंबर ४: एक सुन्नत के बारे में — शाम के वक़्त की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ शाम के वक़्त यह दुआ पढ़ते थे :

((أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ، وَالْحَمْدُ كُلُّهُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ، لَا شَرِيْكَ لَهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَإِلَيْهِ الْمَصِيْرُ))

तर्जमा : हम ने और पुरी दुनिया ने शाम की अल्लाह के लिये और तमाम तारीफें अल्लाह के लिये है, उस का कोई शरीक नहीं, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और उसी की तरफ लौटना है।

[अल अदबुल मुफरद : ६०४, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	आग बुझाने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: "जब तुम (कहीं) आग लगी हुई देखो तो ((اَللّٰهُ اَكْبَرُ)) कहो क्योंकि اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहना उस आग को बुझा देता है।"

[अमलुलयौम वल्लैलह लि इब्ने सुन्नी : २९४, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	तंगी के डर से फॅमिली प्लानिंग

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अपनी औलाद को तंगी के डर से क़त्ल मत करो, हम उन को भी रिज़्क़ देंगे और तुम को भी, बेशक उन का क़त्ल करना बड़ा गुनाह है।"

[सूर-ए-बनी इसराईल : ३१]

खुलासा : मआशी तंगी के डर से बच्चों को मार डालना या हमल गिराना या और कोई तदबीर इख्तियार करना के हमल ही न ठहरे, यह सब गुनाह और हराम है।

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की चीज़ें चन्द रोज़ा हैं

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : जो कुछ भी तुम को दिया गया है, वह सिर्फ चन्द रोज़ा ज़िन्दगी के लिये है और वह उस की रौनक़ है और जो कुछ अल्लाह तआला के पास है वह उस से कहीं ज़ियादा बेहतर और बाक़ी रहने वाला है। क्या तुम लोग इतनी बात भी नहीं समझते ?

[सूर-ए-क़सस : ६०]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	अहले जन्नत को खुशखबरी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: "एक पुकारने वाला जन्नतियों को पुकार कर कहेगा तुम हमेशा तन्दुरुस्त रहोगे कभी बीमार न होगे : तुम हमेशा ज़िन्दा रहोगे, कभी मौत नहीं आएगी, तुम हमेशा जवान रहोगे, कभी बूढ़े नहीं होगे, तुम हमेशा खुशहाल रहोगे, कभी मोहताज न होगे।"

[मुस्लिम: ७१५७, अन अबी सईद व अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मेथी से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मेथी से शिफा हासिल करो।"

[ज़ादुल मआद : २६९/४, अन कासिम बिन अब्दुर्रहमान]

फायदा: मेथी का जोशांदा नज़ला, ज़ुकाम को दूर करता है पुरानी खांसी, पेट के फोड़ों और फेफड़े की बीमारियों में बहुत नफ्अ बख्श है, सीने में जमे हुए बलगम के लिए बेहद मुफीद है और कब्ज़ को दूर करता है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मुशरिकीन की मुखालफत करो, दाढ़ी बढ़ाओ और मूंछों को खूब कतरवाओ।"

[बुखारी : ५८९२, अन इब्ने उमर ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

१७ मुहर्रमुल हराम

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — हज़रत सालेह ﷺ की दावत और क़ौम का हाल

हज़रत सालेह ﷺ हजरत हूद ﷺ के तक़रीबन सौ साल बाद पैदा हुए। क़ुर्आन में उन का तज़किरा ८ जगहों पर आया है। अल्लाह तआला ने उन्हें क़ौमे समूद की हिदायत व रहेनुमाई के लिये भेजा था। उस क़ौम को अपनी शान व शौकत, इज़्ज़त व बड़ाई फख़ व गुरूर और शिर्क व बुत परस्ती पर बड़ा नाज़ था। हज़रत सालेह ﷺ ने उन्हें नसीहत करते हुए फर्माया: ऐ लोगो! तुम सिर्फ अल्लाह की इबादत करो उस के सिवा कोई बन्दगी के लाएक़ नहीं। वह इस पैग़ामे हक़ को सुन कर नफरत का इज़हार करने लगे और हुज्जत बाज़ी करते हुए नुबुव्वत की सच्चाई के लिये पहाड़ से हामिला ऊँटनी निकालने का मुतालबा करने लगे। हज़रत सालेह ﷺ ने दुआ फरमाई, अल्लाह तआला ने मुअजिज़े के तौर पर सख़्त चटान से ऊँटनी पैदा करदी, मगर अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ मुअजिज़ा मिलने के बाद भी इस बदबख़्त क़ौम ने नहीं माना और कुफ्र व ना फ़र्मानी की इस हद तक पहुँच गई के ऊँटनी को क़त्ल कर डाला और इसी पर बस नहीं किया बल्के हज़रत सालेह ﷺ के क़त्ल का भी मन्सूबा बना लिया। इस जुर्मे अज़ीम और ज़ालिमाना फैसले पर ग़ैरते इलाही जोश में आई और तीन दिन के बाद एक ज़ोरदार चीख़ और ज़मीनी ज़लज़ले ने पूरी क़ौम को तबाह कर डाला। इस के बाद हज़रत सालेह ﷺ ईमान वालों के साथ फलस्तीन हिजरत कर गए।

नंबर २ : अल्लाह की क़ुदरत — दीमक

अल्लाह तआला ने बेशुमार मख़्लूक़ पैदा फ़र्माई है। उन में एक अजीब नाबीना मख़्लूक़ "दीमक" भी है। वह नाबीना होने के बावजूद सर्दी और बारिश से बचने के लिये शान्दार और मज़बूत टावर नुमा घर बनाती है। जिस की ऊँचाई उन की जसामत से हज़ारों गुना ज़ियादा होती है। उन घरों के बनाने में वह मिट्टी और अपने लुआब व फ़ज़्ला का इस्तेमाल करती हैं। उन के घरों में बेशुमार ख़ाने होते हैं। जिन में भूल भूलय्याँ, छोटी छोटी नहरों के रास्ते और हवा के गुज़रने का इन्तेज़ाम होता है। आख़िर बीनाई से महरूम दीमक को टावर नुमा और शान्दार घर बनाने की सलाहियत किस ने अता फ़र्माई? यक़ीनन यह अल्लाह ही की कारीगरी और उसी की क़ुदरत का करिश्मा है।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — दीनी इल्म हासिल करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: "(दीनी) इल्म हासिल करना हर मुसलमान पर फर्ज़ है।"

[इब्ने माजा:२२४, अन अनस बिन मालिक ؓ]

फायदा : हर मुसलमान पर इल्मे दीन का इतना हासिल करना फर्ज़ है के जिस से हलाल व हराम में तमीज कर ले और दीन की सही समझ बूझ, इबादात वग़ैरह के तरीक़े और सही मसाइल की मालूमात हो जाए।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | बीवियों को सलाम करना

हज़रत उम्मे सलमा ﵂ बयान करती हैं के आप ﷺ रोज़ाना सुबह के वक़्त बीवियों के पास तशरीफ ले जाया करते थे और उन को ख़ुद सलाम किया करते थे।
[मजमऊज़्ज़वाइद : २१८/२]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | आफ़त व बला दूर होने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स ((مَا شَاءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ)) पढ लिया करे, तो सिवाए मौत के अपने अहल व अयाल और माल में कोई आफत नहीं देखेगा।" [तबरानी औसत : ४४१२, अन अनस ﵁]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | सिफारिश पर बतौरे हदिया माल लेना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "किसी ने अपने (मुसलमान) भाई की किसी चीज़ में सिफारिश की और सिफारिश करने पर सामने वाले ने उस को कोई चीज़ बतौरे हदिया पेश की और उस ने कुबूल करली, तो वह सूद के बहुत बड़े दरवाज़े पर आ पहुँचा। [अबूदाऊद : ३५४१, अन अबी उमामह ﵁]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | गुनहगारों को नेअ्मत देने का मक़सद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तू यह देखे के अल्लाह तआला किसी गुनहगार को उस के गुनाहों के बावजूद दुनिया की चीज़ें दे रहा है तो यह अल्लाह तआला की तरफ से ढील है।"
[मुस्नदे अहमद : १६८६०, अन उक़्बा बिन आमिर ﵁]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | क़यामत का होलनाक मन्ज़र

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जब कानों के पर्दे फाड़ देने वाला शोर बरपा होगा, तो उस दिन आदमी अपने भाई से अपनी माँ और बाप से, अपनी बीवी और बेटों से भागेगा। उस दिन हर शख़्स की ऐसी हालत होगी, जो उस को हर एक से बेख़बर कर देगी।" [सूर-ए-अबस: ३३ ता ३७]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | मुनक़्क़ा से पठ्ठे वग़ैरह का इलाज

हज़रत अबू हिन्ददारी ﵁ कहते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में मुनक़्क़ा का तोहफा एक बन्द थाल में पेश किया गया, आप ﷺ ने उसे खोल कर इर्शाद फर्माया: "बिस्मिल्लाह" कह कर खाओ मुनक़्क़ा बेहतरीन खाना है जो पठ्ठों को मज़बूत करता है, पुराने दर्द को ख़त्म करता है, गुस्से को ठंडा करता है और मुंह की बदबू को ज़ाइल करता है, बलग़म को निकालता है और रंग को निखारता है।
[तारीख़े दिमश्क़ लि इब्ने असाकिर : ६०/२१]

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : " ऐ ईमान वालो ! तुम अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करो और (शरीअत के मुताबिक़ फैसला करने वाले) हाकिमों की भी इताअत करो।"
[सूर-ए-निसा : ५९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(१८) मुहर्रमुल हराम

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत इब्राहीम عليه السلام

हज़रत इब्राहीम عليه السلام की पैदाइश हज़रत ईसा عليه السلام से दो हज़ार साल क़ब्ल इराक़ में हुई। वह एक अज़ीम पैग़म्बर और हादी व रहेनुमा थे। कुर्आने करीम में ६९ जगह उन का तज़केरा आया है और मक्की व मदनी दोनों तरह की सूरतों में उन्हें "दीने हनीफी" का दाई, हज़रत इस्माईल عليه السلام के वालिदे मोहतरम, अरब के जद्दे अमजद, बैतुल्लाह शरीफ की तामीर करने वाला और अरब क़ौम का हादी व पैग़म्बर बताया गया है। अल्लाह तआला ने उन्हें खास रहमत व बरकत और फज़ीलत से नवाज़ा था, उन के बाद आने वाले सारे अम्बिया उन्हीं की नस्ल में पैदा हुए, इसी वजह से वह "अबुलअम्बिया" के लक़ब से मशहूर हैं। अल्लाह तआला ने नुबुव्वत व रिसालत के साथ माल व दौलत भी अता किया था। सख़ावत व दरिया दिली और मेहमान नवाज़ी में बहुत मशहूर थे, इस के साथ ही सब्र व तहम्मुल, अल्लाह तआला की ज़ात पर मुकम्मल एतेमाद व भरोसा और लोगों पर शफक़त व मेहरबानी उन की खास सिफत थी।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — अबू तालिब का सेहतयाब होना

एक मर्तबा चचा अबू तालिब बीमार हुए, तो आप ﷺ उन की इयादत के लिये गए, अबू तालिब ने फर्माया : ऐ भतीजे ! अपने रब से दुआ करो के वह मुझे आफियत बख़्शे, तो आप ﷺ ने दुआ फर्माई : "या अल्लाह ! मेरे चचा को शिफा अता फर्मा" । बस फौरन अबू तालिब खड़े होगए और कहने लगे : ऐ भतीजे ! आप का रब तो आप का हर सवाल पूरा करता है, तो उस पर आप ﷺ ने फर्माया : ऐ मेरे चचा ! अगर आप भी अल्लाह तआला की इताअत करें , तो वह आप का भी सवाल पूरा करेगा।

[तबरानी औसत : ४१२०, अन अनस رضي الله عنه]

नंबर (३): एक फर्ज़ के बारे में — जमात के साथ नमाज़ अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स नमाज़ के लिये कामिल वुज़ू करता है फिर फर्ज़ नमाज़ के लिये चल कर जाता है और लोगों के साथ नमाज़ पढ़ता है या आप ﷺ ने फर्माया : जमात के साथ नमाज़ पढ़ता है या फर्माया : नमाज़ मस्जिद में अदा करता है, तो अल्लाह तआला उस के गुनाहों को माफ़ फर्मा देते हैं।"

[मुस्लिम : ५४९, अन उस्मान बिन अफ्फान رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — दूध पीने के बाद की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिसे अल्लाह तआला दूध पिलाए तो यह दुआ पढ़नी चाहिये।

((اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ وَزِدْنَا مِنْهُ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह इस में हमारे लिये बरकत अता फर्मा और ज़ियादा अता फर्मा।

[तिर्मिज़ी : ३४५५, अन इब्ने अब्बास رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | नुक़्सान से हिफाज़त

रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन खुबैब رضی اللہ عنہ से फर्माया : "तुम रोज़ाना सुबह, शाम तीन तीन मर्तबा "सूर-ए-इख़्लास" और "मुअव्वज़तैन" यानी ((قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ)) और ((قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ)) पढ़ा करो, यह सूरतें हर नुक़्सान देने वाली चीज़ से तुम्हारी हिफाज़त का ज़रिया होंगी।

[तिर्मिज़ी : ३५७५ अन अब्दुल्लाह बिन खुबैब رضی اللہ عنہ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | फुज़ूल कामों में माल ख़र्च करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "बाज़ लोग वह हैं, जो ग़फलत में डालने वाली चीज़ों को ख़रीदते हैं , ताके बे सोचे समझे अल्लाह के रास्ते से लोगों को गुमराह करें और सीधे रास्ते का मज़ाक़ उड़ाएँ , ऐसे लोगों के लिये बड़ी रूस्वाई का अज़ाब है।" [सूर-ए-लुक़मान : ६]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | माल व औलाद अल्लाह के क़ुर्ब का ज़रिया नहीं

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : " तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद ऐसी चीज़ नहीं जो तुम को हमारा महबूब बना दे, मगर हाँ, जो ईमान लाए और नेक अमल करता रहे, तो ऐसे लोगों को उन के आमाल का दुगना बदला मिलेगा और वह जन्नत के बाला खानों में आराम से रहेंगे।" [सूर-ए-सबा : ३७]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | जहन्नम के हथौड़े का वज़न

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अगर (जहन्नम के) लोहे का एक गुर्ज़ ज़मीन पर रख दिया जाए और उस (को उठाने) के लिये तमाम इन्सान और जिन्नात मिल जाएँ, तब भी उसे ज़मीन से नहीं उठा सकेंगे।"

[मुस्नदे अहमद : १०८४८, अन अबी सईद खुदरी رضی اللہ عنہ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | बीमार के लिए जौ मुफीद है

एक मर्तबा उम्मे मुन्ज़िर के घर पर रसूलुल्लाह ﷺ के साथ हज़रत अली भी खजूर खा रहे थे, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "ऐ अली ! बस करो, इस लिए के तुम अभी कमज़ोर हो"। उम्मे मुन्ज़िर का बयान है के मैं ने उन के लिए चुकंदर और जौ का खाना तय्यार किया ,तो रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ से फर्माया :" ऐ अली ! इस को खाओ, इस लिए के यह तुम्हारे लिए मुफीद तरीन है।"

[अबू दाऊद : ३८५६, अन उम्मे मुन्ज़िर बिन्ते क़ैस رضی اللہ عنہا]

फायदा : चुकंदर (Beetroot) और जौ बीमार आदमी के लिये बहुत मुफीद हैं चुकंदर ख़ून को साफ करता है और जौ कम्ज़ोरी को दूर करता है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अगर तुम पर किसी नाक, कान कटे हुए काले गुलाम को भी अमीर बना दिया जाए, जो तुम्हें अल्लाह तआला की किताब के ज़रिये अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ चलाए तो तुम उस का हुक्म सुनो और मानो।" [मुस्लिम : ३१३८, अन उम्मे हुसैन رضی اللہ عنہا]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१९) मुहर्रमुल हराम

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत इब्राहीम عليه السلام की क़ौम की हालत

हज़रत इब्राहीम عليه السلام ने जिस ख़ान्दान और माहौल में आँखें खोली, उस में शिर्क व बुत परस्ती और ज़लालत व गुमराही बिल्कुल आम थी। सारे लोग बुतों की पूजा करते और चाँद, सूरज और सितारों को अपनी हाजत व ज़रूरत पूरी करने का ज़रिया समझते। हर एक ने अल्लाह तआला की ताक़त व कुदरत और वह्दानियत को भूल कर बेशुमार चीज़ों को अपना माबूद बना लिया था। खुद हज़रत इब्राहीम عليه السلام के वालिद आज़र अपनी क़ौम के मुख़्तलिफ क़बीलों के लिये लकड़ियों के बुत बनाते और लोगों के हाथों फरोख़्त करते थे और फिर लोग उस की पूजा करते थे। यहां तक के आज़र ख़ुद अपने हाथों से बनाए हुए बुतों की पूजा करते और उन से अक़ीदत व मुहब्बत का इज़हार करते थे। ऐसी जहालत व गुमराही और हक्क व सदाक़त से महरूम माहौल में हज़रत इब्राहीम عليه السلام ने तौहीद की आवाज़ लगाई और लोगों को समझाया। मगर किसी ने आप की दावत को तस्लीम नहीं किया और सख़्ती के साथ मुख़ालफत करने लगे।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — ज़बानों का मुख़्तलिफ होना

अल्लाह तआला ने दुनिया में बेशुमार क़ौमों को पैदा फर्माया। जिन की ज़बान एक दूसरे से अलग है, किसी की ज़बान अरबी है, किसी की फारसी, किसी की अंग्रेज़ी है तो किसी की उर्दू और हिंदी, जब के एक क़िस्म के जानवर और परिन्दों की बोली एक होती है। लेकिन इन्सानी क़ौमों की बोलियाँ बिल्कुल मुख़्तलिफ हैं, बल्के इन्सानों में से ही मर्दों, औरतों और लड़के लड़कियों की आवाज़ भी एक दूसरे से जुदा होती है। हालाँकि सब की ज़बान, होंट, तालू, हलक़ वग़ैरह एक ही तरह के हैं। इस के बावजूद इन्सानों की ज़बान , आवाज़ और लब व लेहजे का मुख़्तलिफ होना अल्लाह की अज़ीम कुदरत है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — कुर्आने मजीद पर ईमान लाना

कुर्आन मेंअल्लाह तआला फर्माता है :"ऐ ईमान वालो! अल्लाह की ज़ात, उस के रसूल और उस की किताब(यानी कुर्आन) पर ईमान लाओ, जिस को अल्लाह ने अपने रसूल पर नाज़िल फर्माया है और उन किताबों पर भी (ईमान लाओ) जो उन से पहले नाज़िल की जा चुकी हैं।" [सूर-ए-निसा : १३६]

ख़ुलासा: कुर्आने करीम को अल्लाह तआला की उतारी हुई किताब समझना और उस के हर्फ ब हर्फ सही होने का यकीन रखना फर्ज़ है ।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — माँगने वालों को नर्मी से जवाब देना

हज़रत अली رضي الله عنه बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ से जब कोई हाजत तलब करता, तो आप ﷺ उस की ज़रूरत पूरी फर्माते थे, अगर न फर्मा सकते, तो बहुत नर्मी और अख़्लाक़ से उस से कहते और माज़रत फर्माते। [अख़लाक़ुन्नबी लि अबिश्शैख़: १६]

खुलासा : सवाल करने वालों को कुछ न कुछ दे देना चाहिये। अगर कुछ न हो तो उस से नर्मी के साथ माज़रत कर देना चाहिये, उसे झिड़कना और लान तान करना दुरुस्त नहीं है।

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | क़ब्र की वहशत से नजात

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स हर रोज़ सौ मर्तबा ((لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ)) पढ़ेगा, तो उस को फक्र व तंगदस्ती से पनाह मिलेगी, क़ब्र की वहशत से नजात होगी, माल व दौलत से नवाज़ा जाएगा और उस के लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाएँगे।" [कंज़ुलउम्माल : ५०५५]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | शतरंज खेलने की मुमानअत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: "जो शख़्स शतरंज (यानी चौसर) खेलता है, वह गोया अपना हाथ खिन्ज़ीर के गोश्त और खून में रंगता है।" [मुस्लिम : ५८९६, अन बुरैदा ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया का फायदा वक़्ती है

एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी तक़रीर में फर्माया : "ग़ौर से सुन लो ! दुनिया एक वक़्ती फायदा है, जिस से हर शख़्स फायदा उठाता है, चाहे नेक हो या गुनहगार।"

[मुअ्जमे कबीर : ७०१२, अन शद्दाद बिन औस ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | अहले जन्नत का शुक्र अदा करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "(जन्नती जन्नत में दाख़िल होकर) कहेंगे के हम्द और शुक्र उस अल्लाह के लिये है जिस ने हम से हर क़िस्म का ग़म दूर कर दिया। बेशक हमारा रब बड़ा बख़्शने वाला, बड़ा क़द्र दाँ है, जिस ने अपने फ़ज़्ल से हम को हमेशा रहने की जगह में उतारा। जहाँ न हम को कोई तकलीफ पहुँचेगी और न हम को किसी क़िस्म की तकान महसूस होगी।"

[सूर-ए-फातिर : ३४ ता ३५]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | घेकवार और राई के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : दो कड़वी चीज़ों में किस क़द्र शिफा है ! (यानी) घेकवार (एल्वा) और राई में। [सुननुल कुब्रा लिल बैहकी : ३४६/९, अन कैस इब्ने राफेअ अशजई ؓ]

नोट : घेकवार चेहरे पर लगाने से उस को निखारता है, जिल्द की खुश्की दूर करता है, सर पर लगाने से बाल उगाता है, जले और कटे हुए निशानात को दूर करता है, इस के इस्तेमाल करने से शूगर के मरीज को आफियत होती है और राई का तेल दिमाग को कुव्वत बख़्शता है, मालिश करने से जिस्म में चुस्ती पैदा करता है।

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : ऐ इन्सान ! तुझे अपने करीम रब के बारे में किस चीज़ ने धोके में डाल रखा है ? (हालाँ के) उस ने तुझ को पैदा किया, फिर तेरे आज़ा को दुरुस्त किया (और) फिर तुझ को बराबर किया (और) जिस सूरत में चाहा तुझ को जोड़ कर (बना दिया)।"

[सूर-ए-इन्फितार ६ ता ८]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२०) मुहर्रमुल हराम

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत इब्राहीम ﷺ की दावत

जब हज़रत इब्राहीम ﷺ ने अपनी क़ौम की शिर्क व बुत परस्ती और ज़लालत व गुमराही का मुशाहदा किया, तो उन्हें सीधी राह पर लाने की कोशिश करने लगे। सब से पहले अपने बाप को मुख़ातब होकर कहा : अब्बा जान ! आप ऐसी चीज़ों की क्यों इबादत करते हैं, जो सुनने देखने और बोलने की भी सलाहियत नहीं रखतीं, न ही वह नफा व नुक़सान की मालिक हैं, वह चीज़ें बज़ाते ख़ुद बेबस और लाचार हैं, उन में अपने वुजूद को भी बाक़ी रखने की ताक़त नहीं है। ऐसी चीज़ें दूसरों के क्या काम आ सकती हैं। अब्बा जान ! सीधी और सच्ची राह वही है, जो मैं बता रहा हूँ के एक अल्लाह की इबादत करो, वही मौत व हयात का मालिक है। वही लोगों को रिज़्क़ देता है, उसी के रहम व करम से आख़िरत में कामयाबी मिल सकती है , वही हर एक को नजात देने पर क़ादिर है और वह ज़बरदस्त कुव्वत व ताक़त का मालिक है। हज़रत इब्राहीम ﷺ ने उस के बाद क़ौम के लोगों को भी इन्हीं बातों की नसीहत की। मगर अफसोस ! किसी ने भी आप ﷺ की दावत को क़ुबूल नहीं किया। उन के वालिद ने तो यहाँ तक कह दिया के इब्राहीम ! अगर तू बुतों की बुराई से बाज़ नहीं आया, तो मैं तुझे संगसार कर दूँगा। फिर पूरी क़ौम भी हज़रत इब्राहीम ﷺ के ख़िलाफ साज़िशें करने लगी।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — एक इशारे में दरख़्त का दो हिस्सा होजाना

मक्का में रूकाना नामी एक आदमी था, जो बहुत बहादुर और ताकतवर था। रसूलुल्लाह ﷺ ने उस को इस्लाम की दावत दी, तो उस ने कहा : पहले मुझे कोई निशानी बतलाओ, तो हुज़ूर ﷺ ने फर्माया : इस के बाद ईमान ले आओगे? तो उस ने कहा : हाँ ! क़रीब में काँटों का एक दरख़्त था, जो बहुत ही गुंजान और शाख़ों वाला था। हुज़ूर ﷺ ने उस की तरफ़ इशारा कर के फर्माया : इधर आ ! तो उस दरख़्त के दो हिस्से होगए, एक हिस्सा अपनी जगह रहा और दूसरा हिस्सा हुज़ूर ﷺ के सामने आकर खड़ा हो गया, रूकाना बोला ऐसा है तो इस को हुक्म दो के वापस चला जाए, तो हुज़ूर ﷺ के इशारे पर वह वापस चला गया। जब वह दोनों हिस्से आपस में मिल गए, तो हुज़ूर ﷺ ने रुकाना से कहा : ईमान ले आओ, लेकिन वह ईमान नहीं लाया।

[दलाइलुन्नुबुव्वह लिलअसफहानी : २८८, अन अबी उमामा ﷺ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म देना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "आप अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म करते रहिये और ख़ुद भी नमाज़ के पाबन्द रहिये, हम आप से रोज़ी तलब नहीं करते, रोज़ी तो आप को हम देंगे और अच्छा अंजाम तो परहेज़गारी ही का है।"

[सूर-ए-ताहा : १३२]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — अल्लाह से रहम तलब करना

अल्लाह तआला से रहम तलब करने के लिये इस दुआ का एहतेमाम करना चाहिये, यह दुआ ﴿اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ﴾ हज़रत मूसा ﷺ ने कोहे तूर पर जाते वक़्त पढ़ी थी।

तर्जमा : (ऐ अल्लाह) आप ही हमारी खबर रखने वाले हैं, इस लिये हमारी मग़फिरत और हम पर रहम फर्मा और आप सब से ज़ियादा बेहतर माफ करने वाले हैं। [सूर-ए-आराफ : १५५]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | दोज़ख से नजात

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: "जब तुम मग़रिब की नमाज़ से फारिग़ हो जाओ, तो सात मर्तबा यह दुआ पढ लिया करो। ((اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ)) ऐ अल्लाह ! मुझ को दोज़ख से महफूज़ रखिये, जब तुम इस को पढ लो और फिर उसी रात तुम्हारी मौत आजाए तो दोज़ख से महफूज़ रहोगे और अगर इस दुआ को सात मर्तबा फज्र की नमाज़ के बाद (भी) पढ लो और उसी दिन तुम्हारी मौत आजाए तो दोज़ख से महफूज़ रहोगे।" [अबू दाऊद : ५०७९, अन मुस्लिम बिन हारिस तमीमी رضي الله عنه]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में | झूटी तोहमत लगाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को बग़ैर किसी जुर्म के तोहमत लगा कर तकलीफ पहुँचाते हैं, तो यक़ीनन वह लोग बड़े बोहतान और खुले गुनाह का बोझ उठाते हैं।" [सूर-ए-अहज़ाब : ५८]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में | दुनियावी ज़िन्दगी एक धोका है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ लोगो ! बेशक अल्लाह तआला का वादा सच्चा है, फिर कहीं तुम को दुनियवी ज़िन्दगी धोके में न डाल दे और तुम को धोके बाज़ शैतान किसी धोके में न डाल दे, यक़ीनन शैतान तुम्हारा दुश्मन है। तुम भी उसे अपना दुश्मन ही समझो। वह तो अपने गिरोह (के लोगों) को इस लिये बुलाता है के वह भी दोज़ख वालों में शामिल होजाएँ।" [सूर-ए-फातिर : ५ ता ६]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में | पुलसिरात से अल्लाह की रहमत से नजात

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया :"क़यामत के दिन लोगों को पुल सिरात पर सवार किया जाएगा तो वह उस के किनारे से इस तरह से गिरेंगे जिस तरह से पतिंगे आग में गिरते हैं, पस अल्लाह तआला जिसे चाहेंगे अपनी रहमत से नजात अता फर्माएँगे।" [मुस्नदे अहमद : १९९२७, अन अबी बकरह رضي الله عنه]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज | सफर जल (Pear) के फ़वाइद

हज़रत तल्हा رضي الله عنه फर्माते हैं के मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ, तो आप ﷺ के दस्ते मुबारक में एक सफर जल (बही) था, फिर आप ﷺ ने फर्माया: "तल्हा ! इसे लो क्योंकि यह दिल को सुकून पहुँचाता है।" [इब्ने माजा : ३३६९]

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : मेरी तरफ से (दीन की बात लोगों को) पहुँचाओ अगरचे एक ही आयत हो।" [बुखारी : ३४६१, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र رضي الله عنه]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

२१ मुहर्रमुल हराम

नंबर १ : इस्लामी तारीख — हज़रत इब्राहीम عليه السلام को सज़ा देने की तजवीज़

हज़रत इब्राहीम عليه السلام की दावते तौहीद की ख़बर आहिस्ता आहिस्ता बादशाह नमरूद को भी पहुँच गई, जिस ने ख़ुदाई का दावा कर रखा था। बादशाह ने हज़रत इब्राहीम عليه السلام को तलब किया। मगर इस अज़ीम पैग़म्बर ने वहाँ भी अल्लाह तआला की वहदानियत और उस की सिफात को ख़ूब अच्छी तरह वाज़ेह किया, जिस से बादशाह लाजवाब हो गया और दुश्मनी पर उतर आया। अब वालिद, क़ौम और बादशाहे वक़्त ने मिल कर उन्हें सज़ा देनी की तदबीर की और बादशाह के मश्वरे पर क़ौम के लोगों ने एक ख़ास जगह में कई रोज़ तक आग दहकाई जिस के शोलों से आस पास की चीज़ें झुलसने लगीं। जब लोगों को यक़ीन हो गया के हज़रत इब्राहीम عليه السلام इस आग से ज़िन्दा बच कर हरगिज़ नहीं निकल सकेंगे तो उन को उस आग में डाल दिया। मगर रब्बुलआलमीन की मदद और उस की ज़बरदस्त ताक़त के सामने उन कम अक़्लों की तदबीरें कहाँ चल सकती थीं। अल्लाह तआला ने आग को हुक्म दिया के ऐ आग ! तू इब्राहीम पर सलामती के साथ ठंडी हो जा। आग शोलों और अंगारों के बावजूद उसी वक़्त उन के हक़ में ठंडी हो गई और हज़रत इब्राहीम عليه السلام उस में सही व सालिम रहे। इस क़ुदरते ख़ुदावन्दी और मुअजिज़े को देखने के बाद भी लोगों ने ईमान क़ुबूल नहीं किया, तो हज़रत इब्राहीम عليه السلام ने हिजरत का इरादा फ़र्मा लिया और हज़रत सारा رضي الله عنها और अपने भतीजे हज़रत लूत عليه السلام को ले कर फलस्तीन, नाबलस और मिस्र वग़ैरह की तरफ हिजरत कर गए, इस दौरान दीन की दावत का फरीज़ा भी अन्जाम देते रहे।

नंबर २ : अल्लाह की कुदरत — मोती की पैदाइश

मोती बहुत ही क़ीमती पत्थर होता है, जो सीप के अन्दर बनता है। जब सीप के अन्दर मोती बनने वाला माद्दा पहुँचता है, तो उस पर चमकदार रंगों वाले केलशियम कारबोनेट की तह चढ़ना शुरू हो जाती है, यह माद्दा मोती बनाने में अहम किरदार अदा करता है, इस की मदद से चंद माह में चमकदार क़ीमती और ख़ुबसूरत मोती बन जाता है, आख़िर समन्दर की गहरी तहों में बंद सीप के अंदर इतना क़ीमती मोती कौन बनाता है? बिला शुबा गहरे समन्दर में सीप के अंदर मोती का पैदा करना अल्लाह तआला की ज़बरदस्त क़ुदरत है।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "हम ने इन्सान को अपने माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म दिया है, उस की माँ ने बड़ी मशक्कत के साथ पेट में रखा और बड़ी तकलीफ के साथ उस को जना है।"

[सूर-ए-अहक़ाफ : १५]

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — हदिया क़बूल करना

हज़रत आयशा رضي الله عنها बयान करती है : रसूलुल्लाह ﷺ हदिया क़बूल फर्माते थे और उस का बदला भी इनायत फर्माते थे।

[बुख़ारी : २५८५]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	ज़िक्र करने वाला ज़िन्दा है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स अपने रब का ज़िक्र करे और जो अल्लाह का ज़िक्र न करे उस की मिसाल ज़िन्दा और मुर्दे की तरह है (यानी ज़िक्र करने वाला ज़िन्दा है और ज़िक्र न करने वाला मुर्दे की तरह है)।"

[बुखारी : ६४०७, अन अबी मूसा ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	ईमान वालों को तकलीफ न देना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस शख्स ने किसी मुसलमान को तकलीफ दी, उस ने मुझे तकलीफ पहुँचाई और जिस ने मुझे तकलीफ पहुँचाई उस ने अल्लाह को तकलीफ पहुँचाई।"

[मोअ्जमे औसत लित्तबरानी : ३७४५, अन अनस बिन मालिक ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	इस्तिग़ना इन्सान को महबूब बना देता है

एक शख्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ ! मुझे कोई ऐसा अमल बता दीजिये जिस को मैं करूं ताके अल्लाह तआला और लोग मुझ से मुहब्बत करने लगें। रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "दुनिया से मुँह मोड़ लो, तो अल्लाह तुम से मुहब्बत करने लगेगा और जो लोगों के पास है (यानी माल व दौलत) उस से बेरुख़ी इख्तियार करलो, तो लोग तुम से मुहब्बत करने लगेंगे।"

[इब्ने माजा : ४१०२, अन सहल बिन सअद ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले जहन्नम की फरियाद

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "दोज़ख़ी फरियाद करते हुए कहेंगे : ऐ हमारे परवरदिगार ! हमें इस जहन्नम से निकाल कर (दुनिया में भेज दीजिये) फिर अगर दोबारा हम ऐसे गुनाह करें, तो हम ही कुसूरवार और सज़ा के मुस्तहिक़ होंगे। अल्लाह तआला फर्माएगा : तुम इसी जहन्नम में फिटकारे हुए पड़े रहो मुझ से बात मत करो।"

[सूर-ए-मोमिनून : १०७ ता १०८]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	ज़ुकाम का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया :" तुम लोग मरज़न्जूश को सूंघा करो, क्यों कि यह ज़ुकाम के लिए मुफीद है।"

[कन्ज़ुल उम्माल : १७३४१]

नोट : अल्लामा इब्ने कय्यिम رحمه الله फर्माते हैं के इस की खुश्बू ज़ुकाम की बंदिश को खोल देती है। इस से जमा हुआ नज़्ला पतला हो कर बह जाता है और फेफड़ों पर जमा हुआ बल्ग़म निकल जाता है नीज़ इस में दुसरे भी बहुत से फवाइद हैं।

[तिब्बे नब्वी]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है :" तुम सब मिल कर अल्लाह की रस्सी को मज़बूत पकडे रहो (यानी कुर्आने करीम के बताए हुए तरीके और ज़ाब्ते पर चलो) और आपस में ना इत्तेफाक़ी मत करो (अगर तुम ना इत्तेफाक़ी की वजह से आपस में बिखर गए तो दुश्मन के मुक़ाबले में तुम नाकाम हो जाओगे और तुम्हारी कुव्वत व ताक़त खत्म हो जाएगी)।"

[सूर-ए-आले इमरान : १०३]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

२२ मुहर्रमुल हराम

नंबर १: इस्लामी तारीख — हज़रत इब्राहीम ﷺ की आज़माइश

हज़रत इब्राहीम ﷺ की पूरी ज़िन्दगी आज़माइशों से भरी हुई है, उन्हें बड़े बड़े इम्तेहान से गुज़रना पड़ा। मगर हर मौक़े पर अल्लाह तआला ने उन्हें नजात दी। ग़ौर कीजिये के जब उन के वालिद समेत पूरी क़ौम और बादशाहे वक़्त ने पैग़ामे हक़ सुनाने की वजह से दहेकती हुई आग में डालने का फैसला किया तो बातिल परस्तों का यह खतरनाक फैसला भी हज़रत इब्राहीम ﷺ के क़दमों को डगमगा न सका। फिर जब बुढ़ापे की उम्र में दुआओं और हज़ार तमन्नाओं के बाद हज़रत इस्माईल ﷺ की पैदाइश हुई तो उन्हें बिल्कुल बचपन ही में, अपने से जुदा करने का अल्लाह तआला ने हुक्म दिया और जब वह कुछ बड़े हुए तो फिर अल्लाह तआला ने उन्हें अपने नाम पर कुर्बान करने का हुक्म दिया। यह सब ऐसे सख़्त मराहिल थे के जहाँ बड़े बड़े जवाँ मर्द के क़दम भी डगमगाने लगते है: मगर कुर्बान जाइये हज़रत इब्राहीम ﷺ की कुर्बानी और जज़्बए इताअत पर के हुक्म मिलते ही उस को पूरा करने के लिये तय्यार होगए और एक वफादार इन्सान की तरह जो कुछ कर सकते थे कर गुज़रे। यक़ीनन उन की यह बे मिसाल इताअत व फर्मांबरदारी पूरी उम्मत के लिये एक बेहतरीन नमूना और इबरत है।

नंबर २: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — एक प्याला दूध सब के लिये काफी हो गया

हज़रत अली ؓ रिवायत करते हैं के अब्दुल मुत्तलिब के ख़ान्दान में चालीस आदमी थे। एक मर्तबा आप ﷺ ने उन की दावत की, उन में कुछ लोग तो इतने मज़बूत थे के अकेले ही पूरी बकरी खा जाता और आठ सेर दूध पी जाता था। आप ﷺ ने एक साअ आटा और बकरी का एक पैर पकवाया, उसी में उन सब ने पेट भर कर खाया और रोटी बची रही, फिर आप ﷺ ने तीन चार आदमियों के पीने के लाएक़ एक बड़े प्याले में दूध मंगाया और सब को बुलाया, उन तमाम लोगों ने दूध सैर हो कर पिया, फिर भी पूरा दूध बच गया, ऐसा मालूम होता था के किसी ने पिया ही नहीं। [बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह: ४८५]

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — दाढ़ी रखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: "मूँछों को कतरवाओ और दाढ़ी को बढ़ाओ।"

[बुखारी :५८९३, अन इब्ने उमर ؓ]

फायदा : दाढ़ी इस्लामी शिआर में से है और दाढ़ी रखना शरीअत में वाजिब है, इस लिए मुसलमानों पर दाढ़ी रखना ज़रुरी है।

नंबर ४: एक सुन्नत के बारे में — कपड़े उतारने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : " जिन्नात की आँखों और इन्सान के सतर के दर्मियान पर्दा यह है के जब मुसलमान कपड़ा उतारने का इरादा करे तो यह दुआ पढ़े : ((بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ))

तर्जमा : अल्लाह के नाम से (लिबास उतारता हूँ) जिस के सिवा कोई माबूद नहीं। एक दूसरी हदीस में है के जब कपड़े उतारे तो ((بِسْمِ اللّٰہِ)) पढ़े।

[अमलुलयौम वल्लैलह लिइब्ने सुन्नी : २७३-२७४, अन अनस बिन मालिक ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह के वास्ते मुहब्बत करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह तआला फर्माता है, जो लोग मेरी अज़मत व जलाल की वजह से आपस में मुहब्बत रखते हैं (क़यामत के दिन) उन के लिये ऐसे नूर के मिम्बर होंगे, जिन पर अम्बिया और शोहदा भी रश्क करेंगे।" [तिर्मिज़ी : २३९०, अन मआज़ बिन जबल ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	अल्लाह और रसूल का हुक्म न मानना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "बिला शुबा जो लोग अल्लाह और उस के रसूल को (उन का हुक्म न मान कर) तकलीफ देते हैं, अल्लाह तआला उन पर दुनिया व आखिरत में लानत करता है और उन के लिये ज़लील करने वाला अज़ाब तय्यार कर रखा है।" [सूर-ए-अहज़ाब : ५७]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	अल्लाह ही रोज़ी तक़सीम करते हैं

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "दुनियवी ज़िन्दगी में उन की रोज़ी हम ने ही तक़सीम कर रखी है और एक को दूसरे पर मर्तबे के एतेबार से फज़ीलत दे रखी है, ताके एक दूसरे से काम लेता रहे।"
[सूर-ए-ज़ुख़रूफ : ३२]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	अदना दर्जे का जन्नती

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अदना दर्जे का जन्नती वह शख़्स होगा जिस के लिए अस्सी हज़ार खिदमत गुज़ार होंगे और बहत्तर बीवियाँ होंगी और एक मोती ज़बर जद और याकूत से बना हुआ खेमा होगा, जिस की लम्बाई मक़ामे जाबिया से मक़ामे सनआ के मानिन्द होगी।"
[तिर्मिज़ी: २५६२, अन अबी सईद खुदरी ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	दिल की कमज़ोरी का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम लोग सन्तरे को इस्तेमाल किया करो, क्योंकि यह दिल को मज़बूत बनाता है।" [कंज़ुलउम्माल : २८२५३]

फायदा : मुहद्दिसीन तहरीर फर्माते हैं के इस का जूस पेट की गन्दगी को दूर करता है कय और मतली को खत्म करता है और भूक बढ़ाता है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुक किसी ऐसे मोमिन को देखो जिसे दुनिया से बे रगबती और कम बोलने की दौलत दी गई है तो तुम उस के पास रहा करो, इस लिये के वह हिकमत की बातें करता है।" [तबरानी औसत : १९५६, अन अबी हुरैरह ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२३ मुहर्रमुल हराम

नंबर १: इस्लामी तारीख — हज़रत इब्राहीम عليه السلام के अहले ख़ाना

अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम عليه السلام के अहल व अयाल में ख़ूब बरकतें और रहमतें नाज़िल फर्माई थीं। उन को औलाद भी ऐसी मिलीं के सिर्फ नबी नहीं बल्के अम्बिया के मूरिसे आला बनीं। उन्होंने तीन शादियाँ की थीं। पहली बीवी का नाम सारा है, जो आप ही के ख़ान्दान से थीं, उन से हज़रत इस्हाक़ عليه السلام जैसे पैग़म्बर पैदा हुए, जिन की नस्ल से तक़रीबन साढ़े तीन हज़ार अम्बिया पैदा हुए। उन की दूसरी बीवी का नाम हाजरा है, जो शाहे मिस्र की बेटी थीं, बादशाह ने हिजरत के दौरान उन्हें हज़रत इब्राहीम عليه السلام की ज़ौजियत में दिया था। उन से हज़रत इस्माईल عليه السلام की पैदाइश हुई जो जलीलुलक़द्र नबी होने के साथ सय्यिदुल अम्बिया मोहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ के जद्दे आला भी हैं। तीसरी बीवी का नाम क़तूरा बताया जाता है, उन से हज़रत इब्राहीम عليه السلام ने हज़रत सारा की वफात के बाद अक़्द फर्माया था। उन से कुल छ: औलादें हुईं। उन की नस्ल और ख़ान्दान को "बनू क़तूरा" कहा जाता है।

नंबर २: अल्लाह की कुदरत — हवा

अल्लाह तआला ने हमारे लिये हवा बनाई। हवा ही के ज़रिये हम साँस लेते हैं और एक दूसरे की आवाज़ सुनते और बात करते हैं, इस के कम ज़ियादा चलने से मौसम बनते और बिगड़ते हैं, ज़मीन से साढ़े तीन मील की उँचाई के बाद हवा की रफ्तार हल्की हो जाती है और ५०० मील की बुलन्दी पर किसी जान्दार का ज़िन्दा रहना मुमकिन नहीं। अगर ज़मीन पर चन्द मिनट के लिये हवा बन्द कर दी जाए, तो सारी मख़्लूक़ हलाक हो जाए। यक़ीनन मख़्लूक़ को ज़िन्दा रखने के लिये मुनासिब हवा का इन्तेज़ाम करना अल्लाह की अज़ीम कुदरत है।

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — इशा की नमाज़ की अहेमियत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: "जिस शख़्स ने इशा की नमाज़ जमात के साथ पढ़ी गोया उस ने आधी रात इबादत की और जिस ने फ़ज्र की नमाज़ जमात से पढ़ ली गोया उस ने सारी रात इबादत की।"

[मुस्लिम : १४९१, अन उस्मान बिन अफ्फान رضي الله عنه]

नंबर ४: एक सुन्नत के बारे में — मेहमान के साथ थोड़ी दूर साथ चलना

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने जब उन को रुख़्सत किया तो (जन्नतुल बकी) ग़रक़द तक साथ तशरीफ लाये और फर्माया : "जाओ अल्लाह के नाम से, ऐ अल्लाह! इन की मदद फर्मा।"

[तबरानी कबीर : ११३८१]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	दुआ से बलाओं का टलना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "दुआ नफा पहुँचाती है और उन बलाओं को टालती है जो नाज़िल हो चुकी हैं और उन बलाओं को भी, जो अभी तक नाज़िल नहीं हुईं, इस लिये तुम लोग दुआओं का एहतेमाम किया करो।"

[मुस्तदरक : १८१५, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	कुर्आन में अपनी राय को दखल देना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने कुर्आन में अपनी राय से कोई बात कही वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।"

[तिर्मिज़ी : २९५०, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया, आखिरत के मुक़ाबले में

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह की क़सम! दुनिया आखिरत के मुक़ाबले में इतनी सी है, के तुम में से कोई अपनी उंगली समन्दर में डाले, फिर निकाले और देखे के उस उंगली पर कितना पानी लगा है।"

[मुस्लिम : ७१९७, अन मुस्तौरिद ؓ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	अहले जन्नत के लिये हूरें

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "उन अहले जन्नत के पास नीची निगाह रखने वाली, बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरें होंगी वह हूरें सफाई में ऐसी होंगी, गोया के छुपे हुए अंडे हैं।"

[सूर-ए-साफ्फात : ४८ ता ५०]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	राई के फवायद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम लोग राई को इस्तेमाल किया करो, क्योंकि उस में अल्लाह तआला ने हर बीमारी से शिफा रखी है।"

[फ़ैज़ुल क़दीर : २६२, अन अबी हुरैरह ؓ]

फायदा : राई का तेल बालों में मज़बूती पैदा करता है, सफेद होने से रोकता है और जिल्द में नर्मी पैदा करता है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद आज़माइश की चीजें हैं और अल्लाह तआला के यहाँ बहुत बड़ा अज्र है, जहाँ तक तुम से हो सके अल्लाह से डरते रहो, उस का हुक्म सुनो और फरमांबरदारी करो और अल्लाह की राह में खर्च करते रहो, इसी में तुम्हारे लिये खैर व भलाई है और जो शख्स नफ्स की कंजूसी से बचा लिया गया, वही लोग कामयाब होने वाले हैं।"

[सूर-ए-तग़ाबुन : १६]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर १: इस्लामी तारीख — हज़रत इस्माईल ﷺ

हज़रत इस्माईल ﷺ हज़रत इब्राहीम ﷺ के बड़े फरज़न्द थे। कुर्आने करीम में उन का तज़केरा आठ जगहों पर आया है। हुज़ूर ﷺ और अरब के मशहूर और बाइज़्ज़त ख़ान्दान कुरैश का तअल्लुक़ भी उन्हीं की नस्ल से है। पैदाइश के बाद हज़रत इब्राहीम ﷺ अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक उन्हें उन की वालिदा के साथ बैतुल्लाह के करीब चटियल मैदान में छोड़ कर चले गए थे, जब खाने पीने का सामान ख़त्म होगया, तो हज़रत इस्माईल ﷺ की तरबियत व परवरिश के लिये अल्लाह तआला ने ज़मज़म का चश्मा जारी कर दिया, जो आज तक मौजूद है। इत्तेफाक़ से बनू जुरहुम का एक क़ाफ़ला उधर से गुज़रा तो उस चश्मे को देख कर हज़रत हाजरा ﷺ से उस जगह बसने की इजाज़त चाही, इजाज़त मिलते ही बैतुल्लाह के आस पास एक बस्ती आबाद होगई। जब अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम ﷺ से हज़रत इस्माईल ﷺ की कुर्बानी तलब फर्माई, तो दोनों बख़ुशी तय्यार हो गए और बाप बेटे को कुर्बान करने के लिये चल पड़े, जब छुरी गर्दन पर चलने लगी तो अल्लाह तआला ने खुश हो कर उस की जगह जन्नत से दुंबा भेजा, फिर उस की कुर्बानी की, चुनान्चे इसी की याद में ईदुल अज़हा के मौक़े पर जानवरों की कुर्बानी का सिलसिला हमेशा के लिये जारी किया गया, फिर क़बील-ए-बनू जुरहुम में हज़रत इस्माईल ﷺ की शादी हुई। हज़रत इस्माईल ﷺ ने १३७ साल की उम्र में वफात पाई और अपनी वालिदा माजिदा के पहेलू में हरम शरीफ में दफन हुए।

नंबर २: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — अहद नामे को कीड़े के खाने की खबर देना

जिस वक़्त कुफ्फारे कुरैश ने आप ﷺ और आप ﷺ के असहाब ﷺ का बाइकाट कर दिया था, तो आप ﷺ ने इस अहद नामे के मुतअल्लिक़ जिस में बाइकाट की दफ़आत थीं, यह खबर दी के उसे कीड़ों ने खा लिया है और उस में सिर्फ अल्लाह के नाम को बाक़ी छोड़ा है, लिहाज़ा यह सुन कर अबू तालिब ने कुफ्फारे कुरैश को बतौर चैलेंज के कहा: अगर मेरे भतीजे की यह बात ग़लत है, तो मैं उन को तुम्हारे हवाले कर दूँगा। चुनान्चे जब उन लोगों ने इस अहद नामे को देखा तो वैसे ही पाया जैसा के ख़बर दी गई थी।

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : ६०६]

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — गुस्ल के लिए तयम्मुम करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है: "अगर तुम बीमार हो जाओ, या सफर में हो या तुम में से कोई शख़्स अपनी तबई ज़रुरत (यानी पेशाब पाखाना कर के) आया हो या अपनी बीवी से मिला हो और तुम पानी (के इस्तेमाल पर)ताकत न रखते हों, तो ऐसी हालत में तुम पाक मिट्टी का इरादा करो(यानी तय्यमुम कर लो)।"

[सूर-ए-माइदा : ६]

खुलासा : अगर किसी पर गुस्ल फर्ज़ हो जाए और पानी इस्तेमाल करने की ताकत न हो, तो ऐसी सूरत में गुस्ल के लिए तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ना फर्ज़ है और तयम्मुम का तरीक़ा यह है के पहले निय्यत करे, फिर एक मर्तबा दोनों हाथों को मिट्टी पर मार कर अपने मुंह पर फेरे और दूसरी मर्तबा दोनों हाथों को मिट्टी पर मार कर कोहनियों तक फेर ले।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	ख़ुशख़बरी सुन कर दुआ पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ जब कोई ख़ुशी की बात देखते तो यह दुआ पढ़ते : ((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ بِنِعْمَتِهٖ تَتِمُّ الصّٰلِحَاتُ)) तर्जमा : तमाम तारीफें अल्लाह के लिये हैं जिस की नेअ्मतों से तमाम अच्छाइयां मुकम्मल होती हैं।

[मुस्तदरक : १८४०, इब्ने माजा : ३८०३, अन आयशा رضی اللہ عنہا]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	जुमा के दिन सूर-ए-कहफ पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स जुमा के दिन सूर-ए-कहफ पढ़ेगा, उस के लिये एक जुमा से दूसरे जुमा के दर्मियान एक नूर चमकता होगा।"

[मुस्तदरक : ३३९२, अन अबी सईद رضی اللہ عنہ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	अल्लाह की आयतों को न मानना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "हर उस झूटे गुनहगार के लिये बड़ी तबाही होगी, जो अल्लाह की आयतों को सुनता है, जब वह उस के सामने पढ़ी जाती है, फिर भी वह तकब्बुर करता हुआ (अपने कुफ्र पर इसी तरह) अड़ा रहता है, गोया उस ने उन आयतों को सुना ही नहीं, तो आप ऐसे शख़्स को दर्दनाक अज़ाब की खबर सुना दीजिये।"

[सूर-ए-जासिया : ७ता ८]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	जो कुछ खर्च करना है दुनिया ही में करलो

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "हम ने तुम को जो कुछ दिया है, उस में से ख़र्च करो, इस से पहले के तुम में से किसी को मौत आजाए और फिर (मौत को देख कर) कहने लगे के ऐ मेरे रब! तूने मुझ को और थोड़े दिनों की मोहलत क्यों न दी? ताके ख़ूब ख़र्च कर के नेक लोगों में शामिल होजाता।"

[सूर-ए- मुनाफिकून : १०]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जहन्नम को क़ैद कर के पेश किया जाएगा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जहन्नम को क़यामत के रोज़ सत्तर हज़ार लगामों के साथ पेश किया जाएगा और हर लगाम के साथ सत्तर हज़ार फरिश्ते होंगे, जो जहन्नम को घसीट कर लाएंगे।"

[मुस्लिम : ७१६४, अन इब्ने मसऊद رضی اللہ عنہ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	गाय के दूध का फायदा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "गाय का दूध इस्तेमाल किया करो, क्योंकि वह हर किस्म के पौदों को चरती है (इस लिए) उस के दूध में हर बीमारी से शिफा है।" [मुस्तदरक:८२२४,अन अब्दुल्ला बिन मसऊद رضی اللہ عنہ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फर्माया : "अपने मेहमान के साथ खाओ क्योंकि वह तन्हा खाने में शर्म महसूस करता है।"

[बैहक़ी फी शुअबिलईमान : ९३०५, अन आयशा رضی اللہ عنہا]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२५ मुहर्रमुल हराम

नंबर १: इस्लामी तारीख़ | हज़रत इस्हाक़ ﷺ की पैदाइश

हजरत इस्हाक़ ﷺ की विलादत बासआदत अल्लाह तआला की एक बड़ी निशानी है, क्योंकि उन की पैदाइश ऐसे वक़्त में हुई जब के उन के वालिद हज़रत इब्राहीम ﷺ की उम्र १०० साल और उन की वालिदा हजरत सारा की उमर ९० साल हो चुकी थी, हालाँकि आम तौर पर इस उम्र में औलाद नहीं होती है। जब फरिश्तों ने उन की पैदाइश की खुशखबरी दी, तो दोनों हैरत व तअज्जुब में पड़ गए। मगर फरिश्तों ने यक़ीन दिलाया और कहा : आप नाउम्मीद मत हों। चुनान्चे अल्लाह तआला के हुक्म से इस्हाक़ ﷺ पैदा हुए। उसी साल हज़रत इब्राहीम ﷺ व इस्माईल ﷺ ने बैतुल्लाह की तामीर फ़र्माई थी। यह हज़रत इस्माईल ﷺ से चौदा साल छोटे थे। ६० साल की उम्र में हज़रत इब्राहीम ﷺ ने अपने भतीजे की लड़की से उन की शादी कराई, उन से दो लड़के पैदा हुए, एक का नाम ईसू और दूसरे का नाम याक़ूब था।

नंबर २: अल्लाह की क़ुदरत | शक्ल व सूरत का मुख़्तलिफ होना

अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत से हर एक इन्सान के चेहरे पर दो कान, दो आँखें, नाक, मुँह और होंट बनाए, उस के बावजूद सब की शक्ल व रंग एक दूसरे से मुख़्तलिफ है, हर मुल्क, ख़ित्ते या नस्ल के लोगों की शक्ल व सूरत दूसरी जगह के रहने वालों से बिल्कुल जुदा है। यहाँ तक के एक ही माँ बाप से पैदा होने वाली औलाद के दर्मियान शक्ल व सूरत और रंग में भी फर्क़ होता है। फिर मर्द व औरत की शक्ल व जिस्म की बनावट भी अलग होती है, गर्ज़ इन्सानों के दर्मियान शक्ल व सूरत और रंग व नस्ल का अलग अलग होना अल्लाह की कुदरत की अज़ीम निशानी है।

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में | रुकू व सज्दा अच्छी तरह करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "बदतरीन चोरी करने वाला वह शख़्स है, जो नमाज़ में से चोरी कर लेता है। सहाबा ؓ ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! आदमी नमाज में से किस तरह चोरी कर लेता है ? इर्शाद फर्माया: वह रुकू और सज्दा अच्छी तरह नहीं करता।"

[मुस्नदे अहमद : ११९३८,अन अबी सईद खुदरी ؓ]

खुलासा : रुकू और सज्दा अच्छी तरह न करने को हुज़ूर ﷺ ने चोरी बताया है; इस लिए इन को अच्छी तरह इत्मिनान से अदा करना ज़रुरी है।

नंबर ४: एक सुन्नत के बारे में | किसी मंज़िल से चलते वक़्त नमाज़ पढ़ना

हज़रत अनस ؓ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ किसी जगह क़याम करते और फिर वहाँ से चलते तो दो रकात नमाज़ ज़रूर पढ़ते।

[सुनने कुबरा लिलबैहक़ी : २५१ / ५]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	बुरी मौत से हिफाज़त का ज़रिया

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "सदक़ा अल्लाह तआला के गुस्से को ठंडा करता है और इन्सान को बुरी मौत से महफ़ूज़ रखता है।" [तिर्मिज़ी : ६६४, अन अनस رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	माँ बाप पर लानत भेजना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "सब से बड़ा गुनाह यह है के आदमी अपने माँ बाप पर लानत करे। अर्ज़ किया गया: ऐ अल्लाह के रसूल ! कोई अपने माँ बाप पर लानत कैसे भेज सकता है? फर्माया : इस तरह के जब किसी के माँ बाप को बुरा भला कहेगा तो वह भी उस के माँ बाप को बुरा भला कहेगा।"

[मुस्लिम : २६३, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	आदमी का दुनिया में कितना हक़ है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया :" इब्ने आदम को दुनिया में सिर्फ चार चीज़ों के अलावा और किसी की ज़रूरत नहीं : (१) घर : जिस में वह रेहता है, (२) कपड़ा : जिस से वह सतर छुपाता है। (३) ख़ुश्क रोटी। (४) पानी।" [तिर्मिज़ी : २३४१ , अन उस्मान बिन अफ्फान رضي الله عنه]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले जहन्नम पर दर्दनाक अज़ाब

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "बेशक ज़क्कूम का दरख़्त बड़े मुजरिम का खाना होगा, जो तेल की तलछट जैसा होगा, वह पेट में तेज़ गर्म पानी की तरह खौलता होगा (कहा जाएगा) उस गुनहगार को पकड़ लो और घसीटते हुए दोज़ख़ के बीच में ले जाओ, फिर उस के सर पर तकलीफ देने वाला खौलता हुआ पानी डालो, (फिर कहा जाएगा) अज़ाब का मज़ा चख ! तू अपने आप को बड़ी इज़्ज़त व शान वाला समझता था, यही वह अजाब है जिस के बारे में तुम शक किया करते थे।"

[सूर-ए-दुखान : ४३ ता ५०]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	हलीला से हर बीमारी का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "हलील-ए-सियाह को पिया करो इस लिए के यह जन्नत के पौदों में से एक पौदा है , जिस का मज़ा कड़वा होता है मगर हर बीमारी के लिए शिफा है।"

[मुस्तदरक :८२३०,अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नोट : हलील-ए-सियाह को हिन्दी में काली हड़ कहते हैं। जिसे सिल पर घिस कर पीते हैं, यह क़ब्ज़ को खत्म करती है और बादी बवासीर में मुफीद है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जब कुर्आन पढ़ा जाए, तो इस को पूरी तवज्जोह और गोर से सूना करो और खामोस रहा करो; ताकि तूम पर रहम किया जाए।" [सूर-ए-अ़राफ़: २०४]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२६ मुहर्रमुल हराम

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत इस्हाक़ ﷺ की ख़ुसूसियत व अज़मत

हज़रत इस्हाक़ ﷺ अल्लाह तआला के जलीलुलक़द्र नबी और बहुत सारी सिफात के मालिक थे। क़ुर्आने करीम ने उन की नेकी व शराफत, नुबुव्वत व रहमत और बलंदी व अज़मत की शहादत दी है। उन्हें यह फज़ीलत व ख़ुसूसियत हासिल है के बनी इस्राईल के सारे अम्बिया उन्हीं की नस्ल से हैं। तारीख़ से मालूम होता है के तक़रीबन साढ़े तीन हज़ार अम्बिया उन की नस्ल में पैदा हुए हैं। उस के साथ "मस्जिदे अक़्सा" जैसी अज़ीमुश्शान मस्जिद की तामीर का शर्फ भी उन्हीं को हासिल है। अल्लाह तआला ने उन के फज़ल व कमाल का तज़केरा करते हुए फर्माया : हम ने हज़रत इब्राहीम ﷺ को हज़रत इस्हाक़ ﷺ (की विलादत) की बशारत दी के वह नबी नेक बन्दों में होंगे और हम ने उन पर और इस्हाक़ पर बरकतें नाज़िल फ़र्माई। [सूर-ए-साफ्फात : ११२ ता ११३]

उन की पैदाइश सरज़मीने इराक़ में हुई मगर पूरी जिन्दगी मुल्के शाम में रहे और एक सौ साठ साल या एक सौ अस्सी साल की उम्र में वफात पाई और अपने वालिदे मोहतरम के बराबर में "मदीनतुल ख़लील" में दफ्न हुए।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हज़रत फातिमा ؓ के चेहरे का रौशन हो जाना

एक मर्तबा हज़रत फातिमा ؓ आप ﷺ के पास तशरीफ लाईं और भूक की वजह से उन का चेहरा पीला हो रहा था। आप ﷺ ने हाथ उठा कर उन के लिये दुआ करदी। हज़रत इमरान ؓ कहते हैं के मैं ने देखा हज़रत फातिमा ؓ का चेहरा सुर्ख़ और रौशन हो गया। (यह वाक़िआ पर्दे की आयत नाज़िल होने से पहले का है।) [बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : २३५३, अन इमरान बिन हुसैन ؓ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — तमाम रसूलों पर ईमान लाना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है: "जो लोग अल्लाह तआला पर ईमान रखते हैं और उस के रसूलों पर भी और उन में से किसी में फर्क नहीं करते, उन लोगों को अल्लाह तआला ज़रूर उन का सवाब देंगे और अल्लाह तआला बड़े मगफिरत वाले हैं, बड़ी रहमत वाले हैं।" [सूर-ए-निसा : १५२]

ख़ुलासा : अल्लाह तआला ने इन्सानों की हिदायत और रहनुमाई के लिए जितने नबी और रसूल भेजे हैं, उन सब पर ईमान लाना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	क़नाअत और सब्र हासिल करने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ क़नाअत के लिये यह दुआ फर्माते : ((اَللّٰهُمَّ قَنِّعْنِىْ بِمَا رَزَقْتَنِىْ وَبَارِكْ لِىْ فِيْهِ))
तर्जमा : ऐ अल्लाह ! तूने जो रिज़्क़ मुझे दिया है, उस पर सब्र व क़नाअत अता फर्मा और उस में मेरे लिये बरकत अता फर्मा। [मुस्तदरक : १८७८, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	तकलीफों पर सब्र करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "वह मुसलमान जो लोगों के साथ मेल जोल रखता है और उन से पहुंचने वाली तक्लीफों पर सब्र करता है, उस मुसलमान से अफज़ल है जो लोगों के साथ मेल जोल नहीं रखता और न ही सब्र करता है।" [तिर्मिज़ी : २५०७, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	नाप तौल में कमी करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "बड़ी बरबादी है नाप तौल में कमी करने वालों के लिये के जब लोगों से (कोई चीज़) नाप कर लेते हैं, तो पूरा भर कर लेते हैं और जब लोगों को (कोई चीज़) पैमाने से नाप कर या वज़न कर के देते हैं तो (उस में कमी) कर देते हैं।" [सूर-ए-मुतफ्फिफ़ीन : १ ता ३]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की मुहब्बत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "यह लोग दुनिया से मुहब्बत रखते हैं और अपने आगे आने वाले एक भारी दिन को छोड़ बैठे हैं।" (यानी दुनिया की मुहब्बत ने ऐसा अंधा कर रखा है, के क़यामत के दिन की न तो कोई फिक्र है और न ही कोई तय्यारी है : हालांके दुनिया में आने का मक़सद ही आखिरत के लिये तय्यारी करना है।)" [सूर-ए-दहर : २७]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	क़ब्र से इन्सान किस हाल में उठेगा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "हर बन्दा क़ब्र में उसी हालत में उठाया जाता है, जिस हालत में उस का इन्तेक़ाल होता है, मोमिन अपने ईमान पर और मुनाफिक़ अपने निफाक़ पर उठाया जाता है।" [मुस्नदे अहमद : १४३१२, अन जाबिर बिन अब्दिल्लाह ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	खजूर से पसली के दर्द का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "खजूर खाने से कौलंज नहीं होता है।" [कन्ज़ुल उम्माल : २८१९१, अन अबी हुरैरह ؓ]

फायदा : पस्ली के नीचे होने वाले दर्द को कौलंज कहा जाता है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम में से कोई अपने भाई से मुलाक़ात करे तो इस तरह सलाम करे।" ((اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ)) [तिर्मिज़ी : २७२१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२७ मुहर्रमुल हराम

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — ज़ुलक़रनैन

कुर्आने करीम के सूर-ए-कहफ में एक ऐसे बादशाह का तज़केरा किया गया है, जिन का लक़ब "ज़ुलक़रनैन" है, वह बहुत नेक दिल बादशाह थे। उन्हीं की बदौलत बनी इसराईल ने बाबुल की गुलामी से नजात पाई थी और यरोशिलम (बैतुलमक़दिस) जैसी मुहतरम जगह हर क़िस्म की तबाही व बरबादी के बाद उन्हीं के हाथों दोबारा आबाद हुआ था। उन्होंने मश्रिक़ व मग़रिब का सफर किया और फुतूहात भी की। एक मर्तबा सफर के दौरान एक कौम से मुलाकात हुई जिन्होंने बादशाह ज़ुलक़रनैन से याजूज व माजूज के फितना व फसाद की शिकायत की और कहा : ऐ ज़ुलक़रनैन ! उन लोगों से हमारी हिफाज़त के लिये एक दीवार क़ाएम कर दीजिये। उस पर आप जो मुआवज़ा लेना चाहेंगे हम देने के लिये तय्यार हैं। लेकिन ज़ुलक़रनैन ने मुआवज़ा लेने से इन्कार कर दिया और कहा : अल्लाह ने जो कुछ मुझे दिया है वह मेरे लिये काफी है। फिर उन्होने एक मज़बूत दीवार क़ाएम कर दी, जो सद्दे सिकंदरी के नाम से मशहूर है।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — खारे और मीठे पानी का अलग रहना

कुर्आन में अल्लाह तआला ने ऐसे दो समन्दरों का तज़केरा किया है जिन में से एक का पानी खारा और दूसरे का मीठा है। उन में तूफान भी आते हैं और मददो जज़्र (जवार भाटा) भी होता है, बड़े बड़े समन्दरी जहाज़ भी चलते हैं मगर उस के बावजूद खारा और मीठा पानी एक दूसरे में नहीं मिलता, जब के उन के दर्मियान किसी क़िस्म की कोई आड़ या रूकावट भी नहीं है, यह अल्लाह तआला ही की कुदरत का कमाल है के उस ने खारे और कड़वे पानी को बग़ैर किसी रूकावट के एक दूसरे से अलग रखा है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — मांगी हुई चीज़ का लौटाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: "(वापसी की शर्त पर) माँगी हुई चीज़ को वापस किया जाएगा।"

[इब्ने माजा : २३९८]

फायदा : अगर किसी शख्स ने कोई सामान यह कह कर माँगा के वापस कर दूँगा, तो उस को मुकर्ररा वक्त पर लौटाना वाजिब है ; उस कोअपने पास रख लेना और बहाना बनाना जाइज़ नहीं है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — सफर से वापसी के बाद नमाज़ पढ़ना

हज़रत कअब رضی اللہ عنہ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ जब दिन के वक़्त सफर से वापस तशरीफ लाते तो मस्जिद में दाखिल होते और बैठने से पहले दो रकात नमाज़ अदा फर्माते। [बुखारी : ३०८८]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — जन्नत में जाने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने ((رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّ بِالْإِسْلَامِ دِيْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ رَّسُوْلًا)) पढ़ा, जन्नत उस के लिये वाजिब होगई।" [अबूदाऊद : १५२९, अन अबी सईद खुदरी ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में — अपनी इज़्ज़त के लिये दूसरों को खड़ा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स इस बात को चाहे, के लोग उस की इज़्ज़त के लिये खड़े हों, तो उसे अपना ठिकाना जहन्नम में बना लेना चाहिये।" [तिर्मिज़ी : २७५५, अन मुआविया ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में — दुनिया की मुहब्बत हलाक करने वाली है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "खुश हो जाओ और अपने मतलूब की उम्मीद रखो ! अल्लाह की क़सम ! मुझे तुम्हारे मोहताज होने का अंदेशा नहीं, मुझे तो इस बात का अंदेशा है, कहीं तुम पर दुनिया खोल न दी जाए, जिस तरह तुम से पहेली कौमों पर खोली गई थी, पस तुम उस में इस तरह रग़बत ज़ाहिर करने लगो, जिस तरह उन लोगों ने की थी, फिर वह (दुनिया) तुम्हें उसी तरह हलाक करदे, जिस तरह उन को किया था।" [बुखारी : ४०१५ अन अम्र बिन औफ ؓ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में — अहले जन्नत के उम्दा फर्श

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "(अहले जन्नत) सब्ज़ रंग के नक़्श व निगार वाले फर्शों और उम्दा क़ालीनों पर तकिया लगाए बैठे होंगे।" [सूर-ए-रहमान : ७६]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज — लहसन के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: "अगर मेरे पास फरिश्ते न आया करते, तो मैं लहसन ज़रुर खाता।" [कन्ज़ुल उम्माल : ४०९३३]

फायदा : आप ﷺ के फ़र्मान से साफ ज़ाहिर है के लहसन अपनेअन्दर बहुत से फवाइद रखता है, चुनान्चे अतिब्बा कहते हैं के इस के खाने से सीने का दर्द जाता रहता है, यह खाना हज़्म करता है और प्यास कम करता है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम उस वक़्त तक नेकी और भलाई हासिल नहीं कर सकते, जब तक तुम अपनी महबूब चीज़ों से (अल्लाह के रास्ते में) खर्च न करलो और जो कुछ भी तुम खर्च करते हो, तो अल्लाह तआला उस को अच्छी तरह जानता है।" [सूर-ए-आले इमरान : ९२]

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत लूत ﷺ

हज़रत लूत ﷺ अल्लाह के मशहूर नबी हैं, उन के वालिद का नाम हारान था, वह हज़रत ईसा ﷺ से तक़रीबन दो हज़ार साल पहले पैदा हुए, उन का वतन इराक़ का मशहूर शहर "बाबूल" था। वह हज़रत इब्राहीम ﷺ के भतीजे थे और सब से पहले उन पर ईमान लाने वाले थे, हज़रत इब्राहीम ﷺ ने ही बचपन से उन की तरबियत व परवरिश फ़र्माई। जब हज़रत इब्राहीम ﷺ ने इराक़ से हिजरत की तो हज़रत लूत ﷺ भी उस सफर में आप के साथ थे। मिस्र से वापसी पर हज़रत इब्राहीम ﷺ तो फलस्तीन में मुक़ीम हो गए, मगर हज़रत लूत ﷺ हिजरत कर के उरदुन (शाम) चले गए, उस इलाके में चंद मील के फ़ास्ले पर बहरे मय्यित के किनारे सदूम व आमूरा नामी बस्तियाँ आबाद थीं, उन के रहने वालों की इस्लाह के लिये अल्लाह तआला ने हज़रत लूत ﷺ को नबी बना कर भेजा।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हुज़ूर ﷺ का कुफ्फार के दर्मियान से गुज़र जाना

जिस रात रसूलुल्लाह ﷺ ने हिजरत फर्माई थी, उस रात हुज़ूर ﷺ ने अपने बिस्तर पर हज़रत अली ؓ को सुला दिया और एक बर्तन में मिट्टी ले कर आप ﷺ बाहर तशरीफ लाए और "यासीन" शरीफ शुरू से ﴿فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ﴾ तक पढ़ते गए और कुफ्फार की तरफ मिट्टी फेंकते गए और उन के बीच से गुज़र गए और उन को पता तक न चला। [बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : ७२८]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — क़ज़ा नमाज़ों की अदाएगी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: "जो कोई नमाज़ पढ़ना भूल गया या नमाज़ के वक़्त सोता रह गया, तो (उस का कफ्फारा यह है के) जब याद आजाए उसी वक़्त पढ़ ले।"

[तिर्मिज़ी : १७७, अन अबी क़तादा ؓ]

खुलासा : अगर किसी शख़्स की नमाज़ किसी उज़्र की वजह से छूट जाए या सोने की हालत में नमाज़ का वक़्त गुज़र जाए तो बाद में उस को पढ़ना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — क़ब्रस्तान जाने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ जब क़ब्रस्तान में जाते तो इस दुआ को पढ़ते थे :

((اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُؤْمِنِيْنَ وَ إِنَّا إِنْ شَاءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ))

तर्जमा : ऐ क़ब्रस्तान में बसने वाले मोमिनो ! तुम पर सलामती हो, हम भी इन्शाअल्लाह तुम से आ मिलने वाले हैं।

[अबूदाऊद : ३२३७, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	तहिय्यतुल वुज़ू पर जन्नत का इन्आम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करे, फिर दो रकातें पूरी तव्वजोह के साथ अदा करे, तो उस के लिये जन्नत लाज़िम कर दी जाती है।" [मुस्लिम :५५३, अन उक़्बा बिन आमिर ﷺ]

खुलासा : वुज़ू के बाद दो रकात नमाज़ पढ़ने को तहिय्यतुल वुज़ू कहते हैं।

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	नमाज़ में सुस्ती करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐसे नमाज़ियों के लिये बड़ी खराबी है जो अपनी नमाज़ों की तरफ से ग़फलत व सुस्ती बरतते हैं, जो सिर्फ रिया कारी करते हैं।" [सूर-ए-माऊन : ४ ता ६]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	माल व दौलत आज़माइश की चीज़ें हैं

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "(जब अल्लाह तआला) इन्सान को आज़माता है, तो उस को (ज़ाहिरन माल व दौलत दे कर) उस का इकराम करता है तो वह (बतौरे फख़्र) कहने लगता है, के मेरे रब ने मेरी क़द्र बढ़ा दी। (हालांके यह उस की तरफ से उस की आज़माइश का ज़रिया है)

[सूर-ए-फज्र : १५]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में	दोज़ख़ की गर्मी और बदबू की शिद्दत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अगर जहन्नम से (आग का) एक डोल ज़मीन के दर्मियान रख दिया जाए, तो यह मश्रिक़ और मग़रिब के दर्मियान की तमाम चीज़ों को अपनी बदबू और सख़्त गर्मी से दुखी कर दे और जहन्नम के अंगारे में एक शरारा मशरिक में मौजूद हो तो उस की गर्मी मग़रिब में रहने वाले को जा पहुँचेगी।" [तबरानी औसत : ३८२३, अन अनस ﷺ]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	खरबूज़ा के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "खाने से पहले खरबूज़े का इस्तेमाल पेट को बिल्कुल साफ कर देता है और बीमारी को जड़ से खत्म कर देता है।" [इब्ने असाकिर : ६/१०२]

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फर्माया : "जब आदमी मजलिस में आए तो सलाम करे फिर मज्लिस से पहले उसे उठने की ज़रूरत पेश आए तो सलाम करे, फिर उठे।"

[अलअदबुलमुफरद : १०४७, अन अबी हुरैरह ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२९) मुहर्रमुल हराम

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — क़ौमे लूत पर अज़ाब

अल्लाह तआला ने हज़रत लूत ﷺ को अहले सदूम की हिदायत व इस्लाह के लिये नबी बना कर भेजा। यह लोग बड़े सरकश व नाफर्मान और गुनहगार थे, औरतों के बजाए मर्दों से ख्वाहिश पूरी करना, बाहर से आने वाले ताजिरों का माल हीले बहाने कर के लूट लेना और भरी मज्लिस में खुल्लम खुल्ला गुनाह करना उन की फितरत बन गई थी। हज़रत लूत ﷺ ने उन को तमाम बुराइयों और गुनाहों से बचने की नसीहत फ़र्माई, अल्लाह तआला का दीन क़बूल करने की दावत दी और उस के अज़ाब से डरने का हुक्म दिया, मगर उन की इस दावत व नसीहत का क़ौम पर कोई असर नहीं हुआ और गुनाहों से बाज़ रहने के बजाए, आप को पत्थर मार कर बस्ती से बाहर निकाल देने के धमकी देने लगे और मज़ाक़ करते हुए अज़ाबे इलाही का मुतालबा करने लगे। हज़रत लूत ﷺ के बार बार समझाने के बावजूद वह अपनी ज़िद और हट धर्मी से बाज़ नहीं आए, तो अल्लाह तआला ने उस नापाक क़ौम को दुनिया से मिटाने के लिये अज़ाब के फरिश्तों को भेज दिया। हज़रत लूत ﷺ फरिश्तों के इशारे पर अपने घर वालों और ईमान वालों को ले कर सिग्र नामी बस्ती में चले गए और सुबह होते ही एक भयानक और ज़ोरदार चींख ने सारे शहर वालों को हलाक कर दिया। फिर हज़रत जिब्रईल ﷺ ने उस बस्ती को आस्मान की तरफ़ उठा कर ज़मीन पर पटख़ दिया और ऊपर से पत्थरों की बारिश कर के पूरी क़ौम को अज़ाबे इलाही से हलाक कर दिया।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — दरख़्तों के पत्तों के फायदे

अल्लाह तआला ने हज़ारों क़िस्म के दरख़्त पैदा फर्माए जिन पर बेशुमार पत्ते होते हैं। उन के बहुत सारे फायदे हैं। यह पत्ते हमारे लिये ताज़ा और सेहत मन्द ऑक्सीजन बनाते हैं और ज़हरीली गैस अपने अन्दर जज़्ब करते रहते हैं। अगर अल्लाह तआला उन पत्तों में यह सलाहियत पैदा न करते, तो फ़ज़ा में ज़हरीली गैस फैल जाती। जिस के नतीजे में इन्सानों को बहुत सी बीमारियाँ लाहिक़ हो जातीं और इन्सानों का जीना मुश्किल हो जाता। अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत से दरख़्तों के उन पत्तों को बना कर हम पर बहुत बड़ा एहसान किया है। वाक़ई वह अपने बन्दों पर बड़ा मेहरबान है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — दीन में नमाज़ की अहेमियत

एक शख़्स ने आप ﷺ से अर्ज़ किया : "ऐ अल्लाह के रसूल ! इस्लाम में अल्लाह के नज़दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा अमल क्या है? आप ﷺ ने फर्माया : "नमाज़ को उस के वक़्त पर अदा करना और जो शख़्स नमाज़ को (जान बूझ कर) छोड़ दे उस का कोई दीन नहीं है और नमाज़ दीन का सुतून है।"

[बैहक़ी फी शुअबिलईमान : २६८३, अन उमर ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	गरीब व मिस्कीन से मुलाक़ात करना

हज़रत सहल बिन हुनैफ ﷺ कहते हैं के आप ﷺ कमज़ोर गुरबा मुस्लिमीन से मुलाक़ात फर्माते उन में कोई बीमार पड़ जाता तो, उन की इयादत करते और उन के जनाज़े में हाज़िर होते थे।

[मुस्तदरक हाकिम : ३७३५]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	तीन अहेम ख़स्लतें

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस आदमी में तीन चीज़ें होंगी, अल्लाह तआला उस को अपनी रहमत में ले लेंगे। (१) कमज़ोरों के साथ नर्मी करना (२) वालिदैन के साथ मेहरबानी करना (३) गुलामों के साथ एहसान करना।"

[तिर्मिज़ी : २४९४, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	क़यामत के दिन सब से बदहाल शख़्स

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "क़यामत के दिन सब से बुरे हाल में उस आदमी को पाओगे जो कुछ लोगों के पास जाता है, तो उस की बात का रूख और होता है (और) जब उन के मुक़ाबिल के पास आता है तो दूसरी क़िस्म की बात करता है।"

[मुस्लिम : ६४५४ अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	सहाबा ﷺ की दुनिया से बेज़ारी

हज़रत अबू हुरैरह ﷺ कुछ लोगों के पास से गुज़रे, जिन के हाथों में भूनी हुई बकरी थी, उन लोगों ने हज़रत अबू हुरैरह ﷺ को (खाने के लिये बुलाया) तो उन्होने इन्कार कर दिया और कहा के रसूलुल्लाह ﷺ इसी हाल में दुनिया से चले गए के जौ की रोटी भी पेट भर कभी नहीं खाई।

[बुखारी : ५४१४]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जहन्नम का गुस्सा

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जब जहन्नमी लोग जहन्नम में डाले जाएँगे, तो उस की खौफनाक आवाज़ सुनेंगे और वह ऐसी भड़क रही होगी के (गोया) गुस्से के मारे फट जाएगी।"

[सूर-ए-मुल्क : ७ ता ८]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	सफर जल (Pear) से दिल का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "सफर जल (बही) खाओ क्योंकि यह दिल को राहत व कुव्वत पहुँचाता है और (पैदा होने वाले) बच्चे के हुस्न को बढ़ाता है।"

[कन्ज़ुल उम्माल : २८२५६]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जब तुम को कोई सलाम करे, तो तुम उस से अच्छे अलफाज़ में सलाम करो (यानी उस का जवाब दो) या वैसे ही अलफाज़ कह दो, बिला शुबा अल्लाह तआला हर चीज़ का हिसाब लेंगे।"

[सूर-ए-निसा : ८६]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुरआन व हदीस की रौशनी में)

३० मुहर्रमुल हराम

नंबर ①: इस्लामी तारीख — हज़रत याक़ूब عليه السلام

हज़रत याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम عليه السلام अल्लाह के नबी और अहले कन्आन (फलस्तीन) के हादी व पैग़ाबर थे। क़ुर्आने करीम में दस से ज़ाइद मर्तबा उन का ज़िक्र आया है और जगह जगह उन के औसाफ का तज़केरा कर के उन के जलीलुलक़द्र नबी और साहिबे सब्र व कनाअत होने की तरफ इशारा किया है। हज़रत याक़ूब عليه السلام को इबरानी ज़बान में इस्राईल भी कहा जाता है। हज़रत इब्राहीम عليه السلام की जो नस्ल आगे चल कर बनी इस्राईल कहलाई वह उन्हीं की तरफ मन्सूब है। उन्होंने चार शादियाँ की थीं। अल्लाह तआला ने हर एक से औलाद अता फ़र्माई, उन को बारा लड़के और एक लड़की थी। बिनयामीन के अलावा सारे लडके इराक़ के शहर "फद्दान इरम" में पैदा हुए थे। एक सौ तीस साल की उम्र में वह अपने महबूब बेटे हज़रत यूसुफ عليه السلام की फ़र्माइश पर अपने पूरे खान्दान के साथ मिस्र चले गए थे, वहाँ १७ साल क़याम रहा और वहीं १४७ साल की उम्र में वफात पाई। हज़रत यूसुफ عليه السلام ने उन्हें फलस्तीन ला कर हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्हाक़ عليهما السلام के साथ दफन किया।

नंबर ②: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — सुराक़ा के घोड़े का ज़मीन में धंस जाना

सुराक़ा ने हिजरत के वक़्त रसूलुल्लाह ﷺ का पीछा किया और रसूलुल्लाह ﷺ के क़रीब पहुँच गया, रसूलुल्लाह ﷺ ने बददुआ की, तो उसी वक़्त उस का घोड़ा घुटनों तक ज़मीन में धंस गया, फिर उस ने दुआ की दरख्वास्त की और वादा किया के जो भी आप ﷺ की तलाश में आएगा; उस को मैं वापस कर दूँगा, तो आप ﷺ ने दुआ की, चुनान्चे घोड़ा ज़मीन से निकल आया।

[बुखारी : ३६१५, अन अबी बक्र رضي الله عنه]

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — बाजमात नमाज़ पढ़ने की निय्यत से मस्जिद जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स अच्छी तरह वुज़ू करे, फिर मस्जिद में नमाज़ के लिये जाए और वहाँ पहुँच कर मालूम हो के जमात हो चुकी, तो उस को जमात की नमाज़ का सवाब होगा और उस सवाब की वजह से उन लोगों के सवाब में कुछ कमी नहीं होगी, जिन्होंने जमात से नमाज़ पढ़ी है।"

[अबूदाऊद : ५६४, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — दुश्मन की हँसी से बचने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ पढ़ा करते थे :

((اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ جَهْدِ الْبَلَاءِ، وَدَرَكِ الشَّقَاءِ، وَسُوْءِ الْقَضَاءِ وَشَمَاتَةِ الْاَعْدَاءِ))

तर्जमा : मैं बलाओं की सख्ती और बदबख्ती के लाहिक़ होने और बुरी तक़दीर और दुश्मनों के हँसने से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ।

[बुखारी : ६३४७, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	सूर-ए-यासीन पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "हर चीज़ का एक दिल होता है और क़ुर्आन का दिल सूर-ए-यासीन है और जो शख़्स सूर-ए-यासीन पढ़े, तो उस के पढ़ने पर अल्लाह तआला दस मर्तबा क़ुर्आने करीम पढ़ने का सवाब लिखते हैं।" [तिर्मिज़ी : २८८७, अन अनस ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	मुसलमानों को तकलीफ पहुँचाना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जिन लोगों ने मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतों को तकलीफ पहुँचाई फिर तौबा भी नहीं की, तो उन के लिये दोज़ख़ और सख़्त जलने का अज़ाब है।" [सूर-ए-बुरूज : १०]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	माल जमा कर के ख़ुश होना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख़्स (इन्तेहाई हिर्स व लालच से) माल जमा करता है और (फिर वह ख़ुशी से) उस को बार बार गिनता है और समझता है के उस का यह माल उस के पास हमेशा रहेगा, हरगिज़ नहीं रहेगा बल्के अल्लाह तआला उस को ऐसी आग में डालेगा, जो हर चीज़ को तोड़ फोड़ कर रख देगी।" [सूर-ए-हुमज़ह : २ ता ४]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जहन्नम की वादी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "वैल" जहन्नम में एक गहरी वादी है, जिस में काफिर को डाला जाएगा, तो उस की तह तक पहुँचने से पहले चालीस साल लग जाएंगे।" [तिर्मिज़ी : ३१६४ अन अबी सईद ख़ुदरी ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	शहद के फवाइद

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है: ﴿يَخْرُجُ مِنْ بُطُونِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ﴾

तर्जमा : उन मक्खियों के पेट से पीने की चीज़ निकलती है जिस के रंग मुख़्तलिफ होते हैं उस में लोगों के लिये शिफा है। [सूर-ए-नहल : ६९]

फायदा : शहद एक ऐसी क़ुदरती नेअमत है, जो मुकम्मल दवा और भरपूर गिज़ा भी है, जो हर शख़्स और हर उम्र वाले के लिये बेहद मुफीद है, ख़ुसूसियत से सुबह निहार मुँह उस का इस्तेमाल बड़ी बड़ी बीमारियों से हिफाज़त का ज़रिया है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "उस शख़्स की तरह नमाज़ पढ़ो, जो सब से रूख़्सत होने वाला हो और इस तरह नमाज़ पढ़ो गोया तुम अल्लाह को देख रहे हो, अगर यह हालत पैदा न हो सके, तो कम अज़ कम यह कैफियत ज़रूर हो के अल्लाह तुम्हें देख रहे हैं और लोगों के पास जो कुछ है, उस से बे परवाह हो जाओ, तुम ग़नी हो जाओगे। [मुअजमे कबीर लित्तबरानी : ५२४, अन इब्ने उमर ؓ]

साफ़ज़ल
मुज़ाफ़्फ़र

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१) सफरुल मुज़फ्फर

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत याकूब ﷺ पर आज़माइश

दीगर अम्बिया की तरह हज़रत याकूब ﷺ को भी काफी मुसीबतें बरदाश्त करनी पड़ी, जान व माल और औलाद में सख़्त तरीन आज़माइशों का सामना करना पड़ा, मगर हर मौक़े पर वह साबिर व शाकिर ही रहे। ख़ास तौर पर औलाद में एक लम्बे ज़माने तक इम्तेहान में मुब्तला रहे। बुढ़ापे में हज़रत यूसुफ ﷺ जैसे महबूब बेटे की जुदाई के ग़म में रोते रोते उन की बीनाई चली गई थी, अभी यह रंज व ग़म ख़त्म नहीं हुआ था के उन के दूसरे बेटे बिनयामीन की जुदाई का वाक़िआ पेश आगया। इस तरह उन की महबूब औलाद उन से दूर हो गई। इस के साथ ही दावत व तब्लीग़ में पेश आने वाली तकालीफ और लोगों के इस दावत को क़बूल न करने का रंज व ग़म अलग था। मगर अल्लाह तआला के यह जलीलुलक़द्र नबी सारी मुसीबतों को बरदाश्त कर के सब्र व शुक्र करते थे और अल्लाह तआला की मदद के तलबगार रहते थे। अल्लाह तआला ने उन के सब्र का यह बदला अता किया के बिखरे हुए बेटों से मुलाक़ात करादी और तमाम औलाद को जमा कर दिया और साथ ही उन की बीनाई भी वापस करदी। यक़ीनन अल्लाह तआला सब्र करने वालों को ऐसे ही इनामात से नवाज़ता है।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — खारे पानी को मीठा बनाना

समुन्दर का पानी खारा होता है, उस को पीने के क़ाबिल बनाने के लिये अल्लाह तआला की क़ुदरत देखिये के वह इस खारे पानी को भाप बना कर बादलों के ज़रिये उठाता है। फिर उस को मीठा कर के बारिश बरसा देता है। जिस से इन्सान, तमाम जान्दार और खेती बाड़ी सैराब हो जाती है। इस तरह बादलों के ज़रिये खारे पानी को मीठा बना कर बारिश बरसाना अल्लाह की अज़ीम क़ुदरत है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ें गुनाहों को मिटा देती हैं

रसूलुल्लाह ﷺ ने सहाबा से पूछा : "अगर किसी के दरवाज़े पर एक नहेर हो और उस में वह हर रोज़ पाँच बार गुस्ल किया करे, तो क्या उस का कुछ मैल बाक़ी रह सकता है? सहाबा ﷺ ने अर्ज़ किया के कुछ भी मैल न रहेगा। आप ﷺ ने फर्माया के यही हालत है पाँचों वक़्त की नमाज़ों की, के अल्लाह तआला उन के सबब गुनाहों को मिटा देता है।"

[बुख़ारी : ५२८, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — ज़मीन पर बैठ कर खाना

हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ बयान करते हैं के आप ﷺ ज़मीन पर बैठते और ज़मीन पर (बैठ कर) खाते थे।

[तबरानी कबीर : १२३३१]

नंबर (५): *एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत*	**कुर्आन पढ़ना और उस पर अमल करना**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया :" जिस ने कुर्आन पढ़ा और उस के हुक्मों पर अमल किया, तो उस के माँ बाप को क़यामत के दिन ऐसा ताज पहनाया जाएगा, जिस की रौश्नी आफताब की रौश्नी से भी ज़्यादा होगी, अगर वह आफताब तुम्हारे घरों में मौजूद हो।" [अबूदाऊद : १४५३ अन मआज़ ؓ]

नंबर (६): *एक गुनाह के बारे में*	**किसी मुसलमान की ग़ीबत और बे इज़्ज़ती की सज़ा**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया :" जिस ने किसी मुसलमान (की ग़ीबत की और उस की ग़ीबत) के बदले में एक लुक़्मा भी खाया, तो क़यामत के दिन अल्लाह तआला उस को एक लुक़्मा जहन्नम से खिलाएँगे और जिस ने किसी (मुसलमान की बे इज़्ज़ती की और उस) के बदले में उस को कपड़ा पहनने को मिला, तो क़यामत के दिन अल्लाह तआला उस को उसी क़द्र जहन्नम से पहनाएँगे।"

[अबूदाऊद : ४८८१, अन मुस्तौरिद ؓ]

नंबर (७): *दुनिया के बारे में*	**दुनियादार का घर और माल**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "दुनिया उस शख़्स का घर है, जिस का (आखिरत में) कोई घर नहीं और (दुनिया) उस शख़्स का माल है जिस का आखिरत में कोई माल नहीं और दुनिया के लिये वह शख़्स (माल) जमा करता है जो नासमझ है।" [मुस्नदे अहमद : २३८९८, अन आयशा ؓ]

नंबर (८): *आखिरत के बारे में*	**क़यामत के दिन मुर्दों को ज़िन्दा किया जाएगा**

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "क्या इन्सान को वह वक़्त मालूम नहीं जब तमाम मुर्दों को ज़िन्दा कर के खड़ा किया जाएगा और उन तमाम राज़ों को ज़ाहिर कर दिया जाएगा, जो उन के सीनों में (छुपे हुए) हैं ?" [सूर-ए-आदियात : ९ ता १०]

नंबर (९): *तिब्बे नब्वी से इलाज*	**जिस्म के दर्द का इलाज**

हज़रत उस्मान बिन अबिलआस ؓ ने रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हो कर अपने जिस्म के दर्द को बताया तो रसूलल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जहां दर्द होता हो वहां हाथ रख कर तीन बार بِسْمِ اللّٰهِ और सात मर्तबा यह दुआ पढ़ो:((أَعُوْذُ بِاللّٰهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَاذِرُ)) तर्जमा : मैं अल्लाह और उस की कुदरत की पनाह चाहता हुँ उस तकलीफ़ से जो मुझे पहुँची है और जिस से मैं डरता हुँ चुनान्चे उन सहाबी ने जब यह कलिमात कहे तो उन का दर्द खत्म हो गया फिर वह सहाबी अपने घर वालों और दूसरे ज़रुरत मंदों को हमेशा इन कलिमात की तलकीन करते रहते थे।

[मुस्लिम :५७३७, अन उस्मान बिन अबिलआस ؓ]

नंबर (१०): *कुर्आन की नसीहत*	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : तुम लोग अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किया करो अपने आप को अपने हाथों से हलाकत में न डालो और ख़ुलूस से काम किया करो, क्योंकि अल्लाह तआला अच्छी तरह अमल करने वालों को पसन्द करता है। [सूर-ए-बक़रह : १९५]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२) सफरुल मुज़फ्फर

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत यूसुफ عليه السلام

हज़रत यूसुफ عليه السلام बड़े मशहूर और जलीलुलक़द्र पैगम्बर हैं, वह हज़रत याक़ूब عليه السلام के बेटे हज़रत इस्हाक़ عليه السلام के पोते और हज़रत इब्राहीम عليه السلام के पर पोते हैं, अल्लाह तआला ने उन की शान में एक मुकम्मल सूरत "सूर-ए-यूसुफ" के नाम से नाज़िल फ़र्माई है, जिस में उन की ज़िन्दगी के हालात व वाक़िआत अजीब अन्दाज़ से बयान फ़र्माए हैं। क़ुर्आने करीम में २७ मर्तबा उन का तज़केरा आया है, उन की पैदाइश हज़रत इब्राहीम عليه السلام के तक़रीबन दो सौ पचास साल बाद इराक़ के शहर "फद्दान इरम" में हुई। बचपन ही में वह अपने वालिद के साथ फलस्तीन आगए थे, उन के गयारा भाइयों में बिनयामीन के अलावा बाक़ी सब सौतेले भाई थे। हज़रत याक़ूब عليه السلام उन से बे हद मुहब्बत करते थे, किसी वक़्त भी उन की जुदाई गवारा न थी, क्योंकि शुरू ही से उन की फितरी सलाहियत दूसरे भाइयों के मुक़ाबले में बिल्कुल मुमताज़ और रोज़े रौशन की तरह ज़ाहिर थी। हज़रत याक़ूब عليه السلام होनहार फ़रज़न्द की पेशानी पर चमकता हुआ नूरे नुबुव्वत पहचानते थे और वहिये इलाही के ज़रिये उस की इत्तेला पा चुके थे, अल्लाह तआला ने उन्हें नुबुव्वत के साथ हुकूमत व सलतनत से भी नवाज़ा था।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — आप ﷺ की पुकार पर पत्थर का हाज़िर होना

एक मर्तबा हज़रत इकरिमा رضي الله عنه (जो अभी इस्लाम नहीं लाए थे) रसूलुल्लाह ﷺ के साथ चश्मे के किनारे पर थे, उन्होंने दूसरे किनारे पर पड़े हुए एक बड़े पत्थर की तरफ इशारा कर के रसूलुल्लाह ﷺ से कहा : अगर आप सच्चे हैं, तो इस पत्थर को अपने पास बुला लीजिये के यह पानी में तैरता हुआ आप के पास आजाए, चुनान्चे रसूलुल्लाह ﷺ ने उस की तरफ इशारा किया, वह चटान अपनी जगह से उखड़ी और पानी में तैरती हुई रसूलुल्लाह ﷺ के सामने आकर रुकी और उस ने आप ﷺ की नुबुव्वत की गवाही दी, फिर आप ﷺ ने हज़रत इकरिमा से फर्माया : तुम्हारे लिये इतना ही काफी होना चाहिये। इकरिमा ने कहा : हाँ ! अगर यह पत्थर अपनी जगह वापस भी चला जाए। रसूलुल्लाह ﷺ ने फिर उसे इशारा किया, तो वह अपनी जगह वापस चला गया, मगर फिर भी उस वक़्त मुसलमान न हुए, अलबत्ता फतहे मक्का के वक़्त मुसलमान हो गए। [सीरते हलबिय्या : १७८/५]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — मस्जिद में दाखिल होने के लिए पाक होना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "किसी हाइज़ा औरत और किसी जुनुबी : यानी नापाक आदमी के लिए मस्जिद में दाखिल होने की बिल्कुल इजाज़त नहीं है।" [अबू दाऊद : २३२, अन आयशा رضي الله عنها]

फायदा : मस्जिद में दाखिल होने के लिये हैज व निफ़ास और जनाबत से पाक होना ज़रूरी है।

नंबर (४): *एक सुन्नत के बारे में* | बीमार को दुआ देना

रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी मरीज़ की इयादत करते तो फ़र्माते : ((لَا بَأْسَ طَهُوْرٌ إِنْ شَاءَ اللّٰهُ))
तर्जमा: घबराओ नहीं इन्शाअल्लाह अच्छे हो जाओगे। [बुख़ारी : ५६५६, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (५): *एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत* | ग़रीबों के काम में मदद करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "बेवा और मिस्कीन के कामों में जद्द व जहद करने वाला अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले के मानिन्द है।" [बुख़ारी : ५३५३ अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (६): *एक गुनाह के बारे में* | अल्लाह तआला के साथ शिर्क करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "बिलाशुबा अल्लाह तआला शिर्क को माफ नहीं करेगा, शिर्क के अलावा जिस गुनाह को चाहेगा, माफ कर देगा और जिस ने अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक किया, तो उस ने अल्लाह के ख़िलाफ बहुत बड़ा झूट बोला।" [सूर-ए-निसा : ४८]

नंबर (७): *दुनिया के बारे में* | दुनिया की ज़ीनत काफिरों के लिये

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "दुनिया की ज़िन्दगी तो काफिरों के लिये संवार दी गई है (न के मुसलमानों के लिये) और (काफिर लोग) मुसलमानों का मज़ाक़ उड़ाते हैं, हालांके जो मुसलमान कुफ्र व शिर्क से बचते हैं, वह क़यामत के दिन उन काफिरों से दर्जों में बुलन्द होंगे, (आदमी को अपनी दुनिया और मालदारी पर गुरूर न करना चाहिये, क्यों कि) अल्लाह तआला जिस को चाहते हैं बे हिसाब रोज़ी दे देते हैं (इस लिये माल दार होना कोई फ़ख़्र की चीज़ नहीं)"
[सूर-ए-बक़रह : २१२]

नंबर (८): *आख़िरत के बारे में* | क़ब्र में ही ठिकाने का फैसला

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम में से कोई वफात पा जाता है, तो उस को सुबह व शाम उस का ठिकाना दिखाया जाता है, अगर जन्नती हो, तो जन्नत वालों का और अगर जहन्नमी है, तो जहन्नम वालों का ठिकाना दिखाया जाता है, फिर कहा जाता है : यह तेरा ठिकाना है यहाँ तक के अल्लाह तआला क़यामत के दिन तुझे दोबारा उठाए।" [बुख़ारी : १३७९ , अन अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ]

नंबर (९): *तिब्बे नब्वी से इलाज* | शहद और कुर्आन से शिफा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम अपने लिए शिफा की दो चीज़ों : यानी शहद और कुर्आन को लाज़िम पकड़ लो।" [इब्ने माजा : ३४५२, अन अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ]

नंबर (१०): *नबी ﷺ की नसीहत*

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह तआला रात के आख़री हिस्से में बन्दे से बहुत ज़ियादा क़रीब होते हैं, अगर तुम से हो सके, तो उस वक़्त अल्लाह तआला का ज़िक्र किया करो।"
[तिर्मिज़ी : ३५७९, अन अम्र बिन अबसा ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

③ सफरुल मुज़फ्फर

नंबर ①: इस्लामी तारीख — हज़रत यूसुफ ﷺ की आज़माइश

तामाम अम्बियाए किराम की तरह हज़रत यूसुफ ﷺ को भी अल्लाह की रज़ा व ख़ुश्नूदी हासिल करने के लिये सख़्त आज़माइशों से गुज़रना पड़ा, चुनान्चे वालिदे मुहतरम की शफ़क़त व मुहब्बत से महरूम करने के लिये सौतेले भाइयों ने साज़िश कर के आप को अंधेरे कुंवें में डाल दिया, फिर एक क़ाफ़ले के ज़रिये अज़ीज़े मिस्र के हाथों बेच दिये गए। चंद साल ही गुज़रे थे के अज़ीज़े मिस्र की बीवी की साज़िश पर तक़रीबन ९ साल जेल में रहना पड़ा। जब आप ने उन तमाम मराहिल को सब्र व इस्तेक़ामत के साथ तय कर लिया तो अल्लाह तआला ने आप के अन्दर हिल्म व वक़ार, अमानत व दियानत और इज़्ज़त व शराफत जैसी सिफात मुकम्मल तौर पर पैदा फर्मा दी, आप के इस सब्र व इस्तेक़ामत की बिना पर बिछड़े हुए भाइयों को मिला दिया, वालिद की गई हुई बीनाई वापस कर दी और सब से बढ़ कर आप को जेल ख़ाने से निकाल कर नुबुव्वत व हुकूमत से भी सरफराज़ फर्मा दिया। इसी तरह अल्लाह तआला सब्र करने वाले अपने मुख़लिस बन्दों को दीन व दुनिया की दौलत व इज़्ज़त अता फर्माया करता है।

नंबर ②: अल्लाह की क़ुदरत — आँख की बनावट

अल्लाह तआला ने इन्सान की आँखें बनाई जिन की पुतलियों में लाखों बल्ब रौशनी के लिये लगा दिये। उन में कुछ बल्ब ऐसे हैं, जिन से रंग का पता चलता है। कुछ ऐसे हैं जिन से दूरी का पता चलता है और कुछ ऐसे हैं जिन से साइज़ का पता चलता है, अगर इन में से एक भी बल्ब बुझ जाए, तो काले गोरे, दूरी नज़दीकी और मोटे पतले होने का इल्म ख़त्म होजाए और तमाम चीज़ें एक जैसी नज़र आने लगें। आँख के अन्दर इतने सारे बल्बों का रौशन करना अल्लाह तआला की बहुत बड़ी क़ुदरत है।

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — जुमा की नमाज़ अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जुमा की नमाज़ जमात के साथ अदा करना हर मुसलमान पर लाज़िम है ; मगर चार लोगों पर (लाज़िम नहीं है) (१) वह गुलाम जो किसी की मिलकियत में हो। (२) औरत (३) नाबालिग़ बच्चा (४) बीमार।"

[अबू दाऊद : १०६७, अन तारिक़ बिन शिहाब ؓ]

फायदा : जहां जुमा के शराइत पाए जाते हों, वहां जुमा की नमाज़ अदा करना हर सही व तन्दुरुस्त और बालिग़ मुसलमान मर्द पर फर्ज़ है।

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — दरवाज़े पर सलाम करना

रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी के घर के दरवाज़े पर आते, तो बिल्कुल सामने खड़े न होते, बल्के दाईं तरफ या बाईं तरफ तशरीफ़ फ़र्मा होते और 'अस्सलामु अलैकुम' फर्माते।

[अबू दाऊद : ५१८६, अन अब्दिल्लाह बिन बुस्र ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	मस्जिद से तकलीफ देने वाली चीज़ को दूर करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने मस्जिद से ऐसी चीज़ बाहर कर दी जिस से तकलीफ होती थी (जैसे कूड़ा करकट, काँटा, कंकर पत्थर) तो अल्लाह तआला उस के लिये जन्नत में एक घर बना देगा।" [इब्ने माजा : ७५७, अन अबी सईद رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	क़िब्ले की तरफ थूकना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने क़िब्ला रूख़ बलग़म और थूक फेंका, वह क़यामत के दिन इस हालत में आएगा के वह बलग़म उस के दोनों आँखों के दर्मियान (चिपका हुआ) होगा।" [अबू दाऊद : ३८२४, अन हुज़ैफा رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया आख़िरत में कामयाबी का ज़रिया है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "दुनिया ऐसे आदमी के लिये बहुत ही अच्छा घर है, जो उस को आखिरत (में कामयाबी) का ज़रिया बनाए और अल्लाह तआला को उस (के ज़रिये) राज़ी करले और (वह) ऐसे आदमी के लिये बहुत ही बुरा (घर) है, जिस को आखिरत के कामों से रोक दे और अल्लाह तआला को नाराज़ करदे।" [मुस्तदरक : ७८७०, अन तारिक رضي الله عنه]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	इन्साफ का तराज़ू

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "क़यामत के दिन हम इन्साफ का तराज़ू क़ायम करेंगे और किसी पर ज़ुल्म न होगा। अगर राई के दाने के बराबर भी कोई अमल होगा, तो हम उस को हाज़िर कर देंगे और हम हिसाब लेने वाले काफी हैं।" [सूर-ए-अम्बिया : ४७]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	राख से ज़ख्म का इलाज

ग़ज़व-ए-उहुद में जब रसूलुल्लाह ﷺ का चेहर-ए-मुबारक ज़ख़्मी हो गया तो आप ﷺ की साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा رضي الله عنها खून धो रही थीं और हज़रत अली رضي الله عنه ज़ख्मों पर पानी डाल रहे थे, हज़रत फ़ातिमा رضي الله عنها ने जब देखा के खून बन्द होने के बजाए बढ़ता ही जा रहा है, तो उन्होंने (खजूर के पत्तों की) चटाई का एक टुकड़ा ले कर जलाया और जब वह राख हो गया, तो उस को ज़ख्मों पर लगा दिया जिस से खून बन्द हो गया। [बुखारी : २९०३, अन सहल رضي الله عنه]

फायदा : हकीमों ने लिखा है के टाट और खजूर की चटाई की राख बहते हुए खून को रोकने में बेहद मुफ़ीद है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "उस वक़्त को याद करो जब तुम्हारे रब ने तुम को ख़बरदार कर दिया था, के अगर तुम शुक्र करोगे, तो तुम को अपनी नेअमतें और ज़ियादा दूँगा : और अगर तुम नाशुक्री करोगे, तो यक़ीन जानो मेरी सज़ा बड़ी सख़्त है।" [सूर-ए-इब्राहीम : ७]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(४) सफरुल मुज़फ्फर

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत यूसुफ ﷺ की नुबुव्वत व हुकूमत

अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ ﷺ को ईमान व तौहीद और वही की बरकतों से नवाज़ा था, अगरचे शुरू में माल व दौलत, दुनियवी तरक्क़ी और शहरी ज़िन्दगी उन्हें हासिल नहीं थी और देहात की सादा और बे तकल्लुफ ज़िन्दगी गुज़ारते थे, मगर कुदरते इलाही का करिश्मा देखिये के देहात के रहने वाले अपनी ख्वाहिश व मर्ज़ी के बग़ैर मिस्र जैसे तहज़ीब व तमद्दुन वाले मुल्क में पहुँच गए और इम्तेहान व आज़माइश के मुख्तलिफ मरहलों से गुज़रते हुए वहाँ के बादशाह के पास पहुँच गए, फिर एक मर्तबा बादशाह के एक ख्वाब की ताबीर बताने के बाद मुल्के मिस्र की सूरते हाल का तज़केरा करते हुए फर्माया : क़हत साली के इस दौर में हुकूमत को कामयाबी के साथ चलाने की सलाहियत और तबाही से निकालने की तदबीर और मुल्क की गिरती हुई मईशत (Economy) की हिफाज़त करना मैं जानता हूँ। जब अज़ीज़े मिस्र ने ख्वाब की सही ताबीर और हज़रत यूसुफ ﷺ की अमानत व दियानत और सादगी व सच्चाई को अपनी आँखों से देख लिया, तो हुकूमत के ओहदेदारों और आम व खास शहरियों को जमा कर के तख्त व हुकूमत आप के हवाले करदी, आप की दावती कोशिशों से बादशाह ने ईमान क़बूल कर लिया और पूरा खान्दान मिस्र में आबाद हो गया। इस तरह नुबुव्वत के साथ उन्होंने मिस्र पर ८० साल तक कामयाब हुकूमत करते हुए १२० साल की उम्र में इन्तेक़ाल फ़र्माया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — सूखे थन का दूध से भर जाना

हज़रत उम्मे माबद ؓ फर्माती हैं के हिजरत के दौरान रसूलुल्लाह ﷺ का गुज़र मेरे पास से हुआ, आप ﷺ का सामान ख़त्म हो चुका था, मेरे पास भी कुछ नहीं था, अल्बत्ता एक कमज़ोर सी बकरी थी, आप ﷺ की नज़र उस बकरी पर पड़ी तो आप ﷺ ने फर्माया : क्या तुम इजाज़त देती हो के मैं इस को दूह लूँ ? मैं ने अर्ज़ किया : ठीक है। बस आप ﷺ का उस बकरी के थन पर हाथ फेरना ही था, के वह दूध से भर गया और बहने लगा। तमाम लोगों ने खूब पिया। जब अबू माबद ؓ घर आए तो दूध देख कर पूछा : उम्मे माबद ؓ ! यह क्या है? मैं (यानी उम्मे माबद) ने जवाब दिया : हमारे पास से एक बहुत ही बाबरकत आदमी का गुज़र हुआ है, यह ख़ैर व बरकत उसी की वजह से है।

[तबरानी कबीर : ३५२४, अन हुबैश बिन खालिद ؓ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — औलाद की मीरास में माँ बाप का हिस्सा

कुर्आन मे अल्लाह तआला फर्माता है : "माँ बाप (में से हर एक) के लिये मय्यित के छोड़े हुए माल में छटा हिस्सा है, अगर मय्यित के लिये कोई औलाद हो।" [सूर-ए-निसा : ११]

खुलासा: अगर किसी का इन्तेकाल हो जाए और उस के वरसा में माँ बाप और औलाद हैं, तो माँ बाप में से हर एक को अलग अलग छटा हिस्सा देना फर्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | **परेशानी के वक़्त की दुआ**

जब कोई शख्स किसी परेशानी में मुब्तला होजाए, तो यह दुआ कसरत से पढ़े: ﴿حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ﴾ तर्जमा : मेरे लिये अल्लाह ही काफी है, उस के सिवा कोई इबादत के लाएक नहीं, मैं ने उसी पर भरोसा किया और वही अर्शे अज़ीम का रब है। [सूर-ए-तौबा : १२९]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | **अल्लाह का ज़िक्र करना**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो लोग अल्लाह तआला का ज़िक्र करने के लिये बैठें, उन को फरिश्ते घेर लेते हैं और उन पर खुदा की रहमत छा जाती है और उन को दिली सुकून हासिल होता है।"

[मुस्लिम : ६८५५, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه व अबी सईद رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | **सच्ची गवाही को छुपाना**

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम गवाही मत छुपाया करो और जो शख्स उस (गवाही) को छुपाएगा, तो बिला शुबा उस का दिल गुनहगार होगा और अल्लाह तआला तुम्हारे किये हुए कामों को खूब जानता है।" [सूर-ए-बक़रह : २८३]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | **दुनिया का सामान चंद रोज़ा है**

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "दुनिया का सामान कुछ ही दिन रहने वाला है और उस शख्स के लिये आखिरत हर तरह से बेहतर है, जो अल्लाह तआला से डरता हो और (क़यामत) में तुम पर ज़र्रा बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।" [सूर-ए-निसा : ७७]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | **जन्नत की इमारत**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "(जन्नत की इमारत) की एक ईंट चाँदी की और एक ईंट सोने की है और उस का गारा खालिस मुश्क है और उस की कंकरियाँ मोती और याक़ूत हैं और उस की मिट्टी ज़ाफरान है।" [तिर्मिज़ी : २५२६, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | **मेंहदी से जख्म का इलाज**

रसूलुल्लाह ﷺ को जब भी कोई कांटा चुभा या ज़ख्म हुआ तो आप ﷺ ने उस पर मेंहदी लगाई।

[इब्ने माजा : ३५०२, अन सल्मा उम्मे राफेअ رضي الله عنها]

फायदा : मेंहदी जरासीम को खत्म करती है, जलन और सूजन को दूर करती है नीज़ इस में दूसरे भी बहुत से फवाइद हैं।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अली رضي الله عنه से फर्माया : ऐ अली ! अगर किसी औरत पर अचानक निगाह पड़ जाए तो नज़र फेर लो, दूसरी निगाह उस पर न डालो, पहली निगाह तो तुम्हारी है और दूसरी निगाह तुम्हारी नहीं है (बल्के शैतान की है)। [अबू दाऊद : २१४९, बुरैदा رضي الله عنه]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(५) सफरुल मुज़फ्फर

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत शुऐब ﷺ और उन की क़ौम

हज़रत शुऐब ﷺ अल्लाह के मशहूर नबी हैं, वह कसरत से नमाज व ज़िक्र में मश्गूल रहते और अल्लाह तआला के ख़ौफ से खूब रोया करते थे, क़ुर्आन मजीद में उन का तज़केरा ११ मर्तबा आया है, उन का नसब हज़रत इब्राहीम ﷺ के बेटे मदयन से मिलता है, जो अपने अहले ख़ाना के साथ हिजाज़ (अरब) चले गए थे, बढ़ते बढ़ते यह ख़ान्दान क़बीले की शक्ल में हिजाज़ की आखरी सरहदों से मुल्के शाम के क़रीब तक फैल गया था, अहदे नबवी में शाम, फलस्तीन और मिस्र जाते हुए रास्ते में मदयन के खंडरात नज़र आते थे, हज़रत शुऐब ﷺ इसी क़बीले में पैदा हुए और बाद में यह क़बीला क़ौमे शुऐब कहलाया। यह क़ौम बुत परस्ती, मुशरिकाना अक़ाइद, नाप तौल में कमी, लूट मार और डाका ज़नी जैसे जराइम में मुब्तला थी। नुबुव्वत मिलने के बाद हज़रत शुऐब ﷺ ने उन लोगों को ईमान व तौहीद की दावत देनी शुरू करदी। उन के वाज़ व नसीहत और तक़रीर व ख़िताबत से लोगों के दिलों पर बड़ा असर होता था, इसी लिये हुज़ूर ﷺ ने उन को "ख़तीबुल अम्बिया" के लक़ब से नवाज़ा।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — क़ुतुब तारा

अल्लाह तआला ने आसमान में लाखों रौशन सितारे बनाए, जो आसमान में अपने अपने मदार पर घूमते रहते हैं। इस गर्दिश की वजह से वह मशरिक से मग़रिब में अपनी जगह बदलते रहते हैं, मगर उन लाखों सितारों में एक क़ुतुब तारा ऐसा भी है जो हमेशा शिमाली सिम्त में ठहरा रहता है, जिस को देख कर, ख़ुश्की, रेगिस्तानी और दरियाई सफर करने वाले अपनी सिम्त आसानी से मालूम कर लेते हैं। बिला शुबा इस क़ुतुब तारे के ज़रिये लोगों को मंज़िले मक़सूद तक पहुँचाना क़ुदरत की बड़ी निशानी है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — इस्लाम में नमाज़ की अहेमियत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "दीन बग़ैर नमाज़ के नही है नमाज़ दीन के लिये ऐसी है जैसा आदमी के बदन के लिए सर होता है"। [तबरानी कबीर :१९, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — बच्चों के सरों पर हाथ फेरना

हज़रत अनस बिन मालिक ؓ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ हज़राते अन्सार के पास मुलाक़ात की ग़र्ज़ से तशरीफ ले जाते। उन के बच्चों को सलाम करते और उन के सरों पर हाथ फेरते।

[सुनने कुबरा लिन नसई : ८३४९]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — बिस्तर पर अल्लाह का ज़िक्र करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "बहुत से लोग दुनिया में नर्म नर्म बिस्तरों पर अल्लाह का ज़िक्र करते

होंगे, अल्लाह तआला उन को ऊँचे ऊँचे दर्जे अता फर्माएगा।"

[सही इब्ने हिब्बान : ३९९, अन अबी सईद ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	शराबी प्यासा उठेगा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस शख्स ने शराब पीया (फिर बग़ैर तौबा किये हुए उसी हालत में मर गया) तो क़यामत के दिन प्यासा उठेगा।" [मुस्नदे अहमद : १५०५६, अन क़ैस बिन सअद ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दो चीज़ों को बुरा समझना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "दो चीज़ों को आदम की औलाद बुरा समझती है। एक तो मौत को (बुरा समझती है), हालांके मौत मोमिन के लिये फित्ना (में मुब्तला होने) से बेहतर है, दूसरे माल की कमी को, हालांके माल की कमी हिसाब में कमी का सबब है।"

[मुस्नदे अहमद : २३११३, अन महमूद बिन लबीद ﷺ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	मरने के बाद ज़िन्दा होना

अल्लाह तआला क़यामत के दिन बन्दों को खिताब करते हुए फर्माएगा : "तुम को जिस तरह हम ने पहली मर्तबा दुनिया में पैदा किया था, उसी तरह (हमारे हुक्म से दोबारा ज़िन्दा हो कर) आज तुम हमारे पास आगए, मगर तुम ने तो यह समझ लिया था के हम तुम्हारे लिये दोबारा लौटाए जाने का कोई वक्त ही मुक़र्रर नहीं करेंगे।" [सूर-ए-कहफ : ४८]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	दिल के दौरे का इलाज

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास ﷺ फर्माते हैं के एक मर्तबा मैं बीमार हुआ, तो रसूलुल्लाह ﷺ मुझे देखने के लिए तशरीफ़ लाए और अपना मुबारक हाथ मेरे सीने पर रखा, तो आप ﷺ के हाथ की ठंडक मेरे सीने में फैल गई, फ़िर फ़र्माया : "इसे दिल का दौरा पड़ा है, इस को हारिस बिन कल्दा के पास ले जाओ, क्योंकि वह एक माहिर हकीम है और उस हकीम को चाहिए के वह मदीना की सात अजवा खजूरें गुठलियों के साथ कूट कर इसे खिलाए।" [अबू दाऊद : ३८७५, अन सअद ﷺ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालों ! अल्लाह से डरते रहो और हर शख्स को ग़ौर करना चाहिये के (दुनिया में रह कर) उस ने कल के लिये क्या आगे भेजा है और अल्लाह से डरते रहो, यक़ीनन जो कुछ भी (दुनिया) में करते हो, सब अल्लाह को मालूम है।" [सूर-ए-हश्र : १८]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

६ सफरुल मुज़फ्फर

नंबर १: इस्लामी तारीख़ — हज़रत शुऐब की दावत और क़ौम की हलाकत

अल्लाह तआला ने हज़रत शुऐब को "अहले मदयन" और "असहाबे ऐका" के पास हिदायत के लिये भेजा, यह क़ौम शिर्क व बुत परस्ती में मुब्तला होने के अलावा तिजारती लेन देन में धोके बाज़ी, नाप तौल में कमी, लूट खसूट और डाका ज़नी में हद से बढ़ गई थी। हज़रत शुऐब ने उन तमाम बुराइयों से बाज़ रहने और ईमान व तौहीद क़बूल करने की दावत दी, मगर इस नाफ़र्मान और मुख़्तलिफ गुनाहों में मुब्तला क़ौम पर आप की नसीहत का कोई असर नहीं हुआ और पूरी क़ौम आप को शहर बद्र करने और संगसार करने की धमकियाँ देने लगी और आप की इबादत व नमाज़ का मज़ाक़ उड़ाने लगी, फिर भी हज़रत शुऐब बराबर उन को समझाते रहे, क़ौमे लूत और दूसरी नाफ़र्मान क़ौमों के बुरे अन्जाम का तज़केरा कर के डराते रहे, मगर यह बद बख़्त और नाफ़र्मान क़ौम ज़िद और हट धर्मी में बढ़ती ही चली गई। बिलआखिर अल्लाह तआला ने उन को आसमानी आग और ज़मीनी ज़लज़ले से तबाह व बरबाद कर दिया। हज़रत शुऐब अहले ईमान को लेकर "हज़र मौत" चले गए और १४० साल की उम्र में वफात पाई।

नंबर २: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — क़हत साली दूर होना

हज़रत अनस फर्माते हैं : एक शख़्स आंहज़रत ﷺ के पास आया और कहने लगा : (बारिश न होने की वजह से) जान्वर मर गए और रास्ते बंद हो गए, तो आप ﷺ ने दुआ फर्माई : जिस की वजह से मुसलसल एक हफ्ते बारिश होती रही। वह आदमी अगले जुमा को आकर कहने लगा : या रसूलल्लाह! (बारिश ज़्यादा होने की वजह से) मकानात गिर गए और रास्ते बंद हो गए और जान्वर मर गए। तो आप ﷺ ने मिम्बर पर खड़े हो कर दुआ फर्माई : " ऐ अल्लाह ! टीलों और पहाड़ियों और नालों और दरख़्त उगने की जगहों में बरसा। दुआ करते ही मदीना से बादल छट गया। [बुखारी : १०१६, अन अनस]

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — अल्लाह ही मदद करने वाले हैं

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "अल्लाह तआला ही ज़िन्दगी व मौत देता है, अल्लाह तआला के अलावा कोई काम बनाने वाला और मदद करने वाला नहीं है।" [सूर-ए-तौबा :११६]

खुलासा : इन बातों पर ईमान लाना और इस का यक़ीन करना हर एक मुसलमान पर फ़र्ज़ है।

नंबर ४: एक सुन्नत के बारे में — मय्यित को क़ब्र में रखने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ जब मय्यित को क़ब्र में उतारते तो यह दुआ पढ़ते : ((بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ))

तर्जमा : अल्लाह के नाम से और अल्लाह के रसूल की मिल्लत पर (हम दफन करते हैं)।

[इब्ने माजा : १५५०, अन इब्ने उमर]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अच्छे काम करने पर सद्क़े का सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "इन्सान के हर जोड़ पर रोज़ाना एक सद्क़ा लाज़िम है। दो शख़्सों के दर्मियान इन्साफ कर देना भी सद्क़ा है। किसी शख़्स को जान्वर पर सवार करने में या उस के सामान रखने में मदद कर देना भी सद्क़ा है और अच्छी बात (किसी को बता देना) भी सद्क़ा है। नमाज़ के लिये उठने वाला हर क़दम भी सद्क़ा है। रास्ते से तकलीफ देने वाली चीज़ हटा देना भी सद्क़ा है।"

[बुख़ारी : २९८९ , अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	कुफ्र की सज़ा जहन्नम है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग कुफ्र करते हैं, तो अलाह तआला के मुक़ाबले में उन का माल व औलाद कुछ काम नहीं आएगा और ऐसे लोग ही जहन्नम के इंधन होंगे।

[सूर-ए-आले इमरान : १०]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	मौत का आना यक़ीनी है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम जहाँ कहीं भी होगे, तुम को हर हाल में मौत आपकड़ेगी, चाहे तुम मज़बूत क़िलों में महफूज़ रहो।"

[सूर-ए-निसा : ७८]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़ब्र क्या कहती है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "क़ब्र रोज़ाना पुकार कर कहती है : मैं गुर्बत वहशत और कीड़ों का घर हूँ, मैं आग का तन्नूर या जन्नत का बाग़ हूँ।

[बैहक़ी फी शुअबिलईमान : ४३०, अन बिलाल बिन सअद ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	तलबीना से इलाज

हज़रत आयशा ؓ बीमार के लिए तलबीना तय्यार करने का हुक्म देती थीं और फर्माती थीं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को फ़र्माते हुए सुना : "तलबीना बीमार के दिल को सुकून पहुँचाता है और रंज व गम को दूर करता है।"

[बुख़ारी : ५६८९, अन आयशा ؓ]

फायदा: जौ (Barley) को कूट कर दूध में पकाने के बाद मिठास के लिए उस में शहद डाला जाता है; जिसे तलबीना कहते हैं।

[तिब्बे नब्वी]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

हज़रत अबूज़र ؓ फर्माते हैं : "मुझ से रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : ऐ अबू ज़र ! जब तुम सालन पकाओ, तो उस में पानी ज़ियादा कर दो (यानी शोरबा ज़ियादा रखो) अपने पड़ोसियों की ख़बर रखो और उन में तक़सीम करो।"

[मुस्लिम : ६६८९, अन अबी ज़र ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

⑦ सफरुल मुज़फ्फर

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत अय्यूब ﷺ

हज़रत अय्यूब ﷺ हज़रत इस्हाक़ ﷺ की औलाद में से हैं। उन का शुमार अरब के पैग़म्बरों में होता है। वह अल्लाह तआला के नेक और बड़े साबिर व शाकिर बंदे थे। उन्होंने सब्र व शुक्र की ऐसी मिसाल पेश की के ख़ुद अल्लाह तआला ने उन के सब्र व तक़्वा की शहादत दी। वह एक कामयाब ताजिर और मामलात में हददर्जा अमानत दार होने के साथ तक़्वा व परहेज़गारी में भी बेमिसाल थे। वह ग़रीबों को खाना खिलाते, बेवाओं, मिस्कीनों और तंगदस्तों की ख़ूब मदद किया करते थे। अल्लाह तआला ने उन्हें बहुत माल व दौलत और औलाद से नवाज़ा था फिर सख़्त आज़माइश और इम्तेहान में मुब्तला किया और अता करदा माल व दौलत और औलाद सब कुछ वापस ले लिया और ख़ुद वह अठ्ठारा साल तक बीमारी में मुब्तला रहे। मगर इस कड़ी आज़माइश में भी, कभी भी अपनी ज़बान से शिकवा शिकायत नहीं किया। और हमेशा सब्र व शुक्र ही करते रहे और अल्लाह तआला से दुआएं माँगते रहे। अल्लाह तआला ने उन की दुआ क़बूल फ़र्माई और सब्र के बदले में उन्हें पहले से ज़ियादा माल व दौलत और औलाद से नवाज़ा और बीमारी से नजात दे कर सेहत व तंदुरुस्ती अता फ़र्माई।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — परिन्दों का फ़ज़ा में उड़ना

अल्लाह तआला ने परिन्दों को पर अता फ़र्माए जिन से वह उड़ते हैं, कभी परों को फ़ज़ा में फैलाए रहते हैं और कभी समेट लेते हैं, दोनों हालतों में वह फ़ज़ा में मौजूद रहते हैं। और वज़नी होने के बावजूद ज़मीन पर नहीं गिरते, उन्हें फ़ज़ा में कौन रोके रखता है? अल्लाह तआला ने उन परिन्दों को अपनी क़ुदरत से फ़ज़ा में उड़ने की सलाहियत से नवाज़ा है, अल्लाह तआला क़ुर्आन में फर्माता है, "क्या वह लोग अपने ऊपर उड़ने वाले परिन्दों को नहीं देखते के पर फैलाए हुए (उड़ते फिरते) हैं और (कभी इसी हालत में) पर समेट लेते हैं (और दोनों हालतों में वज़नी होने के बावजूद ज़मीन और आसमान की दर्मियानी फ़ज़ा में फिरते रहते हैं उन्हें ख़ुदाए रहमान ही (फ़ज़ा में) थामे हुए है, बेशक हर चीज़ उस की निगाह में है।

[सूर-ए-मुल्क : १९]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — अज़ाने जुमा के बाद दुनियावी काम छोड़ देना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है: "ऐ ईमान वालो ! जुमा के दिन जब (जुमा की) नमाज़ के लिए अज़ान दी जाए, तो (सब के सब) अल्लाह की तरफ़ दौड़ पड़ो और ख़रीद व फ़रोख़्त छोड़ दो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानते हो।"

[सूर-ए-जुमा : ९]

ख़ुलासा : जुमा की अज़ान सुनने के बाद फौरन जुमा के लिये निकलने की तय्यारी करना और सारे दुनियावी काम काज का छोड़ना ज़रुरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — ग़ुस्ल से पहले वुज़ू करना

हज़रत आयशा ﷺ बयान करती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ जब ग़ुस्ले जनाबत करते, तो पहले दोनों हाथों को धोते फिर नमाज़ की तरह वुज़ू फ़र्माते।

[बुख़ारी : २४८]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	लोगों के फायदे के लिये अच्छा काम करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "सात चीज़ें हैं, जिन का सवाब बन्दे के मरने के बाद भी जारी रहता है जबके वह कब्र में पड़ा हुआ होता है। जिस ने इल्मे दीन सिखलाया, कोई नहर खोदी या कोई कुंवां खुदवाया या कोई दरख़्त लगाया, या कोई मस्जिद बनाई, या कोई कुर्आन छोड़ गया, या कोई औलाद छोड़ी जो उस के लिये मरने के बाद मग़फिरत की दुआ करे।" [हिल्यतुलऔलिया : ३६६/१, अन अनस ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	किसी नामहरम को देखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने अजनबिया औरत की तरफ नजर उठा कर देखा, तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस की आँखों में आग भर देगा और जहन्नम में दाख़िल करेगा। और जिस ने अपनी निगाह को नीचा कर लिया, तो अल्लाह तआला उस के दिल में अपनी मुहब्बत डाल देगा और क़यामत के दिन उसे जन्नत में दाख़िल करेगा।"

[अलमतालिबुलआलिया : १६३५, अन अबी हुरैरह ؓ व इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	माल का ज़ियादा होना

रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फर्माया : "उस वक़्त तक क़यामत नहीं आएगी जब तक तुम्हारे अन्दर माल की इतनी कसरत न हो जाए के वह बहने लगे, यहाँ तक के माल वाले आदमी को इस बात पर रंज व ग़म होगा के उस से कौन सदक़ा क़बूल करेगा? वह एक आदमी को सद्क़े के लिये बुलाएगा तो वह कह देगा के मुझे इस की कोई ज़रूरत नहीं।" [मुस्लिम : २३४०, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जन्नत की सिफात

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "वह घर हमेशा रहने के बाग़ हैं, जिन में परहेज़गार लोग दाख़िल होंगे। उन बाग़ों के नीचे दूध, शहद और पाकीज़ा शराब की नहरें बह रही होंगी, जिस चीज़ को उन का जी चाहेगा वह उन को वहाँ मिलेगी, अल्लाह तआला परहेज़गारों को ऐसा ही बदला दिया करता है।" [सूर-ए-नह्ल : ३१]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	धूप में बैठने के नुक़सानात

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: "धूप में बैठने से बचो, क्योंकि उस से कपड़े खराब होते हैं (बदन से) बदबू फूटने लगती है और दबी हुई बीमारियाँ उभर आती हैं।" [मुस्तदरक : ८२६४, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो! तुम्हारे अम्वाल और औलाद तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफिल न करदें और जो शख़्स ऐसा करेगा, तो वही लोग नुक़सान में पड़ने वाले हैं।" [सूर-ए- मुनाफिक़ून : ९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत लुक़मान हकीम

हज़रत ईसा से तक़रीबन तीन हज़ार साल पहले अरब में लुक़मान नाम के एक बड़े नेक इन्सान गुज़रे हैं, जो हज़रत अय्यूब के भांजे या ख़ाला ज़ाद भाई थे। आप अफरीकिय्युन्नस्ल थे और सूडान के नूबी खानदान से तअल्लुक़ रखते थे और अरब में एक गुलाम की हैसियत से आए थे, मगर आप निहायत नेक, आबिद व ज़ाहिद, अक़्लमन्द और साहिबे हिकमत इन्सान थे। आप की हकीमाना बातें सहीफ-ए-लुक़मान के नाम से अरबों में मशहूर थीं। आप की हकीमाना बातों का ज़िक्र क़ुर्आने करीम में सूर-ए- लुक़मान में भी मौजूद है। आप अपने बेटे को ज़िन्दगी के आख़िर में नसीहत करते हुए फर्माते हैं : बेटा! अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न करना, बिलाशुबा शिर्क बहुत बड़ा गुनाह है, बेटा! नमाज़ पढ़ा करो और नेक काम का हुक्म किया करो और बुरी बातों से मना किया करो और जो तुम पर मुसीबत आए, उस पर सब्र करो, बेशक यह हिम्मत के काम हैं और ज़मीन पर अकड़ कर न चलो, अल्लाह तआला अकड़ कर फख़िया चाल चलने को पसन्द नहीं करते हैं।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — अरब के रास्तों के मुतअल्लिक़ पेशीन गोई

एक मर्तबा आप ﷺ ने अदी बिन हातिम से फर्माया : ऐ अदी! अगर तेरी उम्र लम्बी होगी तो तू देखेगा के ऊँट पर सवार अकेली औरत हिरा (जगह) से चलेगी, यहाँ तक के काबा का तवाफ करेगी और अल्लाह के अलावा उस को किसी का डर न होगा, चुनान्चे हज़रत अदी फर्माते हैं के मैं ने वह ज़माना अपनी आँखों से देखा, के एक औरत हिरा से अकेली ऊँट पर सवार होकर आई और काबा का तवाफ भी किया: उस को अल्लाह के अलावा किसी का डर न था।

[बुख़ारी : ३५९५]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — ज़कात की फर्ज़ियत

रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत मआज़ बिन जबल को यमन भेजते वक़्त फर्माया : "उन लोगों को बता देना के अल्लाह तआला ने उन पर उन के माल में ज़कात फर्ज़ की है।"

[बुख़ारी : १४९६, अन इब्ने अब्बास]

फायदा : अगर किसी के पास निसाब के बराबर माल हो, तो उस में से ज़कात अदा करना फर्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — क़ब्र में मिट्टी डालते वक़्त की दुआ

जब रसूलुल्लाह ﷺ ने उम्मे कुलसूम को क़ब्र में रखा तो पढ़ा :

((مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى))

तर्जमा : इस मिट्टी से हम ने तुम को पैदा किया और इसी में हम तुम को लौटाएँगे और इसी से हम तुम को दोबारा उठाएंगे।

[मुस्नदे अहमद : २१६८३, अन अबी उमामा]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — यतीम पर रहम करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "कसम है उस ज़ात की जिस ने मुझ को सच्चा दीन दे कर भेजा है अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस शख़्स को अज़ाब न देगा जिस ने यतीम पर रहम किया और उस से नर्मी के साथ बात की और उस की यतीमी और बेचारगी पर तरस खाया।"

[तबरानी औसत : ९०७३, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में — कंजूसी करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग अल्लाह तआला के अता करदा माल व दौलत को (ख़र्च करने में) बुख़्ल करते हैं, वह बिल्कुल इस गुमान में न रहें के (उन का यह बुख़्ल करना) उन के लिये बेहतर है, बल्के वह उन के लिये बहुत बुरा है, क़यामत के दिन उन के जमा करदा माल व दौलत को तौक़ बना कर गले में पहना दिया जाएगा और आसमान व ज़मीन का मालिक अल्लाह तआला ही है और अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल से बाख़बर है।

[सूर-ए-आले इमरान : १८०]

नंबर (७): दुनिया के बारे में — नाफ़र्मानों के माल व दौलत को न देखना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो हम ने मुख़्तलिफ काफिरों के गिरोहों को आज़माने के लिये (माल व दौलत) दे रखा है वह दुनियावी ज़िन्दगी की रौनक है, आप उन चीज़ों की तरफ नज़र उठा कर मत देखिये।"

[सूर-ए-ताहा : १३१]

फायदा : नाफ़र्मानों को जो माल व दौलत मिलती है, उस को तअज्जुब और ललचाई हुई निगाह से नहीं देखना चाहिये, क्योंकि वह उन के लिये आज़माइश का ज़रिया है।

नंबर (८): आखिरत के बारे में — आदिल हुकमरों का हाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "क़यामत के दिन इन्साफ से फैसला करने वाले को पेश किया जाएगा और उस से शिद्दत से हिसाब होगा के वह तमन्ना करेगा के वह कभी दो आदमियों के दर्मियान एक खजूर का भी फैसला न किया होता।"

[अलमुअजमुल औसत लित तबरानी : २७२०, अन आयशा رضي الله عنها]

फायदा : तरफदारी और नाइन्साफ़ी कर के फैसले करने वालों को सोचना चाहिए के क़यामत के दिन इन के साथ कैसा सखत मुआमला किया जाएगा।

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज — अनार से मेअ्दे की सफाई

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अनार को उस के अंदरूनी छिल्के समेत खाओ, क्योंकि यह मेअ्दे को साफ़ करता है।"

[मुसनदेअहमद: २२७२६, अन अली رضي الله عنه]

फायदा : अल्लामा इब्ने कय्यिम رحمة الله عليه फर्माते हैं के अनार जहाँ मेअ्दे को साफ़ करता है, वहीं पुरानी खांसी के लिए भी बड़ा कार आमद फल है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम किसी घर में दाख़िल हो, तो घर वालों को सलाम करो और जब तुम घर से निकलो तब भी सलाम कर के घर से निकलो।"

[बैहक़ी शुअबुलईमान : ८५७२, अन क़तादा رحمة الله عليه]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — क़ौमे बनी इस्राईल

बनी इस्राईल का लफ्ज क़ुर्आने करीम में तक़रीबन ४० मर्तबा आया है। इस्राईल हजरत याक़ूब का दूसरा नाम है उन के बारह फरज़न्दों से जो नस्ल चली, उन्हें "बनी इस्राईल" कहा जाता है। उन का मज़हब यहुदियत है। मजहबी व क़ौमी एतेबार से तारीख में उन की बड़ी अहेमियत है। तक़रीबन दो हज़ार साल तक उन के अन्दर अम्बिया व मुरसलीन पैदा होते रहे और दुनियावी तरक्कियाँ भी उन्हें सदियों तक हासिल रहीं। हज़रत दाऊद व सुलेमान जैसे अल्लाह के रसूल और अज़ीम सलतनत व हुकूमत वाले बादशाह और हज़रत यूसुफ जैसे जलीलुलक़द्र नबी और शाहे मिस्र उसी क़ौम में पैदा हुए। दीने इस्लाम के ज़ाहिर होने तक यह लोग अपने वतन मुल्के शाम से निकल कर हिजाज़ और उन के अतराफ में फैल चुके थे। खास तौर पर मदीना मुनव्वरा के इर्द गिर्द उन की आबादियाँ थीं। यह लोग बड़े मालदार और तिजारत में माहिर समझे जाते थे। अल्लाह तआला ने क़ुर्आने करीम में बार बार उन पर अपने खुसूसी इनामात का तज़केरा किया है, साथ ही उन की बदआमाली, बद अहेदी, मुसलमानों और अल्लाह के पैगम्बरों के साथ उन की बदसुलूकी और दूसरी बहुत सी खराबियों का ज़िक्र किया है और अपनी हालत दुरूस्त करने का हुकम दिया है।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — ज़मीन के ख़ज़ाने

अल्लाह तआला ने ज़मीन के अन्दर बे शुमार खज़ाने पैदा फर्माए, जिन से हमारी बहुत सी ज़रूरतें पूरी होती हैं, कहीं ज़मीन से मुख्तलिफ क़िस्म के रंग बिरंगे क़ीमती पत्थर निकलते हैं। जिन को हम अपने घरों में इस्तेमाल करते हैं। कहीं कोयला निकलता है। जो जलाने के काम आता है और किसी जगह से पेट्रोल निकलता है जिस से बड़ी बड़ी मशीनें, हवाई जहाज़, रेल गाड़ी और दूसरी सवारियाँ चलाई जाती हैं और उसी ज़मीन से सोना चाँदी भी निकलता है जिन से ज़ेब व ज़ीनत के लिये क़ीमती ज़ेवर बनाया जाता है और फल फ्रूट पैदा किये जो इनसानी जिस्म को ताक़त बख्शते हैं, ज़मीन के अन्दर इतने सारे ख़ज़ानों का पैदा करने वाला कौन है? यक़ीनन यह अल्लाह ही की ज़ात है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — जमात से नमाज़ न पढ़ने पर वईद

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास से किसी ने पूछा के एक शख्स दिन भर रोज़ा रखता है और रात भर नफ्लें पढ़ता है मगर जुमा और जमात में शरीक नहीं होता (उस के मुतअल्लिक़ क्या हुक्म है) उन्होंने फ़र्माया: "वह शख्स जहन्नमी है।"

[तिर्मिज़ी: २१८, अन मुजाहिद]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — पानी पीने का सुन्नत तरीक़ा

हज़रत अबू हुरैरह बयान करते हैं के रसूलुल्लाह तीन साँस में पानी पीते, जब बर्तन मुँह से लगाते तो "بِسۡمِ اللّٰہ" पढ़ते और जब दूर करते, तो "اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ" कहते इस तरह तीन मर्तबा करते।

[जमउलवसाइल : २५१/२]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	इस्तिग़फार करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दिलों में (गुनाहों की वजह से) एक क़िस्म का ज़ंग लग जाता है जैसे तांबे को लग जाता है और उस की सफाई इस्तिग़फार है।" [बैहक़ी फी शुअबिल ईमान : ६६९, अन अनस ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	शहीद को भी क़र्ज़ अदा करना होगा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मोहम्मद की जान है ! अगर कोई शख़्स अल्लाह की राह में मारा गया फिर कुछ देर ज़िन्दा रहा और क़र्ज़ न उतारा, तो जन्नत में दाख़िल नहीं होगा जब तक के अपना कर्ज़ा न उतारे।" [मुस्तदरक हाकिम : २२१२, अन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया से मुहब्बत आख़िरत की बरबादी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने अपनी दुनिया से मुहब्बत की उस ने अपनी आख़िरत का नुक़सान किया और जिस ने आख़िरत से मुहब्बत की उस ने अपनी दुनिया का नुक़सान किया, तो तुम लोग बाक़ी रहने वाली (आख़िरत) को ख़त्म होने वाली (दुनिया) पर तरजीह दो।

[मुस्नदे अहमद : १९११९, अन अबी मूसा ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अल्लाह के वली की कामयाबी

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "सुन लो ! जो लोग ख़ुदा के दोस्त हैं, उन को न किसी क़िस्म का ख़ौफ होगा न वह ग़मगीन होंगे। यह वह लोग हैं जो ईमान लाए और (गुनाहों से) बचते रहे, उन के लिये दुनिया और आख़िरत की ज़िन्दगी में ख़ुशख़बरी है।" [सूर-ए-यूनुस : ६२ ता ६४]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	ज़हर और जादू से हिफाज़त

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स सुबह सुबह (बग़ैर कुछ खाए पिये) मदीना की सात अजवा खजूरें इस्तेमाल कर ले, उस को न तो उस दिन ज़हर से नुक्सान होगा और न जादू का असर होगा।"

[बुख़ारी : ५७६९, अन सअद ؓ]

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम सब अल्लाह की इबादत करो, उस के साथ किसी को शरीक न करो, माँ बाप रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों, क़रीबी पड़ोसियों और दूर के पड़ोसियों, पास बैठने वालों, मुसाफिरों और जो लोग तुम्हारे मातहत हों, सब के साथ हुस्ने सुलूक करो।"

[सूर-ए-निसा : ३६]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१०) सफरुल मुज़फ्फर

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत मूसा ﷺ की पैदाइश

हज़रत मूसा ﷺ बनी इस्राईल के जलीलुलक़द्र नबी हैं, कुर्आने करीम में १३६ मर्तबा उन का ज़िक्र आया है। अल्लाह तआला ने उन्हें हम कलामी का शर्फ भी अता फ़र्माया है, उन के वालिद का नाम इमरान था, वह सोलहवीं सदी क़ब्ल मसीह में पैदा हुए। पैदाइश के बाद उन की वालिदा ने फिरऔन के डर से उन्हें एक संदूक़ में रख कर दरिया में बहा दिया, संदूक़ बहता हुआ फिरऔन के महल तक जा पहुँचा, फिरऔन और उस की बीवी आसिया ने संदूक़ निकलवाया। अल्लाह तआला ने उस मासूम बच्चे की मुहब्बत आसिया के दिल में डाल दी और फिरऔन को उस की तरबियत व परवरिश करने और बेटा बनाने पर मजबूर कर दिया, इस तरह ग़ैबी तौर पर एक शहज़ादे की तरह शाही महल में हज़रत मूसा ﷺ की परवरिश हुई। जब वह जवान हुए, तो उन्होंने एक मज़लूम इस्राईली की मदद करते हुए फिरऔन की क़ौम के एक आदमी को घूँसा मार दिया जिस की वजह से वह मर गया। हज़रत मूसा ﷺ अपनी जान के ख़ौफ से मिस्र छोड़ कर मदयन चले गए और वहाँ हज़रत शुऐब ﷺ से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने हज़रत मूसा ﷺ की आमानतदारी को देख कर अपनी बेटी सफूरा से निकाह कर दिया। जब वह अपने अहले ख़ाना को लेकर मदयन से मिस्र रवाना हुए तो रास्ते में अल्लाह तआला ने कोहे तूर पर नुबुव्वत से सरफराज़ फर्माया। फिर मिस्र पहुँच कर वह बनी इस्राईल की इस्लाह और फिरऔन को दावते हक़ देने में मशग़ूल हो गए।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हुज़ूर ﷺ का आगे पीछे देखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : तुम्हारा क्या ख़याल है के मैं सिर्फ सामने ही देखता हूँ? बख़ुदा तुम्हारा ख़ुशू व ख़ुज़ू और रुकूअ मुझ पर पोशीदा नहीं है, बिला शुबा मैं अपनी पीठ के पीछे भी तुम को देखता हूँ।"

[बुख़ारी : ४१८, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — हमेशा सच बोलो

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम सच्चाई को लाज़िम पकड़ो और हमेशा सच बोलो, क्योंकि सच बोलना नेकी के रास्ते पर डाल देता है और नेकी जन्नत तक पहुँचा देती है।"[बुख़ारी : ६६३९, अन अब्दिल्लाह ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — घर वालों से रुख़्सत होते वक़्त की दुआ

हज़रत अबू हुरैरह ؓ फर्माते हैं के मैं तुम को वह कलिमात सिखाता हूँ, जो रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे सिखाए हैं। जब सफर का इरादा कर के घर से निकलो, तो अपने घर वालों को यह दुआ दो : ((أَسْتَوْدِعُكُمُ اللهَ الَّذِي لَا يُضِيعُ وَدَائِعَهُ)) तर्जमा : मैं तुम्हें उस अल्लाह के हवाले करता हूँ, जो अमानतों को ज़ाए नहीं करता।

[अमलुलयौम व ल्लैला इब्ने सुन्नी : ५०७]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | कुर्आन शरीफ पढ़ने की कोशिश करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स कुर्आन पढ़ता हो और उस में अटकता हो और वह उस को मुश्किल लगता हो, उस को दो सवाब मिलेंगे।" (एक पढ़ने का और एक अटकने की मशक़्क़त का)

[मुस्लिम : १८६२, अन आयशा ﵂]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | यतीमों का माल मत खाओ

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "यतीमों के माल उन को देते रहा करो और पाक माल को नापाक माल से न बदलो और उन का माल अपने मालों के साथ मिला कर मत खाओ, ऐसा करना यक़ीनन बहुत बड़ा गुनाह है।"

[सूर-ए-निसा : २]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | सिर्फ दुनिया की नेअ्मतें मत माँगो

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख़्स (अपने आमाल के बदले में) सिर्फ दुनिया के इनाम की ख़्वाहिश रखता है (तो यह उस की नादानी है के उसे मालूम नहीं) के अल्लाह तआला के यहाँ दुनिया और आखिरत दोनों का इनाम मौजूद है (लिहाज़ा अल्लाह से दुनिया और आख़िरत दोनों की नेअ्मतें माँगो) अल्लाह तुम्हारी दुआओं को सुनता और तुम्हारी निय्यतों को देखता है।"

[सूर-ए-निसा : १३४]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | दोज़ख़ के लिबास की गर्मी

हज़रत उमर ﵁ फर्माते हैं के हज़रत जिब्रईल ﵇ ने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया : मुझे उस ज़ात की क़सम ! जिस ने आप को हक़ पर मबऊस फर्माया है अगर दोज़ख़ के कपड़ों में से किसी कपड़े को आसमान और ज़मीन के दर्मियान लटका दिया जाए तो ज़मीन पर रहने वाले सब जान्दार गर्मी से हलाक हो जाएँगे।

[तबरानी औसत : २६८३ , अन उमर ﵁]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | फोड़े फुंसी का इलाज

आप ﷺ की बीवियों में से एक बीवी बयान फ़र्माती हैं के एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ मेरे पास तशरीफ़ लाए और दर्याफ़्त फ़र्माया : "क्या तेरे पास ज़रीरा है ? मैं ने कहा: हाँ ! तो आप ﷺ ने उसे मंगाया और अपने पैर की उंगलियों के दर्मियान जो फुंसी थी उस पर रख कर यह दुआ फ़र्माई :

((اَللّٰهُمَّ مُطْفِئَ الْكَبِيْرِ، وَمُكَبِّرَ الصَّغِيْرِ أَطْفِهَا عَنِّيْ))

तर्जमा: ऐ बड़े को छोटा और छोटे को बड़ा करने वाले अल्लाह ! इस ज़ख़्म को ख़त्म कर दे, चुनान्चे वह फुंसी अच्छी हो गई।

[मुस्तदरक : ७४६३]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जुमा का दिन मुसलमानों के लिये ईद का दिन है, पस जो जुमा के लिये निकले वह गुस्ल कर ले, अगर अपने पास ख़ुश्बू हो तो लगा ले और मिस्वाक को हर हाल में लाज़िम पकड़ो।

[इब्ने माजा : १०८९, अन इब्ने अब्बास ﵁]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

⑪ सफरुल मुज़फ्फर

नंबर ①: इस्लामी तारीख़ — फिरऔन को ईमान की दावत

अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा ﷺ को नुबुव्वत और मुअ्जिज़ात देकर फिरऔन की हिदायत के लिये भेजा, उन्होंने फिरऔन के पास जाकर अल्लाह तआला पर ईमान लाने और बनी इस्राईल पर ज़ुल्म न करने की नसीहत फ़र्माई। फिरऔन और उस की क़ौम ने उन को झुटलाया, तो अपनी नुबुव्वत की तस्दीक़ के लिये मुअ्जिज़ात पेश फ़र्माए, मगर फिरऔन ने गुरूर व ताक़त के नशे में हज़रत मूसा ﷺ की दावत का असर क़बूल करने के बजाए आप ﷺ के मुअ्जिज़े को जादूगरी का करिश्मा समझ कर मुक़ाबले के लिये मुल्क के माहिर जादूगरों को बुला लिया, मगर वह जादूगर मुक़ाबले में नाकाम हो गए, और नुबुव्वत व सहर के फर्क और मुअ्जिज़े की हक़ीक़त को समझ कर जादूगरों ने ईमान क़बूल कर लिया। इस मंज़र को देख कर फिरऔन गुस्से से भड़क उठा और उन को सख़्त सज़ा दे कर हलाक कर डाला। उस के बाद भी हज़रत मूसा ﷺ मुसलसल उन्हें दावत देने में मसरूफ रहे, मगर उन बदबख़्तों ने फिर भी ईमान क़बूल न किया, जिस की वजह से उन पर क़हत साली, तूफान, टिड्डियों, जूवों, मेंडक और ख़ून के अज़ाब का सिलसिला शुरू होगया, इन सज़ाओं से इबरत हासिल करने के बजाए उन की सरकशी व नाफ़र्मानी हद से बढ़ गई, तो अल्लाह तआला ने पूरी क़ौम के साथ उस को बहरे कुलज़ूम में डुबो कर हलाक कर दिया और उस की लाश को महफूज़ करके बाद में आने वालों के लिये इबरत का निशान बना दिया।

नंबर ②: अल्लाह की क़ुदरत — सूरज की गर्मी

अल्लाह तआला ने सूरज को पैदा किया। दरअसल यह आग का एक गोला है जो पूरी दुनिया को रौश्नी के साथ साथ गर्मी भी मुहय्या करता है। सूरज एक सेकंड में ज़मीन पर जो गर्मी फेंकता है वह लाखों एटम बम ज़मीन पर गिराये जाने के बराबर है, जब के एक एटम बम शहरों को तबाह करने के लिये काफी है। अब अगर सूरज की पूरी गर्मी ज़मीन पर आती, तो तमाम दुनिया जल कर ख़ाक होजाती, लेकिन अल्लाह तआला अपनी कुदरत से सूरज के ज़रिये इतनी ही रोश्नी और गर्मी ज़मीन पर भेजता है जितनी हमें ज़रूरत है।

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — खड़े हो कर नमाज़ पढ़ना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : नमाज़ में अल्लाह के सामने आजिज़ बने हुए खड़े हुआ करो।

[सूर-ए-बक़रा : २३८]

ख़ुलासा : अगर कोई शख़्स खड़े होकर नमाज़ पढ़ने की ताक़त रखता हो, तो उस पर फर्ज़ और वाजिब नमाज़ को खड़े हो कर पढ़ना फर्ज़ है।

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — नमाज़ पढ़ने से पहले मिस्वाक करना

हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी ﷺ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ जब भी किसी काम को छोड़ कर नमाज़ के लिये निकलते तो मिस्वाक फ़र्माते।

[तबरानी कबीर : ५१२५]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	दौराने सफर शर से बचने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स किसी मक़ाम पर ठहरे और यह दुआ पढे, तो उस मक़ाम से रवाना होने तक कोई चीज़ नुक्सान नहीं पहुँचाएगी" : ((اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ))

तर्जमा : अल्लाह के मुकम्मल व जामे कलिमात के जरिये तमाम मख़्लूक़ के शर से पनाह चाहता हूँ।

[मुस्लिम : ६८७८, अन ख़ौला बिन्ते हकीम رضي الله عنها]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	एक बुरे कलिमे की सज़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "इन्सान एक ऐसा कलिमा बोलता है, जिस का मतलब नहीं समझता (हालाँके) उस की वजह से मशरिक़ और मग़रिब के दर्मियानी फासले से भी ज़ियादा दूर जहन्नम में जा कर गिर जाता है।" [तिर्मिज़ी : २३१४, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की मिसाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "दुनिया की मिसाल पानी में चलने वाले आदमी की तरह है, क्या जो पानी में चलता है, उस से यह हो सकता है के उस के क़दम न भीगे? [शुअबुलईमान : १०१८७, अन हसन رحمه الله]

ख़ुलासा : जिस तरह पानी में चलने वाले का क़दम भीगे बग़ैर नहीं रह सकता, इसी तरह दुनिया में घुसने वाला गुनाहों और आफतों से नहीं बच सकता।

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अच्छे लोग कामयाब होंगे

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जिस वक़्त सूर फूँका जाएगा, उस दिन लोगों के दर्मियान किसी क़िस्म का रिश्ता नाता बाक़ी नहीं रहेगा और न एक दूसरे का हाल पूछ सकेंगे, चुनान्चे जिस की नेकियों का पल्ला भारी होगा, तो ऐसे लोग कामयाब होंगे।" [सूर-ए-मोमिनून : १०१, १०२]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	चुकंदर (बीट रूट) के फ़वाइद

एक मरतबा उम्मे मुन्ज़िर बिन्ते क़ैस رضي الله عنها के घर पर रसूलुल्लाह ﷺ के साथ हज़रत अली رضي الله عنه भी खजूर खा रहे थे, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "ऐ अली ! बस करो, इस लिये के तुम अभी कमज़ोर हो।" उम्मे मुन्ज़िर का बयान है के मैं ने उन के लिये चुकंदर और जौ का खाना तय्यार किया, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अली رضي الله عنه से फर्माया : ऐ अली ! इस को खाओ, इस लिये के यह तुम्हारे लिये फायदेमंद है। [अबू दाऊद : ३८५६]

फायदा : चुकंदर और जौ कुव्वत बख़्शते हैं और कमज़ोरी को दूर करते हैं।

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो कुछ माल अल्लाह तआला ने तुम को दिया है, उस से आख़िरत के घर की तलाश करो और दुनिया में से अपना हिस्सा (लेना) न भूलो और जिस तरह अल्लाह ने तुम्हारे साथ एहसान का मामला किया है, तुम भी लोगों के साथ एहसान का मामला किया करो और ज़मीन में फसाद फैलाने की ख़्वाहिश मत करो, बेशक अल्लाह तआला फसाद करने वालों को पसन्द नहीं करता।" [सूर-ए-क़सस : ७७]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१२) सफरुल मुज़फ्फर

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — क़ौमे बनी इस्राईल पर अल्लाह के इनामात

जब फिरऔन और उस की क़ौम की तबाही के बाद हज़रत मूसा ﷺ और बनी इस्राईल ने बहरे कुलज़ुम पार कर लिया, तो अल्लाह तआला ने उन्हें अपने वतन फलस्तीन जाने का हुक्म दिया, जिन पर क़ौमे अमालेक़ा ने क़ब्ज़ा कर लिया था, मगर बनी इस्राईल क़ौमे अमालेक़ा की जंगी कुव्वत व ताक़त की वजह से मुक़ाबला करने की हिम्मत न कर सके, इस बुज़दिली पर अल्लाह तआला ने चालीस साल तक मैदाने तीह में भटकते रहने की सज़ा दी, जो कोहे तूर के शिमाल में और सेहराए सीना के जुनूब में वाक़े है। अल्लाह तआला ने इस जलीलुलक़द्र नबी की बरकत से बारा क़बीलों के लिये बारा चश्मे जारी कर दिये। सख़्त गर्मी से बचने के लिये बादल का साया और खाने के लिये मन व सलवा नाज़िल फर्माया। मगर बनी इस्राईल नाशुक्री करने लगे और मन व सलवा जैसी नेअ्मतों को छोड़ कर साग सब्ज़ियों का मुतालबा करने लगे। फिर जब उन मे मुतालबे पर हज़रत मूसा ﷺ तौरात लेने कोहे तूर पर गए, तो उन लोगों ने बछड़े को माबूद बना कर उस की पूजा शुरू करदी। इस शिर्क व बुत परस्ती की माफी और तौबा के लिये एक दूसरे को क़त्ल का हुक्म दिया गया, जिस के नतीजे में तीन हज़ार या सत्तर हज़ार अफराद क़त्ल किये गए। ग़र्ज नाफरमानियों की वजह से यह क़ौम चालीस साल तक अर्ज़े मुक़द्दस (फलस्तीन) में दाख़िल न हो सकी।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — अंधेरी रात में रौशनी ज़ाहिर होना

हज़रत उसैद बिन हुज़ैर और अब्बाद बिन बिश्र अंधेरी रात में रसूलुल्लाह ﷺ के पास से घर जाने के लिये निकले, तो (रसूलुल्लाह ﷺ की बरकत से वह देखते हैं के) उन के सामने एक रौशनी है, जब वह एक दूसरे से अलग हुए तो उस रौशनी के भी दो हिस्से हो गए (और दोनों सही सलामत अपने अपने घर पहुँच गए।)

[बुख़ारी : ३८०५, अन अनस ؓ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नेकियों का हुक्म देना और बुराइयों से रोकना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है के तुम पर ज़रूरी और लाज़िम है के भलाइयों का हुक्म करो और बुराइयों से रोको, वरना क़रीब है के अल्लाह तआला गुनहगारों के साथ तुम सब पर अपना अज़ाब भेज दे, उस वक़्त तुम अल्लाह से दुआ माँगोग तो क़बूल न होगी।

[तिर्मिज़ी : २१६९, अन हुज़ैफा ؓ]

ख़ुलासा : नेकियों का हुक्म करना और बुराइयों से रोकना उम्मत के हर फर्द पर अपनी हैसियत और ताक़त के मुताबिक़ लाज़िम और ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — हर काम में कामयाबी की दुआ

दीन और दुनियावी काम की दुरुस्तगी के लिये इस दुआ का एहतेमाम करना चाहिये :

﴿ رَبَّنَا آتِنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ﴾

तर्जमा : ऐ हमारे पर्वरदिगार ! अपनी जानिब से हमें रहमत से नवाज़िये और हमारे कामों में अच्छाई पैदा कर दीजिये। [सूर-ए-कहफ : १०]

नंबर (५): एक अहम अमल की फ़ज़ीलत — बाज़ार जाने का वज़ीफा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स बाज़ार में दाखिल होते वक्त यह दुआ पढ़ेगा उसे दस लाख नेकियाँ मिलेंगी, उस के दस लाख गुनाह माफ होंगे और दस लाख दर्जे बुलन्द होंगे। दुआ यह है :
((لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ، وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ)) तर्जमा : अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, वह तन्हा है, उस का कोई शरीक नहीं, सारी हुकूमत उसी की है और उसी के लिये सारी तारीफें हैं, वही मारता है, वही ज़िन्दा करता है, वह ज़िंदा है, कभी नहीं मरेगा, तमाम भलाइयाँ उसी के कब्ज-ए-कुदरत में हैं और वह हर एक चीज़ पर क़ादिर है। [तिर्मिज़ी : ३४२८ अन उमर رضی اللہ عنہ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में — अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़र्मानी

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख्स अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़र्मानी करेगा और उस की (मुक़र्रर की हुई) हदों से आगे बढ़ेगा, तो अल्लाह तआला उस को आग में दाखिल करेगा, जिस में वह हमेशा रहेगा और उस को ज़लील व रुस्वा करने वाला अज़ाब होगा।"

[सूर-ए-निसा : १४]

नंबर (७): दुनिया के बारे में — दुनिया से बेहतर आख़िरत का घर है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "दुनिया की ज़िन्दगी सिवाए खेल कूद के कुछ भी नहीं और आख़िरत का घर मुत्तक़ियों (यानी अल्लाह तआला से डरने वालों) के लिये बेहतर है।

[सूर-ए-अन्आम : ३२]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में — इब्लीस भी रहमत की उम्मीद करने लगेगा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मुझे क़सम है उस ज़ात की जिस के कब्ज़े में मेरी जान है ! अल्लाह तआला क़यामत के दिन इतनी मग़फिरत करेंगे के शैतान भी उम्मीद करने लगेगा के शायद उस की भी मग़फिरत होजाए।" [अलमुअ्जमुलकबीर लिततबरानी : २९५१, अन हुज़ैफा رضی اللہ عنہ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज — इस्मिद सुर्मा से आँखों का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: "तुम्हारे सुर्मों में सब से बहतर सुर्मा इस्मिद है, जो आँखों की रौशनी बढ़ाता है और पल्कों के बाल को उगाता है।" [अबू दाऊद : ३८७८, अन इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम अल्लाह तआला की तस्बीह और कलिम-ए-तय्यिबा और अल्लाह की पाकी को अपने ऊपर लाज़िम करलो और ग़फलत मत करो और उन तस्बीहात को उंगलियों पर शुमार करो, क्योंकि उन से क़यामत के रोज़ सवाल किया जाएगा और यह उस अमल की गवाही देंगी। [तिर्मिज़ी : ३५८३, अन युसैरा رضی اللہ عنہا]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१३) सफरुल मुज़फ्फर

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत मूसा ﷺ को तौरात का मिलना

अल्लाह तआला ने चार मशहुर आसमानी किताबों में से "तौरात", हज़रत मूसा ﷺ को बनी इस्राईल की हिदायत के लिये अता फर्माई, उन की क़ौम ने उस पर अमल न करने के लिये हिला बाज़ी शुरू कर दी, कभी तूर पर अल्लाह से बात करने की फरमाइश की, तो कभी अल्लाह तआला को देखने के बाद तौरात पर अमल करने का वादा किया, लेकिन यह क़ौम कोहे तूर पर अल्लाह का हुक्म सुनने के बाद भी हज़रत मूसा ﷺ और तौरात पर ईमान नहीं लाई फिर खुल्लम खुल्ला अल्लाह को देखने के मुतालबे पर ग़ज़बे खुदावंदी की वजह से सत्तर अफराद को जला कर हलाक कर दिया गया। उस के बाद हज़रत मूसा ﷺ की दुआ पर दोबारा ज़िन्दा किया और उन के सरों पर तूर पहाड़ को बुलंद कर के तौरात पर अमल करने का वादा लिया गया, उन को हफ्ते के दिन इबादत करने का हुक्म दिया और मछली शिकार करने से मना किया। मगर अफसोस ! यह क़ौम हज़रत मूसा ﷺ के किसी हुक्म पर अमल तो क्या करती बल्के क़दम क़दम पर आप को सताने और ज़ुल्म व ज़ियादती में हद से बढ़ती चली गई, बिलआख़िर हज़रत मूसा ﷺ बनी इस्राईल की तक्लीफों पर सब्र और उन की हिदायत व इस्लाह की कोशिश करते हुए १२० साल की उम्र में वफात पागए और फलस्तीन के मकामे "अरीहा" में सुर्ख़ टीले के क़रीब दफन किये गए।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — सूरज मुखी का फूल

अल्लाह तआला ने सूरज मुखी के फूल के अन्दर एहसास व शुऊर की अजीब सलाहियत रखी है, सूरज की किरनों के साथ इस फूल का रूख़ भी बदलता रहता है। जब सुबह के वक़्त सूरज निकलता है तो उस का रूख़ मश्रिक़ की तरफ होता है और दोपहर के वक़्त उस का रूख़ सीधा आसमान की तरफ हो जाता है। यहाँ तक के सूरज ग़ुरूब होते वक़्त बिलकुल मग़्रिब की तरफ घूम जाता है। सूरज की शुआओं के साथ इस फूल को कौन घुमाता है? बेशक अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत ही से इस नर्म व नाज़ुक फूल के अन्दर सूरज की गर्दिश के साथ अपना रूख़ बदलने की सलाहियत पैदा फ़र्माई है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — चंद बातों पर ईमान लाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तक कोई बंदा इन चार बातों पर ईमान न लाए, तो वह मोमिन नहीं हो सकता। (१) इस बात की गवाही दे के अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लाइक़ नहीं। (२) (इस की भी गवाही दे के) मैं अल्लाह का रसूल हूँ उस ने मुझे हक़ के साथ भेजा है। (३) मरने और फिर ज़िन्दा होने का यक़ीन रखे। (४) तक़्दीर पर ईमान लाए। [तिर्मिज़ी : २१४५, अन अली ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — दोनों हाथों से सर का मसह करना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद ﷺ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने दोनों हाथों से सर का मसह फ़र्माया। [बुख़ारी : १८५]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	शहादत की मौत माँगना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स सच्ची तलब के साथ अल्लाह तआला से शहादत की मौत माँगता है, तो अल्लाह तआला उसे शोहदा के दरजे तक पहुँचा देता है, चाहे वह अपने बिस्तर पर ही मरा हो।" [मुस्तदरक : २४१२ , सहल बिन हुनैफ़ رضی اللہ عنہ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	किसी अजनबी औरत से मुसाफ़ा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया :"जिस ने अजनबिया औरत से मुसाफ़ा किया, तो क़यामत के दिन वह इस हालत में आएगा के उस के दोनों हाथ उस की गर्दन से जकड़े हुए होंगे और फिर उस के हक़ में जहन्नम का फैसला होगा और अगर उस से (ना जाइज़) बात चीत की है, तो क़यामत के दिन बात के हर हर जुमले के बदले में उस को एक हज़ार साल जहन्नम में क़ैद किया जाएगा।"

[अलमतालिबुल आलिया : १६३५, अन अबी हुरैरह व इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہم]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की इमारतें

रसूलुल्लाह ﷺ एक मर्तबा एक गुम्बद वाली इमारत के पास से गुज़रे तो फ़र्माया : "यह किस ने बनाया है ? लोगों ने बताया के फलाँ शख़्स ने, तो फ़र्माया : क़यामत के दिन मस्जिद के अलावा हर इमारत साहिबे इमारत के लिये वबाल होगी।" [शुअबुल ईमान : १०३०२, अन अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	नेक लोग जन्नत में रहेंगे

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो लोग नेक बख़्त होंगे वह हमेशा जन्नत में रहेंगे, जब तक आसमान व ज़मीन बाक़ी रहेंगे।" [सूर-ए-हूद : १०८]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	दिल की कमज़ोरी और रंज व ग़म का इलाज

हज़रत आयशा رضی اللہ عنہا फ़र्माती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ के घर वालों में से जब किसी को बुख़ार आता, तो आप ﷺ हरीरा इस्तेमाल करने का हुक्म देते और फ़र्माते के यह रंजीदा आदमी के दिल को कुव्वत देता है और बीमार के दिल से रंज व ग़म को इस तरह दूर करता है, जिस तरह तुम पानी से अपने चेहरे के मैल कुचैल को दूर करते हो। [इब्ने माजा : ३४४५, अन आयशा رضی اللہ عنہا]

फ़ायदा : जव के आटे को भून कर इस में घी, मेवे और शकर डाल कर पकाया जाता है, जिस को हरीरा कहते हैं।

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "मुझ को तुम नेअ्मतों पर याद करो, मैं तुम को याद रखूँगा और मेरे एहसानात का शुक्रिया अदा करते रहो और मेरी नाफ़र्मानी न किया करो।" [सूर-ए-बक़रा : १५२]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ | हज़रत हारून

हज़रत हारून हज़रत मूसा के हक़ीक़ी भाई थे और उन से तीन साल बड़े थे। जिस वक़्त अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा को नुबुव्वत अता की और हुक्म दिया के फिरऔन के पास जाओ और उसे दीने हक़ की दावत दो, उस ने बड़ा ज़ुल्म कर रखा है तो उसी वक़्त हज़रत मूसा ने हज़रत हारून की फसाहत व बलाग़त और कुव्वते बयानी को देख कर उन की नुबुव्वत के लिये अल्लाह तआला से दुआ फर्माई, अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा की दुआ क़बूल फर्माई और हारून को भी नुबुव्वत अता फर्माई, दोनों ने फिरऔन को दीन की दावत दी और बनी इस्राईल को फिरऔन के ज़ुल्म व सितम से नजात दिलाई। जब हज़रत मूसा अपने भाई हज़रत हारून को अपना ख़लीफा बना कर कोहे तूर पर अल्लाह तआला से बात चीत के लिये तशरीफ ले गए थे, तो बनी इस्राईल ने सामरी जादूगर के बहकावे में आकर बछड़े की पूजा पाट शुरू करदी, हज़रत मूसा जब वापस आए तो हज़रत हारून पर सख्त नाराज़ हुए, हज़रत हारून ने अपना उज़्र बयान करते हुए कहा : मैं ने क़ौम को बहुत समझाया, मगर समझने के बजाए क़ौम मुझे क़त्ल करने पर आमादा हो गई, हज़रत हारून शुरू से ही हज़रत मूसा के साथ मिल कर बनी इस्राईल को सीधे रास्ते पर लाने की कोशिश करते रहे। उन्होंने हज़रत मूसा से तीन साल पहले इन्तेक़ाल फर्माया।

नंबर (२): हुज़ूर का मुअ्जिज़ा | जंगे बद्र में फरिश्तों की शिरकत

जंगे बद्र के दिन एक अन्सारी सहाबी, एक मुशरिक के पीछे दौड़ रहे थे, अचानक उस अन्सारी ने कोड़े मारने की आवाज़ सुनी और एक घोड़ सवार की आवाज़ भी सुनी। वह कह रहा था : "आगे बढ़ो!" उस अन्सारी ने अपने आगे देखा, तो वह मुशरिक चित पड़ा हुआ था और उस की नाक और मुँह फट चुके थे, उस अन्सारी सहाबी ने रसूलुल्लाह को वाक़िआ बयान किया, तो आप ने फर्माया : तुम ने सच कहा, वह तीसरे आसमान का फरिश्ता था। (जो हमारी मदद के लिये आया था)

[मुस्लिम : ४५८८, अन इब्ने अब्बास]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | पाँचों नमाज़ों की पाबंदी करना

रसूलुल्लाह ने फर्माया : "जो शख़्स पाँच फर्ज़ नमाज़ों को पाबंदी से पढ़ता है, वह अल्लाह तआला की इबादत से ग़ाफिल रहने वालों में शुमार नहीं होता।" [इब्ने खुज़ैमा : १०७९, अन अबी हुरैरह]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | कुत्ते या गधे की आवाज़ सुन कर यह दुआ पढ़े

रसूलुल्लाह ने फर्माया : "जब तुम रात में कुत्तों की आवाज़ और गधे की चींख़ सूनो तो ((اَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ)) पढ़ लो, इस लिये के यह उन शैतानों को देखते हैं जिन्हें तुम नहीं देख सकते

[अबू दाऊद : ५१०३ अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	एक गुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिसने किसी को दूध वाली बकरी, या रूपये क़र्ज़ दिये, या रास्ता बता दिया, तो उसे एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब होता है।"

[तिर्मिज़ी : १९५७, अन बरा बिन आज़िब ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	सूद ख़ोर से जंग का एलान

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अगर तुम (सूद लेने से बाज़ नहीं आए, तो अल्लाह और उस के रसूल की तरफ से जंग का एलान सुन लो (लिहाज़ा हर मुसलमान को सूद से बचना चाहिये)।"

[सूर-ए-बक़रह : २७९]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	नेक आमाल के बदले दुनिया की रौनक़ चाहना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख़्स (अपने नेक आमाल के बदले) दुनियावी ज़िन्दगी और उस की रौनक़ चाहेगा, तो हम उन लोगों को उन के आमाल का बदला दुनिया ही में दे देंगे, और उन के लिये दुनिया में कोई कमी नहीं होगी, यही लोग हैं जिन के लिये आख़िरत में सिर्फ और सिर्फ जहन्नम है और उन्होंने जो कुछ दुनिया में किया था (वह सब आखिरत में) बेकार साबित होगा।"

[सूर-ए-हूद : १५ ता १६]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले जहन्नम के जिस्म की हालत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जहन्नम में दोज़ख़ियों को इतना मोटा कर दिया जाएगा के उन में से हर एक काफिर की एक कान की लौ और उस के कन्धे के दर्मियान सात साल (चलने) का फासला होगा। उस के चमड़े की मोटाई सत्तर हाथ के बराबर होगी और उस की एक दाढ उहुद पहाड़ के बराबर होगी।"

[मुस्नदे अहमद : ४७८५, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	सर और पैर के दर्द का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ से जब कोई सर में दर्द की शिकायत करता, तो आप ﷺ फ़र्माते के तुम पछने लगाओ और जब कोई पाँव के दर्द की शिकायत करता, तो फ़र्माते के तुम मेहंदी लगाओ।

[अबू दाऊद : ३८५८, अन सलमा ؓ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम क़यामत के दिन अपने और अपने बाप दादा के नाम से पुकारे जाओगे, इस लिये नाम अच्छे रखा करो।"

[अबू दाऊद : ४९४८, अन अबी दरदा ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(१५) सफरुल मुज़फ्फर

नंबर (१): इस्लामी तारीख — क़ारून और उस की हलाकत

हज़रत मूसा ﷺ को जिन मुख़ालिफ ताक़तों का सामना करना पड़ा, उन में क़ारून का नाम भी बहुत मशहूर है, अल्लाह तआला ने उसे इस क़द्र माल व दौलत अता की थी के उस के ख़ज़ाने की चाबियाँ बड़े बड़े ताक़तवर पहलवान मिल कर उठाने में थक जाते थे। क़ारून दौलत के नशे में अल्लाह को भूल गया और बड़ा मग़रूर हो गया था, हज़रत मूसा ﷺ ने उसे नसीहत फर्माई, के तू तकब्बुर न कर अल्लाह तआला तकब्बुर करने वाले को पसन्द नहीं करता और जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है, उसे अल्लाह की मर्ज़ी में ख़र्च कर के ज़कात अदा कर के अपनी आख़िरत बना और ज़मीन में फसाद न फैला। मगर क़ारून पर इस नसीहत का कोई असर न पड़ा और वह कहने लगा : यह दौलत तो मैं ने अपनी कुव्वते बाज़ू से कमाई है, इस में किसी का हक़ नहीं। क़ारून का गुरूर जब बहुत बढ़ गया और हज़रत मूसा ﷺ को ज़लील करने की साज़िशें भी करने लगा, तो एक दिन अल्लाह तआला ने उसे उस के माल व दौलत और महल के साथ ज़मीन में धँसा दिया। अल्लाह तआला के इस अज़ाब से उसे कोई बचा न सका, लोगों ने उस की इस अफसोसनाक मौत से सबक़ लिया और अल्लाह की तरफ मुतवज्जेह हो गए।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — चमकदार लाल (GEM)

अल्लाह तआला ने इनसान के अज़ली दुश्मन साँप जैसे ज़हरीले जान्दार में यह ख़ूबी रखदी है के वह गंदी हवा अपने अन्दर जज़्ब करता है और साफ सुथरी हवा ख़ारिज करता है। अल्लाह तआला बाज़ अज़दहों के जिस्म में रौशन और बेहद क़ीमती लाल पैदा कर देता है। वह अंधेरी रात में उस को निकाल कर बाहर रख देता है और उस की रौशनी में कीड़े मकोड़ों का शिकार कर के अपना पेट भरता है। आख़िर साँप जैसे ज़हरीले जान्वर में क़ीमती और चमकदार लाल पैदा कर देना अल्लाह की बड़ी क़ुदरत है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — जानवरों में ज़कात

रसूलुल्लाह ﷺ ने क़सम खा कर फर्माया : "जिस के पास ऊँट, गाय या बकरी हो और वह उस का हक़ अदा न करता हो, तो क़यामत के दिन उन जान्वरों में सब से बड़े और मोटे को लाया जाएगा जो अपनी खुरों से उस आदमी को रौंदेगा और सींग मारेगा, जब जब भी आख़री जानवर गुज़र जाएगा, तो पहले जानवर को लाया जाएगा (यह सिलसिला उस वक़्त तक चलता रहेगा) जब तक के लोगों का हिसाब (न) हो जाए।"

[बुख़ारी : १४६०, अन अबी ज़र ﷺ]

खुलासा : जिस तरह सोने, चाँदी और दूसरी चीज़ों में ज़कात फर्ज़ है उसी तरह जानवरों में भी ज़कात फर्ज़ है, जब के निसाब के बक़द्र हो।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | **छोटी उंगली से ख़िलाल करना**

मुस्तौरिद बिन शद्दाद ﷺ ने कहा के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा के हाथ की छोटी उंगली से पैर की उंगलियों का ख़िलाल फ़र्मा रहे हैं। [तिर्मिज़ी : ४०]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | **कुर्आन की एक आयत सीखने का सवाब**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "ऐ अबू ज़र ! अगर तुम कहीं जाकर क़ुर्आन की एक आयत सीख लो, तो यह तुम्हारे लिये सौ रकात (नफल) पढ़ने से बेहतर है, और अगर तुम कहीं जाकर एक बाब इल्म (दीन) का सीख लो ख्वाह उस पर अमल हो या अमल न हो, यह तुम्हारे लिये हज़ार रकात (नफल) पढ़ने से बेहतर है।" [इब्ने माजा : २१९ अन अबी ज़र ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | **बग़ैर इल्म के फतवा देना**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब दुनिया में उलमा बाक़ी न रहेंगे, तो लोग अपना सरदार जाहिलों को बना लेंगे, चुनान्चे जब उन से फतवा तलब किया जाएगा, तो वह बग़ैर इल्म के फतवा दे कर खुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे।" [बुख़ारी : १००, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | **ज़रूरत से ज़ाइद इमारत वबाल है**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स ज़रूरत से ज़ियादा इमारत बनाएगा, तो वह क़यामत के दिन उस पर वबाल होगी।" [शुअबुलईमान : १०३०६, अन अनस ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | **अहले जन्नत का इस्तिक़बाल**

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जिस दिन मुसलमान अल्लाह तआला से मिलेंगे तो सलाम के साथ उन का इस्तिक़बाल होगा और अल्लाह तआला ने (जन्नत में) उन के लिये बेहतरीन बदला तय्यार कर रखा है।" [सूर-ए-अहज़ाब : ४४]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | **लौकी से दिमाग की कमज़ोरी का इलाज**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : " तुम लौकी (दुधी) खाया करो, क्योंकि यह अक़ल को बढ़ाती है और दिमाग़ को ताक़त देती है।" [कंज़ुल उम्माल : २८२७३ , अन अनस ﷺ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो ! अल्लाह पर और उस के रसूल पर और उस की किताब पर जो उस ने अपने रसूल पर नाज़िल की है और उन किताबों पर जो उन से पहले नाज़िल फ़र्माई थीं, ईमान लाओ।" [सूर-ए-निसा : १३६]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१६) सफरुल मुज़फ्फर

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत यूशा बिन नून

हज़रत यूशा बनी इस्राईल के एक नबी हैं, जो हज़रत यूसुफ की नस्ल से थे। वह हज़रत मूसा और हज़रत हारून के खादिम थे, सूर-ए-कहफ में हज़रत खिज़र से मुलाक़ात के लिये जाते वक्त हज़रत मूसा के साथ जिस नौजवान का ज़िक्र आया है, वह यही हज़रत यूशा थे। हज़रत मूसा और हज़रत हारून के इन्तेक़ाल के बाद उन को नुबुव्वत मिली। क़ौमे बनी इस्राईल को उन्हीं की क़यादत में चालीस साल के बाद अल्लाह तआला ने मैदाने तीह से निकाल कर बैतुलमक़दिस तक पहुँचाया। जब यह क़ौम बैतुलमक़दिस में दाखिल हुई तो अल्लाह तआला ने हुक्म दिया के तौबा करते हुए दाखिल होना, तो कुछ लोगों ने तौबा को मज़ाक़ बना दिया, इस बिना पर अल्लाह तआला ने ऐसे लोगों को हुक्म की खिलाफ वरज़ी करने और मज़ाक़ उड़ाने की वजह से तबाह व बरबाद कर दिया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — अनाज में बरकत

हज़रत जाबिर रज़ि. बयान करते हैं : एक शख्स रसूलुल्लाह ﷺ के पास आया और उस ने रसूलुल्लाह ﷺ से ग़ल्ला माँगा, आप ﷺ ने उसे आधा वसक़ (तक़रीबन एक कोईंटल) जौ मरहमत फ़र्माई, तो वह शख्स और उस की बीवी और उस के मेहमान, उस में से सालहा साल खाते रहे, यहाँ तक के एक दिन उसे नाप लिया (तो वह बरकत खत्म हो गई) उस के बाद रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में आए, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : अगर तुम न नापते तो हमेशा खाते रहते और वह तुम सब के लिये काफी हो जाता।

[मुस्लिम : ५९४६, अन जाबिर रज़ि.]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — अज़ान सुन कर नमाज़ को न जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स अल्लाह के मुनादी (यानी मुअज़्ज़िन) की आवाज़ सुने और नमाज़ को न जाए, तो उस का यह फेल सरासर ज़ुल्म, कुफ्र और निफाक़ है।"

[तबरानी कबीर : १६८०४, मआज़ बिन अनस रज़ि.]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — सोते वक़्त यह दुआ पढ़े

रसूलुल्लाह ﷺ जब सोने का इरादा फर्माते, तो हाथ को सर के नीचे रखते और तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ते :

((اَللّٰهُمَّ قِنِيْ عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मुझे उस दिन के अज़ाब से बचा लीजिये, जिस दिन आप अपने बन्दों को उठाएंगे।

[अबू दाऊद : ५०४५, अन हफसा]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अच्छा गुमान रखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "(लोगों के बारे में) अच्छा गुमान रखना, बेहतरीन इबादतों में से है।"

[अबू दाऊद : ४९९३, अन अबी हुरैरह]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	किसी पर तोहमत लगाना गुनाहे अज़ीम है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख़्स कोई छोटा या बड़ा गुनाह करे, फिर उस की तोहमत किसी बेगुनाह पर लगा दे, तो उस ने बहुत बड़ा बोहतान और खुले गुनाह का बोझ अपने ऊपर लाद लिया।"

[सूर-ए-निसा : ११२]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया आज़माइश के लिये है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "हम ने ज़मीन के ऊपर की तमाम चीज़ों को ज़मीन के लिये ज़ीनत बनाया है, ताके हम उस के ज़रिये लोगों का इम्तेहान लें के कौन शख़्स उस में ज़ियादा अच्छा अमल करता है।"

[सूर-ए-कहफ : ७]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जहन्नम में आग कहाँ तक जलाएगी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अहले दोज़ख़ में से बाज़ को टख़्नों तक आग जलाएगी और बाज़ को घुटनों तक और बाज़ को कमर तक और बाज़ को हंसली की हड्डी तक।"

[मुस्लिम : ७१७०, समुरा बिन जुन्दुब]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	तीन साँस में पानी पीने का फायदा

रसूलुल्लाह ﷺ पीने वाली चीज़ों को तीन साँस में पीते थे और फर्माते थे : ऐसा करने से इत्मेनान हो जाता है, तकलीफ और बीमारी से हिफाज़त होती है और वह चीज़ ख़ूब हज़्म होती है।

[मुस्लिम : ५२८७,अन अनस]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "लानत का सबब बनने वाली दो बातों से बचो ! सहाबा ने अर्ज़ किया के हज़रत वह दो बातें क्या हैं ? रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : एक यह के आदमी लोगों के रास्ते में पेशाब पाख़ाना करे और दूसरे यह के उन की सायादार जगह में ऐसा करे।"

[मुस्लिम : ६१८, अन अबी हुरैरह]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत यूशा عليه السلام

हज़रत यूशा عليه السلام बनी इस्राईल के एक नबी हैं, जो हज़रत यूसुफ عليه السلام की नस्ल से थे। वह हज़रत मूसा عليه السلام और हज़रत हारून عليه السلام के खादिम थे, सूर-ए-कहफ में हज़रत खिज़र عليه السلام से मुलाक़ात के लिये जाते वक़्त हज़रत मूसा عليه السلام के साथ जिस नौजवान का ज़िक्र आया है, वह यही हज़रत यूशा عليه السلام थे। हज़रत मूसा عليه السلام और हज़रत हारून عليه السلام के इन्तेक़ाल के बाद उन को नुबुव्वत मिली। क़ौमे बनी इस्राईल को उन्हीं की क़यादत में चालीस साल के बाद अल्लाह तआला ने मैदाने तीह से निकाल कर बैतुलमक़दिस तक पहुँचाया। जब यह क़ौम बैतुलमक़दिस में दाखिल हुई तो अल्लाह तआला ने हुक्म दिया के तौबा करते हुए दाखिल होना, तो कुछ लोगों ने तौबा को मज़ाक़ बना दिया, इस बिना पर अल्लाह तआला ने ऐसे लोगों को हुक्म की खिलाफ वरज़ी करने और मज़ाक़ उड़ाने की वजह से तबाह व बरबाद कर दिया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — अनाज में बरकत

हज़रत जाबिर رضي الله عنه बयान करते हैं : एक शख्स रसूलुल्लाह ﷺ के पास आया और उस ने रसूलुल्लाह ﷺ से ग़ल्ला माँगा, आप ﷺ ने उसे आधा वसक़ (तक़रीबन एक कोईंटल) जौ मरहमत फ़र्माई, तो वह शख्स और उस की बीवी और उस के मेहमान, उस में से सालहा साल खाते रहे, यहाँ तक के एक दिन उसे नाप लिया (तो वह बरकत ख़त्म हो गई) उस के बाद रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में आए, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : अगर तुम न नापते तो हमेशा खाते रहते और वह तुम सब के लिये काफी हो जाता।

[मुस्लिम : ५९४६, अन जाबिर رضي الله عنه]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — अज़ान सुन कर नमाज़ को न जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स अल्लाह के मुनादी (यानी मुअज़्ज़िन) की आवाज़ सुने और नमाज़ को न जाए, तो उस का यह फेल सरासर ज़ुल्म, कुफ्र और निफाक़ है।"

[तबरानी कबीर : १६८०४, मआज़ बिन अनस رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — सोते वक़्त यह दुआ पढ़े

रसूलुल्लाह ﷺ जब सोने का इरादा फर्माते, तो हाथ को सर के नीचे रखते और तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ते :

((اَللّٰهُمَّ قِنِیْ عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मुझे उस दिन के अज़ाब से बचा लीजिये, जिस दिन आप अपने बन्दों को उठाएंगे।

[अबू दाऊद : ५०४५, अन हफसा]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — अच्छा गुमान रखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "(लोगों के बारे में) अच्छा गुमान रखना, बेहतरीन इबादतों में से है।"

[अबू दाऊद : ४९९३, अन अबी हुरैरह]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में — किसी पर तोहमत लगाना गुनाहे अज़ीम है

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख्स कोई छोटा या बड़ा गुनाह करे, फिर उस की तोहमत किसी बेगुनाह पर लगा दे, तो उस ने बहुत बड़ा बोहतान और खुले गुनाह का बोझ अपने ऊपर लाद लिया।"

[सूर-ए-निसा : ११२]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में — दुनिया आज़माइश के लिये है

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "हम ने ज़मीन के ऊपर की तमाम चीज़ों को ज़मीन के लिये ज़ीनत बनाया है, ताके हम उस के ज़रिये लोगों का इम्तेहान लें के कौन शख्स उस में ज़ियादा अच्छा अमल करता है।"

[सूर-ए-कहफ : ७]

नंबर (८) : आखिरत के बारे में — जहन्नम में आग कहाँ तक जलाएगी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अहले दोज़ख में से बाज़ को टख्नों तक आग जलाएगी और बाज़ को घुटनों तक और बाज़ को कमर तक और बाज़ को हंसली की हड्डी तक।"

[मुस्लिम : ७१७०, समुरा बिन जुन्दुब]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज — तीन साँस में पानी पीने का फायदा

रसूलुल्लाह ﷺ पीने वाली चीज़ों को तीन साँस में पीते थे और फर्माते थे : ऐसा करने से इत्मेनान हो जाता है, तकलीफ और बीमारी से हिफाज़त होती है और वह चीज़ खूब हज़्म होती है।

[मुस्लिम : ५२८७, अन अनस]

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "लानत का सबब बनने वाली दो बातों से बचो ! सहाबा ने अर्ज़ किया के हज़रत वह दो बातें क्या हैं ? रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : एक यह के आदमी लोगों के रास्ते में पेशाब पाखाना करे और दूसरे यह के उन की सायादार जगह में ऐसा करे।" [मुस्लिम : ६१८, अन अबी हुरैरह]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रज हिज़्क़ील ﷺ

हज़रत मूसा ﷺ के बाद बनी इस्राईल में अम्बियाए किराम का सिलसिला एक लम्बी मुद्दत तक चलता रहा, उन्हीं में से हज़रत हिज़्क़ील ﷺ भी हैं। उन के वालिद का बचपन ही में इन्तेक़ाल हो गया था। नुबुव्वत के बाद एक ज़माने तक वह बनी इस्राईल की रहनुमाई करते रहे और हक़ की राह दिखाते रहे। हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ और दीगर सहाब-ए-किराम से रिवायत है के बनी इस्राईल की एक बड़ी जमात से हज़रत हिज़्क़ील ﷺ ने एक क़ौम से जंग करने का हुक्म दिया, तो पूरी जमात मौत के डर से भाग कर एक वादी में आबाद हो गई और यह समझने लगी के अब हम मौत से महफ़ूज़ होगए हैं। अल्लाह तआला ने उन के इस ग़लत अक़ीदे की इस्लाह के लिये उन पर मौत तारी करदी। एक हफ्ते के बाद जब उधर से हज़रत हिज़्क़ील ﷺ का गुज़र हुआ, तो उन की हालत पर अफसोस करते हुए अल्लाह तआला से दोबारा ज़िन्दगी अता करने की दुआ फर्माई। अल्लाह तआला ने दुआ क़बूल फ़र्माई और उन को दोबारा ज़िन्दा कर दिया, ताके उन की ज़िन्दगी दूसरों के लिये इबरत व नसीहत का बाइस बने। क़ुर्आने करीम में भी इस वाक़िए का तज़केरा किया गया है।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — रेशम का कीड़ा

अल्लाह तआला ने एक ख़ास क़िस्म की तितली पैदा फ़र्माई है, उस के अंडों से रेशम के कीड़े निकलते हैं। यह दरख़्तों के हरे भरे पत्तों को खाते रहते हैं और उन के मुंह से रेशम का बारीक और क़ीमती तार निकलता रहता है जिसे वह अपने बदन पर लपेटते रहते हैं। फिर उस के तार को गर्म पानी में डालते हैं और उस के रेशों से धागा तय्यार कर के रेशम के क़ीमती कपड़े तय्यार करते हैं, जो बाज़ार में भारी क़ीमत में बिकते हैं, आख़िर इस नन्हे से कीड़े को उम्दा रेशम तय्यार करने की सलाहियत किस ने अता फर्माई। यक़ीनन यह अल्लाह ही की क़ुदरत है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़े जनाज़ा फर्ज़े किफ़ाया है

रसूलुल्लाह ﷺ ने सात चीज़ों का हुक्म दिया, जिस में से एक जनाज़े में शरीक होना भी है।

[बुख़ारी : १२३९, अन बरा बिन आज़िब ﷺ]

नोट: नमाज़े जनाज़ा फर्ज़े किफाया है, फ़र्ज़ किफाया ऐसे फ़र्ज़ को कहते हैं जो हर एक पर फर्ज़ हो, लेकिन उन में से किसी ने भी अगर अदा कर दिया तो सब की तरफ से काफी हो जाएगा।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — हाथ पैर की उंगलियों का खिलाल करना

हज़रत आयशा ﷺ बयान करती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ वुज़ू फर्माते, तो उंगलियों का ख़िलाल फ़र्माते, एड़ियों को रगड़ते और फ़र्माते: "उंगलियों का ख़िलाल करो, अल्लाह तआला उन के दर्मियान जहन्नम की आग दाख़िल न करेगा।"

[दारे क़ुतनी : ३२६]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	मौत को याद रखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "दिलों को भी ज़ंग लग जाता है, जैसे लोहे में पानी पहुँचने के बाद ज़ंग लग जाता है।" अर्ज़ किया गया : या रसूलल्लाह ﷺ! वह कौन सी चीज़ है जिस से दिलों की सफाई हो जाए। आप ﷺ ने फर्माया : "मौत का ज़ियादा ध्यान रखना और कुर्आन का पढ़ना।"

[बैहक़ी शोअबुलईमान : १९५८, अन इब्ने उमर रज़ि.]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	हराम माल से सद्क़ा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "बग़ैर वुज़ू के नमाज़ क़बूल नहीं होती, इसी तरह हराम माल से सद्क़ा क़बूल नहीं होता।" [तिर्मिज़ी : १, अन इब्ने उमर रज़ि.]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	मुसीबतें किस पर आसान

हज़रत अली रज़ि. फर्माते हैं के जो शख़्स दुनिया से बे रग़बती इख़्तियार करेगा, उस पर मुसीबतें आसान हो जाएँगी और जो मौत को याद करता रहेगा वह भलाई में जल्दी करेगा।

[शोअबुलईमान लिलबैहक़ी : १०२२२]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत के दिन मुन्किरों का मातम

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "बस क़यामत के दिन एक सख़्त ललकार होगी, तो यकायक सब देखने लगेंगे। यह मुन्किर कहेंगे : हाए हमारी बरबादी ! यह तो वही बदले का दिन है। कहा जाएगा : (हाँ) यह वही फैसले का दिन है, जिस को तुम झुटलाया करते थे।"

[सूर-ए- साफ्फात : १९ ता २१]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	ठंडे पानी से बुख़ार का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम में से किसी को जब बुख़ार आए, तो सहरी के वक़्त ठंडा पानी (उस के बदन पर) तीन रात तक छिड़का जाए।" [मुस्तदरक : ८२२६, अन अनस बिन मालिक रज़ि.]

फायदा : आज जदीद तरीक़-ए-इलाज के मुताबिक़ डॉक्टर हज़रात भी बुख़ार के मरीज़ के सर पर ठंडे पानी की पट्टी रखने का मश्वरा देते हैं।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ इन्सानो ! बेशक तुम्हारे पास यह रसूल हक़ बात ले कर तुम्हारे रब की तरफ से आचुका है, लिहाज़ा तुम ईमान ले आओ, यह ईमान लाना तुम्हारे लिये बेहतर होगा, अगर तुम इन्कार करते हो, तो ख़ूब समझ लो के आस्मानों और ज़मीन का मालिक अल्लाह तआला ही है और अल्लाह तआला सब कुछ जानने वाला बड़ी हिकमत वाला है।"

[सूर-ए-निसा : १७०]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत इलयास عليه السلام

हज़रत इलयास عليه السلام उरदुन के एक इलाका "जलआद" में पैदा हुए, कुर्आन पाक में आप का नाम इलयास और इलयासीन दोनों तरह ज़िक्र किया गया है। अल्लाह तआला ने आप को अहले शाम की इस्लाह के लिये नबी बना कर भेजा था। आप की दावत का इलाक़ा शाम का मशहूर शहर "बालबक्क" था जो दिमश्क़ से तक़रीबन दो किलो मिटर की दूरी पर वाक़े है। उस शहर में बाल नाम का सोने का एक बहुत बड़ा बुत था, वह लोग उसे अपना खुदा समझते थे। हज़रत इलयास عليه السلام ने उन्हें एक अल्लाह तआला की इबादत की तरफ बुलाया और उन के बादशाह को दावत दी। उन लोगों ने आप की दावत को क़बूल न किया और आप के क़त्ल के दरपे हो गए। आप वहाँ से चले गए और जब बादशाह मर गया, तो आप वापस आए और नए बादशाह को दावत दी, तो उस ने और उस की पूरी क़ौम ने ईमान क़बूल कर लिया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — दरख़्त का साया करना

एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ सफर में एक जगह सोए हुए थे, के एक दरख़्त आप ﷺ पर साया करने के लिये पास आगया और रसूलुल्लाह ﷺ पर साया करके वापस अपनी जगह चला गया, जब रसूलुल्लाह ﷺ नींद से उठे, तो आप के सामने सारा वाक़िआ बयान किया गया, तो आप ने फर्माया : उस दरख़्त ने अल्लाह तआला से इजाज़त माँगी थी के मुझ को आकर सलाम करे, तो उस को इजाज़त दे दी।

[मिश्कात : ५९२२, अन यअ्ला बिन मुर्रह رضي الله عنه]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — क़र्ज़ अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "क़र्ज़ की अदाएगी पर क़ुदरत रखने के बावजुद टाल मटोल करना ज़ुल्म है।"

[बुख़ारी : २४००, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

खुलासा : अगर किसी ने क़र्ज़ ले रखा है और उस के पास क़र्ज़ अदा करने के लिये माल है, तो फिर क़र्ज़ अदा करना ज़रूरी है, टाल मटोल करना जाइज़ नहीं है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — नमाज़ में तशहद के बाद यह दुआ पढे

हज़रत अबू बकर رضي الله عنه ने हुज़ूर ﷺ से कहा के मुझे अैसी दुआ सीखा दीजीए जीस को में अपनी नमाज़ में पढलिया करूं। आप ﷺ ने फर्माया के यह दुआ पढ लिया करो :

((اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَّلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْ لِيْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِيْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं ने अपनी जान पर बुहत ज़ुल्म किया है और तेरे सिवा कोई गुनाहो को बख़्शने वाला नहीं, तू अपनी खास बख़शिश से मुझ को बख़्श दे और मुझ पर रहम फर्मा तू बहुत बख़्शने वाला बढ़ा मेहरबान है।

[बुख़ारी : ८३४, अन अबी बक्र सिद्दीक़ رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | एक आँसू से जहन्नम के समन्दर बुझ सकते हैं

रसूलुल्लाह ﷺ के पास हज़रत जिब्राईल عليه السلام तशरीफ़ लाए जब के आप के पास एक शख्स बैठा रो रहा था। हज़रत जिब्राईल عليه السلام ने पूछा: यह कौन है? आप ﷺ ने फर्माया : फलाँ शख्स है, तो जिब्राईल عليه السلام ने फर्माया: हम इन्सान के सब आमाल का वज़न करेंगे, मगर रोने का नहीं (कर सकेंगे) क्योंकि अल्लाह तआला आँसू के एक क़तरे से जहन्नम के कई समन्दर बुझा देंगे। [अज़्ज़ुहद लि अहमद बिन हम्बल : १४७]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | औलाद का क़त्ल गुनाहे कबीरा है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "गुर्बत के डर से अपनी औलाद को क़त्ल न करो, हम तुम को भी रिज़्क़ देते हैं और उन को भी।"

[सूर-ए-अन्आम : १५१]

खुलासा : रोज़ी का ज़िम्मा अल्लाह तआला पर है, लिहाज़ा रोज़ी की तंगी के डर से बच्चों को मार डालना या हमल गिराना या पैदाइश से बचने की कोई और तदबीर इख़्तियार करना जैसा के आज के दौर में हो रहा है बहुत ही बड़ा गुनाह और हराम काम है।

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनियावी ज़िन्दगी की मिसाल

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल ऐसी है जैसा के हम ने आसमान से पानी बरसाया हो, फिर उस की वजह से ज़मीन के पेड़ पौदे पैदा हो कर ख़ूब गुंजान हो गए हों (फिर यह किसी हादसे का शिकार हो कर) रेज़ा रेज़ा हो जाएं के उस को हवा उड़ाए फिरती हो।"

[सूर-ए-कहफ : ४५]

ख़ुलासा : जिस तरह पानी बरसने की वजह से ज़मीन के पेड़ पौदे ख़ूब हरे भरे हो जाते हैं, फिर किसी आफत का शिकार हो कर सब ख़त्म हो जाता है, इसी तरह दुनियावी ज़िन्दगी है, के आज सब कुछ मौजूद है और जब मौत आएगी, तो कुछ भी बाक़ी नहीं रहेगा।

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | काफिर के लिये पचास हज़ार साल की क़यामत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "काफिर को पचास हज़ार साल तक क़यामत में खड़ा किया जाएगा, जिस तरह से उस ने दुनिया में कोई (इंदल्लाह क़ाबिले क़बूल नेक) अमल नहीं किया और काफिर जहन्नम को देख रहा होगा और समझ रहा होगा के वह चालीस साल की मसाफत से मुझे घेरने वाली है।"

[मुस्नदे अहमद : ११३१७, अन अबी सईद खुदरी رضي الله عنه]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | जिगर की हिफाज़त का तरीक़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम में से कोई पानी पिये तो ठहर ठहर कर चुस्की ले कर पिये, और गटा गट न पिये क्योंकि इस से जिगर में दर्द होता है।" [बैहक़ी फी शोअबिल ईमान : ५७५२, अन इब्ने अबी हुसैन رضي الله عنه]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अपने माँ बाप और बुतों की क़सम न खाओ और न ही अल्लाह के अलावा किसी और की क़सम खाओ (अगर क़सम खाने की ज़रूरत पड़ जाए) तो सिर्फ अल्लाह की सच्ची क़सम खाओ।"

[नसई : ३८००, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(११) सफरुल मुज़फ्फर

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत यसअ् ﷺ

हज़रत यसअ् ﷺ का तज़केरा क़ुर्आने करीम के "सूर-ए-अन्आम" और "सूर-ए-साद" दो जगह आया है। जिस में उन की फ़ज़ीलत व अज़मत की ख़बर दी है, वह एक मालदार घराने के फरज़न्द थे, इलाक़-ए-सामरा के रहने वाले थे, यह इलाक़ा कन्आन (फलस्तीन) में यरोशलम के शिमाल व मग़रिब में बहरे रूम के साहिल के क़रीब वाक़े है। हज़रत यसअ् ﷺ हज़रत इलयास ﷺ के चचाज़ाद भाई और उन के नाइब व ख़लीफ़ा थे। शुरू में उन्हीं के साथ रहते थे। जब हज़रत इलयास ﷺ का इन्तेक़ाल हुआ तो अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल की हिदायत व रहनुमाई के लिये उन को नबी बनाया। वह हज़रत इलयास ﷺ ही की तरह क़ौमे बनी इस्राईल को तौरात पर अमल करने की तरग़ीब देते और हक़ बात मानने और सीधे रास्ते पर चलने का हुक्म दिया करते थे और शिर्किया बातों से बचे रहने की ताकीद करते थे। नुबुव्वत के साथ सियासी सूझ बूझ और जंगी तदबीरों से भी ख़ूब वाकिफ थे।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — फलों में रस

अल्लाह तआला ने हमारे फायदे के लिये बहुत से क़िस्म के फलदार दरख़्त पैदा फ़र्माए। जिन पर मौसम के लिहाज़ से फल उगाता है। उन में से बाज़ फल खट्टे और बाज़ मीठे होते हैं फिर बाज़ फलों में लज़ीज़ और उमदा रस पैदा कर देता है। आम, सन्तरा, मोसम्बी और अंगूर जैसे फलों से हम मज़ेदार जूस निकाल कर पीते हैं। आख़िर उन फलों में उमदा व लज़ीज़ रस कौन पैदा करता है? बिला शुबा अल्लाह ही अपनी क़ुदरत से हमारे लिये उन फलों में रस पैदा करता है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — वसिय्यत पूरी करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला ने चंद वारिसों के हिस्सों का ज़िक्र करने के बाद फर्माया : "(यह सब वरसा के हिस्सों की तक्सीम) मय्यित की वसिय्यत को पूरा करने और क़र्ज़ अदा करने के बाद की जाएगी।" [सूर-ए-निसा : १२]

ख़ुलासा : मय्यित ने अगर किसी के हक़ में कुछ वसिय्यत की हो, तो वारिसों को उन का हिस्सा देने से पहले मय्यित के छोड़े हुए माल के तिहाई हिस्से से उस की वसिय्यत पूरी करना वाजिब है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — वुज़ू के बाद तौलिये का इस्तेमाल करना

हज़रत आयशा ؓ बयान करती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ के पास एक कपड़े का टुकड़ा (मिस्ले रूमाल के) था जिस से वुज़ू के बाद पोंछते थे। [तिर्मिज़ी : ५३]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	बेचा हुआ माल वापस लेना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स किसी मुसलमान के ख़रीदे हुए माल को (वापस करने पर) वापस ले ले, तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस के गुनाह माफ फर्मा देगा।"

[अबू दाऊद : ३४६०, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	अल्लाह की किसी मख़लूक़ को मत सताओ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "एक बेदर्द और बे रहम औरत इस लिये जहन्नम में डाली गई के उस ने एक बिल्ली को बाँध के भूका मार डाला, न तो उसे कुछ खिलाया और न उसे छोड़ा के वह ज़मीन के कीड़े मकोड़ों से अपनी गिज़ा हासिल कर लेती।"

[बुख़ारी : ३३१८, अन इब्ने उमर رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	ऐश व इश्रत से बचना

रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत मआज़ को जब यमन भेजा तो फर्माया के नाज़ व नेअ्मत की ज़िन्दगी से बचना, इस लिये के अल्लाह के बन्दे ऐश व इश्रत में ज़िन्दगी बसर करने वाले नहीं होते।

[मुस्नदे अहमद : २१६१३]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जन्नत के बालाख़ाने किस के लिये ?

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग अपने रब से डरते हैं, तो उन के लिये (जन्नत के) ऐसे बालाख़ाने हैं, जिन के ऊपर और बालाख़ाने बने हुए हैं, उन के नीचे नहरें जारी होंगी, अल्लाह ने (उन से यह) वादा किया है और अल्लाह तआला वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता।" [सूर-ए-ज़ुमर : २०]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	हलक़ के कव्वे का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अपनी औलाद को हलाक न करो, जब किसी औरत के बच्चे को (गले के) "कव्वे" की तकलीफ हो तो ऊदे हिन्दी को पानी से रगड़ कर उस की नाक में चढ़ाए।"

[बुख़ारी : ५७१३, अन उम्मे क़ैस बिन्ते मिहसन رضي الله عنها]

फायदा : कव्वा गोश्त का लटकता हुआ वह छोटा सा टुकड़ा है, जो आदमी के शुरू हलक़ में होता है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम अल्लाह तआला का अहद पूरा किया करो, जब के तुम उस को अपने ज़िम्मे कर लो और क़समों को (भी) पुख़्ता करने के बाद मत तोड़ा करो।"

[सूर-ए-नहल : ९१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ | हज़रत शमवील عليه السلام

हज़रत शमवील عليه السلام का सिलसिल-ए-नसब हज़रत हारून عليه السلام से मिलता है, बनी इस्राईल जब सर ज़मीने फलस्तीन में दाख़िल हो गए, तो उन पर एक ऐसा ज़माना गुज़रा, के उन में न कोई नबी या रसूल थे और न ही कोई हाकिम, चुनान्चे पड़ोसी क़ौमें उन पर हमला करती रहतीं। ऐसे ज़माने में बनी इस्राईल की इस्लाह व क़यादत के लिये अल्लाह तआला ने हज़रत शमवील عليه السلام को नबी बनाया। उन्होंने क़ौम की दरख़्वास्त पर हज़रत तालूत को उन का बादशाह बनाया, बाज़ लोगों ने एतराज़ किया, तो हज़रत शमवील عليه السلام ने फर्माया : यह अल्लाह तआला के हुक्म से है और उस की निशानी यह है के तुम्हारा सन्दूक़ जिस में नबियों की मीरास थी और जिस को क़ौमे अमालेक़ा ले कर चली गई थी, फरिश्ते वह सन्दूक़ ला कर देंगे, चुनान्चे ऐसा ही हुआ, फरिश्तों ने वह सन्दूक़ हज़रत तालूत को पहुँचा दिया, और हज़रत तालूत बादशाह बना दिये गए।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा | ऊँट का हुज़ूर ﷺ की फर्मांबरदारी करना

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه फर्माते हैं के एक मर्तबा हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ सफर से आए, जब हम लोग बनू नज्जार के बाग़ के पास पहुँचे, तो देखा के बाग़ में एक ऊँट बैठा हुआ है, जो बहुत गुस्से में था, बाग़ में जो भी जाता, उस पर हमला कर देता, रसूलुल्लाह ﷺ बाग़ में दाख़िल हुए और ऊँट को अपने पास बुलाया, तो वह आया और रसूलुल्लाह ﷺ के सामने मुँह के बल ज़मीन पर बैठ गया, फिर आप ﷺ ने उस की नकील मंगवाई और उस को पहना कर, उस के मालिक के हवाले कर दिया और सहाबा की तरफ मुतवज्जेह हो कर फर्माया, के ज़मीन व आसमान के दर्मियान जितनी भी चीज़ें हैं, वह जानती हैं, के मैं अल्लाह का रसूल हूँ, सिवाए ग़ैर ईमान वाले इन्सान व जिन्नात के।

[दलाइलुन्नुबुव्वह लिलअसफहानी : २७०, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में | जमात से नमाज़ पढ़ने की ताकीद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मर्दों को चाहिये के वह जमात को छोड़ने से रूक जाएँ; वरना मैं उन के घरों में आग लगवा दूँगा।"

[इब्ने माजा : ७९५, अन उसामा बिन ज़ैद رضي الله عنه]

नोट : जमात छोड़ने वालों के लिये हदीसों में बहुत सख़्त वईदें बयान की गई हैं, इस लिये तमाम मुसलमान मर्दों पर जमात का एहतेमाम करना बहुत ज़रूरी है।

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में | इल्म की ज़ियादती के लिये दुआ

इल्म की ज़ियादती के लिये इस दुआ का एहतेमाम करना चाहिये :

﴿ رَّبِّ زِدْنِي عِلْمًا ﴾

तर्जमा : ऐ परवरदिगार ! मेरे इल्म में ज़ियादती अता फ़र्मा।

[सूर-ए-ताहा : ११४]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	कुर्आन को ग़ौर से सुनना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स कुर्आन की एक आयत सुनने के लिये भी कान लगा दे, उस के लिये ऐसी नेकी लिखी जाती है जो बढ़ती चली जाती है और जो शख़्स उस आयत को पढ़े, वह आयत उस शख़्स के लिये क़यामत के दिन एक नूर होगा जो उस की नेकी के बढ़ने से भी ज़ियादा है।"

[मुस्नदे अहमद : ८२८९, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	अहेद तोड़ने वालों का अंजाम

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग अल्लाह से पुख़्ता अहेद करने के बाद तोड़ डालते हैं और जिन तअल्लुक़ात के जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया है, उन को तोड़ते हैं और ज़मीन में फसाद फैलाते हैं, उन्हीं लोगों पर अल्लाह की फिटकार होगी और आख़िरत में उन के लिये बड़ी ख़राबी होगी।"

[सूर-ए-रअ़द : २५]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	नाफ़र्मान क़ौमों की हलाकत की वजह

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "हम ने ऐसी कितनी बस्तियों को हलाक कर डाला, जिन के रहने वाले अपने सामाने ऐश पर फख़्र किया करते थे। अब उन के यह मकानात पड़े हुए हैं, जिन को हलाक होने के बाद से अब तक बसना नसीब नहीं हुआ, मगर बहुत थोड़ी देर के लिये, आख़िर कार हम ही उन के वारिस हुए।"

[सूर-ए-क़सस : ५८]

ख़ुलासा : दुनिया के साज़ो सामान पर इतराना नहीं चाहिये, क्योंकि अल्लाह तआला उस को कभी भी हम से छीन सकते हैं, जैसे के हम से पहले कितने ही आलीशान मकानात को तबाह कर दिया और आज उस का नाम व निशान भी बाक़ी नहीं रहा।

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	दुनिया की आग जहन्नम की आग से डरती है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम्हारी यह आग जहन्नम की आग का सत्तरवाँ हिस्सा है, अगर यह दो मर्तबा पानी से न बुझाई जाती तो तुम उस से नफा न हासिल कर सकते। यह आग अल्लाह तआला से दुआ करती है के वह उस को दोबारा जहन्नम में न डाले।"

[इब्ने माजा : ४३१८, अन अनस رضي الله عنه]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	ज़म ज़म के फवायद

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه ने ज़म ज़म के बारे में फर्माया : "यह एक मुकम्मल ख़ूराक है और बीमारियों के लिये शिफा बख़्श भी है।"

[बैहक़ी फी शोअबिल ईमान : ३९७३]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम में से कोई नींद से उठे, तो पानी के बरतन में डालने से पहले तीन मर्तबा अपने हाथ को धोले।"

[मुस्लिम : ६४६, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२१) सफरुल मुज़फ्फर

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत तालूत ﷺ और जालूत

जब बनी इस्राईल के अख्लाक़ बिगड़ गए और आदतें खराब हो गईं, तो अल्लाह तआला ने उन पर जालूत नाम का एक ज़ालिम बादशाह मुसल्लत कर दिया। जालूत ने उन पर बड़ा ज़ुल्म किया और उन्हें अपना गुलाम बना लिया। उस वक़्त हज़रत शमवील ﷺ बनी इस्राईल के नबी थे, वह बहुत बूढ़े हो चुके थे, बनी इस्राईल ने उन से दरख्वास्त की के हमारे लिये कोई बादशाह मुक़र्रर कर दीजिये। हज़रत शमवील ﷺ ने अल्लाह के हुक्म से हज़रत तालूत ﷺ को उन का बादशाह मुक़र्रर किया, बनी इस्राईल ने बड़ी मुश्किल से हज़रत तालूत ﷺ को अपना बादशाह तस्लीम किया, तारीख में उन को बनी इस्राईल का सब से पहला बादशाह तस्लीम किया गया है। जालूत से उन का मुक़ाबला हुआ, हज़रत तालूत ﷺ की फौज में हज़रत दाऊद ﷺ भी शरीक थे, हज़रत दाऊद ﷺ ने ज़ालिम बादशाह जालूत को क़त्ल कर दिया और बनी इस्राईल को उस के ज़ुल्म व सितम से नजात मिल गई। इस अज़ीम काम की वजह से हज़रत दाऊद ﷺ को बादशाह बना दिया गया।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — बारिश में कुदरती निज़ाम

अल्लाह तआला बादलों के ज़रिये इतनी बुलन्दी से बारिश बरसाते हैं के अगर वह अपनी रफ्तार से ज़मीन पर गिरती तो ज़मीन में बड़े बड़े गढ़े हो जाते और तमाम जान्दार, हैवानात, पेड़ पौदे, खेती बाड़ी सब फना हो जाते, लेकिन अल्लाह तआला ने फज़ा में अपनी कुदरत से इतनी रुकावटें खड़ी कर दी हैं के तेज़ रफ्तार बारिश उन से गुज़र कर जब ज़मीन पर आती है तो इन्तेहाई धीमी हो जाती है, जिस से दुनिया की तमाम चीज़ें तबाह व बरबाद होने से महफूज़ हो जाती हैं। बेशक यह अल्लाह का कुदरती निज़ाम है जो बारिश को इतने अच्छे अन्दाज़ में बरसाता है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सिला रहमी करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग अल्लाह के अहद को तोड़ते हैं, उस के मज़बूत कर लेने के बाद और उन तअल्लुक़ात को तोड़ते हैं, जिन के जोड़ने का अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है और ज़मीन में फसाद मचाते हैं, यही लोग नुक़सान उठाने वाले हैं।" [सूर-ए-बक़रह : २७]

खुलासा : रिश्ते, नाते और तअल्लुक़ात को बरक़रार रखना बहुत ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	सोने के पहले वुज़ू करना

हज़रत आयशा ﷺ बयान करती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ जब सोने का इरादा करते तो नमाज़ की तरह वुज़ू फ़र्माते। [सुबुलुलहुदा वर्रशाद : २५०/७]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	परेशान हाल की मदद करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स किसी परेशान हाल आदमी की मदद करे, अल्लाह तआला उस के लिये तिहत्तर (७३) मग़फिरत लिखेगा, जिन में एक मग़फिरत तो उस के तमाम कामों की इस्लाह के लिये काफी है और बहत्तर (७२) मग़फिरत क़यामत के दिन उस के लिये दर्जात हो जाएँगे।"

[बैहक़ी फी शोअ्बिलईमान : ७४०५, अन अनस बिन मालिक ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	नौकर पर ज़ुल्म करने का वबाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो कोई अपने नौकर (गुलाम) को ज़ुलमन मारेगा, क़यामत के दिन मालिक से बदला लिया जाएगा।" [कंज़ुल उम्माल : २५०१६, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया और आख़िरत का मज़ा

हज़रत अबू मालिक अशअरी ﷺ की जब वफात का वक़्त क़रीब आया तो फर्माया : ऐ लोगो ! तुम दूसरों को यह बात पहुँचा देना के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को यह फ़र्माते हुए सुना के दुनिया की मिठास आख़िरत की कड़वाहट है और दुनिया की कड़वाहट आख़िरत की मिठास है। [मुस्नदे अहमद : २२३९२]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले ईमान का जन्नत में दाख़ला

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ मेरे बन्दो ! आज न तुम को कोई ख़ौफ होगा और न तुम किसी तरह ग़म में होगे, वह बन्दे वह हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और फर्मांबरदार रहे, जाओ तुम और तुम्हारी बीवियाँ खुशी ख़ुशी जन्नत में दाखिल हो जाओ।" [सूर-ए-ज़ुख़रूफ़ : ६८ ता ७०]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	शराब से इलाज की मुमानअत

एक शख्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से शराब के बारे में सवाल किया, तो आप ﷺ ने उस के इस्तेमाल से मना फ़र्माया, फिर वह शख्स कहने लगा के हम दवा के तौर पर उस को इस्तेमाल करेंगे, तो आप ﷺ ने फर्माया : "यह दवा है ही नहीं बल्के बीमारी है।" [मुस्लिम : ५१४१, अन वाइलिल हज़रमी ﷺ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम (मेरी नेअ्मतों पर) मुझे याद करो, मैं (भी) तुम्हें याद करूँगा और मेरे (एहसानात का) शुक्र अदा करो और नाफ़र्मानी मत किया करो।" [सूर-ए-बक़रा : १५२]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत दाऊद

हज़रत दाऊद हज़रत ईसा से तक़रीबन एक हज़ार साल पहले बनी इस्राईल में पैदा हुए, उन्होंने ही जालूत बादशाह को क़त्ल कर के बनी इस्राईल को उस के ज़ुल्म व सितम से नजात दिलाई थी। हज़रत आदम के बाद अल्लाह तआला ने उन्हीं को खलीफा का लक़ब अता किया। वह बयक वक़्त नबी व रसूल और हाकिम व बादशाह थे। अल्लाह तआला ने उन को ज़बूर नामी किताब दी, जिस में तौरात के मुताबिक़ अहकाम थे, मगर उस का अक्सर हिस्सा अल्लाह की हम्द व सना, बशारत व खुशखबरी, वाज़ व नसीहत और खुदा की तस्बीह पर मुश्तमिल था। हज़रत दाऊद को अल्लाह तआला ने ऐसी आवाज़ अता फ़र्माई थी के जब ज़बूर की तिलावत करते तो जिन्नात व इन्सान यहां तक के जंगली जानवर और परिन्दे सब झूमने लगते और हम्द व तस्बीह में मशगूल हो जाते। वह परिन्दों की बोलियाँ भी समझते थे, अल्लाह तआला ने उन के लिये लोहे को नर्म कर दिया था। वह आसानी से ज़िरहें (armor) बना लेते और लड़ाई के मौके पर उन को पहन कर दुश्मन से अपना बचाव कर लेते थे, नीज़ उन को बेच कर अपनी रोज़ी का इन्तेज़ाम भी कर लिया करते थे।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — पानी का दूध और मक्खन में तब्दील हो जाना

सालिम बिन अबिल जाद से मन्क़ूल है के रसूलुल्लाह ﷺ ने दो आदमियों को अपने किसी काम पर भेजा तो वह दोनों अर्ज़ करने लगे : या रसूलल्लाह ! हमारे पास खाने के लिये कुछ भी नहीं, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : कहीं से मश्कीज़ा ले आओ ! वह दोनों ले आए। रसूलुल्लाह ﷺ ने उस में पानी भरने का हुक्म फ़र्माया, चुनान्चे दोनों ने पानी भर लिया, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने उस को अपने हाथों से बंद कर दिया और फमाया : अब जाओ, जब तुम फलाँ जगह पहुँचोगे, तो अल्लाह तआला तुम को रिज़्क़ देगा, चुनान्चे वह दोनों चले और जब रसूलुल्लाह ﷺ की बताई हुई जगह पर पहुँचे तो मश्कीज़ा खुद ब खुद खुल गया, देखा तो उस में दूध और मक्खन था, उन दोनों हज़रात ने पेट भर कर खाया और पिया। [अततबकातुलकुबरा लि इब्ने सअद : १७२/१]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — तक्बीरे तहरीमा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "नमाज़ की कुंजी वुज़ू है, उस का तहरीमा तक्बीर है और नमाज़ को ख़त्म करने वाला तस्लीम (यानी اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ कहना) है।" [तिर्मिज़ी : ३, अन अली]

फायदा : नमाज़ शुरू करते वक़्त जो तक्बीर कही जाती है उस को "तक्बीरे तहरीमा" कहते हैं, नमाज़ के शूरू में तक्बीरे तहरीमा कहना फर्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — मुसाफा व मुआनक़ा का सुन्नत तरीक़ा

हज़रत अनस फर्माते हैं के सहाबा जब आपस में मिलते तो मुसाफा करते और जब सफर से वापस आते तो मुआनक़ा करते। [तबरानी औसत:९७]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फज़ीलत	हलाल कमाई से मस्जिद बनाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स इबादत के लिये हलाल माल से कोई इमारत (यानी मस्जिद) बनाए, अल्लाह तआला उस के लिये जन्नत में मोती और याकूत का घर बनाएगा।"

[तबरानी औस्त : ५२१६, अन अबी हुरैरह रज़ि.]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	राहे खुदा से हट कर ज़िन्दगी गुज़ारना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग (अपनी ख्वाहिशात की पैरवी कर के) अल्लाह तआला के रास्ते से भटक जाते हैं, उन के लिये दर्दनाक अज़ाब है, इस लिये के वह हिसाब के दिन को भूले होते हैं।"

[सूर-ए-साद : २६]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की ज़ाहिरी हालत धोका है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "यह लोग सिर्फ दुन्यवी ज़िन्दगी की ज़ाहिरी हालत को जानते हैं और यह आख़िरत से बिल्कुल ग़ाफिल हैं।" (यानी इन्सान सिर्फ दुनिया की चीजों को जानते हैं और उसी को हासिल करने की फिक्र में लगे रहते हैं, उन्हें पता ही नहीं है के उस के बाद दूसरी ज़िन्दगी आने वाली है और वह हमेशा हमेश की ज़िन्दगी है, लिहाज़ा दुनिया में लगने के बजाए आख़िरत की तय्यारी में मशगूल रहना चाहिये।)

[सूर-ए- रूम : ७]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जहन्नम का कुँवां

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जहन्नम में एक वादी है और उस वादी में एक कुँवा है, जिस को "हबहब" कहा जाता है। अल्लाह तआला ने लाज़िम कर लिया है के वह उस में हर जाबिर ज़ालिम शख्स को ठहराएगा।"

[तबरानी औसत : ३६८३, अन अबी मूसा अशअरी रज़ि.]

नंबर (९): तिब्बे नबवी से इलाज	ऑपरेशन से फोड़े का इलाज

हज़रत असमा रज़ि. बिन्ते अबी बक्र रज़ि. कहती हैं के मेरी गर्दन में एक फोड़ा निकल आया जिस का ज़िक्र हुज़ूर ﷺ से किया गया तो आप ﷺ ने फर्माया : इसे खोल दो (फोड़ दो) और छोड़ो मत, वरना गोश्त खाएगा और खून चूसेगा, (यानी उस का खराब माद्दा अगर वक़्त पर न निकाला गया, तो ज़ख्म को और ज़ियादा बढ़ा कर गोश्त और खून के बिगाड़ का ज़रिया बनेगा।)

[मुस्तदरक हाकिम : ८२५०]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम में से किसी के बर्तन में जब कुत्ता मुँह डाल दे, तो उसे सात मर्तबा धोओ और सब से पहले उसे मिट्टी से मल कर साफ कर लो।"

[मुस्लिम : ६५१, अन अबी हुरैरह रज़ि.]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(२३) सफरुल मुज़फ्फर

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत दाऊद ﷺ की नुबुव्वत व हुकूमत

हज़रत दाऊद ﷺ से पहले बनी इस्राईल में नुबुव्वत और हुकूमत दो अलग अलग खान्दानों में चली आरही थी, यहुदा के खान्दान में नुबुव्वत और अफराहीम के खान्दान में हुकूमत व सलतनत होती थी। हज़रत दाऊद ﷺ बनी इस्राईल के वह पहले शख्स हैं, जिन को अल्लाह तआला ने नुबुव्वत और हुकूमत एक साथ अता किया था, वह खुदा के पैग़म्बर और रसूल होने के साथ बनी इस्राईल के हाकिम व बादशाह भी थे, उन्होंने हज़रत मूसा ﷺ की शरीअत को अज़ सिरे नौ ज़िन्दा किया और अपनी क़ौम को सीधी राह पर चलाने की कोशिश करते रहे, इस के साथ ही चालीस या सत्तर साल तक बनी इस्राईल पर कामयाब हुकूमत की। पहले सात साल तक उन का दारूल हुकूमत "हिबरून" था। फिर यरो शिलम को अपना दारूल हुकूमत बनाया। थोड़ी ही मुद्दत में उन की हुकूमत का दायरा शाम, इराक़, फलस्तीन और शर्क़े उर्दुन के अलावा दिगर ममालिक तक वसीअ् होगया था। तारिखे इस्राईल में उन के ज़मान-ए-हुकूमत को मुल्की फुतूहात और हुस्ने इन्तेज़ाम के सिलसिले में मिसाली समझा जाता है। उन्होंने १०० साल की उम्र में अल्लाह की इबादत करते हुए इन्तेकाल फ़र्माया और शहर "सैहून" में दफन हुए।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — इन्सानी अक़्ल

अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत से इन्सान को अक्ल अता फ़र्माई, जिस की वजह से वह बड़े बड़े कारनामे अन्जाम देने की सलाहियत रखता है। यहाँ तक के उसी अक्ल के ज़रिये बड़े बड़े सरकश व ताक़तवर जानवारों को भी अपने क़ब्ज़े में कर लेता है। अगर इन्सान की अक्ल खराब हो जाए, तो वह सब कुछ भूल जाता है, यहाँ तक के उस को अपनी भी खबर नहीं रहती। मगर यह अल्लाह ही की क़ुदरत है के उस ने इन्सान को अक्ल अता फ़र्मा कर दुनिया की चीज़ों से फायदा उठाने का सलीक़ा अता फ़र्मा दिया।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम्हारे रब ने फैसला कर दिया है के अल्लाह के अलावा किसी और की इबादत न करो और वालिदैन के साथ एहसान का मामला करो।"

[सूर-ए-बनी इस्राईल : २३]

फायदा : माँ बाप की खिदमत करना और उन के साथ अच्छा बर्ताव करना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — सुरमा लगाने का सुन्नत तरीक़ा

हज़रत अनस ﷺ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ दाई आँख में दो सलाई फिर बाई आँख में दो सलाई लगाते फिर (एक सलाई दाई और बाई) दोनों आँखों में लगाते। [शोअबुल ईमान : ६१५८]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	कुर्आने करीम की तिलावत करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "कुर्आन" पढ़ने वाला क़यामत के रोज़ आएगा, चुनान्चे कुर्आन सिफ़ारिश करते हुए कहेगा के ऐ परवरदिगार ! इस को जोड़ा पहना दीजिये ! पस उस को इज़्ज़त का ताज पहना दिया जाएगा। फिर कहेगा : ऐ परवरदिगार ! और ज़ियादा पहना दीजिये। तो उस को इज़्ज़त का जोड़ा पहना दिया जाएगा। फिर कहेगा : उस से खुश हो जाइये ! तो अल्लाह तआला उस से खुश हो जाएगा। फिर उस से कहा जाएगा के कुर्आन पढ़ता जा और (दर्जों) पर चढ़ता जा और हर आयत के बदले एक एक नेकी बढ़ती जाएगी।" [तिर्मिज़ी : २९१५, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	बीवियों के दर्मियान इन्साफ न करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस के निकाह में दो औरतें हो और वह आदमी दोनों के दर्मियान बारी और नान व नफ़्क़ा और माल की तक़्सीम में इन्साफ न करे, तो ऐसा आदमी क़यामत के दिन इस हाल में आएगा के उस की गर्दन में तौक़ होगा और उस के बदन का बायाँ हिस्सा झुका हुआ होगा और उस के हक़ में जहन्नम का फैसला होगा।" [अलमतालिबुल आलिया : १६४६, अन अबी हुरैरह व इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया खोल दी जाएगी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अन्क़रीब दुनिया की दौलत तुम पर खोल दी जाएगी, यहाँ तक के तुम अपने घरों को इस तरह संवारोगे जैसे काबा शरीफ की नक़्श व निगार की जाती है।"

[तबरानी कबीर : १७७३०, अन अबी जुहैफ़ा ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	नेक आमाल का बदला जन्नत है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "यही वह जन्नत है, जिस के तुम अपने नेक आमाल के बदले वारिस बना दिये गए हो और तुम्हारे लिये उस में बहुत से मेवे हैं, जिन में से तुम खाते रहोगे।"

[सूर-ए-ज़ुख़रुफ़ : ७२ ता ७३]

नंबर (९): कुर्आन से इलाज	बिच्छू के ज़हर का इलाज

हज़रत इब्ने अब्बास ؓ कहते हैं के सहाबा ؓ की एक जमात का गुज़र ऐसी जगह से हुआ जहाँ एक शख़्स को बिच्छू ने डस लिया था, वहाँ के लोगों में से एक शख़्स ने सहाबा ؓ से दम करने की दरख़्वास्त की चुनान्चे एक सहाबी तशरीफ ले गए और सूर-ए-फ़ातिहा पढ़ कर दम कर दिया तो वह अच्छा हो गया। [बुख़ारी : ५७३७]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो ! तुम सब्र और नमाज़ के ज़रिये मदद हासिल करो। बे शक अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है।" [सूर-ए-बक़रा : १५३]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(२४) सफरुल मुज़फ्फर

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत सुलेमान ﷺ

हज़रत सुलेमान ﷺ हज़रत दाऊद ﷺ के बेटे हैं। उन का नसब यहुदा के वास्ते से हज़रत याक़ूब ﷺ तक पहुँचता है। कुर्आने करीम में १६ जगह उन का ज़िक्र आया है और उन पर अल्लाह तआला की जानिब से अता करदा इनामात और फज़ल व करम का तज़केरा किया गया है। अल्लाह तआला ने हज़रत सुलेमान ﷺ को फितरी तौर पर ज़हानत और फैसला करने की कुव्वत व सलाहिय्यत अता फ़र्माई थी, इसी वजह से हज़रत दाऊद ﷺ ने उन को कम उम्र होने के बवाजूद हुकूमत के बहुत सारे काम सुपुर्द कर दिये थे। और ख़ास तौर पर मुक़द्दमात के फैसलों में उन से मश्वरा करते थे। फिर अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद ﷺ के बाद हज़रत सुलेमान ﷺ को नुबुव्वत व हुकूमत दोनों अता फ़र्माई।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — जुनून (पागल पन) का असर ख़त्म होना

हज़रत याला बिन मुर्रह फर्माते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से एक अजीब चीज़ देखी , वाक़िया यह हुआ के मैं एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ के साथ सफर में था के सफर के दौरान हम एक जगह ठहरे, इतने में एक औरत अपने बच्चे को ले कर आई जिस को पागल पन का असर था, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : ऐ अल्लाह के दुश्मन ! निकल जा, मैं अल्लाह का रसूल हूँ। आप ﷺ का इतना कहना था के वह बच्चा ठीक हो गया।

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : २२७०]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — जान बूझ कर नमाज़ क़ज़ा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स दो नमाज़ों को बिला किसी उज़्र के एक वक़्त में पढ़े, वह कबीरा गुनाहों के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े पर पहुँच गया।"

[मुस्तदरक : १०२०, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — क़र्ज़ की अदायगी के वक़्त की दुआ पढ़े

रसूलुल्लाह ﷺ ने क़र्ज़ अदा करते वक़्त यह दुआ पढ़ी :

((بَارَكَ اللّٰهُ لَكَ فِي أَهْلِكَ وَمَالِكَ))

तर्जमा : अल्लाह तुम्हारे माल व औलाद में बरकत अता फ़र्माए।

[नसई : ४६८७, अन अब्दिल्लाह बिन रबीआ ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	मस्जिद से दिल लगाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "सात आदमियों को अल्लाह तआला अपने साए में जगह देगा जिस रोज़ सिवाए उस के साया के कोई साए न होगा। उन में से एक वह शख़्स भी है जिस का दिल मस्जिद में लगा हुआ हो।"

[बुख़ारी : ६६०, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	बुरे कामों की सज़ा

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है :"जो लोग यह चाहते हैं के मुसलमानों में बे हयाई की बातों का चर्चा हो, तो उन के लिये दुनिया व आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब होगा और (ऐसे फितना करने वालों को) अल्लाह तआला खूब जानता है तुम नहीं जानते।"

[सूर-ए-नूर : १९]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	शैतान के धोके से बचो

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, पस तुम को दुनिया की ज़िन्दगी धोके में न डाले (के तुम उस में लग कर आख़िरत को भूल जाओ) और न तुम को धोका देने वाला (शैतान) अल्लाह तआला (के अज़ाब से) धोके में डाल दे (के तुम उस के धोके में आकर अल्लाह तआला के अज़ाब से बेफिक्र हो जाओ और यह समझने लगो के अज़ाब न होगा)"

[सूर-ए-लुक़्मान : ३३]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जन्नत के परिन्दे

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब किसी जन्नती को परिन्दे का गोश्त खाने की चाहत होगी, तो वह परिन्दा उस के सामने इस तरह हाज़िर होगा के वह पका हुआ होगा और उस के टुकड़े बने हुए होंगे।"

[तरग़ीब व तरहीब : ५३३२, अन अबी उमामह ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मरीज़ का नफसियाती (सायकोलौजिकल) इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम किसी मरीज़ के पास जाओ, तो उस की मौत के बारे में तसल्ली की बात कहो, क्योंकि तुम्हारी यह गुफ्तगू अगरचे अल्लाह के फैसले को तो नहीं बदल सकती है, मगर उस मरीज़ के दिल को सुकून पहुँचाएगी।"

[तिर्मिज़ी : २०८७, अन अबी सईद ؓ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम अपने बिस्तर पर आने का (इरादा) करो, तो जिस तरह नमाज़ के लिये वुज़ू करते हो उस तरह वुज़ू करो, फिर अपनी दाईं करवट लेट जाओ।"

[बुख़ारी : २४७, अन बरा बिन आज़िब ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२५) सफरुल मुज़फ्फर

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत सुलेमान عليه السلام की नुबुव्वत व हुकूमत

हज़रत दाऊद عليه السلام का जब इन्तेक़ाल हो गया, तो अल्लाह तआला ने हज़रत सुलेमान عليه السلام को नुबुव्वत और हुकूमत दोनों अता फ़र्माई। इस तरह वह जहाँ एक तरफ बनी इस्राईल की दीनी उमूर से मुतअल्लिक़ सही रहनुमाई फ़र्माते, वहीं दूसरी तरफ वह उन लोगों की इज्तिमाई व इन्फिरादी ज़िन्दगी और मुल्की इन्तेज़ाम का फर्ज़ भी अंजाम देते थे। अल्लाह तआला ने हज़रत सुलेमान عليه السلام को बहुत सारी खुसुसियात से नवाज़ा था। वह आम इन्सानों की गुफ्तगू की तरह तमाम परिन्दों की भी बोलियाँ खूब अच्छी तरह समझते थे। अल्लाह तआला ने हवा को उन के ताबे कर दिया था, इसी वजह से आधे दिन में वह एक महीने का सफर मुकम्मल कर लेते थे। जिन्नात भी उन के ताबे और फ़र्मांबरदार थे। जिन्नातों ही के ज़रिये "मस्जिदे अक़्सा" और उस के अलावा दीगर आली शान इमारतें और पत्थरों को तराश कर बड़े बड़े हौज़ बनवाए और समुन्दरों से हीरे जवाहिरात निकालने का काम भी उन्हीं से लेते थे। मस्जिदे अक़्सा की तामीर के दौरान हज़रत सुलेमान عليه السلام का ५३ साल की उम्र में इन्तेक़ाल हुआ।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — ऊँट की खुसूसियात

क़ुर्आन में अल्लाह तआला ने हमें दीगर जान्वरों के मुक़ाबले में ऊँट की पैदाइश व बनावट पर ग़ौर करने की दावत दी है। ज़रा ग़ौर करो के वह सख़्त गर्मी के मौसम में बग़ैर कुछ खाए पिये आठ दिन ज़िन्दा रह सकता है। अगरचे उस के अन्दर एक दिन में पचास किलो खाने की सलाहियत है मगर दो किलो घास दाने पर एक महीना ज़िन्दा रह सकता है। इस तरह अपने वज़न से एक तिहाई पानी पेट की टांकी में जमा कर के महीनों इस्तेमाल कर लेता है। उस के होंट मज़बूत रबड़ की तरह हैं, जिन से वह सख़्त काँटे पलास्टिक वग़ैरह खाकर हज़म कर लेता है। वह ढाई कोइन्टल वज़न ले कर चालीस किलो मीटर का फासला आराम से तय कर लेता है और बग़ैर वज़न के ३०० किलो मीटर चलने की ताक़त रखता है। सेहराई सफर की मुनासबत की वजह से उसे रेगिस्तानी जहाज़ कहा जाता है। आख़िर ऊँट को यह ख़ुसूसियात किस ने अता फर्माई। यक़ीनन यह अल्लाह की ज़बरदस्त क़ुदरत है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — हज किन लोगों पर फर्ज़ है

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अल्लाह के वास्ते उन लोगों के ज़िम्मे बैतुल्लाह का हज करना (फर्ज़) है जो वहाँ तक पहुँचने की ताक़त रखते हों।"

[सूर-ए-आले इमरान : ९७]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — तेल लगाने का मस्नून तरीक़ा

हज़रत आयशा رضي الله عنها बयान करती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ जब तेल लगाते, तो उसे बाएँ हाथ में रखते, दोनों भंवों पर लगाते, फिर दोनों आँखों पर, फिर सर पर लगाते।

[कंज़ुल उम्माल : १८२९५]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	मस्जिद में सीखना सिखाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स मस्जिद की तरफ जाए और उस का इरादा सिर्फ यह हो के कोई अच्छी बात (यानी दीन की बात) सीखे या सिखाए उस को हज करने वाले के बराबर सवाब मिलेगा।"

[तबरानी कबीर : ७३४६, अन अबी उमामह ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	सूद का लेन देन करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस क़ौम में सूद आम हो जाता है उस में पागलपन जैसी बीमारी फैल जाती है और जिस क़ौम में ज़िना जैसी बुरी चीज़ आम हो जाती है उस में कसरत से मौत होने लगती है और नाप तौल में कमी करना जिस की आदत बन जाती है, अल्लाह तआला उन से बारिश रोक देता है।"

[अलकबाइर लिज़्ज़हबी : २२/१]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	लोगों का दुनिया की फिक्र करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "आख़िर ज़माने में एक क़ौम ऐसी होगी जो मस्जिदों में हल्क़े लगा कर बैठेगी और उन के सामने दुनिया होगी (यानी दुनिया का तज़्करा और उसी की फिक्र में मुन्हमिक होंगे) तो तुम ऐसे लोगों के साथ न बैठना, इस लिये के अल्लाह तआला को ऐसे लोगों की कोई ज़रूरत नहीं।"

[तबरानी कबीर : १०३००, अन इब्ने मसऊद ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	फैसले का दिन मुतअय्यन है

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "बेशक फैसले के दिन (लोगों) का वक़्त उन सब के लिये मुक़र्रर है, जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम न आएगा और न उन की कोई मदद की जाएगी, मगर हाँ जिस पर अल्लाह तआला रहम फ़र्मा दे।" [सूर-ए-दुख़ान : ४० ता ४२]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	एक हिफाज़ती तदबीर

रसूलुल्लाह ﷺ ने मुँह के बल लेट कर खाना खाने से मना फ़र्माया।

[इब्ने माजा : ३३७० , अन अब्दिल्लाह बिन उमर ﷺ]

फायदा : इस तरह खाने से मेअ्दे में खाना बड़ी तक्लीफ से पहुँचता है और हज़म होने में भी तक्लीफ होती है।

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो ! तुम सब्र और नमाज़ के ज़रिये मदद हासिल करो। बेशक अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है।" [सूर-ए-बक़रा : १५३]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(२६) सफरुल मुज़फ्फर

नंबर (१): इस्लामी तारीख | मलिक-ए-सबा को इस्लाम की दावत

हज़रत सुलेमान ﷺ के ज़माने में क़ौमे सबा पर बिलक़ीस नामी औरत हुकूमत करती थी, वह और उस की क़ौम कुफ्र व शिर्क और सितारा परस्ती में मुब्तला थी, सूरज को अपना सब से बड़ा देवता समझती थी। कुर्आने करीम में है के हज़रत सुलेमान ﷺ को इस सूरते हाल की इत्तेला हुद हुद परिन्दे ने दी। हज़रत सुलेमान ﷺ ने हुद हुद के ज़रिये एक खत मलिका के पास भेजा, जिस में उस को और उस की क़ौम को इस्लाम क़बूल करने की दावत दी गई थी। जब यह खत मलिक-ए-सबा को मिला, तो उस ने अपने दरबारियों से मश्वरा किया। फिर चंद लोगों को बहुत सारे हदिये और तोहफे दे कर हज़रत सुलेमान ﷺ के बरहक़ होने की आज़माइश के लिये उन की ख़िदमत में भेजा। जब बिलक़ीस के लोग तोहफे और हदिये ले कर पहुँचे और हज़रत सुलेमान ﷺ की ख़िदमत में पेश किया, तो आप ﷺ ने वापस कर दिया, जब यह लोग वापस हो गए तो मलिका को इस की इत्तेला देते हुए कहा : हज़रत सुलेमान ﷺ की हुकूमत सिर्फ इन्सानों पर ही नहीं बल्के जिन्नात और परिन्दों पर भी है।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा | टहेनी का तलवार बन जाना

जंगे बद्र के दिन हज़रत सलमा बिन असलम رضی اللہ عنہ की तलवार टूट गई, और उन के पास अब कोई हथियार नहीं बचा था, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन को एक टहेनी दी और फर्माया : जाओ इस से किताल करते रहो, चुनान्चे वह हज़रत सलमा رضی اللہ عنہ के हाथ में तलवार बन गई। जब आप की शहादत हुई तो उस वक़्त भी वह आप के पास थी।

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : ९६७]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | औलाद को नमाज़ का हुक्म देना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम्हारी औलाद जब सात बरस की हो जाए तो नमाज़ की ताकीद करो और जब वह दस बरस के हों तो नमाज़ छोड़ने पर उन को मारो।"

[अबू दाऊद : ४९४, अन सबरा رضی اللہ عنہ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | हिजरत के वक़्त की दुआ

जब मजबूरी की वजह से किसी जगह मुन्तक़िल होना पड़े तो यह दुआ पढे, क्योंकि रसूलुल्लाह ﷺ ने हिजरत के वक़्त यही दुआ पढी थी :

﴿ رَّبِّ أَدْخِلْنِي مُدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِي مُخْرَجَ صِدْقٍ وَاجْعَل لِّي مِن لَّدُنكَ سُلْطَانًا نَّصِيرًا ﴾

तर्जमा : ऐ मेरे रब ! मुझ को खूबी से साथ पहुँचाइये और मुझ को खूबी के साथ ले जाइये और मुझ को अपने पास से ऐसा गलबा दीजिये जिस के साथ नुसरत हो।

[सूर-ए-बनी इस्राईल : ८०]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	लोगों को नफा पहुँचाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह के नज़दीक तमाम लोगों में सब से ज़ियादा प्यारा वह शख़्स है, जो लोगों को ज़ियादा नफा पहुँचाए।" [तबरानी कबीर : १३४६८, अन इब्ने उमर रज़ि.]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	कुफ्र व नाफ़र्मानी का वबाल

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अल्लाह ही तो ऐसा है जिस ने तुम को ज़मीन में आबाद किया: लिहाज़ा जो शख़्स कुफ्र करेगा, उस के कुफ्र का वबाल उसी पर होगा और काफिरों का कुफ्र उन के रब के नज़दीक नाराज़गी ही को बढ़ाता है और काफिरों के लिये उन का कुफ्र सिर्फ नुक़सान बढ़ाने ही का सबब होता है।" [सूर-ए-फातिर : ३९]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया चाहने वालों के लिये नुक़सान

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख़्स आख़िरत की खेती का तालिब हो, हम उस की खेती में तरक़्क़ी देंगे और जो दुनिया की खेती का तालिब हो, (के सारी कोशिश उसी पर ख़र्च कर दे) तो हम उस को दुनिया में से कुछ दे देंगे और ऐसे शख़्स का आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं।"

[सूर-ए-शूरा : २०]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	ज़न्जीर की लम्बाई

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : इस जुमजुमा कुँवें के इर्द गिर्द किसी पत्थर को आसमान से ज़मीन की तरफ छोड़ा जाए जिस की मसाफत पाँच सौ साल है तो वह रात होने से पहले ज़मीन पर पहुँच जाएगा और अगर उस से (जहन्नम की) ज़न्जीर के एक सिरे से छोड़ा जाए तो उस की इन्तेहा तक पहुँचने के लिये चालीस साल तक लुढ़कता रहेगा। [मुस्नदे अहमद : ६८१७, अन अब्दिल्लाह बिन उमर रज़ि.]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	गोश्त के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "दुनिया वालों और जन्नतियों का सब से उमदा और लज़ीज़ खाना गोश्त है।" [इब्ने माजा : ३३०५, अन अबी दरदा रज़ि.]

फायदा : हज़रत अली रज़ि. ने फर्माया : गोश्त खाओ, इस लिये के यह बदन के रंग को निखारता है पेट को बढ़ने से रोकता है और अख़लाक़ व आदात को संवारता है। [तिब्बे नबवी]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "नमाज़ के लिये जब आओ, तो दौड़ भाग कर न आओ, सुकून और इत्मेनान के साथ आओ।" [नसई : ८६२, अन अबी हुरैरह रज़ि.]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२७ सफरुल मुज़फ्फर

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — मलिक-ए-सबा का इस्लाम लाना

मलिका-ए-सबा बिल्कीस ने हज़रत सुलेमान ﷺ की शान व शौकत का हाल सुन कर उन की ख़िदमत में हाज़री की तय्यारी शुरू कर दी। उधर उस के आने की इत्तेला वही के ज़रिये हज़रत सुलेमान ﷺ को मिल गई। उन्होंने एक वज़ीर के वास्ते से पलक झपकते ही मलिका का तख़्ते शाही मंगा लिया। और उस की थोड़ी सी शक्ल व सूरत बदल दी। जब मलिका दरबार में पहुँची, तो हज़रत सुलेमान ﷺ ने पूछा : क्या तुम्हारा तख़्त ऐसा ही है? मलिका ने कहा : गोया यह वही है। हज़रत सुलेमान ﷺ ने एक महल तामीर करा कर उस के सेहन में एक बड़ा हौज़ बनवाया और पानी से भर कर उस के ऊपर ख़ूबसूरत शीशे का फर्श बिछाया था। देखने वालों को ऐसा महसूस होता था के सेहन में पानी बह रहा है, जब मलिक-ए-सबा सेहन में पहुँची तो पानी देख कर उस में दाख़िल होने के लिये पिंडली से कपड़ा समेटा। हज़रत सुलेमान ﷺ ने कहा : इस की ज़रूरत नहीं, क्योंकि पूरा सेहन ख़ूबसूरत शीशे से बनाया गया है। मलिका की अक़्ल पर यह सख़्त चोट थी। अब उस ने हक़ीक़ते हाल को समझा के यह जो कुछ हो रहा है, वह सिर्फ हमें यह यक़ीन दिलाने के लिये के हज़रत सुलेमान ﷺ को ऐसी बेमिसाल चीज़ें अता करने वाली हस्ती एक है, जो पूरी काइनात का मालिक है। फिर अपने कुफ्र व शिर्क पर शरमिन्दा हुई और हज़रत सुलेमान ﷺ के दस्ते मुबारक पर ईमान ले आई।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — डालफिन मछली

समुन्दर की मछलियाँ इन्सान से डर कर भाग जाती हैं, लेकिन अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत से डालफिन नामी एक मछली ऐसी भी पैदा फ़र्माई, जो मछेरों और ग़ौता ख़ोरों से मानूस होती है, उन से साथ दोस्ताना तअल्लुक़ रखती है, शार्क जैसी ख़तरनाक मछली से हिफाज़त करती है, छोटी मछलियों को मछेरों के जाल की तरफ दौड़ा कर शिकार कराती है , पानी में तरबियत करने वालों के साथ गेंद खेलती है, और आदमी के इशारे पर तरह तरह के करतब करती है, आख़िर डालफिन के अन्दर इन्सान की मुहब्बत किस ने डाली। यक़ीनन यह अल्लाह ही की कुदरत का कमाल है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — बे नमाज़ी का इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स नमाज़ नहीं पढ़ता उस का इस्लाम में कुछ भी हिस्सा नहीं है और बग़ैर वुज़ू के नमाज़ नहीं होती।"

[तरग़ीब व तरहीब : ७७१, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — मूँछ और नाख़ुन काटने का वक़्त

हज़रत अबू हुरैरह ﷺ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ जुमा की नमाज़ से पहले लब (मूंछ) तराशते और नाख़ुन काटते थे।

[तबरानी औसत : ८५४]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह का ज़िक्र करना

रसूलुल्लाह ﷺ से मालूम किया गया के बन्दों में सब से अफ़ज़ल और क़यामत के दिन अल्लाह के नज़दीक सब से बेहतर कौन है ? आप ﷺ ने फर्माया : "जो मर्द और औरत कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करने वाले हैं ।" [तिर्मिज़ी : ३३७६, अन अबी सईद رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	मुसलमान भाई से बोल चाल बंद रखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस शख्स ने अपने किसी मुसलमान भाई से एक साल बोल चाल बंद रखी, उस ने गोया उस का ख़ून बहा दिया ।" [अबू दाऊद : ४९१५, अन अबी ख़राश सुलमी رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया दुश्मनी का सबब

हज़रत उमर رضي الله عنه फर्माते हैं के मैं ने हुज़ूर ﷺ को फ़र्माते हुए सुना के जब दुनिया (की दौलत) किसी पर खोल दी जाती है, तो अल्लाह तआला उन के बीच आपस में क़यामत तक दुश्मनी और बुग़्ज़ डाल देते हैं और मैं उस से डरता हूँ । [मुस्नदे अहमद : ९४]

खुलासा : जब किसी के पास ख़ूब माल व दौलत जमा हो जाती है, तो लोग उस से हसद करने लगते हैं, जिस से दुश्मनी पैदा होती है ।

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले जन्नत की बात चीत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "(जन्नत में ख़िदमत के लिये) उन के पास ऐसे लड़के आते जाते रहेंगे जो उन की ख़िदमत के लिये ख़ास होंगे (और हुस्न व जमाल में ऐसे होंगे) गोया वह हिफ़ाज़त से रखे हुए मोती हैं ।" [सूर-ए-तूर : २४]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	सेहत और बीमारी का राज़

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मेअदा बदन का हौज़ है और जिस्म की सारी रगें इसी मेअदे से सैराब होती हैं, लिहाज़ा जब मेअदा सही होता है तो रगें पूरे जिस्म में सेहत को मुन्तक़िल करती हैं और जब मेअदा ख़राब होता है तो रगें बीमारी को मुन्तक़िल करती हैं ।" [तबरानी औसत : ४४९४, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जब तुम लोगों के दर्मियान फैसला करने लगो, तो अद्ल व इन्साफ के साथ फैसला किया करो, बेशक अल्लाह तआला जिस बात की तुम को नसीहत करता है यक़ीन जानो बहुत ही अच्छी है ।" [सूर-ए-निसा : ५८]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर १: इस्लामी तारीख — हज़रत यूनुस عليه السلام

हज़रत यूनुस عليه السلام अल्लाह के बर्गुज़ीदा नबी और अम्बियाए बनी इस्राईल में से हैं। आप عليه السلام की पैदाइश इराक़ के मशहूर शहर "नैनवा" में हुई। अल्लाह तआला ने आप عليه السلام को इसी शहर की हिदायत के लिये नबी बनाया था, यह क़ौम कुफ्र व शिर्क में मुब्तला हो गई थी। आप उन्हें एक अर्से तक एक अल्लाह की इबादत की दावत देते रहे, मगर उन्होंने आप की दावत को क़बूल न किया और कुफ्र व शिर्क पर जमे रहे और आप का मज़ाक़ उड़ाया। जब आम तौर पर ऐसा होने लगा, तो हज़रत यूनुस عليه السلام उन के लिये अज़ाबे इलाही की बददुआ कर के वहाँ से रवाना हो गए। आप के बस्ती से रवाना हो जाने के बाद क़ौम पर अज़ाबे इलाही के आसार दिखाई देने लगे। क़ौम को यक़ीन हो गया के हज़रत यूनुस عليه السلام अल्लाह के सच्चे नबी थे। लिहाज़ा क़ौम के तमाम लोग और उन के सरदार बस्ती से बाहर एक मैदान में जमा हो कर खूब रोए और अपने गुनाहों की माफी माँगी और शिर्क से तौबा की, अल्लाह तआला ने उन की तौबा क़बूल फ़र्माई और उन्हें अज़ाब से बचा लिया।

नंबर २: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — थोड़े से पानी में बरकत

हज़रत ज़ियाद बिन हारिस رضي الله عنه फ़र्माते हैं मैं एक सफर में आप ﷺ के साथ था। दौराने सफर आप ﷺ ने मुझ से पूछा : ऐ मेरे भाई ! तुम्हारे पास कुछ पानी है? मैं ने अर्ज़ किया : हाँ ! मश्कीज़े में है, मगर थोड़ा सा है, वह आप को काफी न होगा, तो आप ﷺ ने फ़र्माया : उस को किसी बर्तन में निकाल कर मेरे पास ले आओ ! चुनान्चे मैं गया और एक बर्तन में निकाल कर ले आया। आप ﷺ ने अपना दस्ते मुबारक उस में रखा, मैं देख रहा था के आप ﷺ की उंगलियों के दर्मियान से पानी का चश्मा फव्वारे की तरह फूटने लगा और फिर सब ने उस से वुज़ू किया।

[तबरानी कबीर : ५१४७, अन ज़ियाद बिन हारिस رضي الله عنه]

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — सब से पहले नमाज़ का हिसाब होगा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "सब से अव्वल जिस चीज़ का बन्दे से क़यामत में हिसाब होगा, वह नमाज़ है, अगर वह ठीक उतरी तो उस के सारे आमाल ठीक उतरेंगे और अगर वह खराब निकली तो उस के सारे आमाल ख़राब निकलेंगे।"

[तबरानी फ़िलऔसत : १९२९, अन अनस رضي الله عنه]

नंबर ४: एक सुन्नत के बारे में — गुनाहों से तौबा करने की दुआ

हज़रत अबू मूसा अशअरी رضي الله عنه फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ माँगते थे :

((اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ جِدِّيْ وَهَزْلِيْ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मेरे जाने, अन्जाने गुनाहों को माफ़ फ़र्मा।

[मुस्लिम : ६९०१]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | मस्जिद से कूड़ा करकट दूर करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मस्जिद से कूड़ा करकट साफ करना बडी आँखों वाली हूरों का महर है।"

[तबरानी कबीर : २४५८, अन अबी करसाफा ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | कुर्आन को झुटलाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "उस शख्स से बड़ा जालिम कौन हो सकता है, जो अल्लाह पर झूट बोले और जब उस के पास सच्ची बात (कुर्आन) आए, तो उस को झुटलाए, क्या ऐसे काफिरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं होगा।"

[सूर-ए-जुमर : ३२]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | रिज़्क़ हिकमते खुदावंदी से मिलता है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : अगर अल्लाह तआला अपने (सब) बन्दों के लिये रिज़्क में ज़ियादती कर देता, तो ज़रूर ज़मीन में फसाद करने लगते, लेकिन वह जिस कद्र चाहता है, अन्दाजे के मुताबिक़ रोज़ी उतारता है और वह अपने बन्दों से बाखबर और (उन को) देखने वाला है।"

[सूर-ए-शूरा : २७]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | चालीस साल तक अज़ाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जहन्नम में बुख़्ती ऊँटों की गर्दनों के बराबर (मोटे) साँप हैं, उन में से एक ने भी एक दफा डस लिया, तो उस का ज़हर चलीस साल तक बाकी रहेगा। इसी तरह जहन्नम में हामिला खच्चरों की मानिंद (मोटे) बिच्छू हैं, उन में जो कोई एक दफा डसेगा, तो उस की तकलीफ चलीस साल तक महसूस होगी।"

[मुस्नदे अहमद : १७२६०, अन अब्दुल्लाह बिन हारिस ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | सेहत के लिये एहतियाती तदबीर

हज़रत इब्ने अब्बास ؓ फर्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ खाने पीने की चीज़ों में फूँक नहीं मारते थे और न बर्तन में साँस लेते थे।

[इब्ने माजा : ३२८८]

फायदा : अतिब्बा कहते हैं के जो हवा साँस के ज़रिये बाहर निकलती है, उस में मर्ज़ के एतेबार से लाखों जरासीम होते हैं, जब इन्सान बर्तन में तीन फूँक मारेगा या साँस लेगा, तो वह जरासीम उस में फैल कर सेहत के लिये नुक़सान देह साबित हो सकते हैं।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम में से किसी को छींक आए, तो ((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ)) कहे, और सुनने वाला ((يَرْحَمُكَ اللّٰهُ)) कहे उस के जवाब में छींकने वाला ((يَهْدِيْكُمُ اللّٰهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ)) कहे।"

[इब्ने माजा : ३७१५, अन अली ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

३० सफरुल मुज़फ्फर

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत उज़ैर

हज़रत ऊज़ैर बनी इस्राईल के नबी और हज़रत हारून की नस्ल से हैं। अल्लाह तआला ने सूर-ए-तौबा में उन का तज़केरा किया है। वह तौरात के हाफिज़ और बड़े आलिम थे, जब बुख़्ते नस्र बादशाह ने बनी इस्राईल को शिकस्त दे कर फलस्तीन और बैतुलमक़दिस बिल्कुल तबाह कर दिया और उन को गुलाम बना कर बाबुल ले गया और तौरात के तमाम नुस्खों को जला कर राख कर दिया और वह तौरात जैसी अज़ीम आसमानी किताब से महरूम हो गए, तो अल्लाह तआला ने हज़रत उज़ैर को दोबारा बैतुलमक़दिस आबाद करने का हुक्म दिया, उन्होंने उस की वीरानी को देख कर हैरत का इज़हार किया, तो अल्लाह तआला ने सौ साल तक उन पर नींद तारी कर दी। जब सौ साल सोने के बाद बेदार हो कर देखा के बैतुलमक़दिस आबाद हो चुका है, तो हज़रत उज़ैर ने पूरी तौरात सुनाई और उसे आख़िर तक लिखाया, इस अज़ीम कारनामे की वजह से यहूदी उन्हें अक़ीदत में ख़ुदा का बेटा कहने लगे और आज भी फलस्तीन में यहूद का एक फिरक़ा हज़रत उज़ैर को ख़ुदा का बेटा कहता है और उन का मुजस्समा बना कर उस की इबादत करता है। क़ुर्आन पाक में अल्लाह तआला ने उन के इस गलत अक़ीदे की इसलाह फ़र्माई, के वह अल्लाह के बन्दे और उस के सच्चे रसूल हैं, फलस्तीन के दोबारा आबाद होने के बाद पचास साल तक लोगों की इस्लाह करते हुए तक़रीबन ४८५ साल क़ब्ले मसीह इराक़ के गाँव "साइराबाद" में इन्तेक़ाल फ़र्माया।

नंबर (२): हुज़ूर का मुअ्जिज़ा — हज़रत ख़ुबैब के हक़ में दुआ

ग़ज़व-ए-बद्र के मौक़े पर हज़रत ख़ुबैब का कंधा ज़ख्मी हो गया, आप ने अपना मुबारक थूक उस पर लगाया, तो बाज़ू अपनी जगह पर जुड़ कर ठीक हो गया। [बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : ९६४]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सज्द-ए-सह्व करना

रसूलुल्लाह ने फर्माया : "जब तुम में से किसी को (नमाज़ में) भूल चूक हो जाए, तो सज्द-ए-सह्व कर ले।"

[मुस्लिम : १२८३]

फायदा : अगर नमाज़ में कोई वाजिब भूल से छूट जाए या वाजिबात और फराइज़ में से किसी को अदा करने में देर हो जाए तो सज्द-ए-सह्व करना वाजिब है, इस के बग़ैर नमाज़ नहीं होती।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — मोमिन के हक़ में दुआ

रसूलुल्लाह यह दुआ फर्माते :

((اَللّٰهُمَّ فَأَيُّمَا مُؤْمِنٍ سَبَبْتُهُ فَاجْعَلْ ذٰلِكَ لَهُ قُرْبَةً إِلَيْكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! अगर किसी मोमिन को मैं ने बुरा भला कहा हो तो क़यामत के दिन उस कहने के बदले में उसे अपना क़ुर्ब नसीब फ़र्मा।

[बुख़ारी : ६३६१, अन अबी हुरैरह]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फज़ीलत | बरकत वाला निकाह

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "सब से ज़ियादा बरकत वाला निकाह वह है, जिस में कम से कम खर्च हो।"

[शोअबुलईमान : ६२९५, अन आयशा ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | रसूल के हुक्म को न मानना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग रसूलुल्लाह ﷺ के हुक्म की ख़िलाफ वरज़ी करते हैं, उन को इस से डरना चाहिये के कोई आफत उन पर आ पड़े या उन पर कोई दर्दनाक अज़ाब आजाए।"

[सूर-ए-नूर : ६३]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | आख़िरत की कामयाबी दुनिया से बेहतर है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है :"तुम लोगों को जो कुछ दिया गया है, वह सिर्फ दुनियवी ज़िन्दगी (में इस्तेमाल की) चीज़ें हैं और जो कुछ (अज्र व सवाब) अल्लाह के पास है, वह इस (दुनिया) से कहीं बेहतर और बाक़ी रहने वाला है।"

[सूर-ए-शूरा : ३६]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | दाढ़ और चमड़े की मोटाई

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "(जहन्नम में) काफिर की एक दाढ़ या एक दाँत उहुद (पहाड़) के बराबर होगी और उस की खाल की मोटाई तीन दिन चलने (सफर) के बराबर होगी।"

[मुस्लिम : ७१८५, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | नशा आवर चीज़ों से एहतियात

हज़रत उम्मे सलमा ؓ फर्माती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने हर नशे वाली और अक़्ल में ख़राबी पैदा करने वाली चीज़ों से रोका है।

[अबू दाऊद : ३६८६]

फायदा : अतिब्बा लिखते हैं के नशे वाली चीज़ों के नुक़सानदेह असरात सब से ज़ियादा दिमाग़ पर ज़ाहिर होते हैं : लिहाज़ा उस से बचने की सख़्त ज़रूरत है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जनाज़े को जल्दी ले जाओ, अगर मुर्दा नेक है, तो उस की भलाई की तरफ जल्दी पहुँचाओ और अगर वह बद है तो उस को जल्दी अपनी गर्दन से उतार फेंको।"

[बुख़ारी : १३१५, अन अबी हुरैरह ؓ]

रबीउल
अव्वल

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रोश्नी में)

① रबीउल अव्वल

नंबर ①: इस्लामी तारीख — हज़रत ज़करिया

हज़रत ज़करिया अल्लाह तआला के मुन्तख़ब करदा नबी और बनी इस्राईल के हादी व रहनुमा थे। उन्होंने हज़रत ईसा का ज़माना पाया था। तमाम अम्बियाए किराम का दस्तूर रहा है के वह अपने हाथ की कमाई से गुज़र बसर किया करते थे। हज़रत ज़करिया ने भी अपने गुज़ारे के लिये नज्जारी (सुतारी, बढई) का पेशा इख़्तेयार कर रखा था। उन्होंने ही हज़रत ईसा की वालिद-ए-मोहतरमा हज़रत मरयम की कफालत व तरबियत फ़र्माई थी। हज़रत ज़करिया बूढ़े हो गए थे, लेकिन उन्हें कोई औलाद नहीं थी और उन के ख़ान्दान में कोई शख़्स उन के बाद बनी इस्राईल की रूश्द व हिदायत की ख़िदमत अन्जाम देने वाला नहीं था, इस लिये उन्हें हमेशा यह फ़िक्र रहती थी के मेरे बाद यह काम कौन करेगा, एक मर्तबा हज़रत मरयम के पास बेमौसम के फल देख कर पूछा के मरयम ! यह कहाँ से आए? तो उन्होंने कहा के यह अल्लाह तआला की तरफ से है। हज़रत ज़करिया ने कहा के जो ख़ुदा बेमौसम के फल देने पर क़ादिर है, तो वह बुढ़ापे में औलाद भी दे सकता है। चुनान्चे उन्होंने अल्लाह तआला से एक नेक सालेह औलाद माँगी, अल्लाह तआला ने उन की दुआ क़बूल फर्माई और बड़ी उम्र में हज़रत यहया जैसा बेटा अता फर्माया।

नंबर ②: अल्लाह की कुदरत — क़ौसे क़ज़ह (Rainbow)

बारिश के मौसम में जब हल्की धूप में बारिश होती है तो आसमान पर एक जानिब से दूसरी जानिब सात रंगों वाली क़ौसे क़ज़ह (कमान) ज़ाहिर होती है। कमान के यह मुख़्तलिफ रंग आसमान के हुस्न व ख़ूबसूरती में इज़ाफा कर देते हैं, जिस को देख कर इन्सान सोचने पर मजबूर हो जाता है के आख़िर आसमान की इस बुलन्दी पर किसी पेन्टिंग के बग़ैर चन्द मिनटों में इतनी बड़ी, ख़ूबसूरत और हसीन क़ौसे क़ज़ह किस ने बनाई। बेशक यह अल्लाह ही की ज़ात है जो अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ कुदरत का इज़हार फ़र्माती है।

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — अस्र की नमाज़ की फज़ीलत

एक मर्तबा रसूलुल्लाह ने अस्र की नमाज़ पढ़ाई और फिर लोगों की तरफ मुतवज्जेह हो कर फर्माया : " यह नमाज़ तुम से पहले वाले लोगों पर भी फर्ज़ की गई थी, मगर उन्होंने इस को ज़ाए कर दिया, लिहाज़ा सुनो ! जो इस को पाबन्दी से पढ़ता रहेगा उस को दोहरा सवाब मिलेगा।"

[मुस्लिम :१९२७, अन अबी बसरा ग़िफ़ारी]

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — मेहमान का अच्छे अलफाज़ से इस्तिक़बाल करना

हज़रत इब्ने अब्बास फर्माते हैं के जब रसूलुल्लाह की ख़िदमत में क़बील-ए-बनू अब्दुल क़ैस के लोग आए, तो रसूलुल्लाह ने फर्माया : मरहबा (यानी आप का आना मुबारक हो।) [बुख़ारी :५३]

फायदा : जब कोई मेहमान आए, तो ख़ुश आमदीद, मरहबा या इस तरह के अलफाज़ कहना सुन्नत है।

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	पड़ोसी के साथ अच्छा सुलूक करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह के नज़दीक बेहतरीन साथी वह है, जो अपने साथी के लिये बेहतर हो और अल्लाह के नज़दीक बेहतरीन पड़ोसी वह है जो अपने पड़ोसी के हक़ में अच्छा हो।"

[तिर्मिज़ी : १९४४ अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	रसूल की नाफ़र्मानी करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मेरे सब उम्मती जन्नत में जाएंगे मगर जिस ने इन्कार कर दिया (वह जन्नत में दाख़िल न होगा।) अर्ज़ किया गया : या रसूलल्लाह ! इन्कार कौन करेगा? फर्माया : जिस ने मेरी इताअत की जन्नत में दाखिल हो गया और जिस ने मेरी नाफ़र्मानी की तो उस ने इन्कार किया।"

[बुख़ारी : ७२८० अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	माल के मुतअल्लिक़ फ़रिश्तों का एलान

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "हर रोज़ जब अल्लाह के बन्दे सुबह को उठते हैं, दो फरिश्ते नाज़िल होते हैं उन में से एक कहता है। ऐ अल्लाह ! (अच्छे कामों में) ख़र्च करने वाले को मज़ीद अता फ़र्मा और दूसरा कहता है। ऐ अल्लाह ! माल को (अच्छे कामों में ख़र्च करने के बजाए) रोक कर रखने वाले का माल ज़ाए फ़र्मा।"

[बुख़ारी : १४४२, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत के दिन आमाल का बदला मिलेगा

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख़्स क़यामत के दिन नेकी लेकर हाज़िर होगा, तो उस को उस नेकी से बेहतर बदला मिलेगा और जो शख़्स बदी ले कर हाज़िर होगा, तो ऐसे बुरे आमाल वालों को सिर्फ उन के कामों की सज़ा दी जाएगी।"

[सूर-ए-क़सस : ८४]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	हर मर्ज़ का इलाज मौजूद है

हज़रत उसामा ؓ बयान करते है के मैं हुज़ूर ﷺ की खिदमत में मौजूद था के कुछ देहात के रहने वाले आए और आप ﷺ से अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! क्या हम दवा करें? तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : अल्लाह के बन्दो ! ज़रूर दवा किया करो; इस लिये के कोई बीमारी ऐसी नहीं है जिस की दवा अल्लाह ने न पैदा की हो, सिवाए एक बीमारी के और वह बुढ़ापा है।

[मुस्नदे अहमद :१७९८६]

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करो, रिश्तेदारों, यतीमों और मिसकीनों के साथ भी अच्छा बर्ताव करो, लोगों से खुश अख़्लाक़ी से बात करो, नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो।"

[सूर-ए-बक़रा : ८३]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत यहया

हज़रत यहया हज़रत ज़करिया के फरज़न्द और अल्लाह तआला के नबी थे, वह नेक लोगों के सरदार और ज़ुहद व तक़्वा में बेमिसाल थे। अल्लाह तआला ने बचपन से ही इल्म व हिकमत से नवाज़ा था। उन्होंने शादी नहीं की थी, मगर उस के बावजूद उन के दिल में गुनाह का खयाल भी पैदा नहीं हुआ, वह अल्लाह तआला के ख़ौफ से बहुत रोया करते थे। अल्लाह तआला ने उन को और उन की क़ौम को सिर्फ अपनी इबादत व परस्तिश, नमाज़ व रोज़ा की पाबंदी और सद्क़ा ख़ैरात करने और कसरत से ज़िक्र करने का हुक्म दिया था। चुनान्चे उन्होंने अपनी क़ौम को बैतुल मक़दिस में जमा कर के अल्लाह के इस पैग़ाम को सुनाया। उन की ज़िन्दगी का अहम काम हज़रत ईसा की आमद की बशारत देना और रुश्द व हिदायत के लिये राह हमवार करना था, जब उन्होंने दावत व तबलीग़ का काम शुरू किया और अपने बाद हज़रत ईसा के आने की खुशख़बरी सुनाई, तो उन की बढ़ती हुई मक़्बूलियत यहूदी क़ौम को बरदाश्त न हो सकी और हुज्जत बाज़ी कर के इस अज़ीम पैग़म्बर को शहीद कर डाला और अपने ही हाथों अपनी दुनिया व आख़िरत को बरबाद कर लिया।

नंबर (२): हुज़ूर का मुअ्जिज़ा — थोड़ी सी खजूर में बरकत

हज़रत नोमान बिन बशीर की बहन बयान करती हैं के खन्दक़ की खुदाई के मौक़े पर मेरी वालिदा अमरा बिन्ते रवाहा ने मुझे बुलाया और मेरे दामन में एक लब (दोनों हथेली) भर कर खजूर दी और फर्माया : यह अपने वालिद और मामूँ अब्दुल्लाह बिन रवाहा को दे आओ, चुनान्चे मैं चली, वहाँ पहुँच कर अपने वालिद और मामूँ को तलाश करने लगी, इतने में रसूलुल्लाह ने मुझे देख लिया, तो फर्माया: ऐ बेटी इधर आओ! मैं आप के पास पहुँची, तो आप ने पूछा यह क्या है? मैं ने कहा : यह थोड़ी सी खजूर है मेरी वालिदा ने मेरे वालिद और मेरे मामूँ के वास्ते भेजी है, तो हुज़ूर ने फर्माया: मेरे पास लाओ, मैं ने सारी खजूर हुज़ूर की हथेली मुबारक में रख दी और फिर एक कपड़ा बिछवाकर उस पर बिखेर दी और एक आदमी को फर्माया के आवाज़ लगाओ! चुनान्चे इस आवाज़ पर सब लोग जमा हो गए और खाना शुरू किया और खजूर बढ़ती गई हत्ता के सब लोगों ने पेट भर कर खाई फिर भी इतनी ज़ियादा बच गई के कपड़े पर से खजूर ज़मीन पर गिर रही थीं। [दलाइलुन्नुबुव्वह लिलअसफहानी : ४१५]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — हज की फरज़ियत

रसूलुल्लाह ने फर्माया : "ऐ लोगो! तुम पर हज फ़र्ज़ कर दिया गया है, लिहाज़ा इस को अदा करो।"

[मुस्लिम : ३२५७, अन अबी हुरैरह]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — ग़मों से नजात के लिय दुआ पढ़ना

रसूलुल्लाह को जब कोई रंज व ग़म पेश आता, तो आप यह दुआ फर्माते :

((يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ، بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيثُ))

तर्जमा : ऐ वह ज़ात ! जो ज़िन्दा व जावेद है और (तमाम चीज़ों का) थामने वाला है ! मैं तेरी रहमत की उम्मीद के साथ तुझ ही से फरियाद करता हूँ। [तिर्मिज़ी : ३५२४, अन अनस]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	तहज्जुद पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जब कोई आदमी रात को अपनी बीवी को बेदार करता है और अगर उस पर नींद का गलबा हो, तो उस के चेहरे पर पानी छिड़क कर उठाता है और फिर दोनों अपने घर में खड़े हो कर रात का कुछ हिस्सा अल्लाह की याद में गुज़ारते हैं तो उन दोनों की मग़फिरत कर दी जाती है।

[तबरानी कबीर : ३३७०, अन अबी मालिक]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	ज़मीन में फ़साद फैलाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "बिला शुबा वह लोग जो अल्लाह से पक्का अहेद करने के बाद तोड़ डालते हैं और उन रिश्ते नातों को भी तोड़ डालते हैं जिन को अल्लाह ने जोड़े रखने का हुक्म दिया है और ज़मीन में फसाद फैलाते फिरते हैं, तो ऐसे लोग बड़े ख़सारे वाले हैं।" [सूर-ए-बक़रह : २७]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया मांगने वाला

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "लोगों में से बाज़ ऐसे भी हैं जो कहते हैं, के ऐ हमारे परवरदिगार ! हम को (जो कुछ देना हो) दुनिया में ही दे दीजिये (तो उन को जो कुछ मिलना होगा वह दुनिया ही में मिल जाएगा) और ऐसे शख़्स को आख़िरत में कुछ न मिलेगा।" [सूर-ए-बक़रह : २००]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जन्नती का ताज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया :"अहले जन्नत के सर पर ऐसे ताज होंगे, जिन का अदना से अदना मोती भी मशरिक़ व मग़रिब के दर्मियान की चीज़ों को रौशन कर देगा।"

[तिर्मिज़ी : २५६२ , अन अबी सईद ख़ुदरी]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	कलौंजी (शोनीज़) में हर बीमारी से शिफा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम इस कलौंजी (मंगरैला) को इस्तेमाल करो, क्योंकि इस में मौत के अलावा हर बीमारी से शिफा मौजूद है।" [बुख़ारी : ५६८७,अन आयशा]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : " जब तुम को किसी भाई से मुहब्बत हो जाए तो उसे उस का उस के बाप और उस के दादा का नाम मालूम कर लो और उस के क़बीले और घर का पता मालूम कर लो फिर जब वह बीमार हो तो उस की इयादत करो और ज़रूरत के मौक़े पर उस की मदद करो।"

[आदाबुस सोहबह लिअबी अब्दुर्रहमान अस सुलमी : ३४, अन अब्दुल्लाह बिन उमर]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

③ रबीउल अव्वल

नंबर ①: इस्लामी तारीख़ | हज़रत मरयम ﷺ की आज़माइश

हज़रत मरयम बिन्ते इमरान बनी इस्राईल के एक शरीफ घराने में पैदा हुईं, क़ुर्आन में १२ जगह उन का नाम आया है और उन के नाम से एक मुकम्मल सूरह अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़र्माई है, उन के वालिद हज़रत इमरान बैतुलमक़्दिस के इमाम थे। हज़रत मरयम ﷺ बचपन ही से बड़ी नेक सीरत थीं। अल्लाह तआला ने उस वक़्त की तमाम औरतों पर उन्हें फज़ीलत अता फ़र्माई थी, पैदाइश के बाद उन की वालिदा ने अपनी मन्नत के मुताबिक़ उन के ख़ालू हज़रत ज़करिया ﷺ की कफालत में बैतुलमक़्दिस की इबादत के लिये वक़्फ कर दिया और ऊँची जगह पर एक कमरा उन की इबादत के लिये ख़ास कर दिया। वह हर वक़्त इबादत और ज़िक्रे इलाही में मसरूफ रहतीं, अल्लाह तआला ने ग़ैबी तौर पर बग़ैर मौसम के उम्दा फलों के ज़रिये उन की नशोनुमा और परवरिश फ़र्माई। जब हज़रत मरयम ﷺ बड़ी हो गईं, तो अल्लाह तआला ने फरिश्ते के ज़रिये बशारत दी के तुम्हें एक बेटा अता किया जाएगा, जिस का नाम ईसा ﷺ होगा, वह दुनिया व आख़िरत में बुलन्द मर्तबे वाला होगा और बचपन ही में लोगों से बात कर के आप की पाक दामनी की शहादत देगा।

नंबर ②: अल्लाह की कुदरत | जिस्म में गुर्दे की अहेमियत (Kidney)

इन्सान के ख़ून में हर लमहा ज़हरीले माद्दे (Toxin) की मिक़दार बढ़ती रहती है। गुर्दे उन ज़हरीले माद्दों को पेशाब के ज़रिये ख़ारिज कर के बदन को साफ ख़ून सपलाई करते रहते हैं, इस तरह गुर्दे २४ घंटे में कई लीटर ख़ून से ज़हरीला माद्दा निकाल कर पूरे जिस्म की हिफाज़त करते रहते हैं ख़ुदा न ख़्वास्ता अगर यह गुर्दे काम करना बंद कर दें, तो भारी दौलत ख़र्च कर के बड़ी बड़ी मशीनों के ज़रिये ख़ून साफ कर के वह फायदा हासिल नहीं होता, जो गुर्दों के क़ुदरती अमल से होता है। गुर्दों के ज़रिये ख़ून से ज़हरीले माद्दों को ख़ारिज कर के जिस्मे इन्सानी की हिफाज़त करना अल्लाह की कितनी बड़ी क़ुदरत है।

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में | बग़ैर वुज़ू के नमाज़ नहीं होती

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : " इस्लाम में उस शख़्स का कुछ भी हिस्सा नहीं जो नमाज़ न पढ़ता हो और वुज़ू के बग़ैर नमाज़ नहीं होती।"

[तरग़ीब व तरहीब : ७७१, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में | दरवाज़े पर सलाम करना

रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी के घर के दरवाज़े पर आते, तो बिल्कुल सामने खड़े न होते, बल्के दाईं तरफ या बाईं तरफ तशरीफ फ़र्मा होते और "अस्सलामु अलैकुम" फ़र्माते।

[अबू दाऊद : ५१८६, अन अब्दुल्लाह बिन बुस्र ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह का ज़िक्र करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : " जो शख़्स सुबह को सौ मर्तबा और शाम को सौ मर्तबा ﴿ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ ﴾ पढे, उस के गुनाहों की मग़फिरत कर दी जाएगी ख़्वाह उस के गुनाह समुन्दर के झाग से जियादा हों।"
[मुस्तदरक हाकिम : १९०६, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	महेर अदा न करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : " जिस आदमी ने किसी औरत से महेर के बदले निकाह किया और उस का महेर अदा करने का इरादा न हो, तो वह ज़ानी के हुक्म में है और जिस आदमी ने किसी से क़र्ज़ लिया फिर उस का क़र्ज अदा करने की निय्यत न हो, तो वह चोर के हुक्म में है।"
[तरग़ीब : २६०२, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	माल की चाहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा जिस में (लोगों को अपने) माल की ज़कात देना बहुत भारी गुज़रेगा।"
[मोअ्जमे कबीर : १३७०८, अन अदी बिन हातिम ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	मुत्तक़ी और परहेज़गारों का इनाम

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है :"जो लोग परहेज़गारी और तक़वा के पाबंद थे, अल्लाह तआला उन को कामयाबी के साथ जहन्नम से बचालेगा, न उन को किसी तरह की तकलीफ पहुँचेगी और न वह कभी ग़मग़ीन होंगे।"
[सूर-ए-ज़ुमर : ६१]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मिस्वाक के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : " मिस्वाक मुंह की सफाई और ख़ुदा की रज़ामंदी का ज़रिया है।"
[नसई : ५, अन आयशा ؓ]

फायदा : अल्लामा इब्ने क़य्यिम رحمه الله मिस्वाक के फवाइद में लिखते हैं, यह दाँतों में चमक पैदा करती है, मसूढ़ों में मज़बूती और मुँह की बदबू ख़त्म करती है, जिस से दिमाग़ पाक व साफ हो जाता है, यह बलग़म को काटती है, निगाह को तेज़ और आवाज़ को साफ करती है; और भी इस के बहुत से फवाइद हैं।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है :"अगर किसी बात पर तुम में इख़्तेलाफ हो जाए, तो अल्लाह और उस के रसूल के हुक्म की तरफ रुजूअ करो, अगर तुम अल्लाह और क़यामत के दिन पर ईमान रखते हो, यह तरीक़ा तुम्हारे लिये बेहतर है और अच्छा भी है।"
[सूर-ए-निसा : ५९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत ईसा ﷺ की पैदाइश

क़ुर्आन में अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा ﷺ के नामों का ज़िक्र मुख़्तलिफ़ एतेबार से ५९ मर्तबा किया है। उन की पैदाइश अल्लाह तआला की क़ुदरत की एक बहुत बड़ी निशानी है। एक दिन हज़रत मरयम ﷺ किसी ज़रूरत की वजह से बैतुलमक़्दिस की मशरिक़ी जानिब गई हुई थीं, के अचानक एक फ़रिश्ते ने यह ख़ुश्ख़बरी दी, के अल्लाह तआला तुम को एक बेटा अता फ़र्माएगा, जिस का नाम ईसा बिन मरयम होगा। हज़रत मरयम ﷺ ने कहा: मेरी तो शादी भी नहीं हुई, लड़का कैसे होगा? फ़रिश्ते ने कहा : अल्लाह का फ़ैसला ऐसा ही है और यह अल्लाह के लिये आसान है। फिर ऐसा ही हुआ, के हज़रत ईसा ﷺ बग़ैर बाप के पैदा हुए। जब लोगों ने देखा, तो बहुत तअज्जुब किया और कहा : मरयम! तुम ने यह कितना बड़ा गुनाह किया है? हज़रत मरयम ﷺ ने कोई जवाब नहीं दिया, बल्के बच्चे की तरफ़ इशारा कर दिया और बच्चा बोल पड़ा, "मैं अल्लाह का बंदा हूँ, उस ने मुझे किताब दी है और नबी बनाया है, मैं जहाँ कहीं भी रहूँ ख़ुदा ने मुझे बाबरकत बनाया है और आख़री दम तक अल्लाह ने मुझे नमाज़ पढ़ने और ज़कात अदा करने का हुक्म दिया है और अपनी माँ का फ़र्मांबरदार बनाया है। मेरी पैदाइश, मेरी वफ़ात और फिर दोबारा ज़िन्दा होना मेरे लिये ख़ैर व बरकत और सलामती का ज़रिया है।" बच्चे की ऐसी बातें सुन कर क़ौम हैरान रह गई और हज़रत मरयम ﷺ से उन की बदगुमानी अक़ीदत में बदल गई।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — ग़ज़्व-ए-मूता में शहीदों के मुतअल्लिक़ ख़बर देना

मुल्के शाम में मूता नामी एक मक़ाम पर जंग हो रही थी, हज़रत अनस ؓ फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने (मदीना में रहते हुए) यके बाद दीगरे तीन सहाबी ؓ के मूता में शहीद होने की ख़बर दी, जब के वहाँ से अभी तक कोई ख़बर नहीं आई थी और फिर फ़र्माया : उन के बाद झंडा, अल्लाह की तलवार ने उठाया और अल्लाह ने उन के हाथों मुसलमानों को दुश्मनों पर फ़तह नसीब फ़र्माई।

[बुख़ारी : ४२६२, अन अनस ؓ]

फ़ायदा : अल्लाह की तलवार से मुराद हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ؓ हैं, उन को यह लक़ब आप ﷺ ने दिया था।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — बीवी की वरासत में शौहर का हिस्सा

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है :"तुम्हारे लिये तुम्हारी बीवियों के छोड़े हुए माल में से आधा हिस्सा है, जब के उन की कोई औलाद न हो और अगर उन की औलाद हो, तो तुम्हारी बीवियों के छोड़े हुए माल में तुम्हारे लिये चौथाई हिस्सा है (तुम्हें यह हिस्सा) उन की वसिय्यत और क़र्ज़ अदा करने के बाद मिलेगा।"

[सूर-ए-निसा : १२]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	मुसीबत से नजात की दुआ

जब कोई मुसीबत या आज़माइश में पड़ जाए, तो इस दुआ को ज़ियादा से ज़ियादा पढ़े :

﴿لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحٰنَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ﴾

तर्जमा : (इलाही) आप के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, आप (तमाम ऐबों) से पाक हैं, बेशक मैं ही कुसूरवार हूँ। [सूर-ए-अम्बिया : ८७]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	मुलाक़ात के वक़्त सलाम व मुसाफा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब दो मुसलमान मुलाक़ात के वक़्त मुसाफा करते हैं और अल्लाह तआला की तारीफ करते हैं और अल्लाह तआला से मग़फिरत तलब करते हैं (यानी मुसाफा के वक़्त ((يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ)) और मिज़ाज पुरसी के वक़्त ((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ)) कहते हैं) तो उन की मग़फिरत कर दी जाती है।" [अबू दाऊद : ५२११, अन बरा बिन आज़िब ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	कुर्आन को छुपाना और बदलना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग अल्लाह तआला की किताब के अहकाम को छुपा कर दुनियवी माल व दौलत हासिल करते हैं, वह लोग अपने पेटों में आग भर रहे हैं। क़यामत के दिन अल्लाह तआला न उन से कलाम करेगा और न उन को (गुनाहों से) पाक करेगा और उन को दर्दनाक अज़ाब होगा।" [सूर-ए-बक़रह : १७४]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की चीज़ें

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम लोगों को जो कुछ दिया गया है, वह सिर्फ दुनियवी ज़िन्दगी में बरतने का सामान है और जो कुछ (अज्र व सवाब) अल्लाह के पास है, वह इस (दुनिया) से कहीं ज़ियादा बेहतर और बाक़ी रहने वाला है, जो सिर्फ मोमिनीन और अपने रब पर भरोसा रखने वालों के लिये है।" [सूर-ए-शूरा : ३६]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	दोज़ख की गहराई

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "एक पत्थर को जहन्नम के किनारे से फेंका गया, वह सत्तर साल तक उस में गिरता रहा, मगर उस की गहेराई तक नहीं पहुँच सका।" [मुस्लिम : ७४३५, अन उतबा बिन ग़ज़वान ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बड़ी बीमारियों से हिफाज़त

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स हर महीने तीन दिन सुबह के वक़्त शहद को चाटेगा, तो उसे कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी।" [इब्ने माजा : ३४५०, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम में से किसी को छींक आए और ((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ)) कहे, तो तुम उस के लिये ((يَرْحَمُكَ اللّٰهُ)) कहो और अगर वह ((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ)) न कहे, तो तुम ((يَرْحَمُكَ اللّٰهُ)) न कहो।" [मुस्लिम : ७४८८, अन अबी मुसा ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर १: इस्लामी तारीख़ | हज़रत ईसा عليه السلام के हालात

अगरचे हज़रत ईसा عليه السلام की गवाही से बनी इस्राईल के सामने हज़रत मरयम رضي الله عنها की पाक दामनी ज़ाहिर होगई और उन की बदगुमानी दूर हो गई और हज़रत ईसा عليه السلام की तरबियत व परवरिश माँ की शफक़त में होती रही मगर फिर भी क़ौम के शरीर लोगों की तरफ से उन की पैदाइश पर बदगुमानी और हज़रत ज़करिया عليه السلام की मज़लूमाना शहादत को हज़रत मरयम رضي الله عنها देख चुकी थीं। इस लिये वह क़ौम और "हैरूद" बादशाह के डर से अपने बेटे हज़रत ईसा عليه السلام को लेकर अपने रिश्तेदारों के यहाँ मिस्र चली गईं, और बारा साल वहाँ रहने के बाद फिर उन को ले कर बैतुलमक़्दिस वापस आगईं, इस तरह जब हज़रत ईसा की उम्र ३० साल हो गई, तो अल्लाह तआला ने क़ौम की हिदायत व इसलाह के लिये नुबुव्वत अता फ़र्मा कर आसमानी किताब "इनजील" नाज़िल फ़र्माई। उन्होंने कुफ़्र व शिर्क के ख़िलाफ अपनी दावत व तौहीद का आग़ाज़ किया। हज़रत ईसा عليه السلام की शकल व सूरत के बारे में हुज़ूर ﷺ ने फर्माया : "मेराज के मौक़े पर मेरी मुलाक़ात दूसरे आसमान पर हज़रत ईसा عليه السلام से हुई, तो मैं ने उन को दर्मियानी क़द, सुर्ख़ रंग, साफ शफ्फाफ बदन और काँधे तक लटकी हुई ज़ुल्फों की हालत में देखा।"

नंबर २: अल्लाह की क़ुदरत | छूई मूई का पौदा (शर्मीली)

अल्लाह तआला ने छूई मूई के इस छोटे से पौदे के अन्दर एहसास व शुऊर का माद्दा रखा है, अगर कोई आदमी इसे छूता है तो उस की पत्तियाँ सुकड़ जाती हैं, फिर थोड़ी देर बाद वह पत्तियाँ फिर से फैल कर तन जाती हैं। आख़िर छूई मूई के इस पौदे में शर्म व हया का माद्दा किस ने पैदा किया है? यह अल्लाह ही की क़ुदरत है जिस ने इस पौदे के अन्दर एहसास व शुऊर का माद्दा पैदा किया है।

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में | क़ज़ा नमाज़ों की अदाएगी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो कोई नमाज़ पढ़ना भूल गया या नमाज़ के वक़्त सोता रह गया, तो (उस का कफ्फारा यह है के) जब याद आए उसी वक़्त पढ़ ले।" [तिर्मिज़ी : १७७, अन अबी क़तादा رضي الله عنه]

फायदा : अगर किसी शख़्स की नमाज़ किसी उज़्र की वजह से छूट जाए या सोने की हालत में नमाज़ का वक़्त गुज़र जाए, तो बाद में उस की क़ज़ा पढ़ना फर्ज़ है।

नंबर ४: एक सुन्नत के बारे में | घर के काम में हाथ बटाना

हज़रत आयशा رضي الله عنها से पूछा गया के घर में हुज़ूर ﷺ क्या काम करते थे? हज़रत आयशा رضي الله عنها ने फ़र्माया : आप ﷺ घर के काम में हाथ बटा दिया करते और जब नमाज़ का वक़्त हो जाता, तो नमाज़ के लिये चले जाते। [बुख़ारी : ६७६]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अपनी ग़लती पर शर्मिन्दा होना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस शख़्स ने कोई ग़लती की या कोई गुनाह किया फिर उस पर शर्मिन्दा हुआ, तो यह शर्मिन्दगी उस के गुनाह का कफ्फारा है।"

[बैहक़ी फी शोअबिल ईमान : ६७७४, अन अब्दुल्लाह बिन मसऊद ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	चन्द गुनाह लानत का सबब

रसूलुल्लाह ﷺ ने गोदने वाली और गुदवाने वाली औरत पर और सूद खाने वाले और सूद खिलाने वाले पर लानत फ़र्माई है और कुत्ते के ख़रीदने, बेचने और ज़िना की कमाई से मना फ़र्माया है और तसवीर बनाने वालों पर लानत फ़र्माई है।

[बुख़ारी : ५३४७, अन अबी जुहैफ़ा ؓ]

नोट: बदन पर हमेशा रहने वाली पेंनटींग को गुदवाना कहते हैं।

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया के लालची के लिये हलाकत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "हलाक हो गया दिरहम व दनानीर और सियाह और धारी दार (क़ीमती) कपड़े का (लालची) बन्दा के अगर उस को मिल जाए तो राज़ी होता है और अगर न मिले तो राज़ी नहीं होता।"

[बुख़ारी : २८८६, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	इन्सान व जिन्नात पर काफिरों का गुस्सा

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "(अज़ाब में गिरफतार हो कर) काफिर लोग कहेंगे, ऐ हमारे परवरदिगार ! हमें इन्सान व जिन्नात में से वह लोग दिखा दीजिये जिन्होंने हम को गुमराह किया था के हम उन को अपने पैरों तले रौंद डालें ताके वह ख़ूब ज़लील हों।"

[सूर-ए-हा मीम सज्दा : २९]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	अंजीर से बवासीर और जोड़ों के दर्द का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अंजीर खाओ, क्योंकि यह बवासीर को ख़त्म करता है और जोड़ों के दर्द में मुफीद है।"

[कंज़ुल उम्माल : २८२७६, अन अबी ज़र ؓ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "नेकी और परहेज़गारी के कामों में एक दूसरे की मदद किया करो, गुनाह और ज़ुल्म व ज़ियादती में किसी की मदद न करो और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह तआला का अज़ाब बहुत सख़्त है।"

[सूर-ए-माइदा : २]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	मय्यित के घर वालों को खाना भेजना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर ﵁ के शहीद होने की ख़बर आई तो आप ﷺ ने फ़र्माया : "जाफर के घर वालों के लिये खाना तय्यार किया जाए क्योंकि उन्हें ऐसा हादसा पेश आ गया है जिस की वजह से खाने की तरफ तवज्जोह नहीं कर सकेंगे।" [अबू दाऊद : ३१३२]

फ़ायदा : मय्यित के घर वालों को खाना वग़ैरा पहुँचाना बाइसे अज्र व सवाब है।

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	बुख़्ल व कन्जूसी करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग खुद भी कन्जूसी करते हैं और दूसरों को भी कन्जूसी करना सिखाते हैं और जो कुछ अल्लाह तआला ने अपने फज़ल से उन को दिया है उस को छुपाते हैं और हम ने ऐसे नाफ़र्मानों के लिये ज़लील करने वाला अज़ाब तय्यार कर रखा है।" [सूर-ए-निसा : ३७]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की चीज़ें यहीं रह जाएंगी

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "(दुनिया की) यह सारी चीज़ें दुनियवी ज़िन्दगी में ही बरतने के लिये हैं (आख़िरत में यह सब काम नहीं आएगा) और आख़िरत (और उस की नेअ्मतें) तेरे रब के यहां उनहीं के लिये हैं जो ड़रते हैं।" [सूर-ए-ज़ुख़रुफ़ : ३५]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जन्नती अल्लाह का दीदार करेंगे

रसूलुल्लाह ﷺ ने लैलतुल बद्र में चाँद को देखा और फर्माया : "तुम लोग अपने रब को इस तरह देखोगे जिस तरह इस चाँद को देख रहे हो, तुम उन को देखने में किसी क़िस्म की परेशानी महसूस नहीं करोगे।" [बुख़ारी : ५५४, अन जरीर ﵁]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मुनक़्क़ा (Black Currant) से इलाज

हज़रत अबू हिन्द दारी ﵁ कहते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में मुनक़्क़ा का तोहफा एक बन्द थाल में पेश किया गया, आप ﷺ ने उसे खोल कर इर्शाद फर्माया : अल्लाह का नाम ले कर खाओ, मुनक़्क़ा बेहतरीन खाना है जो पट्ठों को मज़बूत करता है, पुराने दर्द को ख़त्म करता है, गुस्से को ठंडा करता है और मुंह की बदबू को दूर करता है, बलग़म को निकालता है और रंग को निखारता है।

[तारीख़े दिमश्क़ लि इब्ने असाकिर जिल्द : २१, सफ़ा ६०]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया के अल्लाह तआला फर्माता है : मेरे बन्दे ! बे शक जब तक तू मेरी इबादत करता रहेगा और मुझ से (मग़फिरत की) उम्मीद रखेगा, मैं तुझ को माफ करता रहूँगा, ऐ मेरे बन्दे ! अगर तु ज़मीन भर कर गुनाह के साथ भी मुझ से इस हाल में मिले के मेरे साथ किसी को शरीक न किया हो, तो मैं भी ज़मीन भर मग़फिरत के साथ तुझ से मिलूँगा : यानी ज़मीन भर गुनाहों को माफ कर दूँगा।

[मुस्नदे अहमद : २०८६१, अन अबी ज़र ﵁]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

⑦ रबीउल अव्वल

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत ईसा ﷺ के मुअजिज़ात और खुसूसियात

जब हज़रत ईसा ﷺ ने बनी इस्राईल को तौहीद की दावत दी और क़ौम ने आप को झुटलाया, तो अल्लाह तआला ने उन की नुबुव्वत की तसदीक़ के लिये बहुत से मुअजिज़ात अता फ़र्माए, जिन का तज़केरा कुर्आने पाक में भी आया है। मसलन अल्लाह तआला ने उन को बग़ैर बाप के पैदा फ़र्माया और पैदाइश के बाद उन्होंने गोद ही में अपनी माँ की पाक दामनी की गवाही दी, अल्लाह के हुक्म से वह मुर्दों को ज़िन्दा और पैदाइशी अंधों को देखने वाला कर देते, मिट्टी से परिन्दे बना कर फूँक मार कर उड़ा देते, कोढ़ के मरीज़ों पर हाथ फेर कर अच्छा कर देते, लोगों के घरों में रखी हुई चीज़ों के बारे में खबर बता दिया करते थे और हवारियों की फ़र्माइश पर आप की दुआ से आसमान से खाने का दस्तरख्वान नाज़िल हुआ, आख़िर में अल्लाह तआला ने दुश्मनों से हिफाज़त करते हुए उन को ज़िन्दा आसमान पर उठा लिया, और आखरी ज़माने में क़यामत के क़रीब आसमान से उतरेंगे और दज्जाल को क़त्ल करेंगे।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — तोता

अल्लाह तआला ने बाज़ परिन्दों को बड़ी खुसूसियत अता फ़र्माई है, उन में से एक तोता भी है। यह ज़ियादा तर हरे रंग का होता है, उस की आवाज़ से लुत्फ अन्दोज़ होने के लिये लोग उसे अपने घरों में पालते हैं, यह बड़ा ख़ुश आवाज़, निहायत ही समझदार और नक़्ल उतारने की मुकम्मल सलाहियत रखता है, लोग उस के सामने आइना रख कर उसे सिखाते हैं, थोड़ी सी तालीम से वह बात चीत करने लगता है, आख़िर इस छोटे से परिन्दे को सीखने और नक़्ल उतारने की सलाहियत किस ने अता फ़र्माई। बेशक यह अल्लाह ही की कुदरत है, जो परिन्दों को इन्सान की बोली बोलने की कुदरत देता है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — हर हाल में नमाज़ पढ़ो

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "नमाज़ खड़े हो कर अदा करो, अगर ताक़त न हो, तो बैठ कर अदा करो और अगर इस पर भी कुदरत न हो, तो पहलू के बल लेट कर अदा करो।"

[बुख़ारी : १११७, अन इमरान बिन हुसैन ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — सफर से वापसी का सुन्नत तरीक़ा

रसूलुल्लाह ﷺ सफ़र से वापस आने के बाद पहले मस्जिद जा कर दो रकात नमाज़ अदा करते, और लोगों से मुलाक़ात फ़र्माते (उस के बाद घर तशरीफ़ ले जाते।)

[अबू दाऊद : २७७३, अन कअब बिन मालिक ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह की ज़ात से मग़फिरत का यक़ीन रखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया के अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जिस आदमी ने यह यक़ीन कर लिया के मैं (अल्लाह) गुनाहों की मग़फिरत पर क़ादिर हूँ, तो मैं उस की मग़फिरत कर दूँगा और मुझे कोई परवा नहीं, जब तक वह मेरे साथ शिर्क न करे।" [मुस्तदरक हाकिम : ७६७६, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	सूद खाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "आदमी का जानबूझ कर सूद का एक दिरहम भी खाना ३६ मर्तबा ज़िना करने से ज़ियादा सख़्त गुनाह है।" [मुस्नदे अहमद : २१४५०, अन अब्दुल्लाह बिन हन्ज़ला ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की क़द्र अल्लाह के नज़दीक

रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फर्माया : "अगर दुनिया की क़ीमत अल्लाह तआला के नज़दीक मक्खी के पर के बराबर भी होती, तो अल्लाह तआला किसी काफिर को एक घूँट पानी न पिलाता।"

[तिर्मिज़ी : २३२०, अन सहल बिन सअद ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले जन्नत से अल्लाह की दोस्ती

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "(मोमिनीन से कहा जाएगा) हम दुनिया की ज़िन्दगी में भी तुम्हारे रफीक़ थे और आख़िरत में भी तुम्हारे रफीक़ रहेंगे और जन्नत में तुम्हारे लिये हर वह चीज़ मौजूद होगी, जो तुम्हारा दिल चाहेगा और वहाँ जो तुम माँगोगे, वह तुम को मिलेगा। यह बख़्शने वाले मेहरबान की तरफ से बतौरे मेहमान नवाज़ी के होगा।" [सूर-ए-हा मीम सज्दा : ३१ ता ३२]

नंबर (९): कुर्आन से इलाज	कुर्आन हर मर्ज़ के लिये शिफा और रहमत है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है :

﴿ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴾

तर्जमा : हम कुर्आन में ऐसी चीज़ें नाज़िल करते हैं, जो ईमान वालों के हक़ में शिफा व रहमत हैं।

[सूर-ए-बनी इस्राईल : ८२]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ लोगो ! उस रब की इबादत करते रहो, जिस ने तुम्हें और तुम से पहले लोगों को पैदा किया, ताके तुम परहेज़गार बन जाओ।" [सूर-ए-बक़रह : २१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत ईसा ﷺ का ज़िन्दा आसमान पर उठाया जाना

हज़रत ईसा ﷺ ने बनी इस्सराईल की इस्लाह के लिये शहर शहर और गाँव गाँव चल कर अल्लाह के दीन को फैलाने की जद्दो जहद शुरू की। आप की इस दावत से मुहब्बत व अक़ीदत में दिन ब दिन इज़ाफा होने लगा। यहुदी क़ौम इस दावत व शोहरत को अपने लिये बड़ा ख़तरा समझने लगी, इस लिये उन्होंने बादशाहे वक़्त को अपना हम खयाल बनाने के लिये हज़रत ईसा ﷺ पर इल्ज़ाम लगाया के यह शख़्स तौरात को बदल कर लोगों को बद दीन बनाना चाहता है, तो इस मुशरिक बादशाह ने हज़रत मसीह ﷺ को गिरफ्तार कर के सूली पर चढ़ाने का हुक्म दे दिया। एक मर्तबा आप ﷺ अपने हवारियों (यानी अहले ईमान) के हमराह एक मकान में जमा थे, तो क़त्ल के इरादे से यहूदियों ने उस घर का मुहासरा कर लिया सारे हवारी अपनी जान बचा कर भागे और यहूदियों ने अपने एक आदमी को उन्हें कैद करने के लिये अन्दर भेजा, तो अल्लाह तआला ने पहले ही हज़रत ईसा ﷺ को आसमान पर उठा लिया और अन्दर जाने वाले शख़्स को हज़रत ईसा ﷺ का हम शक्ल बना दिया, यहूदियों ने धोके में अपने ही आदमी को मसीह ﷺ समझ कर सूली पर चढ़ा दिया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — ख़त की इत्तेला देना

हज़रत अली ؓ फर्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे, ज़ुबैर और मिक़दाद ؓ को हुक्म दिया के तुम रौज़-ए-ख़ाख तक जाओ, वहाँ एक औरत मिलेगी उस के पास एक ख़त है, उस को ले आओ, चुनान्चे हम तीनों घोड़े दौड़ाते हुए, उस औरत के पास पहुँच गए और उस से कहा : ख़त निकाल ! उस ने कहा मेरे पास कोई ख़त नहीं है। हम ने कहा : ख़त निकाल वरना हम तेरी सख़्त तलाशी लेंगे, चुनान्चे मजबूर हो कर उस ने बालों के जूड़े में से ख़त निकाल कर दिया। इस ख़त में मक्का के मुशरिकों को रसूलुल्लाह ﷺ की नक्ल व हरकत में आगाह किया गया था।

[बुख़ारी : ४२७४, अन अली ؓ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — चंद बातों पर ईमान लाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तक कोई बन्दा इन चार बातों पर ईमान न लाए, तो वह मोमिन नहीं हो सकता। (१) इस बात की गवाही दे के अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लाएक़ नहीं। (२) (इस की भी गवाही दे के) मैं अल्लाह का रसूल हूँ उस ने मुझे हक़ के साथ भेजा है। (३) मरने और फिर दोबारा ज़िन्दा होने का यक़ीन रखे। (४) तक़दीर पर ईमान लाए।" [तिर्मिज़ी : २१४५, अन अली ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — फौरन इस्तेख़ारा करने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ को जब कोई काम फौरन दर पेश होता, तो यह दुआए इस्तेख़ारा पढ़ते :
((اَللّٰهُمَّ خِرْ لِيْ وَاخْتَرْ لِيْ)) **तर्जमा :** ऐ अल्लाह मुझे ख़ैर अता फ़र्मा और मेरे दिल में ख़ैर की बात डाल दे।

[तिर्मिज़ी : ३५१६, अन अबी बक्र सिद्दीक़ ؓ]

ख़ुलासा : फौरन इस्तेख़ारा करना हो तो यह दुआ पढ़ कर दिल की तरफ मुतवज्जेह हो और जो बात दिल में आए उस को इख़्तियार करे।

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	गुनाह से तौबा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब बन्दा तौबा कर लेता है तो अल्लाह तआला किरामन कातिबीन को उस के गुनाह को भुला देते हैं और उस के आज़ा और जवारेह को भी भुला देते हैं हत्ता के ज़मीन के टुकड़ों को भी अल्लाह तआला भुला देते हैं यहां तक के वह क़यामत के दिन अल्लाह तआला से इस हाल में मिलेगा के उस के ख़िलाफ अल्लाह तआला की बारगाह में कोई गवाह नहीं होगा।"

[तरगीब : ४४५९, अन अनस ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	दिखलावे के लिये ख़र्च करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "(वह लोग भी अल्लाह तआला को नापसन्द हैं) जो अपना माल सिर्फ लोगों को दिखाने के लिये ख़र्च करते हैं और न वह अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न यौमे आख़िरत पर और जिस का साथी शैतान हो गया, तो समझ लो के वह बहुत ही बुरा साथी है।"

[सूर-ए-निसा : ३८]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	नाफ़र्मानों से नेअ्मतें छीन ली जाती हैं

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "वह नाफ़र्मान लोग छोड़ गए, कितने ही बाग, चश्मे, खेतियाँ और उम्दा मकानात और आराम के सामान जिन में वह मज़े किया करते थे, इसी तरह हुआ और उन सब चीज़ों का वारिस हम ने एक दूसरी क़ौम को बना दिया। फिर उन लोगों पर न तो आसमान रोया और न ही ज़मीन और न ही उन को मोहलत दी गई।" [सूर-ए-दुख़ान : २५ ता २९]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	दोज़ख़ियों का सब से हलका अज़ाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अहले दोज़ख़ में सब से हलका अज़ाब उस शख़्स को होगा जिस की दोनों जूतियाँ और उस की डोरियाँ आग की होंगी, जिस की वजह से उस का दिमाग़ हाँडी की तरह खौलता होगा वह समझेगा के मुझे ही सब से ज़ियादा अज़ाब हो रहा है, हालाँकि उसे ही सब से हलका अज़ाब हो रहा होगा।" [मुस्लिम : ५१७, नुअ्मान बिन बशीर ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	गाय के दूध का फायदा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "गाय का दूध इस्तेमाल किया करो, क्योंकि वह हर क़िस्म के पौदों को चरती है (इस लिये) उस के दूध में हर बीमारी से शिफा है।" [मुस्तदरक : ८२२४, अन इब्ने मसऊद ﷺ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "इल्मे वरासत सीखो और दूसरों को इस की तालीम दो, क्योंकि यह आधा इल्म है। यह भुला दिया जाएगा। उम्मत से सब से पहले इसी (इल्म) को उठाया जाएगा।"

[इब्ने माजा : २७१९, अन अबी सईद ख़ुदरी ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१) रबीउल अव्वल

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत ईसा عليه السلام का आसमान से उतरना

हज़रत ईसा عليه السلام आसमान पर ज़िन्दा हैं। वह क़यामत के क़रीब दो फ़रिश्तों के कन्धों पर सहारा लगाए दिमश्क़ की जामे मस्जिद के मश्रिक़ी मिनारे पर उतरेंगे, लोग आप को सीढ़ी के ज़रिये नीचे उतारेंगे, फ़ज्र की नमाज़ इमाम मेहदी के पीछे अदा करेंगे और सलीब को तोड़ कर शिर्क की जड़ ख़त्म कर के ईसाइयों के इस बातिल अक़ीदे की तरदीद करेंगे के ईसा عليه السلام सूली पर चढ़ कर पूरी क़ौम के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन गए हैं। उस के बाद ख़िन्ज़ीर को क़त्ल करेंगे। और मुसलमानों का लश्कर ले कर दज्जाल को क़त्ल करने के लिये निकलेंगे। उस वक़्त वह बैतुल मुक़द्दस का मुहासरा किये हुए होगा। वह हज़रत ईसा عليه السلام को देखते ही जान बचा कर भागेगा। मगर आप उस को बैतुल मुक़द्दस के क़रीब ''बाबे लुद'' पर क़त्ल कर के पूरी दुनिया में अद्ल व इन्साफ़ क़ाइम कर देंगे। जिस की वजह से माल व दौलत की कसरत हो जाएगी, ज़ुल्म व सितम का ऐसा ख़ात्मा हो जाएगा के भेड़िया और बक्री एक घाट पर पानी पियेंगे। आप शरीअते मुहम्मदिया के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारेंगे, शादी के बाद औलाद भी होगी, तक़रीबन चालीस साल दुनिया में ज़िन्दा रह कर वफ़ात पाएंगे, इस्लामी अहकाम के मुताबिक़ तज्हीज़ व तक्फ़ीन होगी और मदीना मुनव्वरा में हुज़ूर ﷺ के पहलू में दफ़न होंगे।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — ज़मीन की कशिश

अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से सिर्फ़ दो दिन में ज़मीन बनाई? इस के और फ़ज़ा के दर्मियान एक हद तक ज़मीन की कशिश रखी है, जिस की वजह से ज़मीन हर चीज़ को अपनी तरफ़ खींचती है, मगर इस कशिश के अन्दर ख़ास तवाज़ुन रखा गया है के न हर चीज़ को अपने अन्दर जज़्ब कर सके और न इस तरह आज़ाद छोड़ दे के फ़ज़ा में चली जाए, आख़िर मुनासिब अन्दाज़ में ज़मीन के अन्दर हर चीज़ को अपनी तरफ़ खींचने की सलाहियत किस ने पैदा की, बिलाशुबा अल्लाह तआला ही ने अपनी क़ुदरत से इस के अन्दर यह कशिश रखी है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — वालिदैन के साथ एहसान का मामला करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम्हारे रब ने फ़ैसला कर दिया है के अल्लाह के अलावा किसी और की इबादत न करो और वालिदैन के साथ एहसान का मामला करो।" [सूर-ए-बनी इस्राईल : २३]

फ़ायदा : माँ बाप की ख़िदमत करना और उन के साथ अच्छा बरताव करना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — हर अच्छे कामों को दाहनी तरफ़ से करना

हज़रत आयशा رضي الله عنها फ़र्माती हैं : रसूलुल्लाह ﷺ को जूता पहनना, कंघी करना, तहारत हासिल करना और अपने तमाम (अच्छे) कामों को दाहनी तरफ़ से शुरू करना पसन्द था। [बुख़ारी : १६८]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	मोमिनीन के लिये मग़फिरत मांगना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स मोमिन मर्द और मोमिन औरतों के लिये मग़फिरत तलब करता है अल्लाह तआला उस के लिये हर मोमिन मर्द और मोमिन औरत के इवज़ एक नेकी लिख देते हैं।

[तबरानी फी मुस्नदिश्शामिय्यीन: २१०९, उबादा बिन सामित ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	किसी की ज़मीन ना हक़ लेना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने किसी की नाजाइज़ तौर पर मामूली सी ज़मीन ली, तो उस को सातों ज़मीन का तौक़ पहनाया जाएगा, और उस की फ़राइज़ व नवाफ़िल इबादतें क़बूल न होंगी (के जिस के बदले उस के गुनाह माफ हो जाएँ।)"

[तबरानी फिल औसत : ५३०६ , अन सअ्द बिनअबी वक़्क़ास ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की मिसाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मेरा दुनिया से कोई वास्ता नहीं, मेरी और दुनिया की मिसाल तो बिल्कुल उस मुसाफिर की सी है, जो (सख़्त गर्मी में) किसी पेड़ के साए में आराम करे और फिर उसे छोड़ कर चल दे।"

[तिर्मिज़ी : २३७७, अन इब्ने मसऊद ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	काफिर लोग अज़ाब की तसदीक़ करेंगे

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "वह दिन क़ाबिले ज़िक्र है के जिस दिन काफिर लोग दोज़ख़ के सामने लाए जाएंगे (और पूछा जाएगा) क्या यह दोज़ख़ और उस का अज़ाब बरहक़ नहीं? वह जवाब देंगे : ऐ हमारे रब ! हाँ यह बिल्कुल बरहक़ है। इर्शाद होगा : तो अब अपने कुफ्र के बदले इस अज़ाब का मज़ा चखो।"

[सूर-ए-अहक़ाफ : ३४]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	ख़रबूज़ा के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "खाने से पहले ख़रबूज़े का इस्तेमाल पेट को बिल्कुल साफ कर देता है और बीमारी को जड़ से ख़त्म कर देता है।"

[इब्ने असाकिर : ६/१०२]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो ! इन्साफ पर मज़बूती से क़ाइम रहो और अल्लाह तआला के लिये सच्ची गवाही दो, अगरचे यह गवाही ख़ुद तुम्हारे या तुम्हारे माँ बाप या रिश्तेदारों के ख़िलाफ ही क्यों न हो।"

[सूर-ए-निसा : १३५]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१०) रबीउल अव्वल

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — असहाबुल क़रिया (बस्ती वाले)

सूर-ए-यासीन में अल्लाह तआला ने लोगों की इबरत के लिये एक बस्ती वालों का तज़केरा किया है, उन लोगों के दर्मियान से शिर्क व कुफ्र और शर व फसाद को दूर करने और उन की हिदायत व रहनुमाई के लिये अल्लाह तआला ने पहले दो पैग़म्बरों को भेजा, मगर बस्ती वालों ने नहीं माना और उन की दावत को ठुकरा दिया। अल्लाह तआला ने एक और पैगम्बर को उन के साथ कर दिया। तीनों पैगम्बरों ने वहाँ रहने वालों को यक़ीन दिलाया के हम अल्लाह के पैग़म्बर और रसूल हैं, मगर उस पर भी उन लोगों ने नहीं माना और मज़ाक उड़ाने लगे और मार डालने की धमकी देने लगे। ऐसी हालत में बस्ती के किनारे पर रहने वाले एक नेक आदमी ने आकर कहा के ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अल्लाह के उन पैग़म्बरों की बात को मानो जो तुम्हें हक की राह दिखाते हैं और मैं तो उसी एक ख़ालिक़ व मालिक की इबादत करता हूँ, जिस ने हमें पैदा किया और मरने के बाद उसी की तरफ लौट कर जाना है। लेकिन उन की बात मानने के बजाए गुस्से में आकर क़ौम ने उन्हें शहीद कर डाला, अल्लाह तआला ने उस नेक आदमी को उन की ईमानी जुरअत और पैग़म्बरों की तस्दीक की वजह से जन्नत अता की। वह इस पाकीज़ा मक़ाम को देख कर कहने लगा के काश ! मेरी क़ौम अल्लाह की अता करदा इन नेअ्मतों को देख लेती। फिर जब क़ौम के लोगों ने उन पैगम्बरों की नाफ़र्मानी की और ज़ुल्म व सितम में हद से आगे बढ़ गए, तो अल्लाह तआला ने अज़ाब नाज़िल किया और एक होलनाक चीख़ ने पूरी क़ौम को हलाक कर दिया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — जौ में बरकत

हज़रत नौफल बिन हारिस ने शादी के सिलसिले में रसूलुल्लाह ﷺ से मदद चाही, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने एक औरत से आप का निकाह कर दिया, हज़रत नौफल رضي الله عنه ने (बतौर महर) कोई चीज़ तलाश की, मगर उन को नहीं मिल सकी, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अबू राफे और अबू अय्यूब (दो सहाबी) को अपनी ज़िरह एक यहूदी के पास तीस साअ् जौ के बदले गिरवी रखने भेजा, चुनान्चे वह लोग जौ ले कर आए, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने वह जौ हज़रत नौफल رضي الله عنه को दिये, हज़रत नौफल رضي الله عنه और उन की बीवी ने आधे साल तक उस में से खाया और फिर उस को नाप लिया, तो वह उतने ही थे, जितने शुरू में थे, तो हज़रत नौफल رضي الله عنه ने रसूलुल्लाह ﷺ के सामने उस का ज़िक्र किया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : अगर तुम उस को न नापते, तो तुम उस में से पूरी ज़िन्दगी खाते रहते।

[मुस्तदरक : ५०७५]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सज्द-ए-तिलावत अदा करना

हज़रत इब्ने उमर رضي الله عنه फर्माते हैं : हुज़ूर ﷺ हमारे दर्मियान सज्दे वाली सूरह की तिलावत फ़र्माते तो सज्दा करते और हम लोग भी सज्दा करते, यहाँ तक के हम में से बाज़ को अपनी पेशानी रखने की जगह नहीं मिलती।

[बुख़ारी : १०७५]

नोट : सज्दे वाली आयत तिलावत करने के बाद, तिलावत करने वाले और सुनने वाले पर सज्दा करना वाजिब है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — औलाद के लिये दुआ करना

अगर किसी को औलाद न हो, तो इस दुआ का एहतेमाम करना चहिये :

﴿رَبِّ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا وَأَنتَ خَيْرُ الْوَارِثِينَ﴾ तर्जमा : ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझे अकेला मत छोड़िये और आप तो सब से बेहतर वारिस हैं।

[सूर-ए-अम्बिया : ८९]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	गुनाहों से तौबा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह तआला रात को अपना हाथ फैलाता है, ताके दिन के गुनहगार तौबा करलें और दिन को हाथ फैलाता है ताके रात के गुनहगार तौबा कर लें। यह सिलसिला (क़यामत के करीब) मग़रिब से सूरज तुलूअ होने तक जारी रहेगा।"

[मुस्लिम : ६९८९, अन अबी मूसा अशअरी ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	दीन के ख़िलाफ साज़िश करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "इन ख़यानत करने वाले लोगों की हालत यह है के लोगों से तो परदा करते हैं और अल्लाह तआला से नहीं शरमाते, जब के अल्लाह तआला उस वक़्त भी उन के पास होता है, जब यह रात को ऐसी बातों का मश्वरा करते हैं, जिन को अल्लाह तआला पसन्द नहीं करता और अल्लाह तआला उन की तमाम कारवाइयों को जानता है।" [सूर-ए-निसा : १०८]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की ज़िन्दगी खेल तमाशा है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "यह दुनिया की ज़िन्दगी तो सिर्फ खेल तमाशा है, अगर तुम अल्लाह पर ईमान रखोगे और तक़वा इख़्तियार करोगे, तो वह तुम को तुम्हारा अज्र व सवाब अता फ़र्माएगा और तुम से तुम्हारा माल तलब नहीं करेगा।" [सूर-ए-मुहम्मद : ३६ता ३७]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	दोज़ख़ का दरख़्त

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अगर ज़क़्क़ूम (जो जहन्नम का एक दरख़्त है, इन्तेहाई कड़वा है) उस का एक क़तरा भी दुनिया में टपका दिया जाए,तो उस की कड़वाहट की वजह से तमाम दुनिया वालों का जीना मुशकिल हो जाए, तो अब बताओ उस जहन्नमी का क्या हाल होगा, जिस की ख़ूराक ही ज़क़्क़ूम होगी।"

[तिर्मिज़ी : २५८५, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	तलबीना से इलाज

हज़रत आयशा ؓ बीमार के लिये तलबीना तय्यार करने का हुक्म देती थीं और फर्माती थीं के मैं ने हुज़ूर ﷺ को फर्माते हुए सुना के "तलबीना बीमार के दिल को सुकून पहुँचाता है और रंज व ग़म को दूर करता है।"

[बुख़ारी : ५६८९]

फायदा : जौ (Barley) को कूट कर दूध में पकाने के बाद मिठास के लिये उस में शहद डाला जाता है, उस को तलबीना कहते हैं।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : " ऐ मुसलमान औरतो ! कोई पड़ोसन अपनी पड़ोसन के लिये हदिया देने को हक़ीर न समझे ख़्वाह वह बकरी का खुर ही क्यों न हो।" [बुख़ारी : २५६६, अन अबी हुरैरह ؓ]

ख़ुलासा : पड़ोसियों को आपस में हदिया देते लेते रहना चाहिये और कोई किसी चीज़ को लेने देने में हक़ीर न समझे।

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

११ रबीउल अव्वल

नंबर (१): इस्लामी तारीख — क़ौमे सबा

यमन में दो पहाड़ों के दर्मियान मआरिब नामी शहर में "क़ौमे सबा" आबाद थी, यहाँ के बादशाहों ने उन दोनों पहाड़ों के दर्मियान एक निहायत मज़बूत बन्द (डेम) बनवाया था, जो सद्दे मआरिब के नाम से मशहूर था। यह बन्द शिमाल व जुनूब दोनों तरफ पहाड़ों से आने वाले पानी को रोके रखता था, इस पानी की वजह से उन के दारूलहुकूमत शहरे मआरिब के दोनों जानिब तक़रीबन तीन सौ मुरब्बा मील तक खूब सूरत बाग़ात, हरी भरी खेतियाँ, क़दम क़दम पर खुश्बूदार फूल और उमदा उमदा मेवों के दरख़्त लगे हुए थे, क़ौमे सबा एक ज़माने तक अल्लाह के अहकाम पर अमल करती रही, मगर फिर वह उन नेअ्मतों में पड़ कर एक अल्लाह को भूल गई और कुफ्र व नाफ़र्मानी में मुब्तला हो गई, अल्लाह तआला ने उन की इस्लाह के लिये मुतअद्दद अम्बियाए किराम को भेजा, लेकिन उन लोगों ने किसी नबी की दावत को क़बूल नहीं किया और गुमराही और अल्लाह तआला की नाफ़र्मानी में बढ़ती चली गई, बिलआख़िर अल्लाह तआला ने उन लोगों पर अज़ाब नाज़िल किया और जिस मज़बूत बन्द (डेम) पर उन्हें बड़ा नाज़ था, उस को तोड़ कर पूरे शहर, बाग़ात और खेतों को बरबाद कर दिया, अल्लाह तआला ने क़ुर्आन में उन का तज़केरा करते हुए फ़र्माया : "हम ने (उन लोगों के) कुफ्र व नाफ़र्मानी का यह बदला दिया और हम कुफ्र व नाफ़र्मानी का इसी तरह बदला दिया करते हैं।" [सूर-ए-सबा : १७]

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — जान्दारों के जिस्म में जोड़

अल्लाह तआला ने तमाम जान्दारों के अन्दर मुख़्तलिफ जोड़ बनाए हैं, खुद इन्सान के जिस्म में भी बहुत से जोड़ हैं जिन की वजह से चलने, फिरने, उठने, बैठने में बड़ी सहूलत होती है, अगर यह जोड़ न होते तो हमें चलने फिरने में बड़ी परेशानी होती। जब कभी इन्सान के जिस्म की कोई हड्डी टूट जाती है तो उस को तकलीफ के साथ साथ उस नेअ्मत की क़द्र मालूम होती है। वाक़ई अल्लाह तआला ने जान्दारों के जिस्म में मुख़्तलिफ जोड़ बना कर बड़ा ही एहसान किया है। यह सब अल्लाह की क़ुदरत ही की कारीगरी है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — बाजमात इशा और फज्र की नमाज़ पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स इशा की नमाज़ जमात के साथ पढ़े गोया उस ने आधी रात इबादत की और जो फज्र की नमाज़ जमात से पढ़ ले गोया उस ने सारी रात इबादत की।"

[मुस्लिम : १४९१, अन उस्मान बिन अफ्फान رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — खाने में ऐब न लगाना

हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه ने फर्माया : "रसूलुल्लाह ﷺ खाने में ऐब न लगाते, अगर चाहते, तो उस को खा लेते और अगर उस को ना पसन्द फ़र्माते तो छोड़ देते।" [बुख़ारी : ५४०९]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अपने अज़ीज़ की वफात पर सब्र करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला फर्माता है के जब मैं अपने किसी मोमिन बन्दे से दुनिया वालों में से उस का कोई अज़ीज़ ले लेता हूँ और वह सब्र करता है, तो उस के लिये सिवाए जन्नत के मेरे पास कोई अज्र नहीं है।"

[बुखारी : ६४२४, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	वालिदैन की नाफ़र्मानी करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "हर गुनाह की सज़ा को अल्लाह चाहे तो क़यामत के दिन तक मोअख्खर करता है सिवाए वालिदैन की नाफ़र्मानी की सज़ा के अल्लाह तआला उस की सज़ा मौत से पहले दुनिया ही में चखा देता है।"

[मुस्तदरक : ७२६३, अन अबी बकरा رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	इन्सानों की हिर्स व लालच

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अगर आदमी के पास माल व दौलत की दो वादियाँ हों, तो वह तीसरे की तलाश में रहेगा और आदमी का पेट तो बस क़ब्र की मिट्टी ही भर सकती है।"

[बुखारी : ६४३६, अन इब्ने अब्बास رضي الله عنه]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	जन्नत में कौन जाएगा

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख्स बग़ैर देखे अल्लाह से डरता होगा और रूजूअ होने वाला दिल ले कर हाज़िर होगा उन से (कहा जाएगा के) तुम जन्नत में सलामती के साथ दाखिल हो जाओ यह हमेशा रहने वाला दिन है, उन के लिये वह सब कुछ होगा जो वह चाहेंगे।"

[सूर-ए-क़ाफ़ : ३३ ता ३५]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मेअ्दे की सफाई

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अनार को उस के अन्दरूनी छिलके समेत खाओ, क्योंकि यह मेअ्दे को साफ करता है।"

[मुस्नदे अहमद : २२७२६, अन अली رضي الله عنه]

फायदा : अल्लामा इब्ने क़य्यिम رحمه الله फर्माते हैं के अनार जहाँ मेअ्दे को साफ करता है, वहीं पुरानी खाँसी के लिये भी बड़ा कार आमद फल है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरते रहो और सीधी सच्ची बात किया करो (ऐसा करोगे तो) अल्लाह तआला तुम्हारे काम संवार देगा और तुम्हारे गुनाह बख्श देगा और जिस ने अल्लाह तआला और उस के रसूल का कहना माना, तो उस ने बड़ी कामयाबी हासिल कर ली।"

[सूर-ए-अहज़ाब : ७० ता ७१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

१२ रबीउल अव्वल

नंबर १: इस्लामी तारीख़ — असहाबुल जन्नह (बाग़ वाले)

कुर्आने करीम की सूर-ए-क़लम में एक बाग़ वाले का तज़केरा आया है। यह यमन के एक इलाक़ा "ज़ौरान" का रहने वाला था। अल्लाह तअला ने उस को ख़ूब माल व दौलत से नवाज़ा था, उस के पास एक बहुत बड़ा बाग़ था। अपनी पैदावार का बड़ा हिस्सा ग़रीबों और मिसकीनों पर ख़र्च किया करता था। अपने घर वालों का सालाना ख़र्च निकाल कर बाक़ी माल अल्लाह तआला की राह में सदक़ा कर दिया करता था। जब उस नेक आदमी का इन्तेक़ाल हो गया, तो उस के लड़कों ने कहा के हमारा बाप तो बहुत बेवक़ूफ था के अपनी दौलत ग़रीबों पर लुटा देता था, हम ऐसा नहीं करेंगे और बिल्कुल अंधेरे में फल तोड़ने बाग़ में जाएँगे, ताकि कोई जरूरतमंद आकर हम को तंग न कर सके। अभी उन्होंने यह फैसला किया ही था के अल्लाह तआला ने उन के बाग़ और खेतों को तेज़ और गर्म हवा के ज़रिये रात ही में जला कर राख कर दिया। जब उन लोगों ने वहाँ पहुँच कर बाग़ और खेती की यह हालत देखी तो अफसोस करते रह गए और अपने बुरे फैसले पर बहुत शरमिन्दा हुए। बिलाशुबा ग़रीबों और मिसकीनों का हक़ न देने वालों और खुदा की राह में ख़र्च न करने वालों के साथ अल्लाह तआला का ऐसा ही मामला हुआ करता है।

नंबर २: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — एक ऊक़िया सोने की बरकत

हज़रत सलमान फारसी رضی اللہ عنہ फर्माते हैं : जब मुझे रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरा क़रज़ा अदा करने के लिये सोना दिया, तो मैं ने कहा, या रसूलल्लाह ! इतने से मेरा क़रज़ा कैसे पूरा होगा? तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उस को बोसा दिया और फिर मुझे दिया और फ़र्माया : जाओ अल्लाह तआला इस से तुम्हारा क़रज़ा अदा कर देगा। हज़रत सलमान फर्माते हैं के मैं वह ले कर गया और उस में से वज़न कर के देता रहा, यहाँ तक के मैं ने उस से चालीस ऊक़िया अदा कर दिया। [बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : ४१९, अन सलमान رضی اللہ عنہ]

नोट : एक ऊक़िया तक़रीबन चालीस दिरहम के बक़द्र होता है जो तक़रीबन सवा तीन तोले से कुछ ज़ियादा होगा।

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — परदा करना फ़र्ज़ है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : (ऐ औरतो !) तुम अपने घरों में ठहरी रहा करो और दौरे जाहिलियत की तरह बे परदा मत फिरो। [सूर-ए-अहज़ाब : ३३]

ख़ुलासा : तामम मुसलमान औरतों के लिये ज़रूरी है के जब किसी शदीद ज़रूरत के तहत घर से निकलें, तो अच्छी तरह बदन और चेहरे को ढांक कर परदे का ख़याल रखते हुए बाहर जाएँ, क्योंकि परदा करना तमाम औरतों पर फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	जहन्नम के अज़ाब से बचने की दुआ

दोज़ख के अज़ाब से बचने के लिये इस दुआ का एहतेमाम करना चाहिये, यह नेक बन्दों की दुआ है, जो दोज़ख के अज़ाब से बचने के लिये पढ़ा करते थे।

﴿ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝ إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۝ ﴾

तर्जमा : ऐ हमारे रब ! हम से जहन्नम का अज़ाब दूर रख, क्योंकि उस का अज़ाब पूरी तबाही मचाने वाला है (और) बेशक जहन्नम बुरा ठिकाना और बुरी जगह है। [सूर-ए-फुरक़ान : ६५ ता ६६]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	आँखों की बीनाई चले जाने पर सब्र करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह तआला फर्माता है जब मैं अपने किसी बन्दे को उस की दो महबूब चीज़ों की आज़माइश में डालता हूँ और वह सब्र करता है, तो मैं उन दो महबूब चीज़ों के बदले उसे जन्नत अता करता हूँ, दो महबूब चीज़ों से मुराद दोनों आँखें हैं।" [बुख़ारी : ५६५३, अन अनस ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	मुरतद की सज़ा जहन्नम है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "यक़ीनन जो लोग ईमान लाए, फिर काफिर हो गए, फिर ईमान लाए, फिर काफिर हो गए, फिर अपने कुफ्र में बढ़ते ही चले गए, तो ऐसे लोगों को अल्लाह तआला हरगिज़ नहीं बख़्शेगा और उन को सीधी राह भी नहीं दिखाएगा।" [सूर-ए-निसा : १३७]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया ही को अपना मक़सद बनाने वाले

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "आप ऐसे शख़्स से अपना ख़याल हटा लीजिये, जो हमारी नसीहत से मुँह मोड़ ले और दुनियवी ज़िन्दगी के अलावा उस का कोई मक़सद न हो, उन लोगों के इल्म की पहुँच यहीं तक है (यानी वह लोग सिर्फ इसी दुनिया की चीज़ों के बारे में जानते हैं और इसी दुनिया ही को मक़सद बना रखा है।)" [सूर-ए-नज्म : २९ ता ३०]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	कम अज़ाब वाला दोज़ख़ी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अहले जहन्नम में सब से कम अज़ाब में वह आदमी होगा जिस के क़दमों के उठे हुए तलवों के नीचे दो अंगारे होंगे जिस से उस का दिमाग़ इस तरह खौलेगा जिस तरह ताँबे की गर्म पानी वाली हंडिया खौलती है।" [बुख़ारी : ६५६२, अन नोमान बिन बशीर ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	ज़म ज़म के फवाइद

हज़रत इब्ने अब्बास ؓ ने ज़म ज़म के बारे में फर्माया : "यह एक मुकम्मल ख़ोराक भी है और बीमारियों के लिये शिफा बख़्श भी है।" [बैहक़ी शोअबुल ईमान : ३९७३]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "माल खर्च करो और माल को ज़ख़ीरा न करो ! वरना अल्लाह तआला तुम से रिज़्क़ को रोक लेगा और लोगों से माल को रोक कर न रखो ! वरना अल्लाह तआला तुम से रिज़्क़ को रोक लेगा।" [बुख़ारी : २५९१, अन असमा ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

१३ रबीउल अव्वल

नंबर १ : इस्लामी तारीख — याजूज व माजूज

कुर्आने करीम के सूर-ए-कहफ़ में "याजूज माजूज" का तज़केरा है। यह लोग आम इन्सानों की तरह हज़रत नूह की औलाद में से हैं। यह बड़े जंगजू और ताक़तवर थे। अपनी पड़ोसी क़ौमों पर हमले करते रहते, उन के घरों को तबाह करते, क़ीमती चीज़ें लूट लेते और क़त्ल व ग़ारत गिरी करते थे। इन्हीं लोगों के फितना व फसाद से हिफाज़त के लिये ज़ुलक़रनैन ने एक मज़बूत दीवार बनाई थी। एक हदीस में आया है के क़यामत के क़रीब जब हज़रत ईसा मुसलमानों को ले कर कोहे तूर पर चले जाएँगे, तो अल्लाह तआला याजूज व माजूज को खोल देंगे। और वह तेज़ी के साथ निकलने के सबब बलंदी से फिसलते हुए दिखाई देंगे, उन में से पहले लोग "बुहैर-ए-तबरिया" से गुज़रेंगे, तो सारे पानी को पी कर दरिया को खुश्क कर देंगे। फिर हज़रत ईसा और मुसलमान अपनी तकलीफ दूर करने के लिये अल्लाह तआला से दुआ करेंगे। अल्लाह तआला उन की दुआ क़बूल फ़र्माएंगे और उन लोगों पर वबाई सूरत में एक बीमारी भेजेंगे और थोड़ी देर में याजूज व माजूज सब हलाक हो जाएँगे।

नंबर २ : अल्लाह की कुदरत — होंट

अल्लाह तआला ने हमें नर्म व नाज़ुक दो होंट अता फ़र्माए, जिन की हरकत से हमें बात करने में मदद मिलती है, बग़ैर किसी स्प्रिंग के हरकत करते रहते हैं, उन के ज़रिये हमें ठंडी और गर्म चीज़ों का पता चलता है और उन के बंद होने की हालत में मुँह की हिफाज़त रहती है। अगर यह होंट न होते तो मुँह के अंदर गर्द गुबार, मच्छर, मक्खियाँ दाखिल हो कर मुख़्तलिफ बीमारियाँ पैदा हो जातीं, और इन्सान देखने में बड़ा बदशकल मालूम होता, मगर अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत व हिकमत से होंट बना कर हम पर बड़ा एहसान किया है। وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ के हम ने इन्सान के लिए एक ज़बान और दो होंट बनाए।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — वारिसीन के दर्मियान मीरास तक़्सीम करना

रसूलुल्लाह ने फर्माया : "माल (वरासत) को किताबुल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ हक़ वालों के दर्मियान तक़्सीम करो।"

[मुस्लिम : ४१४३, अन इब्ने अब्बास]

फायदा : अगर किसी का इन्तेक़ाल हो जाए और उस ने माल छोड़ा हो, तो उस को तमाम हक़ वालों के दर्मियान तक़्सीम करना वाजिब है, बग़ैर किसी शरई उज़्र के किसी वारिस को महरूम करना या अल्लाह तआला के बनाए हुए हिस्से से कम देना जाइज़ नहीं है।

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — हदिया क़बूल करना

हज़रत आयशा फ़र्माती हैं के रसूलुल्लाह हदिया क़बूल फ़र्माते थे और उस का बदला भी दिया करते थे।

[बुख़ारी : २५८५]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	तक्लीफ़ पर सब्र करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मुसलमान को जो थकावट बीमारी, ग़म, दुख या तक्लीफ पहुँचती है यहाँ तक के काँटा जो उसे चुभता है अल्लाह तआला उस के बदले उस के गुनाह माफ फ़र्मा देता है।"

[बुख़ारी : ५६४१, अन अबी सईद व अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	बिला शरई उज़्र के शौहर से तलाक़ माँगना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो औरत बिला किसी उज़्र के अपने शौहर से तलाक़ का मुतालबा करे उस पर जन्नत की खुशबू हराम है।"

[अबू दाऊद : २२२६, अन सौबान ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया का माल फितना है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हर उम्मत के लिये एक फितना होता है और मेरी उम्मत का फितना माल है।"

[तिर्मिज़ी : २३३६, अन कअब बिन अयाज़ ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत का होलनाक मन्ज़र

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जब क़यामत क़ायम होगी, उस का झुटलाने वाला कोई न होगा, वह किसी को पस्त और किसी को बुलन्द कर देगी और जब ज़मीन को सख़्त ज़लज़ला आएगा और पहाड़ बिलकुल रेज़ा रेज़ा कर दिये जाएँगे तो वह पहाड़ बिखरे हुए ज़र्रात (गुबार) में तब्दील हो जाएँगे।"

[सूर-ए-वाक़िया : १ ता ६]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	दुआए जिब्रईल

हज़रत आयशा ﷺ बयान करती है के जब रसूलुल्लाह ﷺ बीमार हुए तो जिब्रईल ﷺ ने इस दुआ को पढ़ कर दम किया :

((بِسْمِ اللّٰهِ يُبْرِيْكَ ، وَمِنْ كُلِّ دَاءٍ يَشْفِيْكَ ، وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ، وَشَرِّ كُلِّ ذِىْ عَيْنٍ))

[मुस्लिम : ५६९९]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करते रहो और ख़ुद को अपने हाथों हलाकत में न डालो और नेकी करते रहो। अल्लाह तआला नेकी करने वालों को पसन्द करता है।"

[सूर-ए-बक़रह : १९५]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

१४ रबीउल अव्वल

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हारूत व मारूत

क़दीम ज़माने में शहरे बाबुल में रहने वाले यहुदियों के दर्मियान जादू बहुत ज़ियादा आम हो गया था, वह लोग जादू के ज़रिये अजीब व ग़रीब कमालात दिखाते थे, यहाँ तक के बाज़ लोग जादू के ज़ोर पर नुबुव्वत का दावा करने लगते थे, अल्लाह तआला ने बाबुल शहर में हारूत व मारूत नामी फरिश्तों को भेजा, ताके लोगों को जादू की हक़ीक़त से आगाह कर सकें। चुनान्चे लोग इबरत हासिल करने के बजाए दुनिया कमाने और दुसरों को नुक़सान पहुँचाने के लिये उन से जादू सीखने आते थे, हालाँके दोनों फरिश्ते जादू सिखाने से पहले यह बता देते थे के हमें तुम्हारी आज़माइश के लिये भेजा गया है, लिहाज़ा तुम जादू के ज़रिये नाजाइज़ और हराम काम मत करो, इस से तुम्हारे कुफ्र में मुब्तला हो जाने का अन्देशा है, लेकिन उन लोगों ने नहीं माना और उन से जादू सीख कर कुफ्र व शिर्क में मुब्तला हो गए और अपनी दुनिया और आख़िरत को बरबाद कर डाला।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — दरख़्त और पहाड़ का सलाम करना

हज़रत अली رضي الله عنه बयान करते हैं के मक्की ज़िन्दगी में एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ मक्का के किसी इलाके की तरफ निकले, तो मैं भी आप ﷺ के साथ हो लिया (चुनान्चे मैं ने देखा) के रास्ते में जिस दरख़्त और पहाड़ के क़रीब से गुज़रते वह रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ करता : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ"।

[तिर्मिज़ी : ३६२६]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ के लिये मस्जिद जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स सुबह व शाम मस्जिद जाता है, अल्लाह तआला उस के लिये जन्नत में मेहमानी का इनतेज़ाम फ़र्माते हैं, जितनी मर्तबा जाता है उतनी मर्तबा अल्लाह तआला उस के लिये मेहमानी का इन्तेज़ाम फ़र्माते हैं।"

[बुख़ारी : ६६२, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — सज्द-ए-तिलावत की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ कुर्आन मजीद की तिलावत करते हुए आयते सज्दा पर पहुँचते तो इस दुआ को सज्द-ए-तिलावत में पढ़ा करते :

((سَجَدَ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ خَلَقَهُ وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ بِحَوْلِهِ وَقُوَّتِهِ))

तर्जमा : मेरे चेहरे ने उस ज़ात के लिये सज्दा किया जिस ने उस को पैदा किया और अपनी कुदरत व कुव्वत से उस के कान और आँख खोले।

[तिर्मिज़ी : ५८०, अन आयशा رضي الله عنها]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	कसरत से सज्दा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "कसरत से सज्दा किया करो, क्योंकि जब तुम सिर्फ और सिर्फ अल्लाह के लिये सज्दा करोगे तो अल्लाह तआला उस के बदले तुम्हें एक दर्जा बुलंद करेगा और तुम्हारा एक गुनाह माफ करेगा।"

[मुस्लिम : १०९३, अन सौबान ﷺ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	हराम चीज़ों का बयान

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम पर मरा हुआ जानवर, ख़ून और खिन्ज़ीर का गोश्त हराम कर दिया गया है; और वह जानवर (भी) जिस पर (ज़बह करते वक़्त) अल्लाह के अलावा किसी दूसरे का नाम लिया गया हो।"

[सूर-ए-मायदा : ३]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	दुनियावी ज़िन्दगी की हक़ीक़त

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तूम खूब जान लो के दुनियवी ज़िन्दगी (बचपन में) खेल कूद और (जवानी में) ज़ेब व ज़ीनत और बाहम एक दूसरे पर फ़ख्र करना और (बुढ़ापे में) माल व औलाद में एक दूसरे से अपने को ज़ियादा बताना है।"

[सूर-ए-हदीद : २०]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में	क़यामत के दिन के सवालात

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "इन्सान के क़दम क़यामत के दिन अल्लाह के सामने से उस वक़्त तक नहीं हटेंगे, जब तक उस से पाँच चीज़ों के बारे में सवाल न कर लिया जाए। (१) उस की उम्र के बारे में के उस को कहाँ ख़त्म किया। (२) उस की जवानी के बारे में के उस को कहाँ खर्च किया। (३) माल कहाँ से कमाया। (४) कहाँ ख़र्च किया। (५) इल्म के मुताबिक़ क्या क्या अमल किया।"

[तिर्मिज़ी : २४१६, अन अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	सफर जल (बही Pear) से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : " सफ़र जल (यानी बही) खाया करो क्योंकि यह दिल को राहत पहुँचाता है।"

[इब्ने माजा : ३३६९, अन तलहा ﷺ]

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "ज़ुल्म से बचो ! क्योंकि ज़ुल्म क़यामत के दिन बेशुमार तारीकियों की शकल इख़्तियार कर लेगा और बुख़्ल से भी बचो ! के कन्जूसी ने उन लोगों को हलाक किया जो तुम से पहले थे। बुख़्ल ने उन्हें एक दूसरे का ख़ून बहाने पर उभारा और बुख़्ल ही की वजह से वह हराम चीज़ों को हलाल समझने लगे।"

[मुस्लिम : ६५७६, अन जाबिर ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

१५ रबीउल अव्वल

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — असहाबे कहफ़

अल्लाह तआला ने क़ुर्आने करीम के सूर-ए-कहफ में "असहाबे कहफ" का तज़केरा किया है। तीसरी सदी ईसवी में रूम में दक़्यानूस नाम का एक मुशरिक बादशाह था, उस ने रूमियों में बुत परस्ती को आम करने और ईसाइयत को ख़त्म करने की कोशिश की, उसी ज़माने में चंद नौजवानों ने बुत परस्ती को छोड़ कर ईमान क़बूल कर लिया था, उन को बादशाह की तरफ से अपने दीन और अपनी जान का ख़तरा लाहिक़ हुआ, तो उन्होंने अल्लाह के हुक्म से एक ग़ार में पनाह ली, उन्हीं लोगों को असहाबे कहफ कहा जाता है। अल्लाह तआला ने उन पर नींद तारी कर दी और वह ग़ार में सोते रहे, उन के साथ एक कुत्ता भी था जो ग़ार के मुँह पर बैठ कर उन लोगों की हिफाज़त करता रहता था, फिर अल्लाह तआला ने तीन सौ नौ साल के बाद उन्हें अपनी कुदरत से जगाया, उन में एक शख़्स अपने ज़माने के पुराने सिक्के ले कर खाना खरीदने के लिये शहर में आया, तो लोगों को उन नौजवानों का इल्म हुआ, अब मुल्क के हालात बदल चुके थे और उस वक़्त बादशाह ईमान वाला था, मगर उस ज़माने में एक पादरी ने क़यामत के रोज़ मूर्दों के ज़िन्दा होने का इन्कार कर दिया था और लोग फितने में पड़ रहे थे, इतने पुराने ज़माने के लोगों के वापस आने पर हर एक को क़यामत के दिन दोबारा ज़िन्दा होने का यक़ीन हो गया और पादरी की बात झूटी साबित हुई।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — आवाज़ सुनने का आला

अल्लाह तआला ने आवाज़ सुनने के लिये हमें दो कान अता फ़र्माए, उन के ज़रिये हम मुख़्तलिफ क़िस्म की आवाज़ सुनते हैं और उस की ख़ूबी व कमाल और कैफियत का पता लगा लेते हैं, बाज़ आवाज़ बड़ी उमदा और दिलकश होती है, जिसे सुन कर दिल को बड़ा सुकून मिलता है और कभी उन्हीं कानों से ख़ौफनाक दरिन्दों की आवाज़ सुन कर अपनी हिफाज़त का इन्तेज़ाम कर लेते हैं। अगर यह कान न होते तो हम आवाज़ की लज़्ज़त व कैफियत से महरूम हो जाते बिलाशुबा आवाज़ सुनने के लिये दो कानों का बनाना अल्लाह की अज़ीम क़ुदरत है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — हलाल पेशा इख़्तियार करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह के हुक़ूक़ व फराइज़ अदा करने के बाद हलाल रोज़ी हासिल करना भी फ़र्ज़ है।"

[तबरानी फिल कबीर : ९८५१, अन अब्दुल्लाह बिन मसऊद ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	इयादत करने का सुन्नत तरीक़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मरीज़ की मुकम्मल इयादत यह है के अपना हाथ उस की पेशानी या उस के हाथ पर रखे और पूछे के तबीअत कैसी है ?" [तिर्मिज़ी : २७३१, अन अबी उमामा رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	छूट जाने वाले वज़ीफे को बाद में अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स अपना रात का वज़ीफा या उस का कुछ हिस्सा अदा किये बग़ैर सो गया और उसे फज्र और ज़ोहर के दर्मियान पढ़ लिया, तो उस के लिये लिखा जाएगा के उस ने यह वज़ीफा रात ही को पढ़ा है।" [मुस्लिम : १७४५, अन उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	चुग़ली करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह के बन्दों में सब से बदतर वह लोग हैं जो चुग़लियाँ करते हैं और (उस के) दोस्तों में जुदाई डलवाते हैं।" [बैहक़ी फी शोअबुल ईमान : १०६६५, अन असमा बिन्ते यज़ीद رضي الله عنها]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मुझे तुम लोगों के बारे में जिस चीज़ का सब से ज़ियादा डर है, वह दुनिया का बनाव सिंगार है, जो तुम पर खोल दिया जाएगा।" [बुख़ारी : १४६५, अन अबी सईद رضي الله عنه]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	मुनाफिक़ और काफिर का ठिकाना जहन्नम है

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "आज (क़यामत के दिन) न तुम मुनाफिक़ों से कोई मुआवज़ा लिया जाएगा और न काफिरों से और तुम सब का ठिकाना दोज़ख़ है, यही जगह तुम्हारे लाइक़ है और वह बुरा ठिकाना है।" [सूर-ए-हदीद : १५]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	हाथ पाँव सुन होना

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه की मौजूदगी में एक शख़्स का पाँव सुन हो गया, तो उन्होंने फ़र्माया : अपने महबूब तरीन शख़्स को याद करो, उस ने कहा मोहम्मद ﷺ, फिर वह ठीक हो गया।

[इब्ने सुन्नी : १६९, अन इब्ने अब्बास رضي الله عنه]

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "यतीमों के माल उन को देते रहा करो और अच्छी चीज़ को बुरी चीज़ से न बदलो और उन के माल अपने मालों के साथ मिला कर मत खाओ, ऐसा करना यक़ीनन बहुत बड़ा गुनाह है।" [सूर-ए-निसा : २]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(१६) रबीउल अव्वल

नंबर (१): इस्लामी तारीख — दो दोस्तों का तज़केरा

कुर्आने करीम की सूर-ए-कहफ में दो दोस्तों का तज़केरा किया गया है, उन में से एक दौलतमंद था, अल्लाह तआला ने उस को बहुत सा माल व दौलत और नेअ्मतें अता फ़र्माई थी। उस के अंगूर के बाग़ात थे, जिस के चारों तरफ खजूर के दरख्त लगे हुए थे और बीच में शान्दार खेती थी। मगर वह ख़ुदा का मुन्किर, मुतकब्बिर और घमन्ड करने वाला था। और दूसरा दोस्त तंगदस्त और परेशान हाल था मगर मोमिन और अल्लाह तआला की इबादत करने वाला था। एक मर्तबा दौलतमंद दोस्त तकब्बुर और घमन्ड में आकर कहने लगा के मेरी यह दौलत हमेशा रहने वाली है और कोई ताक़त इसे छीन नहीं सकती। उस के ग़रीब दोस्त ने कहा के तुम अपने माल व दौलत पर इस क़द्र घमन्ड मत करो, क्योंकि हो सकता है के अल्लाह तआला मुझे तुम से ज़ियादा माल व दौलत से नवाज़ दे और तुम्हारे माल व दौलत को आसमानी आफत और ख़ुदाई अज़ाब भेज कर बरबाद कर दे। आख़िर कार ऐसा ही हुवआ के अल्लाह तआला ने उस के बागों और खेतों पर अज़ाब भेज कर तबाह कर दिया और वह अफसोस करता रह गया। यक़ीनन अल्लाह तआला माल व दौलत पर तकब्बुर और घमन्ड करने वालों के साथ ऐसा ही मामला करता है।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — थोड़ा सा पानी पूरे लश्कर के लिये काफी होना

हज़रत अनस رضي الله عنه फ़र्माते हैं एक मर्तबा नमाज़ का वक़्त हो गया, तो जो लोग मस्जिद के क़रीब थे, उन्होंने वुज़ू कर लिये (पानी ख़त्म हो गया, जिस की वजह से) दूसरे लोगों को वुज़ू करने में मुश्किलें पेश आईं, तो रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में पानी से भरा हुआ पत्थर का छोटा सा लोटा हाज़िर किया गया, जिस में हुज़ूर ﷺ ने अपनी हथेली मुबारक फैलानी चाही, मगर लोटा छोटा पड़ा, तो आप ﷺ ने अपनी उंगलियों को बराबर मिला कर उस में रखा तो (पानी इतना बढ़ गया के) उस से अस्सी सहाबा ने वुज़ू किया।

[बुख़ारी : ३५७५]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ का दर्जा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस का वुज़ू नहीं, उस की नमाज़ नहीं और जो नमाज़ न पढ़े, उस का कोई दीन नहीं, नमाज़ का दर्जा दीन में ऐसा है, जैसे सर का दर्जा बदन में है। यानी जिस तरह सर के बग़ैर इन्सान ज़िन्दा नहीं रह सकता इसी तरह नमाज़ के बग़ैर दीन ज़िन्दा नहीं रह सकता।"

[तरग़ीब व तरहीब : ५१८, अन इब्ने उमर رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — सुस्ती, काहिली दूर करने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ इस दुआ का एहतेमाम फ़र्माते थे : ((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं आजज़ी से और काहिली से, पनाह माँगता हूँ।

[मुस्लिम : ६८७३, अन अनस बिन मालिक رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	बीवियों के साथ अच्छा सुलूक करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मोमिनों में सब से कामिल ईमान वाला वह है जिस के अख़लाक़ अच्छे हों और तुम में बेहतरीन लोग वह हैं जो अपनी बीवियों के साथ अच्छा सुलूक करते हैं।"

[तिर्मिज़ी : ११६२, अन अबी हुरैरह रज़ि.]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	शिर्क की सज़ा

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "बिलाशुबा जो शख़्स अल्लाह के साथ शरीक क़रार देगा, तो उस पर अल्लाह तआला जन्नत को हराम कर देगा और उस का ठिकाना जहन्नम होगा और ऐसे ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं होगा।" [सूर-ए-मायदा : ७२]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	अपने बीवी बच्चों से होशियार रहो

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "ऐ ईमान वालो ! तुम्हारी बाज़ बीवियाँ और बाज़ औलाद तुम्हारे हक़ में दुश्मन हैं, तुम उन से होशियार रहो।" [सूर-ए-तग़ाबुन : १४]

फ़ायदा : बीवी बच्चे बाज़ मर्तबा दुनियावी नफे के लिये ख़िलाफे शरीअत कामों पर इसरार करते हैं, उन्हीं लोगों को अल्लाह तआला ने दीन का दुश्मन बताया है और उन के हुक्म को बजा लाने से बचने की हिदायत दी है।

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जन्नत में सोने चाँदी के बाग़

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "(जन्नत में) दो बाग़ चाँदी के हैं, उन के बर्तन और सब सामान भी चाँदी का है और दो बाग़ सोने के हैं, उन के बर्तन और सब सामान सोने के हैं, "जन्नते अद्न" के रहने वालों और उन के रब के दीदार के दर्मियान सिर्फ जलाल की चादर होगी।"

[बुख़ारी : ४८७८, अन अब्दुल्लाह बिन क़ैस रज़ि.]

नंबर (९): कुर्आन से इलाज	मौसमी फलों के फवाइद

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ﴿ كُلُوا مِن ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ ﴾

तर्जमा : जब दरख़्त पर फल आजाएँ तो उन्हें खाओ। [सूर-ए-अन्आम : १४१]

फ़ायदा : मौसमी फलों का इस्तेमाल सेहत के लिये बेहद मुफीद है और बहुत सी बीमारियों से हिफाज़त का ज़रिया भी है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम में से कोई शख़्स अपने भाई से मिले तो उस को सलाम करे और अगर उन के दर्मियान दरख़्त, दीवार या पत्थर वग़ैरा हाइल हो जाएं और फिर वह उस से मिले तो दोबारा उस को सलाम करे।" [अबू दाऊद : ५२००, अन अबी हुरैरह रज़ि.]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

१७ रबीउल अव्वल

नंबर (१): इस्लामी तारीख — असहाबुल उख़दूद (ख़न्दक़ वाले)

मुल्के शाम और हिजाज़ के दर्मियान नजरान नामी एक बस्ती थी, जिस के बादशाह और पूरी क़ौम बुत परस्त थी, यहाँ एक जादूगर रहता था, उसी जादूगर के बलबूते पर हुकूमत चल रही थी, जब उस की मौत का वक़्त क़रीब हुआ, तो बादशाह से दरख़्वास्त की के एक होशियार लड़का मुझे दिया जाए, जिसे मैं अपना इल्म सिखा दूँ, चुनान्चे बादशाह ने अब्दुल्लाह बिन तामुर नामी लड़का दिया, जो जादू सीखने लगा, एक दिन रास्ते में एक राहिब मिला जो दीने हक़ पर था, उस के हाथ पर खुफ़िया तौर पर ईमान क़बूल कर के दीने हक़ की तब्लीग़ शुरू कर दी और लोग ईमान में दाख़िल होने लगे। जब बादशाह को उस की ख़बर हुई, तो उस लड़के को हलाक करने की मुतअ़द्दद तदबीरें कीं, मगर वह नाकाम रहा, बिलआख़िर लड़के ने बादशाह से कहा: अगर तू मुझे क़त्ल करना ही चाहता है, तो शहर के तमाम लोगों को जमा कर के मुझे सूली पर लटका दो, फिर ((بِسْمِ اللّٰهِ رَبِّ الْغُلَامِ)) कहे कर मुझ पर तीर चलाओ। बादशाह ने ऐसा ही किया, तो लड़का शहीद हो गया, मगर मजमे के तमाम लोग ईमान में दाख़िल हो गए। बादशाह यह देख कर बौखला उठा और उस ने ख़न्दक़ें खुदवा कर आग दहेकाई और तक़रीबन २० हज़ार ईमान वालों को उस में डाल कर शहीद कर डाला। सूर-ए-बुरूज में इस वाक़िये को बयान किया गया है।

[सूर-ए-बुरूज]

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — नमक

अल्लाह तआला ज़मीन की कानों और समुन्दर के खारे पानी से हमें नमक अता करता है। समुन्दर के पानी से नमक बनाने का तरीक़ा यह है के उस के खारे पानी को छोटी छोटी क्यारियों में जमा किया जाता है फिर सूरज की धूप और गर्मी से पानी जज़ब हो जाता है और नमकीन माद्दा ज़मीन की सतह पर नमक बन जाता है, जिस को हम अपने खाने पीने की बेशुमार चीज़ों में शामिल कर के मज़ेदार बना लेते हैं। बिलाशुबा अल्लाह तआला ही अपनी क़ुदरत से पानी के अजज़ा को ख़त्म कर के हमारे लिये नमक पैदा करता है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — गुस्ल में पूरे बदन पर पानी बहाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: "(जिस्म) के हर बाल के नीचे नापाकी होती है, लिहाज़ा तुम बालों को धोओ और बदन को अच्छी तरह साफ करो।"

[तिर्मिज़ी: १०६, अन अबी हुरैरह رضی اللہ عنہ]

फ़ाइदा: गुस्ल में पूरे बदन पर पानी का पहुँचाना फ़र्ज़ है। इस लिये खुसूसन सर के बालों, दाढ़ी वग़ैरह की जड़ में पानी पहुँचाना चाहिये और औरतों को अपने बाल खोल कर गुस्ल करना चाहिये ताके पानी बालों की जड़ों में पहुँच जाए।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	बुलंदी पर चढ़ने और उतरने पर ज़िक्र

रसूलुल्लाह ﷺ और आप के लशकर के लोग जब बुलंदी पर चढ़ते तो तक्बीर ((اللهُ أَكْبَرُ)) और जब नीचे उतरते तो तस्बीह ((سُبْحَانَ الله)) पढ़ते। [अबू दाऊद : २५९९, अन अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अपने अहल व अयाल पर ख़र्च करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अगर आदमी अपने अहले खाना पर सवाब की निय्यत से ख़र्च करे तो यह ख़र्च करना उस के हक़ में सदक़ा होगा।" [बुख़ारी : ५५, अन अबी मसऊद ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	झूट की नहूसत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब बन्दा झूट बोलता है, तो फरिश्ता उस के झूट की बदबू की वजह से एक मील दूर चला जाता है।" [तिर्मिज़ी : १९७२, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया से बे रग़बती का फायदा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दुनिया की ख़्वाहिश का न होना, जिस्म और दिल के लिये राहत है और दुनिया की आरज़ू रंज व गम को बढ़ाती है।" [कंज़ुल उम्माल : ६०५८, अन ताऊस ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत के दिन आसमान का फटना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जिस दिन क़यामत क़ायम होगी उस दिन आसमान फट कर बिल्कुल कमज़ोर हो जाएगा और फरिश्ते आसमान के किनारों पर आजाएंगे, और तुम्हारे रब के अर्श को उस दिन आठ फरिश्ते उठाए हुए होंगे, उस दिन तुम पेश किये जाओगे तो तुम्हारी कोई बात छुपी नहीं रह सकेगी।" [सूर-ए-हाक़्क़ा : १६ ता १८]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	खड़े हो कर पानी पीना मुज़िर है

रसूलुल्लाह ﷺ ने खड़े हो कर पानी पीने से मना फ़र्माया है। [इब्ने माजा : ३४२४, अन अनस ؓ]

फायदा : खड़े हो कर पानी पीना मेदे को नुक़सान पहुँचाता है, इस लिये उस से बचना चाहिये।

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है "ऐ ईमान वालो ! तुम आपस में एक दूसरे के माल को नाहक़ तरीके से मत खाओ, मगर जो माल आपस की रज़ामन्दी से की हुई ख़रीद व फरोख़्त से हासिल हो (तो उस को खाने में कोई हरज नहीं)।" [सूर-ए-निसा : २९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर (१) : इस्लामी तारीख़ | मक्का में बुत परस्ती की इब्तेदा

कुरैश का कबीला हजरत इब्राहीम ﷺ के दीन पर बराबर कायम रहा और एक खुदा की इबादत करता रहा, यहाँ तक के हुज़ूर ﷺ से तीन सौ साल पहले अम्र बिन लुहै खुजाई का दौर आया, अम्र मक्का का बड़ा दौलतमन्द शख्स था, उस के पास बीस हजार ऊँट थे, जो उस जमाने में बड़े शर्फ की बात थी, एक दफा वह मक्का से मुल्के शाम गया, उस ने वहाँ लोगों को देखा, के बुतों को पूजते हैं, तो उन से पूछा : इन को क्यों पूजते हो? उन्होंने जवाब दिया "यह हमारे हाजतरवा हैं, हमारी जरूरतों को पूरी करते हैं, लड़ाइयों में फतह दिलाते हैं और पानी बरसाते हैं।" अम्र बिन लुहै को उन की बुत परस्ती अच्छी लगी और उस ने वहाँ से कुछ बुत ला कर खान-ए-काबा के आस पास रख दिये। काबा चूँकि अरब का मरकज था, इस लिये तमाम कबाइल में धीरे धीरे बुत परस्ती का रिवाज हो गया, इस तरह मक्का में बुत परस्ती की शुरूआत अम्र बिन लुहै खुजाई के हाथों हुई, जिस के बारे में रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : मैं ने अम्र बिन लुहै को देखा के वह जहन्नम में अपनी आँतें घसीटता हुआ चल रहा है।

[बुखारी : ३५२१, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (२) : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा | खजूर की शाख़ का तलवार बन जाना

ग़ज़्व-ए-उहुद में हजरत अब्दुल्लाह बिन जहश ﷺ की तलवार टूट गई, आप ﷺ ने एक खजूर की शाख़ उन के हाथ में दे दी पस वह तलवार बन गई। [बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : ११०९]

नंबर (३) : एक फ़र्ज़ के बारे में | शौहर का हक़ अदा करना

हजरत आयशा ﷺ ने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा के औरत पर तमाम लोगों में से किस का हक जियादा है? तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "औरत पर सब से जियादा हक उस के शौहर का है।" फिर हजरत आयशा ﷺ ने पूछा : मर्द पर सब से जियादा हक किस का है ? तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : मर्द पर सब से ज़ियादा हक़ उस की माँ का है। [सुनने कुबरा लिन्नसई : ९१४८, अन आयशा ﷺ]

नंबर (४) : एक सुन्नत के बारे में | डर और घबराहट की दुआ

एक शख्स ने हुज़ूर ﷺ से डर और वहेशत की शिकायत की तो आप ﷺ ने फ़र्माया : यह पढ़ो :

((سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ رَبِّ الْمَلٰئِكَةِ وَالرُّوْحِ جَلَّلْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْعِزَّةِ وَالْجَبَرُوْتِ))

तर्जमा : उस मुकद्दस बादशाह की पाकी बयान करता हूँ जो फरिश्तों और रूह का रब है उस की इज्जत व जबरूत से ज़मीन व आसमान रौशन हैं। [मुअजमे कबीर, लित्तबरानी : ११५६, अन बरा बिन आज़िब ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	दोस्तों और पड़ोसियों से अच्छा सुलूक करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला के नज़दीक दोस्तों में से बेहतरीन दोस्त वह है जो अपने दोस्त से अच्छा सुलूक करे और अल्लाह तआला के नज़दीक बेहतरीन पड़ोसी वह है जो अपने पड़ोसी से अच्छा सुलूक करे।" [तिर्मिज़ी : १९४४, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	हज़रत ईसा ؑ को ख़ुदा मानना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "बिलाशुबा वह लोग भी काफिर हो गए जिन्होंने यूँ कहा के अल्लाह तआला तीन (ख़ुदाओ) में से एक है हालांके एक ख़ुदा के अलावा कोई माबूद नहीं और अगर यह लोग इन बातों से बाज़ नहीं आएँगे, तो जो लोग उन में से कुफ्र पर क़ायम रहेंगे उन को ज़रूर दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा।" [सूर-ए-मायदा : ७३]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया में खाना पीना चंद रोज़ा है

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम (दुनिया में) थोड़े दिन खालो और (उस से) फायदा उठा लो, बेशक तुम मुजरिम हो (यानी यह दुनियवी ज़िन्दगी चंद रोज़ की है, अगर उस के पीछे पड़ कर अपनी आख़िरत की ज़िन्दगी को भुला दोगे, तो क़यामत के दिन तुम मुजरिम बन कर उठोगे)।" [सूर-ए-मुरसलात : ४६]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	कम दर्जे वाले जन्नती का इनाम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अदना दर्जे का जन्नती वह होगा, जिस के एक हज़ार महल होंगे, हर दो महलों के दर्मियान एक साल के बराबर चलने का फासला होगा, यह जन्नती दूर के महलों को इसी तरह देखेगा जिस तरह क़रीब के महलों को देखेगा, हर एक महल में ख़ूबसूरत गहरी सियाह आँखों वाली हूर होंगी और उमदा बाग़ात और (ख़िदमत के लिये) लड़के होंगे, जिस चीज़ की भी वह तलब करेगा, उस को पेश कर दी जाएगी।" [तरग़ीब : ५२८०, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	दस्त (बकरी की अगली रान) के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ को दस्त (अगली रान) का गोश्त बहुत पसन्द था। [बुख़ारी : ३३४०, अन अबी हुरैरह ؓ]

फायदा : अल्लामा इब्ने क़य्यिम رحمه الله ने लिखा है के बकरी के गोश्त में सब से हल्की ग़िज़ा का हिस्सा गरदन और दस्त है, उस के खाने से मेदे में भारी पन नहीं होता।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दुनिया से बे रग़बती और आख़िरत की रग़बत पैदा करने के लिये मौत को याद करना काफी है।" [बैहक़ी फी शोअबिल ईमान : १०१५९, रबीअ बिन अनस ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर १: इस्लामी तारीख़ — असहाबे फील (हाथी वाले)

अल्लाह तआला ने सूर-ए-फील में "असहाबे फील" का तज़्केरा किया है। यमन में अबरहा नाम का एक इसाई बादशाह था, उस ने सनआ में एक खूबसूरत गिरजा (चर्च) बनवाया था और मक्का जैसी मुकद्दस सर ज़मीन पर जमा हो कर बैतुल्लाह का तवाफ करने वाले सारे अरबों का रुख इस जानिब फेर देना चाहता था, ताके सारे लोग बैतुल्लाह को छोड़ कर उसी गिरजा का तवाफ किया करें। अरबों को जब यह बात मालूम हुई, तो सख़्त नाराज़ हुए, एक रात किसी ने मौक़ा पा कर गिरजा को नापाक कर दिया, अबरहा गिरजा की बे हुरमती देख कर गुस्से से बे क़ाबू हो गया और हाथियों का एक बड़ा लश्कर ले कर ख़ान-ए-काबा को ढाने के इरादे से रवाना हुआ। जब अबरहा का लश्कर मक्का के क़रीब पहुँचा तो तेज़ हवा चली और समन्दर की जानिब से परिन्दों के झुंड उड़ते हुए लश्कर पर छा गए, उन की चोंच और दोनों पंजों में छोटे छोटे पत्थर थे, वह हाथियों के लश्कर पर उन पत्थरों को गिराने लगे, वह पत्थर जिस पर गिरता उस के बदन को फाड़ता हुआ बाहर निकल जाता। इस तरह सारे लश्कर को छलनी कर डाला। उस में से बाज़ लोग बदहाली में भागते हुए यमन पहुँचे, उन्हीं में अबरहा बादशाह भी था, उस के तमाम आज़ा गल सड़ चुके थे। इस तरह अल्लाह तआला की ज़बरदस्त कुव्वत ने माद्दी ताक़त पर घमन्ड करने वाले अबरहा को तबाह कर दिया।

नंबर २: अल्लाह की कुदरत — समुन्दर की गहराई

अल्लाह तआला ने दुनिया के तीन हिस्सों में समुन्दर बनाए जिन में बहुत सी मख़्लूक़ रहती है, उन में बाज़ समुन्दर इतने ज़ियादा गहरे होते हैं के साइंस की तरक़्क़ी के बावजूद आज तक उस की गहराई का किसी को इल्म नहीं हो सका, फिर अल्लाह तआला ने समुन्दर की गहराई में पानी का इस क़द्र दबाव रखा है के जब उस की गहेराई नापने के लिये कोई चीज वहाँ पहुँचाई जाती है, तो पानी के दबाव की वजह से वह पचक जाती है और समुन्दर की तह तक नहीं पहुँच पाती। समुन्दर के बे पनाह गहरे पानी पर अल्लाह ही की कुदरत है।

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — अज़ान सुन कर नमाज़ के लिये न जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स अल्लाह के मुनादी (यानी मुअज़्ज़िन) की आवाज़ सुने और नमाज़ के लिये न जाए तो (उस का यह फेल) सरासर ज़ुल्म, कुफ्र और निफाक़ है।"

[तबरानी कबीर : १६८०४, मआज़ बिन अनस ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | **अपने साथियों से मश्वरा करना**

हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़र्माते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से ज़ियादा सहाब-ए-किराम के साथ मश्वरा करते हुए किसी को नहीं देखा। [तिर्मिज़ी : १७१४]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | **रिश्तेनातों का हक़ अदा करना**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : रहम (रिश्तेदारी) अर्श से चिमट कर फरयाद करता है (ऐ अल्लाह!) जो मुझे जोड़े तू उसे जोड़ और जो मुझे तोड़े तू उसे तोड़। [मुस्लिम : ६५१९, अन आयशा ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | **झूटी क़सम खाना**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स जान बूझ कर झूटी क़सम के ज़रिये दूसरे का माल हड़प कर लेगा वह (क़यामत के दिन) अल्लाह तआला से इस हाल में मिलेगा के अल्लाह तआला उस से सख़्त नाराज़ होगा।" [बुख़ारी : ७१८३, अन अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | **दुनिया क़ाबिले मलामत है**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दुनिया और जो कुछ दुनिया में है, सब मलऊन (यानी अल्लाह की रहमत से दूर) है, सिवाए अल्लाह के ज़िक्र और उस चीज़ के जो उस के क़रीब हो और आलिम और तालिबे इल्म।" [इब्ने माजा : ४११२, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | **क़यामत का दिन बच्चों को बूढ़ा कर देगा**

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है "अगर तुम कुफ्र पर क़ायम रहे, तो उस दिन की मुसीबत से कैसे बचोगे, जो बच्चों को बूढ़ा बना देगा और जिस दिन आसमान फट जाएगा अल्लाह का यह वादा है, जो पूरा हो कर रहेगा।" [सूर-ए-मुज़्ज़म्मिल : १७ ता १८]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | **ख़तना के फवाइद**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "पाँच चीज़ें फितरत में से हैं, उन में से एक ख़तना करना है।" [मुस्लिम : ५९८, अन अबी हुरैरह ﷺ]

फायदा : ख़तना करने से शर्मगाह के कैन्सर, एगज़ीमा और गुर्दे की पथरी जैसी बीमारियों से हिफाज़त होती है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जब तुम को कोई सलाम करे, तो उस से बेहतर अलफ़ाज़ में या वैसे ही अलफाज़ में सलाम का जवाब दिया करो।" [सूर-ए-निसा : ८६]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख | अरबों की अख़लाक़ी हालत

रसूलुल्लाह ﷺ से पहले अरबों की अखलाकी हालत बहुत ज़ियादा बिगड़ चुकी थी। ज़ुल्म व सितम, चोरी व डाका ज़नी, ज़िनाकारी और बदकारी बिल्कुल आम थी। जुवा खेलने और शराब पीने का रिवाज बहुत ज़ियादा था। बेहयाई और बे शर्मी इस हद तक बढ़ गई थी के खुले आम बुराइयाँ कर के उस पर फख्र किया जाता था। मामूली मामूली बातों पर लड़ाइयाँ हो जातीं और फिर बरसों तक जारी रहती थीं, सूद की नहूसत में पूरा मुआशरा जकड़ा हुआ था। औरतों के साथ इन्तेहाई बे रहमाना सुलूक किया जाता था, उन्हें मीरास में हिस्सा नहीं दिया जाता था और लड़कियों की पैदाइश को अपने लिये ज़िल्लत व रुसवाई का सबब समझ कर बाज़ क़बीले वाले अपने ही हाथों ज़िन्दा दफन कर दिया करते थे, कमज़ोरों, यतीमों और बे कसों के साथ बड़ी ना इन्साफी बरती जाती थी और उन के हुकूक़ को पामाल किया जाता था, इस तरह की और भी बहुत सी दूसरी बुराइयाँ उन में रिवाज पा चुकी थीं।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा | खजूर के गुच्छे का चलना

एक देहाती रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में आया और कहा के मुझे यह कैसे यक़ीन आए के आप नबी हैं? आप ﷺ ने फ़र्माया : अगर मैं इस खजूर के ख़ोशे (गुच्छे) को बुला लूँ तो तुम मेरे नबी होने को मान लोगे? उस ने कहा : हाँ ! आप ﷺ ने उस गुच्छे को बुलाया, वह दरख्त से उतर कर रसूलुल्लाह ﷺ के पास आया और फिर आप ﷺ के हुक्म से वापस चला गया, देहाती फौरन इस मुअ्जिज़े को देख कर ईमान ले आया।

[तिर्मिज़ी : ३६२८, अन इब्ने अब्बास رضي الله عنه]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | सुबह की नमाज़ अदा करने पर हिफाज़त का ज़िम्मा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने सुबह की नमाज़ अदा की, वह अल्लाह की हिफाज़त में है।"

[मुस्लिम : १४९३, अन जुन्दुब رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | अज़ाबे क़ब्र से बचने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ कसरत से फ़र्माते थे :

((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ عَذَابِ النَّارِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ
وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं अज़ाबे क़ब्र, अज़ाबे दोज़ख, ज़िन्दगी और मौत के फितने और दज्जाल के फितने से तेरी पनाह चाहता हूँ।

[बुख़ारी : १३७७, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	इन्साफ करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "इन्साफ करने वाले अल्लाह तआला के पास नूर के मिम्बरों पर होंगे और यह वह लोग होंगे जो अपनी हुकूमत, अहल व अयाल और रिआया के मुतअल्लिक़ इन्साफ से काम लेते हैं।" [मुस्लिम : ४७२१, अन अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	फ़ुज़ूल ख़र्ची करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "इसराफ व फ़ुज़ूल ख़र्ची मत करो, क्योंकि अल्लाह तआला फ़ुज़ूल खर्ची करने वालों को पसन्द नहीं करता।" [सूर-ए-आराफ : ३१]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	खाने पीने की चीज़ों में ग़ौर करने की दावत

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "इन्सान को अपने खाने में गौर करना चाहिये के हम ने ख़ूब पानी बरसाया, फिर हम ने अजीब तरीक़े से ज़मीन को फाड़ा, फिर हम ने उस ज़मीन में से ग़ल्ला, अंगूर, तरकारी, ज़ैतून और खजूर, घने बाग़, मेवे और चारा पैदा किया। यह सब तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के फायदे के लिये हैं।" [सूर-ए-अबस : २४ ता ३२]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	हूर की ख़ूबसूरती

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अगर जन्नत की कोई औरत ज़मीन वालों की तरफ झाँक ले, तो ज़मीन व आसमान के दर्मियान की तमाम चीज़ों को रौशन कर दे और उस को ख़ुश्बू से भर दे और उस की ओढ़नी दुनिया और तमाम चीज़ों से बेहतर है।" [बुख़ारी : २७९६, अन अनस बिन मालिक ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	सिर्का के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "सिर्का क्या ही बेहतरीन सालन है।" [मुस्लिम : ५३५०, अन आयशा ؓ]

फायदा : मुहद्दिसीन हज़रात कहते हैं के सिर्का तिल्ली के बढ़ने को रोकता है, जिस्म में वरम नहीं होने देता, खाने को हज़म करता है, ख़ून को साफ करता है, फोड़े फुन्सियों को दूर करता है। [अल इलाजुन नब्वी]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम में से कोई शख़्स जमाई ले तो उस को अपना हाथ मुँह पर रख लेना चाहिये, क्योंकि (खुले) मुँह में शैतान दाख़िल हो जाता है।" [मुस्लिम : ७४९१, अन अबी सईद ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

२१ रबीउल अव्वल

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — छटी सदी में दुनिया की मज़हबी हालत

छटी सदी में मज़हबी एतेबार से पूरी दुनिया के लोग बहुत ज़ियादा कमज़ोर थे, जहालत आम थी, दीन के सही मफहूम से वह लोग नावाक़िफ थे, हर तरफ शिर्क व बुत परस्ती फैली हुई थी। अरब के हर घर में अलग अलग बुत रखा हुआ था जिस की पूजा की जाती। काबा जैसी मुकद्दस जगह में तीन सौ साठ बुत जमा कर रखे थे। उस के अलावा मुख़्तलिफ जगहों पर सूरज, चाँद, सितारे और आग की पुजा की जाती थी। और जो लोग अपने आप को आसमानी मज़ाहिब वाले समझते थे, उन की हालत भी बहुत ख़राब थी, अल्लाह की किताबों के अहकाम व क़वानीन को बदल डाला था, उस की असली शक्ल व सूरत बाक़ी नहीं रही थी, बल्के अगर यह मुमकिन होता, के उन मज़ाहिब के असल बानी अम्बियाए किराम दोबारा वापस आकर उन की हालत देखते तो वह उन को नहीं पहचान सकते थे। उन मज़ाहिब के मानने वाले धीरे धीरे अल्लाह के बताए हुए तरीक़े से हट चुके थे, हत्ता के पूरी तरह अक़ीद-ए-तौहीद पर भी क़ायम नहीं थे और उन की बहुत सारी आदतें और रसमें मुशरिकाना और जाहिली रिवायात के मुताबिक़ थीं। उन सारी चीज़ों की इसलाह और सही रहनुमाई के लिये अल्लाह तआला ने हुज़ूर ﷺ को मबऊस फ़र्माया।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — सूरज की तूफानी लहरें

अल्लाह तआला ने सूरज को एक ज़बरदस्त आग का गोला बनाया है, जो रौश्नी के साथ हमें गर्मी भी मुहय्या करता है, लेकिन कभी कभी सूरज के अन्दर ख़तरनाक क़िस्म की लहरें भी उठती हैं, हत्ता के तूफान आता है, अगर वह लहरें ज़मीन पर बसने वाले जान्दारों पर पड़ जाएँ तो सब को हलाक कर डालेंगी, मगर अल्लाह तआला अपनी क़ुदरत से इन शुआओं और लहरों को ज़मीन के ऐसे इलाक़ों की तरफ मोड़ देता है जहाँ पर आबादी नहीं होती। उन हलाक करने वाली शुआओं का ग़ैर आबाद इलाक़ों की तरफ मुनतक़िल करना अल्लाह की ज़बरदस्त क़ुदरत है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — रुकू सज्दा अच्छी तरह अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "वह नमाज़ सही नहीं जिस में आदमी रुकू सज्दा ठीक से नहीं करता।"

[तिर्मिज़ी : २६५, अन अबी मसऊद अनसारी ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — मुसाफा से पहले सलाम करना

हज़रत जुन्दुब ؓ से रिवायत है के आप ﷺ की आदते शरीफा थी के जब भी आप ﷺ अपने असहाब ؓ से मिलते तो सलाम किये बग़ैर मुसाफा न फ़र्माते।

[मुअ्जमे कबीर : १७००]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	सख़ावत करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : " सख़ावत जन्नत में एक दरख़्त है पस जो शख़्स सख़ी होगा वह उस की एक टहनी पकड़ लेगा जिस के ज़रिये से वह जन्नत में दाख़िल हो जाएगा और कन्जूसी जहन्नम का एक दरख़्त है जो शख़्स बख़ील होगा वह उस की एक टहनी पकड़ लेगा, यहाँ तक के वह टहनी उस को जहन्नम में दाख़िल कर के रहेगी।" [बैहक़ी फी शोअबिल ईमान : १०४५१, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	दुनिया के लिये इल्मे दीन हासिल करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "वह इल्म जिस से अल्लाह की रज़ा हासिल की जाती है (यानी कुर्आन व सुन्नत का इल्म) अगर उस को कोई शख़्स दुनिया की दौलत कमाने के लिये हासिल करे, तो वह क़यामत के दिन जन्नत की ख़ुश्बू से भी महरूम रहेगा।" [अबू दाऊद : ३६६४, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया में ज़ियादा खाने का अन्जाम

एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ के पास डकार ली, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हमारे सामने डकार मत लो, इस लिये के क़यामत के दिन सब से ज़ियादा भूका वह शख़्स होगा जो दुनिया में ज़ियादा पेट भरता है।" [तिर्मिज़ी : २४७८, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	दोज़ख़ियों की हालत

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "बेशक जहन्नम एक घात की जगह है, जो सरकशों का ठिकाना (है) जिस में वह बे इन्तेहा ज़मानों (पड़े) रहेंगे (और) उस में न तो वह किसी ठंडक (यानी राहत) का मज़ा चखेंगे और न पीने की चीज़ का, सिवाए गर्म पानी और पीप के (और उन को) पूरा पूरा बदला मिलेगा।" [सूर-ए-नबा : २१ ता २५]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	खाने के बाद उंगलियाँ चाटना

रसूलुल्लाह ﷺ जब खाना खा लेते, तो अपनी तीनों उंगलियों को चाटते।

[मुस्लिम : ५२९६, अन कअब बिन मालिक ؓ]

फायदा : अल्लामा इब्ने क़य्यिम رحمه الله कहते हैं के खाना खाने के बाद उंगलियाँ चाटना हाज़मे के लिये इन्तेहाई मुफीद है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "ऐ ईमान वालो ! तुम अल्लाह और उस के रसूल के हुक़ूक़ की अदायगी में ख़यानत और कमी न किया करो और आपस की अमानतों में भी ख़यानत न किया करो, और तुम तो उस के नुक़सान को जानते हो।" [सूर-ए-अनफाल : २७]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२२) रबीउल अव्वल

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हुज़ूर ﷺ की आमद की बशारत

हुज़ूर ﷺ से पहले जितने अम्बियाए किराम गुज़रे हैं, हर एक ने अपनी क़ौम को आखरी नबी हज़रत मुहम्मद ﷺ की आमद की ख़बर दी है और आप ﷺ की मुख़्तलिफ निशानियाँ बता कर आप ﷺ पर ईमान लाने का अहद लिया है। चुनान्चे हज़ार तबदीलियों के बावजूद आज तक तौरात व इन्जील में वह अलामात और निशानियाँ मौजूद हैं आप ﷺ की ज़ाते गिरामी में मौजूद थीं, खुद तौरात व इन्जील वाले भी इस हक़ीक़त से खूब वाक़िफ हैं। जैसा के अल्लाह तआला फ़र्माते हैं के "जिन लोगों को हम ने किताब (तौरात व इन्जील) दी है वह रसूलुल्लाह ﷺ को (उन किताबों में बयान करदा निशानियों की बिना पर) अपने बेटे की तरह खूब पहचानते हैं, मगर उस के बावजूद उन में से एक जमात जान बूझ कर हक़ बात को छुपाती है।" [सूर-ए-बक़रह : १४६] इसी तरह क़ुर्आन में है के हज़रत ईसा عليه السلام ने फ़र्माया : ऐ बनी इस्राईल ! मैं तुम्हारे पास अल्लाह का भेजा हुआ आया हूँ, मुझ से पहले जो तौरात है मैं उस की तसदीक़ करता हूँ और अपने बाद आने वाले एक अज़ीमुश्शान नबी की ख़ुशख़बरी देता हूँ, जिन का नाम 'अहमद' है। [सूर-ए-सफ :६] एक मर्तबा खुद हुज़ूर ﷺ ने फ़र्माया : "मैं अपने बाप इब्राहीम عليه السلام की दुआ और हज़रत ईसा عليه السلام की बशारत हूँ।"

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह: १५]

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हज़रत अबूज़र رضي الله عنه के बारे में पेशीनगोई

एक मर्तबा आप ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला अबू ज़र पर रहम फ़र्माए, वह तन्हा ही रहते हैं, तन्हा ही मरेंगे और तन्हा ही उठाए जाएँगे, चुनान्चे वह मकामे रबज़ा में अकेले जा कर रहे, वहीं तन्हाई की ज़िन्दगी गुज़ारी और वहीं वफात पाई, उन के पास सिर्फ उन की बीवी और गुलाम था।"

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : १९७७]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — जमात के साथ नमाज़ पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "(मर्दों को) जमात छोड़ने से रुक जाना चाहिये, वरना मैं उन के घरों में आग लगवा दूँगा।"

[इब्ने माजा : ७९५, अन उसामा बिन ज़ैद رضي الله عنه]

फायदा : जमात छोड़ने वालों के लिये हदीसों में बहुत सख्त वईदें बयान की गई हैं, इस लिये तमाम मुसलमान मर्दों पर जमात का एहतेमाम करना बहुत ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — मग़फिरत और तलबे रहमत की दुआ

मग़फिरत और तलबे रहमत के लिये इस दुआ का एहतेमाम करना चाहिये :

﴿رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ﴾

तर्जमा : ऐ हमारे परवरदिगार ! हम ईमान ले आए हैं, लिहाज़ा हमारी मग़फिरत फ़र्मा दीजिये और हम पर रहम फरमाइये, बेशक आप बड़े ही मेहरबान हैं।

[सूर-ए-मोमिनून : १०९]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	वालिदैन के लिये दुआएँ करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस शख़्स के माँ बाप या उन में से कोई एक मर जाए और वह शख़्स उन की नाफ़र्मानी करने वाला हो तो वह उन के लिये हमेशा दुआ व इस्तिग़फार करता रहे, तो वह शख़्स फ़र्माबरदारों में शुमार हो जाएगा।" [बैहक़ी फी शोअ़बिल ईमान : ७६६३, अन अनस ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	नुक़सान के बाद की आसानियों पर इतराना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जब हम नुक़सान पहुँचाने के बाद अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं, तो वह हमारी उन निशानियों के बारे में भी शरारत करने लगते हैं" (यानी मौजूदा आसानियों में पड़ कर गुज़री हुई मुसीबतों को झुटलाते हैं और मज़ाक़ उड़ाते हैं, जब के उन्हें उन निशानियों से इबरत हासिल करनी चाहिये। [सूर-ए-यूनुस : २१]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	आख़िरत की कामयाबी दुनिया से बेहतर है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम लोगों को जो कुछ दिया गया है, वह सिर्फ दुनियवी ज़िन्दगी मे बरतने का सामान है और जो कुछ (अज्र व सवाब) अल्लाह के पास है, वह इस (दुनिया) से कहीं ज़ियादा बेहतर और बाक़ी रहने वाला है।" [सूर-ए-शूरा :३६]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जन्नत और जहन्नम का एक एक क़तरा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अगर जन्नत का एक क़तरा तुम्हारी इस दुनिया में तुम्हारे पास आजाए, तो सारी दुनिया को मीठा कर दे और अगर जहन्नम का एक क़तरा तुम्हारी दुनिया में आजाए, तो सारी दुनिया को तुम्हारे लिये कड़वा कर दे।" [तरग़ीब व तरहीब : १८६, अन अनस ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	इनजीर से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "इनजीर खाओ क्योंकि यह बवासीर को खत्म करता है और जोड़ों के दर्द में मुफीद है।" [कन्ज़ुल उम्माल : २८२७६, अन अबी ज़र ؓ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम में से कोई शख़्स किसी को क़र्ज़ दे फिर वह क़र्ज़दार उस को कोई हदिया दे या अपनी सवारी पर सवार कराए तो न हदिया क़बूल करे, न उस की सवारी पर सवार हो; अलबत्ता अगर उस क़र्ज़ के मामले से पहले इस क़िस्म का बर्ताव दोनों में था तो कोई मुज़ायक़ा नहीं।" [इब्ने माजा : २४३२, अन अनस ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

२३ रबीउल अव्वल

नंबर (१): इस्लामी तारीख — रसूलुल्लाह ﷺ की मुबारक पैदाइश

आखरी नबी हजरत मोहम्मद ﷺ की मुबारक पैदाइश मक्का मुकर्रमा में माहे रबीउल अव्वल मुताबिक़ माहे अप्रेल ५७१ ईसवी पीर के दिन ऐसे माहौल में हुई के पूरी दुनिया पर कुफ्र व शिर्क की तारीकी छाई हुई थी और इन्सानियत गुमराही में भटक रही थी, गोया रूहानी तौर पर हर तरफ अंधेरा फैला हुआ था और जो अल्लाह हर रोज़ चाँद, सूरज और सितारों के ज़रिये सारे आलम को रौशन करता था, आज उस ने इन्सानों के तारीक दिलों को अपनी इबादत व बन्दगी की रौश्नी अता करने के लिये अपने प्यारे बन्दे हज़रत मुहम्मद ﷺ को हिदायत का आफताब बना कर सय्यिदा आमिना के घर पैदा फ़र्माया। पैदाइश के बाद दादा अब्दुल मुत्तलिब ने 'मुहम्मद' नाम रखा। यह नाम अरब में बिलकुल अनोखा था। लोगों ने अब्दुल मुत्तलिब से अपने पोते का नया नाम रखने की वजह मालूम की, तो उन्होंने कहा के मेरे पोते की पूरी दुनिया में तारीफ की जाएगी, इस लिये मैं ने यह नाम रखा है। फिर आप ﷺ की पैदाइश की खुशी में आप ﷺ के दादा ख़्वाजा अब्दुल मुत्तलिब ने अकीका किया और तमाम कुरैश को दावत दी।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — अबाबील परिन्दा

कुर्आन के बयान के मुताबिक़ अबाबील परिन्दों ने अबरहा के लश्कर को कंकरियों के ज़रिये हलाक किया था। अल्लाह तआला ने इन परिन्दों को बड़ी अक़्ल व ज़हानत अता फ़र्माई है, यह तिन्के और गारे से बड़ी महारत के साथ अपना घर बनाती हैं और अपने बच्चों को भी गंदगी से पाक साफ और बीट न करने की तालीम देती हैं, चमगादड़ उन के बच्चों का बड़ा दुश्मन है। इस लिये अपने बच्चों की हिफाज़त के लिये घर में अजवाइन की लकड़ियाँ रख देती हैं जिन की खुश्बू से वह उन के घर के क़रीब भी नहीं जाती। बिलाशुबा इस छोटे से परिन्दे की अक़्ल व ज़हानत अल्लाह की कुदरत की एक निशानी है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — वालिदैन के साथ अच्छा बर्ताव करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करो।"

[सूर-ए-बनी इस्राईल : २३]

फायदा : वालिदैन बड़ी मशक्क़त व मेहनत से बच्चों की परवरिश करते हैं, इस लिये वालिदैन के साथ अच्छाई का मामला करना और उन की ज़रूरियात को अपनी ताक़त और हैसियत के मुताबिक़ पूरी करना फर्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — खुशी के वक़्त सज्द-ए-शुक्र अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ को जब खुशी का मौका आता या कोई खुशखबरी सुनाई जाती, तो आप ﷺ सज्द-ए-शुक्र अदा करते।

[अबू दाऊद : २७७४, अन अबी बकरह رضي الله عنه]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	मुतल्लक़ा बेटी की कफालत करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने एक मर्तबा फ़र्माया : "क्या मैं तुम्हें बेहतरीन सदक़ा न बताऊं? तेरी वह लड़की जो लौट कर तेरे ही पास आ गई हो और उस के लिये तेरे सिवा कोई कमाने वाला न हो (तो ऐसी लड़की पर जो भी खर्च किया जाएगा वह बेहतरीन सदक़ा है।)" [इब्ने माजा : ३६६७, अन सुराक़ा बिन मालिक ؓ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	इल्मे दीन को छुपाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने इल्म को छुपाया, क़यामत के दिन उस को आग की लगाम पहनाई जाएगी।" [तबरानी कबीर : १०६८९, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	माल आरियत है

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ؓ फ़र्माते हैं : "तुम में से हर एक मेहमान है और उस का माल आरियत (उधार) है और मेहमान यानी (इन्सान इस दुनिया से) जाने वाला है और आरियत की चीज़ उस के मालिक को लौटानी पड़ेगी।" [शोअबुल ईमान : १०२४१]

नंबर (८) : आखिरत के बारे में	क़यामत के दिन काफिर की तमन्ना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "हम ने तुम को एक क़रीब आने वाले अज़ाब से डरा दिया है (जो उस दिन आएगा) जिस दिन आदमी अपने उन आमाल को देख लेगा, जो उस ने अपने हाथों से किये होंगे और उस दिन काफिर कहेगा, काश! मैं मिट्टी हो जाता।" [सूर-ए-नबा : ४०]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	गुर्दे की बीमारियों का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "पहलू के दर्द का सबब गुर्दे की नस है, जब वह हरकत करती है, तो इन्सान को तकलीफ होती है लिहाज़ा उस का इलाज गर्म पानी और शहेद से करो।"

[मुस्तदरक हाकिम : ८२३७, अन आयशा ؓ]

फाइदा : गुर्दे में जब पथरी वग़ैरह हो जाती है, तो कूल्हों में दर्द होता है, बल्के अकसर इसी दर्द ही की वजह से बीमारी का पता चलता है, उस का इलाज आप ﷺ ने यह बतलाया के गर्म पानी और शहद मिला कर पियो।

नंबर (१०) : कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम ऐसे अज़ाब से बचो, जो सिर्फ गुनाह करने वालों ही पर नहीं आएगा, बल्के गुनाह देख कर खामोश रहने वालों को भी अपनी पकड़ में लेगा, खूब जान लो के अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है।" [सूर-ए-अनफाल : २५]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हुज़ूर ﷺ की पैदाइश के वक़्त दुनिया पर असर

रसूलुल्लाह ﷺ की मुबारक पैदाइश से ५० दिन पहले असहाबे फील का वाक़िआ पेश आया, शाहे यमन अबरहा, हाथियों के एक बड़े लश्कर को ले कर बैतुल्लाह शरीफ को ढाने के लिये मक्का आया, मगर अल्लाह तआला ने उस पूरे लश्कर को तबाह कर के बैतुल्लाह की ख़ुद हिफाज़त फ़र्माई। मोअर्रिख़ीन का बयान है के जिस वक़्त हुज़ूर ﷺ पैदा हुए, ठीक उसी वक़्त किसरा के शाही महल में सख़्त ज़लज़ला आगया और उस के चौदा कन्गुरे गिर गए, इसी तरह फारस के आतिशकदे की आग, जो बराबर एक हज़ार साल से जल रही थी, एक दम से बुझ गई। गोया अल्लाह तआला की तरफ से एक तरह का यह एलान था के अब इस दुनिया में वह हस्ती पैदा हो चुकी है, जिन की अज़मत व बुलंदी का चरचा पूरी दुनिया में होगा। जो कुफ्र व शिर्क और गुमराही को ख़त्म कर के, ईमान व तौहीद का बीज बोएगा और तमाम बुरी आदतों को ख़त्म कर के लोगों को अच्छे अख़लाक़ सिखाएगा और जो किसी एक क़ौम, क़बीला व ख़ान्दान और मुल्क का नहीं बल्के क़यामत तक के लिये पूरी दुनिया का हादी व पैगम्बर होगा।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअजिज़ा — हज़रत रिफाआ رضي الله عنه की आँख का दुरुस्त होना

हज़रत रिफाआ رضي الله عنه फ़र्माते हैं : जंगे बद्र में मेरी आँख में एक तीर लगा जिस की वजह से आँख फूट गई, आप ﷺ ने उस पर थूक मुबारक लगा दिया और दुआ फ़र्माई, उस के बाद ऐसा हो गया जैसे मुझे कोई तक्लीफ ही नहीं पहोंची।

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह: १६९]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सब से पहले नमाज़ का हिसाब होगा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क़यामत में सब से पहले नमाज़ का हिसाब लिया जाएगा, अगर वह अच्छी और पूरी निकल आई, तो बाक़ी आमाल भी पूरे उतरेंगे और अगर वह ख़राब हो गई, तो बाक़ी आमाल भी ख़राब निकलेंगे।"

[तिर्मिज़ी : ४१३, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — अच्छी मौत की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : तक्लीफ़ और बीमारी की वजह से मौत की आरज़ू मत करो, अगर तुम यही चाहते हो, तो इस तरह दुआ करो :

((اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِيْ مَا كَانَتِ الْحَيٰوةُ خَيْرًا لِّيْ وَتَوَفَّنِيْ إِذَا كَانَتِ الْوَفَاةُ خَيْرًا لِّيْ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह! तू मुझे ज़िन्दा रख जब तक मेरा ज़िन्दा रहना मेरे हक़ में बेहतर हो और मुझे मौत दे अगर मरना मेरे हक़ में बेहतर हो।

[बुख़ारी : ५६७१, अन अनस बिन मालिक رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | अल्लाह की दी हुई रोज़ी पर राज़ी रहना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स अल्लाह तआला से थोड़ी रोज़ी पर राज़ी रहे, अल्लाह तआला भी उस की तरफ से थोड़े अमल पर राज़ी हो जाते हैं।"

[बैहक़ी फी शोअबिलईमान : ४४०९, अन अली رضی اللہ عنہ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | लड़की की पैदाइश को बुरा समझना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जब उन में से किसी को बेटी पैदा होने की ख़बर दी जाती है, तो उस का चेहरा रंज की वजह से काला पड़ जाता है और दिल ही दिल में घुटता रहता है और जिस लड़की की पैदाइश की उस को ख़बर दी गई है, उस की शरमिन्दगी की वजह से लोगों से छुपता फिरता है के उस को ज़िल्लत गवारा कर के रहने दे या उस को मिट्टी में छुपा दे, वह बहुत ही बुरा फैसला करते हैं।"

[सूर-ए-नहल : ५८ ता ५९]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया का धोका

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "ऐ इन्सान ! तुझे अपने रब की तरफ से किस चीज़ ने धोके में डाल रखा है (के तू दुनिया में पड़ कर उसे भुलाए रखता है हालाँके) उस ने तुझे पैदा किया (और) फिर तेरे तमाम आज़ा एक दम ठीक अन्दाज़ से बनाए। (फिर भी तू उस से ग़ाफिल है)।"

[सूर-ए-इन्फ़ितार : ६ ता ७]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | जन्नत की नहरें

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जन्नत में एक नहर पानी की, एक शहद की, एक दूध की और एक शराब की होगी।"

[तिर्मिज़ी : २५७१, अन मुआविया رضی اللہ عنہ]

नोट : जन्नत की शराब में न नशा होगा और न उस में बदबू होगी, बल्के बड़ी ख़ुश्बूदार और लज़ीज़ होगी।

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | सब से उमदा ग़िज़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "बेहतरीन ग़िज़ा मौसम का पहला फल है।"

[कंज़ुल उम्माल : २८२९०, अन अनस رضی اللہ عنہ]

नोट : यूँ तो मेवा और मौसमी फल सेहत को बरक़रार रखने और मौसमी बीमारियों से बचने का अहम नुस्ख़ा है, मगर मौसम का पहला फल ग़िज़ा के एतेबार से सब से उमदा होता है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से नसीहत करने की दरख़्वास्त की, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह से शर्म करो जैसे के तुम अपने ख़ान्दान के नेक और शरीफ आदमी से शर्म करते हो।"

[आदाबुस सोहबा लि अबी अब्दिर्रहमान सुलमी : १९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — रसूलुल्लाह ﷺ की परवरिश और ख़ानदान

रसूलुल्लाह ﷺ अरबीयुन नस्ल और अरब के बा इज़्ज़त क़बीला कुरैश के ख़ान्दान बनी हाशिम में पैदा हुए। खुद हुज़ूर ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला ने इस्माईल की नस्ल में से "कनाना" को मुमताज़ बनाया और कनाना में से "कुरैश" को इज़्ज़त अता फ़र्माई और कुरैश में "बनी हाशिम" को इम्तियाज़ बख़्शा और बनी हाशिम में से मुझे मुन्तख़ब फ़र्माया।" [मुस्लिम : ५९३८, अन वासिला ﷺ]

आप ﷺ की वालिदा बीबी आमिना ख़ान्दाने बनू ज़ोहरा की मोअज़्ज़ज़ ख़ातून थीं। पैदाइश के बाद आप ﷺ को सौबिया ने दूध पिलाया। अरब के शुरफा का दस्तूर था के बच्चों को परवरिश के लिये देहात की औरतों के हवाले करते थे, ताके वहाँ की साफ व शफ़्फ़ाफ हवा की वजह से बच्चे सेहतमन्द और तन्दरूस्त रहें। इसी दस्तूर के मुवाफिक़ आप ﷺ को दादा अबदुलमुत्तलिब ने हवाज़िन के क़बीला बनी सअद की एक शरीफ ख़ातून हज़रत हलीमा सादिया ﷺ के सुपुर्द किया। उन्होंने चार या पाँच साल तक आप ﷺ की परवरिश फ़र्माई, साल में दो मर्तबा आप ﷺ को मक्का ला कर वालिदा आमिना और दादा अब्दुल मुत्तलिब को दिखा जाती थीं।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — अंगूठा

अल्लाह तआला ने हमारे हाथ में उंगलियों के मुक़ाबले में अंगूठे को ताक़तवर बनाया है, उसी की मदद से हम खाने का लुक़्मा उठाते हैं और उसी के ज़रिये हम क़लम से लिखते हैं। उस के बग़ैर इन्सान किसी चीज़ को मज़बूती से नहीं पकड़ सकता, किसी उंगली के न होने की वजह से अंगूठा उस का बदल बन सकता है। यक़ीनन अंगूठा अल्लाह की बड़ी नेअमत है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ छोड़ने पर वईद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "नमाज का छोड़ना आदमी को कुफ़्र से मिला देता है।"

[मुस्लिम : २४६, अन जाबिर ﷺ]

दूसरी एक रिवायत में है के ईमान और कुफ़्र के दर्मियान नमाज़ छोड़ने का फ़र्क़ है।

[इब्ने माजा : १०७८, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — दस्तरख़्वान बिछा कर खाना

हज़रत अनस ﷺ फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने न कभी मेज़ पर और न तशतरियों में खाना खाया, पूछा गया फिर किस पर खाते थे? फ़र्माया : दस्तरख़्वान पर। [बुख़ारी : ५४१५]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	कुर्आने करीम देख कर पढना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया :"जो शख़्स कुर्आन को देख कर पढने का आदी होता है अल्लाह तआला उस को उस की आँखों से फायदा उठाने का मौक़ा देता है जब तक वह दुनिया में रहे।" (यानी उस की आँखों की बीनाई मौत तक बाक़ी रहती है।) [फज़ाइलुल कुर्आन लिर्राज़ी : १८/१, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	अज़ान के बाद मस्जिद से निकलना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने मस्जिद में अज़ान सुनी, फिर वह किसी ज़रूरत के बग़ैर मस्जिद से चला गया और उस का वापस आने का इरादा भी नहीं है, तो वह मुनाफिक है।"

[इब्ने माजा : ७३४, अन उसमान बिन अफ्फान ؓ]

ख़ुलासा : अज़ान की आवाज़ सुन कर बिला शरई ज़रूरत के एक सच्चे पक्के मुसलमान की शान नहीं है के वह मस्जिद से बाहर चला जाए, ऐसा करना मुनाफिक़ का अमल है।

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दो ख़्वाहिश मंद शख़्स

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दो हरीस ऐसे हैं जिन का दिल कभी नहीं भरता एक इल्म का हरीस जिस का दिल कभी नहीं भरता है और दूसरा दुनिया का हरीस उस का भी दिल कभी नहीं भरता।"

[मुस्तदरक : ३१२, अन अनस ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत के दिन अल्लाह के सामने खड़ा होना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "क्या यह लोग इस बात का यक़ीन नहीं रखते के यह एक बड़े सख़्त दिन में ज़िन्दा कर के उठाए जाएँगे, जिस दिन सारे इन्सान रब्बुलआलमीन के सामने खड़े होंगे।" [सूर-ए-ततफ़ीफ़ : ४ ता ६]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	हर क़िस्म के दर्द का इलाज

हज़रत इब्ने अब्बास ؓ फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ सहाब-ए-किराम को बुख़ार और हर क़िस्म के दर्द से नजात हासिल करने के लिये यह दुआ सिखाते थे :

((بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ، أَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ مِنْ شَرِّ كُلِّ عِرْقٍ نَّعَّارٍ، وَمِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ))

[तिर्मिज़ी : २०७५]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "ऐ लोगो ! अल्लाह के तुम पर जो एहसानात हैं उन को याद करो, क्या अल्लाह तआला के सिवा कोई और भी ख़ालिक़ है? जो तुम को ज़मीन व आसमान से रोज़ी पहुँचाता हो, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, फिर तुम कहाँ फिरे जा रहे हो ?" [सूर-ए-फ़ातिर : ३]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२६) रबीउल अव्वल

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत हलीमा सादिया ؓ के घर में बरकतें

अरब में सख्त क़हत पड़ा हुआ था, क़बील-ए-बनू सअद की औरतें बच्चों की परवरिश के लिये मक्का मुकर्रमा आई हुई थीं। उन्हीं में से हलीमा सादिया भी अपने शौहर हारिस बिन अब्दुल उज़्ज़ा के साथ दुबली पतली सवारी पर आई थीं। तक़रीबन सारी औरतें मक्का के मालदार घरानों के बच्चे ले चुकीं थीं, सिर्फ हज़रत हलीमा ही को कोई बच्चा नहीं मिला था, उन को मालूम हुआ के अब्दुल मुत्तलिब का पोता "मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह" अभी मौजूद है, मगर यतीम है और सारी औरतों ने उन की यतीमी को देख कर छोड़ दिया के जब उन के वालिद ही ज़िन्दा नहीं, तो भरपूर उजरत मिलने की उम्मीद भी नहीं है। हज़रत हलीमा हैरान थीं, खाली हाथ वापस होने की हिम्मत नहीं थी और उधर उन की यतीमी का खयाल था। बिलआखिर उन्होंने शौहर से मश्वरा करने के बाद आप ﷺ को परवरिश के लिये क़बूल कर लिया। उसी वक़्त से उन की आँखें आप ﷺ की वजह से बे पनाह बरकतों का मुशाहदा करने लगीं। वह कमज़ोर सवारी जो आते वक्त बार बार काफले से पीछे रह जाती थी, अब सब से आगे इतनी तेज़ रफ्तारी से चल रही थी के काफले वालों को कहना पड़ता के हालीमा! ज़रा आहिस्ता चलो; और घर पहुचं कर भी बरकतों का मुशाहदा होने लगा के बकरी का थन फ़ाक़े की वजह से खुश्क हो गया था, वह दूध से भर गया चुनान्चे उन्होंने और उन के शौहर ने पेट भर कर पिया। उस के बाद हज़रत हलीमा रोज़ाना आप ﷺ की वजह से बरकतों को देखती रहती थीं। सख्त क़हत साली के उस दौर में भी उन के घर में इतनी खुशहाली थीं, के क़बीले वाले हैरान थे और हर शख्स अपने चरवाहे को यह ताकीद करता के उसी जंगल में अपने जानवरों को भी चराओ जहाँ हलीमा की बकरियाँ चरती हैं।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हज़रत अली ؓ के दर्द का अच्छा होना

हज़रत अली ؓ कहते हैं: एक मर्तबा मुझे सख्त दर्द लाहिक़ हुआ के मैं मौत को याद करने लगा, आप ﷺ की खिदमते अक़दस में हाज़िर हुआ, आप ﷺ ने फ़र्माया: ऐ अल्लाह! इसे शिफा अता फ़र्मा। हज़रत अली ؓ कहते हैं: मैं उसी वक़्त अच्छा हो गया फिर आज तक वह दर्द मुझे नहीं हुआ।

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : २४२८]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — माँ के साथ हुस्ने सुलूक करना

एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में आकर अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ मेरे हुस्ने सुलूक का ज़ियादा हक़दार कौन है? फ़र्माया: "तेरी माँ, फिर अर्ज़ किया के उस के बाद कौन? फ़र्माया: तेरी माँ, फिर अर्ज़ किया के उस के बाद कौन? फ़र्माया: तेरी माँ, फिर अर्ज़ किया के उस के बाद कौन? फिर फ़र्माया: तेरा बाप।"

[बुखारी : ५९७१, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — क़ब्र में नूर की दुआ

जो शख्स यह चाहे के उस की क़ब्र में नूर हो तो यह दुआ पढ़े:

((اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ نُوْرًا فِيْ قَبْرِيْ))

तर्जमा: ऐ अल्लाह! मेरी क़ब्र में नूर पैदा फ़र्मा।

[तिर्मिज़ी : ३४१९, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	ख़ाला की ख़िदमत करना

रसूलुल्लाह ﷺ के पास एक आदमी आकर कहने लगा : या रसूलल्लाह ! मुझ से बहुत बड़ा गुनाह हो गया है, तौबा का कोई रास्ता है? तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क्या तुम्हारी वालिदा ज़िन्दा है?" तो उस ने कहा नहीं। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क्या तुम्हारी कोई ख़ाला है?" उस ने कहा : हाँ। तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया :"उन की इताअत व ख़िदमत करो।" [तिर्मिज़ी : १९०४, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	दुनिया कमाने की निय्यत से दीन पर चलना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है :"लोगों में कोई ऐसा भी है, जो किनारे पर खड़े हो कर अल्लाह की इबादत करता है, फिर अगर उस को कोई दुनियावी नफा पहुँच गया, तो उस की वजह से (दीन) पर ठहरा रहा और अगर उस को कोई आज़माइश आगई, तो अपने मुंह के बल उलटे (यानी दीन से) फिर गया, वह दुनिया और आख़िरत दोनों को खो बैठा, यह दोनों जहाँ का खुला हुआ नुक़सान है।" [सूर-ए-हज : ११]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया को बेहतर समझना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "(ऐ मुन्किरो !)तुम लोग दुनिया को आख़िरत पर तरजीह देते हो, हालाँकि आख़िरत (दुनिया के मुकाबले में) ज़ियादा बेहतर और बाक़ी रहने वाली है।" [सूर-ए-आला : १६ ता १७]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अल्लाह तआला हर शख़्स से बात करेंगे

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम में से कोई शख़्स भी ऐसा न होगा जिस से अल्लाह तआला इस तरह बात न करें के उस के और अल्लाह तआला के दर्मियान में न कोई परदा होगा न कोई वास्ता होगा, अपने दाई तरफ देखेगा तो वह आमाल होंगे जो दुनिया में किये होंगे (यानी नेक आमाल), बाईं तरफ़ देखेगा तो वह आमाल होंगे जो दुनिया में किये थे (यानी बुरे आमाल) वह जहन्नम की आग अपने सामने मौजूद पाएगा।" [बुख़ारी : ७५१२,१४१३ अन अदी बिन हातिम ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बुख़ार का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया :"जिसे बुख़ार आजाए वह तीन दिन गुस्ल के वक़्त यह दुआ पढ़े, तो (इन्शाअल्लाह) उसे शिफा हासिल होगी :"

((بِسْمِ اللهِ اَللّٰهُمَّ إِنَّمَا اغْتَسَلْتُ رَجَاءَ شِفَاءِكَ وَتَصْدِيْقَ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं ने तेरे नाम से गुस्ल किया, शिफा की उम्मीद करते हुए और तेरे नबी ﷺ की तस्दीक़ करते हुए। [इब्ने अबी शैबा : ७/१४५, अन मकहूल ؓ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाली चीज़ मौत को कसरत से याद किया करो।" [इब्ने माजा : ४२५८, अन अबी हुरैरह ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२७ रबीउल अव्वल

नंबर १: इस्लामी तारीख़ — रसूलुल्लाह ﷺ की यतीमी

हुज़ूर ﷺ की पैदाइश से पहले ही वालिद माजिद अब्दुल्लाह का मदीने में इन्तेक़ाल हो गया था और आप ﷺ यतीमी की हालत में पैदा हुए, जब उम्र मुबारक छ: साल की हुई, तो वालिदा सय्यिदा आमिना आप को लेकर अपने रिश्तेदारों से मिलने मदीना मुनव्वरा चली गईं। वापसी में मकामे अबवा में बीमार हुई और वहीं इन्तेक़ाल फ़र्मा गई। अब आप ﷺ अपनी महबूब माँ की शफक़त व मुहब्बत से भी महरूम हो गए। उस के बाद दादा अब्दुल मुत्तलिब की शफक़त में पले बढ़े। वह आप को दिल व जान से ज़ियादा चाहते थे, किसी वक़्त भी आप से ग़ाफिल नहीं रहते और काबे के साये में अपने साथ बिठाते थे, जब के खानदान में से किसी और को उन के साथ बैठने की हिम्मत नहीं होती थी। मगर दो साल बाद सिर्फ आठ साल की उम्र में आप के दादा अब्दुल मुत्तलिब भी दुनिया से चल बसे इस तरह यतीम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के सर से मुशफिक़ दादा का साया भी उठ गया। गोया अल्लाह तआला ने दुनिया की तरबियत व परवरिश के सारे असबाब को ख़त्म कर के ख़ुद अपनी ख़ुसूसी रहमत के तहत आप की तरबियत व निगरानी का इन्तेज़ाम फ़र्माया।

नंबर २: अल्लाह की क़ुदरत — बच्चे का मादरी ज़बान सीखना

अल्लाह तआला ने हर पैदा होने वाले बच्चे को अपनी माँ को पहचानने और दूध पीने की सलाहियत से नवाज़ा। हर बच्चा पैदाइश ही से अपने माँ बाप की नक़्ल व हरकत देखता रहता है, कुछ दिन बाद वह उन के इशारे और आवाज़ को भी समझने लगता है फिर जब वह बोलने के क़ाबिल होता है, तो आहिस्ता आहिस्ता मादरी ज़बान भी सीख लेता है, आख़िर इस छोटे से बच्चे को बग़ैर किसी तालीम के माँ बाप की पहचान किस ने कराई ? मादरी ज़बान सीखने और बोलने की कुव्वत किस ने अता फ़र्माई ? बेशक अल्लाह ही अपनी क़ुदरत से बच्चे को सब कुछ सिखाता है।

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — नेकियों का हुक्म करना और बुराइयों से रोकना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, तुम पर ज़रूरी और लाज़िम है के भलाइयों का हुक्म करो और बुराइयों से रोको, वरना क़रीब है के अल्लाह तआला गुनहगारों के साथ तुम सब पर अपना अज़ाब भेज दे, उस वक़्त तुम अल्लाह तआला से दुआ माँगोगे तो क़बूल न होगी।"

[तिर्मिज़ी : २१६९, अन हुज़ैफ़ा ؓ]

खुलासा : नेकियों का हुक्म करना और बुराइयों से रोकना उम्मत के हर फ़र्द पर अपनी हैसियत और ताक़त के मुताबिक़ लाज़िम और ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	बच्चों को सलाम करना

हजरत अनस बिन मालिक ﷺ बच्चों के पास से गुज़रे, तो बच्चों को सलाम किया और फ़र्माया : आप ﷺ भी इस तरह किया करते थे। [बुखारी : ६२४७]

नोट : बच्चों को सलाम करना आप ﷺ की सुन्नत है। ताके बचपन से ही एक दूसरे को सलाम करने की आदत बने।

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	बीमार की इयादत करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने बीमार की इयादत की या अपने किसी भाई की सिर्फ़ अल्लाह के वास्ते ज़ियारत की तो एक पुकारने वाला पुकारता है के तू भी पाकीज़ा है, तेरा चलना भी पाकीज़ा है और तू ने जन्नत में अपना एक मकाम बना लिया।" [तिर्मिज़ी : २००८, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	गुमशुदा चीज़ का एलान मस्जिद में करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस शख्स को मस्जिद में गुमशुदा चीज़ का एलान करते देखो, तो उस के जवाब में यह कह देना चाहिये के अल्लाह तआला तेरी चीज़ को वापस न करे, क्यों के मस्जिद इस एलान के लिये तामीर नहीं की गई।" [मुस्लिम : १२६०, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	आख़िरत के इरादे पर दुनिया मिलना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला दुनिया आख़िरत के इरादे पर देता है और दुनिया के इरादे पर आख़िरत देने से इन्कार करता है।" [कंज़ुल उम्माल : ७२३७, अन अनस ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत के दिन किसी को मुख़ालफत का इख़्तियार न होगा

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "क़यामत के दिन सब लोग बग़ैर किसी कजी और मुख़ालफत के एक पुकारने वाले (फरिश्ते) के पीछे चलेंगे और तमाम आवाज़ें रहमान के सामने पस्त हो जाएँगी, पाँव की आहट के सिवा उस रोज़ तुम कुछ न सुनोगे।" [सूर-ए-ताहा : १०८]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	सूर-ए-फातिहा से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "सूर-ए- फातिहा हर मर्ज़ की दवा है।"

[सुनने दारमी : ३४३३, अन अब्दुल मलिक बिन उमैर ﷺ]

फ़ायदा : अल्लामा इब्ने क़य्यिम رحمة الله عليه फ़र्माते हैं : अगर जिस्म में कहीं दर्द हो, तो दर्द की जगह हाथ रख कर सात मर्तबा "सूर-ए-फ़ातिहा" पढ़े इन्शाअल्लाह आराम मिलेगा। [तिब्बे नब्वी]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "ऐ ईमान वालो ! तुम सब पूरी तरह इस्लाम में दाख़िल हो जाओ और शैतान के पीछे मत चलो, यक़ीनन वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है।" [सूर-ए-बक़रह : २०८]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(२८) रबीउल अव्वल

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हुज़ूर ﷺ का शाम का पहेला सफर

दादा अब्दुल मुत्तलिब के इन्तेकाल के बाद हुज़ूर ﷺ अपने चचा अबू तालिब के साथ रहने लगे। वह अपनी औलाद से जियादा आप ﷺ से मुहब्बत करते थे, जब वह तिजारत की गर्ज से शाम जाने लगे, तो आप ﷺ अपने चचा से लिपट गए। अबू तालिब पर इस का बड़ा असर पड़ा और आप को सफर में साथ ले लिया। इस काफले ने शाम पहुँच कर 'मकामे बसरा' में कयाम किया। यहाँ बुहैरा नामी राहिब रहता था। जो ईसाय्यत का बड़ा आलिम था। उस ने देखा के बादल आप पर साया किय हुए है और दरख्त की टहनियाँ आप ﷺ पर झुकी हुई हैं। फिर उस ने अपनी आदत के बर खिलाफ इस काफले की दावत की। जब लोग दावत में गए, तो आप ﷺ को कम उम्र होने की वजह से एक दरख्त के पास बैठा दिया। मगर बुहैरा ने आप ﷺ को भी बुलवाया और अपनी गोद में बिठा कर मुहरे नुबुव्वत देखने लगा। उन्होंने तौरात व इन्जील में आखरी नबी ﷺ से मुतअल्लिक सारी निशानियों को आप ﷺ के अन्दर मौजूद पाया। फिर अबू तालिब से कहा के तुम्हारा भतीजा आखरी नबी बनने वाला है। इन को मुल्के शाम न लेजाना, वरना यहूदी कत्ल की कोशिश करेंगे। इन्हें वापस ले जाओ और यहूद से इन की हिफाजत करो, चुनान्चे अबू तालिब इस मुख्तसर सी गुफतगू के बाद आप ﷺ को ले कर बहिफाज़त मक्का मुकर्रमा वापस आगए।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — दाद का अच्छा होना

अबयज़ बिन हम्माल बयान करते हैं के मेरे चेहरे पर दाद था, जिस ने चेहरे को सफेद कर दिया था। मैं आप ﷺ की खिदमत में आया और उस की शिकायत की, तो आप ﷺ ने दुआ फ़र्माई और चेहरे पर अपना मुबारक हाथ फेरा, अभी रात भी न होने पाई थी के दाद खत्म हो गया।

[दलाइलिन्नुबुव्वह लिअबी नुऐम : ५४१]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — गुस्ल के लिये तयम्मुम करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "अगर तुम बीमार हो जाओ या सफर में हो या तुम में से कोई शख्स अपनी तबई ज़रूरत (यानी पेशाब पाख़ाना कर के) आया हो या अपनी बीवी से मिला हो और तुम पानी (के इस्तेमाल की) ताक़त न रखते हो, तो ऐसी हालत में तुम पाक मिट्टी का इरादा करो (यानी तयम्मुम कर लो)।"

[सूर-ए-मायदा : ६]

खुलासा : अगर किसी पर गुस्ल करना फर्ज हो जाए और पानी इस्तेमाल करने की ताक़त न हो, तो ऐसी सूरत में गुस्ल के लिये तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ना फर्ज है और गुस्ल के लिये तयम्मुम का तरीक़ा वही है जो वुज़ू के लिये तयम्मुम का तरीक़ा है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — बुढ़ापे में रिज़्क़ में बरकत की दुआ

बुढ़ापे में रिज़्क़ में बरकत के लिये यह दुआ पढ़ें :

((اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ اَوْسَعَ رِزْقِكَ عَلَيَّ عِنْدَ كِبَرِ سِنِّيْ وَانْقِطَاعِ عُمُرِيْ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मेरी बड़ी उम्र में अपना रिज़्क़ मुझ पर ज़ियादा कर दे।

[मुस्तदरक : १९८७, अन आयशा ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | मौत को कसरत से याद करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दिलों में भी ज़ंग लगता है, जैसे के लोहे में जब पानी लग जाता है।" तो पूछा गया (दिलों का ज़ंग) कैसे दूर होगा? रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मौत को ख़ूब याद करने और कुर्आन पाक की तिलावत से।"

[बैहकी फी शोअबिल ईमान : १९५८, अन इब्ने उमर ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | पाकदामन औरतों पर तोहमत लगाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो लोग पाकदामन औरतों पर (ज़िना की) तोहमत लगाते हैं, फिर अपने दावे पर चार गवाह न ला सकें, तो ऐसे लोगों को अस्सी कोड़े लगाओ और आइन्दा कभी उन की गवाही क़बूल न करो और यह लोग (सख़्त) गुनहगार हैं, मगर जो लोग इस तोहमत के बाद तौबा कर लें और अपनी इस्लाह कर लें, तो बेशक अल्लाह तआला बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।"

[सूर-ए-नूर : ४ ता ५]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया वालों का हाल

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "अल्लाह तआला जब इन्सान को आज़माता है, तो उस की रोज़ी उस पर तंग कर देता है, फिर वह शिकायत करता फिरता है के मेरे रब ने मेरी क़द्र घटा दी (हालांके) हरगिज़ ऐसा नहीं, बल्के तुम यतीमों की इज़्ज़त नहीं करते और मिस्कीनों को आपस में खाना खिलाने की तरग़ीब नहीं देते।" (जिस की वजह से ऐसा हुआ)

[सूर-ए-फज्र : १६ ता १८]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | क़यामत के दिन लोगों की हालत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क़यामत के दिन लोग आमाल के बक़द्र पसीने में होंगे, कोई तो पसीने में टख़्नों तक डूबा हुआ होगा और किसी के घुटनों तक पसीना होगा और किसी का हाल यह होगा के पाँव से लेकर मुँह तक पसीने में होगा, उस का पसीना लगाम की तरह मुँह में घुसा हुआ होगा।"

[मुस्लिम : ७२०६, अन मिक़दाद बिन अस्वद ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | दिल की कमज़ोरी का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम लोग सन्तरे का इस्तेमाल किया करो : क्योंकि यह दिल को मज़बूत बनाता है।"

[कंज़ुल उम्माल : २८२५३]

फायदा : मुहद्दिसीन तहरीर फ़र्माते हैं के सन्तरे का जूस पेट की गन्दगी को दूर करता है, क़ै और मतली को ख़त्म करता है और भूक बढ़ाता है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दावत देने वाले की दावत क़बूल कर लो और हदिया वापस मत करो और मुसलमानों को मत मारो।"

[सही इब्ने हिब्बान : ५६९४, अन इब्ने मसऊद ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

२९ रबीउल अव्वल

नंबर १: इस्लामी तारीख़ — हुज़ूर ﷺ की मुबारक ज़िन्दगी

रसूलुल्लाह ﷺ की तरबियत व परवरिश शुरू ही से अल्लाह तआला ने अपनी ख़ास रहमत से मख़्सूस तरीक़े पर फरमाई थी, बचपन से ही इन्तेहाई पाक व साफ ज़िन्दगी गुज़ारी। जिस माहौल में आप ﷺ पैदा हुए थे, उस में कुफ्र व शिर्क और बुत परस्ती आम थी, हर तरफ तरह तरह की बुराइयाँ और अख़्लाक़ी गन्दगियां फैली हुई थीं, मगर उस माहौल से दूर रह कर आप ﷺ ज़िन्दगी गुज़ारते, बुत परस्ती से आप ﷺ को तबअन नफरत थी। क़ौम में आप ﷺ सब से ज़ियादा शर्म व हया वाले और सच्ची गुफ्तगू करने वाले थे। रिश्तों का ख़याल रखते, लोगों का बोझ हलका करते और ज़रूरतें पूरी करते, वादे को पूरा करने का बहुत एहतेमाम करते थे, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबिल हमसा ﵁ बयान करते हैं के नुबुव्वत से पहले आप ﷺ से एक मामले पर मैं ने यह वादा किया के फिर आऊँगा। लेकिन मैं भूल गया और तीसरे दिन उधर आया, तो देखा के आप ﷺ अब तक वहीं इन्तेज़ार कर रहे हैं, उस के बावजूद मेरी इस वादा ख़िलाफी पर बिलकुल गुस्सा नहीं हुए और सिर्फ इतना कहा के तुम ने मुझे तकलीफ दी, मैं इसी जगह (तुम्हारे वादा करने की वजह से) तीन दिन से मौजूद हूँ।

नंबर २: अल्लाह की कुदरत — ज़लज़ला

अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत से ज़मीन को पानी पर पैदा फ़र्माया है और उस की हिफाज़त के लिये जगह जगह मज़बूत पहाड़ बना दिये हैं। जो ज़मीन को हिलने से रोके रखे हैं। अगर बहुत से लोग उस को मिल कर हिलाना चाहें तो नहीं हिला सकते, मगर अल्लाह तआला लोगों की इबरत और अपनी कुदरत को ज़ाहिर करने के लिये इस भारी ज़मीन में ज़लज़ला पैदा कर देता है। इस से भी ज़ियादा तअज्जुब की बात यह है के ज़मीन की सतह एक है मगर उस के बावजूद जहाँ अल्लाह चाहता है वहीं ज़लज़ला आता है। यह अल्लाह तआला की जबरदस्त ताक़त व कुदरत की निशानी है।

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — बग़ैर किसी उज़्र के नमाज़ क़ज़ा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स दो नमाज़ों को बग़ैर किसी उज़्र के एक वक़्त में पढ़े वह कबीरा गुनाहों के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े पर पहुँच गया।" [मुस्तदरक : १०२०, अन इब्ने अब्बास ﵁]

नंबर ४: एक सुन्नत के बारे में — चार चीज़ें अम्बिया की सुन्नत हैं

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "चार चीज़ें तमाम नबियों की सुन्नत हैं, निकाह करना, मिस्वाक करना, हया करना और ख़ुश्बू का इस्तेमाल करना।" [तिर्मिज़ी : १०८०, अन अबी अय्यूब ﵁]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	ख़ुश अख़्लाक़ी से पेश आना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अच्छे अख़्लाक़ ख़ताओं को इस तरह पिघला देते हैं जिस तरह पानी बर्फ को पिघाल देता है और बद ख़ुल्क़ी अमल को इस तरह खराब कर देती है जिस तरह सिरका शहद को खराब कर देता है।" [तबरानी कबीर : १०६२६, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	माल बढ़ाने के लिये सवाल करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स (लोगों से) इस लिये सवाल करता है के अपने माल में ज़ियादती करे, वह जहन्नम के अंगारे माँग रहा है जिस का दिल चाहे थोड़े माँग ले या ज़ियादा माँग ले।"

[मुस्लिम : २३९९, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया का कितना हिस्सा फायदेमंद है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "ऐ अबू ज़र ! दुनिया में से जो हिस्सा आख़िरत के लिये होगा वह तुझे नुक़सान नहीं देगा, नुक़सान वह देगा जो दुनिया ही के लिये हो।"

[कंज़ुल उम्माल : ८५८९, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत के रोज़ कोई किसी के काम नहीं आएगा

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "(क़यामत के दिन) कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे के गुनाहों का बोझ नहीं उठाएगा, अगर कोई बोझ से लदा हुआ (गुनहगार) किसी को अपना बोझ उठाने के लिये बुलाएगा, तब भी उस के बोझ में से कुछ न उठाया जाएगा, चाहे वह उस का रिश्तेदार ही क्यों न हो।" [सूर-ए-फातिर : १८]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	तरबूज़ के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ तरबूज़ को तर खजूर के साथ खाते और फ़र्माते के हम इस खजूर की गर्मी को तरबूज़ की ठंडक के ज़रिये और तरबूज़ की ठंडक को खजूर की गर्मी के ज़रिये खत्म करते हैं।

[अबू दाऊद : ३८३६, अन आयशा ﷺ]

फायदा : तरबूज़ गर्मी की शिद्दत को कम करता है और गर्मी की वजह से होने वाले सर दर्द में बे हद मुफीद है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम में से एक जमात ऐसी होनी चाहिये, जो नेकी व भलाई की तरफ बुलाए और नेक काम करने का हुक्म करे और बुराई से रोके।" [सूर-ए-आले इमरान : १०४]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(३०) रबीउल अव्वल

नंबर (१): इस्लामी तारीख | हुज़ूर ﷺ का हज़रत ख़दीजा ﵂ से निकाह

रसूलुल्लाह ﷺ का पहला निकाह मक्का की एक शरीफ ख़ातून खदीजा ﵂ बिन्ते खुवैलिद से हुआ। हज़रत ख़दीजा ﵂ एक दौलतमंद बेवा औरत थीं। इस से पहले उन की दो शादियाँ हो चुकी थीं। उन्होंने हुज़ूर ﷺ की अमानत व दियानत और हुस्ने अख़लाक़ जैसी सिफात को देख कर निकाह का पैग़ाम दिया था, हालाँकि इस से पहले कुरैश के बड़े बड़े सरदारों के पैग़ाम को ठुक्रा चुकी थीं। हुज़ूर ﷺ ने इस पैग़ाम का तज़केरा अपने चचा अबू तालिब से किया, जिस को उन्होंने बखुशी क़बूल कर लिया और अबू तालिब बनी हाशिम और मुज़र के सरदारों को ले कर हज़रत ख़दीजा ﵂ के मकान पर गए। अबू तालिब ने निकाह का खुतबा पढ़ा। उस वक़्त हज़रत ख़दीजा ﵂ की उम्र चालीस साल और आप ﷺ की उम्र शरीफ २५ साल थी। हज़रत ख़दीजा ﵂ आख़री वक़्त तक हुज़ूर ﷺ की जाँनिसार और ग़मख़्वार बीवी रहीं। उन की वफात के बाद भी हुज़ूर ﷺ उन की ख़ूबियों का तज़केरा करते रहते थे। हज़रत इब्राहीम ﵁ के अलावा आप ﷺ की सारी औलाद हज़रत ख़दीजा ﵂ से ही हैं।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा | जिस्म का खुश्बूदार हो जाना

हज़रत वाइल बिन हुज्र ﵁ बयान करते हैं मैं ने नबी ﷺ से मुसाफा किया या मेरा जिस्म आप ﷺ के जिस्म से छूगया तो मैं अपने हाथों में तीन दिन के बाद भी मुश्क की ख़ुश्बू महसूस करता था।

[तबरानी कबीर : १७५३६]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | तर्के जमात का अन्जाम

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﵁ से किसी ने पूछा के एक शख़्स दिन भर रोज़ा रखता है और रात भर नफलें पढ़ता है मगर जुमा और जमात में शरीक नहीं होता (उस के मुतआल्लिक़ क्या हुक्म है?) अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﵁ ने फ़र्माया : "यह शख़्स जहन्नमी है।" [तिर्मिज़ी : २१८, अन मुजाहिद ﵀]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | ज़लज़ला वग़ैरह से हिफाज़त की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ फ़र्माते :

((اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِعَظَمَتِكَ اَنْ اُغْتَالَ مِنْ تَحْتِيْ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं तेरी अज़मत के तुफैल, ज़मीन में धँस जाने से हिफाज़त चाहता हूँ।

[नसई : ५५३१, अन इब्ने उमर ﵁]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | **आपस में सलाम व मुसाफा करना**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दो मुसलमान जब आपस में मिलते हैं और मुसाफा करते हैं और उन दोनों में से हर एक दूसरे को देख कर मुस्कुराता है और यह तमाम अमल अल्लाह के लिये करता है, तो जुदा होने से पहले ही दोनों की मग़फिरत हो जाती है।" [तबरानी औसत : ७८४५, अन बरा बिन आज़िब ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | **अल्लाह और उस के रसूल को तक्लीफ़ देना**

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो लोग अल्लाह को नाराज़ करते हैं और उस के रसूल को तक्लीफ़ पहुँचाते हैं, तो उन पर अल्लाह तआला दुनिया व आख़िरत में लानत करता है और अल्लाह ने उन के लिये ज़लील व रुसवा करने वाला अज़ाब तय्यार कर रखा है।" [सूर-ए-अहज़ाब : ५७]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | **माल व औलाद की मुहब्बत**

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "माल व औलाद की कसरत (और दुनिया के सामान पर फख्र) ने तुम को (आखिरत से) ग़ाफिल कर दिया है यहाँ तक के तुम क़ब्रस्तान जा पहुँचते हो, हरगिज़ ऐसा न करो।"

[सूर-ए-तकासुर : १ ता २]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | **जहन्नमियों का रोना**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अहले दोज़ख़ पर रोने का अज़ाब मुसल्लत किया जाएगा तो वह इतना रोएँगे के आँसू ख़ुश्क हो जाएँगे, उस के बाद रोते हुए ख़ून बहाएँगे यहाँ तक के उन के चेहरों में गढ़े की तरह फटन पढ़ जाएँगी अगर उन में कश्तियों को छोड़ दिया जाए, तो वह (भी) उन में चल पड़ें।"

[इब्ने माजा : ४३२४, अन अनस ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | **लौकी(दूधी)से दिमाग़ की कमज़ोरी का इलाज**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम लौकी (दूधी) खाया करो, क्योंकि यह अक़्ल को बढ़ाती है और दिमाग़ को ताक़त देती है।" [कन्ज़ुल उम्माल : २८२७३, अन अनस ﷺ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

हज़रत इब्ने उमर ﷺ फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ एक आदमी को नसीहत करते हुए फ़र्मा रहे थे के गुनाह कम करो, तुम्हारे लिये मौत आसान हो जाएगी और क़रज़ा कम करो, आज़ादी की ज़िन्दगी गुज़ारोगे। [बैहक़ी फी शोअबिल ईमान : ५३१४, अन इब्ने उमर ﷺ]

रबीउस
सानी

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

① रबीउस सानी

नंबर ①: इस्लामी तारीख — हिलफुल फुज़ूल

अरब में ज़ुल्म व सितम और चोरी व डाका ज़नी आम थी, लोगों के हुकूक पामाल किये जाते और कमज़ोरों का हक़ दबाया जाता था। इस जुर्म में अवाम व ख़वास सभी मुब्तला थे। इसी तरह का एक मामला मक्का मुकर्रमा में भी पेश आया के एक सरदार ने बाहर के एक ताजिर से सामान ख़रीदा और पूरी क़ीमत नहीं दी। इस के बाद मक्का के चंद नेक लोगों ने अब्दुल्लाह बिन जुदआन के मकान पर जमा हो कर ज़ुल्म का मुक़ाबला करने और मज़लूम की मदद करने का मुआहदा किया। इस में रसूलुल्लाह ﷺ भी शरीक थे और उस वक़्त कम उम्र थे। उन लोगों ने इस मुआहदे का नाम "हिलफुल फुज़ूल" रखा था। आप ﷺ जब जवान हुए, तो आप ﷺ ने दोबारा क़बीले के बाहैसियत लोगों के सामने मुल्क की बद अमनी, मुसाफिरों और कमज़ोरों पर होने वाले ज़ुल्म व सितम का हाल बयान कर के उन को इस्लाह पर आमादा किया, बिलआख़िर एक अंजुमन क़ायम हो गई और बनू हाशिम, बनू अब्दिल मुत्तलिब, बनू सअद, बनू ज़ोहरा और बनू तमीम के लोग इस में शामिल हुए और हर मिम्बर ने मुल्क की बद अमनी दूर करने, मुसाफिरों की हिफाज़त और ग़रीबों की मदद करने और ज़ालिमों को ज़ुल्म से रोकने का अहद किया। इस मुआहदे से अल्लाह तआला की मख़्लूक़ को बहुत फायदा हुआ। हुज़ूर ﷺ नुबुव्वत के ज़माने में भी फ़र्माया करते थे के अगर आज भी कोई इस मुआहदे के नाम से मुझे बुलाए और मदद तलब करे तो ज़रूर उस की मदद करूँगा।

नंबर ②: अल्लाह की कुदरत — बिजली की कड़क

अल्लाह तआला बादलों के ज़रिये बारिश नाज़िल करता है और कभी उस से बिजली पैदा करता है, जिस की आवाज़ में बड़ी गरज और सख़्त कड़क होती है। अल्लाह तआला ने इस बिजली में रौश्नी और आवाज़ पैदा कर के अपनी कुदरत से रौशनी में इतनी तेज़ रफ्तारी पैदा कर दी के वह ज़मीन पर बिजली की आवाज़ से पहले पहुंच जाती है, फिर कभी इस बिजली को गिरा कर तबाही मचा देता है, गर्ज़ इन बादलों से बारिश और बिजली की गर्ज पैदा करना कुदरते ख़ुदावन्दी का ज़बरदस्त नमूना है।

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — जमात से नमाज़ अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने तक्बीरे ऊला के साथ चालीस दिन तक अल्लाह की रज़ा के लिये जमात के साथ नमाज़ पढ़ी उस के लिये दोज़ख़ से नजात और निफाक़ से बरात के दो परवाने लिख दिये जाते हैं।"

[तिर्मिज़ी : २४१, अन अनस बिन मालिक ﷺ]

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — तीन साँस में पानी पीना

हज़रत अनस ﷺ (पीने के वक़्त) दो या तीन साँस लेते और फ़र्माते के रसूलुल्लाह ﷺ भी तीन मर्तबा साँस लेते थे।

[बुख़ारी : ५६३१]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	बीवियों के साथ अच्छा सुलूक करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "ईमान वालों में ज़ियादा मुकम्मल ईमान वाले वह लोग हैं, जो अख़लाक़ में ज़ियादा अच्छे हैं और तुम में सब से अच्छे वह लोग हैं जो अपनी बीवियों के साथ अच्छा बरताव करते हैं।

[तिर्मिज़ी : ११६२, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	अजनबी औरत से मिलना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम में से किसी के सर में लोहे की कील ठोंक दिया जाना इस से बेहतर है के वह किसी ऐसी (अजनबी) औरत को छुए जो उस के लिये हलाल नहीं है।"

[तबरानी कबीर : १६८८०, अन मअ़किल बिन यसार رضي الله عنه]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	मौत और माल की कमी से घबराना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "आदमी दो चीज़ों को नापसन्द करता है (हालाँकि दोनों उस के लिये बेहतर हैं) एक मौत को, हालाँकि मौत फितनों से बचाव है, दूसरे माल की कमी को, हालाँकि जितना माल कम होगा उतना ही हिसाब कम होगा।"

[मुस्नदे अहमद : २३११३, महमूद बिन लबीद رضي الله عنه]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में	नाम-ए-आमाल के साथ बुलाया जाएगा

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "वह दिन याद करने के क़ाबिल है, जिस दिन हम नबियों को उन की उम्मत के साथ (मैदाने हश्र में) बुलाएँगे फिर जिन का नाम-ए-आमाल उन के दाहने हाथ में दिया जाएगा, वह (ख़ुश हो कर) अपने नाम-ए-आमाल को पढ़ेंगे और उन पर ज़र्रा बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।"

[सूर-ए-बनी इस्राईल : ७१]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	हर बीमारी का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला ने हर बीमारी के लिये दवा उतारी है, जब बीमारी को सही दवा पहुँच जाती है, तो अल्लाह तआला के हुक्म से बीमारी ठीक हो जाती है।"

[मुस्लिम : ५७४१, अन जाबिर رضي الله عنه]

नंबर (१०) : कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "ऐ आदम की औलाद ! तुम हर मस्जिद की हाज़री के वक़्त अच्छा लिबास पहन लिया करो और खाओ पियो और फ़ुज़ूल ख़र्ची मत किया करो, बेशक अल्लाह तआला फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वालों को पसन्द नहीं करता।"

[सूर-ए-आराफ़ : ३१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुरआन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हुज़ूर ﷺ का एक तारीख़ी फ़ैसला

रसूलुल्लाह ﷺ की नुबुव्वत से चंद साल क़ब्ल ख़ान-ए-काबा को दोबारा तामीर करने की ज़रूरत पेश आई। तमाम क़बीले के लोगों ने मिल कर ख़ान-ए-काबा की तामीर की, लेकिने जब हज्रे अस्वद को रखने का वक़्त आया, तो सख़्त इख़्तेलाफ़ पैदा हो गया, हर क़बीला चाहता था के उस को यह शर्फ़ हासिल हो, लिहाज़ा हर तरफ़ से तलवारें खिंच गईं और क़त्ल व ख़ून की नौबत आगई। जब मामला इस तरह न सुलझा, तो एक बूढ़े शख़्स ने यह राय दी के कल सुबह जो शख़्स सब से पहले मस्जिदे हराम में दाख़िल होगा वही इस का फ़ैसला करेगा। सब ने यह राय पसन्द की। दूसरे दिन सब से पहले नबीए करीम ﷺ दाख़िल हुए। आप ﷺ को देखते ही सब बोल उठे "यह अमीन हैं, हम उन के फ़ैसले पर राज़ी हैं।" आप ﷺ ने एक चादर मंगवाई और हज्रे अस्वद को उस पर रखा और हर क़बीले के सरदार से चादर के कोने पकड़वा कर उस को काबे तक ले गए और अपने हाथ से हज्रे अस्वद को उस की जगह रख दिया। इस तरह आप ﷺ के ज़रिये एक बड़े फ़ितने का ख़ात्मा हो गया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअजिज़ा — सौ साल की उम्र में भी बाल सफ़ेद न होना

अम्र बिन सालबा जोहनी رضی اللہ عنہ कहते हैं के मैं ने आप ﷺ से मक़ामे सियाला में मुलाक़ात की। मैं ने इस्लाम क़बूल किया, तो आप ﷺ ने मेरे सर पर अपना दस्ते मुबारक रखा, चुनान्चे हज़रत अम्र رضی اللہ عنہ ने सौ साल की उम्र में वफ़ात पाई लेकिन सर और चेहरे के जिस हिस्से पर आप ﷺ ने अपना दस्ते मुबारक रखा था वहाँ के बाल सफ़ेद न हुए।

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : २४७३]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — फज्र और अस्र पाबन्दी से अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हरगिज़ वह आदमी जहन्नम में दाख़िल नहीं हो सकता, जो सूरज निकलने से पहले फज्र की नमाज़ और सूरज गुरूब होने से पहले अस्र की नमाज़ पढ़े।"

[मुस्लिम : १४३६, अन अम्मारा बिन रुवैबह رضی اللہ عنہ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — दुनिया व आख़िरत में आफ़ियत की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : बन्दे की अपने रब से माँगी जाने वाली दुआओं में सब से अफ़ज़ल दुआ यह है :

((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ الْمُعَافَاةَ فِي الدُّنْيَا وَ الْآخِرَةِ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं दुनिया और आख़िरत में तुझ से आफ़ियत व भलाई का सवाल करता हूँ।

[इब्ने माजा : ३८५१, अन अबी हुरैरह رضی اللہ عنہ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	औरतों का चंद बातों पर अमल करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अगर औरत पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़े और रमज़ान शरीफ के रोज़े रखे और अपनी शर्मगाह की हिफाज़त करे और अपने शौहर की फ़र्मांबरदारी करे (तो क़यामत के दिन) उस से कहा जाएगा : तुम जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहो जन्नत में दाख़िल हो जाओ।"

[मुस्नदे अहमद : १६६४, अन अब्दुर्रहमान बिन औफ ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	अहेद और क़स्मों को तोड़ना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "यक़ीनन जो लोग अल्लाह तआला से अहेद कर के उस अहेद को और अपनी क़स्मों को थोड़ी सी क़ीमत पर फरोख़्त कर डालते हैं, तो ऐसे लोगों का आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं और न अल्लाह तआला उन से बात करेगा और न क़यामत के दिन (रहमत की नज़र से) उन की तरफ देखेगा और न उन को पाक करेगा और उन के लिये दर्दनाक अज़ाब होगा।"

[सूर-ए-आले इमरान : ७७]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया पर मुतमइन नहीं होना चाहिये

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जिन लोगों को हमारे पास आने की उम्मीद नहीं है और वह दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गए और उस पर वह मुतमइन हो बैठे और हमारी निशानियों से ग़ाफिल हो गए हैं, ऐसे लोगों का ठिकाना उन के आमाल की वजह से जहन्नम है। [सूर-ए-यूनुस : ७ ता ८]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत का मन्ज़र

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अगर (आख़िरत के हौलनाक अहवाल के मुतअल्लिक़) तुम्हें वह सब मालूम हो जाए जो मुझे मालूम है, तो तुम्हारा हँसना बहुत कम हो जाए और रोना बहुत बढ़ जाए।"

[बुख़ारी : ६४८६, अन अनस ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	शहेद से पेट के दर्द का इलाज

एक शख़्स रसूलुल्लाह ﷺ के पास आया और अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के रसूल ! मेरे भाई के पेट में तकलीफ है। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : शहेद पिलाओ। वह शख़्स गया और शहेद पिलाया, वापस आकर फिर वही शिकायत की, तो आप ﷺ ने फिर शहेद पिलाने का हुक्म फ़र्माया, वह शख़्स तीसरी मरतबा वही शिकायत ले कर आया, तो फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने शहेद पिलाने को कहा, वह फिर आया और अर्ज़ किया के इतनी बार शहेद पिलाने के बावजूद आराम नहीं हुआ, बल्के तकलीफ बढ़ती जा रही है, तो हुज़ूर ﷺ ने फ़र्माया : (कुर्आन में) अल्लाह ने सच कहा है (के शहेद में शिफा है) और तेरे भाई का पेट झूटा है, चुनान्चे वह शख़्स फिर वापस गया और शहेद पिलाया, तो उस का भाई अच्छा हो गया।

[बुख़ारी : ५६८४, अन अबी सईद ﷺ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला की ताज़ीम करो और उस के सामने सर झुकाओ अल्लाह तआला तुम्हारी मग़फिरत फ़र्मा देगा।" [मुस्नदे अहमद : २१२२७, अन अबी दर्दा ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

③ रबीउस सानी

नंबर ①: इस्लामी तारीख़ — हुज़ूर ﷺ ग़ारे हिरा में

नुबुव्वत मिलने का वक़्त जितना क़रीब होता गया, उतना ही रसूलुल्लाह ﷺ तन्हाई को ज़ियादा पसन्द करने लगे। सब से अलग हो कर अकेले रहने से आप को बड़ा सुकून मिलता था। आप अकसर खाने पीने का सामान ले कर कई कई दिन तक मक्का से दूर जाकर "हिरा" नामी पहाड़ के एक ग़ार में बैठ जाते और इब्राहीमी तरीक़े और अपनी पाक़िज़ा फितरत की रहनुमाई से अल्लाह की इबादत और ज़िक्र में मश्ग़ूल रहते थे। अल्लाह की क़ुदरत में ग़ौर व फ़िक्र करते रहते थे और क़ौम की बुरी हालत को देख कर बहुत गमज़दा रहते थे, जब तक खाना ख़त्म न होता था, आप शहर वापस नहीं आते थे। जब मक्का की वादियों से गुज़रते तो दरख़्तों और पत्थरों से सलाम करने की आवाज़ आती। आप दाएँ बाएँ और पीछे मुड़ कर देखते, तो दरख़्तों और पत्थरों के सिवा कुछ नज़र न आता था। इसी ज़माने में आप को ऐसे ख़्वाब नज़र आने लगे के रात में जो कुछ देखते वही दिन में ज़ाहिर होता था। यही सिलसिला चलता रहा के नुबुव्वत की घड़ी आ पहुँची और अल्लाह तआला ने आप को नुबुव्वत अता फ़र्माई।

नंबर ②: अल्लाह की क़ुदरत — इन्सान की हड्डियाँ

अल्लाह तआला ने इन्सानी जिस्म को हड्डी के ढांचे पर खड़ा किया है। यह हड्डियाँ इन्सानी जिस्म से कई गुना ज़ियादा वज़न उठाने की सलाहियत रखती हैं। जब इन्सान क़दम उठाता है, तो उस की हड्डी पर जिस्म से कई गुना ज़ियादा वज़न पड़ता है और कूल्हे की हड्डी तीन हज़ार किलो वज़न उठाने की सलाहियत रखती है वह स्टील से ज़ियादा मज़बूत और उस से दस गुना ज़ियादा लचक्दार और हल्की होती है। अगर यह हड्डियाँ भी स्टील की तरह वज़नी होतीं, तो उन का वज़न हमारे लिये नाक़ाबिले बरदाश्त हो जाता। बेशक उन हल्की फुल्की हड्डियों में स्टील से ज़ियादा कुव्वत व ताक़त पैदा फ़र्माना अल्लाह की ज़बरदस्त क़ुदरत है।

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — ज़कात अदा करना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ؓ इर्शाद फ़र्माते हैं के हमें नमाज़ क़ायम करने का और ज़कात अदा करने का हुक्म है और जो शख़्स ज़कात अदा न करे उस की नमाज़ भी (क़बूल) नहीं।

[तबरानी फिल कबीर : ९९५०]

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — छींक आए तो मुंह पर कपड़ा या हाथ रख ले

रसूलुल्लाह ﷺ को जब छींक आती, तो आवाज़ को आहिस्ता करते और चेहर-ए-मुबारक को कपड़े से, या हाथ से ढांक लेते।

[तिर्मिज़ी : २७४५, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अपने अहल व अयाल पर ख़र्च करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "एक वह दीनार जिसे तुम ने अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किया और एक वह दीनार जिसे तुम ने किसी गुलाम के आज़ाद करने में ख़र्च किया और एक वह दीनार जो तुम ने किसी ग़रीब को सदका किया और एक वह दीनार जो तुम ने अपने घर वालों पर ख़र्च किया तो इन में से उस दीनार का अज्र व सवाब सब से ज़ियादा है, जो तुम ने अपने अहल व अयाल पर ख़र्च किया।"

[मुस्लिम : २३११, अन अबी हुरैरह رضی الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	तिजारत में झूट बोलना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "ताजिर लोग बड़े गुनहगार होते हैं। लोगों ने कहा : या रसूलल्लाह ! क्या अल्लाह तआला ने तिजारत को हलाल नहीं किया? आप ﷺ ने फ़र्माया : "हाँ बेशक, लेकिन वह क़सम खा कर गुनहगार होते हैं और बात करते हुए झूट बोलते हैं।"

[मुस्तदरक : २१४५, अब्दुर्रहमान बिन शिब्ल رضی الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	बद नसीबी की पहेचान

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "चार चीज़ें बद नसीबी की पहेचान हैं। (१) आँखों का ख़ुश्क होना (के अल्लाह के ख़ौफ से किसी वक़्त भी आँसू न टपके) (२) दिल का सख़्त होना (के आख़िरत के लिये या किसी दूसरे के लिये किसी वक़्त भी नर्म न पड़े।) (३) उम्मीदों का लम्बा होना। (४) दुनिया की हिर्स व लालच का होना।"

[तरग़ीब व तरहीब : ४७४१, अन अनस رضی الله عنه]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जन्नत वालों का इनाम व इकराम

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "(जन्नती लोग) जन्नत में सलाम के अलावा कोई बेकार व बेहुदा बात नहीं सुनेंगे और जन्नत में सुबह व शाम उन को खाना (वगैरह) मिलेगा। यही वह जन्नत है, जिस का मालिक हम अपने बन्दों में से उस शख़्स को बनाएँगे, जो अल्लाह से डरने वाला होगा।"

[सूर-ए-मरयम : ६२ ता ६३]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	नींद न आने का इलाज

हज़रत ज़ैद बिन साबित رضی الله عنه ने हुज़ूर ﷺ से नींद न आने की शिकायत की, तो आप ﷺ ने फ़र्माया : यह पढ़ा करो : ((اَللّٰهُمَّ غَارَتِ النُّجُوْمُ وَهَدَأَتِ الْعُيُوْنُ وَأَنْتَ حَيٌّ قَيُّوْمٌ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ أَنِمْ عَيْنِيْ وَأَهْدِئْ لَيْلِيْ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! सितारे छुप गए और आँखें पुर सुकून हो गईं, तू हमेशा ज़िन्दा और क़ायम रहने वाला है, ऐ हमेशा ज़िन्दा और क़ायम रहने वाले ! मेरी आंख को सुला दे और मेरी रात को पुरसुकून बना दे।

[मुअ्जमेल कबीर लित तबरानी : ४६८३]

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम फ़क्र व फ़ाक़ा की वजह से अपनी औलाद को क़त्ल न करो, हम उन को भी रोज़ी देते हैं और तुम को भी।"

[सूर-ए-बनी इस्राईल : ३१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

४ रबीउस सानी

नंबर ①: इस्लामी तारीख — हुज़ूर ﷺ को नुबुव्वत मिलना

जब दुनिया में बसने वाले इन्सान ज़लालत व गुमराही में भटकते हुए आख़री हद तक पहुँच गए, तो अल्लाह तआला ने उन की हिदायत व रहनुमाई का फैसला फ़र्माया और शिर्क व बुत परस्ती से निकाल कर ईमान व तौहीद की दौलत से नवाज़ने का इरादा किया और जिस रौशनी की आमद का एक ज़माने से इन्तेज़ार हो रहा था, उस के ज़ाहिर होने का वक़्त आगया और महरूम व बद नसीब दुनिया की क़िस्मत जाग उठी, रसूलुल्लाह ﷺ ग़ारे हिरा में अल्लाह की इबादत और ज़िक्र व फ़िक्र में मशगूल थे के आप ﷺ के पास हज़रत जिब्राईल عليه السلام आए और उन्होंने कहा के पढ़िये ! आप ﷺ ने फ़र्माया: मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ ! आप ﷺ फ़र्माते हैं : उस के बाद उन्होंने मुझे पकड़ कर इतना दबाया के मेरी कुव्वत निचोड़ दी, फिर मुझे छोड़ दिया और कहा पढ़िये ! मैं ने कहा : मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। उन्होंने दोबारा पकड़ कर दबाया, फिर कहा पढ़िये ! मैं ने कहा : मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। उन्होंने मुझे तीसरी मर्तबा पकड़ कर दबाया और छोड़ दिया फिर कहा पढ़िये ! ﴿اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ۝ خَلَقَ الْإِنسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝ اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ ۝ الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝ عَلَّمَ الْإِنسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۝﴾ चुनान्चे मैं पढ़ने लगा। यह पाँच आयतें नाज़िल हुई। जो सब से पहली वही थी और नुबुव्वत का पहला दिन था यहीं से वही का सिलसिला चला जो आख़िरी वक़्त तक जारी रहा।

नंबर ②: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — ज़ख्मी हाथ का अच्छा हो जाना

एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ खाना खा रहे थे, इतने में हज़रत जरहद अस्लमी हाज़िरे ख़िदमत हुए, हुज़ूर ﷺ ने फ़र्माया : खाना खा लीजिये, हज़रत जरहद رضي الله عنه के दाहने हाथ में कुछ तकलीफ थी, लिहाज़ा उन्होंने अपना बायाँ हाथ बढ़ाया, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : दाहने हाथ से खाओ, हज़रत जरहद ने फ़र्माया : इस में तकलीफ है, तो आप ﷺ ने उन के हाथ पर फूँक मारी , तो वह ऐसा ठीक हुआ के उन को मौत तक फिर वह तकलीफ महसूस नहीं हुई।

[तबरानी कबीर : २१०८]

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — फराइज़ की अदायगी का सवाब

एक आदमी रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! अगर मैं इस बात की शहादत दूँ के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप अल्लाह के सच्चे रसूल हैं और पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ता रहूँ और ज़कात देता रहूँ और रमज़ान के रोज़े रखा करूँ और उस की रातों में इबादत किया करूं तो मेरा शुमार किन लोगों में होगा ? आप ﷺ ने फ़र्माया : तुम्हारा शुमार सिद्दिक़ीन और शोहदा में होगा।"

[सही इब्ने हिब्बान : ३५०७, अन अम्र बिन मुर्रह رضي الله عنه]

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — हिकमत के लिये दुआ

हिकमत और सलाह व तक़्वा हासिल करने के लिये यह दुआ पढ़ें :

﴿رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ﴾

तर्जमा : ऐ हमारे परवरदिगार ! हमें हिकमत अता फ़र्मा और नेक लोगों के साथ शामिल फ़र्मा।

[सूर-ए-शुअरा : ८३]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	दुआ कराने वाले की दुआ पर आमीन कहेना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब कुछ लोग जमा हों और उन में से कोई एक आदमी दुआ करे और दूसरे आमीन कहें तो अल्लाह तआला उन की दुआ क़बूल फ़र्माता है।"

[हाकिम : ५४७८, अन हबीब बिन मसलमा ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	फसाद फैलाने की सज़ा

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्मता है : "जो लोग अल्लाह और उस के रसूल से लड़ते हैं, ज़मीन में फसाद करने की कोशिश करते हैं, ऐसे लोगों की बस यही सज़ा है के वह क़त्ल कर दिये जाएं या सूली पर चढ़ा दिये जाएँ या उन के हाथ और पाँव मुख़ालिफ जानिब से काट दिये जाएं या वह मुल्क से बाहर निकाल दिये जाएँ। यह सज़ा उन के लिये दुनिया में सख़्त रुसवाई (का ज़रिया) है और आख़िरत में उन के लिये बहुत बड़ा अज़ाब है।" [सूर-ए-मायदा : ३३]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	अल्लाह की चाहत दुनिया नहीं

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम तो दुनिया का माल व असबाब चाहते हो और अल्लाह तआला तुम से आख़िरत को चाहते हैं।" [सूर-ए-अन्फाल : ६७]

फायदा : इन्सान हर वक़्त दुनियावी फायदे में मुन्हमिक रहता है और उसी को हासिल करने की फिक्र में लगा रहता है, हालाँके अल्लाह तआला चाहते हैं के दुनिया के मुक़ाबले में आख़िरत की फिक्र ज़ियादा की जाए, क्योंकि आख़िरत में हमेशा रहना है।

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	सब से पहले ज़िन्दा होने वाले

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हम दुनिया में सब से आख़िर में आए हैं, लेकिन कल हश्र (यानी आख़िरत में जब सब को जमा किया जाएगा) तो हम सब से पहले ज़िन्दा किये जाएँगे।"

[बुख़ारी : ८७६, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बिच्छू के ज़हेर का इलाज

हज़रत अली ؓ फ़र्माते हैं : एक रात रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ पढ़ रहे थे के नमाज़ के दौरान एक बिच्छू ने आप ﷺ को डंक मार दिया, रसूलुल्लाह ﷺ ने उस को मार डाला। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फ़र्माया : अल्लाह बिच्छू पर लानत करे, यह न नमाज़ी को छोड़ता है और न ग़ैरे नमाज़ी को, फिर पानी और नमक मंगवा कर एक बर्तन में डाला और जिस उंगली पर बिच्छू ने डंक मारा था, उस पर पानी डालते और मलते रहे और सूर-ए-फलक़ व सूर-ए-नास पढ़ कर उस जगह पर दम करते रहे।

[बैहक़ी फी शोअबिल ईमान : २४७१]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तवाज़ो इख़्तेयार करो, कोई शख़्स दूसरे के सामने फख़्र न करे और न एक दूसरे पर ज़ियादती करे।" [मुस्लिम : ७२१०, अन अयाज़ ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

५ रबीउस सानी

नंबर (१): इस्लामी तारीख — पहली वही के बाद हुज़ूर ﷺ की हालत

ग़ारे हिरा में हुज़ूर ﷺ को नुबुव्वत मिलने और वही उतरने का जो वाक़िआ पेश आया था, वह ज़िन्दगी का पहला वाकिआ था, इस लिये फ़ितरी तौर पर आप को घबराहट महसूस हुई और इसी हालत में घर तशरीफ लाये और कहा के "زَمِّلُوْنِیْ زَمِّلُوْنِیْ" (मुझे चादर उढ़ा दो मुझे चादर उढ़ा दो) चुनान्चे हज़रत ख़दीजा ؓ ने चादर उढ़ा दी और आप लेट गए। जब कुछ देर के बाद सुकून हुआ, तो सारा वाक़िआ आप ﷺ ने हज़रत ख़दीजा ؓ से बयान फ़र्माया। वह आप ﷺ की जाँनिसार और अक़्लमन्द बीवी थीं, उन्होंने आप ﷺ को तसल्ली दी और कहा के आप नेकी करते हैं, सद्क़ा देते हैं, ज़रूरतमन्दों को खाना खिलाते हैं। अल्लाह तआला आप को हरगिज़ ज़ाए नहीं करेगा। फिर वह अपने चचाज़ाद भाई वरक़ा बिन नौफल के पास ले गईं, वह तौरात व इन्जील के बड़े आलिम थे। उन से सारा वाक़िआ बयान किया। उन्होंने कहा के ख़दीजा! यह तो वही फरिश्ता है जो हज़रत मूसा ؑ के पास आया करता था और यह इस उम्मत के नबी हैं। काश! मैं उस वक़्त तक ज़िन्दा रहूं जब क़ौम इन को निकाल देगी ताके मैं मदद करूं। हुज़ूर ﷺ ने फ़र्माया : "क्या मेरी क़ौम मुझे मक्का से निकाल देगी? वरक़ा बिन नौफल ने कहा : हाँ! जो नबी आए हैं, उन के साथ क़ौम ने इसी तरह का मामला किया है।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — हाथी

अल्लाह तआला ने दीगर जान्वरों के मुक़ाबले में हाथी को बड़ा डील डोल और ज़बरदस्त ताक़त अता फ़र्माई है, उस के पैर मज़बूत इमारत के चार सुतून की तरह मज़बूत दिखाई देते हैं, कान बड़े पंखे की तरह मालूम होते हैं। आँखें आम जानवरों से भी छोटी होती हैं, सब से ज़ियादा अनोखी चीज़ उस की सूँढ है जिस की मदद से वह उन पहाड़ी जंगलात में जहाँ मशीनें और क्रेन नहीं जा सकती, वहाँ उन की जिस्मानी ताक़त और सूँढ की मदद से बड़े बड़े दरख़्तों को उखाड़ लिया जाता है। आख़िर इन्सान की ज़रूरत पूरी करने के लिये अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से कैसे कैसे जानवर पैदा किये।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — तमाम आमाल का दारोमदार नमाज़ की सेहत पर

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क़यामत के दिन सब से पहले नमाज़ का हिसाब होगा, अगर नमाज़ अच्छी हुई तो बाक़ी आमाल भी अच्छे होंगे और अगर नमाज़ ख़राब हुई तो बाक़ी आमाल भी ख़राब होंगे।"

[तर्ग़ीब व तरहीब : ५१६, अन अब्दुल्लाह बिन क़ुर्त ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — मिस्वाक दाँतों की चौड़ाई में करना

रबीआ बिन अकसम ؓ फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ दाँतों की चौड़ाई में (यानी दाएँ से बाएँ और बाएँ से दाएँ) मिस्वाक फ़र्माते थे।

[सुनने कुबरा लिलबैहक़ी : ४०/१]

नंबर (५): *एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत*	**बवक़्ते इस्तिन्जा क़िब्ले की तरफ मुंह और पीठ न करना**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स पाख़ाना पेशाब करते वक़्त क़िब्ले की तरफ रुख नहीं करता और न पीठ करता है, उस के लिये एक नेकी लिख दी जाती है और एक गुनाह मिटा दिया जाता है।"

[तबरानी औसत : १३७५, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६): *एक गुनाह के बारे में*	**ज़कात न देने वाला**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "ज़कात का अदा न करने वाला क़यामत के दिन जहन्नम में जाएगा।"

[तबरानी सग़ीर : १३४, अन अनस बिन मालिक رضي الله عنه]

नंबर (७): *दुनिया के बारे में*	**दुनिया को मक़सद बनाने का अन्जाम**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स अल्लाह का हो जाता है, तो अल्लाह तआला उस की ज़रूरियात का कफील बन जाता है और उस को ऐसी जगह से रोज़ी पहुंचाता है जहाँ से उस का वहम व गुमान भी नहीं होता। और जो शख़्स मुकम्मल तौर पर दुनिया की तरफ झुक जाता है, तो अल्लाह तआला उसे दुनिया के हवाले कर देता है।"

[बैहक़ी शोअबुल ईमान : १०९०, अन इमरान बिन हुसैन رضي الله عنه]

नंबर (८): *आख़िरत के बारे में*	**क़यामत के दिन पहाड़ों का हाल**

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "लोग आप से पहाड़ों के बारे में सवाल करते हैं। तो आप फ़र्मा दीजिये के मेरा रब उन को बिल्कुल उड़ा देगा, फिर वह ज़मीन को हमवार मैदान कर देगा, तुम उस में कोई टेढ़ा पन और बुलन्दी नहीं देखोगे।"

[सूर-ए-ताहा : १०५ ता १०७]

नंबर (९): *तिब्बे नब्वी से इलाज*	**बुख़ार व दीगर बीमारियों से नजात**

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने सहाब-ए-किराम رضي الله عنهم को बुख़ार और दूसरी तमाम बीमारियों से नजात के लिये यह दुआ बताई :

((بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ، اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ مِنْ شَرِّ كُلِّ عِرْقٍ نَعَّارٍ، وَمِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ))

तर्जमा : मैं अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बहुत बड़ा है, मैं बहुत ही ज़ियादा अज़मत वाले अल्लाह की पनाह माँगता हूँ, हर जोश मारने वाली रग की बुराई से और आग की गर्मी की बुराई से।

[तिर्मिज़ी : २०७५]

नंबर (१०): *कुर्आन की नसीहत*	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "बेशक अल्लाह और उस के फरिश्ते हुज़ूर ﷺ पर रहमत भेजते हैं। ऐ ईमान वालो! तुम भी उन पर दरूद और सलाम भेजा करो।

[सूर-ए-अहज़ाब : ५६]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा

(क़ुरआन व हदीस की रौशनी में)

६ रबीउस सानी

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — दावत व तब्लीग़ का हुक्म

नुबुव्वत मिलने के बाद भी हुज़ूर ﷺ बदस्तूर ग़ारे हिरा जाया करते थे। शुरू में सूर-ए-अलक़ की इब्तेदाई पाँच आयतें नाज़िल हुईं, फिर कई दिनों तक कोई वही नाज़िल नहीं हुई। उस को "फतरतुलवह्य" का ज़माना कहते हैं। एक रोज़ आप ﷺ ग़ारे हिरा से तशरीफ ला रहे थे के एक आवाज़ आई, आप ﷺ ने चारों तरफ घूम कर देखा, मगर कोई नज़र नहीं आया। जब निगाह ऊपर उठाई, तो देखा के ज़मीन व आस्मान के दर्मियान हज़रत जिब्रईल ؑ एक तख़्त पर बैठे हुए हैं। हज़रत जिब्रईल ؑ को इस हालत में देख कर आप पर ख़ौफ तारी हो गया और घर आकर चादर ओढ़ कर लेट गए। आप ﷺ की यह अदा अल्लाह तबारक व तआला को पसन्द आई और सूर-ए-मुद्दस्सिर की इब्तेदाई आयतें नाज़िल फ़र्माईं। ऐ कपड़े में लिपटने वाले ! खड़े हो जाइये और (लोगों को) डराइये और अपने पर्वरदिगार की बड़ाई बयान कीजिये और अपने कपड़ों को पाक साफ रखिये और हर क़िस्म की नापाकी से दूर रहिये। [सूर-ए-मुद्दस्सिर : १ ता ५] इस तरह आप को दावत व तब्लीग़ का हुक्म भी दिया गया, चुँके पूरी दुनिया सदियों से शिर्क व बुत परस्ती में मुब्तला थी और खुल्लम खुल्ला दावत देना मुश्किल था, इस लिये शुरू में पोशीदा तौर पर आप ने इस्लाम की दावत देना शुरू की। आप की दावत से औरतों में सब से पहले आप की ज़ौज-ए-मुहतरमा हज़रत ख़दीजा ؓ ने, मरदों में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ؓ ने और बच्चों में हज़रत अली ؓ ने इस्लाम क़बूल किया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हज़रत हन्ज़ला ؓ के हक़ में दुआ

हज़रत हन्ज़ला ؓ के सर पर बचपन में आप ﷺ ने हाथ फेरा और उन के हक़ में दुआ फ़र्माइ थी, चुनान्चे (उस दुआ की बरकत यह हुई के) अगर किसी आदमी या जानवर के बदन में तकलीफ होती तो उस को हज़रत हन्ज़ला ؓ के पास ले आते, हज़रत हन्ज़ला ؓ अपने हाथ में थोड़ा सा थूक लेते और अपने सर पर रख कर यह कहते ((بِسْمِ اللهِ عَلٰى أَثَرِ يَدِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ)) फिर वह हाथ मरीज़ के बदन पर फेरते तो उस की तकलीफ दूर हो जाती। [बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : २४७०]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — पानी न मिलने पर तयम्मुम करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "पाक मिट्टी मुसलमान का सामाने तहारत है, अगरचे दस साल तक पानी न मिले, पस जब पानी पाए तो चाहिये के उस को बदन पर डाले यानी उस से वुज़ू या गुस्ल कर ले, क्योंकि यह बहुत अच्छा है।" [अबू दाऊद : ३३२, अन अबी ज़र ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — किसी मुसलमान को हंसता देखे तो यह दुआ पढ़े

जब किसी मुसलमान को हँसता हुआ देखे तो यह दुआ पढ़े :

((أَضْحَكَ اللهُ سِنَّكَ))

तर्जमा : अल्लाह आप को मुस्कुराता रखे। [बुख़ारी : ३२९४, अन सअद बिन अबी वक़्क़ास ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	लोगों से अपनी ज़रूरत छुपाए रखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स भूका हो, या उस को कोई और ख़ास हाजत हो और वह अपनी उस भूक और हाजत को लोगों से छुपाए रखे (यानी उन के सामने ज़ाहिर कर के उन से सवाल न करे) तो अल्लाह तआला के ज़िम्मे है के उस को हलाल तरीक़े से एक साल का रिज़्क़ अता फ़र्माए।"

[शोअबुल ईमान लिलबैहकी : ९६९८ अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	हलाल को हराम समझना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "ऐ ईमान वालो ! अल्लाह ने तुम्हारे लिये जो पाक व लज़ीज़ चीज़ें हलाल की हैं, उन को अपने ऊपर हराम न किया करो और (शरई) हुदूद से आगे मत बढ़ो, बेशक अल्लाह तआला हद से आगे बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता। [सूर-ए-माइदा : ८७]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	नेअ्मत अता करने में अल्लाह तआला का क़ानून

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "अल्लाह जब किसी क़ौम को कोई नेअ्मत अता करता है तो उस नेअ्मत को उस वक़्त तक नहीं बदलता जब तक वह लोग ख़ुद अपनी हालत को न बदलें। यक़ीनन अल्लाह तआला बड़ा सुनने वाला और जानने वाला है।" [सूर-ए-अनफाल : ५३]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत किन लोगों पर आएगी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क़यामत सिर्फ बद तरीन लोगों पर ही आएगी।"

[मुस्लिम : ७४०२, अन इब्ने मसऊद ؓ]

फायदा : जब तक इस दुनिया में एक शख़्स भी अल्लाह का नाम लेने वाला ज़िन्दा रहेगा, उस वक़्त तक दुनिया का निज़ाम चलता रहेगा, लेकिन जब अल्लाह का नाम लेने वाला कोई न रहेगा और सिर्फ बद तरीन और बुरे लोग ही रह जाएँगे, तो उस वक़्त क़यामत क़ायम की जाएगी।

नंबर (९): कुर्आन से इलाज	मुअव्वज़तैन से बीमारी का इलाज

हज़रत आयशा ؓ फ़र्माती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ जब बीमार होते तो मुअव्वज़तैन ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ﴾ और ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾ पढ़ कर अपने ऊपर दम कर लिया करते थे। [मुस्लिम : ५७१५]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "(अगर किसी से मिलने जाओ तो अन्दर दाख़िल होने से पहले) तीन मर्तबा इजाज़त तलब करो, अगर इजाज़त मिल जाए तो ठीक है वरना वापस लौट जाओ।"

[मुस्लिम : ५६३३, अन अबी मुसा अशअरी ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — सफा पहाड़ पर इस्लाम की दावत

नुबुव्वत मिलने के बाद रसूलुल्लाह ﷺ तीन साल तक पोशीदा तौर पर दीन की दावत देते रहे, फिर अल्लाह तआला की तरफ से हुज़ूर ﷺ को खुल्लम खुल्ला इस्लाम की दावत देने का हुक्म हुआ, इस हुक्म के बाद रसूलुल्लाह ﷺ ने सफा पहाड़ की चोटी पर चढ़ कर मक्का के तमाम ख़ान्दान वालों को आवाज़ दी, जब सब लोग जमा हो गए, तो आप ﷺ ने फ़र्माया : "ऐ लोगो ! अगर मैं तुम से यह कहूँ के इस पहाड़ के पीछे एक लश्कर आ रहा है जो अनक़रीब तुम पर हमला करने वाला है, तो क्या तुम इस बात का यक़ीन करोगे?" सब एक ज़बान हो कर बोले : "क्यों नहीं ! आप तो सादिक़ और अमीन हैं।" फिर आप ﷺ ने फ़र्माया : "लोगो ! एक अल्लाह पर ईमान लाओ और बुतों की इबादत छोड़ दो, मैं तुम को एक सख़्त अज़ाब से डराने और आगाह करने आया हूँ, जो बिल्कुल तुम्हारे सामने है।" यह सुन कर सभी लोग सख़्त नाराज़ हुए, उन में आप ﷺ का सगा चचा अबू लहब आप ﷺ के साथ सख़्त कलामी से पेश आया, जिस के जवाब में अल्लाह तआला ने अबू लहब और उस की बीवी उम्मे जमील की तबाही के बारे में सूर-ए-लहब नाज़िल फ़र्माई।

नंबर २ : अल्लाह की क़ुदरत — रेडियम

अल्लाह तआला ने इस कारख़ान-ए-आलम में मुख़्तलिफ क़िस्म की क़ीमती चीज़ें पैदा फ़र्माई हैं, इन चीज़ों में एक क़ीमती चीज़ रेडियम भी है, यह एक चमकती हुइ चीज़ है, जो सोने से कई गुना ज़ियादा क़ीमती होता है। इस का वजूद पूरी दुनिया में चन्द सेर से ज़ियादा नहीं। इस क़ीमती जौहर के अन्दर बग़ैर बिजली या तेल के इस क़द्र चमक किस हस्ती ने पैदा फ़र्माई? बेशक यह अल्लाह तआला ही की क़ुदरत का करिश्मा है।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — हज किन लोगों पर फर्ज़ है

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "अल्लाह के वास्ते उन लोगों के ज़िम्मे बैतुल्लाह का हज करना (फर्ज़) है, जो वहाँ तक पहुँचने की ताक़त रखते हों।" [सूर-ए-आले इमरान : ९७]

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — गुस्ल करने का सुन्नत तरीक़ा

रसूलुल्लाह ﷺ जब गुस्ले जनाबत फ़र्माते, तो सब से पहले हाथ धोते, फिर सीधे हाथ से बाएँ हाथ पर पानी डालते, फिर इस्तिन्जे की जगह धोते, फिर जिस तरह नमाज के लिये वुज़ू किया जाता है उसी तरह वुज़ू करते, फिर पानी ले कर अपनी उंगलियों के ज़रिये सर के बालों की जड़ों में दाख़िल करते, फिर तीन दफा दोनों हाथ भर कर यके बाद दीगरे सर पर पानी डालते, फिर सारे बदन पर पानी बहाते और सब से अख़ीर में दोनों पाँव धोते। [मुस्लिम : ७१८, अन आयशा رضي الله عنها]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत
नर्म मिज़ाजी इख़्तियार करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क्या मैं तुम को ऐसे शख़्स की ख़बर न दूँ जो दोज़ख़ के लिये हराम है और दोज़ख़ की आग उस पर हराम है? (दोज़ख़ की आग हराम है) हर ऐसे शख़्स पर जो तेज़ मिज़ाज न हो बल्के नर्म हो, लोगों से क़रीब होने वाला हो, नर्म ख़ू हो।"

[तिर्मिज़ी : २४८८, अन अब्दुल्लाह बिन मसऊद ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में
सूद खाने का अज़ाब

रसूलुल्लाह ﷺ फ़र्माते हैं के मेअ्राज की शब मेरा गुज़र चंद ऐसे लोगों पर हुआ जिन के पेट घड़ों के मानिन्द बड़े बड़े थे, जिस में साँप थे, जो पेट के बाहर से नज़र आते थे, मैं ने हज़रत जिब्राईल ؑ से पूछा: यह कौन लोग हैं? तो फ़र्माया : यह सूद खाने वाले हैं। [इब्ने माजा : २२७३, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में
दुनिया के पीछे भागने का वबाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स दुनिया के पीछे पड़ जाए, उस का अल्लाह तआला से कोई तअल्लुक़ नहीं और जो (दुनियावी मक़्सद के लिये) अपने आप को ख़ुशी से ज़लील करे, उस का हम से कोई तअल्लुक़ नहीं।" [मोअ्जमे औसत लित तबरानी : ४७८, अन अबी ज़र ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में
जहन्नम का जोश

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जब जहन्नम (क़यामत के झुटलाने वालों) को दूर से देखेगी, तो वह लोग (दूर ही से) उस का जोश व ख़रोश सुनेंगे और जब वह दोज़ख़ की किसी तंग जगह में हाथ पाँव जकड़ कर डाल दिये जाएंगे, तो वहाँ मौत ही मौत पुकारेंगे। (जैसा के मुसीबत में लोग मौत की तमन्ना करते हैं।)" [सूर-ए-फ़ुरक़ान : १२ ता १३]

नंबर (९): क़ुर्आन से इलाज
बे होशी का इलाज

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ؓ ने एक बे होश शख़्स के कान में कुछ पढ़ कर दम किया, जिस से वह होश में आगया, तो आप ﷺ ने दरयाफ़्त फ़र्माया : तुम ने क्या पढ़ा? उन्होंने अर्ज़ किया : ﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا﴾ से आख़िर सूर-ए-मोमिनून यानी ﴿وَقُل رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ﴾ तक पढ़ा। आप ﷺ ने फ़र्माया : "अगर कोई शख़्स पूरे यक़ीन के साथ इस को पढ़ कर पहाड़ पर दम कर दे, तो वह भी अपनी जगह से हट जाए।" [इब्ने सुन्नी : ६३१]

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ ईमान वालो! अगर कोई फ़ासिक तुम्हारे पास कोई ख़बर ले कर आए, तो उस की तहक़ीक़ कर लिया करो, कहीं ऐसा न हो, के तुम किसी क़ौम को अपनी ला इल्मी से कोई नुक़्सान पहुँचा दो, फिर तुम को अपने किये पर पछताना पड़े। [सूर-ए-हुजरात : ६]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — रसूलुल्लाह ﷺ की चचा अबू तालिब से गुफ्तगू

जब रसूलुल्लाह ﷺ लोगों की नाराज़गी की परवा किये बग़ैर बराबर बुत परस्ती से रोकते रहे और लोगों को सच्चे दीन की दावत देते रहे, तो कुरैश के सरदारों ने आप ﷺ के चचा अबू तालिब से शिकायत की, के तुम्हारा भतीजा हमारे माबूदों को बुरा भला कहता है, हमारे बाप दादाओं को गुमराह कहता है जिसे हम बरदाश्त नहीं कर सकते, इस लिये या तो आप उन की हिमायत बंद कर दें या फिर आप भी उन की तरफ से फ़ैसला कुन जंग के लिये मैदान में आजाएँ, यह सुन कर अबू तालिब घबरा गए और हुज़ूर ﷺ को बुला कर कहा : मुझ पर इतना बोझ न डालो, के मैं न उठा सकूँ। चचा की ज़बान से यह बात सुन कर आप ﷺ की आँखों में आँसू भर आए और आप ﷺ ने फ़र्माया : चचा जान ! अल्लाह की क़सम ! अगर यह लोग मेरे एक हाथ में सूरज और दूसरे हाथ में चाँद ला कर रख दें, तब भी मैं अपने इस काम से बाज़ न आऊँगा, या तो अल्लाह का दीन ज़िन्दा होगा या मैं इस रास्ते में हलाक हो जाऊँगा।" हुज़ूर ﷺ की इस गुफ्तगू का अबू तालिब पर बड़ा असर हुआ, चुनान्चे उन्होंने कहा : "जिस तरह चाहो तब्लीग करो, मैं तुम्हें किसी के हवाले नहीं करूँगा।" अबू तालिब का यह जवाब सुन कर कुफ्फ़ारे मक्का मायूस हो कर चले गए।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हज़रत सअद رضي الله عنه के हक़ में दुआ

आप ﷺ ने हज़रत सअद رضي الله عنه के हक़ में दुआ फ़र्माई : ऐ अल्लाह ! सअद की दुआएँ क़बूल फ़र्मा। (इस का असर यह हुआ के हज़रत सअद رضي الله عنه जो दुआ माँगते थे वह कबूल हो जाती थी।)

[तिर्मिज़ी : ३७५१, अन सअद बिन अबी वक़्क़ास رضي الله عنه]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ छोड़ने पर वईद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "नमाज़ का छोड़ना मुसलमान को कुफ्र व शिर्क तक पहुँचाने वाला है।"

[मुस्लिम : २४७, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — नफा न पहुँचाने वाली नमाज़ से पनाह माँगना

हज़रत अनस رضي الله عنه का बयान है के रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ फ़र्माते थे :

((اَللّٰهُمَّ إِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ صَلَاةٍ لَا تَنْفَعُ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ उस नमाज़ से जो नफा न पहुँचाती हो। [अबू दाऊद : १५४९]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	ज़बान और शर्मगाह की हिफाज़त करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: "जो शख़्स मुझे अपनी ज़बान और शर्मगाह की हिफाज़त की ज़मानत दे दे, मैं उस के लिये जन्नत की ज़मानत लेता हूँ।" [बुख़ारी : ६४७४, अन सहल बिन सअद ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	बुराई से न रोकने का वबाल

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो क़ौमें तुम से पहले हलाक हो चुकी हैं, उन में ऐसे समझदार लोग न हुए, जो लोगों को मुल्क में फसाद फैलाने से मना करते, सिवाए चन्द लोगों के - - - - - - जिन को हम ने अज़ाब से बचा लिया।" [सूर-ए-हूद : ११६]

ख़ुलासा : मतलब यह है के हर एक के लिये भलाई का हुक्म और बुराई से रोकना ज़रूरी है वरना अज़ाब में मुब्तला कर दिया जाएगा।

नंबर (७): दुनिया के बारे में	रिज़्क़ देने वाला अल्लाह है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "ज़मीन पर चलने फिरने वाला कोई भी जानदार ऐसा नहीं के जिस की रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे न हो।" [सूर-ए-हूद : ६]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जहन्नमी हथौड़े

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अगर जहन्नम के लोहे के हथौड़े से पहाड़ को मारा जाए, तो वह रेज़ा रेज़ा हो जाएगा, फिर वह पहाड़ दोबारा अपनी असली हालत पर लौट आएगा।"

[मुस्नदे अहमद : ११३७७, अन अबी सईद ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	ज़ख़्म वग़ैरह का इलाज

हज़रत आयशा ؓ फ़र्माती हैं : अगर किसी को कोई ज़ख़्म हो जाता या दाना निकल आता, तो आप ﷺ अपनी शहादत की उंगली को (थूक के साथ) मिट्टी में रख कर यह दुआ पढ़ते :

((بِسْمِ اللّٰهِ تُرْبَةُ أَرْضِنَا بِرِيقَةِ بَعْضِنَا يُشْفَى بِهٖ سَقِيْمُنَا بِإِذْنِ رَبِّنَا))

तर्जमा : अल्लाह के नाम से हमारी ज़मीन की मिट्टी हम में से किसी के थूक के साथ मिली हुई लगाता हूँ, (ताके) हमारे रब के हुक्म से हमारा मरीज़ अच्छा हो जाए। [मुस्लिम : ५७१९]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अपने मालों को ज़कात के ज़रिये महफ़ूज़ बनाओ। और अपने बीमारों का सदके से इलाज करो। और बला व मुसीबत की मौजों का दुआ और अल्लाह तआला के सामने आजिज़ी से इस्तिक़बाल करो।" [तबरानी कबीर : १००४४, अन इब्ने मसऊद ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

⑨ रबीउस सानी

नंबर ① : इस्लामी तारीख़ — कुफ्फार का हुज़ूर ﷺ को तकलीफें पहुँचाना

जैसा के हर दौर के लोगों ने अपने ज़माने के नबी का इन्कार किया और उन के साथ बुरा सुलूक किया, ऐसे ही बल्के इस से भी ज़ियादा बुरा सुलूक नबीए करीम ﷺ के साथ कुफ्फारे मक्का ने किया, चुनान्चे हुज़ूर ﷺ का इर्शाद है : "तमाम नबियों में, मैं सब से ज़ियादा सताया गया हूँ।" कुफ्फारे मक्का ने आप ﷺ को और आप ﷺ के सहाबा को सताने में कोई कसर न छोड़ी, कोई आप ﷺ के रास्ते में काँटे बिछाता, तो कोई आप ﷺ का मज़ाक उड़ाता, कोई शाइर और कोई जादूगर कहता, तो कोई पागल और दीवाना, कभी शरीरों ने नमाज़ की हालत में आप ﷺ के जिस्मे मुबारक पर ऊंट की ओझड़ी डाली, तो कभी आप ﷺ के गले में चादर का फंदा डाल कर खींचा, इसी दीन की ख़ातिर रसूलुल्लाह ﷺ की दो बेटियों को तलाक़ दी गई, मगर रसूलुल्लाह ﷺ बराबर सब्र व इस्तेक़ामत के साथ अल्लाह के दीन की तब्लीग़ में मश्गूल रहे और कुफ्फारे मक्का आप ﷺ को तकलीफें पहुँचाने के बावजूद दीने हक़ की तब्लीग़ से रोकने में नाकाम रहे।

नंबर ② : अल्लाह की कुदरत — पत्तों में ख़ुदा की कुदरत

अल्लाह तआला ने जिस तरह इन्सानी जिस्म में ख़ून की गरदिश के लिये रगें बनाई, इसी तरह पत्तों के अन्दर भी पानी सपलाई करने के लिये बारीक जाल बिछा दिया। यह पौदे को पानी और गर्मी पहुँचाने का काम करते हैं। अगर यह बारीक मसामात पत्तों के ऊपर होते, तो सूरज की गर्मी से बचने के लिये पौदे से पानी को निकालते रहते जिस के नतीजे में पौदा सूख जाता। मगर अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत से उन मसामात को पत्तों के अन्दर बना कर पौदों को सूखने से महफ़ूज़ कर दिया।

नंबर ③ : एक फ़र्ज़ के बारे में — दीनी इल्म हासिल करना ज़रूरी है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "इल्म (दीनी) का हासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।"

[इब्ने माजा : २२४, अन अनस बिन मालिक رضي الله عنه]

नंबर ④ : एक सुन्नत के बारे में — ज़ोहर से पहले की चार रकात सुन्नत पढ़ना

हज़रत आयशा رضي الله عنها बयान फ़र्माती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ज़ोहर से पहले चार रकात और फज्र से पहले की दो रकात कभी नहीं छोड़ते थे।

[बुख़ारी : ११८२]

नंबर ⑤ : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — तहज्जुद की निय्यत कर के सोना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो आदमी अपने बिस्तर पर लेटते वक़्त रात को उठ कर (तहज्जुद की) नमाज़ पढ़ने की निय्यत करे फिर नींद के ग़लबे की वजह से सुबह हो जाए तो निय्यत के मुताबिक़ उस को नमाज़ का सवाब मिलेगा और (हुस्ने निय्यत की वजह से) उस का सोना अल्लाह की तरफ से उस के लिये सदक़ा है।"

[नसई : १७८८, अन अबी दरदा رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	हराम माल से सदक़ा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तू माल की ज़कात अदा कर दे, तो जो (वाजिब) हक़ तुझ पर था, वह तो अदा हो गया (आगे सिर्फ नवाफिल का दरजा है) और जो शख़्स हराम तरीक़े (सूद रिश्वत वग़ैरह) से माल जमा कर के सदक़ा करे, उस को उस सदक़े का कोई सवाब नहीं मिलेगा, बल्के उस हराम कमाई का वबाल उस पर होगा।" [इब्ने हिब्बान : ३२८५, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनियावी ख़्वाहिशों को पूरा करने का अन्जाम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स दुनिया में अपनी ख़्वाहिशों को पूरा करता है, वह आख़िरत में अपनी ख़्वाहिशात के पूरा करने से महरूम होता है।"

[बैहक़ी फी शोअबिल ईमान : ९३९०, अन बरा बिन आज़िब ؓ]

नोट: अपनी तमाम चाहतों को इसी दुनिया में पूरी करने की कोशिश नहीं करनी चाहिये वरना आख़िरत में महरूम हो जाएगा।

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले जन्नत की नेअ्मतें

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "परहेज़गारों के लिये (आख़िरत में) अच्छा ठिकाना है, हमेशा रहने वाले बाग़ात हैं, जिन के दरवाज़े उन के लिये खुले हुए होंगे, वह उन बाग़ों में तकिये लगाए बैठे होंगे, वह वहाँ (जन्नत के ख़ादिमों से) बहुत से मेवे और पीने की चीज़ें मंगाएँगे और उन लोगों के पास नीची नज़रों वाली हम उम्र हुरें होंगी।" [सूर-ए-साद : ४९ ता ५२]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	हर मर्ज़ का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम में से कोई शख़्स बीमार हो जाए या किसी के भाई को तकलीफ हो, तो यह दुआ पढे : ((رَبَّنَا اللّٰهُ الَّذِیْ فِی السَّمَاءِ، تَقَدَّسَ اِسْمُكَ، أَمْرُكَ فِی السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ، كَمَا رَحْمَتُكَ فِی السَّمَاءِ فَاجْعَلْ رَحْمَتَكَ فِی الْأَرْضِ، اِغْفِرْلَنَا حُوْبَنَا وَ خَطَايَانَا أَنْتَ رَبُّ الطَّيِّبِيْنَ أَنْزِلْ رَحْمَةً مِنْ رَّحْمَتِكَ وَشِفَاءً مِنْ شِفَاءِكَ عَلٰی هٰذَا الْوَجَعِ)) (इन्शा अल्लाह) ठीक हो जाएगा।"

[अबू दाऊद : ३८९२, अन अबी दरदा ؓ]

फ़ायदा : इस दुआ को मरीज़ पढ़ता रहे या और कोई पढ़ कर उस पर दम करे।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "मुसलमान आपस में एक दूसरे के भाई हैं (अगर उन के दर्मियान लड़ाई हो जाए) तो अपने दो भाइयों के दर्मियान सुलह करा दिया करो, और अल्लाह से डरते रहा करो, ताके तुम पर रहम किया जाए।" [सूर-ए-हुजरात : १०]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

१० रबीउस सानी

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — मुसलमानों पर कुफ्फार का ज़ुल्म व सितम

कुफ्फार व मुशरिकीन मुसलमानों पर बहुत ज़ियादा ज़ुल्म व सितम ढाते थे और दीने हक़ क़बूल करने की वजह से उन के साथ इन्तेहाई बे रहमाना सुलूक करते थे। चुनान्चे उमय्या बिन ख़ल्फ़ अपने गुलाम हज़रत बिलाल हबशी ﷺ को तपती हुई रेत पर कभी पीठ के बल लिटा कर तो कभी पेट के बल लिटा कर भारी पत्थर रख देता और उन्हें मारते हुए इस्लाम छोड़ने को कहता, मगर इस हालत में भी हज़रत बिलाल ﷺ "अहद अहद" कहते रहते यानी एक ही ख़ुदा को पुकारते। इसी तरह हज़रत अम्मार बिन यासिर ﷺ और उन के वलिदैन जब मुसलमान हुए, तो कुफ्फार उन्हें बे पनाह तकलीफें पहुँचाते थे। जब हुज़ूर ﷺ उन के पास से गुज़रते, तो उन की हालते ज़ार को देख कर फ़र्माते : यासिर के ख़ान्दान वालो ! सब्र करो, तुम्हारा ठिकाना जन्नत है। हज़रत अम्मार बिन यासिर ﷺ के वालिद और वालिदा को मुशरिकीन ने तकलीफ पहुँचाते हुए शहीद कर डाला था। अलग़र्ज़ कुफ्फार ने मुसलमानों को तकलीफ पहुँचाने में कोई कमी नहीं छोड़ी, गुलामों से ले कर मुअज़्ज़ज़ लोगों तक को सताया गया, दरख़्तों पर लटकाया गया, पैरों में रस्सियाँ बाँध कर घसीटा गया, पेट और पीठ पर पत्थर की तपती हुई सिलें भी रखी गई। ग़र्ज़ हर तरह मुसलमानों को ज़ुल्म व सितम का निशाना बनाया गया। मगर सहाब-ए-किराम को ईमान से नहीं हटा सके। सहाबा ने तमाम मुसीबतों को बरदाश्त कर के दीने हक़ को सीने से लगाए रखा। رضی اللہ عنہم ورضوا عنہ

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — आप ﷺ के कुरते की बरकत

हज़रत असमा बिन्ते अबी बक्र ﷺ के पास आप ﷺ का एक कुरता था, मदीने में जो भी बीमार होता उस कुरते को धो कर बीमारों को उस का पानी पिलातीं और बीमारों के बदन में उस को लगातीं तो उसे शिफा हासिल हो जाती।

[मुस्लिम : ५४०९]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — अमानत का वापस करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "अल्लाह तआला तुम को हुक्म देता है के जिन की अमानतें हैं उन को लौटा दो।"

[सूर-ए-निसा : ५८]

फायदा : अगर किसी ने किसी शख़्स के पास कोई चीज़ अमानत के तौर पर रखी हो, तो मुतालबे के वक़्त उस का अदा करना ज़रूरी है।

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — मोहताजगी व ज़िल्लत से पनाह माँगना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : फ़क्र व मोहताजगी और ज़िल्लत से इस तरह पनाह माँगा करो :

((نَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الْفَقْرِ وَالْقِلَّةِ وَالذِّلَّةِ وَأَنْ نَظْلِمَ أَوْ نُظْلَمَ))

तर्जमा : हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं, फ़क्र व फाका और ज़िल्लत से और इस से के हम किसी पर ज़ुल्म करें, या हम पर कोई ज़ुल्म करे।

[इब्ने माजा : ३८४२, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	हलाल रोज़ी हासिल करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने हलाल रोज़ी खाई और सुन्नत के मुताबिक़ अमल किया और लोग उस के ज़ुल्म से महफ़ूज़ रहे, तो वह जन्नत में दाख़िल होगा।"

[मुस्तदरक : ७०७३, अन अबी सईद ख़ुदरी ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	शिर्क करने वाले की मिसाल

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम सिर्फ अल्लाह की तरफ मुतवज्जेह रहो, उस के साथ किसी को शरीक मत ठहराओ और जो शख़्स अल्लाह के साथ शिर्क करता है, तो उस की मिसाल ऐसी है जैसा के वह आसमान से गिर पड़ा हो, फिर परिन्दों ने उस की बोटियाँ नोच ली हों या हवा ने किसी दूर दराज़ मक़ाम पर ले जाकर उसे डाल दिया हो।"

[सूर-ए-हज : ३१]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनियावी ज़िन्दगी धोका है

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "दुनियावी ज़िन्दगी तो कुछ भी नहीं सिर्फ धोके का सौदा है।"

[सूर-ए-आले इमरान : १८५]

फ़ायदा : जिस तरह माल के ज़ाहिर को देख कर ख़रीदार फँस जाता है, इसी तरह इन्सान दुनिया की चमक दमक से धोका खा कर आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाता है, इसी लिये इन्सानों को दुनिया की चमक दमक से होशियार रहना चाहिये।

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत किस दिन क़ायम होगी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम्हारे दिनों में अफ़ज़ल दिन जुमा का दिन है, इसी रोज़ हज़रत आदम ؑ को पैदा किया गया, इसी रोज़ उन का इन्तेक़ाल हुआ, इसी रोज़ सूर फूँका जाएगा और इसी दिन क़यामत क़ायम होगी।"

[अबू दाऊद : १०४७, अन औस बिन औस ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	नज़रे बद का इलाज

एक शख़्स को नज़र लग गई, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उस के सीने पर हाथ मार कर यह दुआ फ़र्माई :

((اَللّٰهُمَّ أَذْهِبْ عَنْهُ حَرَّهَا وَبَرْدَهَا وَوَصَبَهَا))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! इस की गर्मी, इस की ठंडक और तकलीफ को दूर कर दे। चुनान्चे वह शख़्स (ठीक हो कर) खड़ा हो गया।

[मुस्नदे अहमद : १५२७३, अन आमिर बिन रबीआ ؓ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम में से किसी का खाना हाज़िर हो जाए और उस के पैरों में चप्पल हो, तो उस को निकाल दे इस लिये के यह पैरों के लिये राहत बख़्श और सुन्नत भी है।"

[मुअजमे अबी याला : २९६, अन अनस बिन मालिक ؓ]

ख़ुलासा : चपल, जूते उतार कर खाना खाना चाहिये।

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

११ रबीउस सानी

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — मुसलमानों की हिजरते हबशा

जब कुफ्फार व मुशरिकीन ने मुसलमानों को बेहद सताना शुरू किया, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने सहाब-ए-किराम रज़ि. को इजाज़त दे दी के जो चाहे अपनी जान और ईमान की हिफाज़त के लिये मुल्के हबशा चला जाए। वहाँ का बादशाह किसी पर ज़ुल्म नहीं करता, वह एक अच्छा मुल्क है। उस के बाद सहाबा की एक छोटी सी जमात माहे रज्जब सन ५ नबवी में हबशा रवाना हुई। उन में ख़लीफ-ए-राशिद हज़रत उसमान ग़नी रज़ि. और उन की ज़ौज-ए-मुहतरमा और हुज़ूर ﷺ की साहबज़ादी हज़रत रुक़य्या रज़ि. भी थीं। कुफ्फार ने इन लोगों की हिजरत की खबर सुन कर पीछा किया, मगर कुफ्फार के पहुँचने से पहले ही कशतियाँ जिद्दा की बंदरगाह से निकल चुकी थीं। हबशा पहुँच कर मुसलमान अमन व सुकून से जिन्दगी गुज़ार रहे थे। उन के बाद और लोगों ने भी हिजरत की जिन की तादाद सौ से ज़ाइद थी और उस में हुज़ूर ﷺ के चचाज़ाद भाई हज़रत जाफर तय्यार रज़ि. भी थे। इन हज़रात ने जो हिजरत की थी, वह सिर्फ अपने जिस्म व जान ही की हिफाज़त के लिये नहीं, बल्के असलन अपने दीन व ईमान बचाने और इत्मेनान के साथ अल्लाह की इबादत करने के लिये हिजरत की थी।

नंबर २ : अल्लाह की कुदरत — आतिश फिशाँ (लावा, वाल केनो)

आतिश फिशाँ वह आग है, जो ज़मीन के अन्दर की धातों को पिघला कर बाहर निकालती है, जब वह बाहर निकलती है, तो बे पनाह जानी माली नुकसान होता है, यही नहीं बल्के चिकना और चटियल मैदान बना देता है, दुनिया के तरक्क़ी याफ्ता लोग आज तक इस की रोक थाम के लिये न कोई मशीन, न कोई इन्तेज़ाम और न कोई मालूमात खास हासिल कर सके, के कब निकलेगा, कितना निकलेगा, कहाँ से निकलेगा और कब तक निकलेगा, यह कौन है जो ज़मीन से आग का गोला निकालता है। यक़ीनन वह अल्लाह ही की ज़ात है।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ी पर जहन्नम की आग हराम है

"जो शख़्स पाँचों नमाज़ों की इस तरह पाबन्दी करे के वुज़ू और औक़ात का एहतेमाम करे, रुकू और सज्दा अच्छी तरह करे और इस तरह नमाज़ पढ़ने को अपने ज़िम्मे अल्लाह तआला का हक़ समझे, तो उस आदमी को जहन्नम की आग पर हराम कर दिया जाएगा।"

[मुस्नदे अहमद : १८८२, अन हनज़ला उसैदी रज़ि.]

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — इत्र लगाना

हज़रत आयशा रज़ि. से मालूम किया गया के रसूलुल्लाह ﷺ इत्र लगाया करते थे? उन्होंने फ़र्माया : हाँ मुश्क वग़ैरह की उम्दा ख़ुश्बू लगाया करते थे। [नसई : ५११९]

नंबर ५ : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	सुन्नत पर अमल करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो मेरी उम्मत में बिगाड़ के वक़्त मेरी सुन्नत को मज़बूती से थामे रहेगा, उस के लिये एक शहीद का सवाब है।" [तबरानी औसत : ५५७२, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर ६ : एक गुनाह के बारे में	किसी के वालिदैन को बुरा भला कहेना

कबीरा गुनाहों में सब से बड़ा गुनाह यह है के आदमी अपने वालिदैन पर लानत करें, पूछा गया : ऐ अल्लाह के रसूल ! आदमी अपने वालिदैन पर कैसे लानत करेगा ? इर्शाद फ़र्माया : वह दूसरे आदमी के वालिदैन को बुरा भला कहे फिर वह आदमी उस के वालिदैन को बुरा भला कहे।

[बुख़ारी : ५९७३, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र رضي الله عنه]

नंबर ७ : दुनिया के बारे में	दुनिया में लगे रहने का अन्जाम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स (दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत को देख कर और अपने अनजाम को सोचे बग़ैर) दुनिया में घुसता है, तो वह अपने आप को जहन्नम में डालता है।"

[शोअबुल ईमान : १०१२४, अन अबी हुरैरा رضي الله عنه]

नंबर ८ : आख़िरत के बारे में	अहले जन्नत का हाल

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो लोग अपने रब से डरते रहे, वह गिरोह के गिरोह हो कर जन्नत की तरफ रवाना किए जाएँगे, यहाँ तक के जब उस (जन्नत) के पास पहुँचेंगे और उस के दरवाज़े (पहले से) खुले हुए होंगे और जन्नत के मुहाफ़िज़ (फरिश्ते) उन से कहेंगे, तुम पर सलामती हो, अच्छी तरह (मज़े में) रहो, जाओ जन्नत में हमेशा हमेश के लिये दाख़िल हो जाओ।"

[सूर-ए-ज़ुमर : ७३]

नंबर ९ : तिब्बे नब्वी से इलाज	कान बजने का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : " जब तुम में से किसी का कान बजे, तो मुझे याद करे और मुझ पर दरूद भेजे।" [अमलुल यौम वल्लैलह, लि इब्ने सुन्नी : १६६, अन अबी राफ़े رضي الله عنه]

नंबर १० : कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "ऐ ईमान वालो ! जब तुम आपस में ख़ुफ़िया बातें करो, तो गुनाह और ज़ुल्म व ज़्यादती और रसूल की नाफ़र्मानी की बातें न किया करो, बलके भलाई और परहेज़गारी की बातें किया करो और अल्लाह से डरते रहो, जिस के पास तुम सब जमा किये जाओगे।"

[सूर-ए-मुजादला : ९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

⑫ रबीउस सानी

नंबर ①: इस्लामी तारीख — नजाशी के दरबार में कुफ्फार की अपील

कुरैश ने जब यह देखा के सहाब-ए-किराम ؓ हबशा जा कर सुकून व इत्मेनान के साथ ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, तो उन्होंने मश्वरा कर के अम्र बिन आस और अब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ को बहुत सारे तोहफे देकर बादशाहे हबशा के पास भेजा। वहाँ का बादशाह ईसाई था। इन दोनों ने वहाँ जाकर तोहफे पेश किये और कहा के हमारे यहाँ से कुछ लोग अपने आबाई मज़हब को छोड़ कर एक नया दीन इख्तियार कर के आप के मुल्क में भाग कर आगए हैं, इस लिये उन को हमारे पास वापस कर दीजिये। बादशाह ने मुसलमानों को बुला कर हक़ीक़ते हाल दरयाफ्त की। मुसलमानों की तरफ से हज़रत जाफर ؓ आगे बढ़े और कहा : ऐ बादशाह ! हम लोग जहालत व गुमराही में मुब्तला थे। बुतों की पूजा करते, मुरदार खाते थे और हम में से ताक़तवर कमज़ोर पर ज़ुल्म करता था। हम इसी हाल में थे के अल्लाह तआला ने हम पर फज़ल फ़र्मा कर एक रसूल भेजा, जिन की सच्चाई, अमानतदारी और पाकदामनी को हम पहले ही से जानते थे। उन्होंने हमें एक अल्लाह की इबादत करने, नमाज़, रोज़ा और ज़कात अदा करने और पड़ोसियों व रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म दिया और ज़ुल्म व सितम, खूंरेज़ी और दूसरी बुरी बातों से रोका। हम उन बातों पर ईमान ले आए। इस पर हमारी क़ौम नाराज़ हो गई और हमें तकलीफें पहुँचाने लगी। तो फिर हम आप के मुल्क में आगए हैं। फिर हज़रत जाफर ؓ ने सूर-ए-मरयम की चंद आयतें पढ़ कर सुनाई। बादशाह पर इस का इतना असर पड़ा के आँख से आँसू जारी हो गए हत्ता के दाढ़ी तर हो गई और बादशाह ने कुफ्फारे कुरैश को यह कह कर दरबार से निकलवा दिया के मैं इन लोगों को हरगिज़ तुम्हारे हवाले नहीं करूँगा।

नंबर ②: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — आप ﷺ के बाल मुबारक की बरकत

जंगे यरमूक के दिन हज़रत खालिद बिन वलीद ؓ की टोपी गुम हो गई, तो हज़रत खालिद ؓ ने अपने साथियों से फ़र्माया : उसे तलाश करो ! बहर हाल बहुत तलाशी के बाद वह टोपी मिली। देखा तो वह बहुत पुरानी और बोसीदा हो चुकी थी। हज़रत खालिद ؓ फ़र्माने लगे के हुज़ूर ﷺ ने उमरे में जब बाल कटवाए थे तो लोग (बरकत के लिये) आप ﷺ के बाल मुबारक लेने लगे। तो मेरे हिस्से में हुज़ूर ﷺ के सर के अगले हिस्से के बाल आए। मैं ने उस को इस टोपी में रख लिया (उस की बरकत यह हुई के) मैं जिस जंग मे भी इस टोपी को पहन कर गया मेरी मदद की गई। [दलाइलुन्नुबुव्वह लिलबैहक़ी : २५१२]

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — वरासत में लड़की का हिस्सा

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "अल्लाह तआला तुम को तुम्हारी औलाद के हक़ में हुक्म देता है के एक लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के हिस्से के बराबर है। [सूर-ए-निसा : ११]

खुलासा : वालिदैन की वरासत में लड़के के दो हिस्से और लड़की का एक हिस्सा होता है, जिस का अदा करना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — नफ़्स की बुराई से पनाह माँगने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत इमरान बिन हुसैन ؓ के वालिद को यह दुआ सिखाई :

((اَللّٰهُمَّ أَلْهِمْنِي رُشْدِي وَأَعِذْنِي مِنْ شَرِّ نَفْسِي))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मेरे दिल में भलाई डाल दे और मेरे नफ़्स की बुराई से मुझे बचा दे । [तिर्मिज़ी : ३४८३]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — दीनी इल्म हासिल करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "इल्म की फ़ज़ीलत इबादत की फ़ज़ीलत से बेहतर है और दीन में बेहतरीन चीज़ तक़वा व परहेज़गारी है ।" [तबरानी औसत : ४१०७, अन हुज़ैफ़ा बिन यमान ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में — अल्लाह और रसूल की नाफ़र्मानी करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो शख़्स अल्लाह और उस के रसूल का कहना न माने वह खुली हुई गुमराही में है ।" [सूर-ए-अहज़ाब : ३६]

नंबर (७): दुनिया के बारे में — सवारी के जानवर

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "उसी ने (यानी अल्लाह ने) घोड़े, ख़च्चर और गधे भी पैदा किये ताके तुम उन पर सवारी करो और ज़ेब व ज़ीनत हासिल करो और आइन्दा भी ऐसी चीज़ें पैदा कर देगा, जिन को तुम अभी नहीं जानते ।" [सूर-ए-नहल : ८]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में — अहले जन्नत की उम्र

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जन्नती लोग जन्नत में बग़ैर दाढ़ी के सुरमा लगाए हुए तीस या तैंतीस साला नौजवान की शकल में दाख़िल होंगे ।" [तिर्मिज़ी : २५४५, अन मुआज़ बिन जबल ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज — आग से जले हुए का इलाज

हज़रत मुहम्मद बिन हातिब ؓ कहते हैं : गर्म हाँडी पलट जाने की वजह से मेरा हाथ जल गया था, मेरी वालिदा मुझे रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में ले गईं, तो आप ﷺ मुझ पर यह पढ़ कर दम कर रहे थे :

((أَذْهِبِ الْبَأْسَ رَبَّ النَّاسِ وَاشْفِ أَنْتَ الشَّافِي لَا شِفَاءَ إِلَّا شِفَاؤُكَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا))

[मुस्नदे अहमद : १५०२७]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला से मुहब्बत रखो, इस वजह से के वह तुम को खाने के लिये अपनी नेअ्मतें देता है और मुझ से मुहब्बत रखो, इस वजह से के अल्लाह तआला को मुझ से मुहब्बत है ।" [तिर्मिज़ी : ३७८९, अन इब्ने अब्बास ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

१३ रबीउस सानी

नंबर १ : इस्लामी तारीख — नजाशी के दरबार में कुफ्फारे मक्का की आख़री कोशिश

जब कुफ्फारे कुरैश बादशाह नजाशी के दरबार से अपनी कोशिश में नाकाम हो कर निकले, तो अम्र बिन आस ने कहा के मैं कल बादशाह के सामने ऐसी बात कहूँगा, जिस की वजह से वह उन मुसलमानों को बिलकुल ख़त्म कर डालेगा। अगले रोज़ अम्र बिन आस ने नजाशी के पास आकर कहा के यह लोग हज़रत ईसा ؑ की शान में बहुत ही सख़्त बात कहते हैं। नजाशी बादशाह ईसाई था। उस ने सहाबा को बुलवाया और पूछा तुम लोग हज़रत ईसा ؑ के बारे में क्या कहते हो? हज़रत जाफ़र ؓ ने फ़र्माया : हम वही कहते हैं जो हमारे नबी ﷺ ने फ़र्माया है के हज़रत ईसा ؑ अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल थे और ख़ुदा की ख़ास रूह और ख़ास कलिमा थे। नजाशी ने ज़मीन से एक तिन्का उठा कर कहा : ख़ुदा की क़सम ! मुसलमानों ने जो कहा है, हज़रत ईसा ؑ एक तिन्के की मिक्दार भी ज़ियादा नहीं थे और मुसलमानों से कहा के तुम अमन से रहो, मैं सोने का एक पहाड़ ले कर भी तुम को सताना पसन्द नहीं करुंगा और कुफ्फारे कुरैश के तमाम हदिये और तोहफे वापस कर देने का हुक्म दिया और कहा के ख़ुदा ने मुझे रिशवत के बग़ैर हुकूमत व सलतनत अता फ़र्माई है, लिहाज़ा मैं तुम से रिशवत ले कर उन लोगों को हरगिज़ सुपुर्द नहीं करुंगा। दरबार ख़त्म हुआ। मुसलमान बख़ुशी वापस हुए और कुरैश का वफ़्द ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ नाकाम लौटा।

नंबर २ : अल्लाह की कुदरत — इबरतनाक अन्जाम

कुर्आन के बयान के मुताबिक़ ख़ुदाई का दावा करने वाले फ़िरऔन की नाफ़र्मानी जब हद से बढ़ गई, तो अल्लाह तआला ने समन्दर में डुबा कर हलाक कर दिया और साथ ही यह एलान किया के उस की लाश को आने वाले लोगों के लिये इबरत बनाऊँगा, चुनान्चे मुहक़्क़िक़ीन की राए के मुताबिक़ फ़िरऔन की लाश सन १८८१ में समन्दर से मिली, जो तक़रीबन तीन हज़ार एक सौ सोला साल बाद समन्दर से निकाली गई और इतनी लम्बी मुद्दत गुज़रने के बाद भी लाश को गलने सड़ने से महफ़ूज़ रखा, जो आज भी मिस्र के म्यूज़ियम में मौजूद है, आख़िर वह कौन सी ज़ात है? जिस ने समन्दर में भी उस की लाश को महफ़ूज़ रखा। यक़ीनन अल्लाह की ज़ात बड़ी कुदरत वाली है।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — वुज़ू में चमड़े के मोज़े पर मसह करना

हज़रत अली ؓ फ़र्माते हैं : मैं ने हुज़ूर ﷺ को मोज़े के ऊपर के हिस्से पर मसह करते देखा।
[अबू दाऊद : १६२]

नोट: जब किसी ने बावुज़ू चमड़े का मोज़ा पहना हो, फिर वुज़ू टूट जाए, तो वुज़ू करते वक़्त उन मोज़ों के ऊपरी हिस्से पर मसह करना ज़रूरी है।

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — मुतअल्लिक़ीन की ख़बरगीरी करना

हज़रत अनस बिन मालिक ؓ बयान करते हैं के अहले तअल्लुक़ में से कोई शख़्स अगर तीन दिन तक न आता (या उस से मुलाक़ात न होती) तो आप ﷺ उस के मुतअल्लिक़ मालूमात फ़र्माते, अगर वह बाहर (सफर में) होता तो उस के लिये दुआ करते, अगर वह मौजूद होता तो आप ﷺ उस से मुलाक़ात फ़र्माते, अगर बीमार होता तो उस की इयादत फ़र्माते। [मुस्नदे अबी याला : ३३३५]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	इल्म सीखते हुए वफात पाजाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस को इल्म सीखते हुए मौत आजाए, वह इस हाल में अल्लाह तआला से मुलाक़ात करेगा के उस के और नबियों के दर्मियान सिर्फ नुबुव्वत के दर्जे का फर्क़ होगा।"

[तबरानी औसत : ११५११, अन इब्ने अब्बास रज़ि.]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	वारिस को मीरास से महरूम करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स अपने वारिस को मीरास देने से भागेगा (और उसे मीरास से महरूम कर देगा) तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन जन्नत से उस की मीरास ख़त्म कर देगा।"

[इब्ने माजा : २७०३, अन अनस बिन मालिक रज़ि.]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया के लालची अल्लाह की रहमत से दूर

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क़यामत क़रीब आचुकी है और लोग दुनिया की हिर्स व लालच और अल्लाह तआला की रहमत से दूरी में बढ़ते ही जा रहे हैं।" [मुस्तदरक : ७९१७, अन इब्ने मसऊद रज़ि.]

खुलासा : क़यामत के क़रीब आने की वजह से लोगों को नेकी कमाने की ज़ियादा से ज़ियादा फ़िक्र करनी चाहिये, लेकिन ऐसा करने के बजाए वह दुनिया की लालच में पड़ कर अल्लाह की रहमत से दूर

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	इन्सान के आज़ा की गवाही

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है :" जिस दिन अल्लाह के दुश्मन (यानी कुफ्फार) दोज़ख़ की तरफ जमा (करने के मौक़फ में) लाएंगे, फिर वह रोके जाएँगे (ताके बक़िया भी आजाएँ) यहाँ तक के जब वह उस के क़रीब आजाएँगे, तो उन के कान, उन की आँखें और उन की खाल, उन के ख़िलाफ उन के किये हुए आमाल की गवाही देंगी। [सूर-ए-हा मीम सज्दह : १९ ता २०]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	जूँ पड़ने का इलाज

एक रिवायत में है के दो सहाबा ने रसूलुल्लाह ﷺ से एक ग़ज़वे के मौक़े पर (कपड़ों में) जूँ पड़ जाने की शिकायत की, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन दोनों को रेश्मी क़मीस पहनने की इजाज़त दी।

[बुख़ारी : २९२०, अन अनस रज़ि.]

फायदा : जूँ पड़ना एक मर्ज़ है, जिस का इलाज आप ﷺ ने उस मौक़े पर रेश्मी लिबास तजवीज़ फ़र्माया, यह लिबास अगरचे आम हालात में मर्दों के लिये जाइज़ नहीं है, लेकिन माहिर हकीम या डाक्टर अगर ज़रूरत की वजह से तजवीज़ करे तो गुन्जाइश है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम सुबह व शाम अपने रब को अपने दिल में गिड़गिड़ा कर, डरते हुए और दर्मियानी आवाज़ के साथ याद किया करो और ग़ाफिलों में से मत हो जाओ।"

[सूर-ए-आराफ : २०५]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

१४ रबीउस सानी

नंबर १: इस्लामी तारीख — बनी हाशिम का बायकाट और तीन साल की क़ैद

कुफ्फारे मक्का के ज़ुल्म व सितम और रोक थाम के बावजूद इस्लाम तेजी से बढ़ता रहा, यह देख कर कुफ्फारे मक्का ने तदबीर सोची के मुहम्मद ﷺ और उन के खानदान का बायकाट किया जाए, लिहाज़ा सब ने आपस में मशवरा कर के एक अहद नामा लिखा और उसे खान-ए-काबा पर लटका दिया, उस अहद नामे के मुताबिक कोई भी मुहम्मद (ﷺ) और उन के खानदान वालों से मेल जोल, लेन देन और शादीब्याह नहीं कर सकता था, लिहाज़ा रसूलुल्लाह ﷺ को बनी हाशिम और मुसलमानों के साथ एक घाटी में जाना पड़ा, जिस का नाम शिअ्बे अबी तालिब है, यहाँ उन लोगों ने तीन साल का ज़माना गुज़ारा, जिस में सख़्त तकालीफ का सामना करना पड़ा, भूक व प्यास की शिद्दत की वजह से बबूल के पत्ते तक खाने पड़े, जब बच्चे भूक व प्यास की वजह से रोते, सिसकते, तो कुफ्फारे मक्का उस पर ठठे उड़ाते, तीन साल के बाद अल्लाह तआला की रहमत और ऐसी मदद आई के ख़ुद कुफ्फार एक दूसरे की मुख़ालफत करने लगे। इत्तेफाक़ यह के अबू तालिब ख़ान-ए-काबा में बैठे हुए सारी बातें सुन रहे थे, वहाँ से उठ कर कुफ्फार के सामने आए और कहा : रात मुहम्मद ने मुझ से कहा:"अहद नामे के सारे अलफाज़ दीमक चाट गई है, सिर्फ ((بِاسْمِكَ اللّٰهُمَّ)) बतौरे उन्वान बाक़ी है।" जब अहद नामा देखा गया तो हर्फ़ ब हर्फ़ आप ﷺ की बात सच निकली और कुफ्फार की गरदनें शर्म के मारे झुक गई, इस तरह अहद नामा खत्म हो गया और मुहम्मद ﷺ नुबुव्वत के दस्वें साल शिअ्बे अबी तालिब से निकल कर मक्का में आ बसे।

नंबर २: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — कुबा के कुंवें में पानी का भर जाना

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ एक मर्तबा कुबा तशरीफ ले गए, वहाँ के लोगों से पूछा कुंवाँ कहाँ है? लोगों ने बतलाया। वहाँ पहुँच कर देखा तो फ़र्माया हाँ यह वही कुंवाँ है जिस में से लोग अपनी ज़रूरत के लिये पानी ले जाया करते थे तो पानी बहुत कम हो जाता था। एक बार आप ﷺ इस कुंवें पर तशरीफ लाए और बड़ा डोल भर कर पानी निकलवाया और उस में से कुछ पिया और बक़िया पानी से या तो वुज़ू किया या फिर उस में अपना मुबारक थूक डाला और फिर फ़र्माया : इस को कुंवें में डाल दो। हज़रत अनस رضی اللہ عنہ फ़र्माते हैं के उस दिन से पानी कभी कम नहीं हुआ।

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : २३८०, अन अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ]

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — क़ज़ा नमाज़ों की अदायगी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो कोई नमाज़ पढ़ना भूल गया या नमाज़ के वक़्त सोता रह गया, तो (उस का कफ्फारा यह है के) जब याद आए उसी वक़्त पढ़ ले।" [तिर्मिज़ी : १७७, अन अबी क़तादा رضی اللہ عنہ]

फायदा : अगर किसी शख़्स की नमाज किसी उज्र की वजह से छूट जाए या सोने की हालत में नमाज़ का वक़्त गुज़र जाए, तो बाद में उस को पढ़ना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	क़र्ज़ों और ग़मों से नजात की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने क़र्ज़ों और ग़मों से छुटकारे के लिये सुबह व शाम यह दुआ पढ़ने के लिये फ़र्माया
((اَللّٰهُمَّ إِنِّیْ أَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَأَعُوْذُبِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَأَعُوْذُبِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ))
[अबू दाऊद : १५५५, अन अबी सईद खुदरी ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	तीन काम करने की कोशिश करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब आदम की औलाद का इन्तेकाल होता है, तो तीन कामों के अलावा उस के अमल का सिलसिला ख़त्म हो जाता है : (१) सदक़-ए-जारिया (२) वह इल्म जिस से लोग फायदा उठाएँ (३) ऐसी नेक औलाद जो उस के लिये दुआ करती रहे।"
[मुस्लिम : ४२२३, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	झूटे ख़ुदाओं की बे बसी

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जिस को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, वह खजूर की गुठली के एक छिलके का भी इख़्तियार नहीं रखते, अगर तुम उन को पुकारो भी, तो वह तुम्हारी पुकार सुन भी नहीं सकते और अगर (बिलफर्ज़) सुन भी लें तो तुम्हारी ज़रूरत पूरी न कर सकेंगे और क़यामत के दिन तुम्हारे शिर्क की मुख़ालफत व इन्कार करेंगे।"
[सूर-ए-फातिर : १३ ता १४]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की चीज़ों में ग़ौर व फ़िक्र करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "इसी (बारिश के) पानी के ज़रिये अल्लाह तआला तुम्हारे लिये खेती, ज़ैतून, खजूर और अंगूर और हर क़िस्म के फल उगाता है, यकीनन इन चीजों में ग़ौर व फ़िक्र करने वालों के लिये बड़ी निशानियाँ है।"
[सूर-ए-नहल : ११]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जहन्नम के दरवाज़े का फासला

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जहन्नम के सात दरवाज़े हैं, हर दो दरवाज़ों के दर्मियान का फासला एक सवार आदमी के सत्तर साल चलने के बराबर है।"
[मुस्तदरक : ८६८३, अन लकीत बिन आमिर ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	कलौंजी से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "बीमारियों में मौत के सिवा ऐसी कोई बीमारी नहीं, जिस के लिये कलौंजी में शिफ़ा न हो।"
[मुस्लिम : ५७६८, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अपने नफे की चीज को कोशिश से हासिल करो और अल्लाह से मदद चाहो और हिम्मत मत हारो और अगर तुम्हें कोई हादसा पेश आजाए तो यूँ मत कहो के अगर मैं यूँ करता तो ऐसा हो जाता बल्के यूँ कहो के अल्लाह तआला ने यही मुकद्दर फ़र्माया था और जो उस को मन्ज़ूर था उस ने वही किया।"
[मुस्लिम : ६७७४, अन अबी हुरैरह ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

⑮ रबीउस सानी

नंबर ①: इस्लामी तारीख़ — आमुल हुज़्न (ग़म का साल)

रसूलुल्लाह ﷺ की ज़ौज-ए-मोहतरमा हज़रत ख़दीजा رضي الله عنها और चचा अबू तालिब हर वक़्त आप ﷺ का साथ दिया करते थे। एक मर्तबा अबू तालिब बीमार हो गए और इन्तेक़ाल का वक़्त क़रीब आगया। आप ﷺ ने फ़र्माया : ऐ चचा ! एक मर्तबा " لا إله إلا الله " कह लो ताके ख़ुदा के सामने तुम्हारी शफ़ाअत के लिये मुझे दलील मिल जाए। लेकिन अबू जहल और अब्दुल्लाह बिन उमय्या वग़ैरह ने कहा के अबू तालिब ! क्या तुम अब्दुल मुत्तलिब के दीन को छोड़ दोगे? अबू तालिब ने कलिमा पढ़ने से इन्कार कर दिया और आख़री लफ़्ज़ जो उन की ज़बान पर था वह यह के मैं अब्दुल मुत्तलिब के दीन पर हूँ और इन्तेक़ाल हो गया। अभी चचा के इन्तेक़ाल का ग़म हल्का न हुआ था, के उस के कुछ ही दिनों के बाद आप ﷺ की जाँनिसार और ग़मख़्वार बीवी हज़रत ख़दीजतुल कुबरा رضي الله عنها भी इस दुनिया से चल बसीं। इस तरह यके बाद दीगरे दोनों के इन्तेक़ाल कर जाने से आप ﷺ पर रंज व ग़म और मुसीबत का एक पहाड़ टूट पड़ा, क्योंकि आप ﷺ की दावत व तबलीग़ के हर मरहले पर अबू तालिब और हज़रत ख़दीजा رضي الله عنها दोनों आप ﷺ का साथ दिया करते थे और हज़रत ख़दीजा رضي الله عنها तो हमेशा आप ﷺ की मदद करती थीं और परेशानी के वक़्त बेहतरीन मशवरे दिया करती थीं। इस लिये दोनों का एक साल में इन्तेक़ाल कर जाना आप ﷺ के लिये बड़ा हादसा था। इसी वजह से आप ﷺ ने इस साल का नाम " आमुल हुज़्न " यानी ग़म का साल रखा।

नंबर ②: अल्लाह की क़ुदरत — समुन्दरी मछली

जिस तरह अल्लाह तआला ने हमारे लिये ज़मीन पर बे शुमार ग़िज़ाएँ पैदा फ़र्माईं इसी तरह समुन्दर में बे शुमार क़िस्म की मछलियों को हमारी ग़िज़ा बना दिया। लोग हज़ारों साल से समुन्दरी मछलियों का शिकार कर के अपनी ग़िज़ा हासिल कर रहे हैं। लेकिन आज तक मछलियाँ ख़त्म नहीं हुईं। और अजीब बात यह है के खारे और मीठे समुन्दर की मछलियों के ज़ायक़े में कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं होता। बेशक यह अल्लाह की क़ुदरत और बन्दों पर उस की बड़ी इनायत है जिस ने उन के लिये मछली जैसी अहम ग़िज़ा का इन्तेज़ाम फ़र्माया।

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — सच्ची गवाही देना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "ऐ ईमान वालो ! इन्साफ़ पर क़ायम रहते हुए अल्लाह के लिये गवाही दो, चाहे वह तुम्हारी ज़ात, वालिदैन और रिश्तेदारों के ख़िलाफ़ ही (क्यों न) हो।"

[सूर-ए-निसा : १३५]

फ़ायदा : सच्ची गवाही देना और झूटी गवाही देने से बचना ज़रूरी है।

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — बैतुलख़ला जाने का तरीक़ा

रसूलुल्लाह ﷺ जब इस्तिन्जा के लिये तशरीफ़ ले जाते, तो चप्पल पहन लेते और सर को ढाँप लेते।

[बैहक़ी फी सुनने कुबरा : ९६/१]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अपने घर वालों को खिलाना पिलाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो तुम ने ख़ुद खा लिया वह तुम्हारे लिये सदक़ा है और जो कुछ तुम ने अपनी औलाद को खिलाया वह तुम्हारे लिये सदक़ा है और जो कुछ तुम ने अपनी बीवी को खिलाया वह तुम्हारे लिये सदक़ा है और जो कुछ तुम ने अपने ख़ादिम को खिलाया उस में भी तुम्हारे लिये सदक़े का सवाब है।" [मुस्नदे अहमद : १६७२७, अन मिक़्दाम बिन मअ्दीकरिब رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	शिर्क और क़त्ल करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला हर गुनाह को माफ कर सकता है, मगर उस आदमी को माफ नहीं करेंगे, जो शिर्क की हालत में मर जाए, दूसरा वह आदमी जो किसी (बेगुनाह) मुसलमान भाई को जान बूझ कर क़त्ल कर दे।" [अबू दाऊद : ४२७०, अन अबी दर्दा رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया में उम्मीदों का लम्बा होना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मुझे अपनी उम्मत पर सब से ज़ियादा डर ख़्वाहिशात और उम्मीदों के बढ़ जाने का है, ख़्वाहिशात हक़ से दूर कर देती हैं और उम्मीदों का लम्बा होना, आख़िरत को भुला देता है, यह दुनिया भी चल रही है और हर दिन दूर होती चली जा रही है और आख़िरत भी चल रही है और हर दिन क़रीब होती जा रही है।" (यानी हर वक़्त ज़िन्दगी कम होती जा रही है और मौत क़रीब आती जा रही है, इस लिये आख़िरत की तय्यारी में लगे रहना चाहिये)

[कंज़ुल उम्माल : ४३७५८, अन जाबिर رضي الله عنه]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	नेक अमल करने वालों का इनाम

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, वह जन्नत के बाग़ों में दाख़िल होंगे, वह जिस चीज़ को चाहेंगे उन के रब के पास उन को मिलेगी। (उन की) हर ख़्वाहिश का पूरा होना भी बड़ा फ़ज़ल व इनाम है।" [सूर-ए-शूरा : २२]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	हाथ पाँव सुन हो जाने का इलाज

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه की मौजूदगी में एक शख़्स का पाँव सुन हो गया, तो उन्होंने फ़र्माया : अपने महबूब तरीन शख़्स को याद करो, उस ने कहा : मुहम्मद ﷺ, तो वह ठीक हो गया।

[अमलुल यौम वल्लैलह, लि इब्ने सुन्नी : १६९, अन मुजाहिद رحمه الله]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : " ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला के लिये सच्चाई पर क़ायम रहने वाले और इन्साफ के साथ शहादत देने वाले बन जाओ और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें इस बात पर आमादा न कर दे, के तुम इन्साफ न करो (बल्के हर मामले में) इन्साफ करो, यह परहेज़गारी के ज़ियादा क़रीब है और अल्लाह तआला से डरते रहो बेशक जो कुछ तुम करते हो अल्लाह तआला उस से बाख़बर है।" [सूर-ए-मायदा : ८]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१६) रबीउस सानी

नंबर (१): इस्लामी तारीख — ताइफ के सरदारों को इस्लाम की दावत

सन १० नबवी में अबू तालिब के इन्तेक़ाल के बाद कुफ्फारे मक्का ने हुजूर ﷺ को बहुत ज़ियादा सताना शुरू कर दिया, तो अहले मक्का से मायूस हो कर आप ﷺ इस ख़याल से ताइफ तशरीफ ले गए, के अगर ताइफ वालों ने इस्लाम क़बूल कर लिया, तो वहाँ इस्लाम के फैलने की बुनियाद पड़ जाएगी, ताइफ में बनू सक़ीफ का ख़ानदान सब से बड़ा था, उन के सरदार अब्द या लैल, मसऊद और हबीब थे। यह तीनों भाई थे, रसूलुल्लाह ﷺ ने इन तीनों को इस्लाम की दावत दी, इन में से एक ने कहा : "अच्छा! अल्लाह ने आप ही को नबी बना कर भेजा है।" दूसरा बोला : "अल्लाह को तुम्हारे सिवा और कोई मिलता ही न था, जिस को नबी बना कर भेजता।" तीसरे ने कहा : "मैं तुझ से बात नहीं करना चाहता, इस लिये के अगर तू सच्चा रसूल है, तो तेरा इन्कार करना ख़तरे से ख़ाली नहीं है और अगर झूटा है तो गुफ़्तगू के क़ाबिल नहीं!" इन सरदारों की इस सख़्त गुफ्तगू के बाद भी आप ﷺ कई रोज़ तक लोगों को इस्लाम की दावत देते रहे।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हिरनी की फरियाद

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म رضی اللہ عنہ फ़र्माते हैं, एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ और मैं मदीना की एक गली से गुज़र रहे थे। हमारा गुज़र एक आदमी के ख़ेमे के पास से हुआ, देखा तो वहाँ क़रीब में एक हिरनी बंधी हुई थी। उस ने रसूलुल्लाह ﷺ से फरियाद की के इस आदमी ने मुझे शिकार कर के पकड़ लिया है, जब के जंगल में मेरे दो बच्चे हैं, यह आदमी न तो मुझे ज़बह करता है के मुझे राहत मिले और न ही मुझे छोड़ता है के मैं अपने बच्चों को दूध पिला सकूँ। तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : अगर मैं तुझे छोड़ दूँ तो क्या दूध पिला कर वापस आजाएगी ? तो उस ने कहा : हाँ! चुनान्चे रसूलुल्लाह ﷺ ने उस को छोड़ दिया। वह गई और अपने बच्चों को दूध पिला कर थोड़ी ही देर में वापस आगई और रसूलुल्लाह ﷺ ने उस को बाँध दिया, इतने में वह आदमी आया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उस से फ़र्माया : क्या यह हिरनी हमें बेचोगे ? तो उस ने कहा : या रसूलुल्लाह ﷺ! आप को हदिया है, चुनान्चे रसूलुल्लाह ﷺ ने उस को छोड़ दिया। हज़रत ज़ैद رضی اللہ عنہ फ़र्माते हैं, क़सम ख़ुदा की! मैं ने सुना के हिरनी जंगल में ज़ोर ज़ोर से कलिम-ए-शहादत पढ़ती थी।

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : २२८४]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "हम ने इन्सानों को अपने वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करने का हुक्म दिया है।"

[सूर-ए-अहक़ाफ : १५]

फायदा : वालिदैन की इताअत व फ़र्मांबरदारी करना, उन के साथ अच्छा सुलूक करना और उन के सामने अदब के साथ पेश आना इन्तेहाई ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	अल्लाह के रास्ते में जाने वाले को दुआ देना

रसूलुल्लाह ﷺ ने एक जमात को अल्लाह के रास्ते में रवाना करते हुए फ़र्माया : अल्लाह के नाम पर सफर शुरू करो और यह दुआ दी :((اللّٰهُمَّ أَعِنْهُمْ))
तर्जमा : ऐ अल्लाह ! इन की मदद फ़र्मा। [तबरानी कबीर : ११३८९, अन इब्ने अब्बास رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	हर हाल में अच्छी तरह वुज़ू कर के मस्जिद जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तकलीफ और नागवारी के बावजूद पूरी तरह मुकम्मल वुज़ू करना, मस्जिदों की तरफ ज़ियादा क़दम बढ़ाना और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इन्तेज़ार करना, यह आमाल गुनाहों से (आदमी को) बिलकुल पाक साफ कर देते हैं।"
[मुस्तदरक : ४५६, अन अली बिन अबी तालिब رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	मुअ्जिज़ात को न मानना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जब उन के रसूल उन के पास खुली हुई दलीलें ले कर आए, तो वह लोग अपने उस दुन्यवी इल्म पर नाज़ करते रहे, जो उन्हें हासिल था, आख़िर कार उन पर वह अज़ाब आ पड़ा जिस का वह मज़ाक़ उड़ाया करते थे।" [सूर-ए-मोमिन : ८३]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	समुन्दर इन्सानों की गिज़ा का ज़रिया है

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "अल्लाह तआला ही ने समुन्दर को तुम्हारे काम में लगा दिया है, ताके तुम उस में से ताज़ा गोश्त खाओ और उस में से ज़ेवरात (मोती वगैरह) निकालो जिन को तुम पहनते हो और तुम कश्तियों को देखते हो, के वह दरिया में पानी चीरती हुई चली जा रही हैं, ताके तुम अल्लाह तआला का फ़ज़ल यानी रोज़ी तलाश कर सको और तुम शुक्र अदा करते रहो।"
[सूर-ए-नह्ल : १४]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत से हर एक डरता है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "कोई मुक़र्रब फरिश्ता, कोई आसमान, कोई ज़मीन, कोई हवा, कोई पहाड़, कोई समुन्दर ऐसा नहीं जो जुमा के दिन से न डरता हो (इस लिये के जुमा के दिन ही क़यामत क़ायम होगी) [इब्ने माजा : १०८४, अन अबी लुबाबा رضي الله عنه]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	सफर जल (बही, पीयर) से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "सफर जल (यानी बही) खाया करो, क्योंकि यह दिल को राहत पहुँचाता है।" [इब्ने माजा : ३३६९, अन तलहा رضي الله عنه]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम अल्लाह तआला से ऐसी हालत में दुआ किया करो के तुम्हें क़ुबूलियत का पूरा यक़ीन हो और यह जान रखो के अल्लाह तआला गफलत से भरे दिल की दुआ क़बूल नहीं करता। [तिर्मिज़ी : ३४७९, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर १: इस्लामी तारीख़ — रसूलुल्लाह ﷺ की ताइफ से वापसी

रसूलुल्लाह ﷺ ने ताइफ जा कर वहाँ के सरदारों और आम लोगों को दीने हक़ की दावत दी, मगर वहाँ के लोगों ने इस्लाम क़बूल करने के बजाए, रसूलुल्लाह ﷺ की सख़्त मुख़ालफत की, गालियाँ दी, पत्थरों से मारा और शहर से बाहर निकाल दिया, पत्थरों की चोट से आप ﷺ के बदन मुबारक से ख़ून जारी हो गया, शहर से बाहर आकर एक बाग़ में रूके, वहाँ हुज़ूर ﷺ ने अल्लाह तआला से दुआ की और अपनी कमज़ोरी, बे बसी और लोगों की निगाहों में बे वक़अती की फरयाद की और अल्लाह तआला से नुसरत व मदद की दरख़्वास्त की और फ़र्माया : इलाही ! अगर तू मुझ से नाराज़ नहीं है, तो मुझे किसी की परवाह नहीं, तू मेरे लिये काफी है, इस मौके पर अल्लाह तआला ने पहाड़ों के फरिश्ते को आप ﷺ के पास भेजा और उस ने आप ﷺ से इस की इजाज़त चाही के वह उन दोनों पहाड़ों को मिला दे, जिन के दर्मियान ताइफ का शहर आबाद है, ताके वह लोग कुचल कर हलाक हो जाएँ, मगर हुज़ूर ﷺ की रहीम व करीम ज़ात ने जवाब दिया : मुझे उम्मीद है के उन की औलाद में से ऐसे लोग पैदा होंगे, जो एक ख़ुदा की इबादत करेंगे और उस के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराएँगे। हुज़ूर ﷺ की इस दुआ का असर था के मुहम्मद बिन क़ासिम जैसे बहादुर नौजवान ताइफ के क़बीला बनी सक़ीफ में पैदा हुए, जिन के हाथों अल्लाह तआला ने हिन्दुस्तान तक इस्लाम को पहुँचाया।

नंबर २: अल्लाह की क़ुदरत — नाक के बाल

अल्लाह तआला ने हर छोटी बड़ी चीज़ को हिकमत व मसलेहत के साथ पैदा फ़र्माया है, इन्सान ऑक्सीजन के बग़ैर ज़िन्दा नहीं रह सकता, इस लिये अल्लाह तआला ने साँस के ज़रिये ताज़ी हवा को खींचने और गंदी हवा को बाहर निकालने का निज़ाम बना दिया, मगर अल्लाह की क़ुदरत व हिकमत का कमाल देखिये के उस ने फ़ज़ा में मौजूद गर्द व गुबार से बचने के लिये नाक के अन्दर बाल और चिकना माद्दा पैदा कर दिया जिस की वजह से जरासीमी माद्दे अन्दर तक नहीं जा पाते, इस तरह इन्सान नाक और फेफड़ों की बहुत सी बीमारियों से महफ़ूज़ हो जाता है। वाक़ई अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से मामूली सी चीज़ों के ज़रिये इन्सान को बड़ी बड़ी बीमारियों से महफ़ूज़ कर दिया है।

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — शौहर के भाइयों से परदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "(ना महरम) औरतों के पास आने जाने से बचो ! एक अन्सारी सहाबी ने अर्ज़ किया : देवर के बारे में आप क्या फ़र्माते हैं ? तो आप ﷺ ने फ़र्माया : देवर तो मौत है।"

फायदा : शौहर के भाई वग़ैरह से परदा करना इन्तेहाई ज़रूरी है और उस से इस तरह बचना चाहिये जिस तरह मौत से बचा जाता है।

[बुख़ारी : ५२३२, अन उक़बा बिन आमिर ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	इस्तिन्जे के बाद वुज़ू करना

हज़रत आयशा ؓ फ़र्माती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ जब बैतुलखला से निकलते तो वुज़ू फ़र्माते।

[मुस्नदे अहमद : २५०३३]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अगली सफ में नमाज़ अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला और उस के फरिश्ते पहली सफ वालों पर रहमत भेजते हैं और मोअज़्ज़िन के बुलन्द आवाज़ के बक़द्र उस की मग़फिरत कर दी जाती है, खुश्की और तरी की हर चीज़ उस की आवाज़ की तसदीक़ करती है और उस के साथ नमाज़ पढ़ने वालों का सवाब उस को भी मिलेगा।"

[नसई : ६४७, अन बरा बिन आज़िब ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	नमाज़ छोड़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स जान बूझ कर नमाज़ छोड़ देता है, अल्लाह तआला उस के सारे आमाल बेकार कर देता है और अल्लाह का ज़िम्मा उस से बरी हो जाता है जब तक के वह अल्लाह से तौबा न कर ले।"

[तरग़ीब व तरहीब : ७८३, अन उमर बिन खत्ताब ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया से बचो

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "सुनो! दुनिया मीठी और हरी भरी है और अल्लाह तआला ज़रूर तुम्हें इस की खिलाफ़त अता फ़र्माएंगे, ताके देखें के तुम कैसे आमाल करते हो, पस तुम दुनिया से और औरतों (के फितने) से बचो।"

[मुस्लिम : ६९४८, अन अबी सईद खुदरी ؓ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	जन्नत की नेअमतें

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "(मुक़र्रब बन्दों के लिये जन्नत में) ऐसे मेवे होंगे, जिन को वह पसन्द करेंगे और परिन्दों का ऐसा गोश्त होगा जिस की वह ख्वाहिश करेगा और उन के लिये बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरें होंगी, जैसे हिफाज़त से रखा हुआ पोशीदा मोती हो। यह सब उन के आमाल का बदला होगा और वहाँ कभी वह बेहूदा और बुरी बात नहीं सुनेंगे, हर तरफ से सलाम ही सलाम की आवाज़ आएगी।"

[सूर-ए-वाक़िया : २० ता २६]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	पागल पन का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अजवा (खजूर) जन्नत का फल है और जुनून (पागल पन) का इलाज है।"

[इब्ने माजा : ३४५३, अन अबी सईद खुदरी ؓ व जाबिर ؓ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ ईमान वालो! सच्ची बात यह है के शराब, जुवा, बुत और फाल खोलने के तीर, यह सब शैतान के नापाक काम हैं, लिहाज़ा तुम इन से बचो! ताके तुम अपने मक़सद में कामयाब हो जाओ।"

[सूर-ए-मायदा : ९०]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१८) रबीउस सानी

नंबर (१): इस्लामी तारीख — मेअ्राज

हिजरत से एक साल पहले हुज़ूर ﷺ को सातों आसमानों की सैर कराई गई, जिस को "मेअ्राज" कहते हैं। कुर्आने करीम में भी सराहत के साथ इस का तज़्केरा आया है। जब आप की उम्र मुबारक ५१ साल ९ माह हुई, तो रात के वक़्त आप को मस्जिदे हराम लाया गया और ज़मज़म और मक़ामे इब्राहीम के दर्मियान से बुराक़ नामी सवारी पर हज़रत जिब्राईल ؑ के साथ बैतुलमक़्दिस तशरीफ लाए। यहाँ आप ने तमाम अम्बियाए किराम ؑ की इमामत फ़र्माई। उस के बाद सातों आसमानों पर तशरीफ ले गए। हर आसमान पर अलग अलग नबियों से मुलाक़ात हुई। सातों आसमान के बाद "सिदरतुल मुन्तहा" तक हज़रत जिब्राईल ؑ साथ रहे। उस के बाद आप तने तन्हा आगे बढ़े और उस मक़ाम तक पहुँचे, जहाँ तक फरिश्ते भी नहीं जा सकते। यहाँ आप को अल्लाह के दीदार और हम कलामी का शर्फ हासिल हुआ और यहीं पाँच नमाज़ें तोहफे में दी गईं। उस के बाद बैतुलमक़्दिस वापस आए और बुराक़ पर सवार हो कर मक्का मुकर्रमा वापस तशरीफ लाए। इस अहम सफर में आप ﷺ ने अल्लाह तआला की बड़ी बड़ी निशानियाँ देखीं। जिन के मुतअल्लिक़ अल्लाह तआला ने फ़र्माया : "के उन की आँख न किसी तरफ माइल हुई और न (हद से)आगे बढ़ी। उन्होंने अपने रब (की कुदरत) के बड़े बड़े अजाएबात देखे।" [सूर-ए-नज्म : १७ ता १८]

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — ज़मीन का समेट लिया जाना

हज़रत अनस बिन मालिक ؓ फ़र्माते हैं के हम लोग आप ﷺ के साथ ग़ज़व-ए-तबूक में गए हुए थे, उस दिन सूरज इतनी आब व ताब के साथ निकला के मैं ने इतनी ताब नाकी के साथ कभी नहीं देखा था, चुनान्चे हज़रत जिब्राईल ؑ हुज़ूर ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो हुज़ूर ﷺ ने उस की वजह मालूम की, तो हज़रत जिब्राईल ؑ ने अर्ज़ किया : उस की वजह यह है के आज मदीना मुनव्वरा में मुआविया बिन मुआविया लैसी की वफात हुई है और अल्लाह तआला ने उन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ने के लिये सत्तर हज़ार फरिश्ते उतारे हैं, तो हुज़ूर ﷺ ने फ़र्माया : किस बिना पर यह दर्जा हासिल हुआ? हज़रत जिब्राईल ؑ ने अर्ज़ किया : मुआविया रात दिन चलते फिरते, उठते बैठत ﴿قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ﴾ पढ़ा करते थे। हज़रत जिब्राईल ؑ ने अर्ज़ किया : अगर आप भी उन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ना चाहें तो मैं ज़मीन को समेट लूँ, तो हुज़ूर ﷺ ने फ़र्माया : जी हाँ, चुनान्चे ज़मीन समेट ली गई और हुज़ूर ﷺ ने मदीना जा कर उन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और फिर वापस तबूक आगए। [बैहक़ी फी दलाइलिनुबुव्वाह : ११९८]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — मय्यित का क़र्ज़ अदा करना

हज़रत अली ؓ फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने कर्ज़ को वसिय्यत से पहले अदा करवाया, हालाँके तुम लोग (कुर्आन पाक में) वसिय्यत का तज़्केरा क़र्ज़ से पहले पढ़ते हो। [तिर्मिज़ी : २१२२]

फायदा : अगर किसी शख्स ने क़र्ज़ लिया और उसे अदा करने से पहले इन्तेक़ाल कर गया, तो कफन दफन के बाद माले वरासत में से सब से पहले क़र्ज़ अदा करना ज़रूरी है, चाहे सारा माल उस की अदायगी में खत्म हो जाए।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	क़यामत की रुसवाई से बचने की दुआ

क़यामत के दिन ज़िल्लत व रुसवाई से नजात पाने के लिये इस दुआ का एहतेमाम करे।

﴿وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ﴾

तर्जमा : (ऐ मेरे रब !) मुझे क़यामत के दिन रुसवा न फ़र्माना। [सूर-ए-शुअरा : ८७]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अज़ान देना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस शख़्स ने बारा साल तक अज़ान दी, उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई और हर रोज अज़ान के बदले उस के लिये साठ नेकियाँ लिखी जाएँगी और हर तक्बीर पर तीस नेकियाँ मिलेंगी।" [इब्ने माजा : ७२८, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	कुर्आन सुनने से रोकना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "यह काफिर लोग (एक दूसरे से) कहते हैं के इस कुर्आन को मत सुना करो और उस के दौरान शोर मचाया करो, उम्मीद है के इस तरह तुम ग़ालिब आ जाओगे। उन काफिरों को हम सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएँगे और यक़ीनन हम उन को बुरे आमाल का बदला देंगे, जो वह किया करते थे।" [सूर-ए-हा मीम सज्दा : २६ ता २७]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया के मुक़ाबले में आख़िरत बेहतर है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो लोग परहेज़गार हैं, जब उन से पूछा जाता है के तुम्हारे रब ने क्या चीज़ नाज़िल की है? तो जवाब में कहते हैं : बड़ी ख़ैर व बरकत की चीज़ नाज़िल फ़र्माई है। जिन लोगों ने नेक आमाल किये, उन के लिये इस दुनिया में भी भलाई है और बिला शुबा आख़िरत का घर तो दुनिया के मुक़ाबले में बहुत ही बेहतर है और वाक़ई वह परहेज़गार लोगों का बहुत ही अच्छा घर है।" [सूर-ए-नहल : ३०]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	काफिर की बदहाली

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क़यामत के दिन काफिर अपने पसीने में डूब जाएगा, यहाँ तक के वह पुकार उठेगा : ऐ मेरे परवरदिगार ! जहन्नम में डाल कर मुझे इस (अज़ाब) से नजात दे दीजिये।" [कंज़ुल उम्माल : ३८९२३, अन इब्ने मसऊद ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बुख़ार का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिसे बुख़ार आजाए वह तीन दिन गुस्ल के वक़्त यह दुआ पढ़े, तो उसे शिफा हासिल होगी : ((بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ إِنَّمَا اغْتَسَلْتُ رَجَاءَ شِفَائِكَ وَتَصْدِيقَ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ ﷺ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं ने तेरे नाम से गुस्ल किया, शिफा की उम्मीद करते हुए और तेरे नबी ﷺ की तसदीक़ करते हुए। [इब्ने अबी शैबा : ७/१४५ अन मकहूल رحمه الله मुरसलन]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "रहमान (अल्लाह) की इबादत करो और खाना खिलाया करो और सलाम को आम करो (यानी हर मुसलमान को सलाम करो ख़्वाह उस से जान पहचान हो या न हो) तुम जन्नत में सलामती के साथ दाखिल हो जाओगे।" [तिर्मिज़ी : १८५५, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

१९ रबीउस सानी

नंबर १: इस्लामी तारीख — हज के मौसम में इस्लाम की दावत देना

जब रसूलुल्लाह ﷺ ने देखा के कुफ्फारे कुरैश इस्लाम क़बूल करने के बजाए बराबर दुश्मनी पर तुले हुए हैं। तो हुज़ूर ﷺ हज के मौसम के इन्तेज़ार में रहने लगे और जब हज का मौसम आजाता और लोग मुख़्तलिफ इलाक़ों से मक्का आते, तो ऐसे मौक़े पर रसूलुल्लाह ﷺ बज़ाते ख़ुद उन लोगों के पास तशरीफ ले जाते और लोगों को एक अल्लाह की इबादत करने, बुत परस्ती से तौबा करने और हराम कामों से बचने की दावत देते थे। कुफ्फारे कुरैश तमाम लोगों के दिलों में हुज़ूर ﷺ और आप की दावत के मुतअल्लिक़ नफरत डालने की ख़ूब कोशिश करते थे। ख़ुद आप का चचा अबू लहब आप के पीछे पीछे यह कहता फिरता था के ऐ लोगो ! यह शख़्स तुम को बुतों की पूजा से हटा कर एक नए दीन की तरफ बुलाता है। तुम हरगिज़ इस की बात न मानना। मगर रसूलुल्लाह ﷺ तमाम मुसीबतों और उन की मुख़ालफतों को बरदाश्त करते हुए इस्लाम की दावत लोगों तक पहुँचाते रहे और दीने हक़ की सच्चाई और शिर्क व बुत परस्ती की ख़राबी को वाज़ेह करते रहे। बाज़ लोग तो नर्मी से जवाब देते, लेकिन बाज़ लोग बड़ी सख़्ती से पेश आते और गुस्ताख़ाना बातें कहते थे। उसी हज के मौसम में एक मर्तबा क़बील-ए-औस व खज़रज के कुछ लोग मदीने से आए हुए थे। जिन के पास तशरीफ ले जाकर आप ﷺ ने इस्लाम की दावत दी। उन लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया और आप की मदद का वादा किया।

नंबर २: अल्लाह की कुदरत — बहरे मय्यित

मुल्के उरदुन में छोटा सा एक समुन्दर है जिस को "बहरे मय्यित" (Dead Sea) कहते हैं। अल्लाह तआला ने क़ौमे लूत की बस्तियों को पलट कर एक गहरे समुन्दर में तब्दील कर दिया जिस के पानी की सतह आम समुन्दरों के मुकाबिल तेरा सौ फुट गहरी है, उस की बड़ी ख़ुसूसियत यह है के न कोई जान्दार उस में ज़िन्दा रहता है और न ही डूबता है, जबके दूसरे समुन्दरों में जान्दार चीज़ें भी हैं और जान्दार व बेजान चीज़ें इस में गिर कर डूब भी जाती हैं।

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ में इमाम की पैरवी करना

हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ हमें सिखाते थे के "(नमाज़ में) इमाम से पहले रुक्न अदा न किया करो।

[मुस्लिम : ९३२]

फायदा : अगर इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ रहा हो, तो तमाम अरकान को इमाम के पीछे अदा करना चाहिये, इमाम से आगे बढ़ना जाइज़ नहीं है।

नंबर ४: एक सुन्नत के बारे में — सज्दा करने का सुन्नत तरीक़ा

रसूलुल्लाह ﷺ जब सज्दा फ़र्माते तो अपनी नाक और पेशानी को ज़मीन पर रखते और अपने बाज़ुओं को पहलू से अलग रखते और अपनी हथेलियों को कांधे के बराबर रखते।

[तिर्मिज़ी : २७०, अन अबी हुमैद رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अज़ान के बाद दुआ पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो बन्दा अज़ान सुनते वक़्त अल्लाह से यूँ दुआ करे :

((اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ آتِ مُحَمَّدَانِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُوْدَانِ الَّذِیْ وَعَدْتَهٗ))

तो वह बन्दा क़यामत के दिन मेरी शफाअत का हक़दार हो गया।"

[बुखारी : ६१४, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	ग़लत हदीस बयान करने की सज़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मेरी हदीस को बयान करने में एहतियात करो और वही बयान करो जिस का तुम्हें यक़ीनी इल्म हो, जो शख़्स जान बूझ कर मेरी तरफ से कोई ग़लत बात बयान करे, वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।"

[तिर्मिज़ी : २९५१ : अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	थोड़ी सी रोज़ी पर राज़ी रहना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स अल्लाह तआला से थोड़ी रोज़ी पर राज़ी रहे, तो अल्लाह तआला भी उस की तरफ से थोड़े से अमल पर राज़ी हो जाते हैं।"

[बैहक़ी शोअबुल ईमान : ४४०९, अन अली ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जहन्नमियों का खाना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जहन्नम वालों का आज न कोई दोस्त होगा और न कोई खाने की चीज़ नसीब होगी, सिवाए ज़ख़्मों के धोवन के ----- जिस को बड़े गुनहगारों के सिवा कोई न खाएगा।"

[सूर-ए-हाक़्क़ा : ३५ ता ३७]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	निमोनिया का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने निमोनिया के लिये वर्स, कुस्त और रोग़ने ज़ैतून पिलाने को मुफ़ीद बतलाया है।

[इब्ने माजा : ३४६७, अन ज़ैद बिन अरक़म ؓ]

फायदा : "वर्स" तिल के मानिंद एक क़िस्म की घास है, जिस से रंगाई का काम लिया जाता है और "कुस्त" एक ख़ुश्बूदार लकड़ी है जिस को ऊदे हिन्दी भी कहते हैं।

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम अल्लाह तआला और उस के रसूल का हुक्म मानो और हुक्म की ख़िलाफ़ वरज़ी से बचते रहो, फिर अगर तुम मुँह मोड़ोगे (और नहीं मानोगे) तो यक़ीन जानो के हमारे रसूल के ज़िम्मे तो सिर्फ अहकाम को साफ साफ पहुँचा देना है।" [सूर-ए-मायदा : ९२]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२० रबीउस सानी

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — मदीना मुनव्वरा में इस्लाम का फैलना

मदीना में ज़ियादा तर आबादियाँ क़बील-ए-औस व ख़ज़रज की थीं, यह लोग मुशरिक और बुत परस्त थे। उन के साथ यहूद भी रहते थे। जब कभी क़बील-ए-औस व ख़ज़रज से यहूद का मुक़ाबला होता, तो यहूद कहा करते थे के अन क़रीब आख़री नबी मबऊस होने वाले हैं, हम उन की पैरवी करेंगे और उन के साथ हो कर तुम को "क़ौमे आद" और "क़ौमे इरम" की तरह हलाक व बरबाद करेंगे। जब हज का मौसम आया, तो क़बील-ए-ख़ज़रज के तक़रीबन छे लोग मक्का आए। यह नुबुव्वत का गयारहवाँ साल था। हुज़ूर ﷺ उन के पास तशरीफ ले गए, इस्लाम की दावत दी और क़ुर्आन की आयतें पढ़ कर सुनाई। उन लोगों ने आप ﷺ को देखते ही पहचान लिए और एक दूसरे को देख कर कहने लगे : ख़ुदा की क़सम ! यह वही नबी हैं जिन का तज़केरा यहूद किया करते थे। कहीं ऐसा न हो के इस सआदत को हासिल करने में यहूद हम से आगे बढ़ जाएँ। फिर उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया और हुज़ूर ﷺ से कहा के हमारे और यहूद के दर्मियान बराबर लड़ाई होती रहती है ; अगर आप इजाज़त दें, तो दीने इस्लाम का ज़िक्र वहाँ जाकर किया करें, ताके वह लोग अगर इस दीन को क़बूल कर लें, तो हमेशा के लिये लड़ाई ख़त्म हो जाए और आपस में मुहब्बत पैदा हो जाए (क्योंकि इस दीन की बुनियाद ही आपसी मुहब्बत व भाई चारगी पर क़ायम है) हुज़ूर ﷺ ने उन्हें इजाज़त दे दी। वह वापस हो कर मदीना मुनव्वरा पहुँचे, जिस मज्लिस में बैठते वहां आप का ज़िक्र करते। इस का असर यह हुआ के मदीना का कोई घर ऐसा बाक़ी न रहा जहाँ दीन न पहुँचा।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — उमैर और सफवान की साज़िश की ख़बर देना

उमैर बिन वहब और सफवान बिन उमय्या खान-ए-काबा में बैठ कर बद्र के मक़तूलीन पर रो रहे थे बिलआख़िर उन दोनों में पोशीदा तौर पर यह साज़िश क़रार पाई के उमैर मदीना जा कर आप ﷺ को धोके से क़त्ल कर आए। लिहाज़ा उमैर उठ कर घर आया और तलवार को ज़हर में बुझा कर मदीना को चल खड़ा हुआ और मदीना पहुँचा। आप ﷺ ने पूछा : उमैर यहाँ किस इरादे से आए हो? उस ने कहा के उस क़ैदी को छुड़ाने आया हूँ। आप ﷺ ने फ़र्माया : क्या तुम दोनों ने खान-ए-काबा में बैठ कर मेरे क़त्ल की साज़िश नहीं की है? उमैर यह राज़ की बात सुन कर सक्ते में पड़ गया और बे इख़्तियार बोल उठा के मुहम्मद ! बे शक आप ख़ुदा के पैग़म्बर हैं ख़ुदा की क़सम ! मेरे और सफवान के अलावा किसी तीसरे को इस मामले की ख़बर न थी फिर उमैर ने कलिमा पढ़ा और आप ﷺ ने उन के क़ैदी को छोड़ दिया।

[तारीख़े तबरी : १/४५७, जिकरु वक़अति बदरिल कुबरा]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — जन्नत में दाख़ले के लिये ईमान शर्त है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस शख़्स की मौत इस हाल में आए, के वह अल्लाह तआला पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखता हो, तो उस से कहा जाएगा, के तुम जन्नत के आठों दरवाज़ों में से जिस से चाहो दाख़िल हो जाओ।"

[मुसनदे अहमद : १८, अन उमर ؓ]

फायदा : जन्नत में जाने के लिये मरते वक़्त दीन की बुनियादी बातों का अक़ीदा रखना ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	सफर में आसानी की दुआ

जब सफर में जाने का इरादा करे तो यह दुआ पढ़े : ((اَللّٰهُمَّ اطْوِلَنَا الْاَرْضَ وَهَوِّنْ عَلَيْنَا السَّفَرَ))
तर्जमा : ऐ अल्लाह ! ज़मीन को हमारे लिये समेट दे और इस सफर को हम पर आसान कर दे।

[अबू दाऊद : २५९८, अन अबी हुरैरह]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अज़ान का जवाब देना

एक आदमी ने अर्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! मोअज़्ज़िन हज़रात फज़ीलत में हम से आगे बढ़ गए रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम भी इसी तरह अज़ान का जवाब दिया करो, जिस तरह वह अज़ान देते हैं फिर जब तुम फारिग़ हो जाओ तो अल्लाह तआला से दुआ करो, तुम्हारी दुआ पूरी होगी।"

[अबू दाऊद : ५२४, अन अब्दुल्लाह बिन उम्र]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	बातिल परस्तों के लिये सख़्त अज़ाब है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो लोग ख़ुदा के दीन में झगड़ते हैं, जब के वह दीन लोगों में मक़बूल हो चुका है (लिहाज़ा) उन लोगों की बहस उन के रब के नज़दीक बातिल है, उन पर ख़ुदा का ग़ज़ब है और सख़्त अज़ाब (नाज़िल होने वाला है)।" [सूर-ए-शूरा : १६]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की ज़िन्दगी खेल तमाशा है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "दुनिया की ज़िन्दगी खेल कूद के सिवा कुछ भी नहीं है और आख़िरत की ज़िन्दगी ही हक़ीक़ी ज़िन्दगी है, काश यह लोग इतनी सी बात समझ लेते।"

[सूर-ए-अनकबूत : ६४]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत के दिन लोगों की हालत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "क़यामत के रोज़ सूरज एक मील के फासले पर होगा और उस की गर्मी में भी इज़ाफा कर दिया जाएगा, जिस की वजह से लोगों की खोपड़ियों में दिमाग़ इस तरह उबल रहा होगा जिस तरह हाँडियाँ जोश मारती हैं, लोग अपने गुनाहों के बक़द्र पसीने में डूबे हुए होंगे, बाज़ टख़्नों तक, बाज़ पिंडलियों तक, बाज़ कमर तक और बाज़ के मुंह में लगाम की तरह होगा।"

[मुस्नदे अहमद : २१६८२, अन अबी उमामा]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	खुम्बी (मशरूम) से आँखों का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "खुम्बी का पानी आँखों के लिये शिफा है।" [बुख़ारी:५७०८, सईद बिन ज़ैद]
फायदा : हज़रत अबू हुरैरह अपना वाक़िआ बयान करते हैं, मैं ने तीन या पाँच या सात खुम्बियाँ लीं और उस का पानी निचोड़ कर एक शीशी में रख लिया, फिर वही पानी मैं ने अपनी बाँदी की दुखती हुई आँख में डाला तो वह अच्छी हो गई। [तिर्मिज़ी : २०६९]
नोट : खुम्बी को हिन्दुस्तान के बाज़ इलाक़ों में साँप की छतरी और बाज़ दूसरे इलाक़ों में कुकुरमुत्ता कहते हैं, याद रहे के बाज़ खुम्बियाँ ज़हरीली भी होती हैं, लिहाज़ा तहक़ीक़ के बाद इस्तेमाल की जाएँ।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो, उसे चाहिये के अपने पड़ोसी को तकलीफ न दे।" [बुख़ारी : ६०१८, अन अबी हुरैरह]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२१ रबीउस सानी

नंबर (१): इस्लामी तारीख — पहली बैते अक़बा

अक़बा, मिना के क़रीब एक घाटी का नाम है, जहाँ सन ११ नबवी में मदीना से छे : अफराद ने आकर दीने इस्लाम क़बूल किया था, इस के दूसरे साल सन १२ नबवी में बारा अफ़राद रसूलुल्लाह ﷺ से मुलाक़ात करने और बैत होने के लिये आए और आप ﷺ के मुबारक हाथ पर चोरी, जिना और क़त्ले औलाद से बचने, अच्छी बातों में आप की इताअत व पैरवी करने और एक अल्लाह की इबादत करने पर बैत की। इस को "बैते अक़ब-ए-ऊला" कहा जाता है। जब उन लोगों ने वापसी का इरादा किया, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने मुसअब बिन उमैर रज़ि. को कुर्आन मजीद पढ़ाने, इस्लाम की तालीम देने और दीनी मसाइल बताने के लिये उन लोगों के साथ रवाना किया। मदीना पहुँच कर उन्होंने असअद बिन ज़ुरारा के मकान पर क़याम किया। वह लोगों को इस्लाम की दावत देते और मुसलमानों को नमाज़ भी पढ़ाते थे। उन को मदीना वाले "अलमुक़री" (पढ़ाने वाला उस्ताद) कहा करते थे, उन्हीं की दावत व तब्लीग़ से सअद बिन मआज़ और उसैद बिन हुज़ैर जैसे सरदारों ने इस्लाम क़बूल किया था।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — आँखों की हिफाज़त

अल्लाह तआला ने दुनिया के हसीन तरीन मनाज़िर देखने के लिये हमें जिस तरह आँख जैसी नेअमत अता फ़र्माई है, इसी तरह उन की हिफाज़त के लिये ख़ुद बख़ुद मशीन की तरह उन पर ऐसे परदे लगा दिये हैं के जब कोई नुक़सान पहुँचाने वाली चीज़ आँखों के सामने आती है, तो वह ख़ुद बख़ुद बंद होने लगती हैं, उन की हरकत से जहाँ बाहर की चीज़ों के हमले से हमारी आँखें महफ़ूज़ हो जाती हैं, वहीं उन के खुलने और बंद होने से आँख का मैल कुचैल साफ होता रहता है। अल्लाह तआला ने अपनी हिकमत व क़ुदरत से आँखों की हिफाज़त का कैसा अजीब व ग़रीब इन्तेज़ाम कर दिया है!

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ में ख़ामोश रहना

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि. फ़र्माते हैं: (शुरू इस्लाम में) हम में से बाज़ अपने बाज़ू में खड़े शख़्स से नमाज़ की हालत में बात कर लिया करता था, फिर यह आयत नाज़िल हुई: ﴿وَقُومُوا لِلّٰهِ قٰنِتِينَ﴾ तर्जमा : अल्लाह के लिये ख़ामोशी के साथ खड़े रहो (यानी बातें न करो)। फिर हमें ख़ामोश रहने का हुक्म दे दिया गया और बात करने से रोक दिया गया। [तिर्मिज़ी : ४०५]

फायदा : नमाज़ में बात चीत न करना और ख़ामोश रहना ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — रुकू व सज्दे में उंगलियों को रखने का तरीक़ा

रसूलुल्लाह ﷺ जब रुकू फ़र्माते तो (हाथों की) उंगलियों को खुली रखते और जब सज्दा फ़र्माते, तो उंगलियाँ मिला लेते। [तबरानी कबीर : १७४९८, अन वाइल बिन हज्र रज़ि.]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	कुंवां खुदवाने का सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने पानी का कुंवां खुदवाया और उस से किसी प्यासे परिन्दे, जिन या इन्सान ने पानी पिया, तो क़यामत के दिन अल्लाह तआला उस को अज्र अता फ़र्माएगा।"

[सही इब्ने खुज़ैमा : १२२७, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	हँसाने के लिये झूट बोलना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "उस शख्स के लिये हलाकत है, जो लोगों को हँसाने के लिये कोई बात कहे और उस में झूट बोले, उस के लिये हलाकत है, हलाकत है।"

[अबू दाऊद : ४९९०, अन मुआविया बिन हैदा ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	ज़रूरत से ज़ाइद सामान शैतान के लिये

रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ؓ से फ़र्माया :"एक बिस्तर आदमी के लिये और एक उस की बीवी के लिये और तीसरा मेहमान के लिये और चौथा शैतान के लिये होता है।"

[मुस्लिम : ५४५२]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	क़यामत का होलनाक मन्ज़र

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "(क़यामत का मुन्किर) पूछता है के क़यामत का दिन कब आएगा? जिस दिन आँखें पथरा जाएँगी और चाँद बेनूर हो जाएगा और सूरज व चाँद (दोनों बेनूर हो कर) एक हालत पर कर दिये जाएँगे, उस दिन इन्सान कहेगा : (क्या) आज कहीं भागने की जगह है? जवाब मिलेगा : हरगिज नहीं (आज) कहीं पनाह की जगह नहीं है, उस दिन सिर्फ आप के रब के पास ठिकाना होगा।"

[सूर-ए-कियामा : ६ ता १२]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बरनी खजूर से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम्हारी खजूरों में बेहतरीन खजूर बरनी है और वह ऐसी दवा है जो बिमारी को दूर करती है और इस में कोई नुक़सान नहीं है।"

[मुस्तदरक : ८२४३, अन मज़ीदा ؓ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जब तुम बात किया करो, तो इन्साफ का ख़याल रखा करो, अगरचे वह शख़्स तुम्हारा रिश्तेदार ही हो और अल्लाह तआला से जो अहद करो उस को पूरा किया करो, अल्लाह तआला ने तुम्हें इस का ताकीदी हुक्म दिया है। ताके तुम याद रखो (और अमल करो)

[सूर-ए-अन्आम : १५३]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२२ रबीउस सानी

नंबर १ : इस्लामी तारीख — दूसरी बैते अक़बा

मदीना मुनव्वरा में हज़रत मुसअब बिन उमैर ﷺ की दावत और मुसलमानों की कोशिश से हर घर में इस्लाम और पैगम्बरे इस्लाम का तज़केरा होने लगा था, लोग इस्लाम की ख़ूबियों को देख कर ईमान में दाखिल होने लगे थे। सन १३ नबवी में मुसअब बिन उमैर ﷺ ७० से ज़ियादा मुसलमानों पर मुश्तमिल एक जमात ले कर हज करने की ग़र्ज़ से मक्का आए, उस क़ाफले में मुसलमानों के साथ क़बील-ए-औस व ख़ज़रज के मुश्रिकीन भी थे। रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने चचा हज़रत अब्बास ﷺ के साथ अक़बा नामी घाटी में आकर रात के वक़्त मुसलमानों से मुलाक़ात फ़र्माई। हज़रत अब्बास ने मुसलमानों की जमात से कहा : मुहम्मद ﷺ अपनी क़ौम में निहायत बाइज़्ज़त हैं और हम उन की हिफ़ाज़त का ख़याल करते हैं। वह तुम्हारे यहाँ आना चाहते हैं। अगर तुम पूरी तरह हिफ़ाज़त करने का वादा करो तो बेहतर है वरना साफ जवाब दे दो। अन्सार ने कहा : हम ने आप की बात सुन ली। अब हुज़ूर ﷺ भी कुछ फ़र्माए, आप ﷺ ने क़ुर्आन की तिलावत फ़र्मा कर उन्हें इस्लाम लाने का शौक़ दिलाया फिर फ़र्माया : हम चाहते हैं के तुम लोग हमारे साथियों को ठिकाना दे कर उन की हिफ़ाज़त करो और रंज व ग़म, राहत व आराम और तंगदस्ती व मालदारी हर हाल में मेरी पैरवी करो, इस नसीहत को सुन कर अन्सार ने बख़ुशी मन्ज़ूर करते हुए आप ﷺ के हाथ पर बैत की, फिर इस्लाम की दावत व तब्लीग़ के लिये उन में से बारा अफराद को ज़िम्मेदार बनाया।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हज़रत जाबिर ﷺ के बाग़ की खजूरों में बरकत

हज़रत जाबिर ﷺ फ़र्माते हैं के मेरे वालिद जंगे उहुद में शहीद हो गए, लेकिन अपने पीछे इतना क़र्ज़ा छोड़ गए के मेरे बाग़ की ख़जूरों से वह क़र्ज़ा अदा होना मुशकिल था और इधर खजूर काटने का वक़्त आ पहुँचा तो मैं आप ﷺ के पास आया और सारी हालत आप ﷺ के सामने रखी, तो आप ﷺ ने फ़र्माया : अच्छा जाओ और खजूरें काट कर अलग अलग ढेर कर लो, मैं गया और ऐसा ही किया, फिर हुज़ूर ﷺ आए और सब से बड़े ढ़ेर का तीन बार चक्कर लगाया और फिर उस के पास बैठ गए और फ़र्माया : अपने क़र्ज़ ख़्वाहों को देना शुरू करो ! मैं ने उस में से तौल कर देना शुरू किया, अल्लाह तआला ने मेरे वालिद का कुल क़र्ज़ा अदा करा दिया लेकिन जितने ढ़ेर थे सब बच गए और जिस पर हुज़ूर ﷺ तशरीफ़ फ़र्मा थे क़सम बख़ुदा ! वह ऐसा ही रहा एक खजूर भी उस की कम न हुई।

[बुख़ारी : २७८१, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — दीन में नमाज़ की अहेमियत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दीन बग़ैर नमाज़ के नहीं है, नमाज़ दीन के लिये ऐसी है जैसा आदमी के बदन के लिये सर होता है।"

[तबरानी औसत : २३८३, अन इब्ने उमर ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	जन्नत हासिल करने के लिये दुआ करना

जन्नत हासिल करने के लिये इस दुआ को कसरत से माँगे : ﴿وَاجْعَلْنِي مِنْ وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ﴾

तर्जमा : (ऐ मेरे रब !) मुझ को जन्नत की नेअ्मतों का वारिस बना दे। [सूर-ए-शोअरा : ८५]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	हलाल कमाई से मस्जिद बनाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने हलाल कमाई से अल्लाह की इबादत के लिये घर बनाया, तो अल्लाह तआला उस के लिये जन्नत में क़ीमती मोती और याक़ूत का शानदार घर बनाएगा।"

[मोअजमुल औसत : ५२१६, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	अच्छे और बुरे बराबर नहीं हो सकते

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "क्या वह लोग जो बुरे काम करते हैं, यह समझते हैं के हम उन्हें और उन लोगों को बराबर कर देंगे जो ईमान लाते हैं और नेक अमल करते हैं के उन का मरना और जीना बराबर हो जाए, उन का यह फैसला बहुत ही बुरा है।" [सूर-ए-जासिया : २१]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया आरज़ी और आख़िरत मुस्तक़िल है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "दुनिया की ज़िन्दगी महज़ चंद रोज़ा है और अस्ल ठहरने की जगह तो आख़िरत ही है।" [सूर-ए-मोमिन : ३९]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	हमेशा की जन्नत व जहन्नम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला जन्नतियों को जन्नत में दाख़िल कर देगा और जहन्नमियों को जहन्नम में दाख़िल कर देगा, फिर उन के दर्मियान एक एलान करने वाला कहेगा के ऐ जन्नतियों ! अब मौत नहीं आएगी, ऐ जहन्नमियों ! अब मौत नहीं आएगी (तुम में का जो जहाँ है हमेशा उस में रहेगा)"

[मुस्लिम : ७१८३, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	खजूर से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "ज़चगी की हालत में तुम अपनी औरतों को तर खजूरें खिलाओ और अगर वह न मिलें तो सूखी खजूरें खिलाओ।"

[मुस्नदे अबी याला : ४३४, अन अली ؓ]

खुलासा : बच्चे की पैदाइश के बाद खजूर खाने से औरत के जिस्म का फासिद ख़ून निकल जाता है और बदन की कमज़ोरी ख़त्म हो जाती है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "औरत से चार चीज़ों की वजह से निकाह किया जाता है। उस के माल, हसब नसब, ख़ूबसूरती और दीनदारी की वजह से। तुम्हारा भला हो ! तुम दीनदार औरत को पसन्द कर के कामयाब हो जाओ।"

[बुख़ारी : ५०९०, अन अबी हुरैरह ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

२३ रबीउस सानी

नंबर १ : इस्लामी तारीख — मुसलमानों का मदीना हिजरत करना

मक्का मुकर्रमा में मुसलमानों पर बे पनाह ज़ुल्म व सितम हो रहा था, इस लिये रसूलुल्लाह ﷺ ने दूसरी बैते अक़्बा के बाद मुसलमानों को मदीना जाने की इजाज़त दे दी। मुसलमानों में सब से पहले अबू सलमा ने हिजरत का इरादा किया और सवारी तय्यार कर के सामान रखा और अपनी बीवी उम्मे सलमा और लड़के सलमा को साथ लिया, मगर बनी मुग़ीरा ने उम्मे सलमा को जाने न दिया और बनी अब्दुल असद ने उन के बेटे सलमा को छीन लिया। जिस में उस बच्चे का एक हाथ भी उखड़ गया। उस के बाद अबू सलमा तन्हा हिजरत कर गए। उम्मे सलमा रोज़ाना मक़ामे अबतह पर आकर रोती रहती थीं। इस तरह एक साल का अरसा गुज़र गया। आख़िर एक शख़्स ने उन पर रहम खा कर उन के शौहर अबू सलमा के पास भेजने पर क़ुरैशे मक्का को राज़ी कर लिया। उस वक़्त बनी अब्दुल असद ने उन के लड़के सलमा को वापस किया। जिसे ले कर वह किसी तरह मदीना पहुँच गईं। उन के अलावा दीगर मुसलमानों को भी हिजरत करने में बहुत ज़ियादा मुसीबतें उठानी पड़ीं। इस्लाम की ख़ातिर अपने महबूब वतन, माल व दौलत और रिश्तेदारों को छोड़ना पड़ा। हज़रत सुहैब ؓ ने जब हिजरत का इरादा किया, तो मुश्रिकीन ने रोक लिया। हज़रत सुहैब ؓ ने उन्हें अपना सारा माल दे कर राज़ी किया और हिजरत फ़र्माई। इस की ख़बर रसूलुल्लाह ﷺ को मिली, तो आप ﷺ ने फ़र्माया के सुहैब ने नफ़े का सौदा किया, जिस का ज़िक्र कुर्आन में है।

नंबर २ : अल्लाह की कुदरत — नींद का आना

जब इन्सान दिन भर काम कर के थक जाता है, तो अल्लाह तआला उस की थकान दूर करने के लिये उस पर नींद तारी कर देता है, यह नींद उस के फ़िक्र व ग़म को दूर कर के ऐसा सुकून व राहत का ज़रिया बनती है के दुनिया की कोई चीज़ उस का बदल नहीं बन सकती, फिर अल्लाह तआला ने यह नेअ्मत अमीर व ग़रीब, आलिम व जाहिल, बादशाह व फक़ीर हर एक को यकसाँ अता फ़र्मा रखी है। और इस के लिये रात का वक़्त मुतअय्यन कर दिया है। अगर इन्सान को नींद न आए तो उस का दिमाग़ी तवाज़ुन बिगड़ जाता है और होश व हवास ख़त्म हो जाते हैं, लोगों के लिये रात का वक़्त मुतअय्यन करना और एक साथ नींद का आना अल्लाह की बड़ी क़ुदरत है।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — माँगी हुई चीज़ का लौटाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फार्मया : "(वापसी की शर्त पर) माँगी हुई चीज़ को वापस किया जाएगा।"

[इब्ने माजा : २३९८, अन अबी उमामा ؓ]

ख़ुलासा : अगर किसी शख़्स ने कोई सामान यह कह कर माँगा के वापस कर दूँगा, तो उस को मुक़र्ररा वक़्त पर लौटाना वाजिब है, उस को अपने पास रख लेना और बहाना बनाना जाइज़ नहीं है।

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — तीन उंगलियों से खाना

हज़रत कअब बिन मालिक ؓ फ़र्माते हैं : रसूलुल्लाह ﷺ तीन उंगलियों से खाते थे और जब खाने से फ़ारिग़ हो जाते तो उंगलियाँ चाट लेते थे।

[मुस्लिम : ५२९८, अन कअब ؓ]

नोट : खाने के बाद उंगलियों को चाटना सुन्नत है, लेकिन इस तरह नहीं चाटना चाहिये के देखने वाले को नागवार हो।

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमें बारिश अता फ़र्मा, ऐ अल्लाह हमें बारिश अता फ़र्मा , ऐ अल्लाह हमें बारिश अता फ़र्मा।

[बुख़ारी : १०१४, अन अनस बिन मालिक ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | घर से वुज़ू कर के मस्जिद जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम में से कोई घर से वुज़ू कर के मस्जिद आए, तो घर लौटने तक उसे नमाज़ का सवाब मिलता रहेगा।"

[मुस्तदरक : ७४४, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | काफ़िर नाकाम होंगे

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "बेशक जो लोग काफिर हो गए और (दूसरों को भी) अल्लाह के रास्ते से रोका और हिदायत ज़ाहिर होने के बाद अल्लाह के रसूल की मुख़ालफत की, तो यह लोग अल्लाह (के दीन) को ज़रा भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे और अल्लाह तआला उन के तमाम आमाल को बरबाद कर देगा।"

[सूर-ए-मुहम्मद : ३२]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | लोगों की कंजूसी

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "सुन लो ! तुम ऐसे हो के जब तुम को अल्लाह की राह में ख़र्च करने के लिये बुलाया जाता है, तो तुम में से बाज़ लोग बुख्ल करते हैं और जो कंजूसी करता है, तो हक़ीक़त में अपने ही लिये कंजूसी करता है और अल्लाह तआला ग़नी है (किसी का मोहताज नहीं) और तुम सब उस के मोहताज हो।"

[सूर-ए-मुहम्मद : ३८]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | हौज़े कौसर क्या है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "कौसर जन्नत में एक नहेर है, जिस के दोनों किनारे सोने के हैं और वह मोती और याक़ूत पर बहती है, उस की मीट्टी मुश्क से ज़ियादा ख़ुशबूदार, उस का पानी शहेद से ज़ियादा मीठा और बर्फ से ज़ियादा सफेद है।"

[तिर्मिज़ी : ३३६१, अन इब्ने उमर ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | वरम (सूजन) का इलाज

हज़रत असमा ﷺ के चेहरे और सर में वरम हो गया, तो उन्होंने हज़रत आयशा ﷺ के ज़रिये आप ﷺ को उस की खबर दी। चुनान्चे हुज़ूर ﷺ उन के यहाँ तशरीफ ले गए और दर्द की जगह पर कपड़े के ऊपर से हाथ रख कर तीन मर्तबा यह दुआ फ़र्माई :

((اَللّٰهُمَّ أَذْهِبْ عَنْهَا سُوْئَهُ وَفُحْشَهُ بِدَعْوَةِ نَبِيِّكَ الطَّيِّبِ الْمُبَارَكِ الْمَكِيْنِ عِنْدَكَ، بِسْمِ اللّٰهِ))

फिर फ़र्माया : यह कह लिया करो, चुनान्चे उन्होंने तीन दिन तक यही अमल किया तो उन का वरम जाता रहा।

[दलाइलुन्नुबुव्वह लिलबैहक़ी : २४२०]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम अपने किसी भाई की मुसीबत पर ख़ुशी का इज़्हार मत करो (अगर ऐसा करोगे तो हो सकता है के) अल्लाह तआला उस को उस मुसीबत से नजात दे दे और तुम को उस मुसीबत में मुब्तला कर दे।"

[तिर्मिज़ी : २५०६, अन वासला बिन असक़ा ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा

(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२४ रबीउस सानी

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — नबी ﷺ के क़त्ल की नाकाम साज़िश

कुरैश को जब मालूम हुआ के मोहम्मद ﷺ भी हिजरत करने वाले हैं, तो उन को बड़ी फिक्र हुई के अगर मोहम्मद ﷺ भी मदीना चले गए, तो इस्लाम जड़ पकड़ जाएगा और फिर वह अपने साथियों के साथ मिल कर हम से बदला लेंगे और हमें हलाक कर देंगे। इस बिना पर उन्होंने कुसइ बिन किलाब के घर, जो दारुन नदवा के नाम से मशहूर था, साज़िश के लिये जमा हुए, उस में हर क़बीले के सरदार मौजूद थे, सभी ने आपस में यह तय किया, के हर क़बीले का एक एक शख़्स जमा हो और सब मिल कर तलवारों से हुज़ूर ﷺ का ख़ातमा कर दें (नऊज़ु बिल्लाह), इस फैसले के बाद उन्होंने रात के वक़्त रसूलुल्लाह ﷺ के मकान को घेर लिया और इस इन्तेज़ार में रहे के जब मोहम्मद (ﷺ) सुबह को नमाज़ के लिये निकलेंगे, तो तलवारों से उन का ख़ात्मा कर देंगे, मगर अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह ﷺ को कुरैश की इस साज़िश से बाखबर कर दिया, इसी लिये आप रात को अपने बिस्तर पर हज़रत अली रज़ि. को लिटा कर सूर-ए-यासीन पढ़ते हुए और उन के सरों पर मिट्टी डालते हुए उन के सामने से गुज़र गए और अल्लाह तआला ने उन की आँखों पर परदा डाल दिया, उन लोगों को कुछ भी खबर न हुई, सुबह को जब उन्होंने हज़रत अली रज़ि. को बाहर निकलते देखा तो बहुत शर्मिन्दा हुए।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — बकरी का दूध देना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़र्माते हैं के मैं मक़ामे जियाद में उक़बा बिन अबी मुईत की बकरियाँ चरा रहा था, इतने में मुहम्मद ﷺ और हज़रत अबू बक्र रज़ि. हिजरत करते हुए मेरे पास पहुँचे और कहने लगे : तुम हम को दूध पिला सकते हो? मैं ने कहा : यह बकरियाँ मेरे पास अमानत हैं मैं इन का दूध कैसे पिला सकता हूँ ? तो फ़र्माया : अच्छा ठीक है इतना तो करो के जिस बकरी ने अभी तक बच्चा नहीं जना उस को ले आओ, तो मैं ने ऐसी बकरी हाज़िर कर दी। आप ﷺ ने उस के थनों पर जैसे ही हाथ फेरा थनों में दूध भर आया फिर उस को एक प्याले में दूहा, उस में से आप ﷺ ने पिया फिर हज़रत अबू बक्र रज़ि. को और फिर मुझ को पिलाया और थनों से कहा सुकड़ जाओ तो वह थन अपनी पहली हालत पर लौट आए।

[तबरानी कबीर : ८३७४, अन इब्ने मसऊद रज़ि.]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — सज्द-ए-सहव करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम में से किसी को (नमाज़ में) भूल चूक हो जाए, तो सज्द-ए-सहव कर ले।"

[मुस्लिम : १२८३]

फायदा : अगर नमाज़ में कोई वाजिब भूल से छूट जाए या वाजिबात और फराइज़ में से किसी को अदा करने में देर हो जाए, तो सज्द-ए-सहव करना वाजिब है; इस के बग़ैर नमाज़ नहीं होती।

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — बारिश के लिए यह दुआ माँगे

रसूलुल्लाह ﷺ ने बारिश के लिये हाथ उठा कर यह दुआ माँगी : ((اَللّٰهُمَّ أَغِثْنَا، اَللّٰهُمَّ أَغِثْنَا، اَللّٰهُمَّ أَغِثْنَا))

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२५ रबीउस सानी

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हुज़ूर ﷺ की हिजरत

रसूलुल्लाह ﷺ को जब हिजरत की इजाज़त मिली, तो उस की इत्तेला हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ को दे दी, और जब हिजरत का वक़्त आया, तो रात के वक़्त घर से निकले और काबा पर अलविदाई नज़र डाल कर फ़र्माया : तू मुझे तमाम दुनिया से ज़ियादा महबूब है। अगर मेरी क़ौम यहाँ से न निकालती तो मैं तेरे सिवा किसी और जगह को रहने के लिये इख़्तियार न करता। हज़रत असमा बिन्ते अबू बक्र ने दो तीन रोज़ के खाने पीने का सामान तय्यार किया। आप ﷺ हज़रत अबू बक्र رضی اللہ عنہ के साथ मक्का से रवाना हुए। एक तरफ महबूब वतन छोड़ने का ग़म था और दूसरी तरफ नोकीले पत्थरों के दुश्वार गुज़ार रास्ते और हर तरफ से दुश्मनों का ख़ौफ था। मगर इस्लाम की ख़ातिर इमामुल अम्बिया तमाम मुसीबतों को झेलते हुए आगे बढ़ रहे थे। रास्ते में हज़रत अबू बक्र رضی اللہ عنہ कभी आगे आगे चलते और कभी पीछे पीछे चलने लगते थे। हुज़ूर ﷺ ने इस की वजह पूछी, तो उन्होंने फ़र्माया : या रसूलल्लाह ! जब मुझे पीछे से किसी के आने का ख़याल होता है, तो मैं आप ﷺ के पीछे चलने लगता हूँ और जब आगे किसी के घात में रहने का ख़तरा होता है, तो आगे चलने लगता हूँ। चूँकि कुफ्फार की मुख़ालफत का ज़ोर था और वह लोग (नऊज़ु बिल्लाह) आप ﷺ के क़त्ल की कोशिश में थे। इस लिये रास्ते में आप ﷺ और हज़रत अबू बक्र رضی اللہ عنہ ने "ग़ारे सौर" में पनाह ली, उस ग़ार में पहले हज़रत अबू बक्र رضی اللہ عنہ दाख़िल हुए और उस को साफ किया, फिर हुज़ूर ﷺ उस में दाखिल हुए और तीन रोज़ तक उसी ग़ार में रहे।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — ग़िज़ा और साँस की नालियाँ

अल्लाह तआला ने हमारे साँस लेने और खाने पीने की दो मुख़्तलिफ नालियाँ बनाई हैं। खाने की नाली का तअल्लुक़ मेदे से है और साँस की नाली का तअल्लुक़ फेफड़े से है। जब इन्सान खाता है या पीता है, तो कुदरती तौर पर साँस की नाली का मुँह ढक्कन की तरह परदे से बँद हो जाता है और खाने की नाली के ज़रिये खाना मेदे में पहुँच जाता है। यही खाना अगर हवा की नाली में दाख़िल हो कर फेफड़े में पहुँच जाता, तो इन्सान का ज़िन्दा रहना मुशकिल हो जाता। मगर अल्लाह तआला की कुदरत पर कुरबान जाइये के दोनों नालियों के क़रीब होने के बावजूद साँस लेने और खाने पीने का हैरान कुन इन्तेज़ाम फ़र्मा दिया है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सूद से बचना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "ऐ ईमान वालो ! तुम कई गुना बढ़ा कर सूद मत खाया करो (क्योंकि सूद लेना मुतलक़न हराम है) और अल्लाह तआला से डरते रहो ताके तुम कामयाब हो जाओ।"

[सूर-ए-आले इमरान : १३०]

नोट : कम या ज़ियादा सूद लेना देना, खाना, खिलाना नाजाइज़ और हराम है, कुर्आन और हदीस में इस पर बड़ी सख़्त सज़ा आई है, लिहाज़ा हर मुसलमान पर सूदी लेन देन से बचना ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	इशा के बाद जल्दी सोना

रसूलुल्लाह ﷺ इशा से पहले नहीं सोते थे और इशा के बाद नहीं जागते थे।(बल्के सो जाते थे)

[मुस्नदे अहमद : २५७४८, अन आयशा رضي الله عنها]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	जमात के लिये मस्जिद जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स बा जमात नमाज़ के लिये मस्जिद में जाए तो आते जाते हर क़दम पर एक गुनाह मिटता है (हर हर क़दम पर) और उस के लिये एक नेकी लिखी जाती है।"

[मुस्नदे अहमद : ६५६३, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	इज़ार या पैन्ट टख्ने से नीचे पहनना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स तकब्बुर के तौर पर अपने इज़ार को टख्ने से नीचे लटकाएगा, अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस की तरफ रहमत की नज़र से नहीं देखेगा।"

[बुखारी : ५७८८, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया से बे रग़बती का इनाम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स जन्नत का ख्वाहिशमन्द होगा वह भलाई में जल्दी करेगा और जो शख्स जहन्नम से खौफ करेगा, वह ख्वाहिशात से ग़ाफिल (बे परवाह) हो जाएगा और जो मौत का इन्तेज़ार करेगा उस पर लज़्ज़तें बेकार हो जाएगी और जो शख्स दुनिया में ज़ुह्द (दुनिया से बे रग़बती) इख्तियार करेगा, उस पर मुसीबतें आसान हो जाएँगी।" [शोअबुल ईमान : १०२१९, अन अली رضي الله عنه]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	जन्नतियों का लिबास

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "उन जन्नतियों के बदन पर बारीक और मोटे रेशम के कपड़े होंगे और उन को चाँदी के कंगन पहनाए जाएँगे और उन का रब उन को पाकीज़ा शराब पिलाएगा (अहले जन्नत से कहा जाएगा के) यह सब नेअ्मतें तुम्हारे आमाल का बदला हैं और तुम्हारी दुनियवी कोशिश क़बूल हो गई।"

[सूर-ए-दहर : २१ ता २२]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	दाढ़ के दर्द का इलाज

एक मर्तबा हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा رضي الله عنه ने हुज़ूर ﷺ से दाढ़ में शदीद दर्द की शिकायत की, तो आप ﷺ ने उन्हें क़रीब बुला कर दर्द की जगह पर अपना मुबारक हाथ रखा और सात मर्तबा यह दुआ फ़र्माई : ((اَللّٰهُمَّ أَذْهِبْ عَنْهُ سُوْءَ مَا يَجِدُ وَفُحْشَهُ بِدَعْوَةِ نَبِيِّكَ الْمُبَارَكِ الْمَكِيْنِ عِنْدَكَ))

[दलाइलुन्नुबुव्वह लिलबैहक़ी : २४३३]

चुनान्चे फौरन आराम हो गया।

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "अल्लाह तआला तुम को हुक्म देता है के अमानत वालों को उन की अमानतें वापस कर दिया करो।"

[सूर-ए-निसा : ५८]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

२६ रबीउस सानी

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हुज़ूर ﷺ ग़ारे सौर में

रसूलुल्लाह ﷺ और हज़रत अबू बक्र ؓ दोनों मक्का छोड़ कर ग़ारे सौर में पहुँच चुके थे। उधर मुश्रिकीन ने पीछा करना शुरू किया और तलाश करते हुए ग़ारे सौर के बिल्कुल मुँह के क़रीब पहुँच गए। उस वक़्त हज़रत अबू बक्र ؓ ने कहा : या रसूलल्लाह ﷺ ! उन में से किसी ने एक क़दम भी आगे बढ़ाया, तो हमें देख लेगा। हुज़ूर ﷺ ने फ़र्माया : ((لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا)) घबराओ नहीं अल्लाह हमारे साथ है। अल्लाह तआला ने दोनों हज़रात की अपनी क़ुदरत से हिफ़ाज़त फ़र्माई। और वह लोग वापस हो गए। हज़रत अबू बक्र ؓ ने अपने बेटे अब्दुल्लाह से यह कह दिया था के वह मुशरिकों के दर्मियान होने वाली बातें रात के वक़्त आकर बता दिया करें। चुनान्चे वह रात के वक़्त ग़ार में आकर मुश्रिकों की साज़िशों की इत्तेला हुज़ूर ﷺ को दे देते थे और हज़रत असमा बिन्ते अबू बक्र ؓ खाना वग़ैरह पहुँचाया करती थीं। इस तरह तीन दिन यहाँ गुज़रे फिर मदीना की तरफ रवानगी हुई।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — ऊंटों के मुतअल्लिक़ ख़बर देना

ग़ज़्व-ए-बनू मुस्तलिक़ में हज़रत जुवैरिया ؓ को मुसलमानों ने क़ैद कर लिया था, तो उन के वालिद आप ﷺ की ख़िदमत में बतौरे फिदया के ऊंट ले कर हाज़िर हुए, लेकिन उन में से दो ऊंटों को वादिए अक़ीक़ में एक तरफ बाँध दिया था और आकर कहा : मेरी बेटी को मेरे हवाले कर दीजिये और उस के फिदये में यह ऊँट हाज़िर हैं। आप ﷺ ने फ़र्माया : वह दो ऊँट कब लाओगे जो तुम को ज़ियादा पसन्द हैं और जिन को बाँध कर आए हो ? वालिद ने कहा : मैं गवाही देता हूँ के आप ﷺ अल्लाह के रसूल हैं यह राज़ तो मेरे अलावा कोई नहीं जानता था और फिर उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया।

[तारीख़े दिमश्क लिइब्ने असाकिर : २१७/३]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — बीवी की वरासत में शौहर का हिस्सा

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम्हारे लिये तुम्हारी बीवियों के छोड़े हुए माल में से आधा हिस्सा है, जब के उन को कोई औलाद न हो और अगर उन की औलाद हो, तो तुम्हारी बीवियों के छोड़े हुए माल में चौथाई हिस्सा है (तुम्हें यह हिस्सा) उन की वसिय्यत और क़र्ज़ अदा करने के बाद मिलेगा।"

[सूर-ए-निसा : १२]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — मौत की सख़्ती के वक़्त की दुआ

हज़रत आयशा ؓ फ़र्माती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने मौत से पहले यह दुआ पढ़ी थी :

((اَللّٰهُمَّ أَعِنِّيْ عَلٰى غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَسَكَرَاتِ الْمَوْتِ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मौत की सख़्तियों और बे होशियों पर मेरी मदद फ़र्मा।

[तिर्मिज़ी : ९७८, अन आयशा ؓ]

नंबर ५ : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | वुज़ू कर के इमाम के साथ नमाज़ अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने अच्छी तरह मुकम्मल वुज़ू किया, फिर फ़र्ज नमाज अदा करने के लिए गया और इमाम के साथ नमाज पढ़ी, उस के (सगीरा गुनाह) माफ कर दिये जाते हैं।"

[इब्ने खुज़ैमा : १४०९, अन उसमान رضي الله عنه]

नंबर ६ : एक गुनाह के बारे में | कुफ्र की सज़ा जहन्नम है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जिन लोगों ने कुफ्र किया और अल्लाह के रास्ते (दीन से) लोगों को रोका, फिर कुफ्र की हालत ही में मर गए, तो अल्लाह तआला उन को कभी नहीं बख़्शेगा।

[सूर-ए-मुहम्मद : ३४]

नंबर ७ : दुनिया के बारे में | आख़िरत दुनिया से बेहतर है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम दुनियवी ज़िन्दगी को पेश पेश रखते हो; हालाँकि आख़िरत दुनिया से बेहतर है और बाकी रहने वाली है (इस लिये आख़िरत ही की तय्यारी करो)।"

[सूर-ए-अअ्ला : १६ ता १७]

नंबर ८ : आख़िरत के बारे में | हौज़े कौसर की कैफियत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हौज़े कौसर के बरतन सितारों के बराबर होंगे, उस से जो भी इन्सान एक घूँट पी लेगा तो हमेशा के लिये उस की प्यास बुझ जाएगी।"

[इब्ने माजा : ४३०३, अन सौबान رضي الله عنه]

नंबर ९ : तिब्बे नब्वी से इलाज | बीमार को परहेज़ का हुक्म

एक मर्तबा उम्मे मुन्ज़िर رضي الله عنها के घर पर रसूलुल्लाह ﷺ के साथ साथ हज़रत अली رضي الله عنه खजूर खा रहे थे, तो आप ﷺ ने फर्माया :" ऐ अली ! बस करो, क्योंकि तुम अभी कमज़ोर हो।"

[अबू दाऊद : ३८५६]

फायदा : बीमारी की वजह से चुँकि सारे ही आज़ा कमज़ोर हो जाते हैं, जिन में मेदा भी है, इस लिये ऐसे मौके पर खाने पीने में एहतियात करना चाहिये और मेदे में हल्की और कम ग़िज़ा पहुँचनी चाहिये ताके सही तरीके से हज़्म हो सके।

नंबर १० : नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तक़्वा व परहेज़गारी इख़्तियार करो, सब से बड़े इबादत गुज़ार बन जाओगे और थोड़ी चीज़ पर रज़ामन्द हो जाओ सब से बड़े शुक्र गुज़ार बन जाओगे और लोगों के लिये वही चीज़ पसन्द करो जो तुम अपने लिये पसन्द करते हो, तुम (सच्चे) मोमिन बन जाओगे और तुम अपने पड़ोसी के साथ हुस्ने सुलूक करो (पक्के) मुसलमान बन जाओगे और कम हंसा करो, क्योंकि ज़ियादा हँसने से दिल मुर्दा हो जाता है।"

[इब्ने माजा : ४२१७, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२७ रबीउस सानी

नंबर १: इस्लामी तारीख — ग़ारे सौर से हुज़ूर ﷺ की रवानगी

रसूलुल्लाह ﷺ हिजरत के दौरान ग़ारे सौर में जुमा, सनीचर और इतवार तीन दिन रहे, फिर जब मक्का में शोर व हंगामे में कमी हुई तो मदीना के लिये निकलने का इरादा फ़र्माया, अब्दुल्लाह बिन अरीक़त को रास्ते की रहनुमाई में बहुत महारत थी, उन्हें हज़रत अबू बक्र رضی اللہ عنہ ने दो सवारी दे कर मदीना पहुँचाने के लिये उजरत पर पहले ही से तय्यार कर रखा था, जब अब्दुल्लाह बिन अरीक़त सवारियाँ ले कर आया, तो आप ﷺ की ख़िदमत में पेश किया, चुनान्चे आप ﷺ ने एक ऊँटनी क़ीमतन पसन्द किया। इस तरह हुज़ूर ﷺ, हज़रत अबू बक्र, आमिर बिन फुहैरा और अब्दुल्लाह बिन अरीकत मदीना की तरफ निकल पड़े। इन हज़रात ने आम रास्ते को छोड़ कर साहिली रास्ता इख़्तियार किया, इसी सफर में आप ﷺ का गुज़र उम्मे माबद के ख़ेमे से हुआ, तो आप ﷺ ने उम्मे माबद की इजाज़त से उन की ख़ुश्क थनों वाली और कम्ज़ोर बकरी से दूध दूहा, सब ने सैर हो कर पिया, फिर दूध दूह कर उम्मे माबद को दे कर सफर का रुख़ किया, कुफ्फार ने एलान किया था के जो मुहम्मद (ﷺ) को गिरफ्तार कर के लाएगा, उस को इनाम में सौ ऊँट दिए जाएँगे। चुनान्चे सुराक़ा बिन मालिक ने ऊँटों की लालच में घोड़े पर सवार हो कर पीछा किया। जब क़रीब पहुँचा तो आप ﷺ ने दुआ फ़र्माई, जिस की वजह से उस के घोड़े के अगले दोनों पैर घुटनों तक ज़मीन में धँस गए। वह माफी माँगने लगा और वादा किया के अगर नजात मिली, तो कुफ्फार को आप का पीछा करने से रोक दूँगा, फिर आप ﷺ ने दुआ फ़र्माई तो उस को नजात मिली।

नंबर २: अल्लाह की कुदरत — साँस लेने का निज़ाम

जब हम गर्द व गुबार वाली हवा में साँस लेते हैं तो मिट्टी के ज़र्रात भी उस में शामिल हो जाते हैं। जिन से हिफाज़त के लिये अल्लाह तआला ने नाक से फेफड़े तक हवा के रास्ते में बलग़म पैदा कर दिया है जो हवा की नालियों को तर रखता है, जब हवा उन नालियों से गुज़रती है तो उस में मौजूद गर्द व गुबार बलग़म से चिपक जाते हैं और साफ सुथरी हवा फेफड़े में पहुँच जाती है, फिर बलग़म के ज़रिये यह गर्द व गुबार साँस की नालियों के बाहर आजाता है। सुब्हानल्लाह! अल्लाह ने अपनी क़ुदरत से हमारे फेफड़े की हिफाज़त का कैसा गैबी इन्तेज़ाम फ़र्माया है।

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ों को सही पढ़ने पर माफी का वादा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "पाँच नमाज़ें अल्लाह तआला ने फर्ज़ की हैं, जिस ने उन के लिये अच्छी तरह वुज़ू किया और ठीक वक़्त पर उन को पढ़ा और रुकू व सज्दह जैसे करना चाहिये वैसे ही किया, तो ऐसे शख़्स के लिये अल्लाह तआला का पक्का वादा है, के वह उस को बख़्श देगा; और जिस ने ऐसा नहीं किया तो उस के लिये अल्लाह तआला का कोई वादा नहीं, चाहेगा तो उस को बख़्श देगा और चाहेगा तो सज़ा देगा।"

[अबू दाऊद : ४२५, अन उबादा बिन सामित رضی اللہ عنہ]

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में	बीमारों की इयादत करना

रसूलुल्लाह ﷺ बीमारों की इयादत करते और जनाज़े में शरीक होते और गुलामों की दावत क़बूल फ़र्माते थे।

[मुस्तदरक लिल हाकिम : ३७३४, अन अनस बिन मालिक رضي الله عنه]

नंबर ⑤: एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	नमाज़ के लिये पैदल आना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "सब से ज़ियादा नमाज़ का सवाब उस आदमी को मिलेगा जो सब से ज़ियादा पैदल चल कर आए फिर उस से ज़ियादा सवाब उस आदमी को मिलेगा जो उस से ज़ियादा दूर से चल कर आए।

[बुख़ारी : ६५१, अन अबी मूसा رضي الله عنه]

नंबर ⑥: एक गुनाह के बारे में	मस्जिद में दुनिया की बातें करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "एक ज़माना ऐसा आएगा के लोग मस्जिद में हलक़े लगा कर दुनियवी बातें करेंगे, तुम को चाहिये के उन लोगों के पास बिल्कुल न बैठो, अल्लाह को उन लोगों से कोई वास्ता नहीं।"

[मुस्तदरक : ७९१६, अन अनस बिन मालिक رضي الله عنه]

नंबर ⑦: दुनिया के बारे में	दुनिया से क्या कहा गया

हज़रत सल्त बिन हकीम फ़र्माते हैं के हमें यह बात पहुँची है के दुनिया को यह वही की गई के जो तुझे छोड़ दे, तू उस की ख़िदमत कर और जो तुझे तरजीह दे उस से ख़िदमत ले।

[अज़्ज़ुहुद लिइब्ने अबिद्दुनिया : १४५]

नंबर ⑧: आख़िरत के बारे में	क़यामत के हालात

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जब सूरज बे नूर हो जाएगा और सितारे टूट कर गिर पड़ेंगे और जब पहाड़ चला दिये जाएँगे और जब दस माह की गाभन ऊँटनियाँ (क़ीमती होने के बावजूद आज़ाद) छोड़ दी जाएँगी और जब जंगली जानवर जमा हो जाएँगे और जब दरिया भड़का दिये जाएँगे तो क्या होगा ? .... (तो उस वक़्त) हर शख़्स उन आमाल को जान लेगा जो ले कर आया है।"

[सूर-ए-तकवीर : १ ता ६]

नंबर ⑨: तिब्बे नब्वी से इलाज	पछना के ज़रिये दर्द का इलाज

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने एहराम की हालत में दर्द की वजह से सर में पछना लगवाया।

[बुख़ारी : ५७०१]

खुलासा: पछना लगाने से बदन से फ़ासिद खून निकल जाता है जिस की वजह से दर्द वगैरह खत्म हो जाता है और आँख की रोशनी तेज़ हो जाती है।

नंबर ⑩: कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करो और आपस में झगड़ा न करो, वरना तुम बुज़दिल हो जाओगे और दुश्मन के मुक़ाबले में तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और (मुसीबत के वक़्त) सब्र करो, बेशक अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है।

[सूर-ए-अनफाल : ४६]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख | मदीना में हुज़ूर ﷺ का इन्तेज़ार

जब मदीना तय्यिबा के लोगों को यह मालूम हुआ के रसूलुल्लाह ﷺ मक्का से हिजरत कर के मदीना तशरीफ ला रहे हैं, तो उन की खुशी की इन्तेहा न रही, बच्चे बच्चियाँ अपने कोठों और छतों पर बैठ कर हुज़ूर ﷺ के आने की खुशी में तराने गाती थीं, रोज़ाना जवान, बड़े बूढ़े शहर से बाहर निकल कर दोपहर तक आप ﷺ की तशरीफ आवरी का इन्तेज़ार करते थे, एक दिन वह इन्तेज़ार कर के वापस हो ही रहे थे, के एक यहूदी की नज़र आप ﷺ पर पड़ी तो वह फौरन पुकार उठा "लोगो ! जिन का तुम को शिद्दत से इन्तेज़ार था वह आगए ! बस फिर क्या था, इस आवाज़ को सुनते ही सारे शहर में ख़ुशी की लहर दौड़ गई और पूरा शहर "अल्लाहु अक्बर" के नारों से गूँज उठा और तमाम मुसलमान इस्तिक़बाल के लिये निकल आए, अन्सार हर तरफ से जौक़ दर जौक़ आए और मुहब्बत व अक़ीदत के साथ सलाम अर्ज़ करते थे, खुश आमदीद कहते थे। तक़रीबन पांच सौ अन्सारियों ने हुज़ूर ﷺ का इस्तिक़बाल किया।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत | हुज़ूर ﷺ की दुआ की बरकत

एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ को क़ाज़ी बना कर यमन भेजा, तो हज़रत अली رضی اللہ عنہ कहने लगे : या रसूलल्लाह ! मैं तो एक नौजवान अदमी हूँ मैं उन के दर्मियान फैसला करूँगा? हालाँकि मैं तो यह भी नहीं जानता के फैसला क्या चीज़ है ? रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरे सीने पर अपना हाथ मुबारक मार कर फ़र्माया : ऐ अल्लाह ! इस के दिल को खोल दे और हक़ बात वाली ज़बान बना दे, चुनान्चे हज़रत अली رضی اللہ عنہ फ़र्माते हैं के अल्लाह की क़सम ! उस के बाद मुझे कभी भी दो आदमियों के दर्मियान फैसला करने में शक और तरद्दुद नहीं हुआ।

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : २१३४, अन अली رضی اللہ عنہ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | बीवी को उस का महर देना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम लोग अपनी बीवियों को उन का महर खुश दिली से दे दिया करो, अलबत्ता अगर वह अपने महर में से कुछ छोड़ दें, तो उसे लज़ीज़ और खुशगवार समझ कर खाओ।"

[सूर-ए-निसा : ४]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | अल्लाह से रहम तलब करने की दुआ

अल्लाह तआला से रहम व मग़फिरत इस तरह माँगे :

﴿رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ﴾

तर्जमा : ऐ परवरदिगार ! मेरी मग़फिरत फ़र्माइये और मुझ पर रहम फ़र्माइये क्योंकि आप सब से ज़्यादा रहम करने वाले हैं।

[सूर-ए-मोमिनून : ११८]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	नमाज़ के लिये मस्जिद जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "बन्दा जब भी सुबह व शाम मस्जिद जाता है, तो अल्लाह तआला हर मर्तबा मस्जिद जाने पर उस की मेहमानी का इन्तेज़ाम फ़र्मा देता है।" [बुखारी : ६६२, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	इस्लाम की दावत को ठुकराना एक बड़ा ज़ुल्म

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "उस शख़्स से बड़ा ज़ालिम कौन होगा, जो अल्लाह पर झूट बाँधे, जब के उसे इस्लाम की दावत दी जा रही हो और अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को हिदायत नहीं दिया करता।" [सूर-ए-सफ : ७]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	इन्सान की ख़सलत व मिज़ाज

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "इन्सान को जब उस का परवरदिगार आज़माता है और उस को इज़्ज़त व नेअ्मत देता है, तो कहता है के मेरे रब ने मुझ को इज़्ज़त दी और जब रोज़ी तंग कर के उस को आज़माता है तो कहता है : मेरे रब ने मुझे ज़लील कर दिया। [सूर-ए-फज्र : १५ ता १६]

ख़ुलासा : इन्सान दुनिया की ज़ाहिरी आराम व आराइश को देख कर उसे इज़्ज़त समझता है, इसी तरह दुनिया की ज़ाहरी मुसीबत व परेशानी को देख कर ज़िल्लत व रुस्वाई समझता है।

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जन्नत का ख़ेमा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जन्नत में मोती का खोलदार ख़ेमा होगा, जिस की चौड़ाई साठ मील होगी। उस के हर कोने में जन्नतियों की बीवियाँ होंगी, जो एक दूसरी को नहीं देख पाएँगी और उन के पास उन के शौहर आते जाते रहेंगे।" [बुखारी : ४८७९, अन अब्दुल्लाह बिन कैस رضي الله عنه]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	निनान्वे बीमारियों की दवा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स ((لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ)) पढ़ेगा, तो यह निनान्वे मर्ज की दवा है, जिस में सब से छोटी बीमारी रंज व ग़म है।" [मुस्तदरक हाकिम: १९९०, अन अबी हुरैरा رضي الله عنه]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस को यह अन्देशा हो के वह आख़री रात में नहीं उठ सकेगा तो उस को रात के शुरू ही में वित्र पढ़ लेना चाहिये और जिस को आख़री रात में उठने की पूरी उम्मीद हो तो उसे आख़री रात में वित्र पढ़ना चाहिये।" [मुस्लिम : १७६६, अन जाबिर رضي الله عنه]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२९) रबीउस सानी

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ | मस्जिदे क़ुबा की तामीर और पहला जुमा

मदीना मुनव्वरा से तक़रीबन तीन मील के फ़ासले पर एक छोटी सी बस्ती क़ुबा है, यहाँ अन्सार के बुहत से ख़ानदान आबाद थे और कुलसूम बिन हदम उन के सरदार थे, हिजरत के दौरान आप ﷺ ने पहले क़ुबा में क़याम फ़र्माया और कुलसूम बिन हदम के घर मेहमान हुए, रसूलुल्लाह ﷺ ने यहाँ अपने मुबारक हाथों से एक मस्जिद की बुनियाद डाली, जिस का नाम मस्जिदे क़ुबा है, मस्जिद की तामीर में सहाबा के साथ साथ आप ﷺ ख़ुद भी काम करते थे और भारी भारी पत्थरों को उठाते थे। यही वह मस्जिद है, जिस की शान में क़ुर्आन मजीद में है ﴿لَمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ ...... الآيه﴾ यानी इस मस्जिद की बुनियाद पहले ही दिन से परहेज़गारी पर रखी गई है, वह इस बात की ज़ियादा मुस्तहिक़ है के आप ﷺ उस में नमाज़ के लिये खड़े हों, उस में ऐसे लोग हैं, जिन को सफ़ाई बहुत पसन्द है और आल्लाह पाक व साफ़ रहने वालों को दोस्त रखता है। हुज़ूर ﷺ यहाँ चौदा दिन क़याम फ़र्मा कर १२ रबीउल अव्वल सन १ हिजरी को जुमा के दिन रवाना हुए। बनी सालिम के घरों तक पहुँचे थे के जुमा का वक़्त हो गया। आप ने जुमा की नमाज़ अदा फ़र्माई और ख़ुतबा दिया। यह इस्लाम में जुमा की पहली नमाज़ थी। आप के साथ तक़रीबन सौ आदमी नमाज़ में शरीक थे।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत | ज़बान दिल की तर्जमान है

अल्लाह तआला ने हम को ज़बान जैसी नेअ्मत अता फ़र्माई। उस के ज़रिये जहाँ मुख़्तलिफ़ चीज़ों का ज़ायक़ा मालूम होता है वहीं यह दिल की तर्जमानी का फ़रीज़ा भी अन्जाम देती है। जब दिल में कोई बात आती है, तो दिमाग़ उस पर ग़ौर व फ़िक्र कर के अलफ़ाज़ व कलिमात जमा करता है। फिर वह अलफ़ाज़ व कलिमात ख़ुदकार मशीन की तरह ज़बान से निकलने लगते हैं, गोया के सुनने वाले को इस का एहसास भी नहीं होता, अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से इन्सान के दिल व दिमाग़ और ज़बान में कैसी सलाहिय्यत पैदा की, बे शक यह अल्लाह ही की कारीगरी है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | रुकू व सज्दा अच्छी तरह न करने पर वईद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "बद तरीन चोरी करने वाला शख़्स वह है जो नमाज़ में से भी चोरी करले, सहाबा ﷺ ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! नमाज़ में से किस तरह चोरी करेगा ? फ़र्माया : वह रुकू और सज्दा अच्छी तरह से नहीं करता है।"

[इब्ने ख़ुज़ैमा : ६४२, अन अबी क़तादा ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | सोने के आदाब

रसूलुल्लाह ﷺ जब सोने का इरादा करते तो अपने दाहने हाथ को दाहने गाल के नीचे रख कर सोते फिर तीन बार यह दुआ पढते : ((اَللّٰهُمَّ قِنِیْ عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ))

[अबू दाऊद : ५०४५, अन हफ़सा ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	तीन आदमी अल्लाह की ज़मानत में हैं

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तीन आदमी की अल्लाह ने ज़मानत ले रखी है, अगर वह ज़िन्दा रहें तो बक़द्रे ज़रूरत रोज़ी मिलती है और अगर वफात पाजाएं तो अल्लाह तआला जन्नत में दाख़िल फ़र्माता है (एक वह) जो घर में दाख़िल होते वक़्त सलाम करे तो अल्लाह तआला उस का ज़ामिन है, (दूसरा वह) जो मस्जिद गया, तो अल्लाह तआला उस का ज़ामिन है, (तीसरा) राहे ख़ुदा में निकलने वाले का अल्लाह तआला ज़ामिन है।" [सही इब्ने हिब्बान : ५००, अन अबी उमामा ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	मर्द व औरत का एक दूसरे की नक़ल करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने ऐसी औरत पर लानत फ़र्माई जो मर्द की नक्ल इख़्तियार करती हैं और ऐसे मर्द पर लानत फ़र्माई जो औरतों की मुशाबहत इख़्तियार करता है। [इब्ने माजा : १९०३, अन अबी हुरैरह ﷺ]

खुलासा : मर्द का औरतों की शक्ल व सूरत इख़्तियार करना और औरत का मर्दों की शक्ल इख़्तियार करना नाजाइज़ और हराम है।

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की मुहब्बत बीमारी है

हज़रत अबू दर्दा ﷺ फ़र्माते थे के क्या मैं तुम को तुम्हारी बीमारी और दवा न बताऊं ? तुम्हारी बीमारी दुनिया की मुहब्बत है और तुम्हारी दवा अल्लाह तआला का ज़िक्र है। [शोअबुल ईमान : १०२४४]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	दोज़ख़ में बिच्छू के डसने का असर

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दोज़ख़ में ख़च्चरों की तरह बिच्छू हैं, एक बार जब उन में से एक बिच्छू डसेगा, तो दोज़ख़ी चालीस साल तक उस की जलन महसूस करेगा।"

[मुस्नदे अहमद : १७२६०, अन अब्दुल्लाह बिन हारिस ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	दर्दे सर का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम में से कोई तेल लगाए तो अपनी भवों से इब्तेदा करे, इस लिये के यह दर्दे सर को दूर करता है या (यह इरशाद फ़र्माया) दर्दे सर को रोक देता है।"

[कंज़ुल उम्माल : १७२०६ अन अनस ﷺ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से सच्ची पक्की तौबा कर लो, उम्मीद है के तुम्हारा रब तुम्हारी ख़ताओं को माफ कर देगा और जन्नत में दाख़िल कर देगा।"

[सूर-ए-तहरीम : ८]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

३० रबीउस सानी

नंबर १: इस्लामी तारीख़ — मदीना में हुज़ूर ﷺ का इस्तिक़बाल

क़ुबा में चौदा दिन क़याम फ़र्मा कर रसूलुल्लाह ﷺ मदीना तय्यिबा के लिये रवाना हो गए, जब लोगों को आप ﷺ के तशरीफ लाने का इल्म हुआ, तो ख़ुशी में सब के सब बाहर निकल आए और सड़क के किनारे खड़े हो गए, सारा मदीना "अल्लाहु अक्बर" के नारों से गूँज उठा, अन्सार की बच्चियाँ ख़ुशी के आलम में यह अश्आर पढ़ने लगीं :

طَلَعَ الْبَدْرُ عَلَيْنَا مِنْ ثَنِيَّاتِ الْوَدَاعْ
وَجَبَ الشُّكْرُ عَلَيْنَا مَا دَعَا لِلّٰهِ دَاعْ
أَيُّهَا الْمَبْعُوثُ فِيْنَا جِئْتَ بِالْأَمْرِ الْمُطَاعْ

"रसूलुल्लाह ﷺ की आमद ऐसी है के गोया के वदअ् पहाड़ की घाटियों से चौदहवीं का चाँद निकल आया हो, लिहाज़ा जब तक दुनिया में अल्लाह का नाम लेने वाला बाक़ी रहेगा, उन का शुक्र हम पर वाजिब रहेगा, ऐ हम में मबऊस होने वाले ! आप मानने वाले अहकामात लाए हैं ।" और बनू नज्जार की लड़कियाँ दफ बजा बजा कर गा रही थीं :

نَحْنُ جَوَارٍ مِّنْ بَنِي النَّجَّارِ يَا حَبَّذَا مُحَمَّدٌ مِّنْ جَارِ

"हम ख़ानदाने नज्जार की लड़कियाँ हैं, मुहम्मद ﷺ क्या ही अच्छे पड़ोसी हैं ।" हज़रत अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ फ़र्माते हैं के मैं ने कोई दिन उस से ज़ियादा हसीन और रौशन नहीं देखा, जिस दिन रसूलुल्लाह ﷺ हमारे यहाँ (मदीना) तशरीफ लाए ।

नंबर २: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — क़िला फतह होना

जंगे ख़ैबर के दिन चन्द आदमी रसूलुल्लाह ﷺ के पास आकर भूक की शिकायत करने लगे और रसूलुल्लाह ﷺ से सवाल करने लगे, लेकिन हुज़ूर ﷺ के पास कोई चीज़ न थी, तो रसूलुल्लह ﷺ ने अल्लाह तआला से दुआ की : या अल्लाह ! तू इन की हालत से वाक़िफ है, इन के पास खाने के लिये कुछ भी नहीं और न ही मेरे पास है के मैं इन को दूँ, या अल्लाह ! तू इन के लिये ख़ैबर का ऐसा क़िला फतह करदे जो सब क़िलों में माल व दौलत के एतेबार से ज़ियादा फरावानी रखता हो, चुनान्चे अल्लाह तआला ने सअ्ब बिन मुआज़ का क़िला फतह कर दिया जो ख़ैबर के सब क़िलों में मालदार था ।

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : १५६७]

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम्हारे रब ने फैसला कर दिया है के अल्लाह के अलावा किसी और की इबादत न करो और वालिदैन के साथ एहसान का मामला करो ।"

[सूर-ए-बनी इस्राईल : २३]

ख़ुलासा: माँ बाप की ख़िदमत करना और उन के साथ अच्छा बरताव करना फ़र्ज़ है ।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	नज़रे बद से बचने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ को अगर नज़र लगने का डर होता, तो यह दुआ पढ़ते : ((اَللّٰهُمَّ بَارِكْ فِيْهِ وَلَا تَضُرَّهُ))
तर्जमा : ऐ अल्लाह ! इस में बरकत अता फ़र्मा और ज़रर से बचा।

[इब्ने सुन्नी : २०८, अन हिज़ाम बिन हकीम رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अहले ख़ाना पर ख़र्च करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब आदमी अपने अहले ख़ाना पर सवाब की निय्यत से ख़र्च करता है, तो यह ख़र्च करना उस के हक़ में सदक़ा है।" [बुख़ारी : ५५, अन अबी मसऊद رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	कुर्आन का मज़ाक़ उड़ाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जब इन्सान के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, तो कहता है के यह पहले लोगों के क़िस्से कहानियाँ हैं। हरगिज़ नहीं ! बल्के उन के बुरे कामों के सबब उन के दिलों पर ज़ंग लग गया है।" [सूर-ए-मुतफ्फिफ़ीन : १३ ता १४]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	माल की मुहब्बत ख़ुदा की नाशुक्री का सबब है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "इन्सान अपने रब का बड़ा ही नाशुक्रा है, हालाँके उस को भी इस की ख़बर है (और वह ऐसा मामला इस लिये करता है) के उस को माल की मुहब्बत ज़ियादा है।" [सूर-ए-आदियात : ६ ता ८]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	हर शख़्स मौत के बाद अफसोस करेगा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हर शख़्स मौत के बाद अफसोस करेगा, सहाबा رضي الله عنهم ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! किस बात का अफसोस करेगा? आप ﷺ ने फ़र्माया : अगर नेक है, तो ज़ियादा नेकी न करने का अफसोस करेगा और अगर गुनहगार है तो गुनाह से न रूकने पर अफसोस करेगा।"

[तिर्मिज़ी : २४०३, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	तलबीना से इलाज

हज़रत आयशा رضي الله عنها बीमार के लिये तलबीना तय्यार करने का हुक्म देती थीं और फ़र्माती थीं के मैंने हुज़ूर ﷺ को फ़र्माते हुए सुना के "तलबीना बीमार के दिल को सुकून पहुँचाता है और रंज व ग़म को दूर करता है।" [बुख़ारी : ५६८९]

फायदा : जौ (बरली) को कूट कर दूध में पकाने के बाद मिठास के लिए इस में शहद डला जाता है; इस को तलबीना कहते हैं।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया :"तुम औरतों से (सिर्फ) उन के हुस्न व जमाल की वजह से शादी न करो, क्योंकि हुस्न व जमाल ख़त्म होने वाला है और न उन की मालदारी की वजह से शादी करो, मुमकिन है यह मालदारी उन को नाफ़र्मानी में मुब्तला करदे, अलबत्ता उन से दीनदारी की बुनियाद पर शादी करो।" [इब्ने माजा : १८५९, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र رضي الله عنه]

जुमादल
ऊला

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१) जुमादल ऊला

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — वह मुबारक घर जहाँ आप ﷺ ने क़याम फ़र्माया

रसूलुल्लाह ﷺ जब मक्का से हिजरत कर के मदीना आए, तो यहाँ के लोगों ने आप ﷺ का पुर जोश इस्तिक़बाल किया। क़ुबा से मदीना तक रास्ते के दोनों जानिब सहाब-ए-किराम رضی اللہ عنہم की मुक़द्दस जमात सफ बनाए हुए खड़ी थी, जब आप मदीने में दाख़िल हुए, तो हर क़बीले और ख़ान्दान वाला ख़्वाहिशमन्द था और हर शख़्स की दिली तमन्ना थी के हुज़ूर ﷺ की मेज़बानी का शर्फ हमें नसीब हो, चुनान्चे आप की ख़िदमत में ऊँटनी की नकील पकड़ कर हर एक अर्ज़ करता के मेरा घर, मेरा माल और मेरी जान सब कुछ आप के लिये हाज़िर है। मगर आप उन्हें दुआए ख़ैर व बरकत देते और फ़र्माते ऊँटनी को छोड़ दो ! यह अल्लाह के हुक्म से चल रही है। जहाँ अल्लाह का हुक्म होगा वहीं ठहरेगी, ऊँटनी चल कर हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी رضی اللہ عنہ के मकान के सामने रुक गई। सय्यदना अबू अय्यूब अन्सारी رضی اللہ عنہ ने इन्तेहाई ख़ुशी व मसर्रत के आलम में कजावा उठाया और अपने घर ले गए। इस तरह उन्हें रसूलुल्लाह ﷺ की मेज़बानी का शर्फ हासिल हुआ। आप ने सात माह तक उस मकान में क़याम फ़र्माया।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — इन्सान की पैदाइश तीन अंधेरों में

काइनात की सब से हसीन तरीन मख़्लूक़ "इन्सान" जिस के लिये अल्लाह तआला ने इस कारख़ानए आलम को वुजूद बख़्शा है, उस की तख़्लीक़ अल्लाह तआला जहाँ कर रहे हैं, वह जगह न बहुत बड़ी है और न वहाँ रौशनी का इन्तेज़ाम है, न वहाँ कोई काम करने वाले हैं, बल्के अल्लाह तआला एक तंग जगह माँ के पेट में तीन अंधेरों में उस की तख़्लीक़ कर रहे हैं, जब के दुनिया में मेनू फैक्चरिंग जहाँ होती है, वह जगह कई एकड़ों में फैली हुई होती है, रौशनी और क़ुमक़ुमे लगे होते हैं और बेशुमार काम करने वाले होते हैं, यहाँ कुछ भी नहीं, फिर भी अल्लाह तआला इन्सान की पैदाइश कर रहा है, यह अल्लाह की बड़ी ज़बरदस्त क़ुदरत है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — अल्लाह तआला सब को दोबारा ज़िन्दा करेगा

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "अल्लाह वह है, जिस ने तुम को पैदा किया और वही तुम्हें रोज़ी देता है, फिर (वक़्त आने पर) वही तुम को मौत देगा और फिर तुम को वही दोबारा ज़िन्दा करेगा।"

[सूर-ए-रूम : ४०]

फायदा : मरने के बाद अल्लाह तआला दोबारा ज़िन्दा करेंगे, जिस को "बअ्स बादल मौत" कहते हैं, इस के हक़ होने पर ईमान लाना फर्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — वुज़ू में तीन मर्तबा कुल्ली करना

हज़रत अली رضی اللہ عنہ रसूलुल्लाह ﷺ के वुज़ू की कैफियत बयान करते हुए फ़र्माते हैं के "रसूलुल्लाह ﷺ ने तीन बार कुल्ली की।"

[मुस्नदे अहमद : ८७४, अन अली رضی اللہ عنہ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | मुसलमान को कपड़ा पहनाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने किसी मुसलमान को कपड़ा पहनाया। जब तक उस के बदन पर उस का एक धागा भी रहेगा, वह उस वक़्त तक अल्लाह की हिफाज़त में रहेगा।"

[मुस्तदरक हाकिम : ७४२२, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | वालिदैन की नाफ़र्मानी और ज़ुल्म करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम ज़ुल्म व सितम करने से बचो ! क्योंकि ज़ुल्म व सितम की सज़ा दूसरी सज़ाओं के मुक़ाबले में सब से जल्दी मिलती है और वालिदैन की नाफ़र्मानी से बचो! ख़ुदा की क़सम वालिदैन का नाफ़र्मान जन्नत की ख़ुश्बू भी नहीं पाएगा। जब के जन्नत की ख़ुश्बू एक हज़ार साल की दूरी से महसूस होती है।"

[तबरानी औसत : ५८२५, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दो आदतें

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स दीनी मामले में अपने से बुलन्द शख़्स को देख कर उस की पैरवी करे और दुनियावी मामले में अपने से कमतर को देख कर अल्लाह तआला की अता करदा फ़ज़ीलत पर उस की तारीफ करे, तो अल्लाह तआला उस को (इन दो आदतों की वजह से) सब्र करने वाला और शुक्र करने वाला लिख देते हैं और जो शख़्स दीनी मामले में अपने से कमतर को देखे और दुनियावी मामले में अपने से ऊपर वाले को देख कर अफसोस करे, तो अल्लाह तआला उस को साबिर व शाकिर नहीं लिखते हैं।"

[तिर्मिज़ी : २५१२, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | जन्नती का दिल पाक व साफ होगा

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "हम उन अहले जन्नत के दिलों से रन्जिश व कदूरत को बाहर निकाल देंगे और उन के नीचे नहरें बह रही होंगी और वह कहेंगे के अल्लाह का शुक्र है, जिस ने हम को इस मक़ाम तक पहुँचाया और अगर अल्लाह हम को न पहुँचाता, तो हमारी कभी यहाँ तक रसाई न होती।"

[सूर-ए-आराफ : ४३]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | इलाज करने वालों के लिये अहम हिदायत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अगर किसी ने बग़ैर इल्म और तजरबे के इलाज किया तो क़यामत के दिन उस के बारे में पूछा जाएगा।"

[अबू दाऊद : ४५८६, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ؓ]

फायदा : मतलब यह है के अगर हकीम या डॉक्टर की ना तजरबा कारी और अनाड़ी पन की वजह से मरीज़ को तकलीफ पहुँचती है या वह मर जाता है तो ऐसे हकीम और डॉक्टर की क़यामत के दिन गिरिफ्त होगी।

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "ऐ ईमान वालो ! जब तुम में से किसी को मौत आने लगे, तो वसिय्यत के वक़्त शहादत के लिये तुम (मुसलमानों) में से दो इन्साफ पसन्द आदमी गवाह होने चाहिये या फिर तुम्हारे अलावा दूसरी क़ौम के लोग गवाह होने चाहिये। जैसे तुम सफर में गए हो, फिर तुम्हें मौत का हादसा आजाए।"

[सूर-ए-माइदा : १०६]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

② जुमादल ऊला

नंबर ①: इस्लामी तारीख़ — मदीना मुनव्वरा

तुफाने नूह के बाद हज़रत नूह ﷺ के पर पोते इमलाक़ बिन अरफख्शज़ बिन साम बिन नूह यमन में बस गए थे। अल्लाह तआला ने उन को अरबी ज़बान इलहाम की, फिर उन की औलाद ने अरबी बोलना शुरू कर दिया, यह अरब के इलाक़ों में चारों तरफ फैले, इस तरह पूरे जज़ीरतुल अरब में अरबी ज़बान आम हो गई, उसी ज़माने में मदीना की बुन्याद पड़ी, इमलाक़ की औलाद में तुब्बा नामी एक बादशाह था, जिस ने यहूदी उलमा से आख़री नबी ﷺ की तारीफ और यसरिब (मदीना) में उन की आमद की ख़बर सुन रखी थी, इस लिये शाह तुब्बा ने यसरिब में एक मकान हुज़ूर ﷺ के लिये तय्यार कर के एक आलिम के हवाले कर दिया और वसिय्यत की के यह मकान नबीए आख़िरुज़ ज़माँ ﷺ की आमद पर उन्हें दे देना, अगर तुम ज़िन्दा न रहो तो अपनी औलाद को इस की वसिय्यत कर देना, चुनान्चे हुज़ूर ﷺ की ऊँटनी हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी ؓ के मकान पर रुकी थी, हज़रत अबू अय्यूब ؓ उन आलिम ही की औलाद में से थे, जिन को शाहे तुब्बा ने मकान हवाले किया था, साथ ही शाह तुब्बा ने एक ख़त भी हुज़ूर ﷺ के नाम लिखा, जिस में आप ﷺ से मुहब्बत, ईमान लाने और ज़ियारत के शौक़ को ज़ाहिर किया था। हुज़ूर ﷺ की हिजरत के बाद यसरिब का नाम बदल कर "मदीनतुर रसूल" यानी रसूल का शहर रखा गया।

नंबर ②: हुज़ूर(ﷺ)का मुअ्जिज़ा — बीनाई का लौट आना

हज़रत हबीब बिन अबी फुदैक ؓ फ़र्माते हैं के मेरे वालिद की आँखें सफेद हो गई थीं जिस की वजह से उन को कोई चीज़ नज़र नहीं आती थी, तो एक दिन मेरे वालिद हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में जाना चाहते थे तो मुझे साथ ले लिया, जब हम वहाँ पहुँचे तो हुज़ूर ﷺ ने पूछा यह क्या हुआ ? मेरे वालिद ने फ़र्माया मैं अपने ऊँट को तेल लगा रहा था इतने में मेरा पैर साँप के अँडे पर पड़ गया तब से मेरी यह हालत हो गई है, तो हुज़ूर ﷺ ने उन की आँखों पर दम किया, आँखें उसी वक़्त अच्छी हो गईं। हज़रत हबीब फ़र्माते हैं के मेरे वालिद ८० बरस की उम्र में भी सूई में धागा पिरो लिया करते थे।

[दलाइलुन्नुबुव्वह लि अबी नुऐम : ३८४]

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ छोड़ने का नुक़सान

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस शख़्स की एक नमाज़ भी फौत हो गई वह ऐसा है के गोया उस के घर के लोग और माल व दौलत सब छीन लिया गया।" [इब्ने हिब्बान : १४९०, अन नौफल बिन मुआविया ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	बुरे लोगों की सोहबत से बचने की दुआ

अपने आप को और अपनी औलाद को बुरे लोगों की सोहबत से बचाने के लिये यह दुआ पढ़े :

﴿ رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ﴾

तर्जमा : ऐ मेरे रब ! मुझे और मेरे अहल व अयाल को उन के (बुरे) काम से नजात अता फ़र्मा ।

[सूर-ए-शुअरा : १६९]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	राहे ख़ुदा में अपनी जवानी लगाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने अपनी जवानी अल्लाह के रास्ते में गुज़ार दी, तो क़यामत के दिन उस के लिये एक नूर होगा ।"

[नसई : ३१४४, अन अम्र बिन अबसा رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	रसूल के हुक्म को न मानना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो लोग रसूलुल्लाह के हुक्म की ख़िलाफ वरज़ी करते हैं, उन को इस से डरना चाहिये के कोई आफत उन पर आ पड़े या कोई दर्दनाक अज़ाब उन पर आजाए ।"

[सूर-ए-नूर : ६३]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	हलाक करने वाली चीज़ें

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "हर ऐसे शख़्स के लिये बड़ी ख़राबी है, जो ऐब लगाने वाला और ताना देने वाला हो, जो माल जमा करता हो और उस को गिन गिन कर रखता हो और ख़याल करता हो के उस का (यह) माल हमेशा उस के पास रहेगा । हरगिज़ ऐसा नहीं है, वह ऐसी आग में डाला जाएगा जिस में जो कुछ पड़ेगा वह उस को तोड़ फोड़ कर रख देगी ।"

[सूर-ए-हुमज़ह : १ ता ४]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत के दिन ख़ुश नसीब इन्सान

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क़यामत के दिन लोगों में से वह ख़ुश नसीब मेरी शफाअत का मुस्तहिक़ होगा, जिस ने सच्चे दिल से कलिम-ए-तय्यिबा "لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ" पढ़ा होगा ।"

[बुख़ारी : ९९, अन अबी हुरैरा رضي الله عنه]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	आबे ज़म ज़म से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "ज़मीन पर सब से बेहतरीन पानी आबे ज़म ज़म है, यह खाने वाले के लिये खाना और बीमार के लिये शिफा है ।"

[तबरानी औसत : ४०५९, अन अब्बास رضي الله عنه]

नंबर (१०): नबी (ﷺ) की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम में से कोई अपने बाएँ हाथ से हरगिज़ न खाए और न बाएँ हाथ से पिये, क्योंकि शैतान अपने बाएँ हाथ से खाता पीता है ।"

[मुस्लिम : ५२६७, अन इब्ने उमर رضي الله عنه]

नंबर १ : इस्लामी तारीख — मस्जिदे नबवी की तामीर

हिजरत के बाद रसूलुल्लाह ﷺ ने सब से पहले एक मस्जिद की तामीर फ़र्माई, जिस को आज "मस्जिदे नब्वी" के नाम से जाना जाता है। उस के लिये वही जगह मुन्तखब की गई थी, जहाँ हुज़ूर ﷺ की ऊँटनी बैठी थी, यह ज़मीन बनू नज्जार के दो यतीम बच्चों की थी, जिस को आप ने क़ीमत दे कर ख़रीद लिया था। उस की तामीर में सहाब-ए-किराम ﷺ के साथ आप भी पत्थर उठाते थे, सहाब-ए-किराम जोश में यह अश्आर पढ़ते थे और आप ﷺ भी उन के साथ आवाज़ मिलाते और पढ़ते :

اَللّٰهُمَّ إِنَّ الْأَجْرَ أَجْرُ الْآخِرَةِ   فَارْحَمِ الْأَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَةَ

"ऐ अल्लाह ! अस्ल उजरत तो आख़िरत की उजरत है, ऐ अल्लाह ! अन्सार व मुहाजिरीन पर रहम फ़र्मा।" यह मस्जिद इस्लाम की सादगी की सच्ची तसवीर थी, इस मस्जिद के तीन दरवाज़े बनाए गए थे, दरवाज़े के दोनों पाए पत्थर के और दीवारें कच्ची ईंट और गारे की बनाई गई थीं। सुतून खजूर के तनों से और छत खजूर की शाख़ों और पत्तों से तय्यार की गई थी। क़िब्ले की दीवार से पिछली दीवार तक सौ हाथ की लम्बाई थी। यह मस्जिद सिर्फ नमाज़ अदा करने के लिये ही नहीं बल्के इस्लामी तालीम के लिये एक दर्सगाह और दावत व तब्लीग़ और दुनिया के सारे मसाइल को हल करने के लिये एक मरकज़ भी थी। इस के इमाम अल्लाह के नबी ﷺ और इस के नमाज़ी सहाब-ए-किराम जैसी मुक़द्दस हस्तियाँ थीं।

नंबर २ : अल्लाह की कुदरत — गूलर का फल

अल्लाह तआला ने दुनिया में हज़ारों क़िस्म के फल पैदा किये लेकिन गूलर के फल में अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत का इस तरह इज़्हार फ़र्माया के जब गूलर का फल पक जाता है तो उस को तोड़ने पर बहुत से कीड़े निकलते हैं, जो अपने परों के ज़रिये उड़ कर ग़ायब हो जाते हैं। आख़िर इस गूलर के फल में यह उड़ने वाले कीड़े कहाँ से आगए? जब के उस में दाख़िल होने का कोई रास्ता भी नहीं है? यक़ीनन अल्लाह ही ने अपनी क़ुदरत से गूलर के फल में च्यूंटी नुमा कीड़े पैदा फ़र्माए हैं।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — शौहर के भाइयों से पर्दा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "(ना महरम) औरतों के पास आने जाने से बचो ! एक अन्सारी सहाबी ने अर्ज़ किया : देवर के बारे में आप क्या फ़र्माते हैं ? तो आप ﷺ ने फ़र्माया : देवर तो (तुम्हारे लिये) मौत है। (यानी शौहर के भाइयों से पर्दे का बहुत ही ज़ियादा एहतेमाम करना चाहिये।)

[बुख़ारी : ५२३२, अन उक़्बा बिन आमिर ﷺ]

नंबर (४) : एक सुन्नत के बारे में | **इशा के बाद दो रकात नमाज़ पढ़ना**

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ बयान फ़र्माते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ इशा की फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दो रकात (सुन्नत) पढ़ी है। [बुख़ारी : ११७२]

फ़ायदा : इशा की नमाज़ के बाद वित्र से पहले दो रकात नमाज़ पढ़ना सुन्नते मुअक्कदा है।

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | **इन्साफ करना**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "थोड़ी देर का इन्साफ साठ साल की शब बेदारी और रोज़ा रखने की इबादत से बेहतर है। ऐ अबू हुरैरा ! किसी मामले में थोड़ी सी देर का ज़ुल्म, अल्लाह के नज़दीक साठ साल की नाफ़र्मानी से ज़ियादा सख़्त और बड़ा गुनाह है।" [तरग़ीब व तरहीब : ३१२८, अन अबी हुरैरा ﷺ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में | **चाँदी के बरतन में पीना**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो चाँदी के बर्तन में पानी वग़ैरा पीते हैं। वह अपने पेट में जहन्नम की आग भर रहे हैं।" [बुख़ारी : ५६३४, अन उम्मे सलमा ﷺ]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में | **दो चीज़ों की ख़्वाहिश**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "बूढ़े आदमी का दिल दो चीज़ों के बारे में हमेशा जवान रहता है, एक दुनिया की मुहब्बत और दूसरी लम्बी लम्बी उम्मीदें।" [बुख़ारी : ६४२०, अन अबी हुरैरा ﷺ]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में | **दोज़ख़ियों का खाना**

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "दोज़ख़ियों को खौलते हुए चश्मे का पानी पिलाया जाएगा और उन को (खाने में) काँटेदार दरख़्त के अलावा कोई खाना नसीब न होगा, जो न उन को मोटा करेगा और न भूक दूर करेगा।" [सूर-ए-ग़ाशिया : ५ ता ७]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज | **बीमारियों का इलाज**

हज़रत अनस ﷺ के पास दो शख़्स आए, जिन में से एक ने कहा : ऐ अबू हम्ज़ा (यह हज़रत अनस ﷺ की कुन्नियत है) मुझे तकलीफ है, यानी मैं बीमार हूँ, तो हज़रत अनस ﷺ ने फ़र्माया : क्या मैं तुम को उस दुआ से दम न कर दूं जिस से रसूलुल्लाह ﷺ दम किया करते थे? उस ने कहा : जी हाँ, ज़रूर, तो उन्होंने यह दुआ पढ़ी : ((اَللّٰهُمَّ رَبَّ النَّاسِ، مُذْهِبَ الْبَاسِ، اِشْفِ أَنْتَ الشَّافِي، لَا شَافِيَ إِلَّا أَنْتَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا)). [बुख़ारी : ५७४२]

नंबर (१०) : कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न करो, माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करो, और तंगदस्ती के ख़ौफ से अपनी औलाद को क़त्ल न करो, हम तुम को भी रिज़्क़ देते हैं और उन को भी; खुले और छुपे बे हयाई के कामों के क़रीब न जाओ।" [सूर-ए-अन्आम : १५२]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

④ जुमादल ऊला

नंबर ① : इस्लामी तारीख़ — अज़ान की इब्तेदा

हज़रत इब्ने उमर ﷺ फ़र्माते हैं के हुज़ूर ﷺ ने जमात की नमाज़ के लिये जमा करने का मश्वरा किया, तो सहाब-ए-किराम ﷺ ने मुख़्तलिफ राएँ पेश कीं, किसी ने यहूद की तरह बूक़ (Beegle) बजाने और किसी ने ईसाइयों की तरह नाकूस (घन्टी) बजाने का मश्वरा दिया, लेकिन आप ﷺ ने पसन्द नहीं फ़र्माया, बल्के सोचने का मौक़ा दिया, उसी रात हज़रत उमर ﷺ ने ख़्वाब में अज़ान सुनी और एक सहाबी अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन अब्दे रब्बिही ﷺ ने भी ख़्वाब में देखा, के एक शख़्स अज़ान के कलिमात कह रहा है, उन्होंने उस को याद कर लिया और आँख खुलते ही रसूलुल्लाह ﷺ के पास तहज्जुद के वक़्त पहुँचे और ख़्वाब सुनाया, आप ﷺ ने हज़रत बिलाल ﷺ को उन कलिमात के साथ फज्र की अज़ान देने का हुक्म फ़र्माया, अज़ान सुनते ही हज़रत उमर ﷺ दौड़े हुए आए और अर्ज़ किया: मैं ने भी इसी तरह अज़ान के कलिमात को ख़्वाब में सुना है, उस के बाद से ही अज़ान देने का सिलसिला शुरू हो गया, इस्लाम में सब से पहले मोअज़्ज़िन हज़रत बिलाल ﷺ हुए और दूसरे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम ﷺ बने। हज़रत बिलाल ﷺ ने फज्र की अज़ान में सब से पहले ((اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ)) कहा जिस को हुज़ूर ﷺ ने पसन्द फ़र्माया।

नंबर ② : हुज़ूर (ﷺ) का मुअ्जिज़ा — हज़रत उमर ﷺ के हक़ में दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत उमर ﷺ के लिये दुआ फ़र्माई के ऐ अल्लाह ! उमर बिन ख़त्ताब के ज़रिये इस्लाम को इज़्ज़त व बुलन्दी अता फ़र्मा, चुनान्चे ऐसा ही हुआ के अल्लाह तआला ने इस्लाम को हज़रत उमर ﷺ के ज़रिये वह बुलन्दी और शौकत अता फ़र्माई के दुनिया उस का एतेराफ करती है।

[इब्ने माजा : १०५, अन आयशा ﷺ]

नंबर ③ : एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ के छोड़ने पर वईद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "नमाज़ का छोड़ना आदमी को कुफ्र से मिला देता है।"

[मुस्लिम : २४६, अन जाबिर ﷺ]

एक दूसरी हदीस में आप ﷺ ने फ़र्माया : "ईमान और कुफ्र के दर्मियान नमाज़ छोड़ने का फर्क़ है।"

[इब्ने माजा : १०७८, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ]

नंबर ④ : एक सुन्नत के बारे में — बिजली कड़कने और बादल गरजने के वक़्त की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ जब बिजली की कड़क और बादल की गरज सुनते थे तो यह दुआ पढ़ते थे :

((اَللّٰهُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ، وَلَا تُهْلِكْنَا بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذٰلِكَ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमें अपने गुस्से की वजह से क़त्ल न करना और अपने अज़ाब से हमें हलाक न करना। बल्के हमें उस से पहले आफियत दे दे। [तिर्मिज़ी : ३४५०, अन इब्ने उमर ﷺ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत

मोमिन का ऐब छुपाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो मोमिन अपने भाई के किसी ऐब को छुपाएगा तो अल्लाह तआला उस की वजह से उस को जन्नत में दाख़िल फ़र्माएगा।" [तबरानी औसत : १५३६, अन अबी सईद ख़ुदरी ﷺ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में

बुरे आमाल की नहूसत

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "खुश्की और तरी (यानी पूरी दुनिया) में लोगों के बुरे आमाल की वजह से हलाकत व तबाही फैल गई है, ताके अल्लाह तआला उन्हें उन के बाज़ आमाल (की सज़ा) का मज़ा चखा दे, ताके वह अपने बुरे आमाल से बाज़ आजाएँ।" [सूर-ए-रूम : ४१]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में

दुनियावी ज़िन्दगी धोका है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "दुन्यवी ज़िन्दगी तो कुछ भी नहीं, सिर्फ धोके का सौदा है।" [सूर-ए-आले इमरान : १८५]

फायदा : जिस तरह माल के ज़ाहिर को देख कर ख़रीदार फँस जाता है, इसी तरह दुनिया की चमक दमक से धोका खा कर आख़िरत से ग़ाफिल हो जाता है, इसी लिये इन्सानों को दुनिया की चमक दमक से होशियार रहना चाहिये।

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में

जन्नत के दरख़्तों की सुरीली आवाज़

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जन्नत में एक दरख़्त है, जिस की जड़ें सोने की और उन की शाख़ें हीरे जवाहेरात की हैं, उस दरख़्त से एक हवा चलती है, तो ऐसी सुरीली आवाज़ निकलती है, जिस से अच्छी आवाज़ सुनने वालों ने आज तक नहीं सुनी।" [तरग़ीब : ५३२२, अन अबी हुरैरा ﷺ]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज

दुआए जिब्रईल से इलाज

हज़रत आयशा ؓ बयान करती हैं के जब रसूलुल्लाह ﷺ बीमार हुए, तो जिब्रईल ؑ ने इस दुआ को पढ़ कर दम किया :

((بِاسْمِ اللّٰهِ يُبْرِيْكَ، وَمِنْ كُلِّ دَاءٍ يَشْفِيْكَ، وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ وَشَرِّ كُلِّ ذِيْ عَيْنٍ))

[मुस्लिम : ५६९९]

नंबर (१०) : नबी (ﷺ) की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "बरकत खाने के बीच में उतरती है, तुम किनारे से खाया करो, खाने के बीच से मत खाया करो।" [तिर्मिज़ी : १८०५, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(५) जुमादल ऊला

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — मुहाजिर व अन्सार में भाई चारा

मक्का के मुसलमान जब कुफ्फार व मुशरिकीन की तकलीफों से परेशान हो कर सिर्फ अल्लाह, उस के रसूल और दीने इस्लाम की हिफाज़त के लिये अपना माल व दौलत, साज़ व सामान और महबूब वतन को छोड़ कर मदीना मुनव्वरा हिजरत कर गए। उस मौक़े पर रसूलुल्लाह ﷺ ने उन मुसलमानों की दिलदारी के लिये आपस में भाई चारा क़ायम फ़र्माया। और मुहाजिरीन (यानी वह सहाब-ए-किराम जो मक्का मुकर्रमा से हिजरत कर के मदीना चले गए) उन में से एक एक को अन्सार (यानी वह सहाब-ए-किराम जिन्होंने मदीना मुनव्वरा में मुहाजिरीन की नुसरत व मदद की) उन का भाई बना दिया। अन्सार ने अपने मुहाजिर भाई के तआवुन और इज़्ज़त व एहतेराम में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और उन के साथ हमदर्दी व मुहब्बत, ईसार व क़ुरबानी और मेहरबानी व हुस्ने सुलूक की ऐसी बेहतरीन मिसाल पेश की के आज तक पूरी दुनिया मिल कर उस जैसी मिसाल पेश नहीं कर सकी। माल व दौलत, ज़मीन व बाग़ात बल्के हर चीज़ में उन को शरीक कर लिया। मगर मुहाजिरीन ने भी अन्सारी भाइयों का हर मामले में साथ दिया और अपनी रोज़ी का बज़ाते ख़ुद इन्तेज़ाम करने के लिये तिजारत वग़ैरा का पेशा भी इख़्तियार किया। बहर हाल यह रिश्त-ए-मुवाख़ात इस्लामी तारीख़ में इत्तेहाद व इत्तेफाक़ और क़ौमी यकजहती की ऐसी मिसाल थी, जिस ने नस्ल व रंग, वतन व मुल्क और तहज़ीब व तमद्दुन के सारे इम्तियाज़ को अमली तौर पर ख़त्म कर डाला।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — परिन्दों की परवरिश

चमगादड़ के अलावा तमाम परिन्दे अंडे देते हैं, वह उन पर बैठ कर हरारत व गर्मी पहुँचाते हैं, फिर कुछ दिनों के बाद उन अंडों से बच्चे निकल आते हैं, उन चूज़ों की गिज़ा के लिये अल्लाह तआला ने बे शुमार कीड़े मकोड़े पैदा कर दिये जिन को पकड़ कर परिन्दे अपने बच्चों के मुंह में डाल देते हैं। जब उन के जिस्म में पर निकलने लगते हैं तो परिन्दे बड़ी आसानी के साथ ख़ुद बख़ुद उड़ना सीख़ जाते हैं। आख़िर उन परिन्दों को अंडों से बच्चे निकालने, परवरिश करने और उड़ने का सलीक़ा कौन सीखाता है। बेशक अल्लाह तआला ही ने अपनी क़ुदरत से उन की पैदाइश और तरबियत व परवरिश का इन्तेज़ाम फ़र्माया है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नेकियों का हुक्म देना और बुराइयों से रोकना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है तुम ज़रूर बिज़ ज़रूर भलाइयों का हुक्म करो और बुराइयों से रोको; वरना क़रीब है के अल्लाह तआला गुनहगारों के साथ तुम सब पर अपना अज़ाब भेज दे, उस वक़्त तुम अल्लाह तआला से दुआ माँगोगे तो क़बूल न होगी।"

[तिर्मिज़ी : २१६९, अन हुज़ैफा رضي الله عنه]

फायदा : नेकियों का हुक्म देना और बुराइयों से रोकना उम्मत के हर फर्द पर अपनी हैसियत और ताक़त के मुताबिक़ लाज़िम और ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	रुकू में हाथों को घुटनों पर रखना

रसूलुल्लाह ﷺ रुकू फ़र्माते, तो अपने हाथों को घुटनों पर रखते, ऐसा लगता था जैसे उन को पकड़ रखा हो और दोनों हाथों को थोड़ा मोड़ कर पहलुओं से अलग रखते थे।

[तिर्मिज़ी : २६०, अन अबी हुमैद साइदी ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	औरत के लिये चंद आमाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब औरत पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ती रहे और अपनी इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करती रहे और अपने शौहर की फ़र्मांबरदारी करती रहे तो वह जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाए।"

[सही इब्ने हिब्बान : ४२३७, अन अबी हुरैरा ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	इन्साफ न करने का वबाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स मेरी उम्मत की किसी छोटी या बड़ी जमात का ज़िम्मेदार बने फिर उन के दर्मियान अद्ल व इन्साफ न करे तो अल्लाह तआला उस को औंधे मुंह जहन्नम में डाल देगा।"

[तबरानी कबीर : १६९११, अन मअकिल बिन यसार ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया मोमिन के लिये क़ैद ख़ाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दुनिया मोमिन के लिये क़ैद ख़ाना है और काफ़िर के लिये जन्नत है।"

[मुस्लिम : ७४१७, अन अबी हुरैरा ؓ]

फ़ायदा : शरीअत के अहकाम पर अमल करना, नफ़सानी ख़्वाहिशों को छोड़ना, अल्लाह और उस के रसूल के हुक्मों पर चलना नफ़्स के लिये क़ैद है और काफ़िर अपने नफ़्स की हर ख़्वाहिश को पूरी करने में आज़ाद है, इस लिये गोया दुनिया ही उस के लिये जन्नत का दर्जा रखती है।

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जन्नत के फल और दरख़्तों का साया

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "मुत्तक़ियों से जिस जन्नत का वादा किया गया है, उस की कैफ़ियत यह है के उस के नीचे नहरें जारी होंगी और उस का फल और साया हमेशा रहेगा।"

[सूर-ए-रअ्द : ३५]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	अजवा खजूर से ज़हर का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अजवा जन्नत का फल है और उस में ज़हर से शिफ़ा है।"

[तिर्मिज़ी : २०६८, अन अबी हुरैरा ؓ]

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "अल्लाह तआला अद्ल व इन्साफ और अच्छा सुलूक करने का और रिश्तेदारों को माली मदद करने का हुक्म देता है और बे हयाई, ना पसन्द कामों और ज़ुल्म व ज़ियादती से मना करता है, वह तुम्हें ऐसी बातों की नसीहत करता है, ताके तुम (उन को) याद रखो।"

[सूर-ए-नहल : ९०]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

⑥ जुमादल ऊला

नंबर ① : इस्लामी तारीख़ — असहाबे सुफ्फा

जब मस्जिदे नबवी की तामीर हुई, तो उस के एक तरफ चबूतरा बनाया गया था, जिस को सुफ्फा कहा जाता है। यह जगह इस्लामी तालीम व तरबियत और तब्लीग़ व हिदायत का मरकज़ था, जो सहाबा ﷺ यहाँ रहा करते थे, उन को "असहाबे सुफ्फा" कहा जाता है, इन लोगों ने अपनी ज़िन्दगी को अल्लाह की इबादत, रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत और कुर्आन की तालीम हासिल करने के लिये वक़्फ कर दिया था, उन का न कोई घर था और न कोई कारोबार। आप ﷺ के पास कभी खाना आता तो इन लोगों के पास भेज देते थे और कभी ख़ुद भी उन के साथ बैठ कर खाया करते थे। उन की तालीम के लिये पढ़ाने वाले मुक़र्रर थे, जिन से वह लोग कुर्आने करीम सीखते और इल्मे दीन हासिल किया करते थे। इसी लिये उन में अकसर सहाबा क़ुर्आन के बेहतरीन क़ारी थे, अगर कहीं इस्लाम की तब्लीग़ और तालीम व तरबियत के लिये किसी को भेजने की ज़रूरत पेश आती, तो इन्हीं सहाबा में से किसी को भेजा जाता था। रसूलुल्लाह ﷺ के जलीलुल क़द्र सहाबी और हदीस को सब से ज़ियादा रिवायत करने वाले हज़रत अबू हुरैरा ﷺ भी इन्हीं असहाबे सुफ्फा में थे।

नंबर ② : हुज़ूर (ﷺ) का मुअ्जिज़ा — हुज़ूर ﷺ के हाथों की बरकत

हज़रत आइज़ बिन अम्र ﷺ को जंगे हुनैन में दौराने जंग चेहरे पर एक चोट लगी, जिस की वजह से चेहरा, दाढ़ी और सीना ख़ून आलूद हो गया, तो हुज़ूर ﷺ ने अपने हाथ से उस को साफ किया और उन के हक़ में दुआ फ़र्माई। रावी फ़र्माते हैं के हज़रत आइज़ ﷺ ने अपनी ज़िन्दगी में यह वाक़िआ बहुत मर्तबा सुनाया, चुनान्चे जब आप की वफात हुई तो गुस्ल देते हुए हम ने वह जगह (जिस पर ख़ून साफ करते वक़्त हुज़ूर ﷺ का हाथ मुबारक लगा था) बिल्कुल सफेद और चमकदार पाई।

[तबरानी कबीर : १४४६०, अन हशरज ﷺ]

नंबर ③ : एक फ़र्ज़ के बारे में — हज की फरज़ियत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : ऐ लोगो ! तुम पर हज फर्ज़ कर दिया गया है, लिहाज़ा उस को अदा करो।

[मुस्लिम : ३२५७, अन अबी हुरैरा ﷺ]

नंबर ④ : एक सुन्नत के बारे में — परेशान हाल को देख कर यह दुआ पढे

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो किसी परेशान हाल को देखे और वह यह दुआ पढ़ ले तो वह ज़िन्दगी भर उस तकलीफ से महफ़ूज़ रहेगा।" (लेकिन आहिस्ता से पढ़े ता के इस की दिल आज़ारी न हो) ((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ عَافَانِىْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ وَ فَضَّلَنِىْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيْلًا))

तर्जमा : अल्लाह का शुक्र है जिस ने मुझे उस मुसीबत से नजात दी जिस में तुझे मुब्तला किया है और बहुत सी मख़्लूक़ पर मुझे फज़ीलत अता फ़र्माई।

[इब्ने माजा : ३८९२, अन इब्ने उमर ﷺ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	दीनी भाई की ज़ियारत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने किसी मरीज़ की इयादत की, या किसी दीनी भाई की ज़ियारत की, तो एक पुकारने वाला (फरिश्ता) कहता है। तुम (दुनिया में) अच्छे रहो, तुम्हारा (अच्छे कामों की तरफ) चलना मुबारक हो और तुम ने (अपने इस अमल के ज़रिये) जन्नत का बुलन्द दर्जा हासिल कर लिया है।" [तिर्मिज़ी : २००८, अन अबी हुरैरा رضي الله عنه]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	बुरी तदबीरें करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग बुरी बुरी तदबीरें (बुरी चाल) करते हैं, उन को सख़्त अज़ाब होगा और उन की सब तदबीरें नाकाम हो जाएँगी।" [सूर-ए-फातिर : १०]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	दुनिया का सामान चंद रोज़ा है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "दुनिया का सामान कुछ ही दिन रहने वाला है और उस शख़्स के लिये आख़िरत हर तरह से बेहतर है, जो अल्लाह तआला से डरता हो और (क़यामत) में तुम पर ज़र्रा बराबर भी ज़ुल्म न किया जाएगा।" [सूर-ए-निसा : ७७]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में	हर नबी का हौज़ होगा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "हर नबी के लिये एक हौज़ होगा और अम्बिया आपस में फख़्र करेंगे के किस के हौज़ पर ज़ियादा उम्मती पानी पीने के लिये आते हैं। मुझे उम्मीद है के मेरे हौज़ पर आने वालों की तादाद सब से ज़ियादा होगी।" [तिर्मिज़ी : २४४३, अन समुरा बिन जुन्दुब رضي الله عنه]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	सना के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मौत से अगर किसी चीज़ में शिफा होती तो सना में होती।" [तिर्मिज़ी : २०८१, अन अस्मा बिन्ते उमैस رضي الله عنها]

फायदा : सना एक दरख़्त का नाम है, जिस की पत्ती तक़रीबन दो इंच लम्बी और एक इंच चौड़ी होती है, उस में छोटे छोटे पीले रंग के फूल होते हैं, उस की पत्ती क़ब्ज़ के मरीज़ के लिये मुफीद है।

नंबर (१०) : नबी (ﷺ) की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम में से किसी को खाने की दावत दी जाए तो उस को क़बूल करना चाहिये, फिर अगर वह चाहे तो खाना खाले और न चाहे तो छोड़ दे।" [मुस्लिम : ३५१८, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — मदीना में मुनाफ़िक़ीन का ज़ुहूर

मुनाफिक उस शख़्स को कहते हैं जो ज़बान से अपने आप को मुसलमान ज़ाहिर करे, मगर दिल में कुफ्र छुपाए रखे; जब मुसलमान हिजरत कर के मदीना आगए तो लोगों के ईमान क़बूल करने की वजह से इस्लाम तेज़ी से फैलने लगा और मुसलमानों को ताक़त व कुव्वत हासिल होने लगी, तो इस्लाम और मुसलमानों से दुश्मनी रखने वाली मुनाफिक़ीन की जमात उभर कर सामने आगई, जो मुसलमानों के ताक़त व गलबे और अपने ज़ाती नफ़े के लिये मुसलमानों के सामने अपने ईमान का इज़हार करते, मगर जब अपने काफिर दोस्तों से मिलते, तो कहते के हम तो तुम्हारे ही साथ हैं, मुसलमानों को धोका देने और उन का मज़ाक़ उड़ाने के लिये उन के पास जाते हैं, उन का सरदार अब्दुल्लाह बिन उबइ था, जिस को मदीने का बादशाह बना कर ताज पोशी की तय्यारियाँ की जा रही थीं, मगर हुज़ूर ﷺ के तशरीफ लाते ही अहले मदीना ने आप ﷺ को अपना सरदार और रसूल तसलीम कर लिया और उस की बादशाहत ख़तरे में पड़ गई, इस लिये उस के दिल में आप ﷺ और मुसलमानों के ख़िलाफ दुश्मनी, हसद और नफरत पैदा हो गई, इस के बावजूद हुज़ूर ﷺ उस के साथ हुस्ने सुलूक करते रहे, जिस के नतीजे में उस के बेटे अब्दुल्लाह ने ईमान क़बूल कर लिया।

नंबर २ : अल्लाह की क़ुदरत — गोह की ख़ुसूसियत

गोह, गिरगिट और छिपकिली की शक्ल व सूरत का एक जंगली जानवर है, उस की ख़ासियत यह है के यह पानी नहीं पीती और सात सौ साल से भी ज़ायद ज़िन्दा रहती है। और उस के दाँत कभी नहीं गिरते। उस के तमाम दाँत एक दूसरे से जुड़े हुए होते हैं, गोह बहुत से अंडे दे कर ज़मीन में दबा देती है और उन की निगरानी करती रहती है, चालीस दिन के बाद उस के बच्चे निकल आते हैं। अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से कैसी कैसी अजीब किस्म की मख़्लूक़ पैदा फ़र्मा रखी है।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — आप ﷺ की आख़री वसिय्यत

रसूलुल्लाह ﷺ ने आख़री वसिय्यत यह इर्शाद फ़र्माई : "नमाज़ों और अपने गुलामों के बारे में अल्लाह तआला से डरो।" (यानी नमाज़ को पाबन्दी से पढ़ते रहा करो और गुलामों (नौकरों) के हुक़ूक़ अदा करो।)

[अबू दाऊद : ५१५६, अन अली ﷺ]

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — खाना खाते वक़्त टेक न लगाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मैं टेक लगा कर नहीं खाता हूँ।" [बुख़ारी : ५३९८, अन अबी जुहैफा ﷺ]

फ़ायदा : बिला उज़्र टेक लगा कर खाना सुन्नत के ख़िलाफ है।

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	लोगों की ज़रूरत पूरी करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह तआला ने कुछ बन्दों को लोगों की ज़रूरत पूरी करने के लिये पैदा किया है, लोग उन के पास अपनी ज़रूरत ले कर जाते हैं, लोगों की ज़रूरत पूरी करने वाले यह लोग अल्लाह के अज़ाब से महफ़ूज़ रहेंगे।" [तबरानी कबीर : १३३१५३, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	अपने मातहतों पर तोहमत लगाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने अपने मातहत पर किसी ऐसी बात की तोहमत लगाई जिस से वह बरी है तो उस पर क़यामत के दिन हद जारी की जाएगी। मगर यह के वह कही हुई बात उस में मौजूद हो।" [बुख़ारी : ६८५८, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	पेट भर कर खाना खाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "कोई बरतन भरने के एतेबार से पेट से बुरा नहीं है (यानी जितना पेट का भरना बुरा है उतना किसी बरतन का भरना बुरा नहीं है) और चूंकि खाना ही पड़ता है इस लिये एक तिहाई पेट खाने के लिये और एक तिहाई पीने के लिये और एक तिहाई साँस लेने के लिये रखना चाहिये।" [तिर्मिज़ी : २३८०, अन मिक़दाम इब्ने मअ्दीकरिब ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	गुनहगारों के लिये जहन्नम की आग है

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "(अल्लाह का अज़ाब उस दिन होगा) जिस दिन आस्मान थर थर काँपने लगेगा और पहाड़ अपनी जगह से चल पड़ेंगे। उस दिन झुटलाने वालों के लिये बड़ी ख़राबी होगी, जो बेहूदा मशग़ले में लगे रहते हैं, उस दिन उन को जहन्नम की आग की तरफ धक्के मार कर धकेला जाएगा (और कहा जाएगा) यही वह आग है जिस को तुम झुटलाया करते थे।"

[सूर-ए-तूर : ९ ता १४]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	खुजली का इलाज

हज़रत अनस बिन मालिक ؓ फर्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ ؓ और ज़ुबैर बिन अव्वाम ؓ को खुजली की वजह से रेशमी कपड़े पहनने की इजाज़त मरहमत फ़र्माई थी। [बुख़ारी : ५८३९]

फायदा : आम हालात में मरदों के लिये रेशमी लिबास पहनना हराम है, मगर ज़रूरत की वजह से माहिर हकीम या डॉक्टर कहे तो गुंजाइश है।

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ज़मीन पर अकड़ कर मत चलो (क्योंकि) तुम न तो ज़मीन को फाड़ सकते हो और न तन कर चलने से पहाड़ों की बुलन्दी तक पहुँच सकते हो।"

[सूर-ए-बनी इस्राईल : ३७]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

⑧ जुमादल ऊला

नंबर ① : इस्लामी तारीख — मदीना के क़बाइल से हुज़ूर ﷺ का मुआहदा

मदीना तय्यिबा में मुख़्तलिफ नस्ल व मज़हब के लोग रहते थे, कुफ्फार व मुश्रिकीन के साथ यहूद भी एक लम्बे ज़माने से आबाद थे। रसूलुल्लाह ﷺ ने मदीना पहुँचने के बाद हिजरत के पहले ही साल मुसलमानों और यहूदियों के दर्मियान बाहमी तअल्लुक़ात ख़ुशगवार रखने के लिये एक बैनलअक़्वामी मुआहदा फ़र्माया। ताके नसल व मज़हब के इख़्तिलाफ के बावजूद क़ौमी यकजेहती और इत्तेहाद व इत्तेफाक़ क़ायम रहे और हर एक को एक दूसरे से मदद मिलती रहे। यह मुआहदा हुक़ूक़े इन्सानी की सच्ची तस्वीर थी, तमाम लोगों को पूरे तौर पर मज़हबी आज़ादी हासिल थी, शहर में अमन व अमान और अद्ल व इन्साफ क़ायम करने और ज़ुल्म व सितम को जड़ से ख़त्म करने का एक कामिल व मुकम्मल क़ानून था, बल्के इस को दुनिया का क़दीम तरीन बाक़ायदा "तहरीरी दस्तूर" कहा जा सकता है। जो मुकम्मल शक्ल में आज भी मौजूद है। इस मुआहदे पर मदीना और उस के आस पास रहने वाले क़बाइल से दस्तख़त भी लिये गए थे।

नंबर ② : हुज़ूर(ﷺ)का मुअ्जिज़ा — ख़ुशहाली आम होने की ख़बर देना

हज़रत अदी رضی اللہ عنہ फर्माते हैं के मुझ से रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : अगर तेरी उम्र ज़ियादा होगी तो तू देखेगा के आदमी मिट्टी भर सोना और चाँदी ख़ैरात के लिये लाएगा और मोहताज को तलाश करेगा, लेकिन उसे कोई (सद्क़ा) लेने वाला नहीं मिलेगा। [बुख़ारी : ३५९५]

फायदा : उलमा ने लिखा है के हज़रत अदी बिन हातिम رضی اللہ عنہ की उम्र १२० साल हुई और यह पेशीनगोई हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رحمۃ اللہ علیہ के ज़माने में पूरी हुई (के ज़कात लेने वाला कोई मोहताज व मुफलिस नहीं मिलता था।)

नंबर ③ : एक फ़र्ज़ के बारे में — गुस्ल में पूरे बदन पर पानी बहाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "(जिस्म) के हर बाल के नीचे नापाकी होती है, लिहाज़ा तुम बालों को धोओ और बदन को अच्छी तरह साफ करो।" [तिर्मिज़ी : १०६, अन अबी हुरैरह رضی اللہ عنہ]

ख़ुलासा : गुस्ल में पूरे बदन पर पानी पहुँचाना फर्ज़ है।

नंबर ④ : एक सुन्नत के बारे में — बच्चों को यह दुआ पढ़ कर दम करें

रसूलुल्लाह ﷺ हज़रत हसन व हुसैन رضی اللہ عنہما को यह दुआ पढ़ कर दम किया करते थे :

((اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ وَّهَامَّةٍ وَّمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَامَّةٍ))

तर्जमा : मैं अल्लाह तआला के पूरे कलिमों के वास्ते से हर शैतान और हर तकलीफ देने वाले जानवर और हर नज़र लगने वाली आँख से पनाह चाहता हूँ। [बुख़ारी : ३३७१, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	पसन्द के मुताबिक़ हदिया देना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो आदमी अपने मुसलमान भाई से किसी ऐसी चीज़ के साथ मुलाक़ात करे जिस से वह ख़ुश होता हो, तो अल्लाह तआला उस को क़यामत के दिन ख़ुश कर देगा।

[तबरानी सग़ीर : ११७५, अन अनस बिन मालिक ﷺ]

फायदा : हदीस से मालूम हुआ के किसी दीनी भाई के यहाँ जाते वक़्त उस की पसन्द के मुताबिक़ कोई चीज़ पेश करना चाहिये इस से अल्लाह की रज़ा व ख़ुश्नूदी हासिल होती है।

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	यतीमों का माल खाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "यतीमों के माल उन को देते रहा करो और पाक माल को नापाक माल से न बदलो और उन का माल अपने मालों के साथ मिला कर मत खाओ; ऐसा करना यक़ीनन बहुत बड़ा गुनाह है।" [सूर-ए-निसा : २]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	दुनिया से बेहतर आख़िरत का घर है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "दुनिया की ज़िन्दगी सिवाए खेल कूद के कुछ भी नहीं और आख़िरत का घर मुत्तक़ियों (यानी अल्लाह तआला से डरने वालों) के लिये बेहतर है।"

[सूर-ए-अन्आम : ३२]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में	दोज़ख़ की दीवार

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "दोज़ख़ की आग की क़नातों को चार दीवारों ने घेर रखा है और हर एक दीवार की चौड़ाई चालीस साल चलने के बराबर है।" [तिर्मिज़ी : २५८४, अन अबी सईद ﷺ]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	सूर-ए-बक़रह से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अपने घरों में सूर-ए-बक़रह पढ़ो, इस लिये के शयातीन व आसेब उस घर में दाख़िल नहीं होते जिस घर में सूर-ए-बक़रह पढ़ी जाती है।"

[मुस्तदरक : २०६२, अन अब्दुल्लाह ﷺ]

नंबर (१०) : नबी (ﷺ) की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ हदीसे कुदसी बयान करते हुए फर्माते हैं के अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ मेरे बन्दो! मैं ने अपने ऊपर ज़ुल्म को हराम कर दिया है और उस को तुम्हारे दर्मियान भी हराम कर दिया है, लिहाज़ा तुम एक दूसरे पर ज़ुल्म मत किया करो।" [मुस्लिम : ६५७२, अन अबी ज़र ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१) जुमादल ऊला

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — औस और ख़ज़रज में मुहब्बत और यहूद की दुश्मनी

मदीना तय्यिबा में मुख़्तलिफ क़बीले आबाद थे, उन में मुशरिकों के दो क़बीले औस और ख़ज़रज थे, उन के अकसर अफराद इस्लाम में दाख़िल हो गए थे, इस्लाम से पहले उन दोनों क़बीलों में हमेशा लड़ाई रहा करती थी। आप ﷺ की आमद के मौक़े पर ईमान क़बूल करने की वजह से दोनों क़बीलों के दर्मियान मुहब्बत पैदा हो गई और एक दूसरे के भाई बन गए, इसी तरह यहूदियों के तीन क़बीले बनू नज़ीर, बनू कुरैज़ा और बनू क़ैनुक़ाअ् आबाद थे। रसूलुल्लाह ﷺ जब हिजरत कर के मदीना पहुँचे, तो यहूदियों के मज़हबी हुक़ूक़ की हिफाज़त और मुसलमानों के दीन की दावत व इशाअत के पेशे नज़र उन से चंद शर्तों पर मुआहदा कर लिया, यहूदी इस के बावजूद इस्लाम और मुसलमानों की बढ़ती हुई ताक़त को देख कर हसद करने लगे और अन्दर ही अन्दर इस्लाम के ख़िलाफ साज़िश करने लगे। जब उन की नफरत व अदावत और बद अहदी हद से बढ़ गई, तो उन को अपनी शरारत और साज़िशों की सज़ा भुगतनी पड़ी।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — ज़मीन का अजीब फर्श

अल्लाह तआला फर्माता है : "हम ने ज़मीन को फर्श बनाया और हम कैसे अच्छे बिछाने वाले हैं।" ज़रा ग़ौर कीजिये, अल्लाह तआला ने ज़मीन का कैसा अच्छा बिस्तर बिछाया है जिस पर हम आराम करते हैं, इस बिस्तर के बग़ैर हमारे लिये रहना दुश्वार था। फिर हमारे लिये ज़िन्दगी की तमाम ज़रुरियात खाने पीने, अनाज, ग़ल्ले और मेवे के लिये ज़मीन को ख़ज़ाना बनाया, फिर सर्दी, गर्मी से हिफाज़त भी ज़मीन पर रह कर कर सकते हैं और बदबूदार चीज़ें और मुरदार जिन की बदबू से हम को सख़्त तकलीफ होती है ऐसी चीज़ों को हम ज़मीन में दफन कर के ख़राब हवा के असर से महफ़ूज़ हो जाते हैं, बिलाशुबा इतना लम्बा चौड़ा ज़मीन का बिस्तर उसी हकीमे मुतलक़ की कारीगरी है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ के लिये मस्जिद जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम में से जो शख़्स अच्छी तरह मुकम्मल वुज़ू करता है, फिर नमाज़ ही के इरादे से मस्जिद में आता है, तो अल्लाह तआला उस बन्दे से ऐसे ख़ुश होते हैं जैसे के किसी दूर गए हुए रिश्तेदार के अचानक आने से उस के घर वाले ख़ुश होते हैं।"

[इब्ने ख़ुज़ैमा : १४११, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — दुआ के कलिमात को तीन बार कहना

रसूलुल्लाह ﷺ दुआ व इस्तिग़फार के कलिमात को तीन तीन मर्तबा दोहराना पसन्द फ़र्माते थे।

[अबू दाऊद : १५२४, अन इब्ने मसऊद ؓ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | शर्म व हया ईमान का जुज़ है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "ईमान के साठ से ऊपर या सत्तर से कुछ ज़ायद शोअ्बे हैं। सब से अफ़ज़ल لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰه पढ़ना है और सब से कम दर्जा रास्ते से तकलीफ़देह चीज़ का हटा देना है और शर्म व हया ईमान का हिस्सा है।"

[मुस्लिम : १५३, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में | गुनाह से न रोकने का वबाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो आदमी ऐसे लोगों के दर्मियान रह कर गुनाह के काम करता हो के वह उस को रोकने पर क़ादिर हों, मगर फिर भी न रोकें तो अल्लाह तआला मरने से पहले उन को भी उस गुनाह के अज़ाब में मुब्तला कर देगा।"

[अबू दाऊद : ४३३९, अन इब्ने जरीर رضي الله عنه]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में | सब से बड़ा तक़वे वाला कौन है

एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में आकर अर्ज़ किया : "ऐ अल्लाह के रसूल ! लोगों में सब से बड़ा ज़ाहिद कौन है ? रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : वह आदमी जो क़ब्र और उस की बोसीदगी को न भूले और दुनिया की ज़रूरत से ज़ियादा ज़ेब व ज़ीनत को छोड़ दे, बाक़ी रहने वाली (आख़िरत) को फ़ना हो जाने वाली (दुनिया) पर तरजीह दे, आने वाले कल को अपनी (ज़िन्दगी का) दिन शुमार न करे और अपने आप को मुरदों की फ़हेरिस्त में शुमार करे (तो यह सब से बड़ा ज़ाहिद है)"

[तरग़ीब व तरहीब : ४५५३, अन ज़हहाक رضي الله عنه]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में | अहले ईमान का बदला

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "उन (अहले ईमान और नेक अमल करने वालों) का बदला उन के रब के पास ऐसे हमेशा रहने वाले बाग़ होंगे, जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी। यह लोग उन में हमेशा रहेंगे। अल्लाह तआला उन से राज़ी, और वह अल्लाह से ख़ुश होंगे। और यह बदला हर उस शख़्स के लिये है जो अपने रब से डरता है।

[सूर-ए-बय्यिनह : ८]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज | नींद न आने का इलाज

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद मख़ज़ूमी رضي الله عنه ने हुज़ूर ﷺ से नींद न आने की शिकायत की, तो आप ﷺ ने फ़र्माया : जब तुम (सोने के लिये) बिस्तर पर आओ, तो यह कह लिया करो : ((اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوَاتِ السَّبْعِ وَمَا اَظَلَّتْ، وَرَبَّ الْاَرَضِيْنَ وَمَا اَقَلَّتْ، وَرَبَّ الشَّيٰطِيْنِ وَمَا اَضَلَّتْ، كُنْ لِّيْ جَارًا مِنْ شَرِّ خَلْقِكَ كُلِّهِمْ جَمِيْعًا اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيَّ اَحَدٌ مِنْهُمْ اَوْ اَنْ يَّبْغِيَ عَلَيَّ عَزَّ جَارُكَ وَجَلَّ ثَنَاءُكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ))

[तिर्मिज़ी : ३५२३, अन बुरैदा رضي الله عنه]

नंबर (१०) : क़ुर्आन की नसीहत

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "और अल्लाह का सहारा मज़बूती से पकड़ लो, वही तुम्हारा काम बनाने वाला है और (जिस के काम बनाने वाला अल्लाह हो तो) अल्लाह तआला क्या ही अच्छा काम बनाने वाला है और क्या ही अच्छा मददगार है।"

[सूर-ए-हज : ७८]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा

(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१०) जुमादल ऊला

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — मदीना की चरागाह पर हमला

जब मुसलमान अपने दीन व ईमान की हिफ़ाज़त के लिये हिजरत कर के मदीना चले गए और ख़ुशगवार माहौल में लोगों को इस्लाम की दावत देनी शुरू की, लोग इस्लाम में दाख़िल होने लगे, चुनान्चे मुसलमानों की बढ़ती हुई तादाद को देख कर कुफ्फ़ारे मक्का अपने लिये ख़तरा महसूस करने लगे, तो मुश्रिकीने मक्का ने मदीना पर हमला करने के लिये जंग की तय्यारियाँ शुरू कर दी, इधर मुसलमान मदीना में अमन व सुकून से रहना चाहते थे, लेकिन मुश्रिकीने मक्का जंग करने के लिये अहले मदीना से छेड़ख़्वानी करते रहते थे, चुनान्चे कुरैशी सरदार कुर्ज़ बिन जाबिर फहरी मदीना की चरागाह पर हमला कर के सौ ऊँट ले भागा और जंग की तय्यारी के लिये मक्का के तमाम लोगों ने सरमाया लगा कर एक तिजारती क़ाफ़ला मुल्के शाम रवाना किया, ताके उस के नफ़े से जंगी साज़ व सामान ख़रीद कर मुसलमानों से फ़ैसला कुन जंग लड़ सकें, बिलआख़िर हुज़ूर ﷺ ने मुश्रिकीने मक्का के ज़ुल्म व सितम को रोकने के लिये सहाब-ए-किराम رضی اللہ عنہم को उन के मुक़ाबले की इजाज़त दे दी।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — काफिर का मरऊब हो जाना

हज़रत जाबिर رضی اللہ عنہ फ़र्माते हैं के हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ एक ग़ज़वे में जा रहे थे, रास्ते में एक जगह पड़ाव डाला, तो लोग इधर उधर दो दो, तीन तीन की जमात बना कर दरख़्तों के नीचे आराम करने लगे, रसूलुल्लाह ﷺ भी एक दरख़्त के नीचे आराम फ़र्माने के लिये तशरीफ ले गए, और अपनी तलवार उस दरख़्त पर लटका कर सो गए, रसूलुल्लाह ﷺ फ़र्माते हैं के मैं सोया हुआ था के एक आदमी आया और उस ने मेरी तलवार ले ली, अचानक मैं बेदार हुआ तो क्या देखता हूँ के वह तलवार लिये मेरे सर पर खड़ा है ! वह मुझ से कहने लगा के तुम्हें कौन बचा सकता है ? रसूलुल्लाह ﷺ ने इत्मिनान से जवाब दिया : "अल्लाह" ! उस ने दूसरी मर्तबा सवाल किया, रसूलुल्लाह ﷺ ने इत्मिनान से जवाब दिया : "अल्लाह" ! तो (उस पर यह असर हुआ के) उस ने तलवार नियाम में वापस रख दी, (और आप ﷺ को कुछ न कर सका)।

[मुस्लिम : ५९५०, अन जाबिर رضی اللہ عنہ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — दाढ़ी रखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मूँछों को कतरवाओ और दाढ़ी को बढ़ाओ।"

[बुख़ारी : ५८९३, अन इब्ने उमर رضی اللہ عنہ]

फ़ायदा : दाढ़ी रखना शरीअते इस्लाम में वाजिब और इस्लामी शिआर में से है; इस लिये तमाम मुसलमानों के लिये उस पर अमल करना इन्तेहाई ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — मग़फिरत की दुआ

अपने परवरदिगार से इस तरह मग़फिरत तलब करनी चाहिये : ﴿ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي ﴾

तर्जमा : ऐ मेरे परवरदिगार ! मैं ने अपने ऊपर बड़ा ज़ुल्म कर रखा है लिहाज़ा मेरी मग़फिरत फ़र्मा दीजिये।

[सूर-ए-क़सस : १६]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अच्छे और बुरे अख़्लाक़ की मिसाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अच्छे अख़्लाक़ बुराइयों को इस तरह ख़त्म कर देते हैं जिस तरह पानी बरफ को पिघला देता है और बुरे अख़्लाक़ अच्छे कामों को इस तरह ख़त्म कर देते हैं जिस तरह सिरका शहद को ख़राब कर देता है।" [तबरानी कबीर : १०६२६, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	ग़ैरुल्लाह को माबूद बनाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "उन लोगों ने ख़ुदा तआला को छोड़ कर और माबूद बना लिये हैं, इस उम्मीद पर के उन की मदद कर दी जाएगी। वह उन की कुछ मदद कर ही नहीं सकते; बल्के वह उन लोगों के हक़ में फरीक़े मुख़ालिफ बन कर हाज़िर किये जाएँगे।" [सूर-ए-यासीन : ७४ ता ७५]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की ज़ाहिरी हालत धोका है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "यह लोग सिर्फ दुनियवी ज़िन्दगी की ज़ाहिरी हालत को जानते हैं और यह आख़िरत से बिल्कुल ग़ाफिल हैं।" (यानी इन्सान सिर्फ दुनिया की चीज़ों को जानते हैं और उसी को हासिल करने की फिक्र में लगे रहते हैं, उन्हें पता ही नहीं है के इस के बाद दूसरी ज़िन्दगी आने वाली है और वह हमेशा हमेश की ज़िन्दगी है, लिहाज़ा दुनिया में लगने के बजाए आख़िरत की तय्यारी में मशगूल रहना चाहिये।" [सूर-ए-रूम : ७]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	ज़ियादा अमल की तमन्ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अगर कोई बन्दा पैदाइश के दिन से मौत आने तक अल्लाह की इताअत में चेहरे के बल गिरा पड़ा रहे, तो वह भी क़यामत के दिन अपने सारे अमल को हक़ीर समझेगा और यह तमन्ना करेगा के उस को दुनिया की तरफ वापस कर दिया जाए ताके और ज़ियादा नेक अमल कर ले।" [मुस्नदे अहमद : १७१९८, अन मुहम्मद बिन अबी उमैरा ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बीमारियों से बचने की तदबीर

रसूलुल्लाह ﷺ ने ऐसी जगह बैठने से मना फर्माया है के जहाँ बदन का कुछ हिस्सा साए में हो और कुछ हिस्सा धूप में हो। [इब्ने माजा : ३७२२, अन बुरैदा ؓ]

फायदा : तिब्बी एतेबार से एक साथ धूप और साए में बैठना सेहत के लिये मुज़िर है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "कुर्आन का दिल सूर-ए-यासीन है, जो आदमी अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रख कर उस को पढ़ेगा अल्लाह तआला उस की मग़फिरत कर देगा तुम उस को अपने मरने वालों पर पढ़ा करो।" [मुस्नदे अहमद : १९७८९, अन मअ़किल बिन यसार ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(११) जुमादल ऊला

नंबर (१): इस्लामी तारीख — ग़ज़्व-ए-बद्र

मुसलमानों को सफह-ए-हस्ती से मिटाने के लिये मुश्रिकीने मक्का एक हज़ार का फौजी लश्कर ले कर मक्का से निकले, सब के सब हथियारों से लैस थे, जब हुज़ूर ﷺ को इत्तेला मिली, तो आप ﷺ उन के मुक़ाबले के लिये अपने जाँनिसार सहाबा को ले कर मदीना से निकले, जिन की तादाद तीन सौ तेरा या कुछ ज़ायद थी, जब के मुसलमानों के पास सत्तर ऊँट, दो घोड़े और आठ तलवारें थीं, यह मैदाने बद्र में हक़ व बातिल की पहली जंग थी, मुश्रिकीन ने पहले ही से पानी के चश्मों पर क़ब्ज़ा कर लिया था। जिस की वजह से मुसलमानों को ख़ुश्क रेगिस्तान में पड़ाव डालना पड़ा, जहाँ वुज़ू और गुस्ल हत्ता के पीने के लिये भी पानी मौजूद नहीं था, चुनान्चे हुज़ूर ﷺ सहाबा की सफें दुरुस्त फ़र्मा कर ख़ेमे में तशरीफ ले गए और सज्दे की हालत में यह दुआ फ़र्माई : "ऐ अल्लाह ! अगर आज तू ने इस मुट्ठी भर जमात को हलाक कर दिया, तो रुए ज़मीन पर तेरी इबादत करने वाला कोई नहीं रहेगा।" अल्लाह तआला ने इस दुआ की बरकत से बारिश नाज़िल फ़र्माई, जिस से तमाम ज़रूरतें पूरी हो गईं, मैदाने जंग भी साज़गार हो गया : जिस की वजह से मुसलमानों को शान्दार फतह नसीब हुई। कुरैश के ७० अफराद मारे गए, ७० अफराद क़ैद किये गए, जब के मुसलमानों में से १४ सहाबा शहीद हुए।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — हवा में निज़ामे कुदरत

हवा में अल्लाह का निज़ामे कुदरत देखो के उस ने हवा पर बादलों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने की कैसी डयूटी लगा रखी है के वह बराबर बादलों को ऐसी ज़मीन पर ले जा कर बारिश बरसाती हैं, जहाँ की ज़मीन सूखी और पानी के लिये प्यासी हो, अगर अल्लाह तआला बादलों पर यह डयूटी न लगाता तो बादल पानी के बोझ से बोझल हो कर एक ही जगह पर ठहरे रहते और हमारे बाग़ात और खेतियाँ सूखे रह कर ज़ाए हो जाते, यकीनन वह बड़ी अज़ीम ज़ात है जिस का हुक्म बादलों पर भी चलता है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म देना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "आप अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म करते रहिये और ख़ुद भी नमाज़ के पाबन्द रहिये, हम आप से रोज़ी तलब नहीं करते, रोज़ी तो आप को हम देंगे और अच्छा अन्जाम तो परहेज़गारों का है।"

[सूर-ए-ताहा : १३२]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — ख़ुश्बू को रद नहीं करना चाहिये

रसूलुल्लाह ﷺ को जब ख़ुश्बू का हदिया दिया जाता, तो आप ﷺ उस को रद नहीं फ़र्माते थे।

[तिर्मिज़ी : २७८९, अन अनस बिन मालिक ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | सलाम करने पर नेकियाँ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने अस्सलामु अलैकुम कहा, उस के लिये दस नेकियाँ लिखी जाती हैं। और जिस ने अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह कहा, उस के लिये बीस नेकियाँ लिखी जाती हैं, और जिस ने अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातुह कहा, उस के लिये तीस नेकियाँ लिखी जाती हैं।" [तबरानी कबीर : ५४२९, अन सहल बिन हुनैफ رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | शराब, मुरदार और ख़िन्ज़ीर हराम है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला ने शराब और उस की क़ीमत, मुरदार और उस की क़ीमत, ख़िन्ज़ीर और उस की क़ीमत को हराम कर दिया है।" [अबू दाऊद : ३४८५, अन अबी हुरैरा رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया व आख़िरत की तलाश का अजीब मामला

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तू देखे के तुझे आख़िरत की किसी चीज़ की तलाश होती है, तो उस का मिलना तेरे लिये आसान हो जाता है और जब तू दुनिया की कोई चीज़ तलब करना चाहता है, तो उस का मिलना तेरे लिये दुश्वार हो जाता है, तो समझ लेना के तू अच्छे हाल में है और अगर मामला उलटा है, तो तू बुरे हाल में है।" [कंज़ुल उम्माल : ३०७४१, अन उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | अहले जन्नत की नेअ्मतें

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जिन को दाहने (हाथ में आमाल नामे दिये जाने) वाले हैं वह दाहने वाले कितने अच्छे होंगे ! वह उन बाग़ों में होंगे जिन में बग़ैर काँटों की बेरियाँ होंगी, तह ब तह केले लगे हुए होंगे, लम्बा लम्बा साया होगा, बहता हुआ पानी होगा और कसरत से मेवे होंगे, जो न कभी ख़त्म होंगे और न उन पर पाबन्दी लगाई जाएगी और (वहाँ) ऊँचे ऊँचे फ़र्श होंगे, हम ने वहाँ की औरतों को ख़ास तौर पर बनाया है, हम ने उन को कुंवारियाँ, शौहर से मुहब्बत करने वाली और हम उम्र बनाया है, यह सब चीज़ें दाहने हाथ वालों के लिये हैं।" [सूर-ए-वाक़िआ : २७ता ३८]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | आबे ज़म ज़म के फ़वाइद

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه कहते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को फ़र्माते हुए सुना : "ज़मज़म का पानी जिस निय्यत से पिया जाए, उस से वही फ़ायदा हासिल होता है।" [इब्ने माजा : ३०६२]

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "ऐ ईमान वालो ! तुम शैतान के नक़्शे क़दम पर न चलो और जो शैतान के नक़्शे क़दम पर चलेगा, तो शैतान तो बे हयाई और बुरी बातों का हुक्म करता है।" [सूर-ए-नूर : २१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

⑫ जुमादल ऊला

नंबर ①: इस्लामी तारीख़ — क़ैदियों के साथ हुस्ने सुलूक

ग़ज़्व-ए-बद्र में ७० मुश्रिकीन कैद हुए, जिन को मदीना मुनव्वरा लाया गया, हुज़ूर ﷺ ने क़ैदियों को सहाबा में तक़सीम कर दिया, उन के साथ हुस्ने सुलूक और भलाई करने का हुक्म दिया, इस हुक्म को सुनते ही सहाब-ए-किराम رضي الله عنهم ने उन के साथ ऐसा सुलूक किया के दुनिया की कोई क़ौम उस अद्ल व इनसाफ और हुस्ने सुलूक की मिसाल पेश नहीं कर सकती। आप के चचा हज़रत अब्बास رضي الله عنه के बाज़ू कमर से कसे हुए थे, उन के कराहने की वजह से जब आप ﷺ बेचैन हो गए तो सहाबा ने उन की रस्सी ढीली कर दी, उन की इस रिआयत की वजह से अद्ल व इन्साफ करते हुए हुज़ूर ﷺ ने तमाम क़ैदियों की रस्सियाँ ढीली करा दी, सहाबा के हुस्ने सुलूक का यह हाल था के उन्होंने अपने बच्चों को भूका रख कर क़ैदियों को खाना खिलाया और अपनी ज़रूरत के बावजूद उन को कपड़े पहनाए, मालदार क़ैदियों से चार हज़ार दिरहम फिदया लेकर छोड़ दिया गया और पढ़े लिखे ग़रीब क़ैदियों को दस दस आदमियों को लिखना पढ़ना सिखाने के बदले आज़ाद कर दिया गया और अन पढ़ ग़रीब क़ैदियों को बिला किसी मुआवज़े के रिहा कर दिया गया।

नंबर ②: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — जमात के मुतअल्लिक़ ख़बर देना

एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ अपने सहाबा से गुफ्तगू फ़र्मा रहे थे, दौराने गुफ्तगू इर्शाद फर्माया : अभी तुम्हारे पास इस तरफ से मश्रिक़ वालों की एक बा अख़्लाक़ जमात आएगी, चुनान्चे हज़रत उमर رضي الله عنه खड़े हो कर उस तरफ चले, थोड़े ही दूर पहुँचे थे के सामने से तेरा अफराद पर मुश्तमिल एक जमात आई, हज़रत उमर رضي الله عنه ने पूछा : कौन हो ? जमात ने कहा : हम क़बील-ए-बनी अब्दे क़ैस से तअल्लुक़ रखते हैं, हज़रत उमर رضي الله عنه ने पूछा : क्या इस शहर में तिजारत के इरादे से आए हो ? तो उन्होंने फर्माया : नहीं। हज़रत उमर رضي الله عنه ने फर्माया : अभी अभी रसूलुल्लाह ﷺ ने आप लोगों का तज़केरा किया था और तारीफ की थी।

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : २०७२]

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — क़र्ज़ अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "क़र्ज़ की अदायगी पर ताक़त रखने के बावजूद टाल मटोल करना ज़ुल्म है।"

[बुख़ारी : २४००, अन अबी हुरैरा رضي الله عنه]

नंबर (४): *एक सुन्नत के बारे में*	तिजारत में बरकत की दुआ

आप ﷺ ने हज़रत हकीम बिन हिज़ाम رضي الله عنه को तिजारत में बरकत के लिये यह दुआ दी :

((بَارَكَ اللّٰهُ لَكَ فِي تِجَارَتِكَ))

तर्जमा : अल्लाह तआला तुम्हारे लिये तुम्हारी तिजारत में बरकत दे। [मोअ्जमे औसत : ८५८१]

नंबर (५): *एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत*	मुसाफा मग़फिरत का ज़रिया है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब दो मुसलमान आपस में मिलते हैं और मुसाफा करते हैं, तो जुदा होने से पहले उन दोनों की मग़फिरत कर दी जाती है।" [अबू दाऊद : ५२१२, अन बरा बिन आज़िब رضي الله عنه]

नंबर (६): *एक गुनाह के बारे में*	गुमराही इख़्तियार करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग अल्लाह तआला के रास्ते से भटकते हैं, उन के लिये सख़्त अज़ाब है, इस लिये के वह हिसाब के दिन को भूले हुए हैं।" [सूर-ए-साद : २६]

नंबर (७): *दुनिया के बारे में*	दुनिया चाहने वालों के लिये नुक़सान

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख़्स आख़िरत की खेती का तालिब हो, हम उस की खेती में तरक़्क़ी देंगे और जो दुनिया की खेती का तालिब हो, (के सारी कोशिश उसी पर ख़र्च कर दे) तो हम उस को दुनिया में से कुछ दे देंगे और ऐसे शख़्स का आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं।"

[सूर-ए-शूरा : २०]

नंबर (८): *आख़िरत के बारे में*	क़ब्र के बारे में

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "क़ब्र या तो जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा है।" [तिर्मिज़ी : २४६०, अन अबी सईद رضي الله عنه]

नंबर (९): *तिब्बे नब्वी से इलाज*	ककड़ी के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ खजूर के साथ ककड़ी खाते थे। [अबू दाऊद : ३८३५, अन अब्दुल्लाह बिन जाफर رضي الله عنه]

फायदा : अल्लामा इब्ने क़य्यिम رحمه الله ककड़ी के फवाइद में लिखते हैं के यह मेअ्दे की गरमी को बुझाती है और मसाना के दर्द को ख़त्म करती है।

नंबर (१०): *नबी ﷺ की नसीहत*	

रसूलुल्लाह ﷺ ने मातहत और यतीमों के बारे में फर्माया : "तुम अपनी औलाद की तरह उन का इकराम करो और जो तुम खाते हो उन को भी वही खिलाओ।"

[इब्ने माजा : ३६९१, अन अबी बक्र सिद्दीक़ رضي الله عنه]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१३) जुमादल ऊला

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — रमज़ान की फरज़ियत और ईद की ख़ुशी

सन २ हिजरी में रमज़ान के रोज़े फर्ज़ हुए। इसी साल सदक़-ए-फित्र और ज़कात का भी हुक्म नाज़िल हुआ, रमज़ान के रोज़े से पहले आशूरा का रोज़ा रखा जाता था, लेकिन यह इख़्तियारी था, जब रसूलुल्लाह ﷺ मदीना तशरीफ लाए, तो देखा के अहले मदीना साल में दो दिन खेल, तमाशों के ज़रिये ख़ुशियाँ मनाते हैं, तो आप ﷺ ने उन से दरयाफ्त फ़र्माया के इन दो दिनों की हक़ीक़त क्या है ? सहाबा ने कहा : हम ज़मान-ए-जाहिलियत में इन दो दिनों में खेल, तमाशा करते थे, चुनान्चे रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : अल्लाह तआला ने इन दो दिनों को बेहतर दिनों से बदल दिया है, वह ईदुल अज़हा और ईदुलफित्र है, बिल आख़िर १ शव्वाल सन २ हिजरी को पहली मर्तबा ईद मनाई, अल्लाह तआला ने ईद की ख़ुशियाँ व मसर्रतें मुसलमानों के सर पर फतह व इज़्ज़त का ताज रखने के बाद अता फ़र्माई, जब मुसलमान अपने घरों से निकल कर तक्बीर व तौहीद और तस्बीह व तहमीद की आवाज़ें बुलन्द करते हुए मैदान में जाकर नमाज़े ईद अदा कर रहे थे, तो दिल अल्लाह की दी हुई नेअमतों से भरे हुए थे, इसी जज़्ब-ए-शुक्र में दोगाना नमाज़ में उन की पेशानी अल्लाह के सामने झुकी हुई थी।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — काइनात की सब से बड़ी मशीनरी

इन्सान इस काइनात की सब से बड़ी मशीनरी है, अल्लाह तआला ने इस को किस अजीब साँचे में ढाला है, एक नुत्फे से तदरीजी तौर पर जमा हुआ ख़ून बनाया, जमे हुए ख़ून से गोश्त का लोथड़ा बनाया फिर हड्डियाँ बनाई फिर एक ढाँचा तय्यार किया फिर उस में सारे आज़ा नाक, कान, आँखें, दिल, दिमाग़, हाथ, पैर, बेहतरीन तरतीब से फिट किए। यह सारा निज़ामे क़ुदरत एक छोटी सी अंधेरी कोठरी में चल रहा है, जिस माँ के पेट में यह बच्चा तय्यार हो रहा है उस माँ को भी पता नहीं, न उस के बाप को पता है के क्या हो रहा है? इस निज़ामे क़ुदरत को देख कर बे साख़्ता ज़बान पर आजाता है, "बाबरकत है वह ज़ात जो बेहतरीन तख़्लीक़ करने वाली है।"

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — हज़रत मुहम्मद ﷺ को आख़री नबी मानना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "(हज़रत मुहम्मद ﷺ) अल्लाह के रसूल और ख़ातमुन नबिय्यीन हैं।"

[सूर-ए-अहज़ाब : ४०]

फायदा : रसूलुल्लाह ﷺ अल्लाह के आख़री नबी और रसूल हैं, लिहाज़ा आप ﷺ को आख़री नबी और रसूल मानना और अब क़यामत तक किसी दूसरे नबी के न आने का यक़ीन रखना फर्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	इस्मिद सुरमा लगाना

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फर्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ हर रात सोने से पहले तीन मर्तबा इस्मिद सुरमा लगाया करते थे।

[मुस्तदरक हाकिम : ८२४९]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	इज़्ज़त की हिफाज़त करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने पीठ पीछे अपने भाई की इज़्ज़त की हिफाज़त की। अल्लाह तआला अपनी ज़िम्मेदारी से उस को (जहन्नम की) आग से आज़ाद कर देगा।"

[तबरानी कबीर : १९९१६, अन अस्मा बिन्ते यज़ीद رضي الله عنها]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	मोमिन को नाहक़ क़त्ल करने की सज़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "हर गुनाह के बारे में अल्लाह से उम्मीद है के वह माफ कर देगा, सिवाए उस आदमी के जो अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक करने की हालत में मरा हो या उस ने किसी मोमिन को जान बूझ कर क़त्ल किया हो।"

[अबू दाऊद : ४२७०, अन अबी दरदा رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया मोमिनों के लिये क़ैद ख़ाना है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "दुनिया मोमिन के लिये क़ैद ख़ाना और ख़ुश्क साली है, जब वह दुनिया से जाता है, तो क़ैद ख़ाने और ख़ुश्क साली से निकल जाता है।"

[मुस्नदे अहमद : ६८१६, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र رضي الله عنه]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	बुरे लोगों का अन्जाम

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख़्स झुटलाने वाले गुमराहों में से होगा, तो खौलते हुए गरम पानी से उस की मेहमान नवाज़ी होगी और उसे दोज़ख में दाख़िल किया जाएगा।"

[सूर-ए-वाक़िआ : ९२ ता ९४]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	क़ै (उल्टी) के ज़रिये इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने क़ै (Vomit) की और फिर वुज़ू फ़र्माया। [तिर्मिज़ी : ८७, अन अबी दरदा رضي الله عنه]

फायदा : अल्लामा इब्ने क़य्यिम رحمه الله लिखते हैं : क़ै से मेअ्दे की सफाई होती है और उस में ताक़त आती है, आँखों की रौशनी तेज़ होती है, सर का भारी पन ख़त्म हो जाता है। इस के अलावा और भी बहुत से फवायद हैं।

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो! तुम सब के सब अल्लाह तआला से तौबा कर लो, ताके तुम कामयाब हो जाओ।"

[सूर-ए-नूर : ३१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — ग़ज़्व-ए-उहुद

ग़ज़्व-ए-बद्र की शिकस्त से कुरैशे मक्का के हौसले तो पस्त हो गए थे, मगर उन में ग़म व गुस्से की आग भड़क रही थी, उस आग ने उन को एक दिन भी चैन से बैठने न दिया, एक साल तो उन्होंने किसी तरह गुज़ारा,लेकिन सन ३ हिजरी में अबू सुफियान ने मुकम्मल तय्यारी के साथ तीन हज़ार का लश्कर ले कर मदीना के बाहर उहुद पहाड़ के पास पड़ाव डाला, उस के साथ तीन हज़ार ऊँट, दो सौ घोड़े और सात सौ आदमी ज़िरह पहने हुए थे, रसूलुल्लाह ﷺ शव्वाल सन ३ हिजरी में नमाज़े जुमा अदा कर के एक हज़ार मुसलमानों को ले कर उहुद की तरफ रवाना हुए, मगर ऐन वक़्त पर मुनाफिक़ों ने धोका दे दिया और अब्दुल्लाह बिन उबइ अपने तीन सौ आदमियों को ले कर वापस हो गया, अब मुसलमानों की तादाद सिर्फ सात सौ रह गई, उहुद के मक़ाम पर लड़ाई शुरू हुई और दोनों जमातें एक दूसरे पर हमला आवर हुईं, इस जंग में मुसलमानों को पहले फतह हुई मगर एक चूक की वजह से जंग का पाँसा पलट गया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हराम लुक़्मे का गले से नीचे न उतरना

एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ किसी की नमाज़े नजाज़ा पढ़ कर वापस आ रहे थे, रास्ते में एक आदमी एक औरत की तरफ से खाने की दावत देने आया, तो हुज़ूर ﷺ ने दावत कुबूल फ़र्मा ली और रसूलुल्लाह ﷺ अपने सहाबा के साथ उस औरत के घर तशरीफ ले गए, जब खाना सामने रखा गया, तो सब से पहले हुज़ूर ﷺ ने लुक़्मा उठाया और फिर सहाबा ने खाना शुरू कर दिया, लेकिन वह लुक़्मा हुज़ूर ﷺ के गले से नीचे नहीं उतर रहा था, तो आप ﷺ ने फ़र्माया : मुझे लगता है के यह बकरी मालिक की इजाज़त के बग़ैर ज़बह की गई है। चुनान्चे ख़ुद उस औरत ने बतलाया : या रसूलल्लाह ! मैं ने एक आदमी को मक़ामे वक़ीअ भेजा था (जहाँ मंडी लगती थी) लेकिन बकरी नहीं मिली तो मैं ने अपने पड़ोसी आदमी के पास भेजा, मगर वह आदमी घर पर न था तो फिर मैं ने उस की औरत के पास भेजा, तो उस ने वह बकरी (अपने शौहर की इजाज़त के बग़ैर) दे दी, हुज़ूर ﷺ ने फ़र्माया : यह खाना क़ैदियों को खिला दो।

[अबू दाऊद : ३३३२]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — क़ज़ा नमाज़ों की अदाएगी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो कोई नमाज़ पढ़ना भूल गया या नमाज़ के वक़्त सोता रह गया, तो (उस का कफ्फारा यह है के) जब याद आजाए उसी वक़्त पढ़ ले।" [तिर्मिज़ी : १७७, अन अबी क़तादा ؓ]

फायदा : अगर किसी शख़्स की नमाज़ किसी उज़्र की वजह से छूट जाए या सोने की हालत में नमाज़ का वक़्त गुज़र जाए, तो बाद में उस को पढ़ना फर्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — सोने से पहले की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ जब सोने लगते तो यह दुआ पढ़ते : ((اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ أَمُوْتُ وَأَحْيَا))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं तेरे ही नाम से मरता हूँ और जीता हूँ। [बुख़ारी : ६३१४, अन हुज़ैफ़ा ﷺ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | अच्छा मुसलमान

हज़रत अबू मूसा ﷺ ने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा, सब से अच्छा मुसलमान कौन है ? आप ﷺ ने फ़र्माया : "वह शख़्स जिस की ज़बान और हाथ से मुसलमान महफ़ूज़ रहें।"

[बुख़ारी : ११, अन अबी मूसा ﷺ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में | ईमान को झुटलाना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जिस शख़्स ने बुख़्ल किया और लापरवाही करता रहा और भली बात (ईमान) को झुटलाया, तो हम उस के लिये तकलीफ़ व मुसीबत का रास्ता आसान कर देंगे (यानी जहन्नम में पहुँचा देंगे)।" [सूर-ए-लैल : ८ ता १०]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में | आख़िरत की कामयाबी दुनिया से बेहतर है

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम लोगों को जो कुछ दिया गया है वह सिर्फ़ दुनियवी ज़िन्दगी में (इस्तेमाल की) चीज़ें हैं और जो कुछ (अज्र व सवाब) अल्लाह के पास है, वह इस (दुनिया) से कहीं बेहतर और बाक़ी रहने वाला है और वह उन लोगों के लिये है जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं।" [सूर-ए-शूरा : ३६]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में | ईमान की बरकत से जहन्नम से छुटकारा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब जन्नती जन्नत में चले जाएँगे और जहन्नमी जहन्नम में चले जाएँगे, तो अल्लाह तआला फ़र्माएगा : जिस के दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान हो उसे भी जहन्नम से निकाल लो, चुनान्चे उन लोगों को भी निकाल लिया जाएगा, जिन की यह हालत होगी के वह जल कर इन्तेहाई काले हो गए होंगे। उस के बाद उन को "नहरे हयात" में डाला जाएगा, तो इस तरह निकल आएँगे जैसे दाना सैलाब के कूड़े में (खाद और पानी मिलने की वजह से) उग आता है।"

[बुख़ारी : २२, अन अबी सईद ख़ुदरी ﷺ]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज | बीमारों को ज़बरदस्ती न खिलाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अपने बीमारों को ज़बरदस्ती खिलाने पिलाने की कोशिश न करो, क्योंकि ख़ुदा तआला उन्हें खिलाता पिलाता है।" [तिर्मिज़ी : २०४०, अन उक़्बा बिन आमिर ﷺ]

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम में से जो शख़्स किसी बुराई को देखे तो उसे अपने हाथ से रोके। अगर इस की ताक़त न हो तो अपनी ज़बान से रोके, फिर अगर इस की भी ताक़त न हो तो दिल से उस को बुरा जाने और यह ईमान का सब से कमज़ोर दर्जा है।" [मुस्लिम : १७७, अन अबी सईद ख़ुदरी ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१५) जुमादल ऊला

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ | ग़ज़्वा–ए–उहुद में मुसलमानों की आज़माइश

ग़ज़्वा–ए–उहुद में मुसलमानों ने बड़ी बहादुरी से मुश्रिकीने मक्का का मुक़ाबला किया, जिस में पहले फतह हुई, मगर बाद में एक चूक की वजह से नाकामी का सामना करना पड़ा, जंग शुरू होने से पहले रसूलुल्लाह ﷺ ने पचास तीर अन्दाज़ों की एक जमात को पहाड़ की घाटी पर जहाँ से दुश्मनों के हमले का ख़तरा था, मुक़र्रर कर दिया और यह ताकीद फ़र्माई के "जंग में फतह हो या शिकश्त" तुम अपनी जगह से हरगिज़ न हटना, जब मुसलमानों को शुरू में फतह हुई, तो काफिरों को भागता हुआ देख कर यह लोग भी अपनी जगह से यह समझ कर हट गए के अब जंग ख़त्म हो चुकी, क्यों न हम भी माले ग़नीमत जमा करने में अपने भाइयों की मदद करें, उन के अमीर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर ؓ ने बार बार रोकने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने फतह की ख़ुशी में बात न सुनी और पहाड़ से नीचे उतर आए, हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ؓ जो उस वक़्त मुसलमान नहीं हुए थे और कुफ्फार की तरफ से लड़ रहे थे, जब उस जगह को खाली देखा, तो पीछे से हमला कर दिया, इधर मुसलमान बे फ़िक्र थे, बिलआख़िर भागते हुए मुश्रिकीन पलट कर मुसलमानों पर टूट पड़े, अचानक हमला होने की वजह से कुफ्फार के बीच में आगए, जिस की वजह से ७० मुसलमान शहीद हुए, आप ﷺ का सर मुबारक ज़ख़्मी और एक मुबारक दाँत भी शहीद हो गया।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत | नाक क़ुदरते इलाही की निशानी

अल्लाह तआला ने इन्सान के चेहरे पर नाक बनाई जिस से चेहरे की रौनक़ बढ़ जाती है और चेहरा ख़ूबसूरत व ख़ुशनुमा मालूम होता है, फिर उस में अल्लाह ने दो नथने बनाए उन में क़ुव्वते हास्सा और शाम्मा (महसूस करने और सूंघने की ताक़त) रख दी जिस से नाक खाने पीने की चीज़ों की बू सूंघ कर फौरन कैफियत का पता लगा देती है, यही नाक ताज़ा हवा को भी सूंघती है, जो दिल की ग़िज़ा है जिस से अन्दरून की हरारत बरक़रार रहती है, ग़ौर तो करो, यह सारा निज़ाम किस ने बनाया है?

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | शौहर पर बीवी का ख़र्चा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम पर वाजिब है के तुम औरतों के लिये क़ाइदे के मुवाफिक़ खाने और कपड़े का इन्तेज़ाम करो।" [मुस्लिम : २९५०, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ؓ]

फायदा : शौहर पर वाजिब है के वह बीवी के लिये अपनी हैसियत के मुताबिक़ रोटी और कपड़े का इन्तेज़ाम करे।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | सवारी पर सवार होने के बाद की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ जब सफर के इरादे से निकलते और सवारी पर बैठ जाते, तो तीन मर्तबा तक्बीर फ़र्माते ((اَللّٰهُ اَكْبَرُ)) और यह दुआ पढ़ते : ((سُبْحٰنَ الَّذِىْ سَخَّرَلَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ وَاِنَّا اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ)) [तिर्मिज़ी : ३४४७, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | अल्लाह के लिये मुहब्बत का बदला

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह तआला क़यामत के दिन फ़र्माएगा। मेरी अज़मत की वजह से आपस में मुहब्बत करने वाले लोग आज कहाँ हैं? मैं आज उन को अपने साए में जगह दूँगा जब के मेरे साए के अलावा कोई साया न होगा।"

[मुस्लिम : ६५४८, अन अबी हुरैरा ؓ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में | पड़ोसी को तकलीफ देना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने अपने पड़ोसी को तकलीफ दी, उस ने मुझे तकलीफ दी और जिस ने मुझे तकलीफ दी उस ने अल्लाह को तकलीफ दी और जिस ने अपने पड़ोसी से झगड़ा किया, उस ने मुझ से झगड़ा किया और जिस ने मुझ से झगड़ा किया तो उस ने अल्लाह से झगड़ा किया।"

[तरग़ीब व तरहीब : ३६४९, अन अनस बिन मालिक ؓ]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में | दुनिया की रग़बत का ख़ौफ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मैं तुम से पहले जाने वाला हूँ और मैं तुम पर गवाह हूँ, तुम से मिलने की जगह हौज़ होगी और अब मैं यहाँ खड़े हो कर उसे देख रहा हूँ, मुझे इस बात का अन्देशा नहीं के तुम मेरे बाद शिर्क करोगे, मगर इस बात का डर है के तुम कहीं दुनिया में रग़बत न करने लगो।"

[मुस्नदे अहमद : १६९४९, अन उक़बा बिन आमिर ؓ]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में | जन्नत के खादिम

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "(शराब के जाम) ले कर जन्नत वालों की ख़िदमत में ऐसे लड़के दौड़ते फिरेंगे जो हमेशा लड़के ही रहेंगे, (वह इस क़द्र हसीन व ख़ूबसूरत हैं) के जब तुम उन्हें देखोगे, तो ऐसा महसूस होगा के वह बिखरे हुए मोती हैं, जब तुम उस जगह को देखोगे तो बकसरत नेअ्मत और बड़ी सल्तनत दिखाई देगी।"

[सूर-ए-दहर : १९ ता २०]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज | मोतदिल ग़िज़ा का इस्तेमाल

रसूलुल्लाह ﷺ खजूर के साथ खीरे खाते थे।

[बुख़ारी : ५४४७, अन अब्दुल्लाह बिन जाफर ؓ]

फायदा : मुहद्दिसीने किराम फ़र्माते हैं के खजूर चूँकि गर्म होती है इस लिये आप ﷺ उस के साथ ठंडी चीज़ खीरा (ककड़ी) इस्तेमाल फ़र्माते थे ताके दोनों मिल कर मोतदिल हो जाएं।

नंबर (१०) : कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "हम ने इन्सान को उस के माँ बाप के बारे में ताकीद की है के माँ बाप के साथ अच्छा बरताव करे, (क्योंकि) उस की माँ ने तकलीफ पर तकलीफ उठा कर उस को पेट में रखा और दो साल में उस का दूध छुड़ाया है, ऐ इन्सान! तू मेरा और अपने माँ बाप का हक़ मान (इस लिये के) तुम सब को मेरी ही तरफ लौट कर आना है।"

[सूर-ए-लुक़मान : १४]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

१६ जुमादल ऊला

नंबर (१): इस्लामी तारीख — ग़ज़व-ए-उहुद में सहाब-ए-किराम की बे मिसाल कुर्बानी

ग़ज़व-ए-उहुद में हुज़ूर ﷺ के सहाबा ने जिस वालेहाना मुहब्बत व फिदाकारी का मुज़ाहरा किया उस का तसव्वुर भी रहती दुनिया तक आलमे इस्लाम को रुहानी जज़्बे से माला माल करता रहेगा, जब मुश्रिकीन ने आप ﷺ का घेराव कर लिया तो फ़र्माया : मुझ पर कौन जान कुरबान करता है? ज़ियाद बिन सकन रज़ि. चदं अन्सारियों के साथ आगे बढ़े और यके बाद दीगरे सातों ने आप ﷺ की हिफाज़त में अपने आप को कुर्बान कर दिया। अब्दुल्लाह बिन क़मीआ ने जब तलवार का वार किया तो उम्मे अम्मारा रज़ि. हुज़ूर ﷺ के सामने आगईं और उस के वार को अपने कन्धे पर रोक लिया। हज़रत अबू दुजाना रज़ि. ढाल बन कर खड़े हो गए, यहाँ तक के उन की पीठ तीरों से छलनी हो गई। हज़रत तलहा रज़ि. ने दुश्मन के तीर और तलवार हाथों पर रोकीं, जिस की वजह से उन का एक हाथ कट कर गिर गया। दुश्मन की एक जमात हमले के लिये आगे बढ़ी तो तन्हा हज़रत अली रज़ि. ने उन का रुख़ फेर दिया, ग़र्ज़ सहाब-ए-किराम रज़ि. की हुज़ूर ﷺ से वफादारी और जाँनिसारी ने अपनी शिकस्त को फतह में तबदील कर दिया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हाथ से ख़ुश्बू निकलना

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि. फर्माती हैं के जिस दिन रसूलुल्लाह ﷺ की वफात हुई, उस दिन मैं ने हुज़ूर ﷺ के सीन-ए-मुबारक पर हाथ रखा था, उस के बाद एक ज़माना गुज़र गया, मैं उस हाथ से खाती रही और उस को धोती रही, लेकिन मेरे उस हाथ से मुश्क की ख़ुश्बू ख़त्म नहीं हुई।

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : ३१५९]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — मज़दूर को पूरी मज़दूरी देना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मैं क़यामत के दिन तीन लोगों का मुक़ाबिल बन कर उन से झगड़ूंगा, (उन तीन में से एक) वह शख़्स है जिस ने किसी को मज़दूरी पर रखा और उस से पूरा पूरा काम लिया, मगर उस को पूरी मज़दूरी नहीं दी।"

[इब्ने माजा : २४४२, अन अबी हुरैरा रज़ि.]

ख़ुलासा : मज़दूर को मुकम्मल मज़दूरी देना वाजिब है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — बदअख़्लाक़ी से बचने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ फ़र्माते थे :

((اَللّٰهُمَّ إِنِّیْ أَعُوْذُبِكَ مِنْ مُنْكَرَاتِ الْأَخْلَاقِ وَالْأَعْمَالِ وَالْأَهْوَاءِ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं बुरे अख़्लाक़, बुरे आमाल और ी ख़्वाहिशात से तेरी पनाह चाहता हूँ।

[तिर्मिज़ी : ३५९१, अन क़ुतबा बिन मालिक रज़ि.]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	ख़ुशू व ख़ुज़ू से नमाज़ अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो कोई ख़ूब अच्छी तरह वुज़ू करे और दो रकात नमाज़ ख़ुशू ख़ुज़ू के साथ पढ़े तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई।" [अबू दाऊद : ९०६, अन उक़बा बिन आमिर رضی اللہ عنہ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	यतीमों का माल खाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "यतीमों के माल उन को देते रहा करो और पाक माल को नापाक माल से न बदलो और उन का माल अपने मालों के साथ मिला कर मत खाओ ऐसा करना यक़ीनन बहुत बड़ा गुनाह है।" [सूर-ए-निसा : २]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	नाफ़र्मानों से नेअ्मतें छीन ली जाती हैं

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "वह नाफ़र्मान लोग कितने ही बाग़, चश्मे, खेतियाँ और उम्दा मकानात और आराम के सामान जिन में वह मज़े किया करते थे, (सब) छोड़ गए, हम ने इसी तरह किया और उन सब चीज़ों का वारिस एक दूसरी क़ौम को बना दिया। फिर उन लोगों पर न तो आसमान रोया और न ही ज़मीन और न ही उन को मोहलत दी गई।" [सूर-ए-दुख़ान : २५ ता २९]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले ईमान और क़यामत का दिन

रसूलुल्लाह ﷺ से पचास हज़ार साल के बराबर दिन (यानी क़यामत) के बारे में पूछा गया के वह कितना लम्बा होगा? तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है! वह दिन मोमिन के लिये इतना मुख़्तसर कर दिया जाएगा, जितनी देर में वह दुनिया में फ़र्ज़ नमाज़ अदा किया करता था।" [मुस्नदे अहमद : ११३२०, अन अबी सईद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	कद्दू (दूधी) से इलाज

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ फर्माते हैं के मैं ने खाने के दौरान रसूलुल्लाह ﷺ को देखा के प्याले के चारों तरफ से कद्दू तलाश कर के खा रहे थे, उसी रोज़ से मेरे दिल में कद्दू की रग़बत पैदा हो गई।" [बुख़ारी : ५३७९]

फायदा : अतिब्बा ने इस के बे शुमार फवायद लिखे हैं और अगर बही के साथ पका कर इस्तेमाल किया जाए तो बदन को उम्दा ग़िज़ाइयत बख़्शता है, गरम मिज़ाज और बुख़ार ज़दा लोगों के लिये यह ग़ैर मामूली तौर पर नफा बख़्श है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो उसे अपने पड़ोसी का इकराम करना चाहिये। सहाबा ने पूछा : या रसूलल्लाह! पड़ोसी का क्या हक़ है ? फर्माया : अगर वह तुम से कुछ माँगे तो उस को दे दिया करो।" [तरग़ीब व तरहीब : ३६५७, अन अबी हुरैरा رضی اللہ عنہ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुरआन व हदीस की रौशनी में)

१७ जुमादल ऊला

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हमराउल असद पर तीन रोज़ क़याम

ग़ज़वा-ए-उहुद के बाद अबू सुफ़ियान अपना लश्कर ले कर मक्का वापस जाते हुए मक़ामे रौहा में पहुँच कर कहने लगा, हमें मुकम्मल तौर पर फ़तह हासिल करना चाहिये, तो (नऊज़ बिल्लाह) मुहम्मद ﷺ को क़त्ल क्यों न करूँ ? चलो ! वापस जाकर मुसलमानों को सफ्ह-ए-हस्ती से मिटा कर आएँ। जब रसूलुल्लाह ﷺ को इस की इत्तेला मिली तो आप ﷺ ने मुसलमानों को उस का पीछा करने का हुक्म दिया, जो जंगे उहुद में शरीक थे, मुसलमान ज़ख़्मी और ख़स्ता हाल होने के बावजूद फौरन तय्यार हो गए और मदीना से आठ मील दूर हमराउल असद मक़ाम पर पड़ाव डाला। जब अबू सुफियान को उन की बहादुरी और शुजाअत का पता चला के मुहम्मद ﷺ फिर अपने साथियों को ले कर मुक़ाबले के लिये पीछा कर रहे हैं, तो उस पर ख़ौफ तारी हो गया और सब की हिम्मत पस्त हो गई, बिलआख़िर अबू सुफियान अपनी जान बचाते हुए लश्कर ले कर मक्का भाग गया। हुज़ूर ﷺ ने वहाँ तीन रोज़ क़याम फ़र्माया और इतमेनान के साथ वापस मदीना आगए।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — मेअ्दे का निज़ाम

हमें इन्सानी जिस्म के अन्दर जो निज़ाम चल रहा है उस पर ग़ौर करना चाहिये, इन्सान जब लुक़्मा मुंह में डालता है वह मेअ्दे में पहुँचता है, मेअ्दा उस को पकाता है, फिर उस ग़िज़ा का जो अच्छा हिस्सा होता है, उस को बारीक रगों के रास्ते से जिगर तक पहुँचाता है फिर जिगर उस को ख़ून में तब्दील करता है,उस ख़ून को बारीक रगों के रास्ते से पूरे जिस्म में बक़द्रे ज़रूरत सपलाई करता है, और मेअ्दे में जो फासिद माद्दा होता है वह पेशाब व पाख़ाने के रास्ते से बाहर निकल जाता है, अंदर का यह सारा निज़ाम कौन चला रहा है, बिला शुबा वही वह्दहू लाशरीक है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सुबह की नमाज़ अदा करने पर हिफाज़त का ज़िम्मा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने सुबह (यानी फज्र) की नमाज़ अदा की, वह अल्लाह की हिफाज़त में है।"

[मुस्लिम : १४९३, अन जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — मूंछों को तराश्ना

रसूलुल्लाह ﷺ मूंछों को तराश्ते थे और फ़र्माया करते थे के हज़रत इब्राहीम ؑ भी ऐसा ही किया करते थे।

[तिर्मिज़ी : २७६०, अन अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — किसी को खाना खिलाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने किसी मोमिन को खाना खिलाया और उस को सैराब कर

दिया तो अल्लाह तआला एक ख़ास दरवाज़े से उस को जन्नत में दाखिल फ़र्माएगा जिस में उस के जैसा अमल करने वाला ही दाख़िल होगा ।"
[तबरानी कबीर : १६५८९, अन मआज़ बिन जबल ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | आपस में दुश्मनी रखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "हर पीर व जुमेरात को (अल्लाह के दरबार में) आमाल पेश किए जाते हैं, अल्लाह तआला उन दिनों में हर ऐसे आदमी की मग़फिरत फ़र्मा देता है जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं करता । मगर (उन दो आदमियों की मग़फिरत नहीं करता) जिन के दर्मियान दुश्मनी हो । अल्लाह तआला फर्माता है जब तक यह दोनों सुलह व सफाई न कर लें उन को उसी हाल पर छोड़े रखो ।"
[मुस्लिम : ६५४६, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया में लगे रहने का वबाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स अल्लाह का हो जाता है तो अल्लाह तआला उस की हर ज़रूरत पूरी करते हैं और उस को ऐसी जगह से रिज़्क़ देते हैं के उस को गुमान भी नहीं होता; और जो शख़्स पूरे तौर पर दुनिया की तरफ लग जाता है, तो अल्लाह तआला उस को दुनिया के हवाले कर देते हैं ।"
[कन्ज़ुल उम्माल : ६२७०, अन इमरान बिन हुसैन ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | क़यामत का मन्ज़र

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "(क़यामत के दिन) जब सितारे बे नूर कर दिए जाएँगे और आसमान फट जाएगा और पहाड़ उड़ा दिए जाएँगे और रसूलों को (वक़्ते मुतअय्यन पर) जमा किया जाएगा । इन तमाम चीज़ों में किस दिन के लिये ताख़ीर की गई है? (इन तमाम चीज़ों को) फैसले के दिन के लिये रखा गया है ।"
[सूर-ए-मुरसलात : ८ ता १३]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | आटे की छान से इलाज

हज़रत उम्मे ऐमन ﷺ आटे को छान कर रसूलुल्लाह ﷺ के लिये रोटी तय्यार कर रही थीं के आप ﷺ ने दरयाफ्त फ़र्माया : यह क्या है ? उन्होंने अर्ज किया : यह हमारे मुल्क का खाना है, जो आप के लिये तय्यार कर रही हूँ, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम ने आटे में से जो कुछ छान कर निकाला है उस को उसी में डाल दो और फिर गूंधो ।"
[इब्ने माजा : ३३३६]

फायदा : जदीद तहक़ीक़ात से मालूम हुआ है के आटे की छान (भूसी) पुराने क़ब्ज़ और ज़्याबेतीस के मरीज़ों के लिये बेहतरीन दवा है ।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "यह (कुर्आन) एक बाबरकत किताब है, जिस को हम ने आप पर इस लिये नाज़िल किया है के लोग उस की आयतों में ग़ौर व फिक्र करें और अक़्लमन्द लोग उस से नसीहत हासिल करें ।"
[सूर-ए-साद : २९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(१८) जुमादल ऊला

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — शराब की हुरमत

अल्लाह तआला ने मुसलमानों को इस्लामी माहौल में जिन्दगी गुजारने और अहकामे इलाही पर अमल करने के लिये मदीने का साज़गार माहौल अता किया, ताके ज़मान-ए-जाहिलियत की तमाम रस्मों और बुरी आदतों को ख़त्म कर के इस्लामी मुआशरे का अमली नमूना दुनिया के सामने आजाए, उन की सब से बुरी आदत शराब नोशी थी, उस की मुहब्बत अरबों की घुट्टी में पड़ी हुई थी, चुनान्चे शराब और जूए के बारे में पहला हुक्म सन ३ हिजरी में नाज़िल हुआ, के उस में भलाई के मुक़ाबले में बुराई और गुनाह ज़ियादा है, हत्ता के अक़्ल व होश तक को खत्म कर देती है, चुनान्चे बाज़ लोगों ने उसे छोड़ दिया, फिर दूसरा हुक्म नाज़िल हुआ के शराब और नशे की हालत में नमाज के क़रीब मत जाओ, चुनान्चे सहाब-ए-किराम ने उस को तर्क कर दिया के जब नशे की हालत में नमाज नहीं पढ़ सकते तो उस से बचना चाहिये, फिर शराब के मुतअल्लिक़ सूर-ए-माइदा की तीसरी आयत नाज़िल हुई, उस में क़तई तौर पर शराब को हराम क़रार दे दिया गया, सहाब-ए-किराम के ईमानी जज़्बे का हाल यह था के हुक्म मिलते ही शराब के बरतन और मटके तोड़ डाले यहाँ तक के मदीना की गलियों और सड़कों पर शराब बहती नज़र आ रही थी।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हज़रत साबित रज़ि. के लिये पेशीन गोई

आप ﷺ ने हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ि. से फर्माया था : "क्या तुम इस पर राज़ी नहीं के एक अच्छी ज़िन्दगी बसर करो और शहीद की मौत मरो और फिर जन्नत में दाखिल हो जाओ? तो हज़रत साबित रज़ि. ने फर्माया : या रसूलल्लाह! हाँ! क्यों नहीं। चुनान्चे हज़रत साबित रज़ि. ने अच्छी ज़िन्दगी बसर की और फिर अल्लाह की राह में शहीद हो गए और अपने मौला से जा मिले।"

[मुअ्जमे कबीर लित तबरानी : १२९६, अन साबित बिन क़ैस रज़ि.]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — वरासत में लड़की का हिस्सा

कुर्आन में अल्लाह फर्माता है : "अल्लाह तआला तुम को तुम्हारी औलाद के हक़ में हुक्म देता है के एक लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के बराबर है।"

[सूर-ए-निसा : ११]

फायदा : वालिदैन की वरासत में लड़के के दो हिस्से और लड़की का एक हिस्सा होता है, जिस का अदा करना फर्ज है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — फसाद करने वालों पर ग़लबा पाने की दुआ

फितना व फसाद करने वालों पर ग़लबा पाने के लिये इस दुआ का एहतेमाम करना चाहिये :

﴿ رَبِّ انْصُرْنِىْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ ﴾

तर्जमा : ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे फसाद करने वाली कौम पर गलबा अता फर्मा। [सूर-ए-अन्कबूत : ३०]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह के रास्ते में पहरेदारी करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह के रास्ते में एक रात जाग कर पहरा देना एक हज़ार रातों की इबादत और एक हज़ार दिनों के रोज़ों से ज़ियादा अफ़ज़ल है।"

[मुस्तदरक हाकिम : २४२६, अन उस्मान ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	मुन्किरीन का अज़ाब

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो लोग हमारी आयतों का इन्कार करते रहे हैं, तो वही बदबख़्त हैं, (जिन को बाएँ हाथ में नाम-ए-आमाल दिया जाएगा) उन पर चारों तरफ़ से बन्द की हुई आग को मुसल्लत कर दिया जाएगा।"

[सूर-ए-बलद : १९ ता २०]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	अपने बीवी बच्चों से होशियार रहो

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "ऐ ईमान वालो ! तुम्हारी बाज़ बीवियाँ और बाज़ औलाद तुम्हारे हक़ में दुश्मन हैं, तो तुम उन से होशियार रहो।"

[सूर-ए-तग़ाबुन : १४]

फ़ायदा : बीवी बच्चे बाज़ मर्तबा दुनियावी नफ़े के लिये ख़िलाफ़े शरीअत कामों का हुक्म देते हैं, उन्हीं लोगों को अल्लाह तआला ने दीन का दुश्मन बताया है और उन के हुक्म को पूरा न करने की हिदायत दी है।

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जहन्नम की आग की सख़्ती

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दोज़ख़ को एक हज़ार साल तक दहकाया गया, तो वह लाल हो गई, फिर एक हज़ार साल तक दहकाया गया तो वह सफ़ेद हो गई, फिर एक हज़ार साल तक दहकाया गया तो अब वह बहुत ज़ियादा काली हो गई।"

[शोअबुल ईमान : ८१२, अन अनस ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	तबीअत के मुवाफ़िक़ ग़िज़ा से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब मरीज़ कोई चीज़ खाना चाहे, तो उसे खिलाओ।"

[कन्ज़ुल उम्माल : २८१३७, अन इब्ने अब्बास ؓ]

फ़ायदा : जो ग़िज़ा चाहत और तबीअत के तक़ाज़े से खाई जाती है, वह बदन में जल्द असर करती है, लिहाज़ा मरीज़ किसी चीज़ के खाने का तक़ाज़ा करे, तो उसे खिलाना चाहिये। हाँ अगर ग़िज़ा ऐसी है के जिस से मर्ज़ बढ़ने का क़वी इमकान है, तो ज़रूर परहेज़ करना चाहिये।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो आदमी अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता हो, उसे अपने मेहमान का इकराम करना चाहिये, एक दिन व रात की ख़िदमत उस का जाइज़ हक़ है और उस की दावत व मेहमान नवाज़ी तीन दिन है, उस के बाद की मेज़बानी उस के लिये सदक़ा है और मेहमान के लिये ज़ियादा दिन ठहर कर मेज़बान को तंगी में मुब्तला करना जाइज़ नहीं है।"

[बुख़ारी : ६१३५, अन अबी शुरैह कअबी ؓ]

नंबर १ : इस्लामी तारीख — रजीअ् और बीरे मऊना का अलमनाक हादसा

जंगे उहुद के बाद मुश्रिकीन ने धोके से मुसलमानों को कत्ल करने की साजिश शुरू कर दी, माहे सफर सन ४ हिजरी में क़बील-ए-अजल व कारा के लोग मदीना आए और हुजूर ﷺ से दरख्वास्त की के हम में से कुछ लोग मुसलमान हो गए हैं, उन की तालीम व तरबियत के लिये अपना मुअल्लिम भेज दीजिये, आप ﷺ ने उन की फर्माइश पर दस मुअल्लिमों को रवाना फ़र्माया, जिन के अमीर हजरत मरसद ؓ थे, मकामे रजीअ् में पहुँच कर उन जालिमों ने आठ सहाबा को शहीद कर दिया, और हजरत खुबैब और जैद ؓ को कुरैशे मक्का के हाथ बेच दिया। जिन्होंने दोनों को सूली दे कर शहीद कर दिया। उसी महीने में इस से बड़ा बीरे मऊना का दिल खराश वाकिआ पेश आया, अबू बरा, आमिर बिन मालिक ने आकर हुजूर ﷺ से फर्माइश की के अहले नजद को इस्लाम की दावत देने और दीन सिखाने के लिये अपने सहाबा को रवाना फ़र्मा दें, उस की तरफ से हिफाजत के वादे पर आप ﷺ ने ७० बड़े बड़े कुर्रा सहाबा को रवाना फर्मा दिया, जिन के अमीर मुन्जिर बिन अम्र थे, जब यह दावती वफ़्द बीरे मऊना पहुँचा तो इस धोके बाज ने क़बील-ए-रिअ्ल व जकवान वगैरा के लोगों को साथ ले कर उन पर हमला कर दिया और कअब बिन ज़ैद के अलावा तमाम कुर्रा सहाबा को शहीद कर डाला, इस अलमनाक हादसे से हुजूर ﷺ को सख्त सदमा पहुँचा और एक महीने तक फज्र नमाज में कुनूते नाजिला पढ़ी।

नंबर २ : अल्लाह की कुदरत — बदन की हड्डी कुदरत की निशानी

उस कादिरे मुतलक की कारीगरी को देखिये ! उस ने एक क़तरे से इन्सानी जिस्म में क्या क्या कारीगरी की है, उस में अल्लाह तआला ने मुख्तलिफ क़िस्म की हड्डियाँ पैदा कीं, और उन हड्डियों को सुतून और पीलर नुमा बना कर पूरे जिस्मे इन्सानी को उन पर खड़ा कर दिया, उन हड्डियों की शक्ल व सूरत को देखिये ! बाज़ हड्डियाँ टेढ़ी हैं, बाज़ लम्बी हैं, कुछ गोल हैं, कुछ सीधी हैं, बाज़ चौड़ी हैं, बाज़ पतली हैं, कुछ हलकी हैं, कुछ भारी हैं, कुछ ठोस हैं, इस तरह की मुख्तलिफ शक्लों की छोटी बड़ी तकरीबन २४८ हड्डियाँ हैं। सोचो तो सही एक क़तरे से इतना खूबसूरत जिस्म बनाने वाला कौन है ?

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — तक़दीर पर ईमान लाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "हर चीज तक़दीर से है, यहाँ तक के आदमी का नाकारा और ना क़ाबिल और क़ाबिल व होशियार होना (भी तक़दीर ही से है)।"

[मुस्लिम : ६७५१, अन अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ]

फायदा : तक़दीर कहते हैं के दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है, अच्छा हो या बुरा वह सब अल्लाह तआला के हुक्म और उस की मशिय्यत से है, हमारे ऊपर उस का यक़ीन रखना और उस पर ईमान लाना फर्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	घर वालों से नेक बरताव करना

हज़रत आयशा ﷺ फर्माती हैं के आप ﷺ ने ग़ज़वे के अलावा कभी भी किसी को अपने हाथ से नहीं मारा और न कभी किसी ख़ादिम को मारा और न ही कभी किसी औरत को मारा। [मुस्लिम : ६०५०]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह के रास्ते में रोज़ा रखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने अल्लाह के रास्ते में एक रोज़ा रखा, तो अल्लाह तआला उस के और जहन्नम के दर्मियान आसमान व ज़मीन के फासले के बराबर ख़न्दक़ क़ायम कर देगा।"

[तिर्मिज़ी : १६२४, अन अबी उमामा ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	बोहतान की सज़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने किसी मोमिन के बारे में ऐसी बात कही जो उस में नहीं है, तो अल्लाह तआला उस को दोज़ख़ियों के पीप में डाल देगा, यहाँ तक के उस की सज़ा पा कर उस से निकल जाए।" [अबू दाऊद : ३५९७, अन इब्ने उमर ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	हलाल रोज़ी कमाओ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "रोज़ी को दूर न समझो, क्योंकि कोई आदमी उस वक़्त तक नहीं मर सकता जब तक के जो रोज़ी उस के मुक़द्दर में लिख दी गई है, वह उस को न मिल जाए। लिहाज़ा रोज़ी हासिल करने में बेहतर तरीक़ा इख़्तियार करो, हलाल रोज़ी कमाओ और हराम को छोड़ दो।"

[मुस्तदरक हाकिम : २१३४, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत के दिन आमाल का बदला दिया जाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "हर जान्दार को मौत का मज़ा चखना है और तुम को क़यामत के दिन आमाल का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा, फिर जो शख़्स जहन्नम की आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल कर दिया गया, तो वह कामयाब हो गया।" [सूर-ए-आले इमरान : १८५]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मुफीद तरीन इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मुझे जिब्राईल ﷺ ने यह बात बताई के हजामत (पछना लगाना) सब से ज़ियादा नफा बख़्श इलाज है।" [कन्ज़ुल उम्माल : २८१३८, अन अबी हुरैरा ﷺ]

फायदा : हजामत से फासिद ख़ून निकल जाता है जिस की वजह से बदन का दर्द और बहुत सारी बीमारियाँ दूर हो जाती हैं।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह फर्माता है : "अगर तुम मुन्किर होगे, तो यक़ीन जानो के अल्लाह तआला तुम से बेनियाज़ है और अपने बन्दों के लिये कुफ्र को पसन्द नहीं करता और अगर तुम शुक्र करोगे, तो तुम्हारे इस शुक्र को पसन्द करेगा।" [सूर-ए-ज़ुमर : ७]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२० जुमादल ऊला

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — बनू नज़ीर की जिला वतनी

यहूदी क़बाइल अमन मुआहदे में शरीक होने के बावजूद आए दिन बग़ावत व सरकशी करते रहते थे, बीरे मऊना के दर्दनाक हादसे के बाद बनू नज़ीर ज़ुल्म व सितम में बढ़ते जा रहे थे, वह मुआहदे के बावजूद मुश्रिकीने मक्का से चुपके चुपके हुज़ूर ﷺ के क़त्ल की नापाक साज़िश करने में मसरूफ़ रहते, एक मर्तबा रबीउल अव्वल सन ४ हिजरी में रसूलुल्लाह ﷺ अमन के मुस्तहिक़ दो मक़तूल मुश्रिकों की दियत (ख़ून बहा) तै करने के लिये बनू नज़ीर के पास गए, उन्होंने ज़ाहिरी तौर पर आप ﷺ के साथ तआवुन का वादा किया, मगर क़त्ल की साज़िश कर के आप ﷺ को एक दीवार के नीचे बैठा दिया और एक यहूदी शख़्स को ऊपर से पत्थर गिराने पर मामूर कर दिया, अल्लाह तआला ने यहूद की इस नापाक साज़िश से अपने नबी को आगाह कर दिया। हुज़ूर ﷺ वहाँ से उठ कर वापस आगए और लश्कर के साथ किले का मुहासरा कर लिया। उधर बनू नज़ीर मुश्रिकों की तरफ से मदद न मिलने की वजह से ख़ौफ ज़दा हो गए और मुक़ाबले की ताब न ला कर मदीना छोड़ने पर रज़ामन्द हो गए और हुक्म के मुताबिक़ हथियार छोड़ कर ६०० ऊँटों पर सामान लाद कर ख़ैबर में जा बसे।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हुज़ूर ﷺ के थूक की बरकत

रसूलुल्लाह ﷺ की बांदी हज़रत रज़ीना रज़ि. बयान करती है के आप ﷺ अपने और हज़रत फातिमा रज़ि. के दूध पीते पच्चों के मुँह में अपना मुबारक थूक डाल देते और अज़वाजे मुतहहरात से फर्माते : रात तक उन को दूध मत पिलाना। (चुनान्चे वह बच्चे रात तक बेग़ैर दूध पिये ही रहते थे)।

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : २४८५]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — जमात के इरादे से मस्जिद जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करे फिर मस्जिद में नमाज़ के लिये जाए और वहाँ पहुँच कर मालूम हो के जमात हो चुकी, फिर भी उस को जमात की नमाज़ का सवाब होगा, और इस सवाब की वजह से उन लोगों के सवाब में कुछ कमी नहीं होगी, जिन्होंने जमात से नमाज़ पढ़ी है।"

[अबू दाऊद : ५६४, अन अबी हुरैरा रज़ि.]

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — नफ़्स के शर से पनाह माँगना

रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत हुसैन रज़ि. को यह दुआ सिखाई :

((اَللّٰهُمَّ اَلْهِمْنِيْ رُشْدِيْ وَأَعِذْنِيْ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! तू मेरे दिल में मेरी भलाई डाल दे और मेरे नफ़्स की बुराई से मुझ को बचा ले।

[तिर्मिज़ी : ३४८३, अन इमरान बिन हुसैन ﷺ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह के लिये सूर-ए-यासीन पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने अल्लाह की रज़ा के लिये रात में सूर-ए-यासीन को पढ़ा उस की मग़फिरत कर दी जाती है।"

[सही इब्ने हिब्बान : २६२६, अन जुन्दुब ﷺ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	ज़ुल्म व ज़ियादती करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो अपने ऊपर ज़ुल्म किये जाने के बाद बराबर बदला ले ले तो ऐसे लोगों पर कोई इलज़ाम नहीं, इलज़ाम तो सिर्फ उन लोगों पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं, नाहक दुनिया में सरकशी करते फिरते हैं। यही वह लोग हैं जिन के लिये दर्दनाक अज़ाब है।"

[सूर-ए-शूरा : ४१ ता ४२]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	दुनिया में खाना पीना चंद रोज़ा है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम (दुनिया में) थोड़े दिन खालो और (उस से) फायदा उठा लो, बेशक तुम मुजरिम हो (यानी यह दुनियवी ज़िन्दगी चंद रोज़ की है, अगर इस के पीछे पड़ कर अपनी आख़िरत की ज़िन्दगी को भुला दोगे तो क़यामत के दिन तुम मुजरिम बन कर उठोगे।)

[सूर-ए-मुरसलात : ४६]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में	जहन्नम की हालत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "क़यामत के दिन जहन्नम को सत्तर हज़ार लगामों के साथ लाया जाएगा और हर लगाम के साथ सत्तर हज़ार फरिश्ते होंगे जो उस को खींच रहे होंगे।"

[मुस्लिम : ७१६४, अन इब्ने मसऊद ﷺ]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	हर मर्ज़ का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "हलाल कमाई से शहद ख़रीद कर बारिश के पानी में मिला कर पिया जाए, तो हर बीमारी से शिफा होगी।"

[कन्ज़ुल उम्माल : २८१७२, अन अनस ﷺ]

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम जहाँ कहीं भी रहो अल्लाह से डरते रहो, और बुराई को मिटाने के लिये भलाई कर लिया करो और लोगों से अच्छे अख़्लाक़ से पेश आया करो।"

[तिर्मिज़ी : १९८७, अन अबी ज़र ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२१) जुमादल ऊला

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — ग़ज़्व-ए-ज़ातुर रिक़ाअ

क़ुरैश और यहूद ने मदीना मुनव्वरा और मक्का मुकर्रमा के दर्मियान तमाम क़बाइल को मुसलमानों के ख़िलाफ दिल खोल कर भड़काया, जिस के नतीजे में बहुत से क़बाइल मुसलमानों पर हमला करने की तय्यारी में मसरूफ हो गए। जुमादल ऊला सन ४ हिजरी में क़बील-ए-गितफान की शाख़ बनू महारिब और बनू सालबा ने मदीना पर हमला करने के लिये एक मुशतरक लश्कर तय्यार किया, जब रसूलुल्लाह ﷺ को इस की इत्तेला मिली तो चार सौ जांनिसार सहाबा का लश्कर ले कर मुक़ाबले के लिये निकले, इस ग़ज़्वे में सहाब-ए-किराम के पास सवारियाँ बहुत कम थीं, पैदल चलने से ज़ख़्मी होने के सबब पैरों पर पट्टियाँ बाँधनी पड़ी, इस लिये उस का नाम ज़ातुर रिक़ाअ (पट्टियों वाला) ग़ज़वा पड़ गया। हुज़ूर ﷺ ने एक पहाड़ के दामन में क़याम फ़र्माया, दुश्मन की फौज मुसलमानों की कुव्वत व ताक़त को देख कर भाग गई। आप ﷺ और सहाब-ए-किराम बग़ैर लड़े माले ग़नीमत के साथ मदीना मुनव्वरा वापस आगए।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — इन्सान में निसयान का माद्दा

अल्लाह तआला ने इन्सान में जहाँ कुव्वते हाफ़ज़ा रखी है, वहीं निसयान और भूलने का माद्दा भी रखा है। यह भूल और निसयान भी अल्लाह की बहुत बड़ी नेअ्मत है और अल्लाह की बड़ी हिकमत उस में पोशीदा है, अगर इन्सान में भूलने का माद्दा न होता तो वह हर वक़्त रंज व ग़म और टेंशन में रहता। बड़े बड़े हवादिस से वक़्ती तौर पर बड़ा परेशान होता है फिर अल्लाह तआला भुला देते हैं तो उस को सुकून मिलता है। सोचिये तो सही वह कितनी बड़ी क़ुदरत वाला और हिकमतों वाला है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सच्ची गवाही देना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो! इन्साफ पर क़ायम रहते हुए अल्लाह के लिये गवाही दो, चाहे वह तुम्हारी ज़ात, वालिदैन और रिश्तेदारों के ख़िलाफ ही (क्यों न) हो।"

[सूर-ए-निसा : १३६]

फायदा : सच्ची गवाही देना और झूटी गवाही देने से बचना ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — दाहनी तरफ से तक़सीम करना

हज़रत अनस रज़ि. बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में पानी मिला हुआ दूध पेश किया

गया। आप ﷺ के दाएँ तरफ एक देहाती था और बाएँ तरफ हज़रत अबू बक्र رضی اللہ عنہ थे। आप ﷺ ने उस दूध को पी कर बचा हुआ, उस देहाती को पहले देते हुए फर्माया : दाहनी तरफ वाला ज़ियादा हक़दार है।

[बुख़ारी : ५६१९]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह की तस्बीह बयान करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स ((سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ)) पढ़ता है, तो इन में से हर एक कलिमे के बदले उस के लिये जन्नत में एक दरख़्त लगा दिया जाता है।"

[तबरानी औसत : ८७१०, अन इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	कुर्आन शरीफ को भुला देना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस शख़्स ने कुर्आन शरीफ हिफ्ज़ किया, फिर उसे ग़फलत की वजह से भुला दिया तो वह क़यामत के दिन अल्लाह तआला से इस हाल में मुलाक़ात करेगा के उस का हाथ या कोई उज़्व कटा हुआ होगा।" [अबू दाऊद : १४७४, अन सअद बिन उबादा رضی اللہ عنہ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया का तज़केरा न करो

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अपने दिलों को दुनिया की याद में मशगूल न करो।"

[कन्ज़ुल उम्माल : ६१५०, अन मुहम्मद बिन नज़्र हारसी رحمہ اللہ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले जन्नत का इनाम

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "बेशक अल्लाह से डरने वालों के लिये कामयाबी है (उन के लिये) बाग़ात, अंगूर, हम उम्र नौजवान औरतें होंगी और छलकते हुए शराब के जाम होंगे।"

[सूर-ए-नबा : ३१ ता ३४]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	सदक़े से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "सदक़े से अपने मरीज़ों का इलाज किया करो, क्योंकि सदक़ा बीमारियों और पेश आने वाली मुसीबतों को दूर करता है।" [कन्ज़ुल उम्माल : २८१७८, अन इब्ने उमर رضی اللہ عنہ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम अपने रब की तरफ मुतवज्जेह हो जाओ (और गुनाहों से तौबा कर लो) उस की फ़र्मांबरदारी और उस का हुक्म मानो, इस से पहले के (तुम्हारे गुनाहों का वबाल) तुम्हें आ पकड़े और फिर कोई तुम्हारी मदद न कर सके।" [सूर-ए-ज़ुमर : ५४]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

२२ जुमादल ऊला

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — ग़ज़्व-ए-बद्रे सानी

अबू सुफियान ने जंगे उहुद से वापसी के वक़्त एलान किया था के अगले साल हमारा तुम्हारा मुक़ाबला बद्र में होगा, हस्बे वादा रसूलुल्लाह ﷺ ने अब्दुल्लाह बिन रवाहा को मदीने का अमीर बनाया और शाबान सन ४ हिजरी में पन्द्रह सौ सहाबा को ले कर बद्र के लिये रवाना हुए, मुसलमानों की पेश क़दमी की ख़बर सुन कर अबू सुफियान न चाहते हुए भी दो हज़ार का लश्कर ले कर मजबूरन मक्का से रवाना हुआ, जब मक़ामे "मर्रुज़्ज़हरान" पहुँच कर मुसलमानों के लश्कर की तादाद मालूम हुई, तो उसे मुक़ाबला करने की हिम्मत न हुई और इस बहाने से वापस लौट गया के इस साल मक्का में क़हत साली है, वह ज़रूरत के मुताबिक़ जंगी हथियार और सामाने रसद अपने साथ नहीं ला सके। रसूलुल्लाह ﷺ आठ रोज़ तक बद्र में उन का इन्तेज़ार करते रहे, इस दौरान सहाबा बद्र की मंडी में तिजारत कर के नफा उठाते रहे और मुक़र्ररा वक़्त गुज़रने पर आफियत के साथ मदीना वापस आगए।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हज़रत हुसैन रज़ि. के बारे में पेशीन गोई

एक दिन उम्मे फज़ल रज़ि. हज़रत हुसैन रज़ि. को ले कर हुज़ूर ﷺ के पास आईं और उन को आप ﷺ की गोद में दे दिया (उम्मे फ़ज़ल कहती हैं के) मैं ने देखा के हुज़ूर ﷺ की आँखों से आंसू टपक रहे हैं, मैं ने पूछा : या रसूलल्लाह ! आप को क्या हुआ ? तो हुज़ूर ﷺ ने फर्माया : मुझे हज़रत जिब्रईल अ. ने ख़बर दी के मेरे इस बेटे को मेरी उम्मत शहीद कर देगी। मैं ने पूछा इस बेटे को ! तो हुज़ूर ﷺ ने फर्माया : हाँ। (चुनान्चे हज़रत हुसैन रज़ि. को इराक़ के बद नसीब लोगों ने मक़ामे करबला में शहीद कर दिया)

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : २८०५]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — वसिय्यत पूरी करना

कुर्आन में अल्लाह तआला ने चंद वारिसों के हिस्सों का ज़िक्र करने के बाद फर्माया : (यह सब वरसा के हिस्सों की तक़सीम) मय्यित की वसिय्यत की हुई चीज़ों को पूरा करने और क़र्ज़ अदा करने के बाद की जाएगी। [सूर-ए-निसा : १२]

फायदा : मय्यित ने अगर किसी के हक़ में कुछ वसिय्यत की हो, तो उन के क़र्ज़ को अदा करने के बाद और वारिसों को उन का हिस्सा देने से पहले मय्यित के छोड़े हुए माल के तिहाई हिस्से से वसिय्यत पूरी करना वाजिब है।

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — बारिश के लिये दुआ

हज़रत अनस रज़ि. फर्माते हैं : रसूलुल्लाह ﷺ ख़ुत्बा दे रहे थे के लोगों ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! बारिश बन्द है, जानवर मर रहे हैं, अल्लाह से बारिश की दुआ फ़र्माएं, तो आप ﷺ ने यह दुआ फ़र्माई :

((اَللّٰهُمَّ اسْقِنَا اَللّٰهُمَّ اسْقِنَا اَللّٰهُمَّ اسْقِنَا))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमें सैराब फ़र्मा । ऐ अल्लाह हमें सैराब फ़र्मा । ऐ अल्लाह हमे सैराब फ़र्मा ।

[बुख़ारी : १०१३, अन अनस ﷺ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	माल ख़र्च करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "ज़िन्दगी में एक दिरहम ख़र्च करना मौत के वक़्त सौ दिरहम से अफ़ज़ल है ।"

[अबू दाऊद : २८६६, अन अबी सईद ख़ुदरी ﷺ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	अल्लाह के हुक्म से ग़फलत का वबाल

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो शख़्स रहमान (यानी अल्लाह तआला) की नसीहत से आँखें बन्द कर ले, तो हम उस पर शैतान मुसल्लत कर देते हैं, जो (हर वक़्त) उस के साथ रहता है और वह शयातीन ऐसे लोगों को सीधे रास्ते से रोकते रहते हैं और वह यह समझते हैं के हम सीधे रास्ते पर हैं ।"

[सूर-ए-ज़ुख़रुफ : ३६ ता ३७]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	दुनिया का धोका

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ इन्सान ! तुझे अपने रब की तरफ से किस चीज़ ने धोके में डाल रखा है (के तू दुनिया में पड़ कर उसे भुलाए रखता है हालाँकि) उस ने तुझे पैदा किया (और) फिर तेरे तमाम आज़ा एक दम ठीक अन्दाज़ से बनाए । (फिर भी तू उस से ग़ाफिल है)"

[सूर-ए-इन्फ़ितार : ६ ता ७]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में	क़यामत के दिन अमीर व ग़रीब की तमन्ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "क़यामत के दिन हर मालदार और ग़रीब आदमी यह तमन्ना करेगा के काश उस को दुनिया में सिर्फ गुज़ारा करने की रोज़ी दी जाती ।"

[इब्ने माजा : ४१४०, अन अनस ﷺ]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	झाड़ फूँक से इलाज की इजाज़त

हज़रत औफ बिन मालिक ﷺ फर्माते हैं के हम लोग ज़मान-ए-जाहिलियत में झाड़ फूँक करते थे, चुनान्चे हम ने दरयाफ्त किया : या रसूलल्लाह ! आप इस के बारे में क्या फर्माते हैं ? तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम अपना मन्तर सुनाओ, (और सुनो) जिस झाड़ फूँक में शिरकिया कलिमात न हों उस में कोई हरज नहीं ।"

[अबू दाऊद : ३८८६]

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह के ज़िक्र के अलावा (बिला ज़रूरत) ज़ियादा बात चीत न किया करो, क्योंकि (बिला ज़रूरत) ज़ियादा बात करने से दिल सख़्त हो जाता है और अल्लाह तआला की रहमत से सब से ज़ियादा दूर वह आदमी होगा जिस का दिल सख़्त हो ।"

[तिर्मिज़ी : २४११, अन इब्ने उमर ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२३ जुमादल ऊला

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — ग़ज़व-ए-दौमतुल जन्दल

२५, रबीउल अव्वल सन ५ हिजरी में रसूलुल्लाह ﷺ को इत्तेला मिली के शाम की सरहद से क़रीब दौमतुल जन्दल के मुश्रिक क़बाइल ने क़ाफ़लों पर डाके डाल रखे हैं और गुज़रने वालों से सामान लूट लेते हैं, नीज़ यह भी मालूम हुआ के उन्होंने मदीना पर हमला करने के लिये एक बड़ी फौज जमा कर ली है, इन ख़बरों के पेशे नज़र रसूलुल्लाह ﷺ ने सिबाअ बिन उरफ़ुता गिफारी رضی اللہ عنہ को मदीने का अमीर बनाया और सख़्त गरमी, रेगिस्तानी सफर और नासाज़गार हालात के बावजूद एक हज़ार सहाबा का लश्कर ले कर उन के मुक़ाबले के लिये रवाना हो गए, मुसलमान शदीद गरमी की वजह से रात में सफर और दिन में आराम करते थे, दस मंज़िल तै करने के बाद सहाबा ने दौमतुल जन्दल पहुँच कर क़याम फ़र्माया, तो कुफ्फार पर आप ﷺ का रोब तारी हो गया और घबराहट के आलम में दौमतुल जन्दल के गवरनर के साथ भाग खड़े हुए, आप ﷺ सहाब-ए-किराम के हमराह जंग किये बग़ैर मदीना मुनव्वरा वापस तशरीफ ले आए।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — च्यूंटी की दूर अन्देशी

अल्लाह तआला की छोटी सी मख़्लूक़ च्यूंटी को देखो, क़ुदरत ने उस को अपनी गिज़ा जमा करने की कैसी हिक्मत सिखाई है, अपनी गिज़ा जमा करने में च्यूंटियाँ आपस में एक दूसरे का किस तरह तआवुन करती हैं, और सब आपस में मिल कर सख़्त गरमी और सख़्त सरदी का स्टाक जमा कर लेती हैं ताके इत्मेनान व सुकून से अपने सूराख़ों में बैठ कर खाया करें और बाहर न निकलना पड़े यह कैसी दूर अन्देशी है, यह समझ च्यूंटी को किस ने दी ?

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — बीमार की नमाज़

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "नमाज़ खड़े हो कर अदा करो; अगर ताक़त न हो तो बैठ कर अदा करो, और अगर उस पर भी क़ुदरत न हो तो पहलू के बल लेट कर अदा करो।"

[बुख़ारी : १११७, अन इमरान बिन हुसैन رضی اللہ عنہ]

फायदा : अगर कोई बीमार हो और खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने पर क़ादिर न हो तो रुकू व सज्दा के साथ बैठ कर पढ़े, अगर रुकू व सज्दे पर भी क़ादिर न हो, तो बैठ कर इशारे से पढ़े और अगर बैठ कर पढ़ने की ताक़त न रखता हो तो लेट कर पढ़े।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — हर नमाज़ के लिये वुज़ू करना

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ बयान करते हैं के आप ﷺ की आदते शरीफा थी, के बा वुज़ू होने के बावजूद हर नमाज़ के लिये ताज़ा वुज़ू फ़र्माते और हम लोग कई नमाज़ें एक ही वुज़ू से पढ़ते थे।

[अबू दाऊद : १७१, अन अनस رضی اللہ عنہ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	गुनाहों को माफ कराने की तस्बीह

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "ज़मीन पर जो शख़्स भी

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ

पढ़ता है, तो उस के तमाम गुनाह माफ हो जाते हैं ख़्वाह समन्दर के झाग के बराबर हों।"

[तिर्मिज़ी : ३४६०, अन अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	दोज़ख़ के मुस्तहिक़

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "क्या मैं तुम्हें जहन्नमी लोगों के बारे में न बताऊँ ? हर सख़्त मिज़ाज, बद अख़्लाक़ और तकब्बुर करने वाला (जहन्नमी है)।" [बुख़ारी : ६०७१, अन हारसा बिन वहब ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया में चैन व सुकून नहीं है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "ख़बरदार ! दुनिया के बारे में जो कुछ मैं जानता हूँ, अगर तुम भी जानने लगो, तो तुम्हें कभी दुनिया में चैन नसीब न हो।" [मुस्तदरक हाकिम : ६६४०, अन ज़ुबैर ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत के दिन लोगों की हालत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जिस दिन तमाम जान्दार और फरिश्ते सफ बाँध कर खड़े होंगे उस रोज़ कोई कलाम न कर सकेगा, अलबत्ता जिस को ख़ुदाए रहमान (यानी अल्लाह तआला बात करने की) इजाज़त दे दे और वह बात भी ठीक ही कहेगा उस दिन का आना यक़ीनी है, जो शख़्स चाहे अपने रब के पास ठिकाना बनाले।" [सूर-ए-नबा : ३८ ता ३९]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	जोड़ों के दर्द का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अनजीर खाओ (फिर उस की अहेमियत बताते हुए इर्शाद फ़र्माया) अगर मैं कहता के जन्नत से कोई फल उतरा है तो यही है, क्योंकि जन्नत के फलों में गुठली नहीं है (और अनजीर का यही हाल है) लिहाज़ा इसे खाओ, इस लिये के यह बवासीर को ख़त्म करता है और जोड़ों के दर्द में मुफीद है।" [कन्ज़ुल उम्माल : २८२७६, अन अबी ज़र ﷺ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम्हारे रब ने फर्माया है के मुझ से दुआ माँगो मैं तुम्हारी दुआ क़बूल करूँगा, बिला शुबा जो लोग मेरी इबादत करने से एराज़ करते हैं, वह अन्क़रीब ज़लील हो कर जहन्नम में दाख़िल होंगे।" [सूर-ए-मोमिन : ६०]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

२४ जुमादल ऊला

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ | ग़ज़व-ए-ख़न्दक़

रसूलुल्लाह ﷺ ने यहूद की बद अहदी और साज़िशों की वजह से मदीना से निकल जाने का हुक्म दिया, तो वह ख़ैबर और वादियुलकुरा में जा बसे, मगर वहाँ पहुँच कर भी उन की अदावत और दुश्मनी की आग ठंडी नहीं हुई, उन्होंने मुसलमानों को सफ्ह-ए-हस्ती से मिटाने के लिये बनू नज़ीर के २० सरदारों का एक वफ़्द कुरैशे मक्का के पास भेजा और उन्हें रसूलुल्लाह ﷺ से मुक़ाबले और जंग के लिये आमादा किया, किनाना बिन रबी ने बनू गितफान को ख़ैबर की ज़मीन व बागात की आधी पैदावार देने का वादा कर के मुसलमानों के ख़िलाफ जंग करने पर तय्यार किया, इस तरह अबू सुफियान कुरैशे मक्का और बनू सुलैम, बनू साद वग़ैरा क़बाइल के इत्तेहाद से दस हज़ार का लश्करे जर्रार ले कर मुसलमानों को ख़त्म करने के इरादे से मदीना की तरफ रवाना हो गया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा | क़ब्र के बारे में ख़बर देना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र رضی اللہ عنہ फर्माते हैं के जब हम लोग हुज़ूर ﷺ के साथ ताइफ जा रहे थे तो रास्ते में हमारा गुज़र एक क़ब्र के पास से हुआ, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : यह अबू रिग़ाल की क़ब्र है जो क़ौमे समूद का एक फर्द था, मक्का की ज़मीन उस को अपने से दूर कर रही थी तो वह वहाँ से निकल गया जब वह यहाँ पहुँचा तो उस को वही अज़ाब आ पहुँचा जो उस की क़ौम पर आया था और फिर यहीं दफ्न कर दिया गया और उस की निशानी यह है के उस के साथ उस की क़ब्र में सोने की एक टहनी भी रखी गई थी अगर तुम इस क़ब्र को खोदोगे तो वह सोने की टहनी ज़रूर मिलेगी, तो लोग क़ब्र की तरफ लपके और क़ब्र खोदी, देखा तो उस के साथ वह टहनी रखी हुई थी।

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : २५५५, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र رضی اللہ عنہ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | वारिसीन के दर्मियान वरासत तक़सीम करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "माल (वरासत) को किताबुल्लाह के मुताबिक हक़ वालों के दर्मियान तक़सीम करो।"

[मुस्लिम : ४१४३, अन इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ]

फायदा : अगर किसी का इन्तेक़ाल हो जाए और उस ने माल छोड़ा हो, तो उस को तमाम हक़ वालों के दर्मियान तक़सीम करना वाजिब है, बग़ैर किसी शरई वजह के किसी वारिस को महरूम करना या अल्लाह तआला के बनाए हुए हिस्से से कम देना जाइज़ नहीं है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | सैलाबी बारिश रोकने की दुआ

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने बारिश रोकने के लिये यह दुआ की :

((اَللّٰهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلَا عَلَيْنَا))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे अतराफ में बारिश बरसा, हम पर बारिश न बरसा।

[बुख़ारी : १०१३, अन अनस ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	मेहमान का इकराम करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब कभी भी कोई मुसलमान अपने मुसलमान भाई से मुलाक़ात के लिये जाए और मेज़बान मेहमान का एज़ाज़ व इकराम करने की ग़र्ज़ से मेहमान को तकिया पेश करे तो अल्लाह तआला उस मेज़बान की मग़फिरत फ़र्मा देंगे।" [तबरानी सग़ीर : ७६२, अन सलमान ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	हक़ को झुटलाने की सज़ा

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "हम ने उन (क़ौमे आद) के लोगों को उन चीज़ों की कुदरत दी थी के जिन की कुदरत तुम को नहीं दी और हम ने उन को कान और आँखें और दिल अता किए थे, चूँकि वह अल्लाह की आयतों का इनकार करते थे, इस लिये न उन के कान उन के कुछ काम आए, न उन की आँखें और न उन के दिल; और जिस अज़ाब का वह मज़ाक़ उड़ाया करते थे उसी ने उन को आघेरा।" [सूर-ए-अहक़ाफ : २६]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	माल व औलाद की मुहब्बत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "(माल व औलाद की) कसरत और (दुनिया के सामान पर) फ़ख़्र ने तुम को (अल्लाह की याद से) ग़ाफिल कर दिया है, यहाँ तक के तुम क़ब्रस्तान जा पहुँचते हो, हरगिज़ ऐसा न करो, तुम को बहुत जल्द मालूम हो जाएगा।" [सूर-ए-तकासुर : १ ता ३]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़ब्र में नमाज़ की तमन्ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब मय्यित को क़ब्र में रख दिया जाता है, तो उस को सूरज गुरूब होता हुआ दिखाई देता है, तो वह बैठ कर आँखें मलने लगता है और कहता है, मुझे नमाज़ पढ़ने दो।"

[इब्ने माजा : ४२७२, अन जाबिर ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	दर्दे सर से हिफ़ाज़ज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "हम्माम (गुस्ल ख़ाना) से निकलने के बाद क़दमों को ठन्डे पानी से धोना दर्दे सर से हिफाज़त का ज़रिया है।" [कन्ज़ुल उम्माल : २८२९६, अन अबी हुरैरा ﷺ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "हमेशा सच बोलो क्योंकि सच नेकी का रास्ता बताता है और सच और नेकी जन्नत में दाख़िल करने वाले हैं। तुम झूट से बचो क्योंकि वह गुनाह का रास्ता बताता है और झूट और गुनाह जहन्नम में दाख़िल करने वाले हैं।"

[तबरानी कबीर : १६२५९, अन मुआविया बिन अबी सुफियान ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२५ जुमादल ऊला

नंबर १: इस्लामी तारीख़ — मदीना की हिफाज़त की तदबीर

शव्वाल सन ५ हिजरी में रसूलुल्लाह ﷺ को इत्तेला मिली के कुरैश और यहूद मुत्तहिद हो कर मदीना पर हमला करना चाहते हैं और मुसलमानों के वुजूद को हमेशा के लिये मिटाना चाहते हैं, आप ﷺ ने सहाब-ए-किराम رضی اللہ عنہم से मशवरा तलब किया, तो उन्होंने मदीना में क़िला बंद हो कर दिफ़ाई जंग करने का इरादा ज़ाहिर किया, उस मौक़े पर सलमान फारसी رضی اللہ عنہ ने घुड़सवारों के हमलों से बचने के लिये ख़न्दक़ खोदने का मश्वरा दिया, हुज़ूर ﷺ को यह राए पसन्द आई और दुश्मन से हिफाज़त के लिये मदीने के शिमाली मैदान और खुले हिस्से में ख़न्दक़ खोदने का हुक्म दिया और बज़ाते ख़ुद निशान लगा कर हर दस सहाबा को खोदने के लिये दस दस गज़ ज़मीन तक़सीम फ़र्मा दी, सहाब-ए-किराम शब व रोज़ ख़न्दक़ की खुदाई में मसरूफ थे के उस दौरान एक सख़्त चटान आगई, आप ﷺ ने अल्लाह का नाम ले कर उस पर तीन कुदाल मारी, जिस से चटान रेज़ा रेज़ा हो गई, और आप ﷺ ने मुल्के शाम, ईरान और यमन की फतह की ख़ुशख़बरी सुनाई, गर्ज़ तीन हज़ार जाँनिसार सहाबा ने छे दिन में तक़रीबन तीन किलो मीटर लम्बी, पाँच गज़ चौड़ी और पाँच गज़ गहेरी ख़न्दक़ खोद कर तय्यार कर दी।

नंबर २: अल्लाह की कुदरत — मच्छर अल्लाह की छोटी सी मख़्लूक़

मच्छर की गिज़ा अल्लाह तआला ने ख़ून को बनाया है, इसी लिये वह सूंड को बदन में चुभो कर ख़ून चूसता है, उस को किस ने बताया के खाल और गोश्त के बीच में ख़ून है, यक़ीनन यह उस को मालूम है, अगर मालूम न होता तो इस तरह आकर न बैठता, फिर उस की हिम्मत व जुरअत देखो के कैसी ख़ामोशी के साथ बदन पर आकर बैठ जाता है, फिरा ज़रा सा शुबा हुआ तो उड़ जाता है, यह सारी सूझ भूझ उस को किस ने अता की है ? यक़ीनन अल्लाह तआला ने।

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — खड़े हो कर नमाज़ पढ़ना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "नमाज़ में अल्लाह के सामने आजिज़ बने हुए खड़े हुआ करो।" [सूर-ए-बक़रा : २३८]

फायदा : अगर कोई शख़्स खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने की ताक़त रखता हो, तो उस पर फर्ज़ और वाजिब नमाज़ को खड़े हो कर पढ़ना फर्ज़ है।

नंबर ४: एक सुन्नत के बारे में — इशा की नमाज़ में मस्नून क़िरत

रसूलुल्लाह ﷺ इशा की नमाज़ में ﴿وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا﴾ और इसी जैसी सूरतें पढ़ा करते थे।

[तिर्मिज़ी : ३०९, अन बुरैदा رضی اللہ عنہ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — सुबह व शाम को मस्जिद जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स सुबह को या शाम को मस्जिद की तरफ जाता है तो सुबह व शाम जब भी वह मस्जिद की तरफ जाता है, अल्लाह तआला उस के लिये जन्नत में मेहमान नवाज़ी का इन्तेज़ाम फर्माते हैं ।" [मुस्लिम : १५२४, अन अबी हुरैरा رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में — इज़ार लटकाने पर वईद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम से पहले एक आदमी तकब्बुर के सबब अपना इज़ार लटकाने की वजह से ज़मीन में धँसा दिया गया, चुनान्चे वह क़यामत तक ज़मीन में धँसता चला जाएगा ।"

[नसई : ५३२८, अन इब्ने उमर رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में — दुनिया ही को मक़सद बनाना

रसूलुल्लाह ﷺ फर्माया : "जिस का मक़सद दुनिया बन जाए, तो अल्लाह तआला उस के मामलात को बिखेर देता है और उस की गुरबत और मोहताजगी को उस की आँखों के सामने कर देता है (जिस से वह हमेशा डरता रहता है) और उस को दुनिया उतनी ही मिलती है जितना उस के मुक़द्दर में है, और जिस आदमी का मक़सद आख़िरत हो, तो अल्लाह तआला उस के कामों को समेट देते हैं और उस के दिल को गनी (यानी मुतमइन) कर देते हैं और दुनिया उस के पास ज़लील हो कर आती है ।"

[इब्ने माजा : ४१०५, अन ज़ैद बिन साबित رضي الله عنه]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में — क़यामत में मोमिन व काफिर की हालत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "उस दिन (क़यामत के दिन) बहुत से चेहरे रौशन, हंसते हुए ख़ुशियाँ मनाते होंगे और बहुत से चेहरों पर उस दिन गर्द व गुबार पड़ी होगी (और) उन पर ज़िल्लत व रुस्वाई छाई हुई होगी, यही लोग मुन्किर व बदकार होंगे ।" [सूर-ए-अबस : ३८ ता ४२]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज — इरकुन्नसा (Scitica) का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "इरकुन्नसा का इलाज अरबी बकरी (दुम्बे) की चक्ती है, जिसे पिघलाया जाए, फिर उस के तीन हिस्से किये जाएँ और रोज़ाना एक हिस्सा नहार मुंह पिया जाए ।"

[इब्ने माजा : ३४६३, अन अनस बिन मालिक رضي الله عنه]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो ! अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करो, अपने आमाल को बरबाद न करो ।" [सूर-ए-मुहम्मद : ३३]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२६) जुमादल ऊला

नंबर (१): इस्लामी तारीख — ख़न्दक़ खोदने में सहाबा की क़ुरबानी

सहाब-ए-किराम ﷺ ने सख़्त सरदी, बे सरो सामानी और फाक़ा कशी के बावजूद पूरी हिम्मत व इस्तेक़ामत के साथ ख़न्दक़ खोदने का काम अन्जाम दिया, हज़रत अबू तलहा ﷺ ने भूक की शिद्दत से अपना पेट खोल कर दिखाया जिस पर एक पत्थर बंधा हुआ था, यह देख कर रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने पेट से कपड़ा हटाया, तो सहाबा ने देखा उस पर दो पत्थर बंधे हुए थे, एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ ने सुबह सवेरे सख़्त सरदी और भूक प्यास की हालत में सहाबा को ख़न्दक़ खोदते देख कर यह दुआ दी:

((اَللّٰهُمَّ لَا عَيْشَ اِلَّا عَيْشُ الْآخِرَةِ --- فَاغْفِرِ الْاَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَةَ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! अस्ल ज़िन्दगी तो आख़िरत की ज़िन्दगी है, तू अन्सार व मुहाजिरीन की मग़फिरत फ़र्मा, यह सुन कर सहाबा जोशे मुहब्बत में कहने लगे نَحْنُ الَّذِيْنَ بَايَعُوْا مُحَمَّدًا عَلَى الْجِهَادِ مَا بَقِيْنَا اَبَدًا

तर्जमा : हम ने मरते दम तक मुहम्मद ﷺ के हाथ पर जिहाद की बैत की, जब सहाब-ए-किराम को दौराने ख़न्दक़ कोई रुकावट पेश आती तो आप ﷺ पानी में अपना लुआब डाल कर अल्लाह से दुआ फ़र्माते और पानी छिड़क देते, तो वह चटान रेत के तौदे की तरह नर्म हो जाती, ग़र्ज़ दुश्मन के आने से पहले अहले मदीना ने अपनी हिफाज़त का इन्तेज़ाम मुकम्मल कर लिया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — बकरियों के थनों में दूध भर आना

हज़रत अबू क़िरसाफा (जन्दरह बिन ख़ैशनह) फ़र्माते हैं के मेरे वालिद का इन्तेक़ाल हो चुका था, मैं मेरी वालिदा और मेरी ख़ाला की परवरिश में था, मैं जब बकरियाँ चराने जाता था, तो मेरी ख़ाला मुझ से कहती थीं के मुहम्मद के पास कभी मत जाना वह तुझे गुमराह कर देंगे लेकिन फिर भी मैं बकरियाँ ले कर घर से निकलता और बकरियों को चरने के लिये छोड़ देता और मैं रसूलुल्लाह ﷺ की मजलिस में चला जाता और उन की बातें सुनता, जब मैं शाम को बकरियाँ ले कर वापस घर जाता तो मेरी ख़ाला कहती के बकरियों के थन क्यों ख़ुश्क हैं? तो मैं कहता पता नहीं, दूसरे दिन भी यही कहा, तीसरे दिन भी मैं मामूल के मुताबिक़ बकरियों को छोड़ कर हुज़ूर ﷺ की मजलिस में गया और इस्लाम क़बूल कर लिया और साथ साथ मैं ने अपनी ख़ाला का और मेरी बकरियों का मामला हुज़ूर ﷺ से बयान किया, तो हुज़ूर ﷺ ने फ़र्माया : बकरियाँ ले आओ, मैं ले कर आया, तो हुज़ूर ﷺ ने सब बकरियों के पेट और थनों पर अपना मुबारक हाथ फेरा और बरकत की दुआ फ़र्माई, तो सारी बकरियाँ मोटी हो गई और थनों में दूध भर आया, जब शाम को मैं बकरियाँ ले कर घर आया तो ख़ाला ने पूछा : क्या बात है? तो मैं ने कहा : रोज़ाना जहाँ चराता था आज भी वहीं चराई लेकिन मैं अपना वाक़िआ बयान करता हूँ चुनान्चे जब मैं ने मेरी वालिदा और ख़ाला के सामने सारा वाक़िआ बयान किया तो वह ख़ुद कहने लगीं हमें भी मुहम्मद ﷺ के पास ले चलो, मैं उन को ले गया, तो दोनों ने इस्लाम क़बूल कर लिया और हुज़ूर ﷺ के हाथ पर बैत की।

[दलाइलुन्नुबुव्वह लिलअसफहानी : ३६७]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — अमानत का वापस करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "अल्लाह तआला तुम को हुक्म देता है के जिन की अमानतें हैं उन को लौटा दो।" [सूर-ए-निसा : ५८]

फायदा : अगर किसी ने किसी शख़्स के पास कोई चीज़ अमानत के तौर पर रखी हो, तो मुतालबे के वक़्त उस का अदा करना ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	नेक औलाद के लिये दुआ

नेक और सालेह औलाद के लिये इस दुआ का एहतेमाम करना चाहिये :

﴿رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصّٰلِحِيْنَ۝﴾

तर्जमा : ऐ मेरे रब ! मुझे नेक औलाद अता फ़र्मा । [सूर-ए-साफ्फात : १००]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	बाप के साथ अच्छा सुलूक करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "बाप के साथ हुस्ने सुलूक का आला दर्जा यह है के उस के चले जाने के बाद उस के तअल्लुक़ात रखने वालों के साथ हुस्ने सुलूक करे ।" [मुस्लिम : ६५१५, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	कुफ्र करने वालों का नाकाम होना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "बेशक जो लोग काफिर हो गए और उन्होंने (औरों को भी) अल्लाह के रास्ते से रोका और हिदायत ज़ाहिर होने के बाद अल्लाह के रसूल की मुखालफत की, तो यह लोग अल्लाह (के दीन) को ज़रा भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे, अल्लाह तआला उन के तमाम आमाल को बरबाद कर देगा ।" [सूर-ए-मुहम्मद : ३२]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	सिर्फ दुनिया की नेअ्मतें माँगना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख़्स (अपने आमाल के बदले में) सिर्फ दुनिया के इनाम की ख़्वाहिश रखता है (तो यह उस की नादानी है, उसे मालूम नहीं) के अल्लाह तआला के यहाँ दुनिया और आख़िरत दोनों का इनाम मौजूद है (लिहाज़ा अल्लाह से दुनिया और आखिरत दोनों की नेअ्मतें मांगो) अल्लाह तुम्हारी दुआओं को सुनता और तुम्हारी निय्यतों को देखता है ।" [सूर-ए-निसा : १३४]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	एक साथ जन्नत में जाने वाले

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मेरी उम्मत के सत्तर हज़ार या सात लाख अफराद एक साथ जन्नत में दाख़िल होंगे, उन के चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमक रहे होंगे ।" [बुख़ारी ३२४७, अन सहल बिन सअद ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मिस्वाक के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मिस्वाक ज़रूर किया करो, क्योंकि उस से अल्लाह की ख़ुशनूदी हासिल होती है और आँख की रौशनी तेज़ होती है ।" [तबरानी औसत : ७७०९, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम अल्लाह की इबादत इस तरह करो गोया तुम उस को देख रहे हो, तुम अपने आप को मुरदों में शुमार करो, फिर एक एक पत्थर और दरख़्त के पास अल्लाह को याद करो, और जब तुम कोई बुरा काम कर बैठो तो उस के साथ ही अच्छा काम कर लिया करो, पोशीदा गुनाह के बदले पोशीदा नेकी और ख़ुल्लम खुल्ला गुनाह के बदले ख़ुल्लम ख़ुल्ला नेकी कर लिया करो ।" [तबरानी कबीर : १६७८७, अन मआज़ बिन जबल ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२७ जुमादल ऊला

नंबर १: इस्लामी तारीख़ — ग़ज़्वा-ए-ख़न्दक़ में मुहासरे की शिद्दत

अबू सुफियान की क़यादत में दस हज़ार का मुत्तहिद्दा लश्कर मदीना पहुँचा, शहर की हिफाज़त के लिये खोदी हुई ख़न्दक़ को देख कर मुश्रिकीन हैरान रह गए, रसूलुल्लाह ﷺ ने तीन हज़ार सहाबा को उन के मुक़ाबले के लिये रवाना किया, दोनों लश्करों के दर्मियान ख़न्दक़ हाइल थी, अबू सुफियान मदीने का मुहासरा कर चुका था, बनू क़ुरैज़ा और मुसलमानों के दर्मियान मुआहदा था, इस लिये वह जंग में शरीक नहीं हुए, बनू नज़ीर के सरदार हुय बिन अख़्तब ने बड़ी जद्दो जहद और कोशिश के बाद बनू क़ुरैज़ा के सरदार कअब बिन असद को लालच दे कर मुसलमानों से बद अहदी करने पर आमादा कर के अपने साथ शामिल कर लिया, इस बद अहदी से मुसलमानों को बड़ा सदमा हुआ, दूसरी तरफ मुनाफ़िक़ीन मुसलमानों से हीला साज़ी और बहाना बाज़ी कर के मैदान छोड़ कर जा रहे थे, इस तरह मुसलमान अन्दरूनी और बैरूनी हमले के बीच आगए, मुहासरे की शिद्दत और सख़्ती के बाइस आप ﷺ ने बनू गितफान को मदीने की एक तिहाई पैदावार दे कर अबू सुफ़ियान के लश्कर से अलग हो जाने पर सुलह का इरादा फ़र्माया, मगर हज़रत सअद बिन मआज़ और सअद बिन उबादा जैसे बहादुर सहाबा ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! हम तलवारों के अलावा उन को अपना माल हरगिज़ नहीं देंगे, वह जो करना चाहें कर लें, हम मुक़ाबले के लिये तय्यार हैं।

नंबर २: अल्लाह की क़ुदरत — आँख में सात पर्दे

इन्सान के हर उज़्व में अगर ग़ौर करोगे तो अल्लाह की बड़ी क़ुदरत नज़र आएगी, इन्सानी जिस्म में अल्लाह तआला ने दो छोटी छोटी कैसी ख़ूबसूरत आखें बनाई हैं, जिस में देखने की ज़बरदस्त सलाहियत रखी है, दुनिया की बड़ी से बड़ी ताक़तें मिल कर भी एक आँख नहीं बना सकतीं, अल्लाह तआला ने इस आँख को सात तबक़ात से बनाया है, हर तब्क़े में ख़ास सिफत रखी है, और उस की मख़्सूस शकल बनाई है। उन सात तबक़ात में से अगर एक तबक़ा भी बेकार या ज़ाए हो जाए तो आँख से नज़र नहीं आ सकता। यह अल्लाह की कितनी अज़ीम क़ुदरत है।

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — जुमा की नमाज़ अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जुमा की नमाज़ जमात के साथ अदा करना हर मुसलमान पर लाज़िम है; मगर चार लोगों पर (लाज़िम नहीं है) (१) वह गुलाम जो किसी की मिलकियत में हो, (२) औरत, (३) नाबालिग बच्चा, (४) बीमार।"

[अबू दाऊद : १०६७, अन तारिक़ बिन शिहाब ؓ]

फायदा : जहाँ जुमा के शरायत पाए जाते हों, तो वहाँ जुमा की नमाज़ अदा करना हर सही व तन्दुरुस्त, आज़ाद और बालिग मुसलमान मर्द पर फर्ज़ है, लेकिन मुसाफिर पर फर्ज़ नहीं है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	नमाज़े जुमा में मस्नून क़िरत

रसूलुल्लाह ﷺ जुमा की नमाज़ में ﴿سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى﴾ और ﴿هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ﴾ पढ़ा करते थे।
[अबू दाऊद : ११२५, अन समुरा बिन जुन्दुब ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	ठंडी के मौसम में अच्छी तरह वुज़ू करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स सख़्त ठंडी में आज़ाए वुज़ू को अच्छी तरह धोता है उस को दोहरा अज्र मिलता है।"
[तबरानी औसत : ५५२५, अन अली बिन अबी तालिबब ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	तस्वीर बनाने वाले

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तस्वीर बनाने वालों को क़यामत के दिन अज़ाब दिया जाएगा। उन से कहा जाएगा जो तस्वीरें तुम ने बनाई हैं उन में जान डालो।"
[बुख़ारी : ५९५१, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	काफिरों के माल पर तअज्जुब न करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम उन (काफिरों) के माल और औलाद से तअज्जुब में मत पड़ना, क्योंकि अल्लाह तआला दुनिया ही की ज़िन्दगी में उन काफिरों को अज़ाब में मुब्तला करना चाहता है और जब उन की जान निकलेगी, तो कुफ्र की हालत में मरेंगे।"
[सूर-ए-तौबा : ५५]

ख़ुलासा : काफिरों को जो माल व औलाद दी जाती है, उन की ज़ियादती से किसी को तअज्जुब नहीं होना चाहिये, क्योंकि उन्हें अल्लाह तआला उन चीज़ों के ज़रिये उन की नाफ़र्मानी और बग़ावत की वजह से अज़ाब देना चाहता है।

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	दाहने हाथ में आमाल नामे वाले

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ए इन्सान ! तू अपने रब के पास जाने तक अमल करने की पूरी कोशिश कर रहा है और तुझे उस अमल का बदला मिलने वाला है तो जिस का नाम-ए-आमाल दाहने हाथ में दिया गया, उस से आसान हिसाब लिया जाएगा, वह अपने घर वालों के पास ख़ुश हो कर लौटेगा।"
[सूर-ए-इन्शिक़ाक़ : ६ ता ९]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मेहंदी से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मेहंदी का ख़िज़ाब लगाओ, क्योंकि यह तुम्हारी जवानी, हुस्न व जमाल और मरदाना कुव्वत को बढ़ाती है।"
[कन्ज़ुल उम्माल : १७३००, अन अनस ؓ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो ! तुम अल्लाह और उस के रसूल (से) आगे बढ़ कर बात मत करो और अल्लाह तआला से डरते रहो। बेशक अल्लाह (तुम्हारी बातों को) सुनने वाला और कामों को जानने वाला है।"
[सूर-ए-हुजरात : १]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२८) जुमादल ऊला

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ में सहाबा की कुरबानी

ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ में मुश्रिकीन ने दस हज़ार का लश्कर ले कर मदीने का मुहासरा कर रखा था, दोनों तरफ से तीर अन्दाज़ी और संगबारी का तबादला होते हुए दो हफ्ते गुजर गए, तो कुरैश ने तमाम फौज को जमा कर के हमला करने का मन्सूबा बनाया, इत्तेफाक़ से एक मक़ाम पर ख़न्दक़ की चौड़ाई कम थी, तो अरब का मशहूर बहादुर अम्र बिन अब्देवुद्द और उस के साथियों ने घोड़ों को एड़ लगा कर ख़न्दक़ को पार कर लिया और मुसलमानों को तीन मर्तबा मुक़ाबले के लिये ललकारा, तो हज़रत अली ؓ मुक़ाबले के लिये आगे बढ़े, थोड़ी देर दोनों ने अपने अपने जौहर दिखाए, बिल आख़िर हज़रत अली ؓ ने उस को निमटा दिया, यह मन्ज़र देख कर मुश्रिकीन पर रोब तारी हो गया और मुक़ाबले की ताब न ला कर भाग गए, हमले का यह बड़ा सख़्त दिन था, कुफ्फार व मुश्रिकीन की तरफ से नेज़ों और पत्थरों की बारिश हो रही थी। चुनान्चे एक माह के तवील मुहासरे के बाद अल्लाह तआला की गैबी मदद आई और ऐसी ठंडी व तेज़ हवा चली के उन के ख़ेमे उखड़ गए, लश्करों में अफरा तफरी मच गई, मौसम की सख़्ती, खाने पीने की किल्लत की वजह से वह मजबूर हो कर भाग गए।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — दाँतों के दर्मियान से नूर निकलना

रसूलुल्लाह ﷺ के सामने के दोनों दाँत कुशादा थे, बात करते हुए उन के दर्मियान से नूर निकलता हुआ महसूस होता था। [शमाइले तिर्मिज़ी : स.३, अन इब्ने अब्बास ؓ]

ख़ुलासा : यह भी रसूलुल्लाह ﷺ का मोअ्जिज़ा है के आप ﷺ बात करते तो आप ﷺ के मुँह मुबारक से नूर निकलता।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — शौहर की वरासत में बीवी का हिस्सा

क़ुर्आन में अल्लाह तअला फर्माता है : "उन औरतों के लिये तुम्हारे छोड़े हुए माल में चौथाई हिस्सा है, जब के तुम्हारी कोई औलाद न हो अगर तुम्हारी औलाद हो तो उन के लिये तुम्हारे छोड़े हुए माल में आठवाँ हिस्सा है (उन को यह हिस्सा) तुम्हारी वसिय्यत और क़र्ज़ को अदा करने के बाद मिलेगा।" [सूर-ए-निसा : १२]

फायदा : शौहर के इन्तेक़ाल के बाद अगर उस की कोई औलाद न हो, तो बीवी को शौहर के माल का चौथाई हिस्सा देना और अगर कोई औलाद हो, तो आठवाँ हिस्सा देना ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — ग़म के वक़्त यह दुआ पढ़े

रसूलुल्लाह ﷺ ने ग़म व मुसीबत के वक़्त इस दुआ को पढ़ने के लिये फर्माया :

((اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ اَللّٰهُمَّ اْجُرْنِىْ فِىْ مُصِيْبَتِىْ وَاَخْلِفْ لِىْ خَيْرًا مِّنْهَا))

तर्जमा : हम सब अल्लाह की मिलकियत में हैं और उसी की तरफ जाने वाले हैं, या अल्लाह ! तू मुझे मेरी इस मुसीबत में सवाब दे और मझे इस से बेहतर बदला इनायत फ़र्मा।

[मुस्लिम : २१२६, अन उम्मे सलमा ﵂]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह के रास्ते में मौत आना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो अल्लाह के रास्ते में क़त्ल किया जाए, या उस को मौत आजाए, तो वह (सीधा) जन्नत में जाता है।"

[मुस्तदरक हाकिम : २५२१, अन उमर ﵁]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	सरगोशी करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐसी सरगोशी (ख़ुफिया मश्वरा) सिर्फ शैतान की तरफ से है जो के मुसलमानों को रंज में मुब्तला कर दे, और वह अल्लाह की मशिय्यत व इरादे के बग़ैर मुसलमानों को कुछ भी नुक़्सान नहीं पहुँचा सकता और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिये।"

[सूर-ए-मुजादला : १०]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया से राज़ी होना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "क्या तुम लोग आख़िरत की ज़िन्दगी के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गए? दुनिया का माल व मताअ तो आख़िरत के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं।" (यानी मुसलमान के लिये मुनासिब नहीं है के वह दुनिया ही की ज़िन्दगी पर राज़ी हो जाए या दुनिया के थोड़े से साज़ व सामान की ख़ातिर अपनी आख़िरत को बरबाद कर दे।)

[सूर-ए-तौबा : ३८]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जन्नतुल फिरदौस का दर्जा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम अल्लाह तआला से सवाल करो, तो जन्नतुल फिरदौस का सवाल किया करो, क्योंकि वह जन्नत का सब से अफज़ल और बुलंद दर्जा है और उस के ऊपर रहमान का अर्श है और उसी से जन्नत की नहरें निकलती हैं।"

[बुख़ारी : ७४२३, अन अबी हुरैरा ﵁]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	सफर जल से दिल का इलाज

हज़रत तलहा ﵁ फ़र्माते हैं के मैं रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, तो आप ﷺ के मुबारक हाथ में एक सफर जल (बही) था, फिर आप ﷺ ने फर्माया : "तलहा ! इसे लो, क्योंकि यह दिल को सुकून पहुँचाता है।"

[इब्ने माजा : ३३६९]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

हज़रत अबू ज़र ﵁ फर्माते हैं के मुझे मेरे दोस्त रसूलुल्लाह ﷺ ने वसिय्यत फ़र्माई : "मैं अपने से ज़ियादा मालदार की तरफ न देखूँ और अपने से कम दर्जा वाले (मालदार) की तरफ देखूँ और ग़रीबों से मुहब्बत और उन के क़रीब रहने की वसिय्यत फ़र्माई और सिला रहमी करने की वसिय्यत फ़र्माई अगरचे वह तुम से पीठ फेरे।"

[सही इब्ने हिब्बान : ४५०, अन अबी ज़र ﵁]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२९ जुमादल ऊला

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — ग़ज़्व-ए-बनी क़ुरैज़ा

बनू क़ुरैज़ा ने अहद शिकनी कर के कुरैशे मक्का का साथ दिया था, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने ग़ज़्व-ए- ख़न्दक़ से मदीना आकर हथियार उतार दिये, तो हज़रत जिब्रईल عليه السلام ने आकर अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है के आप लश्कर ले कर बनू क़ुरैज़ा रवाना हो जाएँ, आप ﷺ ने सहाबा को अस्र की नमाज़ बनू क़ुरैज़ा में पढ़ने का हुक्म दिया, हज़रत अली رضي الله عنه इस्लामी झंडा और सहाबा का लश्कर ले कर वहाँ पहुँचे, यहूदियों ने आप ﷺ को बुरा भला कहा और मुसालहत के लिये भी तय्यार नहीं हुए, तो उन के क़िले का मुहासरा तक़रीबन २५ दिन तक जारी रखा। बिलआख़िर मुहासरा तंग होने पर उन्होंने मुसालहत के मामले को पहले हज़रत अबू लुबाबा رضي الله عنه फिर हज़रत सअद बिन मुआज़ رضي الله عنه के सुपुर्द कर दिया के उन का हर फैसला हमें मन्ज़ूर है, उन्होंने तौरात के मुताबिक़ फैसला किया के तमाम लड़ने वाले मरदों को क़त्ल कर दिया जाए, औरतों और बच्चों को गुलाम बना लिया जाए, जाइदाद और माल व दौलत मुसलमानों में तक़सीम कर दी जाए, इस फैसले के मुताबिक़ बनू क़ुरैज़ा को गिरफ्तार कर के मदीना ला कर क़त्ल किया गया। हुय्य बिन अख़्तब और बनू क़ुरैज़ा के सरदार कअब बिन असद की भी गर्दन मार दी गई, ताके अहद शिकनी करने वालों और धोका बाज़ों को हमेशा के लिये सबक़ मिल जाए और आने वाली नस्लें इबरत हासिल करें। इस तरह मदीना हमेशा के लिये दुश्मनों की साज़िशों से महफ़ूज़ हो गया।

नंबर २ : अल्लाह की क़ुदरत — अनार के फल में अल्लाह की क़ुदरत

अनार के फल पर ग़ौर करो कैसी अजीब हिकमत से उस के अन्दर मुख़्तलिफ क़िस्म के ख़ाने बना कर अल्लाह तआला ने किस ख़ूबी से हर ख़ाने में अनार के दाने फिट किये हैं, फिर हिफ़ाज़त के लिये उन पर हल्के हल्के परदे लगा रखे हैं, एक मोटे और नर्म गूदे में वह दाने जुड़े हुए हैं, फिर दानों को एक बारीक ग़िलाफ में महफ़ूज़ कर दिया है ताके वह एक जगह तरतीब से रह कर परवरिश पा सकें, किसी ज़र्ब के पड़ने से वह मुन्तशिर हो कर ख़राब न हों, यह अल्लाह तआला की क़ुदरत की कितनी अजीब कारीगरी है।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — वालिदैन के साथ अच्छा बरताव करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तेरे रब ने हुक्म दे दिया है के तुम उस के अलावा किसी की इबादत मत करो और अपने माँ बाप के साथ अच्छा बरताव किया करो।" [सूर-ए-बनी इस्राईल : २३]

फायदा : वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करना, उन की इताअत और फर्मांबरदारी करना और उन्हें तकलीफ न पहुँचाना औलाद पर ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	सलाम फेरते वक़्त गर्दन कितनी घुमाए

रसूलुल्लाह ﷺ (नमाज़ में) दाएँ और बाएँ जानिब सलाम फेरते हुए (इतना गरदन को घुमाते) के आप के रुख़्सार मुबारक की सफेदी नज़र आजाती। [मुस्लिम : १३१५, अन सअद ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	सूर-ए-बक़रा की आख़री दो आयात

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स सूर-ए-बक़रा की आख़री दो आयतें रात में पढ़ लिया करे, तो यह दोनों (उस को इन्सान और जिन्नात के शर से बचाने के लिये) काफी है।"

[तिर्मिज़ी : २८८१, अन अबी मसऊद अन्सारी ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	रस्मे जाहिलियत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने रुख़्सारों को नोचा और गरेबान को चाक किया, और ज़मान-ए-जाहिलियत की तरह वावेला किया, वह हमारे तरीक़े पर नहीं।" [बुख़ारी : १२९७, अन इब्ने मसऊद ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	बूढ़े आदमी की ख़्वाहिश

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "आदमी बूढ़ा हो जाता है, लेकिन उस की दो चीज़ें जवान रहती हैं। (१) लम्बी उम्र की ख़्वाहिश (२) माल की हिर्स व लालच।" [तिर्मिज़ी : २३३९, अन अनस ﷺ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	बाएँ हाथ में आमाल नामे वाले

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जिस शख़्स को उस का नाम-ए-आमाल पीठ के पीछे से (बाएँ हाथ में) दिया गया, तो वह मौत को पुकारेगा और जहन्नम में दाख़िल होगा।"

[सूर-ए-इन्शिक़ाक़ : १० ता १२]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	ख़रबूज़े से मेअ्दे की सफाई

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "खाने से पहले ख़रबूज़े का इस्तेमाल पेट को बिल्कुल साफ कर देता है और बीमारी को जड़ से ख़त्म कर देता है।" [इब्ने असाकिर : १०२/६]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उन दोनों के दर्मियान सुलह व सफाई करा दिया करो, फिर अगर उन में से एक गिरोह दूसरे पर ज़ियादती करे तो ज़ियादती करने वाले गिरोह से लड़ो यहाँ तक के वह अल्लाह के हुक्म की तरफ लौट आए, फिर अगर वह ज़ियादती करने वाला रुजू कर ले, तो उन दोनों के दर्मियान इन्साफ के साथ सुलह करा दो, और इन्साफ करते रहा करो; बेशक अल्लाह तआला इन्साफ करने वालों को पसन्द करता है।"

[सूर-ए-हुजरात : ९]

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ | ग़ज़्व-ए-मुरैसिअ या बनी मुस्तलिक़

रसूलुल्लाह ﷺ को यह इत्तेला मिली के बनू मुस्तलिक के सरदार हारिस बिन ज़रार ने मदीना पर हमला करने के लिये बहुत सी फौज जमा कर ली है, आप ﷺ ने बुरैदा असलमी को तहकीक़ के लिये भेजा, उन्होंने वापस आकर इस खबर की तसदीक कर दी, तो हुज़ूर ﷺ २ शाबान सन ५ हिजरी को सहाबा का लश्कर ले कर रवाना हो गए और एक दिन का सफर तै कर के मकामे मुरैसिअ् के पास पड़ाव डाला, मुरैसिअ् के लोग मुकाबले के लिये आए और मामूली सी जंग के बाद उन के पाँव उखड़ गए और वह मैदान छोड़ कर भाग गए, इस जंग में बनू मुस्तलिक के दस आदमी मारे गए, जब के एक सहाबी ने भी शहादत पाई, मुसलमानों ने मुश्रिकीन के ६०० आदमियों को कैद किया, माले ग़नीमत में दो हज़ार ऊँट और पाँच हज़ार बकरियाँ हाथ आई, इस लड़ाई में गिरफ्तार होने वालों के साथ बनू मुस्तलिक़ के सरदार की बेटी जुवैरिया भी थीं, उन्होंने अपने फिदये की रक़म तै कर के हुज़ूर ﷺ से मदद की दरख़्वास्त की, आप ﷺ ने अपनी तरफ से फिदये की रक़म अदा कर के उन को गुलामी से नजात दिलाई और मज़ीद यह एहसान फ़र्माया के इस्लाम क़बूल करने के बाद उन से निकाह कर लिया। इस निकाह की बरकत से बनू मुस्तलिक़ के तमाम जंगी क़ैदियों और माले ग़नीमत को वापस कर दिया गया और उन के वालिद बनू मस्तलिक़ के सरदार हारिस बिन ज़रार ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा | अब्दुल्लाह बिन बुस्र ؓ के बारे में पेशीन गोई

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र ؓ फ़र्माते हैं के आप ﷺ ने मेरे सर पर हाथ रख कर इर्शाद फ़र्माया : यह लड़का सौ साल जिन्दा रहेगा, चुनान्चे हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र ؓ की उम्र सौ साल हुई।

[मुस्तदरक हाकिम : ८५२५]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | नमाज़े जुमा के लिये जमात का होना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो ! जुमा के दिन जब (जुमा की नमाज़) के लिये अज़ान दी जाए, तो (सब के सब) अल्लाह के ज़िक्र की तरफ दौड़ पड़ो और ख़रीद व फरोख़्त छोड़ दो, यह तुम्हारे लिये बेहतर है, अगर तुम जानते हो।"

[सूर-ए-जुमा : ९]

फायदा : जुमा की अज़ान को सुन लेने के बाद ख़रीद व फरोख़्त छोड़ कर अल्लाह के ज़िक्र की तरफ चल पड़ना और जमात के साथ नमाज़ अदा करना वाजिब है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | तमाम मुसीबतों से छुटकारा

जो इस दुआ को हर सुबह व शाम सात मर्तबा पढ़ेगा तो अल्लाह तआला उस को दुनिया व आख़िरत की मुसीबतों और रंज व ग़म से नजात देगा :

﴿ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴾

तर्जमा : मुझे अल्लाह काफी है, वही माबूद है, उसी पर भरोसा करता हूँ, वह बड़े अर्श का रब है।

[अमलुल यौम वल्लैला लि इब्ने सुन्नी : ७१, अन अबी दर्दा ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | मरीज़ की इयादत करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "क़यामत के दिन एक पुकारने वाला पुकारेगा कहाँ हैं वह लोग जिन्होंने दुनिया में मरीज़ों की इयादत की? चुनान्चे उन को नूर के मिम्बरों पर बिठाया जाएगा, यह अल्लाह तआला से गुफ्तगू करते होंगे जब के लोग हिसाब किताब में फँसे होंगे।"

[तारीख़े दिमश्क़ लि इब्ने असाकिर : १४८-१४९/५ अन उमर ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | कुर्आन को झुटलाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "उस शख़्स से बड़ा ज़ालिम कौन हो सकता है, जो अल्लाह पर झूट बोले और जब उस के पास सच्ची बात (कुर्आन) आए, तो उस की तकज़ीब कर दे, क्या ऐसे काफिरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं होगा ?" [सूर-ए-ज़ुमर : ३२]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया का नफा वक़्ती है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ लोगो ! तुम्हारी नाफ़र्मानी और बग़ावत का वबाल तुम ही पर पड़ने वाला है, दुनिया की ज़िन्दगी के सामान से थोड़ा फायदा उठालो, फिर तुम को हमारी तरफ वापस आना है, तो हम उन सब कामों की हक़ीक़त से तुम को आगाह कर देंगे जो तुम किया करते थे।"

[सूर-ए-यूनुस : २३]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | जन्नत का अंगूर

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मेरे सामने जन्नत पेश की गई, तो मैं ने तुम्हें दिखाने के लिये अंगूर का एक ख़ोशा लेना चाहा, तो मेरे और उस ख़ोशे के दर्मियान आड़ कर दी गई। किसी ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! अंगूर का दाना कितना बड़ा है ? तो आप ﷺ ने फर्माया : एक बड़े डोल के बराबर है।"

[मुस्नदे अबी याला : ११०९, अन अबी सईद ख़ुदरी ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | इस्मिद सुरमे से आँखों का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम्हारे सुरमों में सब से बेहतर सुरमा इस्मिद है, जो आँखों की रौशनी को बढ़ाता है और पलकों के बाल को उगाता है।" [अबू दाऊद : ३८७८, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अपने मरने वालों की अच्छाइयों को याद करो और उन की बुराइयों (के बयान करने) से बाज़ रहो।" [अबू दाऊद : ४९००, अन इब्ने उमर ﷺ]

जुमादस
सानियह

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर १: इस्लामी तारीख़ — हुज़ूर ﷺ का उमरा के लिये जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने एक मर्तबा ख़्वाब देखा के मक्का में दाख़िल हो कर बैतुल्लाह का तवाफ कर रहे हैं, यह ख़्वाब सुनते ही सहाब-ए-किराम رضی اللہ عنہم बैतुल्लाह की ज़ियारत और उमरा की अदाएगी के शौक़ में बेचैन हो गए, चुनान्चे माहे ज़िल क़अ्दा सन ६ हिजरी में रसूलुल्लाह ﷺ चौदा सौ सहाब-ए-किराम رضی اللہ عنہم के साथ उमरा करने के लिये रवाना हुए और हुदैबिया पहुँच कर क़याम फ़र्माया, ख़राश बिन उमय्या ख़ुज़ाई को क़ुरैशे मक्का के पास भेजा के हम सिर्फ़ बैतुल्लाह की ज़ियारत और उमरा करने आए हैं, हमारा मक़सद लड़ना नहीं है, मगर अहले मक्का ने बदसुलूकी करते हुए उन के ऊँट को मार दिया और वह मुश्किल से जान बचा कर वापस आए, फिर आप ﷺ ने हज़रत उस्मान ग़नी رضی اللہ عنہ के ज़रिये उन के पास पैग़ाम भेजा तो उन्होंने हज़रत उस्मान رضی اللہ عنہ से कहा : तुम अगर तवाफ करना चाहते हो, तो कर सकते हो, उन्होंने जवाब दिया : मैं रसूलुल्लाह ﷺ से पहले हरगिज़ तवाफ नहीं करूँगा, तो क़ुरैशे मक्का ने कहा के मुहम्मद (ﷺ) अपने साथियों को ले कर इस साल मक्का में दाख़िल नहीं हो सकते और हज़रत उस्मान رضی اللہ عنہ को नज़र बंद कर दिया, उधर मुसलमानों में उन के क़त्ल की ख़बर मश्हूर कर दी गई, तो हज़रत उस्मान رضی اللہ عنہ की शहादत का बदला लेने के लिये आप ﷺ ने एक दरख़्त के नीचे सहाब-ए-किराम رضی اللہ عنہم से बैत ली। इस बैत को "बैते रिज़वान" कहा जाता है।

नंबर २: अल्लाह की क़ुदरत — प्लेटी पस (Platypus)

यह जानवर बिल्ली से कुछ बड़ा होता है, पानी और ख़ुश्की दोनों में ज़िन्दगी गुज़ारता है, मुँह बतख़ जैसा, दुम और पैर मगरमच्छ की तरह होते हैं। उस के जिस्म पर क़ीमती ऊन होता है। उस के पिछले पैर में ज़हेर होता है, जिस के इस्तेमाल से वह शिकार और दीगर जान्वरों से अपनी हिफाज़त करता है। अल्लाह की क़ुदरत देखिये ! यह जानवर अंडे देता है मगर बच्चे निकलने पर उन को दूध पिलाता है, जब के अंडे देने वाला कोई भी परिन्दा अपने बच्चे को दूध नहीं पिलाता, ग़र्ज़ इस जानवर में परिन्दों की तरह अंडे देने और जानवरों की तरह दूध पिलाने की सलाहियत को किस ने पैदा किया है? यक़ीनन अल्लाह की क़ुदरत है।

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — इस्लाम की बुनियाद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर है। (१) इस बात की गवाही देना के अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। (२) नमाज़ अदा करना। (३) ज़कात देना। (४) हज करना। (५) रमज़ान के रोज़े रखना।" [बुख़ारी : ८, अन इब्ने उमर رضی اللہ عنہ]

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में	जुमा के रोज़ नमाज़े फज्र की मस्नून क़िरत

रसूलुल्लाह ﷺ जुमा के दिन फज्र की नमाज़ में सूर-ए-सज्दा और सूर-ए-दहर पढ़ा करते थे।

[बुख़ारी : ८९१, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर ⑤: एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अच्छी तरह वुज़ू करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो भी मुसलमान अच्छी तरह मुकम्मल वुज़ू करता है। फिर वह खड़े हो कर ध्यान से नमाज़ पढ़ता है, तो वह गुनाहों से इस तरह पाक हो कर लौटता है, जैसा के आज ही उस की माँ ने उस को जन्म दिया हो।"

[मुस्तदरक : ३५०८, अन उक़बा बिन आमिर ؓ]

नंबर ⑥: एक गुनाह के बारे में	लोगों से तारीफ कराना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो अल्लाह की नाफ़र्मानी कर के लोगों से अपनी तारीफ कराना चाहता है, तो उस की तारीफ करने वाले उस की बुराई करने लगेंगे।"

[तरग़ीब तरहीब : ३२२८, अन आयशा ؓ]

नंबर ⑦: दुनिया के बारे में	दुनिया अल्लाह को कितनी ना पसन्द है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह तआला ने कोई चीज ऐसी पैदा नहीं फ़र्माई, जो उस को बहुत ही ना पसन्द हो, सिवाए दुनिया के, के जब से इस को बनाया है आज तक इस की तरफ नहीं देखा।"

[बैहक़ी फी शोअबिल ईमान : १०११०, अन मूसा बिन यसार رحمه الله]

नंबर ⑧: आख़िरत के बारे में	क़यामत के दिन बदला क़बूल न होगा

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जिन लोगों ने कुफ्र किया और कुफ्र ही की हालत में मर गए, तो ऐसे शख़्स से पूरी ज़मीन भर कर भी सोना क़बूल नहीं किया जाएगा, अगरचे वह सोने की उतनी मिक़दार (अज़ाब के बदले) में ला कर हाज़िर कर दे, ऐसे लोगों के लिये दर्दनाक अज़ाब होगा और कोई मदद करने वाला न होगा।"

[सूर-ए-आले इमरान : ९१]

नंबर ⑨: तिब्बे नब्वी से इलाज	ज़मज़म में शिफा है

हज़रत इब्ने अब्बास ؓ ने ज़मज़म के बारे में फ़र्माया : "यह एक मुकम्मल ख़ूराक भी है और बीमारियों के लिये शिफा बख़्श भी है।"

[बैहक़ी फी शोअबिल ईमान : ३९७३]

नंबर ⑩: कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो ! जब जुमा के दिन नमाज़ के लिये अज़ान कही जाए, तो तुम अल्लाह तआला की याद (यानी ख़ुतबा सुनने और नमाज़ पढ़ने) के लिये चल पड़ो और ख़रीद व फरोख़्त (और दूसरे काम धन्दे) छोड़ दिया करो, यह तुम्हारे लिये ज़ियादा बेहतर है।"

[सूर-ए-जुमा : ९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर १ : इस्लामी तारीख | सुलह हुदैबिया

हुदैबिया के मौक़े पर मुश्रिकीन ने अन्दाज़ा लगा लिया था के मुहम्मद (ﷺ) अपने जाँनिसार सहाबा के जज़बात और उमरे की ख़्वाहिश को पूरा किए बग़ैर नहीं रह सकते; इस लिये उन्होंने मुसलमानों के साथ अमन व मुआहदे की गुफ्तगू के लिये सुहैल बिन अम्र को क़ासिद बना कर भेजा, बिलआख़िर गुफ्तगू के बाद दोनों फरीक़ दस साल तक चन्द शर्तों पर सुलह करने पर राज़ी हो गए। (१) मुसलमान इस साल उमरा अदा किए बग़ैर मदीना वापस चले जाएँ। (२) मुसलमान अगले साल उमरा अदा करेंगे; लेकिन मक्का में तीन दिन से ज़ियादा नहीं ठहरेंगे। (३) मुसलमान मक्का में हथियार नहीं लाएँगे, उन के पास सिर्फ तलवारें होंगी और वह भी नियाम में रहेंगी। (४) अहले मदीना मक्का में रहने वाले मुसलमानों को अपने साथ नहीं ले जाएँगे और अगर कोई मुसलमान मक्का में रहना चाहे तो उस को नहीं रोकेंगे। (५) अहले मक्का में से कोई मदीना चला जाए तो मुसलमान उसे वापस करेंगे लेकिन अगर कोई मुसलमान मक्का वापस आजाएगा तो मुश्रिकीन उसे वापस नहीं करेंगे। (६) दस साल तक फरीक़ैन में लड़ाई बंद रहेगी। (७) अरब क़बाइल को किसी भी फरीक़ के साथ मुआहदा करने का इख़्तियार होगा, इस तरह मुसलमानों ने दब कर सुलह की।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा | कुंवें से मुश्क की ख़ुश्बू आना

रसूलुल्लाह ﷺ के पास एक डोल में पानी लाया गया, आप ﷺ ने उस में से पिया फिर कुंवें में कुल्ली कर दी, जिस के बाद कुंवें से मुश्क जैसी ख़ुश्बू आने लगी। [बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : २१४]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में | बीवी के साथ अच्छा सुलूक करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "औरतों के साथ हुस्ने सुलूक से ज़िन्दगी बसर करो।"

[सूर-ए-निसा : १९]

फायदा : अपनी बीवी के साथ अच्छाई का मामला करना और अच्छे सुलूक से ज़िन्दगी गुज़ारना ज़रूरी है।

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में | ज़ालिमों से हिफाज़त की दुआ

दुश्मनाने इस्लाम की जानिब से जब मुशकिलात और परेशानियों का सामना हो, तो उस वक़्त इस दुआ का एहतेमाम करना चाहिये : ﴿ رَبِّ نَجِّنِىْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ ﴾

तर्जमा : ऐ परवरदिगार ! हमें ज़ालिम क़ौम से नजात अता फ़र्मा। [सूर-ए-क़सस : २१]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह के ख़ौफ से रोना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तीन आँखों को जहन्नम की आग नहीं छुएगी, एक वह आँख जो अल्लाह के रास्ते में फोड़ दी गई हो और एक वह आँख जो अल्लाह के रास्ते में जाग कर पहरा दे और एक वह आँख जो अल्लाह के ख़ौफ से रो पड़े।" [मुस्तदरक : २४३०, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	तकब्बुर से दिल पर मुहर लग जाती है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग बग़ैर किसी दलील के अल्लाह तआला की आयात में झगड़े निकाला करते हैं अल्लाह तआला और अहले ईमान के नज़दीक यह बात बड़ी क़ाबिले नफरत है, इसी तरह अल्लाह तआला हर मुतकब्बिर सरकश के दिल पर मुहर लगा देता है।"

[सूर-ए-मोमिन : ३५]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	आख़िरत के मुक़ाब्ले में दुनिया से राज़ी होना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "क्या तुम लोग आख़िरत की ज़िन्दगी के मुक़ाब्ले में दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गए? दुनिया का माल व मताअ् तो आख़िरत के मुक़ाब्ले में कुछ भी नहीं। (लिहाज़ा किसी इन्सान के लिये मुनासिब नहीं है के वह आख़िरत को भूल कर ज़िन्दगी गुज़ारे या दुनिया के थोड़े से साज़ व सामान की खातिर अपनी आख़िरत को बरबाद करे)।" [सूर-ए-तौबा : ३८]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	मोमिनों का पुल सिरात पर गुज़र

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "पुल सिरात पर मोमिनीन ((رَبِّ سَلِّمْ سَلِّمْ)) (यानी ऐ परवरदिगार ! सलामती अता फर्मा।) कहते हुए गुज़रेंगे।" [तिर्मिज़ी : २४३२, अन मुग़ीरा बिन शोअ्बा رضي الله عنه]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मरीज़ की शिफा का कामयाब नुस्ख़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस शख़्स ने किसी ऐसे मरीज़ की इयादत की जिस की मौत का वक़्त अभी नहीं आया है और उस के लिये सात मर्तबा यह दुआ की :

((أَسْأَلُ اللهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ أَنْ يَّشْفِيَكَ))

तो अल्लाह तआला उसे ज़रूर शिफा अता फर्माएंगे।" [अबू दाऊद : ३१०६, अन इब्ने अब्बास رضي الله عنه]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया :" जब तुम में से किसी का लुक़्मा गिर जाए, तो उसे साफ करे और खा ले, शैतान के लिये न छोड़े।" [मुस्लिम : ५३०१, अन जाबिर رضي الله عنه]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

③ जुमादस्सानियह

नंबर ①: इस्लामी तारीख — मुसलमानों को अज़ीम फतह की खुशखबरी

जब हुज़ूर ﷺ और मुश्रिकीन के दर्मियान हुदैबिया की सुलह और मुआहदे पर दस्तख़त हो गए, तो आप ﷺ ने सहाब-ए-किराम رضی اللہ عنہم को कुरबानी करने और सर मुंडवाने का हुक्म दिया, आप ﷺ का यह हुक्म सहाबा رضی اللہ عنہم पर बहुत दुश्वार गुज़रा, बिल आख़िर हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا ने हालात को समझते हुए आप ﷺ को मश्वरा दिया और कहा : आप ही सर मुंडवा लीजिये, तो आप ﷺ ने इस मश्वरे पर अमल करते हुए सर मुंडवा लिया, यह देख कर सहाबा رضی اللہ عنہم ने भी उस पर अमल किया, तीन रोज़ हुदैबिया में क़याम कर के सहाबा رضی اللہ عنہم के साथ वापसी के वक़्त हुज़ूर ﷺ पर सूर-ए-फतह की आयत नाज़िल हुई के "हम ने आप ﷺ को एक खुली हुई फतह अता फ़र्माई है।" हज़रत उमर رضی اللہ عنہ जो इस मुआहदे की शर्तों को अपने लिये बेइज़्ज़ती का सबब समझ रहे थे, इन आयतों के नाज़िल होने के बाद पूरी तरह मुतमइन हो गए, इस मुआहदे की वजह से कुफ्फ़ारे मक्का कारोबार के लिये मदीना आते जाते, तो वह मुसलमानों के अख़्लाक़, नेकी, इख़्लास व मेहमान नवाज़ी से बहुत ज़ियादा मुतअस्सिर होते, इस हुस्ने सुलूक की वजह से हज़रत ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ عنہ और अम्र बिन आस رضی اللہ عنہ के साथ बे शुमार लोगों ने सुलह हुदैबिया और फतहे मक्का के दौरान इस्लाम क़बूल कर लिया। अलगर्ज़ इस मुआहदे से इस्लाम के आगे बढ़ने में ज़बरदस्त कामयाबी हासिल हुई।

नंबर ②: अल्लाह की कुदरत — ज़मीन का नशेब व फराज़

ज़मीन के फर्श पर गौर करो ! अल्लाह तआला ने कितने बेहतरीन अन्दाज़ में इस को बिछाया है, जिस पर अल्लाह की लाखों मख़्लूक़ बसेरा कर रही है और फिर अल्लाह की अजीब हिकमत के इस ज़मीनी फर्श के एक हिस्से को दूसरे हिस्से से थोड़ा ऊंचा रखा ताके पानी एक तरफ से बह कर दूसरी तरफ जा सके, और इस तरह मख़्लूक़ात को फायदा उठाने का मौक़ा मिल सके और आख़िर में वह पानी समन्दर में जाकर गिर जाए, अगर ज़मीन एक तरफ से ऊँची और दूसरी तरफ से नीची न होती तो पानी ज़मीन पर जमा हो कर उस को समन्दर बना देता, चलना फिरना भारी हो जाता और काम काज ठप पड़ जाता, जैसा के सैलाब के ज़माने में होता है। कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : वही है जिस ने ज़मीन को फैलाया और उस में पहाड़ और दरिया पैदा किए। [सूर-ए-रअद:३]

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — अज़ाने जुमा के बाद दुनियावी काम छोड़ना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो ! जुमा के दिन जब (जुमा की) नमाज़ के लिये अज़ान दी जाए, तो (सब के सब) अल्लाह के ज़िक्र (यानी नमाज) की तरफ दौड़ पड़ो और ख़रीद व फरोख़्त छोड़ दो। यह तुम्हारे लिये बेहतर है, अगर तुम जानते हो।" [सूर-ए-जुमा:९]

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — तेज़ रफतारी से चलना

हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ बयान करते हैं के हुज़ूर ﷺ जब चलते तो चुस्ती से चलते, सुस्ती से न चलते।

[मुस्नदे अहमद : ३०२५]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — सूर–ए–इख़्लास का सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने ﴿ قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ ﴾ दस मर्तबा पढ़ी, अल्लाह तआला उस के लिये जन्नत में एक शान्दार महल बनाएगा ।" [मुस्नदे अहमद : १५१८३, अन मुआज़ बिन अनस ؓ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में — मातहतों पर ज़ुल्म करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने नाहक़ अपने मातहत को मारा तो उस की वजह से वह क़यामत के दिन क़ैद किया जाएगा ।" [तरग़ीब व तरहीब : ३२६३, अन अम्मार बिन यासिर ؓ]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में — सब से ज़ियादा ख़ौफ की चीज़

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मुझे तुम पर सब से ज़ियादा ख़ौफ इस बात का है के कहीं अल्लाह तआला तुम पर ज़मीन की बरकात को ज़ाहिर न कर दे", पूछा गया के ज़मीन की बरकात से क्या मुराद है ? रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "दुनिया की रंगीनी, उस की ख़ूबसूरती और ज़ेब व ज़ीनत ।"

[बुख़ारी : ६४२७, अन अबी सईद ख़ुदरी ؓ]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में — अल्लाह और रसूल की इताअत का बदला

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख़्स अल्लाह और उस के रसूल के हुक्म पर चलेगा, तो अल्लाह तआला उस को ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा, जिन के नीचे नहरें बहती होंगी वह हमेशा उन बाग़ों में रहेंगे और यही बहुत बड़ी कामयाबी है ।" [सूर-ए-निसा : १३]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज — जिन के असरात से हिफाज़त

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ؓ ने अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के रसूल ! मुझे एक मक्कार जिन परेशान करता है, तो आप ﷺ ने फर्माया : यह कलिमात कहो :

((أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ الَّتِي لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَلَا فَاجِرٌ مِنْ شَرِّ مَا ذَرَأَ فِي الْأَرْضِ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا، وَمِنْ شَرِّ مَا يَعْرُجُ فِي السَّمَاءِ وَمَا يَنْزِلُ مِنْهَا وَمِنْ شَرِّ كُلِّ طَارِقٍ إِلَّا طَارِقًا يَطْرُقُ بِخَيْرٍ يَا رَحْمٰنُ))

चुनान्चे वह सहाबी ؓ कहते हैं के मैं ने यह अमल किया, तो अल्लाह तआला ने मेरी वह परेशानी ख़त्म कर दी ।" [कंज़ुल उम्माल : २८५३९]

नंबर (१०) : कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो ! अल्लाह की निशानियों की बे हुरमती न करो और न हुरमत वाले महीने की और न (हरम में) कुरबान होने वाले जानवर की और न उन (जानवरों की) जिन के गले में क़लादा (यानी कुरबानी की अलामत के पट्टे पड़े हों) और उन लोगों की भी बे अदबी न करना जो अल्लाह का फज़्ल और उस की रज़ामन्दी तलब करने बैतुल्लाह जा रहे हों ।"

[सूर-ए-मायदा : २]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

④ जुमादस्सानियह

नंबर ①: इस्लामी तारीख़ — बादशाहों के नाम दावती ख़ुतूत

सुलह हुदैबिया के बाद हालात कुदरती तौर पर कुछ बेहतर हो गए, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने अरब के अमीरों और दुनिया के बादशाहों के नाम दावती ख़ुतूत भेजने का इरादा किया और इस बारे में सहाब-ए-किराम ؓ को मस्जिदे नब्वी में जमा कर के खिताब फर्माया :"ऐ लोगो ! अल्लाह तआला ने मुझ को पूरे आलम के लिये रहमत व रसूल बना कर भेजा है, इस लिये मेरी तरफ से दुनिया को यह पैग़ाम पहुँचाओ, अल्लाह तआला तुम पर रहम करेगा और देखो हज़रत ईसा ؑ के हवारियों की तरह इख़्तिलाफ न करना के क़रीब भेजने को कहा तो रज़ामन्द हो गए और कहीं दूर जाने का हुक्म दिया तो ज़मीन पर बोझ बन कर बैठ गए।" आप ﷺ के जाँनिसार सहाबा यह हुक्म सुनते ही फौरन इताअत के लिये तय्यार हो गए और बतौरे मश्वरा अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! यह दुनियावी बादशाह बग़ैर मुहर के किसी ख़त को क़ाबिले एतेबार नहीं समझते और न उसे पढ़ने की ज़हमत गवारा करते हैं, इस लिये मुहर लगा कर ख़ुतूत रवाना किए जाएँ, आप ﷺ ने सहाबा के मश्वरे से मुहर लगाने के लिये चाँदी की अँगूठी बनाई जिस पर "मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" लिखा हुआ था, उस के बाद हुज़ूर ﷺ ने बादशाहों के नाम मुहर बंद दावती ख़ुतूत भेजने का सिलसिला शुरू फ़र्माया।

नंबर ②: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — कन्धे का अच्छा हो जाना

एक ग़ज़्वे में हज़रत ख़ुबैब बिन यसाफ ؓ को कन्धे और गर्दन के बीच में तलवार लगी, जिस की वजह से वह हिस्सा लटक पड़ा, वह आप ﷺ के पास आए, तो हुज़ूर ﷺ ने उस हिस्से पर अपना लुआबे मुबारक (थूक) लगाया और फिर उस को जोड़ा तो वह चिपक कर ठीक हो गया।

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : २४२७]

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — क़ज़ा नमाज़ों की अदायगी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो कोई नमाज़ पढ़ना भूल गया या नमाज़ के वक़्त सोता रह गया, तो (उस का कफ्फारा यह है के) जब याद आए उसी वक़्त पढ़ ले।" [तिर्मिज़ी : १७७, अन अबी क़तादा ؓ]

फायदा : अगर किसी शख़्स की नमाज़ किसी उज़्र की वजह से छूट जाए या सोने की हालत में नमाज़ का वक़्त गुज़र जाए, तो बाद में उस को पढ़ना फर्ज़ है।

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — घबराहट के वक़्त की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ घबराहट के वक़्त यह दुआ सिखाते थे :

((أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهِ وَشَرِّ عِبَادِهِ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَأَنْ يَحْضُرُونِ))

तर्जमा : पनाह माँगता हूँ मैं अल्लाह के कामिल व मुकम्मल कलिमात के ज़रिये उस के ग़ज़ब और

अज़ाब से और उस के बन्दों के शर से और शयातीन के वसाविस व असरात से और इस बात से के शयातीन मेरे क़रीब हों। [अबू दाऊद : ३८९३, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ॐ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | अहल व अयाल पर ख़र्च करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "आदमी जो कुछ अपने ऊपर, अपनी औलाद, बीवी, महरम और रिश्तेदार पर ख़र्च करता है, तो उस को सदक़ा करने का सवाब मिलेगा।"

[तबरानी औसत : ७०८८, अन जाबिर ॐ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | कुफ्र व नाफ़र्मानी की सज़ा

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख़्स मुंह मोड़ेगा और कुफ्र करेगा, तो अल्लाह तआला उस को बड़ा अज़ाब देगा, फिर उन को हमारे पास आना है, फिर हमारे ज़िम्मे उन का हिसाब लेना है।"

[सूर-ए-ग़ाशिया : २३ ता २६]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | माल जमा कर के ख़ुश होना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख़्स (इन्तेहाई हिर्स व लालच से) माल जमा करता है और (फिर वह ख़ुशी से) उस को बार बार गिनता है और समझता है, के उस का यह माल उस के पास हमेशा रहेगा, हरगिज़ नहीं रहेगा; बल्के अल्लाह तआला उस को ऐसी आग में डालेगा जो हर चीज़ को तोड़ फोड़ कर रख देगी।"

[सूर-ए-हुमज़ह : २ ता ४]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | काफिरों की हालत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "काफिर अपनी ज़बान को एक या दो फरसख़ (यानी तक़रीबन बारा किलो मीटर) तक ज़मीन पर घसीटते हुए चलेगा, लोग उस को रौंदते हुए उस पर चलेंगे।"

[तिर्मिज़ी : २५८०, अन इब्ने उमर ॐ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | ऑपरेशन से फोड़े का इलाज

हज़रत अस्मा बिन्ते अबी बक्र ؓ कहती हैं के मेरी गर्दन में एक फोड़ा निकल आया, जिस का ज़िक्र हुज़ूर ﷺ से किया गया, तो आप ﷺ ने फर्माया : "उसे खोल दो (फोड़ दो) और छोड़ो मत, वरना गोश्त खाएगा और ख़ून चूसेगा, (यानी उस का ख़राब माद्दा अगर वक़्त पर न निकाला गया, तो ज़ख़्म को और ज़ियादा बढ़ा कर गोश्त और ख़ून को बिगाड़ता रहेगा)।"

[मुस्तदरक : ८२५०]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम में से हर एक दाएँ हाथ से खाए और दाएँ हाथ से पिये और दाएँ हाथ से ही (कोई चीज़) ले और दाएँ हाथ से ही (दूसरे को कोई चीज़) दे, क्यों के शैतान अपने बाएँ हाथ से खाता पीता है और बाएँ हाथ से ही लेता देता है।"

[इब्ने माजा : ३२६६, अन अबी हुरैरा ॐ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — रूम के बादशाह हिरक्ल के नाम दावती खत

रसूलुल्लाह ﷺ ने हजरत दिहया कलबी رضي الله عنه के हाथ रूम के बादशाह हिरक्ल के नाम दावती खत भेजा, जिस का मजमून यह था : "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ यह खत अल्लाह के रसूल मुहम्मद (ﷺ)की तरफ से रूम के बड़े बादशाह हिरक्ल के नाम है, जो हिदायत की इत्तेबा करे, उस पर सलामती हो, मैं तुम्हें दीने इस्लाम की तरफ बुलाता हूँ, इस्लाम कबूल कर लो, सलामत रहोगे, अल्लाह तआला तुम को दुगना अज्र अता फर्माएगा और अगर तुम ने नहीं माना तो तमाम रिआया के इस्लाम न लाने का गुनाह भी तुम पर होगा, ऐ अहले किताब ! ऐक ऐसी बात की तरफ आओ, जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान बराबर है, वह यह के हम अल्लाह के अलावा किसी की इबादत न करें और हम में से कोई अल्लाह के अलावा किसी को रब और माबूद न बनाए और अगर तुम नहीं मानते तो गवाह रहो के हम अल्लाह की ताबेदारी करते हैं।" शाहे हिरक्ल ने आप ﷺ के मुबारक खत को अदब व एहतेराम के साथ सोने के क़लमदान में रखा और अबू सुफियान की जबानी हालात सुन कर कहा : मैं खूब जानता हूँ के आप ﷺ सच्चे नबी हैं, लेकिन अगर मैं ने ईमान कबूल कर लिया तो मेरी हुकूमत जाती रहेगी और रूम के लोग मुझे कत्ल कर डालेंगे।

नंबर २ : अल्लाह की कुदरत — पहाड़ों में पानी का ज़खीरा

पहाड़ों में भी अल्लाह तआला की अजीब व ग़रीब कुदरत कार फ़र्मा है, जब बारिश होती है तो पहाड़ों में पानी के ज़खीरे जमा हो जाते हैं, फिर थोड़ा थोड़ा कर के चश्मों, नहरों की शक्ल में पानी बहता है, इस तरह ज़मीन के दूर दराज़ के मकामात तक को सैराब करता है, बाज पहाड़ों पर बर्फ़ की शक्ल में पानी महफ़ूज हो जाता है, जो सूरज की गरमी से बकद्रे ज़रूरत थोड़ा थोड़ा पिघल कर नदियों, नालों और नहरों में जाकर ज़मीन वग़ैरा को सैराब करता है और कहीं कहीं पहाड़ों पर बड़े बड़े हौज़ भी होते हैं, जिस में पानी स्टाक रहता है। यह अल्लाह का कितना बड़ा निज़ाम है। क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : ज़मीन में मानने वालों और यक़ीन करने वालों के लिये बहुत सी निशानियाँ हैं।

[सूर-ए-ज़ारियात : २०]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — सिला रहमी करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग अल्लाह के अहद को तोड़ते हैं, उस को मजबूत कर लेने के बाद और उन तअल्लुकात को तोड़ते हैं, जिन के जोड़ने का अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है और जमीन में फसाद मचाते हैं, यही लोग नुक़सान उठाने वाले हैं।" [सूर-ए-बक़रा : २७]

फायदा : रिश्ते, नाते और तअल्लुक़ात को बरक़रार रखना और उस को खत्म न करना बहुत ज़रूरी है।

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — जुमा के लिये खास लिबास पहनना

हज़रत आयशा رضي الله عنها बयान करती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ के पास दो कपड़े थे, जिसे आप ﷺ जुमा के दिन पहनते थे फिर जब वापस तशरीफ लाते तो उसे लपेट कर रख देते। [अल मतालिबुल आलिया : ७४५]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	शहीद कौन कौन लोग हैं

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "पाँच लोग शहीद हैं। ताऊन में मरने वाला, पेट की बीमारी में मरने वाला, डूब कर मरने वाला, दीवार वग़ैरा के गिरने से मरने वाला और राहे ख़ुदा में क़त्ल होने वाला।"

[बुख़ारी : ६५३, अन अबी हुरैरा ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	शराबी की सज़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : " जिस ने शराब नोशी की, अल्लाह तआला चालीस रात तक उस से ख़ुश नहीं होगा। अगर वह (उसी हाल में) मर गया तो कुफ्र की हालत में मरेगा और अगर तौबा कर ली तो अल्लाह तआला उस की तौबा क़बूल फ़र्माएगा और अगर फिर शराब पी तो अल्लाह तआला उस को दोज़ख़ियों का पीप पिलाएगा।"

[मुस्नदे अहमद : २७०५६, अन अस्मा बिन्ते यज़ीद ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया से बे रग़बती का इनाम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स दुनिया में रग़बत करेगा और उस में लम्बी लम्बी उम्मीदें बाँधेगा, अल्लाह तआला उस के दिल को दुनिया में रग़बत के हिसाब से अंधा करेगा और जो शख़्स दुनिया से बे रग़बती करेगा और अपनी उम्मीदों को कम करेगा, अल्लाह तआला उस को बग़ैर सीखे इल्म अता करेगा और बग़ैर किसी की रहेनुमाई के हिदायत अता फ़र्माएगा।"

[कंज़ुल उम्माल : ६१९१, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	ईमान वालों का ठिकाना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "उन (ईमान वालों) के लिये हमेशा रहने वाले बाग़ात हैं, जिन में वह दाख़िल होंगे और उन के माँ बाप, उन की बीबियों और उन की औलाद में से वह जो (जन्नत) के लायक़ होंगे, वह भी जन्नत में दाख़िल होंगे और हर दरवाज़े से फरिश्ते उन के पास यह कहते हुए दाख़िल होंगे : तुम्हारे दीन पर मज़बूत जमे रहने की बदौलत तुम पर सलामती हो, तुम्हारे लिये आख़िरत का घर कितना उम्दा है।"

[सूर-ए-रअ्द : २३ ता २४]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	फासिद ख़ून का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "बेहतरीन दवा हजामत (पछना लगाना) है, क्योंकि वह फासिद ख़ून को निकाल देता है, निगाह को रौशन और कमर को हलका करता है।"

[मुस्तदरक : ८२५८, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "माँगने वाले को, नरमी से जवाब देना और उस को माफ कर देना उस सदके और ख़ैरात से बेहतर है, जिस के बाद तकलीफ पहुँचाई जाए, अल्लाह तआला बड़ा बे नियाज़ और ग़ैरतमन्द है।"

[सूर-ए-बक़रा : २६३]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(६) जुमादस्सानियह

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — ईरान के बादशाह के नाम दावती ख़त

रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा ؓ को दावती ख़त ले कर शाहे ईरान ख़ुसरू परवेज़ के पास भेजा, जिस का मज़मून यह था।" بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ अल्लाह के रसूल मुहम्मद ﷺ की तरफ से फारस के बादशाह किसरा के नाम, उस पर सलामती हो जो हिदायत की पैरवी करे, अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाए और गवाही दे के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल हैं। मैं तुम्हें अल्लाह के पैग़ाम की दावत देता हूँ, मैं तमाम लोगों की तरफ अल्लाह का रसूल बना कर भेजा गया हूँ ताके जो शख़्स ज़िन्दा रहे उसे (बुरे अन्जाम से) डराऊँ और काफिरों पर हक बात साबित हो जाए, इस्लाम क़बूल कर लो, सलामत रहोगे और अगर तुम ने इन्कार किया तो तमाम मजूस का गुनाह तुम पर होगा।" यह ख़त सुनते ही किसरा आग बगोला हो गया और गुस्से में आकर आप ﷺ के नाम-ए-मुबारक को फाड़ डाला, यह ख़बर सुन कर रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : अल्लाह तआला उस के मुल्क के टुकड़े टुकड़े कर देगा और मेरा दीन व हुकूमत वहाँ तक पहुँचेगी। चुनान्चे किसरा के बेटे ने खुद अपने बाप को क़त्ल कर दिया और उस का मुल्क भी टुकड़े टुकड़े हो गया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — बकरियों का मालिक के पास चले जाना

ख़ैबर में आप ﷺ एक क़िले का मुहासरा किये हुए थे, उतने में एक बकरियाँ चराने वाला आया और इस्लाम क़बूल कर लिया, और फिर कहने लगा : या रसूलल्लाह ! इन बकरियों को मैं क्या करूँ ? आप ﷺ ने फर्माया : "तुम उन के मुँह पर कंकरियाँ मार दो ! अल्लाह तुम्हारी अमानत अदा कर देगा और उन सब बकरियों को अपने अपने घर पहुँचा देगा।" चुनान्चे उस शख़्स ने ऐसा ही किया, तो वह सब बकरियाँ अपने अपने घर पहुँच गईं।

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : १५६३]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — तक्बीरे तहरीमा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "नमाज़ की कुन्जी वुज़ू है, उस का तहरीमा तक्बीर है और नमाज़ को ख़त्म करने वाला तस्लीम है।"

[तिर्मिज़ी : ३, अन अली ؓ]

फायदा : नमाज़ शुरू करते वक़्त जो तक्बीर कही जाती है उस को "तक्बीरे तहरीमा" कहते हैं, नमाज़ के शुरू में तक्बीरे तहरीमा कहना फर्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — मय्यित के रिश्तेदारों को तसल्ली देना

रसूलुल्लाह ﷺ के एक नवासे की वफात का वक़्त क़रीब था। तो आप की साहबज़ादी ने आप को बुला भेजा। आप ने क़ासिदों को वापस करते हुए यह तसल्ली भरे अलफाज़ कहने का हुक्म दिया :

((إِنَّ لِلّٰهِ مَا أَخَذَ وَلَهُ مَا أَعْطَى وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِأَجَلٍ مُسَمًّى فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ))

तर्जमा : जो कुछ अल्लाह ने ले लिया, वह उसी का था और जो दिया है वह भी अल्लाह ही का है और

हर चीज़ अल्लाह तआला के नज़दीक एक मुद्दते मुक़र्ररा तक के लिये है। तुम सब्र करो और सवाब की उम्मीद रखो।

[बुख़ारी : ७३७७, अन उसामा बिन ज़ैद ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	कलिम-ए-तौहीद पढ़ने का सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो भी बन्दा किसी वक़्त भी दिन में या रात में لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ कहता है तो उस के नाम-ए-आमाल से बुराइयाँ मिटा दी जाती हैं और उन की जगह नेकियाँ लिख दी जाती हैं।"

[मुस्नदे अबी याला : ३५१४, अन अनस ﷺ]

नंबर (६): *एक गुनाह के बारे में*	दीन को झुटलाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है :"मैं ने तुम को एक भड़कती हुई आग से डराया है। उस में वही बद बख़्त दाख़िल होगा जिस ने (दीन को) झुटलाया और उस से मुंह मोड़ा।"

[सूर-ए-लैल : १४ ता १६]

नंबर (७): *दुनिया के बारे में*	नाफ़र्मानी और बग़ावत का वबाल

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ लोगो ! तुम्हारी नाफ़र्मानी और बग़ावत का वबाल तुम ही पर पड़ने वाला है, दुनिया की ज़िन्दगी के सामान से थोड़ा फायदा उठालो, फिर तुम को हमारी तरफ वापस आना है, तो हम उन सब कामों की हक़ीक़त से तुम को आगाह कर देंगे जो तुम किया करते थे।"

[सूर-ए-यूनुस : २३]

नंबर (८): *आख़िरत के बारे में*	जन्नत का बाज़ार

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जन्नत में एक बाज़ार है, जिस में ख़रीद व फरोख़्त नहीं है, उस में सिर्फ मर्द और औरतों की सूरतें हैं, उन को देख कर जब आदमी किसी शक्ल की तमन्ना करेगा (के मैं भी उस जैसा होता) तो उस की शक्ल वैसी ही हो जाएगी।"

[तिर्मिज़ी : २५५०, अन अली ﷺ]

नंबर (९): *तिब्बे नब्वी से इलाज*	ज़ुकाम का फौरी इलाज न किया जाए

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "हर इन्सान के सर में जुज़ाम (कोढ़) की जोश मारने वाली एक रग होती है। जब वह जोश मारती है तो अल्लाह तआला उस पर ज़ुकाम मुसल्लत कर देता है, लिहाज़ा ज़ुकाम का इलाज मत करो।"

[मुस्तदरक : ८२६२, अन आयशा ﷺ]

फायदा : हुकमा हज़रात भी ज़ुकाम का फौरी इलाज बेहतर नहीं समझते, बल्के कुछ दिनों के बाद इलाज करने का मश्वरा देते हैं।

नंबर (१०): *नबी ﷺ की नसीहत*	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया है : "अच्छी तरह खाओ, पियो, पहनो और सदक़ा व ख़ैरात किया करो, फुज़ूल ख़र्ची और तकब्बुर से बचो।"

[इब्ने माजा : ३६०५, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हब्श के बादशाह नजाशी के नाम दावती ख़त

रसूलुल्लाह ﷺ ने अम्र बिन उमय्या के ज़रिये हब्श के बादशाह नजाशी के पास दावती ख़त भेजे, जिस में तौहीद व रिसालत और ईमान क़बूल करने की दावत और हज़रत ईसा ؑ के बग़ैर बाप के पैदा होने और उन की नुबुव्वत का तज़केरा किया और ईमान क़बूल करने पर दुनिया व आख़िरत की भलाई व सलामती की ख़ुशख़बरी सुनाई। नजाशी ने आप ﷺ के ख़त को आँखों से लगा कर कहा : मैं गवाही देता हूँ के यह वही नबी हैं जिन का अहले किताब को इन्तेज़ार था और इस्लाम क़बूल कर के ख़त का जवाब लिखवाया के ऐ अल्लाह के नबी ! आप पर अल्लाह की सलामती, रहमतें और बरकतें हों, उस के सिवा कोई माबूद नहीं जिस ने मुझे इस्लाम की हिदायत फ़र्माई, आप का फ़र्मान मेरे पास पहुँचा, हज़रत ईसा ؑ के बारे में जो कुछ आप ने लिखा है वह बिल्कुल दुरुस्त और सच है, आप के चचाज़ाद भाई जाफर मेरे पास आराम से हैं, मैं उन के हाथ पर अल्लाह और उस के रसूल की फर्मांबरदारी की बैत करता हूँ और अपने बेटे इरहा को आप की ख़िदमत में रवाना कर रहा हूँ, अगर आप का मन्शा हो तो मैं ज़रूर आप की ख़िदमत में हाज़िर हूँगा। रज्जबुल मुरज्जब सन ९ हिजरी में नजाशी ने वफात पाई।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — हवा और पानी

अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से हवा को पैदा फ़र्माया, जो हर जान्दार के लिये निहायत ही ज़रूरी चीज़ है, अगर हवा न होती, तो ख़ुश्की के सारे जानवर ज़िन्दा न रह पाते, हवा की वजह से बदन की हरारत मोअ्तदिल रहती है। इसी तरह अल्लाह तआला ने पानी को पैदा फ़र्माया, यह भी जान्दारों के लिये अहम व ज़रूरी चीज़ है, यह अल्लाह तआला की कैसी अजीब क़ुदरत है के ख़ुश्की के जानवरों को ऐसा बनाया के बग़ैर हवा के वह ज़िन्दा नहीं रह सकते और पानी में रहने वाले जानवरों को ऐसा बनाया के बग़ैर पानी के वह ज़िन्दा नहीं रह सकते।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — रुकू व सज्दे अच्छी तरह करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "बद तरीन चोरी करने वाला वह शख़्स है जो नमाज़ में से चोरी कर लेता है। सहाबा ؓ ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! आदमी नमाज़ में से किस तरह चोरी कर लेता है? इर्शाद फर्माया : वह रुकू और सज्दे अच्छी तरह नहीं करता।" [मुस्नदे अहमद : १११३८, अन अबी सईद ख़ुदरी ؓ]

फायदा : रुकू और सज्दे अच्छी तरह न करने को हुज़ूर ﷺ ने चोरी बताया है, इस लिये रुकू और सज्दे को अच्छी तरह इतमेनान से अदा करना ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — नए कपड़े किस दिन से पहनना शुरू करे

रसूलुल्लाह ﷺ जब कभी नए कपड़े पहनते, तो उसे जुमा के दिन पहनते।

[अख़लाक़ुन्नबी लिअबी शैख़ : २४४, अन अनस ؓ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	तौबा करने का सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "सूरज के मग़रिब से निकलने से पहले जो शख़्स तौबा कर लेगा उस की तौबा क़बूल कर ली जाएगी।"

[मुस्लिम : ६८६१, अन अबी हुरैरा ؓ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	वालिदैन के नाफ़र्मान को दुनिया में सज़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह तआला हर गुनाह की सज़ा क़यामत तक मोअख़्ख़र कर देता है। मगर अल्लाह तआला माँ बाप की नाफ़र्मानी करने वाले को मरने से पहले दुनिया ही में सज़ा दे देता है।"

[मुस्तदरक : ७२६३, अन अबी बकरा ؓ]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	दुनिया से बचो

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "यह दुनिया मेरे सामने ज़ाहिर हुई, तो मैं ने उस से कहा : तू मुझ से दूर हट जा, फिर वह जाते हुए कहने लगी : आप तो मुझ से बच गए हैं, मगर आप के बाद आने वाले मुझ से न बच सकेंगे।"

[बैहक़ी फी शोअबिल ईमान : १०१२८, अन अबी बक्र सिद्दीक़ ؓ]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में	ईमान वालों का नूर

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जिस दिन ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतों को देखोगे के उन का नूर (ईमान) उन के आगे और उन की दाहनी तरफ दौड़ता होगा, (उन से कहा जाएगा) आज तुम को ऐसे बागों की ख़ुशख़बरी दी जाती है, जिन के नीचे नहरें जारी हैं, वह उन बाग़ों में हमेशा रहेंगे। यह बहुत ही बड़ी कामयाबी है।"

[सूर-ए-हदीद : १२]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	आसेबी असरात का इलाज

हज़रत अबू लैला ؓ फ़र्माते हैं के मैं ख़िदमते नबवी में हाज़िर था के एक देहाती आया और कहने लगा : मेरे भाई को तकलीफ है। आप ﷺ ने दरयाफ्त फ़र्माया : "क्या तकलीफ है ? उस ने कहा : कुछ असरात हैं। आप ﷺ ने फर्माया : "उसे मेरे पास लाओ।" चुनान्चे लाया गया, तो हुज़ूर ﷺ ने चंद आयतें पढ़ कर दम फर्माया, जिस से वह बिल्कुल ठीक हो गया। वह आयतें यह हैं : सूर-ए-फातिहा, शुरू सूर-ए-बक़रा की चार आयतें और दर्मियान की दो आयतें ﴿وَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ﴾ आयतुल कुर्सी व सूर-ए-बक़रा की आख़री तीन आयतें और सूर-ए-आले इमरान की एक आयत ﴿شَهِدَ اللَّهُ﴾ सूर-ए-आराफ की एक आयत ﴿إِنَّ رَبَّكُمُ﴾ और सूर-ए-मोमिनून की एक आयत ﴿وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ﴾ सूर-ए-जिन की एक आयत ﴿وَأَنَّهُ تَعَالَىٰ﴾ और शुरू सूर-ए-साफ्फात की दस आयतें और सूर-ए-हश्र की आख़री तीन आयतें फिर ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝، قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ और قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝﴾ [इब्ने माजा : ३५४९]

नंबर (१०) : कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम गवाही मत छुपाया करो और जो शख़्स उस (गवाही) को छुपाएगा, तो यक़ीनन उस का दिल गुनहगार होगा और अल्लाह तआला तुम्हारे कामों को ख़ूब जानता है।"

[सूर-ए-बक़रा : २८३]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — ग़ज़्व-ए-ख़ैबर

ख़ैबर मदीना से शिमाल की जानिब सौ मील की दूरी पर है, यहूदी मदीना से जिला वतन हो कर यहाँ मुसलमानों के ख़िलाफ साज़िश करने लगे, उन्होंने मदीना पर हमले के लिये बनू गितफान और दूसरे क़बाइल को मदीना की आधी पैदावार देने के लालच में अपने साथ मिला लिया था, जब रसूलुल्लाह ﷺ को इस की इत्तेला मिली, तो आप ﷺ ने सन ७ हिजरी के शुरू में सोला सौ सहाबा को ले कर ख़ैबर की तरफ रवाना हो गए और वह लोग तक़रीबन २५ हज़ार मौजूद थे, तीन रोज़ बाद एक ऐसे मैदान में पड़ाव डाला जो ख़ैबर और गितफान के दर्मियान था, आप ﷺ ने क़िलों को फतह करना शुरू कर दिया, क़मूस नामी किले का सरदार अरब का मशहूर पहलवान मरहब था, जो हज़ार शहसवारों पर भारी समझा जाता था, बीस दिन जंग जारी रहने के बावजूद किला फतह नहीं हुआ तो आप ﷺ ने फर्माया : "कल मैं झंडा ऐसे शख़्स को दूँगा जिस को अल्लाह और उस के रसूल महबूब रखते हैं और जिस के हाथ पर फतह होगी।" दूसरे रोज़ आप ﷺ ने हज़रत अली ؓ को झंडा दिया। जब हज़रत अली ؓ लशकर ले कर क़िले के दरवाज़े पर पहुँचे तो मरहब ने हज़रत अली ؓ को देख कर लड़ने की दावत दी, तो पहले ही वार में उन्होंने मरहब को क़त्ल कर दिया, फिर यहूदियों ने नाकामी का मुंह देख कर ख़ैबर की आधी पैदावार पर हुज़ूर ﷺ से सुलह कर ली।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — थोड़े से छोहारों में बरकत

रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत उमर ؓ को हुक्म दिया के क़बील-ए-मुज़ैना के चार सौ सवारों को सफर में खाने के लिये कुछ सामान दे दो! हज़रत उमर ؓ ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! मेरे पास कोई चीज़ ऐसी नहीं जो मैं उन को दे सकूँ। आप ﷺ ने फर्माया : "जाओ तो सही", हज़रत उमर ؓ उन लोगों को अपने घर ले गए, घर पर थोड़े से छोहारे रखे हुए थे, वह उन लोगों के दर्मियान तक़सीम कर दिया। हज़रत नोमान बिन मुक़र्रिन ؓ फर्माते हैं : (तक़सीम के बाद भी) छोहारे जितने थे उतने ही बाक़ी रहे। (उन में कमी नहीं हुई)। [बैहक़ी की दलाइलिन्नुबुव्वह : २११२, अन नोमान बिन मुक़र्रिन ؓ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — पर्दा करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "(ऐ औरतो!) तुम अपने घरों में ठहरी रहा करो और दौरे जाहिलिय्यत की तरह बे पर्दा मत फिरो।" [सूर-ए-अहज़ाब : ३३]

फायदा : तमाम मुसलमान औरतों के लिये ज़रूरी है के जब किसी सख़्त ज़रूरत के तहत घर से निकलें तो अच्छी तरह पर्दे का एहतेमाम करते हुए बाहर जाएँ; क्योंकि पर्दा करना तमाम औरतों पर फर्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	सलातुत्तस्बीह की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने चचा अब्बास रज़ि० को सलातुत्तस्बीह की तालीम देते हुए यह दुआ सिखाई :

((سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ))

तर्जमा : अल्लाह की ज़ात पाक है, तमाम तारीफें अल्लाह के लिये हैं और अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं, अल्लाह बहुत बड़ा है। [अबू दाऊद : १२९७, अन इब्ने अब्बास रज़ि०]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह के लिये आजिज़ी इख़्तियार करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "सदक़े से माल में कमी नहीं होती, अफ़्व दरगुज़र पर अल्लाह तआला बन्दे की इज़्ज़त में इज़ाफा फर्माता है और जो शख़्स अल्लाह तआला के लिये आजिज़ी इख़्तियार करता है, अल्लाह तआला उस को बुलन्द मक़ाम अता करता है।" [मुस्लिम : ६५९२, अन अबी हुरैरा रज़ि०]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	ज़लील तरीन लोग

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग अल्लाह और उस के रसूल की मुख़ालफत करते हैं, तो यही लोग (अल्लाह के नज़दीक) बड़े ज़लील लोगों में दाख़िल हैं।" [सूर-ए-मुजादला : २०]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनियावी ज़िन्दगी पर ख़ुश न होना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अल्लाह तआला जिस को चाहता है, रोज़ी में कुशादगी देता है और जिस को चाहता है तंगी करता है; और यह लोग दुनिया की ज़िन्दगी पर ख़ुश होते हैं (और उस के ऐश व इशरत पर इतराते हैं) हालाँके आख़िरत के मुक़ाब्ले में दुनिया की ज़िन्दगी एक थोड़ा सा सामान है।" [सूर-ए-रअद : २६]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले जन्नत की सफें

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अहले जन्नत की एक सौ बीस सफें होंगी, उन में अस्सी सफें इस उम्मत की और चालीस बाक़ी उम्मतों की होंगी।" [तिर्मिज़ी : २५४६, अन बुरैदा रज़ि०]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बीमारी से मुतअल्लिक़ अहम हिदायत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम्हें मालूम हो के फुलाँ जगह ताऊन (प्लेग) फैला हुआ है, तो वहाँ मत जाओ और जिस जगह तुम रह रहे हो वहाँ ताऊन (प्लेग) फैल जाए तो उस जगह से (बिला ज़रूरत) मत निकलो।" [बुख़ारी : ५७२८, अन उसामा बिन ज़ैद रज़ि०]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम में से किसी को वलीमा की दावत दी जाए, तो उस में हाज़िर होना चाहिये।" [बुख़ारी : ५१७३, अन इब्ने उमर रज़ि०]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

९ जुमादस्सानियह

नंबर ①: इस्लामी तारीख — ग़ज़्व-ए-मूता

रसूलुल्लाह ﷺ ने दावते इस्लाम के लिये मुख़्तलिफ बादशाहों के नाम ख़ुतूत रवाना किए थे। उन में एक बसरा के बादशाह शुरहबील बिन अम्र के नाम भी रवाना किया था, जो रूमी सलतनत के मातहत था। हारिस बिन उमैर ؓ जब ख़त ले कर शुरहबील के पास पहुँचे तो यह ख़त पढ़ कर आग बगोला हो गया और हज़रत हारिस ؓ को शहीद कर दिया; चूंके कासिदों का क़त्ल किसी कौम में भी जाइज़ नहीं था; इस लिये रसूलुल्लाह ﷺ ने तीन हज़ार मुजाहिदों का एक लश्कर उन से मुक़ाब्ले के लिये मुल्के शाम की तरफ रवाना किया, शुरहबील ने उन के मुक़ाब्ले के लिये एक लाख की फौज तय्यार की, मुक़ाब्ला बड़ा सख़्त था; मुसलमान सिर्फ तीन हज़ार और कुफ्फार एक लाख थे; मुसलमानों ने चाहा के हुज़ूर ﷺ को इस की ख़बर की जाए, मगर अब्दुल्लाह बिन रवाहा ؓ ने हिम्मत दिलाई और कहा: हम दुश्मन का मुक़ाब्ला तादाद और कुव्वत की बुनियाद पर नहीं करते, हम तो उन का मुक़ाब्ला उस दीन की ताक़त से करते हैं, जिस के ज़रिये अल्लाह ने हमें इज़्ज़त दी है; आगे बढ़ो, दो कामयाबियों में से एक तुम्हें ज़रूर मिलेगी, फतह या शहादत। उस के बाद मुसलमान आगे बढ़े और अल्लाह ने उन्हें फतह नसीब फ़रमाई। सहाबा ؓ की यह तारीख़ ईमान को ताज़ा करती है, कहाँ एक लाख कुफ्फार और उन के मुक़ाब्ले में सिर्फ तीन हज़ार मुसलमान! इस के बावजूद मुसलमानों ही को फतह हासिल हुई।

नंबर ②: अल्लाह की कुदरत — पलकों में अल्लाह की हिकमत

आँखों की हिफाज़त के लिये अल्लाह तआला ने पलकों की शक्ल में बेहतरीन दो नाज़ुक पर्दे बनाए, आँखों की हिफाज़त के अलावा यह पलकें चेहरे के हुस्न व ज़ीनत में इज़ाफा करती हैं, इसी लिये उस के बालों को एक अन्दाज़े पर रखा, न ज़ियादा बड़ा के आँखों को तकलीफ हो और न ज़ियादा छोटा के आँखों के लिये नुक़सानदेह हो, फिर अल्लाह तआला ने आँसू को नमकीन बनाया ताके आँखों का मैल कुचैल साफ हो जाए, पल्कों के दोनों किनारों को माइल और झुका हुआ बनाया ताके आँसुओं के ज़रिये मैल कुचैल आँखों के किनारों से बह कर बाहर जा सके, फिर उस में हरकत की कुदरत रखी के कोई भी मामूली चीज़ या गर्द व गुबार आँख की तरफ आती है तो आँखों को ख़तरे से आगाह कर के पूरी हिफाज़त करती है, गोया आँखों की हिफाज़त के लिये उस पर दो बेहतरीन पर्दे लगा दिये हैं, जो ज़रूरत के वक़्त खुल जाते हैं और ज़रूरत न हो तो बंद हो कर हिफाज़त करते हैं।

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — जुमा के लिये ख़ुत्बा देना

रसूलुल्लाह ﷺ जुमा के रोज़ खड़े हो कर ख़ुत्बा देते थे (उस के बाद) बैठ जाते फिर (दूसरे ख़ुत्बे के लिये) खड़े होते थे।

[मुस्लिम: १९९४, अन इब्ने उमर ؓ]

फायदा : जुमा के रोज़ जुमा की नमाज़ से पहले ख़ुत्बा देना ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	सज्दे में जाने और उठने का तरीक़ा

हज़रत वाइल बिन हुज्र ﷺ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ जब सज्दे में जाते तो दोनों घुटने हाथों से पहले रखते और जब उठते तो हाथों को घुटनों से पहले उठाते। [तिर्मिज़ी : २६८]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	लोगों से हुस्ने सुलूक करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मख़्लूक सारी की सारी अल्लाह तआला का कुम्बा है, पस अल्लाह तआला को वह शख़्स बहुत महबूब है जो उस कुम्बे के साथ एहसान करे।"

[बैहक़ी फी शोअबिल ईमान : ७१९४, अन इब्ने मसऊद ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	बात चीत बंद रखने का वबाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "किसी मुसलमान के लिये तीन दिन से ज़ियादा अपने भाई से बात चीत बंद रखना जाइज़ नहीं। जिस ने तीन दिन से ज़ियादा बात बंद रखी और मर गया तो जहन्नम में दाख़िल होगा।" [अबू दाऊद : ४९१४, अन अबी हुरैरा ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया में ख़ुद को मशगूल न करो

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम में से क़यामत के दिन मुझ से सब से ज़ियादा क़रीब वह शख़्स होगा, जो दुनिया से इसी तरह निकल आए, जिस तरह मैं छोड़ कर जा रहा हूँ, अल्लाह की क़सम! मेरे सिवा तुम में से हर एक दुनिया की किसी न किसी चीज़ में फँसा हुआ है।"

[मुस्नदे अहमद : २०९४७, अन अबी ज़र ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जन्नत का मौसम

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "उन (अहले ईमान) को सब्र के बदले में जन्नत और रेशमी लिबास अता किया जाएगा, उन की हालत यह होगी के जन्नत में मसेहरियों पर तकिये लगाए बैठे होंगे, वहाँ न उन को गर्मी का एहसास होगा और न सर्दी महसूस करेंगे।" [सूर-ए-दहर : १२ ता १३]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	नज़र लगने से हिफाज़त

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस शख़्स ने कोई ऐसी चीज़ देखी जो उसे पसन्द आगई, फिर उस ने ((مَا شَاءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ)) कह लिया तो उस की नज़र से कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा।"

[कंज़ुल उम्माल : १७६६६, अन अनस ﷺ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "(ऐ मुहम्मद!) आप कह दीजिये के अगर तुम अल्लाह तआला से मुहब्बत रखते हो, तो तुम लोग मेरी पैरवी करो! अल्लाह भी तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा।" [सूर-ए-आले इमरान : ३१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

१० जुमादस्सानियह

नंबर १ : इस्लामी तारीख — मुश्रिकीने मक्का की अहद शिकनी

मुसलमान और मुश्रिकीने मक्का के दर्मियान हुदैबिया के मौक़े पर जो मुआहदा हुआ था, मुशिकीन ने उस की ख़िलाफ वरज़ी करते हुए अपने हलीफ (यानी जिन के साथ मदद का मुआहदा हो) क़बील-ए-बनू बक्र के साथ मिल कर मुसलमानों के हलीफ क़बील-ए-बनू ख़ुज़ाआ पर हमला कर के बहुत से आदमियों को क़त्ल कर दिया, माल व अस्बाब लूट लिये, हत्ता के हरम में पनाह लेने के बावजूद उन की ख़ूंरेज़ी की, तो आप ﷺ से क़बील-ए-बनू ख़ुज़ाआ ने मुश्रिकीने मक्का की अहद शिक्नी पर मदद की अपील की, तब हुज़ूर ﷺ ने मुश्रिकीने मक्का से दियत (ख़ून बहा) अदा करने या मुआहदा तोड़ने की शर्त रखी, तो उन्होंने अमन का मुआहदा ख़त्म कर दिया, लिहाज़ा आप ﷺ उन की बद अहदी और क़त्ल व गारतगिरी का बदला लेने के लिये रमज़ान सन ८ हिजरी में दस हज़ार सहाबा का अज़ीमुश्शान लश्कर ले कर मदीना से रवाना हुए और मर्रुज़्ज़हरान पहुँच कर ख़ेमा ज़न हो गए। इस्लाम का सख़्त मुख़ालिफ और दुश्मन अबू सुफियान जासूस बन कर लश्करे इस्लाम का जाइज़ा लेने आए, तो हज़रत अब्बास رضی اللہ عنہ ने उसे पहचान लिया और उन्हें पकड़ कर आप ﷺ के पास ले गए, उन्हें देख कर बाज़ सहाबा ने क़त्ल करना चाहा, लेकिन आप ﷺ ने रहम व करम का मामला करते हुए फर्माया : ऐ अबू सुफियान ! क्या अब भी तुम्हारे ईमान लाने का वक़्त नहीं आया ? बिल आख़िर वह ईमान में दाख़िल हो गए, फिर हुज़ूर ﷺ ने बुलन्द अख़्लाक़ का मामला करते हुए फर्माया : आज जो अबू सुफियान के घर में या ख़ान-ए-काबा में पनाह लेगा वह भी अमान में है, और जो काई अपने घर का दरवाज़ा बंद कर लेगा उस को भी अमान है।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — ठंडी का दूर हो जाना

हज़रत हुज़ैफा رضی اللہ عنہ फर्माते हैं : ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर सख़्त ठंडी हवा चल रही थी, ऐसे में रसूलुल्लाह ﷺ ने सहाबा से फर्माया : है कोई जो मेरे पास दुश्मनों के क़ाफले की ख़बर ले आए ? तो (ठंडी की वजह से) कोई भी खड़ा न हुआ, दूसरी मर्तबा फर्माया : फिर भी कोई खड़ा न हुआ, जब तीसरी मर्तबा भी कोई खड़ा न हुआ, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : ऐ हुज़ैफा ! तुम खड़े हो जाओ और दुश्मनों के क़ाफले की ख़बर ले कर आओ, हज़रत हुज़ैफा رضی اللہ عنہ फर्माते हैं, चूँकि रसूलुल्लाह ﷺ ने अब मेरा नाम ले ही लिया था, इस लिये खड़ा होना ज़रूरी था, बहर हाल मैं खड़ा हो गया और वहाँ से चला (तो रसूलुल्लाह ﷺ की बात मानने की बरकत से) मुझे रास्ते में ज़र्रा बराबर ठंडी महसूस नहीं हुई, यहाँ तक के मैं वापस भी आगया, ऐसा लग रहा था गोया के मैं सख़्त गर्मी में चल रहा हूँ।" [मुस्लिम : ४६४०]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — गुस्ल के लिये तयम्मुम करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अगर तुम बीमार हो जाओ या सफर में हो या तुम में से कोई शख़्स अपनी तबई ज़रूरत (यानी पेशाब पाख़ाना कर के) आया हो या अपनी बीवी से मिला हो और तुम पानी (के इस्तेमाल पर) ताक़त न रखते हो, तो ऐसी हालत में तुम पाक मिट्टी का इरादा करो (यानी तयम्मुम कर लो)।" [सूर-ए- मायदा : ६]

फायदा : तयम्मुम का तरीक़ा यह है के दोनों हाथों को ज़मीन पर मार कर चेहरे पर मसह कर लें, फिर दोबारा ज़मीन पर मार कर दोनों हाथों पर कोहनियों समेत मसह कर लें।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	नमाज़े जनाज़ा की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ जब (बालिग़) मय्यित की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाते तो यह दुआ पढ़ते :

((اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا

اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلَى الْاِيْمَانِ))

[इब्ने माजा : १४९८, अन अबी हुरैरा ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	कुर्आन के हर हर्फ पर दस नेकी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने कुर्आन का एक हर्फ भी पढ़ा उस को दस नेकियाँ मिलती हैं। फिर फर्माया : हम यह नहीं कहते के ((الٓمٓ)) पढ़ने पर दस नेकियाँ मिलती हैं, बल्के अलिफ पर दस नेकियाँ, लाम पर दस नेकियाँ और मीम पर दस नेकियाँ मिलती हैं।"

[फज़ाइले क़ुर्आन लिर्राज़ी : १६/१, अन औफ बिन मालिक ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	अल्लाह तआला के साथ शिर्क करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "बिला शुबा अल्लाह तआला शिर्क को माफ नहीं करेगा, शिर्क के अलावा जिस गुनाह को चाहेगा माफ कर देगा और जिस ने अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक किया, तो उस ने अल्लाह के ख़िलाफ बहुत बड़ा झूट बोला।" [सूर-ए-निसा : ४८]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की चीज़ें ख़त्म होने वाली हैं

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो कुछ तुम्हारे पास (दुनिया में) है वह (एक दिन) ख़त्म हो जाएगा और जो अल्लाह तआला के पास है वह हमेशा बाक़ी रहने वाली चीज़ है।" [सूर-ए-नह्ल : ९६]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत के दिन लोगों का हाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "क़यामत के दिन लोग नंगे पैर, नंगे बदन और बग़ैर ख़तना के उठाए जाएँगे, जिस तरह वह पहली मर्तबा पैदा किए गए थे।" [तिर्मिज़ी : २४२३, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	जुज़ाम (कोढ़) का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "सात दिन तक रोज़ाना सात मर्तबा मदीना की अजवा खजूरों का इस्तेमाल जुज़ाम (कोढ़) के लिये फायदेमन्द है।" [कंज़ुल उम्माल : २८३३२, अन आयशा ؓ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम में से कोई खाना खाए तो उसे अपनी उंगलियों को चाट लेना चाहिये, क्योंकि उसे मालूम नहीं के उस की कौन सी उंगली में बरकत है।"

[मुस्लिम : ५३०७, अन अबी हुरैरा ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — फतहे मक्का और आम माफी का एलान

रसूलुल्लाह ﷺ जुमा की सुबह २१ रमज़ानुलमुबारक सन ८ हिजरी को दस हजार सहाबा ؓ का अज़ीमुश्शान लश्कर ले कर सूर-ए-फतह तिलावत करते हुए फातेहाना शान से मक्का में दाख़िल हुए, अहले मक्का ने जो ज़ुल्म व सितम तेरा साला दौर में हुज़ूर ﷺ और सहाबा ؓ पर ढाया था, आज वह यह सोच रहे थे के हम से हर एक ज़ुल्म का बदला लिया जाएगा, मगर रहमते आलम ﷺ के अफ्व व दरगुज़र का हाल देखिये के जिन दुश्मनों ने आप ﷺ को गालियाँ दी थीं, रास्ते में काँटे बिछाए थे, जिस्मे अतहर पर नमाज़ की हालत में गन्दगी डाली थी, आप ﷺ को दिवाना और पागल कहा था, हत्ता के महबूब वतन मक्का छोड़ने पर मजबूर किया था और हिजरत के बाद भी मदनी ज़िन्दगी में आप ﷺ के साथ जंग करते रहे और क़त्ल की साज़िशें भी करते रहे, मगर कुरबान जाइये हुज़ूर ﷺ की ज़ाते अक़दस पर के आप ﷺ ने ऐसे तमाम ज़ालिम दुश्मनों के हक़ में आम माफी का एलान फ़र्मा दिया। आप ﷺ के इस रहम व करम को देख कर बहुत से लोग इस्लाम में दाख़िल हो गए। मोहसिने इन्सानियत ने अपने जानी दुश्मनों के साथ जिस हुस्ने सुलूक, अच्छे अख़्लाक़ और रहम व करम का मामला किया, दुनिया की तारीख़ इस की मिसाल पेश नहीं कर सकती है।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — इन्सान के होंट कुदरत की निशानी

इन्सान के चेहरे का एक अहम उज़्व होंट है, अल्लाह तआला ने मुंह बंद करने के लिये बतौरे दरवाज़ा दो होंट बनाए के ज़रूरत पर खोले जा सकें और जब ज़रूरत न हो तो बंद रहें ताके मुंह में मुज़िर चीज़ें घुस कर नुक़सान न पहुँचा सकें, अगर होंट न होते, तो दाँत नज़र आते और मुंह बदनुमा मालूम होता और ग़ैर महफ़ूज़ भी रहता, नीज़ उन होंटों से बात करने में बड़ी मदद मिलती है, उन की मुख़्तलिफ हरकात से बाज़ हुरूफ पैदा होते हैं और इन्सान अपनी बात को होंटों की मदद से ज़ाहिर करता है, इस के अलावा इन होंटों से खाने में भी बड़ी मदद मिलती है, होंट अल्लाह तआला की सनत कि निशानी है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ में इमाम की पैरवी करना

हज़रत अबू हुरैरा ؓ फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ हमें सिखाते थे के "(नमाज़ में) इमाम से पहले रुक्न अदा न किया करो।" [मुस्लिम : ९३२]

खुलासा : अगर इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ रहा हो तो तमाम अरकान को इमाम के पीछे अदा करना चाहिये, इमाम से आगे बढ़ना जाइज़ नहीं है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — मुलाक़ात के लिये घर पर तशरीफ ले जाना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़ैस ؓ फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ अपने अहबाब से अकसर मुलाक़ात करते रहते थे। अगर किसी ख़ास आदमी से मुलाक़ात का ख़याल होता तो उस के घर तशरीफ ले जाते। अगर आम लोगों से मुलाक़ात का इरादा होता, तो मस्जिद में तशरीफ ले जाते, (वहाँ आम लोगों से नमाज़ के वक़्त मुलाक़ात हो जाती)। [मुस्नदे अहमद : १९०६९]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह के वास्ते लोगों से मुलाक़ात करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "आला दरजे वाले जन्नती निचले दर्जात वालों की ज़ियारत करेंगे, लेकिन नीचे वाले जन्नती ऊपर वाले जन्नतियों की ज़ियारत नहीं कर सकेंगे, हाँ मगर वह आदमी जो दुनिया में अल्लाह के वास्ते दूसरों की जियारत करता था वह जन्नत में जहाँ चाहेगा ज़ियारत के लिये जा सकेगा।"

[अल जामे लिइब्ने वहब : १६०]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	चंद चीज़ें जिन से बचना ज़रूरी है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने बदफाली ली या उस के लिये बदफाली ली गई या ग़ैब की बातें बताई या उस के लिये गैब की बातें बताई गई या उस ने सेहर किया या उस के लिये सेहर किया गया, तो वह हम में से नहीं और जो आदमी किसी ग़ैब की बातें बताने वाले के पास गया और उस की बातों की तस्दीक की, तो उस ने मुहम्मद ﷺ पर नाज़िल होने वाले दीन का इन्कार कर दिया।"

[मुस्नदे बज़्ज़ार : ३०२३, अन इमरान बिन हुसैन رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया से बे रग़बती का दर्जा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "दुनिया की बे रगबती से बढ़ कर और कोई इबादत नहीं।"

[कंज़ुल उम्माल : ६१७३, अन अम्मार बिन यासिर رضي الله عنه]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत के दिन बदला

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "कितना (बुरा) हाल होगा जब के हम उन लोगों को उस दिन जमा करेंगे, जिस के आने में कोई शक नहीं, और (उस दिन) हर एक आदमी को उस के आमाल का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।" [सूर-ए-आले इमरान : २५]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बुख़ार का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "बुख़ार जहन्नम के असर के फैलाव का नतीजा है, लिहाज़ा उसे पानी से बुझाओ।"

[बुख़ारी : ५७२३, अन इब्ने उमर رضي الله عنه]

फायदा : पानी में तर किये हुए कपड़े को निचोड़ कर बदन को पोंछना या पेशानी पर तर की हुई पट्टी रखना बुख़ार में मुफीद है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम अल्लाह तआला और उस के रसूल की इताअत करो और आपस में झगड़ा न करो, वरना तुम बुज़दिल हो जाओगे और दुश्मन के मुक़ाब्ले में तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी (मुसीबत के वक़्त) सब्र करो, बेशक अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है।"

[सूर-ए-अनफाल : ४६]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(१२) जुमादस्सानियह

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — ग़ज़्व-ए-हुनैन

"हुनैन" मक्का और ताइफ के दर्मियान एक वादी है। फतहे मक्का के बाद मुल्के अरब के लोग जोक़ दर जोक़ इस्लाम की सच्चाई को देख कर दीने हक़ क़बूल कर रहे थे, लेकिन इस माहौल में भी क़बील-ए-हवाज़िन और क़बील-ए-सक़ीफ के मुश्रिकीन अपनी जंगी ताक़त व कुव्वत पर घमंड करते हुए इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ तक़रीबन बीस हजार पर मुश्तमिल लश्कर ले कर मुक़ाब्ले के लिये निकल पड़े। रसूलुल्लाह ﷺ को जब इस की ख़बर हुई, तो १० शव्वाल सन ८ हिजरी में दस हज़ार मुसलमानों के साथ मैदान में पहुँचे, उस मौक़े पर चंद मुसलमानों की निगाह अल्लाह से हट कर अपनी तादाद और असलहा पर चली गई और यह बात ज़बान से निकल गई के आज हमारी ताक़त को कोई शिकस्त नहीं दे सकता। अल्लाह तआला को मुसलमानों की यह बात पसन्द न आई। इस लिये उन की इबरत के लिये अल्लाह तआला ने शुरू में उन के क़दम उखाड़ दिये, ऐसी हालत में भी हुज़ूर ﷺ यह कहते हुए अपनी बहादुरी का मुज़ाहरा कर रहे थे أَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِبْ - أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبْ उस वक़्त हुज़ूर ﷺ के इशारे पर हज़रत अब्बास रज़ि. ने मुसलमानों को आवाज़ लगाई, चुनान्चे आवाज़ सुनते ही मुसलमान आप ﷺ के इर्द गिर्द जमा हो गए और फिर देखते ही देखते शिकस्त, फतह व नुसरत में बदल गई।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — एक प्याला खाने में बरकत

हज़रत समुरा बिन जुन्दुब रज़ि. फ़र्माते हैं के एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ के पास कहीं से खाने का एक प्याला आया, तो उस को आप ﷺ ने सहाबा रज़ि. को खिलाया, एक जमात खाना खा कर फारिग होती फिर दूसरी जमात बैठती, यह सिलसिला सुबह से ज़ोहर तक चलता रहा, एक आदमी ने हज़रत समुरा रज़ि. से पूछा क्या खाना बढ़ता था ? तो हज़रत समुरा रज़ि. ने फर्माया : इस में तअज्जुब की क्या बात है, खाना आसमान से उतरता था।

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : २३४२]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — हलाल पेशा इख़्तियार करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह के हुक़ूक़ व फराइज़ के बाद हलाल रोज़ी कमाना भी फर्ज़ है।"

[तबरानी कबीर : ९८५१, अन अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि.]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — चन्द चीज़ों से पनाह मांगने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ पढ़ते थे :

((اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَعُوذُبِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْجُبْنِ وَالْهَرَمِ وَأَعُوذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं बे बसी, काहिली, बुज़दिली और हद से ज़ियादा बुढ़ापे से पनाह माँगता हूँ और ज़िन्दगी व मौत के फ़ितने से भी पनाह माँगता हूँ।

[बुख़ारी : ६३६७, अन अनस बिन मालिक रज़ि.]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह के वास्ते खाना खिलाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मुझे अपने मुसलमान भाई को अल्लाह के वास्ते सिर्फ एक लुक़मा खिलाना एक दिरहम सदक़ा करने से ज़ियादा महबूब है और अल्लाह के वास्ते किसी भाई को एक दिरहम देना दस दिरहम सदक़ा करने से ज़ियादा महबूब है और अल्लाह के वास्ते किसी भाई को दस दिरहम देना एक गुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा महबूब है।" [अलजामे लिइब्ने वहब : २१५]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	सच्ची गवाही को छुपाना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम गवाही मत छुपाया करो, और जो शख़्स इस (गवाही) को छुपाएगा तो बिला शुबा उस का दिल गुनहगार होगा और अल्लाह तआला तुम्हारे किए हुए कामों को ख़ूब जानता है।" [सूर-ए-बक़रा : २८३]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया चाहने वालों का अन्जाम

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो कोई दुनिया ही चाहता है, तो हम उस को दुनिया में जितना चाहते हैं, जल्द देते हैं, फिर हम उस के लिये दोज़ख़ मुक़र्रर कर देते हैं, जिस में (ऐसे लोग क़यामत के दिन) ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ धकेल दिये जाएँगे।" [सूर-ए-बनी इस्राईल : १८]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़ब्र का अज़ाब बरहक़ है

रसूलुल्लाह ﷺ दो क़ब्रों के क़रीब से गुज़रे, आप ﷺ ने फ़र्माया : "इन दो क़ब्र वालों को अज़ाब हो रहा है, उन्हें किसी बड़े गुनाह की वजह से अज़ाब नहीं दिया जा रहा है, उन में से एक तो पेशाब (के छींटों) से नहीं बचता था और दूसरा चुगल ख़ोरी किया करता था।" [बुख़ारी : २१८, अन इब्ने अब्बास ؓ]

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम हुआ के क़ब्र का अज़ाब बरहक़ है और इन्सानों को अपने गुनाहों की सज़ा क़ब्र से ही मिलनी शुरू हो जाती है।

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	कलौन्जी में हर बीमारी का इलाज है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "(तुम इस कलौन्जी को इस्तेमाल करो) क्योंकि इस में मौत के अलावा हर बीमारी की शिफ़ा मौजूद है।" [बुख़ारी : ५६८७, अन आयशा ؓ]

फ़ायदा : अल्लामा इब्ने क़य्यिम رحمه الله फ़र्माते हैं : इस के इस्तेमाल से उफारा (पेट फूलना) ख़त्म हो जाता है, बलग़मी बुख़ार के लिये नफ़ा बख़्श है, अगर उस को पीस कर शहद के साथ माजून बना लिया जाए और गर्म पानी के साथ इस्तेमाल किया जाए, तो गुरदे और मसाना की पथरी को गला कर निकाल देती है। [तिब्बे नबवी]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत मआज़ ؓ को यमन भेजते वक़्त फ़र्माया : "मज़लूम की बददुआ से बचना, क्योंकि उस के और अल्लाह के दर्मियान कोई रोक नहीं है।" (यानी मज़लूम की दुआ बिला रोक टोक अल्लाह के दरबार में पहुँच कर क़बूल होती है।) [बुख़ारी : २४४८, अन इब्ने अब्बास ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

⑬ जुमादस्सानियह

नंबर ①: इस्लामी तारीख़ — ग़ज़्व-ए-तबूक

फतहे मक्का के बाद पूरे अरब में इस्लामी दावत व तब्लीग़ की असल हक़ीक़त वाज़ेह हो गई और लोग इस्लाम में जौक़ दर जौक़ दाख़िल होने लगे, ऐसे मौके पर रूमी हुकूमत ने अपने लिये ख़तरा महसूस करते हुए मदीना पर हमले का इरादा कर लिया और उस की तय्यारियाँ शुरू कर दी। शाम से आने वाले एक क़ाफ़ले ने मुसलमानों को इस की इत्तेला दी। रूम की सलतनत आधी दुनिया पर हुकूमत करती थी और उस ज़माने में सब से बड़ी ताक़त शुमार होती थी, इस लिये मुसलमान बहुत परेशान थे। एक तरफ बे सरो सामानी की हालत और अरब की सख़्त गरमी ज़ोरों पर थी और दूसरी तरफ दूर दराज़ का सफर था। मगर ख़ामोश बैठना भी किसी तरह मुनासिब नहीं था। चुनान्चे रसूलुल्लाह ﷺ ने जंग की तय्यारी का एलान कर दिया और माहे रजब सन ९ हिजरी में तीस हज़ार के लश्कर को ले कर आप ﷺ तबूक के लिये रवाना हुए। मुसलमानों के इस दीलेराना इक़दाम की वजह से रूमियों पर बड़ा असर हुआ और उन्होंने हमला करने का इरादा छोड़ दिया और बहुत सारे क़बीले के सरदारों ने सुलह कर ली। यहाँ एक माह क़याम करने के बाद रसूलुल्लाह ﷺ बग़ैर जंग किए फतहमन्दी के साथ मदीना वापस हो गए। यह आप ﷺ की ज़िन्दगी का आख़री ग़ज़्वा था।

नंबर ②: अल्लाह की क़ुदरत — मुंह में रतूबत (थूक)

अल्लाह तआला ने मुंह में तरी को पोशीदा रखा है के खाना मुंह में रख कर चबाते वक़्त वह तरी पैदा होती है और खाने के साथ मिल कर उस के हज़्म होने में मदद करती है, आम हालात में वह तरी हल्की रहती है, जिस से हलक़ तर रहे और सूख़ने न पाए, वरना आदमी बात ही न कर सके, अगर तरी बिल्कुल न रहे और मुंह एक दम सूखा रहे तो दम घुटने लगे और इन्सान ज़िन्दा न रह सके, और अगर तरी खाने के अलावा भी मुंह में पैदा होती रहे तो बात करने में दुश्वारी हो और मुंह खोलना मुशकिल हो जाए, वह कैसी क़ुदरत वाली ज़ात है जो खाने के वक़्त में रतूबत को ज़ियादा मिक़्दार में पैदा करती है और आम हालात में नारमल रखती है।

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — मय्यित का क़र्ज़ उस के माल से अदा करना

हज़रत अली ؓ फर्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने क़र्ज़ को वसिय्यत से पहले अदा करवाया, हालाँके तुम लोग (क़ुर्आन में) वसिय्यत का तज़केरा क़र्ज़ से पहले पढ़ते हो। [तिर्मिज़ी : २१२२]

फायदा : अगर किसी शख़्स ने क़र्ज़ लिया और उसे अदा करने से पहले इन्तेक़ाल कर गया, तो कफन दफन के बाद माले वरासत में से सब से पहले क़र्ज़ अदा करना ज़रूरी है, चाहे सारा माल उस की अदाएगी में ख़त्म हो जाए।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	इस्तिग़फार कसरत से करना

हज़रत अबू हुरैरा ؓ फ़र्माते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को फर्माते हुए सुना के ख़ुदा की क़सम ! मैं दिन में सत्तर से ज़ियादा मर्तबा अल्लाह तआला से तौबा व इस्तिगफार करता हूँ। [बुख़ारी : ६३०७]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अपने अख़्लाक़ दुरूस्त करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "कामयाब हो गया वह आदमी जिस ने अपने दिल को ईमान के लिये फ़ारिग़ कर दिया और उसे सही सालिम रखा और अपनी ज़बान को सच्चा बनाया, अपने नफ़्स को नफ्से मुतमइन्ना और अख़्लाक़ को दुरूस्त बनाया और कानों को हक़ बात सुनने का और आँखों को अच्छी चीज़ों को देखने का आदी बनाया।" [मुस्नदे अहमद : २०८०३, अन अबी ज़र ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	किसी के सतर को देखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह तआला लानत करते हैं, उस शख़्स पर जो जान बूझ कर किसी के सतर को देखता हो और उस पर भी लानत है जो बिला उज़्र सतर दिखलाता हो।"
[बैहक़ी फी शोअबिल ईमान : ७५३८, अन हसन मुरसलन]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	माल जमा करने का नुक़सान

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम माल व दौलत जमा न करो, क्योंकि उस की वजह से तुम दुनिया की तरफ माइल हो जाओगे।" [तिर्मिज़ी : २३२८, अन इब्ने मसऊद ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	परहेज़गारों की नेअ्मत

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "(क़यामत के दिन) परहेज़गार लोग (जन्नत) के सायों में और चशमों में और पसन्दीदा मेवों में होंगे (उन से कहा जाएगा) अपने (नेक) आमाल के बदले में ख़ूब मज़े से खाओ पियो हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। उस दिन झुटलाने वालों के लिये बड़ी ख़राबी होगी।" [सूर-ए-मुरसलात : ४१ ता ४५]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मिस्वाक के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मिस्वाक मुंह की सफाई और ख़ुदा की रज़ामन्दी का ज़रिया है।"
[नसई : ५, अन आयशा ؓ]

ख़ुलासा : अल्लामा इब्ने क़य्यिम رحمه الله मिस्वाक के फवाइद में लिखते हैं, यह दाँतों में चमक और मसूढ़ों में मज़बूती पैदा करती है, इस से मुंह की बदबू ख़त्म हो जाती है और दिमाग़ पाक व साफ हो जाता है, यह बल्ग़म को काटती है, निगाह को तेज़ करती है और आवाज़ को साफ करती है। [तिब्बे नबवी]

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला का ख़ूब ज़िक्र किया करो और सुबह व शाम उस की पाकी बयान किया करो।" [सूर-ए-अहज़ाब : ४१ ता ४२]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — ग़ज़्वात व सराया पर एक नज़र

रसूलुल्लाह ﷺ ने जिस लड़ाई में बज़ाते ख़ुद शिर्कत फ़र्माई है उस को "ग़ज़वा" कहते हैं और जिस में सिर्फ सहाब-ए-किराम ؓ को भेजा उस को "सरिय्या" कहते हैं। आप ﷺ हमेशा दुश्मनों के साथ सुलह के ख़्वाहिशमन्द रहते थे, मुसलमानों ने जंग की कमी भी इब्तेदा नहीं की, बल्के ख़ुद दुश्मनों ने हमला किया या हमले का इरादा किया, तो मुसलमानों ने उस का मुदाआना जवाब दिया, इस्लाम की तमाम जंगें इस बात की शहादत के लिये काफी हैं। आप ﷺ के ग़ज़वात की तादाद २७ और सराया की तादाद ४३ है। बाज़ मोअर्रिख़ीन ने दोनों की तादाद ८२ बताई है। इन तमाम जंगों में मुसलमान शहीदों की तादाद २५९ और मुख़ालिफ मक़तुलीन की तादाद ७५९ है। जिन की मजमूई तादाद सिर्फ १०१८ होती है। इतनी कम तादाद में जानी नुक़सान होने के बाद पूरे अरब से ज़ुल्म व सितम, क़तल व ग़ारत गिरी, फितना व फसाद और ख़ाना जंगियों का ख़ातमा हो कर अमन व सुकून की ऐसी फज़ा क़ायम हो गई के एक मुसाफिर ख़ातून बे खौफ व ख़तर तन्हा "हीरा" से चल कर "बैतुल्लाह" का तवाफ कर लेती थी। यह मज़हबे इस्लाम की सच्चाई, उस के अद्ल व इन्साफ और आला अख़्लाक़ का सदक़ा और हुज़ूर ﷺ की पाकीज़ा ज़िन्दगी, बुलन्द अख़्लाक़ और हर एक के साथ हुस्ने सुलूक का नतीजा है, जिस पर मक्का मुकर्रमा की तेरा साला ज़िन्दगी बिल्कुल वाज़ेह सबूत है।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — बे होशी से शिफा पाना

हज़रत जाबिर ؓ फर्माते हैं के एक मर्तबा मैं सख़्त बीमार हुआ, तो रसूलुल्लाह ﷺ और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ؓ दोनों हज़रात मेरी इयादत को तशरीफ लाए, यहाँ पहुँच कर देखा के मैं बे होश हूँ। तो आप ﷺ ने पानी मंगवाया और उस से वुज़ू किया और फिर बाक़ी पानी मुझ पर छिड़का, जिस से मुझे इफाक़ा हुआ और मैं अच्छा हो गया। [मुस्लिम: ४१४७]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — गुस्ल में पूरे बदन पर पानी बहाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "(जिस्म) के हर बाल के नीचे नापाकी होती है, लिहाज़ा तुम बालों को धोओ और बदन को अच्छी तरह साफ करो।" [तिर्मिज़ी : १०६, अन अबी हुरैरा ؓ]

फायदा : गुस्ल में पूरे बदन पर पानी का पहुँचाना फर्ज़ है। इस लिये ख़ुसूसन सर के बालों, दाढ़ी वग़ैरा की जड़ में पानी पहुँचाना चाहिये और औरतों को अपने बाल खोल कर गुस्ल करना चाहिये ताके पानी बालों में पहुँच जाए।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — वुज़ू के बाद की एक ख़ास दुआ

आप ﷺ ने फर्माया : "जो वुज़ू करे और यह दुआ पढ़े तो उसे एक काग़ज़ में मुहर लगा कर (उस का बदला देने के लिये, अर्श के नीचे रख दिया जाता है, फिर उसे क़यामत तक कोई नहीं खोल सकता वह दुआ यह है : ((سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ اللّٰهُمَّ وَأَتُوْبُ إِلَيْكَ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! आप की ज़ात पाक है, आप ही के लिये तारीफ है, मैं गवाही देता हूँ के आप के सिवा कोई माबूद नहीं, आप ही से मग़फिरत चाहता हूँ और तौबा करता हूँ।

[इब्ने सुन्नी : ३०, अन अबी सईद ख़ुदरी ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | फैसला करने पर अल्लाह की रहमत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "फैसला करने वाले के साथ उस वक़्त तक अल्लाह की रहमत होती है जब तक वह ज़ुल्म नहीं करता, फिर जब वह (फैसला करने में) ज़ुल्म करता है तो उस से अल्लाह की रहमत दूर हो जाती है और शैतान उस पर मुसल्लत हो जाता है।"

[तिर्मिज़ी : १३३०, अन अब्दुल्लाह बिन अबी औफा ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | कुफ्र की सज़ा जहन्नम है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग कुफ्र करते हैं तो अल्लाह तआला के मुक़ाब्ले में उन का माल और उन की औलाद कुछ काम नहीं आएगी और ऐसे लोग ही जहन्नम का ईंधन होंगे।"

[सूर-ए-आले इमरान : १०]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | माल व औलाद दुनिया की ज़ीनत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "माल और औलाद यह सिर्फ दुनिया की ज़िन्दगी की एक रौनक़ है और (जो) नेक आमाल हमेशा बाक़ी रहने वाले हैं, वह आप के रब के नज़दीक सवाब और बदले के एतेबार से भी बेहतर हैं और उम्मीद के एतेबार से भी बेहतर हैं। (लिहाज़ा नेक अमल करने की पूरी कोशिश करनी चाहिये, और उस पर मिलने वाले बदले की उम्मीद रखनी चाहिये।)"

[सूर-ए-कहफ : ४६]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | क़ब्र की पुकार

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "क़ब्र रोज़ाना पुकार कर कहती है, मैं तन्हाई का घर हूँ, मैं मिट्टी का घर हूँ, मैं कीड़े मकोड़ों का घर हूँ।"

[तिर्मिज़ी : २४६०, अन अबी सईद ख़ुदरी ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | बड़ी बीमारियों से हिफाज़त

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स हर महीने तीन दिन सुबह के वक़्त शहद को चाटेगा, तो उसे कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी।"

[इब्ने माजा : ३४५०, अन अबी हुरैरा ﷺ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "ऐ लोगो ! अल्लाह तआला फर्माता है के इस से पहले पहले लोगों को भलाई का हुक्म करो और बुरी बातों से रोको के तुम दुआ करो और मैं तुम्हारी दुआ क़बूल न करूँ। और तुम मुझ से माँगो मैं तुम्हें अता न करूँ और तुम मुझ से मदद तलब करो और मैं तुम्हारी मदद न करूँ।"

[सही इब्ने हिब्बान : २८९, अन आयशा ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१५) जुमादस्सानियह

नंबर (१): इस्लामी तारीख — इस्लाम में पहला हज

हज इस्लाम के पाँच अरकान में से एक रुक्न है, जो सन ९ हिजरी में फर्ज़ किया गया। इस फरीज़े की अदाएगी के लिये उसी साल रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अबू बक्र رضي الله عنه को अमीरे हज बनाया और मुसलमानों को हज कराने की ज़िम्मेदारी सुपुर्द की, हज़रत अबू बक्र رضي الله عنه मदीना से तीन सौ आदमियों का क़ाफला ले कर हज के लिये रवाना हुए और साथ में कुरबानी के लिये पाँच जानवर भी ले लिये, खुद रसूलुल्लाह ﷺ ने भी कुरबानी के २०जानवरों को गर्दन में क़लादा पहना कर साथ में रवाना किया, इस के बाद सूर-ए-बरात की आयतों के एलान के लिये हज़रत अली رضي الله عنه को रवाना किया, जब सब लोग मिना में जमा हो गए, तो हज़रत अली رضي الله عنه ने एलान फर्माया : जन्नत में कोई काफिर दाख़िल नहीं होगा और इस साल के बाद कोई मुश्रिक हज नहीं कर सकता और कोई शख़्स (जाहिली रस्म के मुताबिक़) नंगा हो कर तवाफ नहीं कर सकता, फिर "सूर-ए-तौबा" की आयतें तिलावत की। इस्लाम में यह पहला हज था, जिस के अमीर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक رضي الله عنه और ख़तीब हज़रत अली رضي الله عنه थे।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — ज़बान कुदरते इलाही की निशानी

अल्लाह तआला ने मुंह में एक गोश्त का टुकड़ा बनाया है, जिस को ज़बान कहते हैं, उस को ऐसा हस्सास बनाया के एक बारीक बाल भी अगर ज़बान पर आजाए तो ज़बान फौरन महसूस कर लेती है, इस में अल्लाह ने बोलने की सलाहियत भी रखी है, नीज़ उस में चीज़ों की लज़्ज़त और क़ुव्वते ज़ायक़ा रखी के इन्सान मुवाफिक़ व मुनासिब चीज़ों को इस्तेमाल करे और ख़राब व बद मज़ा चीज़ों को छोड़ दे, इसी लज़्ज़त की वजह से खाना मज़े ले कर खाया जाता है, अतिब्बा ने लिखा है के जो खाना मज़े ले कर खाया जाए वह ख़ूब हज़्म होता है, क्योंकी उस को तबीअत क़बूल करती है, ग़ौर तो कीजिये के ज़बान के इस छोटे से टुकड़े में इतनी सारी सलाहिय्यतें किस ने रखी है !

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ के छोड़ने पर वईद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "नमाज़ का छोड़ना आदमी को कुफ्र से मिला देता है।"

[मुस्लिम : २४६, अन जाबिर رضي الله عنه]

एक दूसरी हदीस में आप ﷺ ने फर्माया : ईमान और कुफ्र के दर्मियान नमाज़ छोड़ने का फर्क़ है।

[इब्ने माजा : १०७८, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — कुरता पहनने का मस्नून तरीक़ा

रसूलुल्लाह ﷺ जब कुरता ज़ेब तन फ़र्माते तो दाएँ तरफ से शुरू फ़र्माते।

[तिर्मिज़ी : १७६६, अन अबी हुरैरा رضي الله عنه]

फायदा : यानी कुरता पहनते तो पहले दाएँ आस्तीन में हाथ डालते, तब बाएँ आस्तीन में हाथ डालते और हर लिबास को ज़ेब तन करने का यही तरीक़ा मस्नून है।

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	सब से बेहतरीन आदमी

रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा गया : सब से बेहतरीन आदमी कौन है ? आप ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह से ज़ियादा डरने वाला और सिला रहमी करने वाला, और लोगों को भली बातों का हुक्म करने वाला और बुराइयों से रोकने वाला ।" [बैहक़ी फी शोअबिल ईमान : ७७१८, अन दुर्रह बिन्ते अबी लहब رضي الله عنها]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	रिश्वत ले कर नाहक़ फैसला करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स कुछ (रिश्वत) ले कर नाहक़ फैसला करे, तो अल्लाह तआला उसे इतनी गहरी जहन्नम में डालेगा के पाँच सौ बरस तक बराबर गिरते चले जाने के बावजूद उस की तह तक न पहुँच पाएगा ।" [तरग़ीब : ३१७६, अन इब्ने अब्बास رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया ख़त्म होने वाली और छूटने वाली है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "बन्दा कहता है मेरा माल, मेरा माल, हालाँकि उस के लिये उस के माल में से तीन चीज़ें हैं (एक) वह जो खा कर ख़त्म कर दिया, (दूसरा) वह जो पहन कर पुराना कर दिया, (तीसरा) वह जो (सदक़ा) दे कर (आख़िरत के लिये) ज़ख़ीरा कर लिया और इस के अलावा जो कुछ है वह ख़त्म होने वाला और लोगों के लिये उसे छोड़ने वाला है ।" [मुस्लिम : ७४२२, अन अबी हुरैरा رضي الله عنه]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत का हाल

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "बेशक फैसले के दिन का वक़्त मुतअय्यन है, यानी जिस दिन सूर फूँका जाएगा फिर तुम लोग गिरोह दर गिरोह हो कर आओगे और आसमान खोला जाएगा तो उस में दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएँगे और पहाड़ चलाए जाएँगे तो वह चमकती हुई रेत हो जाएँगे ।"

[सूर-ए-नबा : १७ ता २०]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	जोड़ों के दर्द का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अन्जीर खाओ ! क्योंकि यह बवासीर को ख़त्म करता है और जोड़ों के दर्द में मुफीद है ।" [कंज़ुल उम्माल : २८२७६, अन अबी ज़र رضي الله عنه]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अगर तुम सदक़ात को ज़ाहिर कर के दो, तो यह भी अच्छी बात है और अगर तुम सदक़ात को छुपा कर फक़ीरों को दे दो, तो यह तुम्हारे लिये और ज़ियादा बेहतर है और अल्लाह तआला तुम्हारे बाज़ गुनाह माफ कर देगा और अल्लाह तआला तुम्हारे कामों से बा ख़बर है ।" [सूर-ए-बक़रा : २७१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(१६) जुमादस्सानियह

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — वफ्दे नजरान की मदीने में आमद

नजरान यमन के एक शहर का नाम है। यहाँ के लोग ईसाई थे। सन ९ हिजरी में रसूलुल्लाह ﷺ ने अहले नजरान को इस्लाम की दावत दी। तो साठ अफराद पर मुश्तमिल एक वफ़्द आप ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। जिन में शुरहबील बिन वदाआ, अब्दुल्लाह, जब्बार बिन क़ैस जैसे बड़े बड़े पादरी थे और क़ाफले का अमीर अब्दुलमसीह आक़िब था। उन्होंने हज़रत ईसा عليه السلام के बारे में सवालात किये, जिन के जवाब में अल्लाह तआला ने सूर-ए-आले इमरान की इब्तेदाई अस्सी आयतें नाज़िल फ़र्माईं। इन आयात में अल्लाह तआला की तरफ से हज़रत ईसा عليه السلام की बग़ैर बाप की पैदाइश, उन की नुबुव्वत व रिसालत, मज़हबे इस्लाम की सच्चाई और यहूद व नसारा के एतेराज़ात का साफ साफ जवाब दिया गया। मगर उन्होंने मानने से इन्कार कर दिया। तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन को मुबाहला (जिस फ़रीक़ का अक़ीदा बातिल हो उस पर अल्लाह की लानत और हलाकत की दुआ करने) की दावत दी। हुज़ूर ﷺ हज़रत हसन, हुसैन, हज़रत अली और फातिमा رضي الله عنهم को ले कर मैदान में आगए। मगर नजरान के पादरियों को मुबाहला करने की हिम्मत नहीं हुई। फिर आप ﷺ ने फर्माया : अगर यह लोग मुबाहला करते, तो पूरी वादी आग से भर जाती और तमाम अहले नजरान हलाक हो जाते, इस के बाद उन्होंने सालाना जिज़या (टेक्स) अदा करने पर सुलह कर ली। जिज़ये की वसूलयाबी के लिये अमीने उम्मत हज़रत अबू उबैदा رضي الله عنه को उन के साथ भेज दिया। उन की तब्लीग़ और दावती कोशिशों से इस पूरे इलाक़े में इस्लाम फैल गया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — आँख की रौश्नी का तेज़ होना

हज़रत आयशा رضي الله عنها फर्माती हैं के आप ﷺ अंधेरे में इस तरह देखते थे, जिस तरह रौश्नी और उजाले में देखते थे।

[बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : २३२६]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — दीन में नमाज़ की अहमियत

एक आदमी ने आप ﷺ से अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के रसूल ! इस्लाम में अल्लाह के नज़दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा अमल क्या है ? आप ﷺ ने फर्माया : "नमाज़ को उस के वक़्त पर अदा करना और जो शख़्स नमाज़ को (जान बूझ कर) छोड़ दे उस का कोई दीन नहीं है, और नमाज़ दीन का सुतून है।"

[बैहक़ी फी शोअबिल ईमान : २६८३, अन उमर رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — बीमार पुरसी के वक़्त की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी बीमार की इयादत के लिये जाते या आप की ख़िदमत में बीमार को हाज़िर किया जाता तो आप ﷺ यह दुआ पढ़ते : ((اَذْهِبِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ اِشْفِ وَاَنْتَ الشَّافِيْ لَا شِفَاءَ اِلَّا شِفَاءُكَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا)) तर्जमा : तमाम लोगों के परवरदिगार ! आप तकलीफ को दूर कर दीजिये, आप शिफा अता फ़र्माइये, आप के सिवा कोई शिफा देने वाला नहीं है, ऐसी शिफा अता फ़र्माइये जो बीमारी को न छोड़े।

[बुख़ारी : ५६७५, अन आयशा رضي الله عنها]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह के लिये अपने भाई की ज़ियारत करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "क्या मैं तुम्हें जन्नती लोगों के बारे में ख़बर न करूँ ? सहाबा ने अर्ज़ किया : ज़रूर या रसूलल्लाह ! आप ﷺ ने फर्माया : नबी जन्नती है, सिद्दीक़ जन्नती है और वह आदमी जन्नती है जो सिर्फ अल्लाह की रज़ा के लिये शहर के दूर दराज़ इलाक़े में अपने भाई की ज़ियारत के लिये जाए।"

[तबरानी औसत : १८१०, अन अनस बिन मालिक ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	कन्जूसी करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग अल्लाह तआला के अता करदा माल व दौलत को (ख़र्च करने में) बुख़्ल करते हैं, वह बिल्कुल इस गुमान में न रहें के (उन का यह बुख़्ल करना) उन के लिये बेहतर है, बल्के वह उन के लिये बहुत बुरा है, क़यामत के दिन उन के जमा करदा माल व दौलत को तौक़ बना कर गले में पहना दिया जाएगा और आसमान व ज़मीन का मालिक अल्लाह तआला ही है और अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल से बा ख़बर है।"

[सूर-ए-आले इमरान : १८०]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की चीज़ें चंद रोज़ा हैं

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो कुछ भी तुम को दिया गया है, वह सिर्फ चंद रोज़ा ज़िन्दगी के लिये है और वह उस की रौनक़ है और जो कुछ अल्लाह तआला के पास है, वह इस से कहीं बेहतर और बाक़ी रहने वाला है। क्या तुम लोग इतनी बात भी नहीं समझते?"

[सूर-ए-क़सस : ६०]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	मोमिन के साथ क़ब्र का सुलूक

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब मोमिन बन्दे को दफन किया जाता है, तो क़ब्र उस से कहती है : तुम्हारा आना मुबारक हो, मेरी पुश्त पर चलने वालों में तुम मुझे सब से ज़ियादा महबूब थे, जब तुम मेरे हवाले कर दिए गए और मेरे पास आगए, तो तुम आज मेरा हुस्ने सुलूक देखोगे, तो जहाँ तक नज़र जाती है क़ब्र कुशादा हो जाती है और उस के लिये जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया जाता है।"

[तिर्मिज़ी : २४६०, अन अबी सईद ख़ुदरी ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	दिल की कमज़ोरी का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम लोग सन्तरे को इस्तेमाल किया करो, क्योंकि यह दिल को मज़बूत बनाता है।"

[कन्ज़ुल उम्माल : २८२५३, अन अब्दुर्रहमान बिन दलहम ﷺ]

फायदा : मुहद्दिसीन तहरीर फर्माते हैं के इस का जूस पेट की गंदगी, क़ै और मतली को ख़त्म करता है और भूक बढ़ाता है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम अपनी तरफ से मुझे छह चीज़ों की ज़मानत दे दो मैं तुम्हें जन्नत की ज़मानत देता हूँ जब तुम बात करो तो सच बोलो, जब वादा करो तो पूरा करो, जब तुम्हारे पास अमानत रखी जाए तो अमानत अदा करो, अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करो, अपनी आँखों को नीचे रखो और अपने हाथों को (ज़ुल्म व सितम से) रोके रखो।"

[मुस्नदे अहमद : २२२५१, अन उबादा बिन सामित ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

⑰ जुमादस्सानियह

नंबर ①: इस्लामी तारीख़ | हज्जतुल वदाअ

फ़तहे मक्का के बाद जब पूरे अरब में मज़हबे इस्लाम की ख़ूबियाँ अच्छी तरह वाज़ेह हो गईं और लोग फ़ौज दर फ़ौज शिर्क व बुत परस्ती को छोड़ कर इस्लाम क़बूल करने लगे, तो अब वक़्त था के हुज़ूर ﷺ ख़ुद अमली तौर पर फरीज़-ए-हज को अन्जाम दे कर इस्लाम के इस अज़ीम रुक्न की शान व शौकत और इस की अदायगी के सही तरीक़ों को बयान फ़र्माएं और शिरकिया बातों और जाहिली रुसूम व आदात से उसे पाक कर दें। चुनान्चे रसूलुल्लाह ﷺ ने हज का इरादा किया और २५ या २६ ज़िलक़ादा सन १० हिजरी को ज़ोहर की नमाज़ के बाद मदीना मुनव्वरा से रवाना हुए, तमाम अज़वाजे मुतह्हरात और सय्यदा फातिमतुज़्ज़हरा رضي الله عنها आप ﷺ के साथ थीं और सहाब-ए-किराम رضي الله عنهم एक लाख से ज़ाइद की तादाद में आप ﷺ के साथ शरीक थे, मक़ामे ज़ुलहुलैफ़ा में ग़ुस्ल फ़र्मा कर एहराम बाँधा। ४ ज़िलहिज्जा को इतवार के दिन मक्का मुकर्रमा पहुँचे, सब से पहले ख़ान-ए-काबा का तवाफ़ किया और सफ़ा व मरवा की सई फ़र्माई और ८ ज़िलहिज्जा से हज के अरकान को अदा करना शुरू फ़र्माया। यह आप ﷺ की मुबारक ज़िन्दगी का आख़री हज था, इसी लिये इस को "हज्जतुल वदाअ" कहा जाता है।

नंबर ②: अल्लाह की क़ुदरत | इन्सान का सर क़ुदरत का शाहकार

इन्सान के सर को देखिये अल्लाह तआला ने कैसा मुदव्वर, गोल और ख़ूबसूरत बनाया है और उस में पूरे जिस्म के क़ीमती ख़ज़ाने छुपा रखे हैं, इन्सान का सर पचपन हड्डियों से जुड़ा हुआ है, तमाम हड्डियाँ एक दूसरे से जुदा हैं, सब की शक्लें अलग अलग हैं, छः हड्डियाँ खोपड़ी के हिस्से में हैं, चौबीस ऊपर के जबड़े में और दो नीचे के जबड़े में और बाक़ी दाँत में हैं, उन तमाम को हुस्ने तरतीब के साथ जोड़ कर एक ख़ूबसूरत शक्ल बनाई, ग़ौर करो उस की कारीगरी कितनी ज़बरदस्त है।

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में | बीवी की वरासत में शौहर का हिस्सा

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम्हारे लिये तुम्हारी बीवियों के छोड़े हुए माल में से आधा हिस्सा है, जब के उन की कोई औलाद न हो, और अगर उन की औलाद हो, तो तुम्हारी बीवियों के छोड़े हुए माल में चौथाई हिस्सा है (तुम्हें यह हिस्सा) उन की वसिय्यत और क़र्ज़ अदा करने के बाद मिले गा।"

[सूर-ए-निसा : १२]

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में | सोने से पहले बिस्तर झाड़ लेना

हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه फर्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम में से कोई बिस्तर पर आए, तो उसे किसी कपड़े से झाड़ ले, उसे नहीं मालूम के बिस्तर में क्या है।"

[अबू दाऊद : ५०५०]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	जन्नत में दाख़िल करने वाली चीज़

रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा गया के लोगों को सब से ज़ियादा जन्नत में दाख़िल करने वाली क्या चीज़ है? आप ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह से डरना और अच्छे अख़्लाक़, और सब से ज़ियादा आग में दाख़िल करने वाली चीज़ के बारे में सवाल किया गया। तो आप ﷺ ने फ़र्माया : मुंह और शर्मगाह।"

[तिर्मिज़ी : २००४, अन अबी हुरैरा رضی اللہ عنہ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	इज़ार या पैन्ट को टख़्ने से नीचे पहनना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स गुरूर व तकब्बुर में अपने इज़ार को टख़्ने से नीचे लटकाएगा, अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस की तरफ़ रहमत की नज़र से नहीं देखेगा।"

[बुख़ारी : ५७८८, अन अबी हुरैरा رضی اللہ عنہ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	कामयाब कौन ?

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "कामयाब हो गया वह शख़्स जिस ने इस्लाम क़बूल किया और उस को ज़रूरत के बक़द्र रोज़ी मिली और अल्लाह तआला ने उस को दी हुई रोज़ी पर क़नाअत करने वाला बना दिया।"

[मुस्लिम : २४२६, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस رضی اللہ عنہ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले जन्नत का इकराम

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "यक़ीनन नेक लोग आराम में होंगे, मसहेरियों पर बैठे हुए नज़ारा कर रहे होंगे, तुम उन के चेहरों से जन्नत के ऐश व आराम का अन्दाज़ा कर लोगे। उन को मुहर बंद ख़ालिस शराब पिलाई जाएगी, उस पर मुश्क की मुहर लगी होगी, ऐसी पाकीज़ा शराब के लिये रग़बत करने वालों को रग़बत करनी चाहिये। उस शराब में तसनीम के पानी की मिलावट होगी, वह एक ऐसा चश्मा है जिस में से नेक बन्दे पियेंगे।"

[सूर-ए-मुतफ़्फ़िफ़ीन : २२ ता २८]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	गाय के दूध का फ़ायदा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "गाय का दूध इस्तेमाल किया करो, क्योंकि वह हर क़िस्म के पौदों को चरती है (इस लिये) उस के दूध में हर बीमारी से शिफ़ा है।"

[मुस्तदरक : ८२२४, अन इब्ने मसऊद رضی اللہ عنہ]

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "क्या ईमान वालों के लिये अभी तक ऐसा वक़्त नहीं आया, के उन के दिल अल्लाह की नसीहत और जो दीने हक़ नाज़िल हुआ है, उस के सामने झुक जाएँ और वह उन लोगों की तरह न हो जाएँ जिन को उन से पहले किताब दी गई थी।" यानी वह वक़्त आचुका है के मुसलमानों के दिल क़ुर्आन और अल्लाह की याद और उस के सच्चे दीन के सामने झुक जाएँ।

[सूर-ए-हदीद : १६]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१८) जुमादस्सानियह

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज्जतुलवदाअ् में आख़री ख़ुतबा

९ ज़िल हज्जा १० हिजरी में हुज़ूर ﷺ ने मैदाने अरफ़ात में एक लाख से ज़ियादा सहाब-ए-किराम के सामने आख़री ख़ुतबा दिया, जो इल्म व हिकमत से भरा हुआ था और पूरी इन्सानियत का जामे दस्तूर था, इस में आप ﷺ ने फ़र्माया : ऐ लोगो ! मेरी बातें ग़ौर से सुनो ! शायद आइन्दा साल मेरी तुम से मुलाक़ात न हो सके। लोगो ! तुम्हारी जानें, इज़्ज़त व आबरू और माल आपस में एक दूसरे पर हराम है, मैं ने ज़मान-ए-जाहिलियत की तमाम रस्मों को अपने पैरों तले रौंद दिया है, देखो ! मेरे बाद गुमराह न हो जाना, के एक दूसरे को क़त्ल करने लगो, मैं तुम्हारे लिये अल्लाह की किताब छोड़ कर जा रहा हूँ, अगर तुम इस को मज़बूती से पकड़े रहोगे, तो कभी गुमराह नहीं होंगे, तुम्हारा औरतों पर और औरतों का तुम पर हक़ है, किसी औरत को अपने शौहर के माल में से उस की इजाज़त के बग़ैर कुछ देना जाइज़ नहीं है, और क़र्ज़ वाजिबुल अदा है जो चीज़ माँग कर ली जाए उस को लौटाना ज़रूरी है और ज़ामिन तावान का ज़िम्मेदार है, लोगो ! क्या मैं ने अल्लाह का पैग़ाम तुम तक पहुँचा दिया ? सब ने जवाब दिया : बिला शुबा आप ﷺ ने अमानत का हक़ अदा कर दिया और उम्मत को ख़ैर ख़्वाही की नसीहत फ़र्माई, फिर आप ﷺ ने आसमान की तरफ उंगली उठा कर तीन मर्तबा अल्लाह तआला को गवाह बनाया और कहा : ऐ अल्लाह ! तू गवाह रहना ! ऐ अल्लाह ! तू गवाह रहना ऐ अल्लाह ! तू गवाह रहना।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — ग़ैबी मदद

सहाब-ए-किराम ؓ फर्माते हैं के हम एक सफर में अल्लाह के रसूल ﷺ के साथ चार सौ आदमी थे। हम लोगों ने ऐसी जगह पड़ाव डाला जहाँ पीने के लिये पानी नहीं था। हम सब घबरा गए, इतने में एक छोटी सी बकरी अल्लाह के रसूल के सामने आकर खड़ी हो गई। आप ﷺ ने उस का दूध दूहा और फिर ख़ूब सैर हो कर पिया और अपने सहाबा को भी पिलाया हत्ता के सब सैर हो गए। उस के बाद उस बकरी को बाँध दिया गया, सुबह को उठ कर देखा, तो वह बकरी गायब थी। हुज़ूर ﷺ को ख़बर दी गई, तो आप ﷺ ने फ़र्माया : "जो अल्लाह उस को लाया था वही उसे ले गया।"

[बैहकी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : २३८१, अन नाफे ؓ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — दीनी इल्म हासिल करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "(दीनी) इल्म का हासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।"

[इब्ने माजा : २२४, अन अनस बिन मालिक ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — ज़ियारते क़ुबूर की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ सहाब-ए-किराम ؓ को ज़ियारते क़ुबूर की यह दुआ सिखाते थे :

((اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَاِنَّا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ لَلَاحِقُوْنَ اَسْاَلُ اللّٰهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ))

तर्जमा : सलाम हो तुम पर ऐ इस बस्ती के मोमिनो और मुसलमानो ! और हम भी इन्शाअल्लाह

तुम्हारे साथ मिलने वाले हैं, हम अपने और तुम्हारे लिये अल्लाह से आफियत चाहते हैं।

[मुस्लिम : २२५७, अन बुरैदा ﷺ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | मुसाफा से गुनाहों का झड़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब मोमिन दूसरे मोमिन से मिल कर सलाम करता है और उस का हाथ पकड़ कर मुसाफा करता है, तो उन दोनों के गुनाह इस तरह झड़ते हैं जैसे दरख़्त के पत्ते गिरते हैं।"

[तबरानी औसत : २५०, अन हुज़ैफा ﷺ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में | यतीमों का माल मत खाओ

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "यतीमों के माल उन को देते रहा करो और पाक माल को नापाक माल से न बदलो और उन का माल अपने माल के साथ मिला कर मत खाओ, ऐसा करना यक़ीनन बहुत बड़ा गुनाह है।"

[सूर-ए-निसा : २]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में | माल व औलाद कुर्बे खुदावन्दी का ज़रिया नहीं

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद ऐसी चीज़ नहीं, जो तुम को दर्जे में हमारा मुक़र्रब बना दे, मगर हाँ ! जो ईमान लाए और नेक अमल करता रहे, तो ऐसे लोगों को उन के आमाल का दुगना बदला मिलेगा और वह जन्नत के बाला ख़ानों में आराम से रहेंगे।"

[सूर-ए-सबा : ३७]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में | गुनहगारों के साथ क़ब्र का सुलूक

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब गुनहगार या काफिर बन्दे को दफन किया जाता है, तो क़ब्र उस से कहती है : तेरा आना नामुबारक हो, मेरी पीठ पर चलने वालों में तू मुझे सब से ज़ियादा ना पसन्द था, जब तू मेरे हवाले कर दिया गया है और मेरे पास आगया है, तो तू आज मेरी बद सुलूकी देखेगा, फिर क़ब्र उस को दबाती है और उस पर मुसल्लत हो जाती है, तो उस की पसलियाँ एक दूसरे में घुस जाती है।"

[तिर्मिज़ी : २४६०, अन अबी सईद ﷺ]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज | ख़रबूज़े के फवाइद

रसूलुल्लाह ने फर्माया : "खाने से पहले ख़रबूज़े का इस्तेमाल पेट को बिल्कुल साफ कर देता है और बीमारी को जड़ से ख़त्म कर देता है।"

[इब्ने असाकिर : ६/१०२]

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम घरों के दरवाज़े के सामने न आया करो, बल्के दरवाज़ों के किनारों पर खड़े हो कर सलाम करो। अगर तुम्हें इजाज़त मिल जाए तो दाख़िल हो जाओ, वरना वापस चले जाओ।"

[मुस्नदे बज़्ज़ार : २९५७, अन अब्दुल्लाह ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(१९) जुमादस्सानियह

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — दीन के मुकम्मल होने का एलान

रसूलुल्लाह ﷺ पर मैदाने अरफात में जुमा के दिन अस्र के बाद आख़री हज के मौके पर एक लाख से ज़ाइद सहाब-ए-किराम रज़ि. के दर्मियान कुर्आन की आयत नाज़िल हुई, वही के बोझ से आप ﷺ की ऊँटनी बैठ गई, उस में अल्लाह तआला ने ख़ुशख़बरी देते हुए फर्माया : "आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेअ्मत पूरी कर दी और हमेशा के लिये तुम्हारे लिये दीने इस्लाम को पसन्द कर लिया।" इस आयत में एलान कर दिया गया के इस्लाम ही एक ऐसा मज़हब है, जो क़यामत तक आने वाली नस्ले इन्सानी की हिदायत और रहबरी और दुनिया व आख़िरत में कामयाबी की ज़मानत दे सकता है, इस के अलावा दुनिया का कोई मज़हब इन्सानों की नजात का ज़रिया और अल्लाह के यहाँ क़बूलियत व कामयाबी का मेयार नहीं बन सकता, इस लिये अब क़यामत तक किसी नबी या रसूल और नई किताब व शरीअत की बिल्कुल ज़रूरत नहीं, इस्लाम आख़री दीन और हुज़ूर ﷺ आख़री रसूल हैं। आप ﷺ के बाद कोई नबी नहीं आएगा।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — दाँतों की बनावट

दाँतों की बनावट पर ग़ौर कीजिये के अल्लाह तआला ने ३२ टुकड़ों को कैसी हसीन व ख़ूबसूरत लड़ी में पिरोया है और उस की जड़ों को नर्म हड्डी में किस ख़ूबी के साथ पेवस्त किया है, यह दाँत एक तरफ जहाँ चेहरे की हुस्न व ज़ीनत हैं वहीं उन से हम चबाने, काटने, पीसने और तोड़ने का अहम काम भी कर लेते हैं और अल्लाह की अजीब कुदरत के उन को बत्तीस टुकड़ों में बनाया, एक ही सालिम हड्डी में उन को नहीं ढाला, वरना मुंह में बड़ी तकलीफ होती, इसी तरह अगर एक दाँत में कोई ख़राबी होती है, तो बाक़ी दाँतों से काम लिया जा सकता है, एक सालिम हड्डी होने की सूरत में यह मुमकिन न था। कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : ख़ुद तुम्हारी ज़ात में भी (अल्लाह की कुदरत की) निशानियाँ हैं, तो क्या तुम देखते नहीं हो ? [सूर-ए-ज़ारियात : २१]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म देना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "आप अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म करते रहिये और ख़ुद भी नमाज़ के पाबन्द रहिये, हम आप से रोज़ी तलब नहीं करते, रोज़ी तो आप को हम देंगे और अच्छा अन्जाम तो परहेज़गारी ही का है।" [सूर-ए-ताहा : १३२]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	रुख्सत के वक़्त मुसाफा करना

रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी को रुख्सत फ़र्माते, तो उस का हाथ अपने हाथ में ले लेते और उस वक़्त तक (उस का हाथ) न छोड़ते, जब तक के वह आप ﷺ के हाथ को ख़ुद न छोड़ दे।

[तिर्मिज़ी : ३४४२, अन इब्ने उमर رضی اللہ عنہ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	जन्नत का मुस्तहिक़

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो आदमी इस हाल में मर जाए के वह तकब्बुर, ख़यानत और क़र्ज़ से बरी हो, तो जन्नत में दाख़िल होगा।" [तिर्मिज़ी : १५७२, अन सौबान رضی اللہ عنہ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	सामान ऐब बताए बग़ैर फरोख़्त करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मुसलमान मुसलमान का भाई है और किसी मुसलमान के लिये अपने भाई से ऐब वाले सामान को ऐब बयान किए बग़ैर फरोख़्त करना जाइज़ नहीं।"

[इब्ने माजा : २२४६, अन उक़बा बिन आमिर رضی اللہ عنہ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया से बे रग़बती पैदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मौत का (ज़िक्र) दुनिया से बे रग़बत करने और आख़िरत की तलब के लिये काफी है।" [शोअबुल ईमान : १०१५९, अन रबीअ् अबिन अनस رضی اللہ عنہ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले जन्नत का इनाम

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता : "उस दिन बहुत से चेहरे तर व ताज़ा होंगे, अपने (नेक) आमाल की वजह से ख़ुश होंगे, ऊँचे ऊँचे बाग़ों में होंगे। वह उन बाग़ों में कोई बेहूदा बात नहीं सुनेंगे। उन में चश्मे बह रहे होंगे।" [सूर-ए-ग़ाशिया : ८ ता १२]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	तलबीना से इलाज

हज़रत आयशा رضی اللہ عنہا बीमार के लिये तलबीना तय्यार करने का हुक्म देती थीं और फर्माती थीं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को फ़र्माते हुए सुना के तलबीना बीमार के दिल को सुकून पहुँचाता है और रंज व ग़म को दूर करता है। [बुख़ारी : ५६८९, अन आयशा رضی اللہ عنہا]

फायदा : जौ (Barley) को कूट कर दूध में पकाने के बाद मिठास के लिये उस में शहद डाला जाता है; जिसे तलबीना कहते हैं।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरते रहो और हर शख़्स को इस बात पर ग़ौर करना चाहिये के उस ने कल (आख़िरत) के लिये क्या आगे भेजा है और अल्लाह से डरते रहो और अल्लाह तआला को तुम्हारे सब आमाल की ख़बर है।" [सूर-ए-हश्र : १८]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

२० जुमादस्सानियह

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — आखिरत के सफर की तय्यारी

हज्जतुल वदाअ् के मौक़े पर जब दीन की तकमील हो गई और पूरे अरब में इस्लाम फैल गया, तो हुज़ूर ﷺ के हालात से अन्दाज़ा होने लगा के अब आखिरत का सफर होने वाला है, चुनान्चे आप हर साल रमज़ान में दस दिन का एतेकाफ करते थे, इस साल सन १० हिजरी में बीस दिन का एतेकाफ फ़र्माया, हर साल जिब्रईल अमीन के साथ एक मर्तबा कुर्आन का दौर करते थे, इस रमज़ान में दो मर्तबा दौर फ़र्माया, हज्जतुल वदाअ् के मौके पर आप ﷺ ने खुत्बा देते हुए फर्माया :"शायद इस के बाद मेरी तुम लोगो से मुलाक़ात न हो सके।"जमर-ए-अक़बा के पास कंकरी मारते हुए हुक्म दिया के तुम मुझ से हज के आमाल सीख लो। इस से पहले जब सूर-ए-नस्र नाज़िल हुई, जिस में अल्लाह तआला की तरफ से फतह व नुसरत और लोगों के दीन में दाख़िल होने की ख़बर के साथ अल्लाह की हम्द व सना और तौबा व इस्तिगफार में मशूल होने का हुक्म सुन कर आप समझ गए थे के अब दुनिया से रुख़्सत होने का वक़्त क़रीब होता जा रहा है। आप ﷺ दामने उहुद में तशरीफ ले गए, वहाँ शोहदा-ए-उहुद के लिये दुआ फ़र्माई, वापस आ कर खुत्बे में फ़र्माया : "लोगो ! मैं तुम से पहले हौज़े कौसर पर जा रहा हूँ, वहाँ मैं तुम से मिलूँगा, मुझे तुम्हारे बारे में सिर्फ इस बात का ख़ौफ है के तुम दुनिया में मशूल हो जाओ और दुनिया तुम को पिछली क़ौमों की तरह हलाक कर डाले।" यह सब वह अलामात और निशानियां है, जिन से मालूम होता था के अब आप ﷺ इस दुनिया से तशरीफ ले जाने वाले हैं।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — कंकरियों से तस्बीह की आवाज़ आना

हज़रत अबू ज़र रज़ि. फर्माते हैं के हम एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ के साथ बैठे हुए थे। आप ﷺ के हाथ में चंद कंकरियाँ थीं, अचानक उन से तस्बीह की आवाज़ आने लगी जिस को सारी मजलिस सुन रही थी, फिर हुज़ूर ﷺ ने वह कंकरियाँ बारी बारी हज़रत अबू बक्र रज़ि. फिर हज़रत उमर रज़ि. और फिर हज़रत उस्मान रज़ि. के हाथ में दी, तो उन के हाथ में भी वह तस्बीह पढ़ती रही, लेकिन जब उन के अलावा लोगों को दी, तो कंकरियों ने तस्बीह पढ़ना बंद कर दिया।

[दलाइलुन्नुबुव्वह लिल असफहानी : ३२७]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — इशा की नमाज़ की अहमियत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस शख़्स ने इशा की नमाज़ जमात के साथ पढ़ी गोया उस ने आधी रात इबादत की और जिस ने फज्र की नमाज़ जमात से पढ़ ली गोया उस ने सारी रात नमाज़ पढ़ी।"

[मुस्लिम : १४९१, अन उस्मान बिन अफ्फान रज़ि.]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — आइना देखने की दुआ

जब आइने में अपना चेहरा देखे तो यह दुआ पढ़े : اَللّٰهُمَّ حَسَّنْتَ خَلْقِيْ فَحَسِّنْ خُلُقِيْ

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! तू ने मेरी सूरत अच्छी बनाई है, पस तू मेरी सीरत भी अच्छी बना दे।

[इब्ने हिब्बान : ९६४, अन इब्ने मसऊद रज़ि.]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | तौबा से गुनाहों को भुलाया जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब बन्दा अपने गुनाहों से तौबा करता है तो अल्लाह तआला उस के गुनाहों के बारे में फ़रिश्तों को भुला देता है और उस के आज़ा और ज़मीन के मक़ामात को भी (गुनाहों के बारे में) भुला देता है। यहाँ तक के वह क़यामत के दिन अल्लाह तआला से इस हाल में मुलाक़ात करेगा के उस के गुनाहों के बारे में अल्लाह के सामने कोई गवाही देने वाला नहीं होगा।"

[तरग़ीब व तरहीब : ४४५९, अन अनस ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़र्मानी

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख़्स अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़र्मानी करेगा और उस की (मुक़र्रर की हुई) हदों से आगे बढ़ेगा, तो अल्लाह तआला उस को आग में दाख़िल करेगा जिस में वह हमेशा रहेगा और उस को ज़लील व रुस्वा करने वाला अज़ाब होगा।"

[सूर-ए-निसा : १४]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनियावी ज़िन्दगी एक धोका है

कुर्आन में अल्लाह फर्माता : "ऐ लोगो ! बेशक अल्लाह तआला का वादा सच्चा है, तो कहीं तुम को दुनियवी ज़िन्दगी धोके में न डाल दे, और तुम को धोके बाज़ शैतान किसी धोके में न डाल दे, यक़ीनन शैतान तुम्हारा दुश्मन है, तुम भी उसे अपना दुश्मन ही समझो ! वह तो अपने गिरोह (के लोगों को) इस लिये बुलाता है के वह भी दोज़ख़ वालों में शामिल हो जाएँ।" [सूर-ए-फातिर : ५ ता ६]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | क़यामत में मुंह पर मुहर लगा दी जाएगी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम जब क़यामत के दिन पेश होगे, तो तुम्हारे मुंह पर मुहर लगा दी जाएगी और आदमी की सब से पहली चीज़ जो बात करेगी वह उस की रान और हथेली होगी।"

[मुस्नदे अहमद : १९५२२, अन मुआविया बिन हैदा ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | मेअ्दे की सफाई

हज़रत अली ﷺ ने फर्माया : "अनार को उस के अन्दरूनी छिल्के समेत खाओ, क्योंकि यह मेअ्दे को साफ करता है।" [मुस्नदे अहमद : २२७२६]

फायदा : अल्लामा इब्ने क़य्यिम رحمه الله फर्माते हैं के अनार जहाँ मेअ्दे को साफ करता है वहीं पुरानी खाँसी के लिये भी बड़ा कार आमद फल है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस को ईमान की लज़्ज़त हासिल करने का शौक़ हो तो उसे सिर्फ अल्लाह के लिये आदमी से मुहब्बत करनी चाहिये।" [मुस्तदरक : ३, अन अबी हुरैरा ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२१) जुमादस्सानियह

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हुज़ूर ﷺ की बीमारी का ज़माना

हुज़ूर ﷺ माहे सफर सन ११ हिजरी को जन्नतुल बक़ी में दुआए मग़फिरत के लिये तशरीफ ले गए। वापसी पर सर में दर्द और बुख़ार की हरारत शुरू हो गई। आप ﷺ ने बीमारी के आलम में अज़्वाजे मुतह्हरात से इजाज़त ले कर हज़रत आयशा رضی اللہ عنہا के यहाँ क़याम फ़र्मा लिया और बीमारी की हालत में ११ दिन तक इमामत करते रहे, मगर जूँ जूँ वक़्त गुज़रता गया, मर्ज़ बढ़ता गया, हत्ता के एक दिन तबीअत ज़ियादा नासाज़ हो गई और नमाज़े इशा का वक़्त था, हज़रत अबू बक्र رضی اللہ عنہ को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दिया। उन्होंने तक़रीबन १७ नमाज़ें आप ﷺ की मौजूदगी में पढ़ाई। एक दिन तबीअत कुछ संभली तो हज़रत अली رضی اللہ عنہ और हज़रत अब्बास رضی اللہ عنہ के सहारे नमाज़े ज़ोहर के लिये तशरीफ लाए। हज़रत अबू बक्र رضی اللہ عنہ नमाज़ पढ़ा रहे थे, आहट पा कर वह पीछे हटने लगे। आप ﷺ ने हाथ के इशारे से मना फ़र्माया और ख़ुद उन की बाईं तरफ बैठ गए। नमाज़ के बाद फर्माया : अल्लाह तआला ने अपने बन्दे को इख़्तियार दिया है के चाहे वह दुनिया की नेअ्मतों को क़बूल कर ले या जो कुछ आख़िरत में अल्लाह के पास है उस को पसन्द कर ले। लेकिन उस बन्दे ने उन चीज़ों को क़बूल कर लिया है जो अल्लाह तआला के पास है।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — नरख़रा (गले की नाली)

हम जो आवाज़ निकालते हैं, बात करते हैं, अल्लाह की कुदरत देखिये ! अल्लाह ने आवाज़ निकालने का काम नरख़रा के ज़िम्मे लगा रखा है, नरख़रा गले में एक नाली है, जिस को टेंटवा कहते हैं; ज़बान, होंट और दाँत यह हुरूफ बनाने का काम करते हैं, फिर ज़बान उस की अदायगी में मदद करती है, नरख़रे से आवाज़ निकलने की मुख़्तलिफ शक्लें होती हैं, इसी लिये आवाज़ों में भी तफावुत होता है, जिस तरह दो आदमियों की शक्ल व सूरत बिल्कुल एक जैसी नहीं होती, इसी तरह उन की आवाज़ भी एक जैसी नहीं होती। सुब्हानल्लाह ! इन्सानी जिस्म के हर हर उज़्व में अल्लाह की कितनी बड़ी कुदरत कार फ़र्मा है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — तमाम रसूलों पर ईमान लाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग अल्लाह तआला पर ईमान रखते हैं और उस के रसूलों पर भी और उन में से किसी में फर्क़ नहीं करते, उन लोगों को अल्लाह तआला ज़रूर उन का सवाब देंगे और अल्लाह तआला बड़ी मग़फिरत वाले हैं, बड़ी रहमत वाले हैं।" [सूर-ए-निसा : १५२]

फायदा : अल्लाह तआला ने इन्सानों की हिदायत और रहनुमाई के लिये जितने नबी और रसूल भेजे हैं, उन सब पर ईमान लाना फर्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — कुर्आन की तिलावत ठहर ठहर कर करना

हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا से रसूलुल्लाह ﷺ की तिलावत की कैफियत के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने एक, एक कलिमा अलग, अलग पढ़ कर बताया। [अबू दाऊद : ४००१]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह के ख़ौफ से रोना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने अल्लाह को याद किया और उस के ख़ौफ से आँखें बह पड़ीं यहाँ तक के ज़मीन पर उस के आँसू गिर पड़ें। तो क़यामत के दिन उस को अज़ाब नहीं दिया जाएगा।"

[मुस्तदरक : ७६६८, अन अनस बिन मालिक ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	चंद बड़े गुनाह

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "चार शख़्स ऐसे हैं के अल्लाह तआला को हक़ है के उन को न तो जन्नत में दाख़िल करें और न अपनी नेअ्मतों का मज़ा चखाए। (१) शराब का आदी, (२) नाहक़ यतीम का माल खाने वाला। (३) सूद खाने वाला। (४) वालिदैन की नाफ़र्मानी करने वाला।"

[मुस्तदरक : २२६०, अन अबी हुरैरा ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया ज़लील हो कर कब आती है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस शख़्स का मक़सद आख़िरत होगा, तो अल्लाह तआला उस के दिल में इस्तिग़ना पैदा फ़र्माएगा और उस के कामों को जमा कर देगा और दुनिया उस के पास ज़लील हो कर आएगी और जिस का मक़सद दुनिया होगा, तो अल्लाह तआला उस के फक्र को उस के सामने कर देगा और उस के कामों को फैला देगा और दुनिया उस के मुक़द्दर की ही आएगी।"

[तिर्मिज़ी : २४६५, अन अनस बिन मालिक ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत का मन्ज़र

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "(ख़बरदार हो जाओ) जब ज़मीन को पूरी तरह कूट कर चूरा चूरा कर दिया जाएगा और तुम्हारा परवरदिगार जलवा फ़र्माएगा और फरिश्ते सफ बाँध कर मैदाने हश्र में आजाएँगे और उस दिन जहन्नम को सामने लाया जाएगा।" [सूर-ए-फज्र : २१ ता २३]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	तरबूज़ के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ तरबूज़ को तर खजूर के साथ खाते और फ़र्माते के हम इस खजूर की गरमी को तरबूज़ की ठंडक के ज़रिये और तरबूज़ की ठंडक को खजूर की गरमी के ज़रिये ख़त्म करते हैं।

[अबू दाऊद : ३८३६, अन आयशा ؓ]

फायदा : तरबूज़ गरमी की शिद्दत को कम करता है और गरमी की वजह से होने वाले सर दर्द में बेहद मुफीद है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम उन लोगों की तरह मत हो जाना, जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया, तो अल्लाह तआला ने ख़ुद उन की जानों से उन को ग़ाफिल कर दिया, यही लोग ना फ़र्मान हैं।" [सूर-ए-हश्र : १९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२२ जुमादस्सानियह

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — रसूलुल्लाह ﷺ की वफ़ात

माहे रबीउल अव्वल पीर के दिन सन ११ हिजरी में हज़रत अबू बक्र ﷺ फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे। हुज़ूर ﷺ ने हुजर-ए-मुबारक का पर्दा उठाया और सहाबा ﷺ को अपने परवरदिगार के सामने सफ़ में खड़ा देख कर मुसकुराए और अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया। उसी दिन हज़रत जिब्रईल ﷺ ने आप ﷺ की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! वही लाने के एतेबार से आज मेरा आख़री दिन है, इस के बाद मैं वही ले कर ज़मीन पर नहीं आऊँगा और आप ﷺ का भी आख़री दिन है, मेरा आख़री सलाम क़बूल फ़र्माइये, चुनान्चे आप ﷺ ने फर्माया : मुझ को ज़िन्दगी और मौत दोनों पेश की गई, तो मैं ने मौत को पसन्द किया, फिर यहूद व नसारा पर लानत फ़र्माई के उन्होंने अपने अम्बिया की क़ब्रों को सज्दागाह बना लिया था, तुम मेरी क़ब्र को हरगिज़ सज्दागाह न बनाना, लोगों को नमाज़ पढ़ने और मातहतों के साथ हुस्ने सुलूक की ताकीद की, फिर जूँ जूँ वक्त गुज़रता गया, आप ﷺ का मर्ज़ बढ़ता गया। आप ﷺ बार बार आस्मान की तरफ़ नज़र उठा कर फ़र्माते : ((اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاَلْحِقْنِيْ بِالرَّفِيْقِ الْاَعْلٰى)) ऐ अल्लाह ! मेरी मग़फ़िरत फ़र्मा, मुझ पर रहम फ़र्मा और मुझे रफ़ीक़े आला से मुलाक़ात का शर्फ़ अता फ़र्मा। इस तरह १२ रबीउल अव्वल सन ११ हिजरी पीर के दिन आप ﷺ ((اَللّٰهُمَّ الرَّفِيْقَ الْاَعْلٰى)) कहते हुए अपने ख़ालिक़े हक़ीक़ी से जा मिले। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — घी में बरकत

हज़रत हम्ज़ा बिन अम्र असलमी ﷺ फ़र्माते हैं : ग़ज़्व-ए-तबूक के सफ़र में घी की मशक की ज़िम्मेदारी मेरी थी। दौराने सफ़र मैं ने उस में से थोड़ा सा घी निकाला और हुज़ूर ﷺ के लिये खाना तय्यार किया और मशक में देखा तो घी बहुत ही कम बचा था। मैं ने वह मशक धूप में रख दी और मैं सो गया, अचानक मैं ने घी के बहने की आवाज़ सुनी, तो मेरी आँख खुल गई, देखा तो घी बह रहा था। मैं जल्दी से खड़ा हुआ और मशक का मुंह पकड़ लिया; हुज़ूर ﷺ ने मुझे देख कर फ़र्माया :"अगर इस को छोड़ देते तो पूरी वादी घी से बहने लगती।" [दलाइलुन्नुबुव्वह लिलअसफहानी : ३३४]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़ पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स चालीस दिन इख़्लास से तक्बीरे ऊला के साथ बाजमात नमाज़ पढ़ता है, तो उस को दो परवाने मिलते हैं। एक जहन्नम से बरी होने का दूसरा निफ़ाक़ से बरी होने का।" [तिर्मिज़ी : २४१, अन अनस बिन मालिक ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — फर्ज़ नमाज़ों के बाद की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ हर फर्ज़ नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ा करते थे :

((لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ

وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ)).

[बुख़ारी : ८४४, अन मुग़ीरा बिन शोबा ﷺ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	यतीम की पर्वरिश करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मुसलमानों में बेहतरीन घर वह है जिस में कोई यतीम हो और उस से अच्छा सुलूक किया जाए और मुसलमानों में बद तरीन घर वह है जिस में कोई यतीम हो और उस के साथ बुरा सुलूक किया जाए।" [इब्ने माजा : ३६७९, अन अबी हुरैरा ﷺ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	सूद ख़ोर से जंग का एलान

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अगर तुम (सूद लेने से) बाज़ नहीं आए, तो अल्लाह और उस के रसूल की तरफ से जंग का एलान सुन लो।" [सूर-ए-बक़रा : २७९]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	अल्लाह ही रोज़ी तक़सीम करते हैं

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "दुनियवी ज़िन्दगी में उन की रोज़ी हम ने ही तक़सीम कर रखी है और एक को दूसरे पर मर्तबे के एतेबार से फज़ीलत दे रखी है, ताके एक दूसरे से काम लेता रहे, और आप के रब की रहमत इस (दुनियवी माल) से कहीं ज़ियादा बेहतर है, जिस को यह लोग जमा करते फिरते हैं।" [सूर-ए-ज़ुख़रुफ : ३२]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में	ज़मीन गवाही देगी

आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फ़र्माई : ﴿ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ﴾ (यानी उस दिन ज़मीन अपनी सब बातें बयान कर देगी) फिर इर्शाद फर्माया : "तुम जानते हो ज़मीन क्या ख़बरें बयान करेगी?" सहाबा ने अर्ज़ किया : अल्लाह और उस के रसूल ख़ूब जानते हैं। आप ﷺ ने फर्माया : उस की ख़बरें यह हैं के वह हर मर्द और औरत के मुतअल्लिक़ उस अमल की गवाही देगी, जो उस की पीठ पर किया गया था, वह कहेगी : इस ने ऐसा और ऐसा अमल फुलाँ फुलाँ दिन किया था।

[तिर्मिज़ी : २४२९, अन अबी हुरैरा ﷺ]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	ख़तना के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "पाँच चीज़ें फितरत में से हैं, उन में से एक ख़तना करना है।"

[मुस्लिम : ५९८, अन अबी हुरैरा ﷺ]

फायदा : ख़तना करने से शर्मगाह के केन्सर, एगज़ीमा जैसी बीमारियों से हिफाज़त होती है।

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम जहाँ कहीं भी रहो अल्लाह से डरते रहो और बुराई को मिटाने के लिये नेकी कर लिया करो और लोगों से अच्छे अख़्लाक का बरताव किया करो।"

[तिर्मिज़ी : १९८७, अन अबी ज़र ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२३) जुमादस्सानियह

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हुज़ूर ﷺ की वफात से सहाबा की हालत

रसूलुल्लाह ﷺ की वफात की ख़बर मदीना के अतराफ में फौरन फैल गई, यह ख़बर सहाब-ए-किराम ؓ पर बिजली बन कर गिरी, इस अलमनाक हादसे ने सहाब-ए-किराम ؓ को हमेशा के लिये आप ﷺ के चेहर-ए-अनवर के दीदार से महरूम कर दिया, बड़े बड़े जलीलुलक़द्र सहाबा हवास खो बैठे और उन की अक़्लें गुम हो गईं, हज़रत उमर ؓ गम के मारे तलवार निकाल कर कहने लगे, जो कोई कहेगा के हुज़ूर ﷺ की वफात हो चुकी है, तो उस की गर्दन उड़ा दूँगा। मगर ऐसे नाज़ुक वक़्त में हज़रत अबू बक्र ؓ ने अक़्ल व शुऊर से काम लेते हुए लोगों के सामने एक मुख़्तसर ख़ुतबा दिया और कहा : ऐ लोगो ! जो शख़्स मुहम्मद ﷺ की इबादत करता था, तो सुन ले के आप ﷺ वफात पा चुके हैं और जो अल्लाह की इबादत करता था, तो बिला शुबा वह ज़िन्दा है और उसे कभी मौत नहीं आसकती, फिर सूर-ए-आले इमरान की आयत तिलावत की :

﴿وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ، قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ، أَفَإِنْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَى أَعْقَابِكُمْ﴾

हज़रत उमर ؓ कहते हैं के हज़रत अबू बक्र ؓ की तिलावत सुन कर ऐसा महसूस हुआ के यह आयत अभी नाज़िल हुई है, इस के बाद सहाबा ؓ को कुछ होश आया और यक़ीन हुआ के रसूलुल्लाह ﷺ अपना फरीज़-ए-रिसालत पूरा कर के अपने रब के पास जा चुके हैं।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — लोमड़ी का चालाकी

लोमड़ी एक जंगली जानवर है, अल्लाह तआला ने इस को शुऊर अता किया है ! यह अपना मकान ज़मीन के अन्दर बनाती है और उस में आने जाने के लिये दो रास्ते बनाती है और वह रास्ते बहुत तंग होते हैं, इस के अलावा नीचे भी कोई न कोई ऐसा सूराख़ रखती है, जिस से ज़रूरत पर अपने आप को बचा सके। एक रास्ते से अगर कोई पकड़ना चाहे, तो दूसरे रास्ते से भाग जाती है और अगर दोनों रास्तों पर कोई उस को घेर ले तो नीचे के सूराख़ से अपना बचाव कर लेती है, यह शुऊर और समझ लोमड़ी को किस ने अता किया ?

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — मस्जिद में दाख़िल होने के लिये पाक होना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "किसी हाइज़ा औरत और किसी जुनुबी यानी नापाक आदमी के लिये मस्जिद में दाख़िल होने की बिल्कुल इजाज़त नहीं है।" [अबू दाऊद : २३२, अन आयशा ؓ]

फायदा : मस्जिद में दाख़िल होने के लिये पाक होना ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — अपने सामने से खाना खाना

हज़रत उमर बिन अबी सलमा ؓ ने फर्माया : एक दिन मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ खाना खाया, मैं थाली के इर्द गिर्द से खाने लगा, तो आप ﷺ ने मुझ से फर्माया : "अपने सामने से खाओ।" [बुख़ारी : ५३७७]

फायदा : अगर एक साथ कई आदमी खाना खाएं, तो हर एक अपने अपने सामने से खाए और यही सुन्नत है।

नंबर (५): ***एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत***	**क़ुर्आन की तिलावत करना**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "कुर्आन शरीफ की तिलावत किया करो, इस लिये के क़यामत के दिन यह अपने साथी (यानी पढ़ने वाले) की शफाअत करेगा।" [मुस्लिम : १८७४, अन अबी उमामा رضي الله عنه]

नंबर (६): ***एक गुनाह के बारे में***	**जानवरों को बे मक़सद मारना**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने किसी चिड़या को बे फायदा मारा होगा तो वह क़यामत के दिन अल्लाह तआला के सामने फरियाद करेगी के ऐ मेरे रब ! फुलाँ ने मुझे बे मक़सद मारा था और किसी ज़रूरत व फायदे के लिये नहीं मारा था।" [नसई : ४४५१, अन शरीद رضي الله عنه]

नंबर (७): ***दुनिया के बारे में***	**दुनिया का कोई भरोसा नहीं**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "इस दुनिया की मिसाल उस कपड़े की सी है, जिस को शुरू से काट दिया जाए और अख़ीर में एक धागे पर लटका हुआ रह जाए, तो वह धागा कभी भी टूट सकता है (इसी तरह इस दुनिया का कोई ठिकाना नहीं, कभी भी ख़त्म हो जाएगी।)"

[शोअबुल ईमान : १८७५, अन अनस رضي الله عنه]

नंबर (८): ***आख़िरत के बारे में***	**क़यामत के दिन ज़मीन का लरज़ना**

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जब ज़मीन पूरी हरकत से हिला दी जाएगी और ज़मीन अपने बोझ (मुरदे और ख़ज़ाने) बाहर निकाल देगी और इन्सान कहेगा के इस ज़मीन को क्या हो गया है? उस दिन ज़मीन अपनी बातें बयान कर देगी, इस लिये के आप के रब ने उस को हुक्म दिया होगा।"

[सूर-ए-ज़िलज़ाल : १ ता ५]

नंबर (९): ***तिब्बे नब्वी से इलाज***	**सिरके के फवाइद**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "सिरका क्या ही बेहतरीन सालन है।" [मुस्लिम : ५३५०, अन आयशा رضي الله عنها]

फायदा : सिरके के बारे में मुहद्दिसीन हज़रात कहते हैं के यह तिल्ली के बढ़ने को रोकता है, जिस्म में वरम नहीं होने देता, खाने को हज़्म करता है और ख़ून को साफ करता है और फोड़े फुंसियों को दूर करता है। [इलाजुन नबवी]

नंबर (१०): ***कुर्आन की नसीहत***	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो ! तुम ऐसी बात क्यों कहते हो जो करते नहीं? यह बात अल्लाह के नज़दीक बड़ी नाराज़गी की है के तुम ऐसी बातें कहो जिन पर ख़ुद अमल न करो।" [सूर-ए-सफ : २ ता ३]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा

(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

२४ जुमादस्सानियह

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — रसूलुल्लाह ﷺ की तजहीज़ व तकफीन

रसूलुल्लाह ﷺ के विसाल के बाद लोगों ने हजरत अबू बक्र सिद्दीक रज़ि. को अपना ख़लीफा मुन्तख़ब कर के आप ﷺ की तजहीज़ व तकफीन की तरफ तवज्जोह फ़र्माई, हज़रत अली रज़ि. और हज़रत अब्बास रज़ि. वग़ैरा ने गुस्ल दे कर आप ﷺ के जसदे मुबारक को हुजर-ए-आयशा रज़ि. में रख दिया, फिर लोग बारी बारी आकर नमाज़े जनाज़ा अदा करते रहे, पहले आप ﷺ के ख़ान्दान बनू हाशिम ने, फिर मुहाजिरीन व अन्सार और दीगर हजरात ने नमाज़े जनाज़ा अदा की। १३ रबीउल अव्वल, मंगल के दिन अलग अलग नमाज़े जनाज़ा पढ़ी गई, तदफीन के बारे में सहाबा रज़ि. का मश्वरा हुआ, सिद्दीके अक्बर रज़ि. ने हुज़ूर ﷺ का फ़र्मान सुनाया : अम्बिया उसी जगह दफन होते हैं जहाँ उन की रुह क़ब्ज़ होती है, यह सुन कर सहाब-ए-किराम रज़ि. ने ब इत्तेफाके राय हुजर-ए-मुबारक में क़ब्र तय्यार की और बुध की रात में आप ﷺ की तदफीन अमल में आई। इस हुजर-ए-आयशा रज़ि. को रौज़ातुन्नबी ﷺ कहते हैं।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — फरिश्तों की मदद

हज़रत अबू तलहा रज़ि. फ़र्माते हैं के हम एक ग़ज़वे में रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे, जब कुफ्फार से मुड भेड़ हुई तो मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को यह दुआ करते हुए सुना ﴿يَا مَالِكَ يَوْمِ الدِّيْنِ، إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ﴾ इस के बाद देखा के फरिश्तों ने कुफ्फार को आगे पीछे से मारना शुरू किया और एक एक कर के बहुत से कुफ्फार ज़मीन पर गिर पड़े। [दलाइलुन्नुबुव्वह लिल असफहानी : ३७३]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — औलाद की वरासत में माँ बाप का हिस्सा

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "माँ बाप (में से हर एक) के लिये मय्यित के छोड़े हुए माल में छटा हिस्सा है। अगर मय्यित के लिये कोई औलाद हो।" [सूर-ए-निसा : ११]

फायदा : अगर किसी का इन्तेक़ाल हो जाए और उस के वरसा में माँ बाप और औलाद हैं, तो माँ बाप में से हर एक को अलग अलग छटा हिस्सा देना फ़र्ज़ है।

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — अल्लाह तआला की मुहब्बत हासिल करने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ अपनी दुआओं में ख़ास तौर पर यह चीज़ माँगा करते थे :

((اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِيْ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يَنْفَعُنِيْ حُبُّهُ عِنْدَكَ اَللّٰهُمَّ مَا رَزَقْتَنِيْ مِمَّا اُحِبُّ فَاجْعَلْهُ قُوَّةً لِيْ فِيْمَا تُحِبُّ اَللّٰهُمَّ وَمَا زَوَيْتَ عَنِّيْ مِمَّا اُحِبُّ فَاجْعَلْهُ فَرَاغًا لِيْ فِيْمَا تُحِبُّ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! आप मुझे अपनी मुहब्बत और उन लोगों की मुहब्बत अता फ़र्माइये जिन की मुहब्बत आप के नज़दीक मेरे लिये नफा बख़्श है, ऐ अल्लाह ! मेरी चाहत व रग़बत की जो चीज़ें आप ने अता की हैं, उन से आप अपने महबूब कामों में तक़वियत पहुँचाइये और मेरी चाहत की जो चीज़ें आप ने

मुझे अता नहीं की हैं, तो मेरे फ़ारिग़ औक़ात को अपने महबूब कामों में सर्फ करने की तौफीक़ अता फ़र्माइये।

[तिर्मिज़ी : ३४९१, अन अब्दुल्लाह बिन यज़ीद ﷺ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	दुआ करना बेकार नहीं

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "बे शक तुम्हारा रब शर्म व हया करने वाला और बड़ा सखी है। वह अपने बन्दे से इस बात पर शर्माता है के बन्दा उस की तरफ अपने हाथ उठाए और वह उसे ख़ाली लौटाए।"

[तिर्मिज़ी : ३५५६, अन सलमान फारसी ﷺ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	किसी पर तोहमत लगाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख़्स कोई छोटा या बड़ा गुनाह करे फिर उस की तोहमत किसी बे गुनाह पर लगा दे, तो उस ने बहुत बड़ा बोहतान और खुले गुनाह का बोझ अपने ऊपर लाद लिया।"

[सूर-ए-निसा : ११२]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	जो कुछ ख़र्च करना है दुनिया ही में कर लो

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "हम ने तुम को जो कुछ दिया है उस में से ख़र्च करो, इस से पहले के तुम में से किसी को मौत आजाए और फिर (मौत को देख कर) कहने लगे के ऐ मेरे रब! तू ने मुझ को और थोड़े दिनों की मोहलत क्यों न दी ताके ख़ूब खर्च कर के नेक लोगों में शामिल हो जाता।"

[सूर-ए-मुनाफिक़ून : १०]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में	हज़रत मीकाईल ﷺ की हालत

आप ﷺ ने हज़रत जिब्राईल ﷺ से दरयाफ्त फ़र्माया : "क्या बात है, मैं ने मीकाईल को हँसते हुए नहीं देखा ?" अर्ज़ किया : जब से दोज़ख़ की पैदाइश हुई है, मीकाईल नहीं हँसे।"

[मुस्नदे अहमद : १२९३०, अन अनस बिन मालिक ﷺ]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	खाने के बाद उंगलियाँ चाटने का फायदा

रसूलुल्लाह ﷺ जब खाना खा लेते तो अपनी तीनो उंगलियों को चाटते।

[मुस्लिम : ५२९६, अन कअब बिन मालिक ﷺ]

फायदा : अल्लामा इब्ने क़य्यिम ﷺ कहते हैं के खाना खाने के बाद उंगलियाँ चाटना हाज़मे के लिये इन्तेहाई मुफीद है।

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मरीज़ों की इयादत करो और जनाज़े के पीछे चलो, यह तुम को आख़िरत की याद दिलाएगा।"

[सही इब्ने हिब्बान : ३०१७, अन अबी सईद ख़ुदरी ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२५) जुमादस्सानियह

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — रसूलुल्लाह ﷺ का हुलिया मुबारक

अल्लाह तआला ने अपने प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद ﷺ को जिस तरह हुस्ने सीरत, पाकीज़ा अख़्लाक़ और आला किरदार से आरास्ता किया था, वहीं ज़ाहिरी ख़ूबसूरती भी बे मिसाल अता फ़र्माई थी, आप ﷺ का रंग गन्दुमी, बाल मुबारक हल्के घुंघरेले, आँखें बड़ी, सुरमगीं और उस में ख़ूबसूरत लाल डोरे थे, दाँत मुबारक मोती की तरह चमकदार थे, दाढ़ी मुबारक ख़ूब घनी थी, दोनों मोंढे बड़े और मुनासिब थे, सीना मुबारक क़द्रे वसीअ, लेकिन पेट के बिल्कुल बराबर था, एड़ी मुबारक गोश्त से पुर, क़द मुबारक दर्मियानी, जिस्म मुबारक मुनासिब तरतीब पर और आज़ा निहायत ही मज़बूत थे। गोया के आप ﷺ सीरत व सूरत के पैकर और हुस्न व जमाल के नमूना थे। हज़रत जाबिर ﷺ फ़र्माते हैं : जब मैं चांदनी रात में चाँद को देखता, फिर हुज़ूर ﷺ के चेहर-ए-अनवर को देखता, तो ख़ुदा की क़सम ! आप ﷺ चाँद से कहीं ज़ियादा हसीन नज़र आते। (فَتَبَارَكَ اللّٰهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ)

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — गन्ने का रस

अल्लाह तआला ने हमारे फायदे के लिये ज़मीन से बे शुमार नेअ्मतें पैदा फ़र्माई। उन में से एक गन्ना भी है, जो देखने में बाँस की तरह होता है, मगर उस के अन्दर भरपूर रस होता है, जिस से शकर वग़ैरा तय्यार की जाती है और फिर बे शुमार मिठाइयाँ और हलवे वग़ैरा बनाए जाते हैं, अल्लाह तआला ने गन्ने के रस में बड़ी शिफा रखी है, इसी लिये अतिब्बा और डाक्टर मरीज़ों को उस का रस पीने का मश्वरा देते हैं। आख़िर बाँस जैसे इस गन्ने में मुफीद रस कौन पैदा करता है? यक़ीनन, अल्लाह ही ने अपनी क़ुदरत से इस में मीठा रस पैदा किया है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — जमात से नमाज़ न पढ़ने पर वईद

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ से किसी ने पूछा के एक शख़्स दिन भर रोज़ा रखता है और रात भर नफ़्लें पढ़ता है मगर जुमा और जमात में शरीक नहीं होता, (उस के मुतअल्लिक़ क्या हुक्म है?) उन्होंने फ़र्माया : "यह शख़्स जहन्नमी है"। [तिर्मिज़ी : २१८, अन मुजाहिद رحمه الله]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — शुक्र गुज़ार बनने की दुआ

हज़रत अबू हुरैरा ﷺ बयान करते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से यह दुआ महफ़ूज़ की है :

((اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ أُعْظِمُ شُكْرَكَ وَأُكْثِرُ ذِكْرَكَ وَأَتَّبِعُ نُصْحَكَ وَأَحْفَظُ وَصِيَّتَكَ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! तू मुझे कसरत से शुक्र करने वाला और कसरत से आप को याद करने वाला और आप की नसीहतों पर अमल करने वाला और आप की वसिय्यतों को याद रखने वाला बना दीजिये। [तिर्मिज़ी : ३६०४]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	कामिल ईमान वाला

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स अल्लाह ही के लिये मुहब्बत करे और अल्लाह ही के लिये नफरत करे और अल्लाह ही के लिये ख़ैरात करे और अल्लाह ही के लिये देने से रुक जाए तो उस शख़्स ने ईमान मुकम्मल कर लिया।" [अबू दाऊद : ४६८१, अन अबी उमामा ؓ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	अपने बच्चे का इन्कार करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स अपने बच्चे का इन्कार करेगा (यानी यह कहे के यह मेरा बच्चा नहीं है) हालाँके वह जानता है के वह उस का बच्चा है, तो अल्लाह तआला उस को अपनी रहमत से दूर कर देगा और क़यामत के दिन अगले और पिछले तमाम लोगों के सामने उस को रुस्वा किया जाएगा।" [नसई : ३५११, अन अबी हुरैरा ؓ]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	अल्लाह तआला अपने बन्दे से क्या कहता है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ इब्ने आदम ! तू मेरी इबादत के लिये फ़ारिग़ हो जा, मैं तेरे सीने को मालदारी से भर दूँगा और तेरी मोहताजगी को ख़त्म कर दूँगा और अगर ऐसा नहीं करेगा, तो मैं तेरे सीने को मश्गूली से भर दूँगा और तेरी मोहताजगी को दूर नहीं करूँगा।"

[तिर्मिज़ी : २४६६, अन अबी हुरैरा ؓ]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में	अहले जन्नत का लिबास

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "(अहले जन्नत) को सोने के कंगन पहनाए जाएँगे और सब्ज़ रंग के बारीक और मोटे रेश्मी लिबास पहनेंगे।" [सूर-ए-कहफ : ३१]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	खजूर से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "ज़चगी की हालत में तुम अपनी औरतों को तर खजूरें खिलाओ और अगर वह न मिलें, तो सूखी खजूरें खिलाओ।" [मुस्नदे अबी याला : ४३४, अन अली ؓ]

फ़ायदा : बच्चे की पैदाइश के बाद खजूर खाने से औरत के जिस्म का फ़ासिद ख़ून निकल जाता है और बदन की कमज़ोरी ख़त्म हो जाती है।

नंबर (१०) : कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "बिला शुबा यह कुर्आन एक नसीहत है, तो जो शख़्स चाहे अपने रब तक पहुँचने का रास्ता इख़्तियार कर ले, और तुम अल्लाह की मरज़ी के बग़ैर कुछ नहीं चाह सकते, अल्लाह तआला बड़े इल्म व हिकमत का मालिक है।" [सूर-ए-दहर : २९ ता ३०]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हुज़ूर ﷺ के अहले ख़ाना

हुज़ूर ﷺ के पास जो कुछ भी आता दूसरों को इनायत फ़र्मा देते और ख़ुद ज़ुहद व क़नाअत और फ़क्र व फ़ाक़े की ज़िन्दगी गुज़ारते, यहाँ तक के दुनिया से जाते वक़्त भी एक ख़च्चर और चन्द हिफ़ाज़ती हथियारों के अलावा कुछ नहीं छोड़ा, एक ज़मीन थी वह भी विसाल से पहले आम मुसलमानों के लिये वक़्फ़ कर दी थी, आप ﷺ की ११ बीवियाँ थीं, उन में से हज़रत ख़दीजा ؓ और ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा ؓ का इन्तेक़ाल आप ﷺ की मौजूदगी ही में हो गया था। हज़रत इब्राहीम ؓ के अलावा तमाम औलाद (हज़रत ज़ैनब, हज़रत रुक़य्या, हज़रत उम्मे कुलसूम, हज़रत फातिमा, हज़रत क़ासिम और हज़रत अब्दुल्लाह ؓ) हज़रत ख़दीजा ؓ ही से पैदा हुईं। उन की वफात के बाद हज़रत सौदा बिन्ते ज़मआ, हज़रत आयशा बिन्ते अबी बक्र, हज़रत हफसा बिन्ते उमर, हज़रत उम्मे सलमा बिन्ते अबू उमय्या, हज़रत उम्मे हबीबा बिन्ते अबू सुफ़ियान, हज़रत मैमूना बिन्ते हारिस, हज़रत सफिया बिन्ते हुयै बिन अख़तब, हज़रत जुवैरिया बिन्ते हारिस और हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अनहुन से निकाह फर्माया। इन के अलावा दो बाँदियाँ (मारिया बिन्ते शमऊन और रैहाना बिन्ते अम्र) भी थीं। हज़रत मारिया ؓ से आप ﷺ के साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम ؓ पैदा हुए। अल्लाह तआला ने आप ﷺ के निकाह में मुतअद्द बीवियों को दीनी मसलेहत और हिकमत के तहत जमा कर दिया था।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — आप ﷺ के जिस्म से ख़ुश्बू आना

हज़रत अनस ؓ फर्माते हैं के मैं ने नहीं सूँघा अम्बर और न कोई मुश्क और न कोई ख़ुश्बूदार चीज़ जो रसूलुल्लाह ﷺ (के जिस्मे अतहर) की ख़ुश्बू से ज़ियादा पाकीज़ा हो। [मुस्लिम: ६०५३]

हज़रत आयशा ؓ फर्माती हैं के आप ﷺ से जब कोई मुसाफा करता तो तमाम दिन उस शख़्स को ख़ुश्बू आती रहती और जब कभी आप ﷺ किसी बच्चे के सर पर हाथ रख देते तो वह ख़ुश्बू के सबब दूसरे लड़कों में पहचाना जाता। [बैहक़ी फी दलाइलिन्नुबुव्वह: २३८]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — खड़े हो कर नमाज़ पढ़ना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "नमाज़ में अल्लाह के सामने आजिज़ बने खड़े हुआ करो।" [सूर-ए-बक़रा: २३८]

फायदा : अगर कोई शख़्स खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने की ताक़त रखता हो, तो उस पर फर्ज़ और वाजिब नमाज़ को खड़े हो कर पढ़ना फर्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — सेहत और पाक दामनी की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ बकसरत यह दुआ माँगा करते थे :

((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ الصِّحَّةَ وَالْعِفَّةَ وَالْأَمَانَةَ وَحُسْنَ الْخُلُقِ وَالرِّضَاءَ بِالْقَدَرِ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह मैं आप से सेहत व तन्दुरुस्ती, पाकदामनी, अमानतदारी, हुस्ने अख़्लाक़ और तक़दीर पर रज़ामन्दी माँगता हूँ। [बैहक़ी फी शोअ्बिल ईमान : ८३००, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अज़ान शुरू होते ही दुआ पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स मोअज़्ज़िन को अज़ान देते हुए सुने और यह कहे :

((أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُوْلًا وَبِالْإِسْلَامِ دِيْنًا))

तो उस के गुनाह माफ कर दिए जाएँगे।" [मुस्लिम : ८५१, अन सअ्द बिन अबी वक़्क़ास ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	औलाद का क़त्ल गुनाहे कबीरा है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "गुरबत के डर से अपनी औलाद को क़त्ल न करो, हम तुम को भी रिज़्क़ देते हैं और उन को भी।" [सूर-ए-अनआम : १५१]

ख़ुलासा : रोज़ी का ज़िम्मा अल्लाह तआला पर है, लिहाज़ा रोज़ी की तंगी के डर से बच्चों को मार डालना या हमल गिराना जैसा के आज के दौर में हो रहा है, बहुत ही बड़ा गुनाह और हराम है।

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की मुहब्बत और आख़िरत से बे फ़िक्री

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "यह लोग दुनिया से मुहब्बत रखते हैं और अपने आगे आने वाले एक भारी दिन को छोड़ बैठे हैं। (यानी दुनिया की मुहब्बत ने ऐसा अंधा कर रखा है, के क़यामत के दिन की न तो कोई फ़िक्र है और न ही कोई तय्यारी है; हालाँके दुनिया में आने का मक़सद ही आख़िरत के लिये तय्यारी करना है।)" [सूर-ए-दहर : २७]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	ईमान वालों का जहन्नम से निकलना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह तआला क़यामत के दिन उन फरिश्तों को जो दोज़ख़ पर मुक़र्रर होंगे हुक्म देगा के जिस ने मुझे कभी याद किया या किसी मौक़े पर जो बन्दा मुझ से डरा उस को दोज़ख़ से निकाल दिया जाए।" [तिर्मिज़ी : २५९४, अन अनस ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	गुरदे की बीमारियों का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "पहलू के दर्द का सबब गुरदे की नस है, जब वह हरकत करती है तो इन्सान को तकलीफ होती है और उस का इलाज गर्म पानी और शहद से करो।"

[मुस्तदरक : ८२३७, अन आयशा ؓ]

फायदा : गुरदे में जब पथरी वग़ैरा हो जाती है तो कूल्हों की हड्डी में दर्द होता है बल्के अकसर इसी दर्द ही की वजह से इस बीमारी का पता चलता है, इस का इलाज आप ﷺ ने यह बताया के गर्म पानी और शहद मिला कर पिलाया जाए।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "किसी के छुपे हुए ऐबों के पीछे न पड़ा करो, क्योंकि जो ऐसा करेगा अल्लाह तआला का मामला भी उस के साथ वैसा ही होगा और जिस के साथ अल्लाह तआला की तरफ से यह मामला होगा तो अल्लाह उस को उस के घर में ज़लील कर देगा।"

[तिर्मिज़ी : २०३२, अन इब्ने उमर ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२७) जुमादस्सानियह

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हुज़ूर ﷺ के बुलन्द अख़्लाक़

अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह ﷺ को अख़्लाक़ का निहायत बुलन्द मर्तबा अता फ़र्माया था, अफ्व व दरगुज़र, रहम व करम, दुश्मनों के साथ करीमाना बरताव और लोगों के साथ नर्मी व मुहब्बत में कामिल व मुकम्मल नमूना थे। अल्लाह तआला का इर्शाद है : बे शक आप अख़्लाक़ के बुलन्द मर्तबे पर फाइज़ हैं। हज़रत आयशा رضی اللہ عنہا से किसी ने आप ﷺ के अख़्लाक़ के मुतअल्लिक पूछा, तो उन्होंने फर्माया: क़ुर्आन ही तो आप ﷺ का अख़्लाक़ था। यानी आप ﷺ की पूरी ज़िन्दगी और रात दिन के मामूलात क़ुर्आने करीम की अमली तफसीर है। आप ﷺ की रहम दिली का यह हाल था के एक मर्तबा रास्ता चलते हुए एक आराबी ने चादर पकड़ कर इस ज़ोर से खींचा के आप ﷺ की गर्दन मुबारक पर निशान आगया। फिर सख़्त कलामी करते हुए कहने लगा : ऐ मुहम्मद ! अल्लाह का जो माल आप ﷺ के पास है वह मुझे भी देने का हुक्म दीजिये। इस क़द्र गुस्ताख़ी से पेश आने के बावजूद आप ﷺ ने उसे कुछ नहीं कहा, बल्के मुड़ कर देखा और मुसकुराते हुए उसे कुछ देने की हिदायत फ़र्माई। अख़्लाक़ की इन्हीं ख़ूबियों ने आप ﷺ की दावत व तबलीग़ को पूरी दुनिया में फैला दिया और ज़ुल्म व सितम और जंग व जिदाल करने वाली क़ौमों को अद्ल व इन्साफ और मुहब्बत व भाई चारगी से रहने वाली उम्मत बना दिया।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — च्यूंटी के मकानात (बिल)

एक छोटी सी मख़्लूक़ च्यूंटी पर ग़ौर कीजिये, यह ज़मीन में अपने रहने के लिये किस हुस्ने तदबीर से मकानात (बिल) बनाती है, ज़मीन को फाड़ कर मिट्टी बाहर ला कर डालती है, अन्दर की जगह साफ कर लेती है, फिर अपनी ख़ूराक अन्दर जमा करती है और जो गल्ला वह जमा करती है, उस को अपने दाँतों से कतर कर रखती है, और इस की अकलमन्दी का यह अजीब हाल है के यह मकान नशेबी ज़मीन में कभी नहीं बनाती बल्के बुलन्द हिस्स-ए-ज़मीन पर बनाती है, यह शुऊर इस छोटी सी मख़्लूक़ को किस ने दिया है ?

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नेकियों का हुक्म देना और बुराइयों से रोकना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है के तुम पर ज़रूरी और लाज़िम है के भलाइयों का हुक्म करो और बुराइयों से रोको, वरना क़रीब है के अल्लाह तआला गुनहगारों के साथ तुम सब पर अपना अज़ाब भेज दे, उस वक़्त तुम अल्लाह तआला से दुआ माँगोगे तो क़बूल न होगी।" [तिर्मिज़ी : २१६९, अन हुज़ैफ़ा رضی اللہ عنہ]

फायदा : नेकियों का हुक्म देना और बुराइयों से रोकना उम्मत के हर फर्द पर अपनी हैसियत और ताक़त के मुताबिक लाज़िम और ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — बदन के आज़ा की सलामती की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ इन अलफाज़ में दुआ फर्माते थे :

((اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَدَنِيْ اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ سَمْعِيْ اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَصَرِيْ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मेरे बदन में आफियत अता फर्मा और ऐ अल्लाह ! मेरे कान, आँख में आफियत दे। बस तू ही सच्चा माबूद है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। [अबू दाऊद : ५०९०, अन अबी बकरा

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — जन्नत का ख़ज़ाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : " ((لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ)) बकसरत पढ़ा करो, इस लिये के वह जन्नत के ख़ज़ानों में से एक खज़ाना है।" [तिर्मिज़ी : ३६०१, अन अबी हुरैरा ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में — गाने बजाने की चीज़ों की खरीद व फरोख़्त करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "गाने वाली बाँदियों की ख़रीद व फरोख़्त मत करो और न उन्हें ख़रीदो और न उन्हें तालीम दो, उन की तिजारत में कोई भलाई नहीं और उस की क़ीमत हराम है।"

[तिर्मिज़ी : ३१९५, अन अबी उमामा ﷺ]

फायदा : इस रिवायत से गाने बजाने के तमाम आलात की ख़रीद व फरोख़्त नाजाइज़ होगी जिस में टी वी वगैरा भी दाख़िल है।

नंबर (७): दुनिया के बारे में — दुनिया की मुहब्बत का नुक़सान

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने अल्लाह से तअल्लुक़ कर लिया अल्लाह उस की हाजतों का कफील हो जाएगा और ऐसी जगह से रोज़ी देगा, जिस का उसे वहम व गुमान भी नहीं होगा और जो शख़्स दुनिया से तअल्लुक़ कर लेता है तो अल्लाह तआला उस को दुनिया के हवाले कर देता है।"

[मोअ्जमे औसत : ३४९०, अन इमरान बिन हुसैन ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में — आमाल का वज़न

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जिस शख़्स (के आमाल का) पल्ला भारी होगा, तो वह शख़्स ऐश व राहत की ज़िन्दगी में होगा और जिस शख़्स के आमाल का पल्ला हल्का होगा, तो उस का ठिकाना "हाविया" होगा और आप को मालूम है के "हाविया" क्या है ? वह दहकती हुई आग है।"

[सूर-ए-क़ारिआ : ६ ता ११]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज — हर क़िस्म के दर्द का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ सहाब-ए-किराम ﷺ को बुख़ार और हर क़िस्म के दर्द से नजात हासिल करने के लिये यह दुआ सिखाते थे :

((بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ، أَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ مِنْ شَرِّ كُلِّ عِرْقٍ نَعَّارٍ وَّمِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ))

[तिर्मिज़ी : २०७५, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ख़बरदार हो जाओ ! यह क़ुर्आन सरासर नसीहत है, जिस का जी चाहे इस से नसीहत हासिल करे।" [सूर-ए-मुद्दस्सिर : ५४ ता ५५]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२८ जुमादस्सानियह

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — मोहसिने इन्सानियत

दुनिया में बड़े बड़े अम्बिया और रुसुल पैदा हुए, बे शुमार शख़्सियतें पैदा हुईं, और उन हज़रात ने ज़बरदस्त कारनामे अन्जाम दिये, मगर किसी को भी वह शर्फ़ व फ़ज़ल हासिल नहीं हुआ जो सरवरे कौनैन, ख़ातमुल अम्बिया, मोहसिने इन्सानियत हज़रत मुहम्मद ﷺ को हासिल हुआ। आप ﷺ की ज़िन्दगी की तमाम तफ़सीलात तारीख़ व हदीस और सीरत के अन्दर चौदा सौ साल से पूरी तरह महफ़ूज़ है, जिसे पढ़ कर एक इन्साफ़ पसन्द आदमी को यक़ीन हो जाता है के रसूलुल्लाह ﷺ की हयाते मुबारका व सीरते तय्यिबा अहले ईमान और पूरी दुनिया के लोगों के लिये क़ाबिले नमूना है। हुज़ूर ﷺ की पूरी ज़िन्दगी क़ुर्आन की अमली तफ़सीर है। और हयाते तय्यिबा का हर पहलू ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये रौशन राह है, आप ﷺ की सीरते मुबारका ज़िन्दगी के तमाम शोअ्बों पर मुहीत है। सहाब-ए-किराम رضی اللہ عنہم के साथ तअल्लुक़ात में बे तकल्लुफ़ी, अपने और ग़ैरों के दर्मियान अदल व इन्साफ़, अजनबियों और रिश्तेदारों के साथ मुसावात और तमाम जान्दारों के साथ जो हुस्ने सुलूक आप ﷺ ने किया है। रहती दुनिया तक इस की मिसाल नहीं मिल सकती। ग़र्ज़ आप ﷺ की ज़िन्दगी का कोई भी शोअ्बा ऐसा न था जो अल्लाह तआला की मरज़ी और क़ुर्आने करीम की हिदायत के मुताबिक़ न हो और दुनियाए इन्सानियत के लिये एक जामे व मुकम्मल नमूना की हैसियत न रखता हो।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — रास्ते का ख़ुश्बूदार हो जाना

हज़रत जाबिर رضی اللہ عنہ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ जब भी किसी रास्ते से गुज़रते और कोई शख़्स आप ﷺ की तलाश में जाता, तो वह ख़ुश्बू से पहचान लेता के आप ﷺ इस रास्ते से तश्रीफ़ ले गए हैं, यह ख़ुश्बू इत्र वग़ैरा लगाए बग़ैर ख़ुद आप ﷺ के बदन मुबारक से आती थी। [सुनने दारमी: ६७]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — वसिय्यत पूरी करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला ने चंद वारिसों के हिस्सों का ज़िक्र करने के बाद फ़र्माया : "(यह सब वरसा के हिस्सों की तक़सीम) मय्यित की वसिय्यत की हुई चीज़ों को पूरा करने और क़र्ज़ अदा करने के बाद की जाएगी।"
[सूर-ए-निसा: १२]

फ़ायदा : मय्यित ने अगर किसी के हक़ में कुछ वसिय्यत की हो, तो मय्यित के क़रज़ों की अदायगी के बाद वारिसों को उन का हिस्सा देने से पहले मय्यित के छोड़े हुए माल के तिहाई हिस्से से वसिय्यत पूरी करना वाजिब है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — सुबह व शाम की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम में से कोई सुबह करे तो यह दुआ पढ़े और जब शाम हो तब भी यह दुआ पढ़े : ((اَصْبَحْنَا وَاَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ خَيْرَ هٰذَا الْيَوْمِ فَتْحَهٗ وَنَصْرَهٗ

((وَنُوْرَهُ وَبَرَكَتَهُ وَهُدَاهُ وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْهِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهُ)) [अबू दाऊद : ५०८४, अन अबी मालिक ﷺ]
नोट : शाम को भी यह दुआ पढ़े और (أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ) की जगह (أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى) कहे।

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — रोज़ा रखने का इनाम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स अल्लाह तआला की रज़ा के लिये एक दिन रोज़ा रखे, अल्लाह तआला उस को जहन्नम से सत्तर साल की मसाफत के बक़द्र दूर फ़र्मा देते हैं।"

[तिर्मिज़ी : १६२२, अन अबी हुरैरा ﷺ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में — अहद तोड़ने वालों का अन्जाम

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग अल्लाह से पुख़्ता अहद करने के बाद तोड़ डालते हैं और जिन तअल्लुक़ात के जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया है, उन को तोड़ते हैं और ज़मीन में फसाद फैलाते हैं, उन्हीं लोगों पर अल्लाह की फिटकार होगी और आख़िरत में उन के लिये बड़ी ख़राबी होगी।"

[सूर-ए-रअ्द : २५]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में — माल व दौलत आज़माइश की चीज़ें हैं

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : (जब अल्लाह तआला) इन्सान को आज़माता है, तो (उस को ज़ाहिरन माल व दौलत दे कर) उस का इकराम करता है, तो वह (बतौरे फख़्र) कहने लगता है, के मेरे रब ने मेरी क़द्र बढ़ा दी। (हालाँके यह उस की तरफ से उस की आज़माइश का ज़रिया है, क्योंकि जितना ज़ियादा माल होगा, क़यामत के दिन हिसाब में उतनी ही परेशानी होगी)"

[सूर-ए-फज्र : १५]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में — नेक औलाद का फायदा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जन्नत में आदमी के दर्जात बुलन्द किए जाएँगे, तो वह कहेगा : मुझे यह मर्तबा कैसे मिल गया ? फिर उसे बताया जाएगा के (यह मक़ाम) तुम को तुम्हारी औलाद के इस्तिग़फार करने की वजह से मिला है।" [इब्ने माजा : ३६६०, अन अबी हुरैरा ﷺ]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज — बुख़ार का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिसे बुख़ार आजाए, वह तीन दिन गुस्ल के वक़्त यह दुआ पढ़े, तो उसे इन्शाअल्लाह शिफा हासिल होगी : ((بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ إِنَّمَا اغْتَسَلْتُ رَجَاءَ شِفَائِكَ وَتَصْدِيْقَ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ ﷺ)) तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं ने तेरे नाम से गुस्ल किया, शिफा की उम्मीद करते हुए और तेरे नबी ﷺ की तसदीक़ करते हुए।

[इब्ने अबी शैबा : १४५/७, अन मकहूल رحمه الله]

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाने वाली किसी औरत के लिये यह बात जाइज़ नहीं, के वह किसी के मरने पर तीन दिन से ज़ियादा सोग मनाए, अलबत्ता अगर उस के शौहर का इन्तेक़ाल हो जाए, तो वह उस की मौत पर चार महीने दस दिन तक सोग मनाएगी।

[नसई : ३५५७, अन उम्मे हबीबा ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

२९ जुमादस्सानियह

नंबर ①: इस्लामी तारीख — अख़्लाक़ का आला नमूना

एक मर्तबा हुज़ूर ﷺ से एक शख़्स ने अपने इलाक़े के मुसलमानों की तंग दस्ती की शिकायत की और मदद का सवाल किया, तो आप ﷺ ने यहूद के एक बड़े आलिम ज़ैद बिन सुअ़्ना से मुतअय्यना मुद्दत पर क़र्ज़ ले कर तंग दस्त की मदद फ़र्माई। मगर यह यहूदी मुतअय्यना मुद्दत से दो तीन दिन पहले ही क़र्ज़ का मुतालबा करने लगा और सहाबा رضی اللہ عنہم के दर्मियान हुज़ूर ﷺ का गिरेबान मुबारक थाम कर कहने लगा : ऐ मुहम्मद (ﷺ) ! तुम मेरा हक़ क्यों अदा नहीं करते ? टाल मटोल से काम क्यों कर रहे हो? हज़रत उमर رضی اللہ عنہ भी वहीं पर मौजूद थे, गुस्से से बे क़ाबू हो कर कहा : तू ने हुज़ूर ﷺ की शान में गुस्ताख़ी करने की जुरअत कैसे की। अगर आप ﷺ का पास व लिहाज़ न होता तो तेरी गर्दन मार देता : मगर आप ﷺ ने हज़रत उमर رضی اللہ عنہ से फर्माया : ऐ उमर ! उन का हक़ अदा कर दो और डाँट डपट के जुर्म में मज़ीद इज़ाफा कर के देने का हुक्म दिया। रास्ते में उस ने अपना तआरुफ कराया, हज़रत उमर رضی اللہ عنہ ने कहा : इतने बड़े आलिम हो कर ऐसी ना पसन्दीदा हरकत ? ज़ैद बिन सुअ़्ना ने कहा : बात यह है के मैं ने चेहर-ए-नुबुव्वत को देख कर सारी अलामतें पहचान ली थी, सिर्फ दो अलामतें बाक़ी थीं। एक यह के आप ﷺ की बुर्दबारी गुस्से पर गालिब रहती है, और दूसरे यह के नादानी के मामले पर बुर्दबारी बढ़ जाती है। अब यह भी पहचान ली, उसी वक़्त कलिमा पढ़ कर ईमान क़बूल कर लिया और हज़रत उमर رضی اللہ عنہ को गवाह बना कर कहा : मेरा आधा माल मुहम्मद ﷺ की उम्मत के लिये वक़्फ है।

नंबर ②: अल्लाह की क़ुदरत — खजूर में अल्लाह की क़ुदरत

खजूर एक उम्दा क़िस्म का फल है, इब्तेदा में वह निहायत कमज़ोर हालत में होती है। अल्लाह तआला ने अपनी हिकमत से इस तरह बनाया है के एक दूसरे से मिली हुई होती है। उन पर एक गिलाफ चढ़ा दिया, ताके हिफाज़त रहे, फिर जब वह पुख़्ता और कामिल हो जाती हैं तो आहिस्ता आहिस्ता वह गिलाफ फट कर फल ज़ाहिर होने लगते हैं और फिर वह हवा और सरदी गरमी भी बरदाशत करने लगती है, अल्लाह का यही निज़ामे क़ुदरत तमाम दरख़्तों और फलों फूलों में कार फ़र्मा है।

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम्हारे रब ने फैसला कर दिया है के अल्लाह के अलावा किसी और की इबादत न करो और वालिदैन के साथ एहसान का मामला करो।" [सूर-ए-बनी इस्राईल :२३]

फायदा : माँ बाप की ख़िदमत करना और उन के साथ अच्छा बरताव करना फर्ज़ है।

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — नमाज़ के बाद का वज़ीफा

रसूलुल्लाह ﷺ हर फर्ज़ नमाज़ के बाद इन अलफाज़ में पनाह माँगते थे : ((اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ اَرْذَلِ الْعُمُرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं बुज़दिली, बुख़्ल, नाकारा उम्र, दुनिया के फितने और अज़ाबे क़ब्र से आप की पनाह चाहता हूँ।

[तिर्मिज़ी : ३५६७, अन सअद बिन अबी वक़्क़ास ﷺ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | दरख़्त लगाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो भी मुसलमान दरख़्त लगाता है, या खेती करता है, फिर उस में से कोई परिन्दा, इन्सान या जानवर खाता है, तो वह उस के लिये सदक़ा है (यानी सदक़े का सवाब मिले गा।)"

[बुख़ारी : २३२०, अन अनस ﷺ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में | शौहर की नाफ़र्मानी करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "उस औरत की नमाज़ उस के सर से आगे नहीं बढ़ती जो अपने ख़ाविन्द की ना फ़र्मानी करे जब तक वह उस (नाफ़र्मानी) से बाज़ न आजाए।"

[तबरानी कबीर : ३६/३, अन इब्ने उमर ﷺ]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में | दुनिया में बरकत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह तआला जिस के साथ भलाई का इरादा फ़र्माता है तो उस को दीन की समझ अता फ़र्माता है और बेशक यह दुनिया बड़ी मीठी और सर सब्ज़ व शादाब चीज़ है, पस जो इस को इस के हक़ के साथ (यानी हलाल) तरीक़े से लेगा तो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल उस के लिये उस में बरकत देगा।"

[मुस्नदे अहमद : १६४०४, अन मुआविया बिन अबी सुफियान ﷺ]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में | जन्नत का बाग़

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग ईमान लाए और नेक आमाल के पाबन्द रहे, तो उन के लिये ऐसे बाग़ होंगे, जिन के नीचे नहरें जारी होंगी, यह बहुत बड़ी कामयाबी है।"

[सूर-ए-बुरूज : ११]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज | पुरानी बीमारियों का इलाज

कभी कभी इन्सान को ऐसी बीमारियाँ लग जाती हैं के इलाज करते करते थक जाता है, फिर भी वह ठीक नहीं होतीं, तो ऐसे मौक़े पर अगर इस आयते करीमा को कसरत से पढ़ा जाए तो इन्शाअल्लाह ज़रूर नफ़ा होगा।" ﴿ اَنِّیْ مَسَّنِیَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْنَ ﴾

[सूर-ए-अम्बिया : ८३]

नंबर (१०) : क़ुर्आन की नसीहत

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "शैतान की पैरवी न करो, वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है, शैतान तो तुम को बुराई और बे हयाई के काम का हुक्म करता है, और अल्लाह की निस्बत ऐसी बातें कहने का हुक्म करता है, जिस का तुम्हें इल्म नहीं है।"

[सूर-ए-बक़रा : १६८ ता १६९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

३० जुमादस्सानियह

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — हुज़ूर ﷺ के बाद ख़िलाफत का सिलसिला

हुज़ूर ﷺ के विसाल के बाद अल्लाह तआला ने खिलाफत का सिलसिला शुरू फ़र्माया, जिस में सब से पहले ख़लीफा हज़रत अबू बक्र رضي الله عنه हुए, जिन की मुद्दते खिलाफत दो साल तीन माह और दस दिन हुई। हज़रत अबू बक्र رضي الله عنه ने अपनी वफात से क़ब्ल अपने बाद हज़रत उमर رضي الله عنه को ख़लीफा बनाने की वसिय्यत की। हज़रत उमर رضي الله عنه की मुद्दते ख़िलाफत दस साल छ: माह और पाँच दिन थी, इस मुद्दत में बहुत से ममालिक इस्लामी परचम तले आए और हज़ारों लोगों ने इस्लाम क़बूल किया, जब फज्र की नमाज़ में फीरोज़ नामी ईसाई ने आप को ज़ख्मी कर दिया, तो उसी हालत में आप ने चंद लोगों की शूरा बनाई और फ़र्माया : मुसलमान इस में से किसी एक को अपना अमीर बना लें। चुनान्चे हज़रत उमर رضي الله عنه की वफात के बाद हज़रत उस्मान رضي الله عنه को अमीरुल मोमिनीन बनाया गया। आप की मुद्दते ख़िलाफत गयारा साल गयारा महीने और अट्ठारा दिन रही। हज़रत उस्मान رضي الله عنه की मज़लूमाना शहादत के बाद बइत्तेफाक़े राय सब ने हज़रत अली رضي الله عنه को अमीरुल मोमिनीन चुन लिया। हज़रत अली رضي الله عنه के ज़माने में फितनों ने बहुत सर उठाया, लेकिन हज़रत अली رضي الله عنه ने बड़ी ख़ुश उस्लूबी से उन फितनों को खत्म किया। हज़रत अली رضي الله عنه को भी शहीद किया गया। आप رضي الله عنه की मुद्दते खिलाफत चार साल नौ माहीने थी। यह चारों ख़ुलफाए राशिदीन कहलाए और उन की ख़िलाफत को "ख़िलाफते राशिदा" कहा जाता है।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — गूंगे का अच्छा होना

रसूलुल्लाह ﷺ हज्जतुलवदा में जब जमर-ए-अकबा की रमी कर के वापस होने लगे, तो एक औरत अपने एक छोटे बच्चे को ले कर हाज़िरे खिदमत हुई और अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मेरे इस बच्चे को ऐसी बीमारी लग गई है के बात भी नहीं कर सकता, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने एक बर्तन में पानी मंगवाया और दोनों हाथों को धोया और कुल्ली की और फिर वह बरतन उस औरत के हवाले करने के बाद फर्माया : "इस में से बच्चे को पिलाती रहना और थोड़ा थोड़ा इस पर छिड़कती रहना और अल्लाह तआला से शिफा की दुआ करती रहना।" हज़रत उम्मे जुन्दुब رضي الله عنها फर्माती हैं के एक साल बाद मेरी उस औरत से मुलाक़ात हुई, तो मैं ने पूछा : बच्चे का क्या हाल है? तो उस ने कहा : (اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ) ठीक हो गया और इतनी ज़ियादा समझ आगई जितनी बड़े लोगों में भी नहीं होती। [इब्ने माजा:३५३२, अन उम्मे जुन्दुब رضي الله عنها]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — हज किन लोगों पर फर्ज़ है

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अल्लाह के वास्ते उन लोगों के ज़िम्मे बैतुल्लाह का हज करना (फर्ज़) है जो वहाँ तक पहुँचने की ताक़त रखते हों।" [सूर-ए-आले इमरान : ९७]

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — आँधी चलने पर यह दुआ पढे

रसूलुल्लाह ﷺ आँधी के वक़्त यह दुआ पढ़ते : ((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا فِيْهَا وَخَيْرَ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا وَشَرِّ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ))

[मुस्लिम : २०८५, अन आयशा رضي الله عنها]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	मोमिन की परेशानी में गुनाह माफ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "किसी मोमिन को दर्द, थकन, बीमारी और गम लाहिक़ होता है और उस से उस को तकलीफ होती है, तो उस के बदले उस के गुनाह माफ कर दिए जाते हैं।"

[मुस्लिम : ६५६८, अन अबी सईद ؓ व अबी हुरैरा ؓ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	फितना फैलाने की सज़ा

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग यह चाहते हैं के मुसलमानों में बे हयाई की बातों का चर्चा हो, तो उन के लिये दुनिया व आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब होगा और (ऐसे फितना करने वालों को) अल्लाह तआला खूब जानता है तुम नहीं जानते।"

[सूर-ए-नूर : १९]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	दुनिया का माल वक़्ती है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख़्स (इन्तेहाई हिर्स व लालच से) माल जमा करता है और (फिर वह ख़ुशी से) उस को बार बार गिनता है और समझता है, के उस का यह माल उस के पास हमेशा रहेगा, हरगिज़ नहीं रहेगा, बल्के अल्लाह तआला उस को ऐसी आग में डालेगा, जो हर चीज़ को तोड़ फोड़ कर रख देगी।"

[सूर-ए-हुमज़ह : २ ता ४]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में	क़यामत के दिन जमा होना है

हज़रत अबू सईद बिन फज़ाला ؓ बयान करते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को फ़र्माते हुए सुना के अल्लाह तआला जब लोगों को ऐसे दिन जिस में कोई शक नहीं (यानी क़यामत के दिन) जमा करेगा, तो एक पुकारने वाला पुकारेगा, के जिस ने कोई अमल अल्लाह तआला के लिये किया हो और उस में किसी को शरीक किया हो (यानी रियाकारी की हो) तो वह शख़्स उस से अपना सवाब माँग ले।"

[तिर्मिज़ी : ३१५४]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	झाड़ फूँक से इलाज

एक सहाबी ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! आप ﷺ ने झाड़ फूँक से मना फर्माया है हालाँके मैं बिच्छू की झाड़ फूँक करता हूँ, तो आप ﷺ ने फर्माया : कोई हरज नहीं, जो शख़्स अपने भाई को नफा पहुँचा सकता हो वह पहुँचाए।

[मुस्तदरक : ८२७७, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ؓ]

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "लालच से बचो ! क्योंकि तुम से पहले वाले लोग लालच की वजह से तबाह व बरबाद हुए, लालच ने उन को कंजूसी का हुक्म दिया, तो वह कंजूस बन गए, लालच ने उन को रिश्तेदारी तोड़ने का हुक्म दिया तो वह रिश्ता तोड़ने लगे और लालच ही ने उन को गुनाह का हुक्म दिया तो वह गुनाह करने लगे।"

[अबू दाऊद : १६९८, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ؓ]

रजबुल मुरज्जब

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ | हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ﷺ

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ﷺ कुरैश के ख़ानदान में पैदा हुए, अबू बक्र आप की कुन्नियत है, नाम अब्दुल्लाह, वालिद का नाम उसमान और वालिदा का नाम सलमा था, आप बचपन ही से नेक तबीअत और सादा मिज़ाज इन्सान थे। ज़मान-ए-जहालत में आपने न कभी शराब पी और न कभी बुतों को पूजा। उम्र में हुज़ूर ﷺ से ढाई साल छोटे थे, मगर आप ﷺ से बड़ी गहरी दोस्ती और सच्ची मुहब्बत थी, आपने हुज़ूर ﷺ के अख़्लाक़ व आदात को बहुत क़रीब से देखा था, जब हुज़ूर ﷺ ने उन को इस्लाम की दावत दी और अपनी नुबुव्वत का एलान किया, तो मर्दों में सब से पहले ईमान लाने की सआदत उन को नसीब हुई और हुज़ूर ﷺ की नुबुव्वत की तस्दीक़ और ज़िन्दगी भर जान व माल से साथ देते हुए इस्लाम की तब्लीग़ में मशगूल रहे। मक्का की तेरा साला ज़िन्दगी में मुश्रिकों की तरफ़ से पहुँचाई जाने वाली हर क़िस्म की तकलीफ़ को बरदाश्त करते रहे, अहम मशवरे और राज़ की बातें हुज़ूर ﷺ उन्हीं से करते थे। चुनान्चे हिजरत के मौक़े पर अबू बक्र सिद्दीक़ ﷺ ने आप ﷺ के साथ ग़ारे सौर में तीन दिन क़याम फ़र्माया, फिर वहाँ से मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले गए, इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिये हर मौक़े पर अपना माल ख़र्च करते रहे और दीन की सर बुलन्दी के लिये पूरी बहादुरी के साथ तमाम ग़ज़वात में शिरकत फ़रमाते रहे।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत | मुश्क अल्लाह के ख़ज़ाने से आता है

मुश्क एक बहुत ही कीमती खुशबू है, इस की पैदाइश का मामला बहुत ही अजीब व गरीब है; अल्लाह तआला ने एक जानवर बनाया है, जिसे हिरन कहते है; उस की नाफ़ में खून जमा होता रहता है जो धीरे धीरे एक डले की शक्ल इख़्तियार कर लेता है, उसी खून के डले में अल्लाह तआला ऐसी खुशबू पैदा कर देता है, जिस को हम मुश्क कहते हैं; हिरन की नाफ़ में मुश्क पैदा होने के बाद उसे तकलीफ़ होनी शुरू हो जाती है, तो वह दरख़्तों से अपने आप को रगड़ने लगता है, जिस से वह डला जंगल में गिर जाता है और शिकारी उसे ले कर बाज़ारों में बेचते हैं। यह अल्लाह ही की कुदरत है, जो एक जानवर के खून से मुश्क जैसी खुशबू पैदा कर देता है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | इस्लाम की बुनियाद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है : (१) इस बात की गवाही देना के अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। (२) नमाज़ अदा करना। (३) ज़कात देना। (४) हज करना। (५) रमज़ान के रोज़े रखना।" [बुखारी : ८, अन इब्ने उमर ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | सुन्नत ज़िन्दा करने की फ़ज़ीलत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने मेरी किसी ऐसी सुन्नत को ज़िन्दा किया, जो मेरे बाद मिट चुकी थी (यानी खत्म हो चुकी थी) तो उस को उतना ही सवाब मिलेगा जितना के उस सुन्नत पर अमल करने वालों को मिलेगा और उन अमल करने वाले लोगों के सवाब में से कोई कमी नहीं होगी; और जिस ने ऐसा तरीका जारी किया, जो अल्लाह और उस के नबी ﷺ को ना पसंद है, तो जितने लोग उस गलत तरीके पर चलेंगे उन तमाम लोगों का गुनाह उस को मिलेगा और उन के गुनाह में से कोई कमी नहीं होगी।" [इब्ने माजा : २१०, अन अम्र बिन औफ़ ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	नमाज़े इशराक की फ़ज़ीलत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स नमाज़े फज्र से फारिग हो कर मुसल्ला पर बैठा रहे (और जब मकरुह वक्त गुज़र जाने) फिर दो रकात इशराक की नमाज़ पढ़े और इन दोनों नमाज़ों के दर्मियान अच्छी बातों के अलावा कुछ न बोले, तो उस के गुनाह माफ कर दिए जाएँगे, अगरचे समुन्दर के झाग से ज़ियादा ही क्यों न हो।" [अबू दाऊद : १२८७, अन मुआज़ बिन अनस رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	सूद खाने और खिलाने पर लानत

रसूलुल्लाह ﷺ ने सूद खाने वाले, खिलाने वाले, उस के लिखने वाले और उस की गवाही देने वाले पर लानत फ़र्माई; और फ़र्माया के गुनाह में सब बराबर हैं । [मुस्लिम : ४०९३, अन जाबिर رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया दार का घर और माल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दुनिया उस शख्स का घर है जिस का (आखिरत में) कोई घर नहीं और (दुनिया) उस शख्स का माल है जिस का आखिरत में कोई माल नहीं और दुनिया के लिए वह शख्स (माल) जमा करता है जो ना समझ है।" [मुसनदे अहमद : २३८९८, अन आयशा رضي الله عنها]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	जन्नत के ज़ेवरात

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है: जो लोग ईमान लाए और नेक आमाल किए, अल्लाह तआला उन को (जन्नत के) ऐसे बागों में दाखिल करेंगे जिन के नीचे नहरें जारी होंगी और उन बागों में उन को सोने के कंगन और मोती (के हार) पहनाए जाएंगे और उन का लिबास खालिस रेशम का होगा । [सूर-ए-हज : २३]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	इलाज तकदीर के खिलाफ़ नहीं

हज़रत अबू खिज़ामा رضي الله عنه बयान करते हैं के एक शख्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल ! हम लोग जो झाड़ फूंक और दवाओं का इस्तेमाल करते हैं और परहेज़ करते हैं, तो इस से तकदीरे इलाही की मुखालफत नहीं होती? रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : यह भी तक़दीरे इलाही है। [तिर्मिज़ी : २१४८]

फ़ायदा : जिस तरह मर्ज़ अल्लाह की तरफ़ से होता है इसी तरह मर्ज़ से बचने की तदबीरें भी अल्लाह ही की तरफ़ से वारिद हुई हैं, लिहाज़ा उन तदबीरों को इख्तियार करना तकदीर के खिलाफ़ नहीं है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ इन्सानो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से एक ऐसा (कुर्आन आ चुका है, जो बुरे कामों से रोकने के लिए) नसीहत है, और दिलों की बीमारियों के लिए शिफा है, और ईमान वालों के लिए हिदायत व रहमत है । [सूर-ए-यूनुस : ५७]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — हज़रत अबू बक्र ﷺ की खिलाफ़त और कारनामे

रसूलुल्लाह ﷺ के बाद अबू बक्र सिद्दीक ﷺ मुसलमानों के पहले खलीफा बने। तकरीबन सवा दो साल की मुद्दत में बड़े बड़े कारनामे अंजाम दिए, जिन में मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंग करने वालों के मुकाबले के लिए लश्कर तय्यार करना, झूठी नुबुव्वत का दावा करने वालों का ख़ातमा करना, इस्लाम से फिर जाने और ज़कात का इन्कार करने वालों से मुकाबला करना, मुनाफिकीन की साज़िशों को खत्म करना, मुसलमानों के सख़्त दुश्मन इसाई बादशाह हिरक्ल के ख़िलाफ़ फौज रवाना फ़र्माना आप के अहेम कारनामे हैं। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक ﷺ बहुत ही सादा ज़िंदगी के मालिक थे, हर एक से मिल जुल कर रहते, ज़रुरत मंदों का खयाल रखते, मेहमानों को खाना खिलाते, परेशानी में दूसरों के काम आते, कपड़े की तिजारत कर के अपना गुज़र बसर करते। जब खलीफ़ा बनाए गए तो सहाबा के मश्वरे से एक आम मुहाजिर सहाबी की तरह बैतुल माल से वज़ीफ़ा मुकर्रर किया गया, जिस की मिकदार इतनी मामूली थी, के जब बीवी ने एक मर्तबा मीठी चीज़ खाने की ख्वाहिश ज़ाहिर की, तो पैसा न होने की वजह से उन की फ़र्माइश पूरी न कर सके। उन्होंने जुमादल उखरा सन १३ हिजरी को पीर के दिन तिरसठ साल की उम्र में इन्तेकाल फ़र्माया।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — चाँद का झुक जाना

हज़रत अब्बास ﷺ फ़र्माते हैं, मेरे इस्लाम लाने का सबब यह हुआ के जिस वक्त आप ﷺ बचपन में झूले में आराम फ़र्मा रहे थे, तो मैं ने देखा के आप ﷺ उंगली से चाँद की तरफ़ इशारा करते, तो चाँद भी उसी तरफ़ झुक जाता। [बैहकी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : ३७४]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — गुस्ल में पूरे बदन पर पानी बहाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "(जिस्म) के हर बाल के नीचे नापाकी होती है, लिहाज़ा तुम बालों को धोओ और बदन को अच्छी तरह साफ़ करो।" [तिर्मिज़ी : १०६, अन अबी हुरैरह ﷺ]

फ़ायदा: गुस्ल में पूरे बदन पर पानी का पहुंचाना फ़र्ज़ है। इस लिए खुसुसन सर के बालों, दाढ़ी वगैरह की जड़में पानी पहुंचाना चाहिए और औरतों को अपने बाल खोल कर गुस्ल करना चाहिए ताके पानी बालों में पहुंच जाए।

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — रजब व शाबान की दुआ

जब रजब का महीना शुरू होता, तो हुज़ूर ﷺ यह दुआ पढ़ते :

((اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْ رَجَبَ وَشَعْبَانَ وَ بَلِّغْنَا رَمَضَانَ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमें रजब और शाबान के महीने में बरकत अता फ़र्मा और हमें रमज़ान तक पहुँचा। [मिश्कात : १३६९, अन अनस ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	दो रकात तहिय्यतुल वुज़ू अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स मेरी तरह वुज़ू कर के दो रकातें इस तरह अदा करे, के उस में अपने मन में कोई बात न की हो, तो उस के पिछले गुनाह माफ कर दिए जाएंगे।"

[बुखारी : १५९, अन उस्मान बिन अफ्फान رضی اللہ عنہ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	अल्लाह तआला के साथ शिर्क करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "बिला शुबा अल्लाह तआला शिर्क को माफ़ नहीं करेगा, शिर्क के अलावा जिस गुनाह को चाहेगा, माफ़ कर देगा और जिस ने अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक किया, तो उस ने अल्लाह के खिलाफ़ बहुत बड़ा झूट बोला।"

[सूर-ए- निसा : ४८]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की ज़ीनत काफ़िरों के लिए

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "दुनिया की ज़िंदगी तो काफ़िरों के लिए संवार दी गई है (न के मुसलमानों के लिए) और (काफ़िर लोग) मुसलमानों का मज़ाक उड़ाते हैं; हालांके जो मुसलमान कुफ्र व शिर्क से बचते हैं, वह कयामत के दिन उन काफ़िरों से दर्जों में बलंद होंगे, (आदमी को अपनी दुनियादारी और मालदारी पर गुरुर न करना चाहिए क्योंकि) अल्लाह तआला जिस को चाहते हैं बे हिसाब रोज़ी दे देते हैं (इस लिए मालदार होना कोई फ़ख्र की चीज़ नहीं)।"

[सूर-ए- बकरा : २१२]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	मुर्दे की हालत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब मुर्दे को लोग उठा कर चलते हैं, तो अगर वह नेक होता है, तो वह कहता है : मुझे जल्दी आगे बढ़ाओ और अगर वह बुरा होता है, तो वह कहता है : अरे मेरी हलाकत आई, तुम कहां लेजा रहे हो? उस की आवाज़ को जिन व इन्स के सिवा अल्लाह तआला की तमाम मखलूक़ात सुनती है; अगर उस की आवाज़ इन्सान सुन ले, तो बेहोश हो जाए।"

[बुखारी : १३१४, अन अबी सईद खुदरी رضی اللہ عنہ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	हर मर्ज़ का इलाज

हज़रत उस्मान गनी رضی اللہ عنہ से मर्वी है के मैं एक मर्तबा बीमार हुआ, तो रसूलुल्लाह ﷺ इयादत के लिए तशरीफ़ लाए और यह दुआ पढ़ कर दम किया और जाते हुए फ़र्माया : ऐ उस्मान ! यही पढ़ कर दम कर लिया करो। ((بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ، اُعِيْذُكَ بِاللّٰهِ الْاَحَدِ الصَّمَدِ الَّذِىْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ مِنْ شَرِّ مَا تَجِدُ))

[इब्नुस्सुन्नी : ५५३]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "ऐ लोगो ! सलाम को खूब फैलाओ गरीबों को खाना खिलाया करो, रात को जब लोग सो रहे हों, तो तुम नमाज़ पढ़ा करो, इन बातों से तुम सलामती के साथ जन्नत में दाखिल हो जाओगे।"

[तिर्मिज़ी : २४८५, अन अब्दुल्ला बिन सलाम رضی اللہ عنہ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — हज़रत उमर रज़ि. का इस्लाम लाना

हज़रत उमर फ़ारूक रज़ि. का शुमार अरब के बड़े बड़े बहादुरों में होता था, इस्लाम क़बूल करने से पहले हज़रत उमर रज़ि. मुसलमानों के सख़्त दुश्मन थे और रसूलुल्लाह ﷺ के क़त्ल की फ़िक्र में रहते थे। एक दिन इसी नापाक इरादे से तलवार लटकाए हुए चले जा रहे थे के रास्ते में हज़रत नुऐम बिन अब्दुल्लाह रज़ि. मिल गए। उन्होंने पूछा के उमर! कहाँ जा रहे हो? कहने लगे के मुहम्मद को क़त्ल करने: (नऊज़ु बिल्लाह) उन्होंने कहा के पहले अपने घर की तो ख़बर ले, तेरी बहन और बहनोई दोनों मुसलमान हो चुके हैं। यह सुनना था के हज़रत उमर रज़ि. गुस्से से भर गए और सीधे बहन के घर गए और दोनों को ख़ूब मारा, यहाँ तक के बहन ख़ून से लहूलुहान हो गई। इस मार पीट के बाद जब उमर रज़ि. का गुस्सा कुछ ठंडा हुआ तो उन्होंने कहा के मुझे वह सहीफ़ा दिखाओ जो तुम लोग पढ़ रहे थे। बहन ने कहा के तुम नापाक हो, गुस्ल किये बग़ैर उस को हाथ नहीं लगा सकते। लिहाज़ा उन्होंने गुस्ल किया और बहन से क़ुर्आन ले कर पढ़ना शुरू किया, क़ुर्आन पढ़ते ही उन की हालत बदल गई। फ़ौरन हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और मुसलमान हो गए। सहाब-ए-किराम रज़ि. को आप रज़ि. के इस्लाम लाने से बेहद ख़ुशी हुई और इस ज़ोर से अल्लाहु अक्बर का नारा बुलन्द किया के सारा मक्का गूंज उठा।

नंबर २ : अल्लाह की क़ुदरत — बाल, अल्लाह की दी हुई नेअ्मत है

बाल अल्लाह तआला का दिया हुआ अनमोल तोहफ़ा है; अल्लाह तआला ने इन्सान के सर पर रेशम की तरह चमक्दार और ख़ूबसूरत बाल उगाए हैं, जो सर्दी, गर्मी और दूसरी नुक्सान देह चीज़ों से सर की हिफ़ाज़त करते हैं और चेहरे की ख़ूबसूरती को बढ़ाते हैं; अल्लाह तआला ने हमारे जिस्म के मुनासिब जगहों पर बाल उगाए; अगर बाल होंटों पर उग आते, तो कितनी परेशानी होती, न ठीक से बात कर सकते, न खाना खा सकते और न कोई चीज़ पी सकते, इसी तरह अगर हथेली पर बाल होते, तो कितनी परेशानी होती, यक़ीनन ज़रुरत के तहत इन्सान के जिस्म पर बाल उगाना और बाज़ जगहों पर न उगाना अल्लाह तआला की बे मिसाल क़ुदरत की निशानी है, ख़ुद अल्लाह तआला फ़र्माता है: हम ने इन्सान को बहुत ही ख़ूबसूरत सांचे में ढाल कर पैदा किया है। [सूर-ए-तीन:४]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ के छोड़ने पर वईद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: नमाज़ का छोड़ना आदमी को कुफ़्र से मिला देता है।

[मुस्लिम: २४६, अन जाबिर रज़ि.]

एक दूसरी हदीस में आप ﷺ ने फ़र्माया: ईमान और कुफ़्र के दर्मियान नमाज़ छोड़ने का फ़र्क़ है।

[इब्ने माजा: १०७८, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि.]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	तीन सांस में पानी पीना

हज़रत अनस (पानी पीने के वक़्त) दो या तीन सांस लेते और फ़र्माते के रसूलुल्लाह भी तीन मर्तबा सांस लेते थे। [बुखारी : ५६३१]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	बीमार की इयादत का सवाब

रसूलुल्लाह ने फर्माया : "जब कोई मुसलमान अच्छी तरह वुज़ू कर के सवाब की उम्मीद से अपने बीमार भाई को देखने जाता है, तो उस शख़्स और दोजख के दर्मियान ७० बरस की दूरी कर दी जाती है।" [अबू दाऊद : ३०९७, अन अनस]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	हज फर्ज़ होने के बावजूद न करना

रसूलुल्लाह ने फ़र्माया : "जिस आदमी के पास सवारी और खर्चा इतना हो, के वह आराम से बैतुल्लाह तक पहुँच सकता हो, फिर भी हज न करे, तो कोई फ़र्क नहीं है के वह यहूदी हो कर या फिर नसरानी हो कर मरे।" [तिर्मिज़ी : ८१२, अन अली बिन अबी तालिब]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया आखिरत का ज़रिया है

रसूलुल्लाह ने फ़र्माया : "दुनिया बहुत ही अच्छा घर है उस शख्स के लिए, जो उस को आखिरत का ज़रिया बनाए और अल्लाह तआला को उस (के ज़रिये) राजी कर ले और बहुत ही बुरा (घर) है उस शख्स के लिए जिस को आखिरत के कामों से रोक दे और अल्लाह तआला को नाराज़ कर दे।" [मुस्तदरक : ७८७०, अन तारिक]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	दोज़खी की चीख व पुकार

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो लोग बदबख्त हैं, वह दोज़ख में होंगे उस में उन की चीख व पुकार होती रहेगी। [सूर-ए-हूद : १०६]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	तीन चीज़ों में शिफा है

हज़रत इब्ने अब्बास बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ने फर्माया : शिफा तीन चीज़ों में है : शहद पीने में, पछना लगाने में और आग से दागने में। (मगर रसूलुल्लाह ने फर्माया) मैं अपनी उम्मत को दागने से मना करता हुँ ; लिहाजा दाग कर इलाज करने से बचना चाहिए। [बुखारी : ५६८०]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ लोगो ! उस रब की इबादत करते रहो, जिस ने तुम्हें और तुम से पहले लोगों को पैदा किया, ताके तुम परहेज़गार बन जाओ। [सूर-ए-बकरा : २१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत उमर ﷺ की बहादुरी

हज़रत उमर ﷺ की बहादुरी से कौन नावाकिफ होगा, सारी दुनिया उन की शुजाअत व दिलेरी का एतेराफ़ करती है। शुरू इस्लाम में मुसलमान काबा के पास नमाज नहीं पढ सकते थे, लेकिन उमर फ़ारूक़ ﷺ के इस्लाम लाते ही मुसलमान ख़ान-ए-काबा में खुल्लम खुल्ला नमाज पढने लगे। हजरत अली ﷺ फ़र्माते हैं के मेरे इल्म के मुताबिक़ हर एक ने हिजरत छुप कर की; लेकिन हज़रत उमर ﷺ ने अलल एलान हिजरत की। जब उन्होंने हिजरत का इरादा फ़र्माया, तो अपनी तलवार गले में लटकाई और अपनी कमान कंधे पर डाली और बहुत सारे तीर हाथ में लेकर बैतुल्लाह के पास आए और इत्मेनान से तवाफ़ किया और फिर मकामे इब्राहीम के पास जा कर दो रकात नमाज पढी, फिर मुश्रिकीन की एक एक टोली में गए और फ़र्माया के जो यह चाहता हो के उस की माँ उस के मरने पर रोए और उस की औलाद यतीम हो जाए और उस की बीवी बेवा हो जाए, वह मक्का से बाहर आकर मेरा मुक़ाब्ला करे। इस के बाद आप ﷺ ने हिजरत की, मगर कोई भी आप ﷺ का पीछा करने की हिम्मत न कर सका। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ फ़र्माते हैं के उमर ﷺ का इस्लाम लाना मुसलमानों की फ़तह थी और उन की हिजरत मुसलमानों की मदद थी और उन की खिलाफ़त रहमत थी।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हज़रत अली ﷺ की आँख का ठीक हो जाना

जंगे खैबर के दिन आप ﷺ ने पूछा : "अली कहां है? लोगों ने कहा : उन की आँखें दुख रही हैं, आप ﷺ ने फ़र्माया : उन को बुलाओ, तो हजरत अली ﷺ आए, आप ﷺ ने उन की आँखों पर अपना थूक मुबारक लगा दिया, तो वह उसी वक्त अच्छी हो गई, गोया कुछ हुआ ही नहीं।"

[बुखारी २९४२, अन सहल बिन सअद ﷺ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — ज़कात की फ़र्ज़ियत

रसूलुल्लाह ﷺ ने हजरत मुआज़ बिन जबल ﷺ को यमन भेजते वक्त फ़र्माया : "(यमन वालों) को बता देना के अल्लाह तआला ने उन पर उन के माल में ज़कात फ़र्ज़ की है।"

[बुखारी १३९६ अन इब्ने अब्बास ﷺ]

फ़ायदा : अगर किसी के पास निसाब के बराबर माल हो तो उस में से ज़कात अदा करना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — दुनिया व आखिरत की भलाई की दुआ

इस दुआ का खूब एहतेमाम करना चाहिए, इस में दोनों जहां की भलाई तलब की गई है, रसूलुल्लाह ﷺ इस दुआ को अक्सर पढ़ा करते थे :

رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً وَّفِی الْاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

तर्जमा : ऐ हमारे रब ! हमें दुनिया में भी भलाई अता फ़र्माइए और आखिरत में भी भलाई अता फ़र्माइए और दोज़ख के अज़ाब से हमें बचाइए।

[सूरह बकरा [illegible]]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | शौहर की खुशी पर जन्नत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस औरत ने इस हाल में इन्तकाल किया, के उस का शौहर उस से राज़ी था, तो वह जन्नत में दाखिल होगी ।"

[तिमिर्ज़ी : ११६१, अन उम्मे सल्मा ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | सच्ची गवाही को छुपाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम गवाही मत छुपाया करो और जो शख्स इस (गवाही) को छुपाएगा, तो बिला शुबा उस का दिल गुनहगार होगा और अल्लाह तआला तुम्हारे किए हुए कामों को खूब जानता है।"

[सूर-ए-बक़रा : २८३]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनियवी ज़िंदगी धोका है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "दुनियवी जिंदगी तो कुछ भी नहीं सिर्फ़ धोके का सौदा है।"

[सूर-ए-आले इम्रान : १८५]

फ़ायदा : जिस तरह माल के ज़ाहिर को देख कर खरीदार फंस जाता है, इसी तरह दुनिया की चमक दमक से धोका खा कर आखिरत से गाफ़िल हो जाता है; इसी लिए इन्सानों को दुनिया की चमक दमक से होशयार रहना चाहिए।

नंबर (८): आखिरत के बारे में | कब्र में ही ठिकाने का फ़ैसला

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम में से कोई वफ़ात पा जाता है, तो उस को सुबह व शाम उस का ठिकाना दिखाया जाता है अगर जन्नती हो तो जन्नत वालों का और अगर जहन्नमी है तो जहन्नम वालों का, फिर कहा जाता है : यह तेरा ठिकाना है यहां तक के अल्लाह तआला क़यामत के दिन तुझे दोबारा उठाए।"

[बुखारी : १३७९, अन अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | खजूर से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया के "ज़चगी की हालत में तुम अपनी औरतों को तर खजूरें खिलाओ और अगर वह न मिलें तो सूखी खजूरें खिलाओ ।"

[मुस्नदे अबी यअ्ला : ४३४ अन अली ؓ]

फ़ायदा : बच्चे की पैदाइश के बाद खजूर खाने से औरत के जिस्म का फ़ासिद खून निकल जाता है और बदन की कम्ज़ोरी खत्म हो जाती है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने औरतों को मुखातब कर के फ़र्माया : तुम अपने ऊपर अल्लाह की तस्बीह (سُبْحَانَ اللّٰہِ) और तहलील (لَا إِلٰہَ إِلَّا اللّٰہُ) और तक़दीस (سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ) को लाज़िम कर लो और इन तस्बीहात को उंगलियों पर शुमार करो; इस लिए के कल कयामत के दिन इन उंगलियों से सवाल होगा और वह गवाही देंगी, हरगिज़ इस में कोताही और गफ़लत मत करना ऐसा न हो के गफ़लत कर के अज्र व सवाब से भी महरुम रह जाओ ।

[तिर्मिज़ी : ३५८३, अन यसीरा ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(५) रजबुल मुरज्जब

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत उमर ﷺ की ख़िलाफ़त

हज़रत ईसा ﷺ आसमान पर ज़िन्दा हैं। वह क़यामत के क़रीब दो फ़रिश्तों के कन्धों पर सहारा लगाए दिमश्क़ की जामे मस्जिद के मश्रिक़ी मिनारे पर उतरेंगे, लोग आप को सीढ़ी के ज़रिये नीचे उतारेंगे, फ़ज्र की नमाज़ इमाम मेहदी के पीछे अदा करेंगे और सलीब को तोड़ कर शिर्क की जड़ ख़त्म कर के ईसाइयों के इस बातिल अक़ीदे की तरदीद करेंगे के ईसा ﷺ सूली पर चढ़ कर पूरी क़ौम के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन गए हैं। उस के बाद ख़िन्ज़ीर को क़त्ल करेंगे। और मुसलमानों का लश्कर ले कर दज्जाल को क़त्ल करने के लिये निकलेंगे। उस वक़्त वह बैतुल मुक़द्दस का मुहासरा किये हुए होगा। वह हज़रत ईसा ﷺ को देखते ही जान बचा कर भागेगा। मगर आप उस को बैतुल मुक़द्दस के क़रीब ''बाबे लुद'' पर क़त्ल कर के पूरी दुनिया में अद्ल व इन्साफ क़ाइम कर देंगे। जिस की वजह से माल व दौलत की कसरत हो जाएगी, ज़ुल्म व सितम का ऐसा ख़ात्मा हो जाएगा के भेड़िया और बक्री एक घाट पर पानी पियेंगे। आप शरीअते मुहम्मदिया के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारेंगे, शादी के बाद औलाद भी होगी, तक़रीबन चालीस साल दुनिया में ज़िन्दा रह कर वफ़ात पाएंगे, इस्लामी अहकाम के मुताबिक़ तज्हीज़ व तक्फ़ीन होगी और मदीना मुनव्वरा में हुज़ूर ﷺ के पहलू में दफ़्न होंगे।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — मोर की खूबसूरती

अल्लाह तआला ने इन्सान को दुनिया में जन्नत का हल्का फुल्का मज़ा चखाने के लिए ऐसा खूबसूरत परिंदा पैदा किया के इन्सान इस की खूबसूरती को देख कर हैरान रह जाता है। चुनांचे मोर एक ऐसा ही परिंदा है, जिस की दुम के परों को अल्लाह तआला ने बहुत ही खूबसूरत बनाया, अल्लाह तआला ने मोर को अपनी दुम फैलाने की सलाहियत दी है, जब वह उसे फैलाता है और धूप की वजह से वह चमकती है, तो ऐसा महसूस होता है के उस की दुम पर सैंकड़ों नीलम के फूल लगें हों। यह अल्लाह तआला की कुदरत का एक नमूना है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सुबह की नमाज़ अदा करने पर हिफ़ाज़त का ज़िम्मा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जिस ने सुबह (यानी फ़ज्र) की नमाज़ अदा की, वह अल्लाह की हिफ़ाज़त में है।

[मुस्लिम : १४९३, अन जुंदुब बिन अब्दुल्लाह ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — हाथ पाँव की उंगलियों का खिलाल करना

रसूलुल्लाह ﷺ वुज़ू फ़र्माते तो उंगलियों का खिलाल फ़र्माते, एड़ियों को रगड़ते और फ़र्माते के उंगलियों का ख़िलाल करो, अल्लाह तआला इन के दर्मियान जहन्नम की आग दाख़िल न करेगा।

[दारे क़ुतनी : ३२६, अन आयशा ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह के वास्ते मुहब्बत करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क़यामत के दिन अर्शे इलाही के साये में सात क़िस्म के लोग होंगे, उन में वह लोग भी होंगे जिन का मिलना जुलना भी अल्लाह ही की मुहब्बत की वजह से होता था।"

[बुख़ारी : ६६०, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	कर्ज़ अदा न करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : कबीरा गुनाह के बाद सब से बड़ा गुनाह जिस को बंदा ले कर अल्लाह के यहाँ हाज़िर हो, वह यह है के मौत के वक्त आदमी पर कर्ज़ हो और उस को पूरा करने के लिए माल छोड़ कर न जाए।

[अबू दाऊद : ३३४२, अन अबी मूसा ﷺ]

फ़ायदा : मालदार अगर अपनी ज़िन्दगी में क़र्ज़ अदा न कर सका, तो मरते वक्त अपने वरसा को क़र्ज़ अदा करने की वसिय्यत कर दे, और जो मालदार न हो तो ज़िन्दगी ही में माफ़ी तलाफ़ी कर ले, वर्ना क़यामत के दिन नेकियों में से उस का क़र्ज़ा अदा करना होगा।

नंबर (७): दुनिया के बारे में	माल की हालत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "उस वक्त तक क़यामत नहीं आएगी जब तक तुम्हारे अंदर माल की इतनी कसरत न हो जाए के वह बहने लगे, यहां तक के माल वाले आदमी को इस बात पर रंज व ग़म होगा के उस से कौन सदक़ा क़बूल करेगा ? वह एक आदमी को सदक़े के लिए बुलाएगा तो वह कह देगा के मुझे इस की कोई ज़रुरत नहीं है।"

[मुस्लिम : २३४०, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जन्नत में मेहमान नवाज़ी

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है "बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उन की मेहमानी के लिए फ़िरदौस के बाग होंगे, वह उन में हमेशा रहेंगे और वह वहां से कहीं जाना नहीं चाहेंगे।"

[सूर-ए-कहफ : १०७ ता १०८]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बीमारी से बचने की तदबीर

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम्हारे बरतन में मक्खी गिर पड़े तो उस को पहले पूरी तरह डुबा दो, फिर निकाल कर फेंको, क्योंकि उस के एक पर में शिफ़ा है, तो दूसरे में बीमारी है।"

[बुख़ारी : ५७८२, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : क्या तुम दूसरों को नेकी की नसीहत करते हो और अपनेआप को भूल जाते हो, हालांके तुम किताब की तिलावत भी करते रहते हो (पस ऐसा क्यों करते हो), क्या तुम इतना भी नहीं समझते।

[सूर-ए-बक़रा : ४४]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(६) रजबुल मुरज्जब

नंबर (१): इस्लामी तारीख — दौरे फ़ारुक़ी के अहेम कारनामे

हज़रत उमर ؓ ने अपने दौरे खिलाफ़त में बड़े बड़े कारनामे अंजाम दिये, उन्होंने बा ज़ाबता तरीके पर बैतुलमाल का निज़ाम कायम किया। मुलकी पैमाइश का इन्तेज़ाम किया, मरदुम शुमारी कराई, जेलखाना कायम किया, फ़ोज के लिये दफ़्तरी निजाम बनाए, रातों को गश्त कर के रिआया के हाल से बा खबर रहने का तरीका निकाला। बे रोज़गार लोगों के लिये वज़ीफे मुकर्रर किये। जगा जगा नहरे खुदवाई। नमाज़े तरावीह को जमात के साथ पढ़ने का ऐहतमाम करवाया। इस्लाम से पहले दर्याए नील हर साल सूख जाता था, मिस्र वालों का अक़ीदा था, के एक कुंवारी लड़की की बली के बगैर दर्याए नील जारी नहीं होता। जब मुसलमानों ने मिस्र फ़तह किया और उस की खबर गवर्नर हज़रत अम्र बिन आस ؓ को हुई, तो उन्होंने फ़र्माया के इस्लाम में यह हरगिज़ नहीं हो सकता, फिर उन्होंने हज़रत उमर ؓ को इस की इत्तिला दी। हज़रत उमर ؓ ने दर्याए नील के नाम यह ख़त लिखा "ऐ दर्याए नील! अगर तू अपनी मर्ज़ी से चलता है तो मत चल, और अगर तुझे अल्लाह वाहिदे कह्हार चलाते हैं तो हम उस से ही सवाल करते हैं के वह तुझे चला दे।" चुनान्चे यह पर्चा दर्याए नील में डाल दिया गया, दूसरे ही दिन दर्याए नील पानी से भर गया। उस दिन से आज तक दर्याए नील मुसलसल जारी है। इस के अलावा भी आप की बहुत सारी खिदमात और कारनामे तारीख के सफहात में महफूज़ हैं।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — घी में बरकत

उम्मे मालिक ؓ का दस्तूर था के वह आप ﷺ की ख़िदमत में हमेशा एक बरतन में घी हदिया भेजा करती थीं, जब उन के बच्चे सालन मांगते और घर में न होता तो वह उस बरतन को जिस में आप ﷺ की खिदमत में घी भेजती थीं, उठा लातीं, और उस में से बक़द्रे ज़रुरत घी निकल आता। एक दिन उन्होंने उस बरतन को बिल्कुल खाली कर लिया, तो घी निकलना खत्म हो गया, फिर आप ﷺ की ख़िदमत में आईं, तो आप ﷺ ने फर्माया : अगर तुम ने उस को खाली न किया होता तो हमेशा उस में से घी निकलता रहता। [मुस्लिम : ५९४५, अन जाबिर ؓ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — हज की फ़र्ज़ियत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "ऐ लोगो ! तुम पर हज फ़र्ज़ कर दिया गया है, लिहाज़ा उस को अदा करो।" [मुस्लिम : ३२५७, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — मजलिस से उठने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी मजलिस से उठते तो फ़र्माते :

((سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! तेरी ज़ात पाक है और काबिले तारीफ है मैं गवाही देता हूँ के तेरे सिवा कोई माबूद नहीं तुझ से ही मग़फिरत का तलबगार हुँ और तौबा करता हूँ।

[अबू दाऊद : ४८५९, अन अबी बरज़ह असलमी ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | मुसलमान भाई के लिए दुआ करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जब कोई मुसलमान अपने मुसलमान भाई के लिए पीठ पीछे दुआ करता है, तो फ़रिश्ते कहते हैं के आमीन (अल्लाह तआला) तुम्हें भी यही चीज़ अता फ़र्मा दे।

[अबू दाऊद : १५३४, अन अबी दर्दा ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | कुफ़्र की सज़ा जहन्नम है

कुर्आन में अल्लाह फर्माता है : जो लोग कुफ़्र करते हैं तो अल्लाह तआला के मुक़ाबले में उन का माल व औलाद कुछ काम नही आएगा और ऐसे लोग ही जहन्नम के ईंधन होंगे।

[सूर-ए-आले इमरान : १०]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया का सामान चंद रोज़ा है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "दुनिया का सामान कुछ ही दिन रहने वाला है और उस शख़्स के लिए आख़िरत हर तरह से बेहतर है, जो अल्लाह तआला से डरता हो और (क़यामत) में तुम पर ज़र्रा बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।"

[सूर-ए-निसा : ७७]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | जन्नत में पहले जाने वाले

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जो लोग सब से पहले जन्नत में जाएंगे, उन के चेहरे चौदहवीं के चाँद की तरह चमकते होंगे, न थूकेंगे, न नाक सिंकेंगे, न पेशाब व पाखाना करेंगे, उन के बरतन और कंघे सोने और चाँदी के होंगे, उन की अंगेठियों में से ऊद की खुशबू फूट रही होगी, उन के मुँह से मुश्क की खुशबू आएगी, हर एक को दो ऐसी हूरें मिलेंगी, जिन के पैरों की हड्डीयों का गूदा खूबसूरती की वजह से पिंडलियों के गोश्त से साफ़ नजर आएगा, और वह दोनों हूरें आपस में ऐसी हम ख़याल होंगी जैसे के दोनों का दिल एक हो, और सुबह व शाम वह अल्लाह की बड़ाई और उस की तारीफ़ करती होंगी।

[बुख़ारी : ३२४५, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | नज़्रे बद का इलाज

हज़रत आयशा ؓ फ़र्माती हैं जिस की नज़र लगी हो वह वुज़ू करे फिर उसी पानी से वह शख़्स जिस को नज़र लगी है गुस्ल करे।

[अबू दाऊद : ३८८०]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : एक दूसरे को हदिया दिया करो, हदिया दिलों की रंजिश को दूर करता है और कोई पड़ोसन अपने पड़ोसन के हदिये को हकीर न समझे अगरचे वह बकरी के खुर का एक टुकड़ा ही क्यों न हो।

[तिर्मिज़ी : २१३०, अन अबी हुरैरह ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ | हजरत उस्मान गनी

आप का नाम उस्मान, कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह और वालिद का नाम अफ्फान है । आप रसूलुल्लाह की फूफीजाद बहन के बेटे थे और हुजूर से छे (६) माह छोटे थे । हजरत उस्मान इस्लाम लाने वाले चौथे शख्स है। रसूलुल्लाह ने नुबुव्वत से कब्ल अपनी बेटी रुकय्या की शादी हजरत उस्मान से कर दी थी। जब हजरत रुकय्या का इन्तेकाल हो गया तो हुजूर ने अपनी दूसरी बेटी हजरत उम्मे कुलसूम की शादी उन से कर दी । इसी लिए हजरत उस्मान को जुन्नूरैन कहा जाता है । आप ने हब्शा और मदीना दोनों की हिजरत की । जिस तरह आप सहाबा-ए-किराम मे बहुत मालदार थे इसी तरह सब से जियादा सखी और खुदा की राह में खर्च करने वाले थे। हजरत उमर के इन्तेकाल के बाद यकुम मोहर्रमुल हराम सन २४ हिजरी को सहाबा-ए-किराम ने आपस मे मश्वरा कर के हजरत उस्मान को खलीफा मुन्तखब कर लिया, इस तरह आप मुसलमानों के तीसरे खलीफा बने।

नंबर २ : अल्लाह की कुदरत | ऊंचे ऊंचे पहाड़ किस ने बनाए

अल्लाह तआला ने ज़मीन को पानी पर बिछाया, फिर इस पर बड़े बड़े पहाड़ ऐसी हिकमत से गाड़े, के इस का जितना हिस्सा ज़मीन के ऊपर है, इस से कहीं ज़ियादा ज़मीन के नीचे है, इन पहाड़ों ने ज़मीन को हिलने से रोक रखा है; अगर यह पहाड़ न होते, तो ज़मीन पर इतने जलज़ले आते के ज़मीन का सारा निज़ाम दरहम बरहम हो जाता। लेकिन यह अल्लाह तआला ही की ज़ात है जिसने ज़मीन को पहाड़ों की कीलों से बांध रखा है, अल्लाह तआला ने कुर्आन में फ़र्माया है : "क्या हम ने ज़मीन को फ़र्श और पहाड़ों को कीलें नहीं बनाया? (यकीनन यह सब हमारी ही कारीगरी है)।" [सूर-ए-नबा : ६ ता ७]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में | दीन में नमाज़ की अहेमियत

एक आदमी ने आप से अर्ज किया : ऐ अल्लाह के रसूल ! इस्लाम में अल्लाह के नजदीक सब से जियादा पसंदीदा अमल क्या है ? आप ने फर्माया : नमाज को उस के वक़्त पर अदा करना, और जो शख्स नमाज को (जान बूझ कर) छोड दे उस का कोई दीन नहीं है, और नमाज दीन का सुतून है।

[बैहकी फी शुअबिल ईमान : २६८३, अन उमर]

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में | हर नमाज़ के लिए ताज़ा वुज़ू करना

हजरत अनस बयान करते हैं के आप की आदते शरीफा थी, के बावुजू होने के बावजूद हर नमाज के लिए ताजा वुजू फर्माते और हम लोग कई नमाज़ें एक ही वुजू से पढते थे।

[अबू दाऊद : १७१ अन अनस]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — आपस में सुलह कराना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क्या मैं तुम को ऐसी चीज़ न बताऊँ जिस का दर्जा नमाज़, रोज़ा, सदका से भी बढ़ा हुआ है, सहाबा ؓ ने अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के रसूल ज़रुर बताइए। आप ﷺ ने फ़र्माया : दो आदमियों के दर्मियान सुलह कराना; और आपस का इख़्तिलाफ तो दीन को तबाह व बरबाद कर देने वाली चीज़ है।"

[अबू दाऊद : ४९१९, अन अबी दर्दा ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में — इल्म को ज़रिय-ए-मआश बनाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस इल्म के ज़रिये अल्लाह की खुशनूदी और रज़ा मन्दी हासिल की जाती है, अगर कोई आदमी ऐसे मुबारक इल्म को सिर्फ दुनिया का माल व मताअ हासिल करने की गर्ज से सीखेगा, तो कल कयामत के दिन ऐसा आदमी (जन्नत तो जन्नत) जन्नत की खुशबू भी नहीं सूंघ पाएगा।"

[अबू दाऊद : ३६६४, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में — दुनिया की मुहब्बत और आख़िरत की बरबादी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिसने अपनी दुनिया से मुहब्बत की उस नेअपनी आख़िरत का नुकसान किया और जिस ने आख़िरत से मुहब्बत की उस ने अपनी दुनिया का नुक़सान किया, तो तुम लोग बाकी रहने वाली (आख़िरत) को खत्म होने वाली (दुनिया) पर तरजीह दो।"

[मुस्नदे अहमद : १९११९, अन अबी मूसा ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में — कयामत का खतरनाक मन्ज़र

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : वह दिन काबिले ज़िक्र है, जिस दिन सूर फूँका जाएगा, तो ज़मीन व आस्मान में जितने (फरिश्तेऔर इन्सान वगैरह हैं) सब घबरा जाएंगे, मगर जिस को खुदा चाहे (वह इस घबराहट से महफ़ूज़ रहेगा) और अल्लाह तआला के सामने सब आजिज़ बन कर हाज़िर होंगे, और तुम पहाड़ों को देख कर यह ख़याल करते हो के यह जमे रहेंगे, हालांके वह (कयामत के दिन) बादलों की तरह उड़ते फिरेंगे।

[सूर-ए- नम्ल : ८७ता ८८]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज — दुबले पन का इलाज

हज़रत आयशा ؓ फ़र्माती हैं के जब मेरी वालिदा ने मुझे रसूलुल्लाह ﷺ के पास रुखसत करने का इरादा किया तो मेरे दुबले पन का इलाज करने लगीं, मगर कोई इलाज कारगर न हुआ, फिर मैं ने तर खजूरों के साथ ककड़ी खाना शुरु किया तो मैं मोअ्तदिल जिस्म वाली हो गई, यानी दुबला पन दूर हो गया।

[इब्ने माजा : ३३२४]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : अल्लाह तआला के अहकाम को हंसी खेल न बनाओ और अल्लाह तआला ने तुम पर जो एहसान किया है, उन को याद रखोऔर (उस का यह एहसान भी याद करते रहो) के उस ने तुम पर किताब (यानी कुर्आन) और अक्ल व हिकमत की बातें उतारीं, ताके इन के ज़रिए तुम्हें नसीहत फर्माए; और अल्लाह से डरते रहो, यकीन जानो अल्लाह तआला हर चीज़ को ख़ूब जानता है।

[सूर-ए- बकरा : २३१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर ① : इस्लामी तारीख़ — हज़रत उस्मान ﷺ के कारनामे और शहादत

हज़रत उस्मान ﷺ ने अपनी खिलाफ़त के दौरान बहुत से कारहाए नुमाया अन्जाम दिए, जिस मे पूरी उम्मत को एक नुस्ख-ए-कुर्आन पर जमा करना, मसजिदे नब्वी, जन्नतुल बकी के हिस्सों को वसीअ और कुशादा करना और इस्लामी ममालिक की हदों को बढ़ाना उन के अहम कारनामे हैं। वह इस्लाम और मुसलमानों की खिदमात अन्जाम देने में मुन्हमिक ही थे, के मुनाफिकों के फित्ने की वजह से मुसलमान अंदुरूनी और दाखिली फसादात के शिकार हो गए। इन तमाम फित्नों को फैलाने में अब्दुल्लाह बिन सबा नामी यहूदी ने अहेम किरदार अदा किया था वह ज़ाहिरी तौर पर मुसलमान हुआ था, उसे इस्लाम से और खास तौर से हज़रत उस्मान ग़नी ﷺ से बुग्ज़ व अदावत थी मुसलमानों में आपसी इख्तिलाफ पैदा करने के लिए उस ने कूफ़ा, बसरा, दिमश्क और मिस्र का सफर किया और एक बड़ी जमात उस की हम खयाल बन गई। उस ने मिस्र वगैरह के इलाकों के बहुत से अपने हमनवाओं को मदीना भेजा, उन में अक्सर मुनाफिकीन थे। सीधे साधे मुसलमानों को भी बहका कर अपने साथ किया, यह लोग उस वक्त मदीना पहुँचे जब अक्सर सहाबा हज के लिए मक्का गए हुए थे। उन्होंने मदीना में हज़रत उस्मान ﷺ के घर का मुहासरा कर लिया उन के ऊपर खाना पानी बंद कर दिया। आखिर अट्ठारा ज़िल हिज्जा सन ३५ हिजरी जुमा के दिन कुर्आन की तिलावत करते हुए हज़रत उस्मान ﷺ को शहीद कर दिया गया।

नंबर ② : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — ज़ख्म का अच्छा हो जाना

यज़ीद बिन अबी उबैद ﷺ फर्माते हैं : "मैं ने हज़रत सलमा बिन अक्वा ﷺ की पिंडली में ज़ख्म का निशान देखा, तो मैं ने उन से पूछा : यह कैसा ज़ख्म है? उन्होंने फर्माया : यह ज़ख्म मुझे खैबर के दिन लगी थी और (वह ज़ख्म भी ऐसा था के) लोग कहने लगे थे के सलमा शहीद हो गया, मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में आया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इस ज़ख्म पर तीन मर्तबा दम किया (अल्हम्दु लिल्लाह ऐसा अच्छा हो गया के) अब तक शिकायत नहीं हुई।" [बुखारी : ४२०६, अन यज़ीद बिन अबी उबैद ﷺ]

नंबर ③ : एक फ़र्ज़ के बारे में — गिरवी रखी हुई चीज़ से फ़ायदा न उठाना

हज़रत इब्ने मसऊद ﷺ के पास एक शख्स आए और कहा, के एक घोड़ा (मेरे पास) गिरवी रखा गया था, लेकिन मैं उस पर सवार हो गया (तो क्या मेरे लिए गिरवी रखे हुए घोड़े पर सवार होना जाइज़ है?) हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद ﷺ ने फ़र्माया : उस घोड़े से तुम ने जितना फ़ायदा उठाया वह सूद है। [कन्ज़ुल उम्माल : १५७४९]

फ़ायदा : गिरवी रखी हुई चीज़ से फ़ायदा उठाना जाइज़ नहीं है, उस से बचना ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	सोने से पहले की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ जब सोने लगते तो यह दुआ पढ़ते : ((اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ أَمُوْتُ وَأَحْيَا))

तर्जमा : ऐ अल्लाह! मैं तेरे ही नाम से मरता हूँ और जीता हूँ। [बुखारी : ६३१४, अन हुज़ैफा ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	सूर-ए-यासीन पढ़ने का सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हर चीज़ का एक दिल होता है, कुर्आन का दिल सूर-ए-यासीन है, जो शख्स सूर-ए-यासीन पढ़ता है उसे दस कुर्आन पढ़ने का सवाब मिलता है।"

[तिर्मिज़ी : २८८७, अन अनस ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	कंजूसी करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो लोग अल्लाह तआला के अता कर्दा माल व दौलत को (खर्च करने में) बुख्ल करते हैं, वह बिलकुल इस गुमान में न रहें के (उन का यह बुख्ल करना) उन के लिए बेहतर है, बल्के वह उन के लिए बहुत बुरा है, कयामत के दिन उन के जमा कर्दा माल व दौलत को तौक़ बना कर गले में पहना दिया जाएगा और आस्मान व ज़मीन का मालिक अल्लाह तआला ही है और अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल से बा खबर है।" [सूर-ए-आले इमरान : १८०]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	मौत का आना यकीनी है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम जहां कहीं भी होंगे, तुम को हर हाल में मौत आ पकड़ेगी चाहे तुम मज़बूत किलों में महफूज़ हो।" [सूर-ए-निसा : ७८]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	जन्नत का दरख्त

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जन्नत में कोई दरख्त ऐसा नहीं जिस का तना सोने का न हो।"

[तिर्मिज़ी : २५२५, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बड़ी बीमारियों से हिफाज़त

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स हर महीने तीन दिन सुबह के वक्त शहद को चाटेगा तो उसे कोई बड़ी बीमारी नहीं लगेगी।" [इब्ने माजा : ३४५०, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम में से किसी को गुस्सा आए और वह खड़ा हो तो उस को चाहिए के बैठ जाए, बैठने से गुस्सा चला जाए तो ठीक, वरना उस को चाहिए के लेट जाए।"

[अबू दाऊद : ४७८२, अन अबी ज़र ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर १ : इस्लामी तारीख — हज़रत अली ﵁

हज़रत अली बिन अबी तालिब ﵁ नबी-ए-करीम ﷺ के चचा ज़ाद भाई और दामाद हैं, हुज़ूर ﷺ की लाडली बेटी हज़रत फातिमा ﵂ के शौहर और हज़रत हसन ﵁ व हुसैन ﵁ के वालिदे मुहतरम हैं। बच्चों में सब से पहले हजरत अली ﵁ ने सिर्फ़ ९ साल की उम्र में इसलाम क़बूल किया और आप ﵁ ने कभी भी बुतों की परस्तिश नहीं की। हुज़ूर ﷺ ने हज़रत अली ﵁ की पर्वरिश की थी। वह एक निहायत ताक़तवर और बहादर इंसान थे। उन की बहादुरी का इज़हार ग़ज़्वा -ए- खंदक में उस वक्त हुआ जब दुश्मनों की तरफ से अम्र बिन अब्दे वुद्द सामने आया, जो तन्हा एक हजार शहसवारों के बराबर समझा जाता था, उस ने कहा: कौन है जो मेरे मुकाबले में आने की हिम्मत रखता है? उस पर हज़रत अली ﵁ आगे बढ़े और मुकाबला किया अल्लाह ने हज़रत अली ﵁ को फतह दी। इसी तरह रसूलुल्लाह ﷺ सहाबा के साथ खैबर पहुँचे और तमाम किले एक एक कर के फतह हो गए। लेकिन अल्कमूस का किला जो सब से बड़ा था, मुसलमानों से फतह नही हो रहा था। रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : कल झंडा उस शख्स के हाथ में होगा जिस को अल्लाह और उस का रसूल पसंद फर्माता है, और उसी के हाथ यह किला फतह होगा, अगले दिन नबी-ए- करीम ﷺ ने हज़रत अली ﵁ को झंडा दिया। खैबर के किले का दरवाज़ा इतना भारी था के चालीस आदमी भी उस को उठा नहीं सकते थे, मगर हज़रत अली ﵁ ने तन्हा उस दरवाज़े को उखाड़ लिया और अल्लाह ने उन्ही के हाथों उस किले पर फ़तह अता फ़र्माई।

नंबर २ : अल्लाह की कुदरत — सूरज गहन और चाँद गहन

अल्लाह तआला ने सूरज और चाँद को दुनिया में रौशनी फैलाने पर मामूर कर रखा है, जो अपने वक्त पर निकलते और डूबते हैं, अल्लाह तआला ने सूरज की रौशनी को गर्म और चाँद की रौशनी को ठंडा बनाया, वह कभी कभी सूरज और चाँद में अपनी निशानियाँ दिखाता है और चमकते हुए सूरज की रौशनी को बिल्कुल मध्धिम कर देता है; जिस की वजह से यह दुनिया कुछ देर के लिए अंधेरे में डूब जाती है, जिसे हम सूरज गहन कहते हैं; इसी तरह कभी कभी चमकते हुए चाँद की रौशनी को भी छीन लेता है, जिसे हम चाँद गहन कहते हैं। यह अल्लाह तआला की कुदरत की निशानी है।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — पांचों नमाज़ें अदा करने पर बशारत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया के अल्लाह तआला फ़र्माता है : "मैं ने आप की उम्मत पर पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं और इस बात का अहेद कर लिया है, के जो शख्स इन (पांचों नमाज़ों) को वक्त पर पाबंदी से अदा करेगा, तो मैं उस को जन्नत में दाखिल कर दूंगा, और जो इसे पाबंदी से अदा नहीं करेगा, तो उस के लिए मेरे पास कोई अहेद नहीं है।" [अबू दाऊद : ४३०, अन अबी कतादा ﵁]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — दरवाज़े पर सलाम करना

रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी के घर के दरवाज़े पर आते तो बिल्कुल सामने खड़े न होते, बलके दाएं तरफ या बाएं तरफ तशरीफ फर्मा होते और "अस्सलामु अलैकुम" फर्माते।

[अबू दाऊद : ५१८६, अन अब्दुल्ला बिन बुसर ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — अपने मुसलमान भाई से मुस्कुरा कर मिलना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अपने भाई से मुस्कुरा कर मिलने और अच्छी बातों का हुक्म देने और बुरे काम से रोकने का सवाब सदके के बराबर है।"

[तिर्मिज़ी : १९५६, अन अबी ज़र ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में — बुराई को न रोकने पर अज़ाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : के जब लोगों का यह हाल हो जाए वह शरीअत के खिलाफ काम होते हुए देखें और उस की इसलाह के लिये कुछ न करें तो खतरा है अल्लाह की तरफ से उन सब ही पर अज़ाब आ जाए।

[इबने माजा : ४००९, अन जरीर ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में — दुनिया की मिसाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : दुनिया की मिसाल पानी में चलने वाले आदमी की तरह है, क्या जो पानी में चलता है उस से यह हो सकता है के उस के कदम न भीगे।

[शोअबुल ईमान : १०१८७, अन हसन ﷺ]

फ़ायदा: जिस तरह पानी में चलने वाले का कदम भीगे बग़ैर नहीं रह सकता, इसी तरह दुनिया में घुसने वाला गुनाहों और आफतों से नहीं बच सकता।

नंबर (८): आखिरत के बारे में — कयामत में कोई काम नहीं आएगा

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : ऐ लोगो ! अपने रब से डरो और उस दिन से डरो जिस दिन न तो बाप अपने बेटे के कुछ काम आ सकेगा और न बेटा ही अपने बाप की तरफ से ज़र्रा बराबर काम आ सकेगा, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, तुम्हे दुनिया की जिंदगी हरगिज़ धोके में न डाले और तुम को खुदा तआला के बारे में धोके बाज़ (शैतान) किसी धोके में न डाले।

[सूर-ए-लुकमान : ३३]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज — पेट के दर्द का इलाज

हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फर्माते हैं के मैं नमाज़ से फारिग होकर आप ﷺ की खिदमत में आ कर बैठ गया फिर आप ﷺ ने मेरी तरफ तवज्जोह फर्माते हुए इर्शाद फर्माया : क्या तुम्हारे पेट में दर्द है? मैं ने कहा हाँ या रसूलल्लाह ! तो आप ﷺ ने फर्माया: उठो नमाज़ पढ़ो, क्यों कि नमाज़ में शिफा है।

[इब्ने माजा :३४५८]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो ! जब तुम आपस में किसी मुतअय्यना मुद्दत के लिए उधार लेन देन का मामला किया करो, तो उस को लिख लिया करो।"

[सूर-ए-बकरा : २८२]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१०) रजबुल मुरज्जब

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत अली ؓ की खिलाफत

हज़रत उस्मान ؓ की शहादत के बाद हज़रत अली ؓ मुसलमानों के खलीफा बने। हज़रत उस्मान ؓ की शहादत के बाद लोग हज़रत अली ؓ के घर पहुँचे के हम आप के हाथ पर बैअत होना चाहते हैं। हज़रत अली ؓ ने कहा : यह बद्री सहाबा का हक है के वह अमिरूल मोमिनीन चुनें। जब सब बद्री सहाबा तशरीफ ले आए तो उन्हों ने हज़रत अली ؓ को अमिरूल मोमिनीन बनाया, हज़रत अली ؓ मिम्बर पर बैठे लोगों ने हज़रत अली ؓ के हाथ पर १८ ज़ील हिज्जा जुमा के दिन बैअत की। हजरत अली ؓ के ज़मान-ए-खिलाफत में मुनाफिकीन की साज़िश से मुसलमान दो गिरोह में तकसीम हो गए जिस की वजह से मुसलमानों को काफी नुकसान उठाना पड़ा। मुसलमानों के आपसी इख्तिलाफ के बावजूद इस्लाम के हुदूद में नए ममालिक आ रहे थे और मुसलमान इस्लाम की दावत देने और दीन को फैलाने में मुन्हमिक थे, बेशुमार लोग इस दीन की सच्चाई और हक्कानियत को देख कर इस्लाम में दाखिल हो रहे थे।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — मुहम्मद बिन हातिब ؓ का शिफायाब होना

एक मर्तबा मुहम्मद बिन हातिब ؓ का हाथ (बचपन में) जल गया, तो उन की अम्मी उन्हें ले कर हुज़ूर ﷺ की खिदमत में आईं और कहने लगीं "या रसूलल्लाह ! यह मुहम्मद बिन हातिब है, सब से पहले आप के नाम के साथ इस का नाम रखा गया है, चुनांचे हुज़ूर ﷺ ने उन के सर पर हाथ फेरा और बरकत की दुआ फर्माई और उन के चेहरे पर अपना मुबारक थूक छिड़का और हाथ पर भी छिड़कने लगे और यह दुआ पढ़ी :

((أَذْهِبِ الْبَأْسَ رَبَّ النَّاسِ، اِشْفِ أَنْتَ الشَّافِي، لَاشِفَاءَ إِلَّا شِفَاؤُكَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا))

(उन की अम्मी कहती हैं के) : मैं हुज़ूर ﷺ के पास से उठी थी के इतने में मुहम्मद बिन हातिब का हाथ ठीक हो चुका था।"

[मुसतदरक : ६९०९, अन उम्मे जमील ؓ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — पर्दा करना फर्ज़ है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : (ऐ औरतो !) तुम अपने घरों में ठहरी रहा करो और दौरे जाहिलियत की तरह बे पर्दा मत फिरो।

[सूर-ए-अहज़ाब : ३३]

फायदा: तमाम मुसलमान औरतों के लिए ज़रुरी है, के जब किसी सख्त ज़रुरत के तहत घर से निकलें, तो अच्छी तरह पर्दे का खयाल रखते हुए बाहर जाए, क्योंकि पर्दा करना तमाम औरतों पर फर्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — सो कर उठने की दुआ

हज़रत हुज़ैफा ؓ फर्माते हैं : जब रसूलुल्लाह ﷺ सो कर उठते तो यह दुआ पढ़ते :

((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُوْرُ)) तर्जमा : तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें मौत देने के बाद ज़िंदगी दी और उसी की तरफ सब को जाना है।

[बुखारी : ६३१२]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	इल्मे दीन के लिये सफर करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स इल्मे दीन हासिल करने के लिए सफर करेगा, तो अल्लाह तआला उस के लिए जन्नत का रास्ता आसान कर देंगे।" [मुसतदरक : २९९, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	यतीमों का माल मत खाओ

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : यतीमों के माल उन को देते रहा करो और पाक माल को नापाक माल से न बदलो और उन का माल अपने मालों के साथ मिला कर मत खाओ; ऐसा करना यकीनन बहुत बड़ा गुनाह है। [सूर-ए-निसा : २]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	नाफर्मानों के माल व दौलत को न देखना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो हमने मुख़्तलिफ़ काफ़िरों के गिरोहों को आज़माने के लिए (माल व दौलत) दे रखा है के वह दुनियावी ज़िंदगी की रौनक़ है, आप उन चीज़ों की तरफ़ नजर उठा कर मत देखिए। [सूर-ए-ताहा : १३१]

फ़ायदा: ना फर्मानों को जो माल व दौलत मिलती है, उस को तअज्जुब और ललचाई हुई निगाह से नही देखना चाहिए क्योंकि वह उन के लिए आज़माइश का ज़रिया है।

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जहन्नम से ईमान वालों को निकाला जाएगा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जब ईमान वालों के बारे में जहन्नम से छुटकारे का फैसला हो जाएगा, तो उन्हें पुल सिरात से गुज़ारा जाएगा, जो जहन्नम और जन्नत के दर्मियान होगा, तो उस पर उन के दर्मियान जो कुछ आपस में एक दूसरे पर ज़ुल्म व सितम हुए होंगे उन का एक दूसरे से बदला दिलवा कर पाक कर दिया जाएगा, फिर उन्हें जन्नत में दाख़ले की इजाज़त होगी, उस ज़ात की कसम जिस के कब्ज़े में मुहम्मद की जान है, उन में से हर एक अपनी जन्नत को इसी तरह पहचान लेगा जिस तरह तुम अपने घर को इस दुनिया में पहचानते हो। [बुखारी : २४४०, अन अबी सईद खुदरी رضي الله عنه]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	इरकुन्नसा (Sciatica) का इलाज

हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه फर्माते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को फर्माते हुए सुना के इरकुन्नसा का इलाज अरबी बकरी (दुंबे) की चक्ती है, जिसे पिघलाया जाए, फिर उस के तीन हिस्से किए जाएं और रोज़ाना एक हिस्सा नहार मुंह पिया जाए। [इब्ने माजा : ३४६३]

फ़ायदा : दुंबे की दुम पर गोल उभरी हुई चर्बी के हिस्से को चक्ती कहते हैं।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जिस का कोई बच्चा पैदा हो तो उस का अच्छा नाम रखे और उस की अच्छी तरबियत करे फिर जब वह बालिग हो जाए तो उस का निकाह करे अगर बालिग होने के बाद भी उस का निकाह नहीं किया और वह गुनाह में मुब्तला हो गया तो इस का गुनाह उस के बाप पर होगा। [बैहकी फी शोअबिल ईमान : ८४१३, अन अबी सईद व इब्ने अब्बास رضي الله عنهم]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

११ रजबुल मुरज्जब

नंबर १ : इस्लामी तारीख — हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह ﵁

हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह ﵁ का शुमार भी उन दस लोगों में होता है जिन को रसूलुल्लाह ﷺ ने दुनिया ही में जन्नत की खुशखबरी सुना दी थी। आप इस्लाम लाने वालों में अव्वलीन साबिकीन में से हैं, ग़ज़व-ए- बद्र के अलावह तमाम ग़ज़वात में रसूलुल्लाह ﷺ के साथ रहे और आप ﵁ को बैअते रिज़वान का भी शर्फ हासिल है। जंगे उहुद के दिन जब दुश्मनों ने रसूलुल्लाह ﷺ कोअपने तीरों का निशाना बना रखा था, उस वक्त हज़रत तल्हा ﵁ ने अपने जिस्म के ज़रिये आप ﷺ की हिफाज़त की जिस की वजह से उन का हाथ शल हो गया, एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स ज़मीन पर चलने वाले किसी शहीद को देख कर खुशी हासिल करना चाहे, तो वह तल्हा बिन उबैदुल्लाह की ज़ियारत कर ले", हज़रत तल्हा ﵁ हुज़ूर ﷺ के विसाल फर्माने के तकरीबन पच्चीस साल बाद सन ३६ हिजरी में जंगे जमल में शहीद हुए।

नंबर २ : अल्लाह की कुदरत — बारिश में कुदरती निज़ाम

अल्लाह तआला बादलों के ज़रिये इतनी बुलन्दी से बारिश बरसाते हैं के अगर वह अपनी रफ़्तार से ज़मीन पर गिरती तो ज़मीन में बड़े बड़े गढ़े हो जाते और तमाम जान्दार, हैवानात, पेड़ पौदे, खेती बाड़ी सब फ़ना हो जाते, लेकिन अल्लाह तआला ने फ़ज़ा में अपनी कुदरत से इतनी रुकावटें खड़ी कर दी हैं के तेज़ रफ़्तार बारिश उन से गुज़र कर जब ज़मीन पर आती है तो इन्तेहाई धीमी हो जाती है, जिस से दुनिया की तमाम चीज़ें तबाह व बरबाद होने से महफूज़ हो जाती हैं। बेशक यह अल्लाह का कुदरती निज़ाम है जो बारिश को इतने अच्छे अन्दाज़ में बरसाता है।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — बीवी की वरासत में शौहर का हिस्सा

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियों के छोड़े हुए माल में से आधा हिस्सा है, जब के उन की कोई औलाद न हो और अगर उन की औलाद हो, तो तुम्हारी बीवियों के छोड़े हुए माल में चौथाई हिस्सा है (तुम्हें यह हिस्सा) उन की वसिय्यत और कर्ज़ अदा करने के बाद मिलेगा।

[सूर-ए-निसा : १२]

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — मुस्कुराते हुए मुलाकात करना

हज़रत जरीर ﵁ फर्माते हैं के मेरे इस्लाम लाने के बाद रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे कभी भी किसी भी वक्त अपने पास हाज़िर होने से नहीं रोका और जब भी मुझे देखते तो आप ﷺ मुस्कुराते थे।

[बुखारी : ३०३५]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	हर महीने के तीन दिन रोज़े रखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: हर महीने तीन दिन के रोज़े रखना उम्र भर रोज़ा रखने जैसा है।

[नसई : २४१०, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	मोमिन पर तोहमत लगाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स अपने मोमिन भाई को मुनाफ़िक़ के शर से बचाए, तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन ऐसे आदमी के साथ एक फरिश्ते को मुकर्रर कर देगा, जो उस के बदन को जहन्नम से बचाएगा; और जो आदमी मोमिन भाई पर किसी चीज़ की तोहमत लगाए जिस से उस को ज़लील करना मक्सूद हो, तो अल्लाह तआला उस को जहन्नम के पुल पर रोक देगा, यहाँ तक के वह अपनी कही हुई बात का बदला न दे दे।"

[अबू दाऊद : ४८८३, अन मुआज़ बिन अनस رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की इमारतें

रसूलुल्लाह ﷺ एक मर्तबा एक गुंबद वाली इमारत के पास से गुज़रे तो फर्माया : "यह किस ने बनाया है? लोगों ने बताया के फलाँ शख़्स ने, तो फर्माया: क़यामत के दिन मस्जिद के अलावा हर इमारत साहिबे इमारत के लिए वबाल होगी।"

[शोअबुल ईमान : १०३०२, अन अनस बिन मालिक رضي الله عنه]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले जन्नत की नेअ्मतें

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : (कुर्आन पर अमल करने वालों के लिए) हमेशा रहने वाले बाग़ात हैं, जिन में यह लोग दाखिल होंगे; वहाँ उन को सोने के कंगन और मोती पहेनाए जाएंगे वहाँ उन का लिबास रेशमी होगा।

[सूर-ए-फातिर : ३३]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बीमारी से बचने की तदबीरें

हज़रत जाबिर رضي الله عنه बयान करते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को फर्माते हुए सुना के बर्तनों को ढांक दिया करो और मशकीज़े का मुँह बांध दिया करो क्योंकि साल में एक ऐसी रात आती है जिस में वबा उतरती है पस जिस बर्तन या मशकीज़े का मुँह खुला रहेता है वह उस में उतर जाती है। [मुस्लिम : ५२५५]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : तुम औरतों को उन के महेर खुश दिली से अदा कर दिया करो। हाँ अगर वह औरतें अपनी खुशी से उस महेर में से कुछ तुम्हारे लिए छोड़ दें तो उस को लज़ीज़ और खूश गवार समझ कर खा लिया करो।

[सूर-ए-निसा : ४]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(१२) रजबुल मुरज्जब

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम ﵁

हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम ﵁ भी उन खुश नसीब लोगों में हैं जिन को रसूलुल्लाह ﷺ ने दुनिया में ही जन्नत की खुशखबरी सुना दी थी। आप ﵁ इसलाम लाने वालों में चौथे या पाँचवें शख़्स है। पंद्रह साल की उम्र में इसलाम कबूल किया और हबशा और मदीना दोनो की हिजरत की। रसूलुल्लाह ﷺ के साथ तमाम गज़वात में शरीक रहे। गज़व-ए-खन्दक के मौके पर रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : कौन है जो दुशमन के लशकर की खबर लाए? हज़रत ज़ुबैर ﵁ नेअर्ज किया के मै खबर लाऊँगा।इस पर रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : हर नबी के लिए हवारी होते हैं और मेरे हवारी ज़ुबैर हैं। हज़रत अली ﵁ ने फर्माया के मै ने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना है के आप ﷺ ने फर्माया : "तल्हा व ज़ुबैर जन्नत में मेरे पड़ोसी होंगे।" सन ३६ हिजरी में जंगे जमल के मौके पर इब्ने जुरमूज ने आप ﵁ को शहीद कर दिया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — सूखी लकड़ी का तलवार बन जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने जंगे बद्र में हज़रत उकाशा ﵁ को एक सुखी लकड़ी दी, पस वह उन के हाथ में सख्त तेज़ और चमकदार तलवार बन गई। उन्हों ने गज़व-ए-बद्र में इसी लकड़ी के साथ शिरकत की और बकिया गज़वात में भी साथ रखी; यहाँ तक के जब हज़रत उकाशा ﵁, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक ﵁ के ज़माने में शहीद हुए उस वक्त भी वह (सुखी लकड़ी वाली) आप के पास थी, उस तलवार का नाम औन था।

[उसदुल गाबा : ३७३४]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ी पर जहन्नम की आग हराम है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जो शख़्स पांचों नमाज़ों की इस तरह पाबंदी करे के वुज़ू और औकात का एहतेमाम करे, रुकू और सजदा अच्छी तरह करे और इस तरह नमाज़ पढ़ने को अपने जिम्मे अल्लाह तआला का हक़ समझे, तो उस आदमी को जहन्नम की आग पर हराम कर दिया जाएगा।

[मुस्नदे अहमद : १७८८२, अन हन्ज़ला उसैदी ﵁]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — जब बुरा ख्वाब देखे

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जब तुम में से कोई बुरा ख्वाब देखे, तो तीन मर्तबा बाएँ तरफ थुतकार देऔर तीन मर्तबा शैतान सेअल्लाह की पनाह चाहे (यानी أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ पढे) और करवट बदल कर सो जाए।

[मुस्लिम ५९०४, अन जाबिर ﵁]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | बीमारी की शिकायत न करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह तआला फर्माता है के मैं जब अपने मोमिन बंदे को (बीमारी में) मुबतला करता हूँ और वह अपनी इयादत करने वालों से मेरी शिकायत नहीं करता, तो मैं उस कोअपनी कैद (यानी बीमारी) से नजात दे देता हूँ, और फिर उस के गोश्त को उस से उमदा गोश्त और उस के खून को उमदा खून से बदल देता हूँ ताके नए सिरे से अमल करे।" [मुसतदरक : १२९०, अन अबी हुरैरह ؓ]

खुलासा : अगर कोइ बिमार हो जाए, तो सब्र करना चाहिए, किसी से शिकायत नही करनी चाहिए, उस पर अल्लाह तआला इन्आमात से नवाज़ते हैं।

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | अल्लाह और उस के रसूल की ना फर्मानी

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : जो शख्स अल्लाह और उस के रसूल की नाफर्मानी करेगा, और उस की (मुकर्रर की हुई) हदों से आगे बढ़ेगा तो अल्लाह तआला उस कोआग में दाखिल करेगा, जिस में वह हमेशा रहेगा, और उस को ज़लील व रुस्वा करने वाला अज़ाब होगा। [सूर-ए-निसा : १४]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | सिर्फ दुनिया की नेअमतें मत मांगो

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : जो शख़्स (अपनेआमाल के बदले में) सिर्फ दुनिया के इनाम की ख्वाहिश रखता है (तो यह उस की नादानी है के उसे मालूम नहीं) के अल्लाह तआला के यहाँ दुनिया और आखिरत दोनों का इनाम मौजूद है (लिहाज़ा अल्लाह से दुनिया और आखिरत दोनों की नेअमतें मांगो) अल्लाह तुम्हारी दुआओं को सुनता और तुम्हारी निय्यतों को देखता है। [सूर-ए-निसा : १३४]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | जन्नतियों का हाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जन्नत में लोग खाएंगे और पिएंगे, लेकिन न तो पेशाब पाखाना करेंगे, और न ही नाक छिंकेंगे, बल्के उन का खाना इस तरह हज़्म होगा के डकार आएगी, जिस से मुश्क की खुशबू फैलेगी और उन को अल्लाह की ऐसी तसबीह और तकबीर बताई जाएगी जिस को पढना इतना आसान होगा, जितना दुनिया में तुम्हारे लिए सांस लेना असान होता है। [मुस्लिम : ७१०४, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | मिसवाक के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : मिसवाक जरुर किया करो, क्यों कि इस से खुदा की खूशनूदी हासिल होती है और आँख की रौशनी तेज़ होती है। [अलमोजमुल औसत लित्तबरानी : ७३०९, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "ऐ आयशा ؓ ! खुद को उन गुनाहों से भी बचाने की कोशिश करो जिन को छोटा और मामूली समझा जाता है, क्यों कि इस पर भी अल्लाह की तरफ से फरिश्ता मुकर्रर है जो उस को लिखता रहेता है।" [इब्ने माजा : ४२४३, अन आयशा ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

१३ रजबुल मुरज्जब

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत अब्दुर्रहमान इब्ने औफ ﷺ

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ ﷺ उन पाँच सहाबा में हैं जिन्हों ने शुरु ज़माने में हज़रत अबूबक्र ﷺ की दावत पर इस्लाम कबूल किया। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ से दस साल छोटे थे, तीस साल की उम्र में इस्लाम कबूल किया। उन्हों ने हब्शा और मदीना दोनों की हिजरत की और गज़व-ए-बद्र व उहुद बल्के तमाम गज़वात में रसूलुल्लाह ﷺ के साथ शरीक रहे। आप ﷺ का शुमार भी उन दस सहाबा में होता है जिन को नबी-ए-करीम ﷺ ने दुनिया ही में जन्नत की खुशखबरी सुनाई थी। जब हुज़ूर ﷺ हिजरत कर के मदीना आए थे तो उन के पास कुछ भी न था, रसूलुल्लाह ﷺ ने उन का भाई चारा सअद बिन रबीअ अन्सारी ﷺ से किया था, हज़रत अब्दुर्रहमान ﷺ ने उन से कोई माल नहीं लिया और खुद तिजारत शुरु कर दी। अल्लाह तआला न उन की तिजारत में ऐसी बरकत अता फर्माई के आप का शुमार मदीना के अमीर तरीन लोगों में होने लगा। हज़रत अब्दुर्रहमान ﷺ कसरत से अल्लाह के रास्ते में माल खर्च करने वाले थे। कभी आप ने अपने माल का आधा हिस्सा खर्च किया तो कभी चालीस हज़ार दीनार खर्च किया और कभी पाँच सौ घोड़े मअ साज़ व सामान के अल्लाह के रास्ते में दिए, एक रोज़ आप ने तीस गुलाम एक ही वक्त में आज़ाद किये। आप की वफात मदीना मुनव्वरा में सन ३१ हिजरी को ७५ साल की उम्र में हुई।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — ना समझ बच्चे से अक्लमंद इन्सान तक

अक्ल अल्लाह तआला की दी हुई बहुत बड़ी नेअ्मत है, बच्चा जब पैदा होता है , उसे किसी भी चीज़ को समझने बूझने की बिलकुल सलाहियत नहीं होती, उस के सामने आग और पानी सांप और रस्सी सब बराबर होते हैं। उसे न तो अपना सतर ढाकने का होश रहता है, न सर्दी, गर्मी से बचने का होश रहता है, लेकिन अल्लाह तआला इसी कमज़ोर और नादान बच्चे को धीरे धीरे बढ़ाते हैं और उसेअक्ल व शुऊर की दौलत अता करते हैं; यहां तक के वह हर चीज़ को समझने लगता है, वह आग और सांप से बचने लगता है, वह अपने सतर को छुपाता है, वह अच्छाई और बुराई को समझने लगता है। यह अल्लाह तआला की कुदरत की कारीगरी है के जिस ने एक छोटे से नासमझ बच्चे कोआहिस्ता आहिस्ता अक्ल व समझदारी के कमाल तक पहुँचाया ।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — हज किन लोगों पर फर्ज़ है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : अल्लाह के वास्ते उन लोगों के जिम्मे बैतुल्लाह का हज करना (फर्ज़) है जो वहाँ तक पहुँचने की ताकत रखता हो। [सूर-ए-आले इमरान: ९७]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — मेहमान का अच्छे अलफाज़ से इस्तिक़बाल करना

हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ फर्माते हैं के जब रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में कबील-ए-बनू अब्दे कैस के लोग आए, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : मरहबा (यानी आप का

आना मुबारक हो)। [बुखारी : ५३, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

फ़ायदा : इस से मालूम हुआ के जब कोई मेहमान आए, तो "खुश आमदीद", "मरहबा" या इस तरह के अल्फ़ाज़ कहना सुन्नत है।

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | सफ की खाली जगहों को पुर करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स सफ के दर्मियान खाली जगह को पुर करता है, अल्लाह तआला उस को इस अमल के बदले जन्नत में एक दर्जा बलंद कर देते हैं और उस के लिए जन्नत में एक महल बना देते हैं।" [तर्गीब व तर्हीब : ६७८, अन आयशा ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | खुद को बूराई से न बचाने का अंजाम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : कयामत के दिन एक आदमी लाया जाएगा और उस को जहन्नम में फेंका जाएगा, जैसे ही वह शख्स जहन्नम में दाखिल होगा उस के पेट की सारी अंतड़ियाँ बाहर निकल आएंगी और उस को वह इस तरह घुमाएगा जिस तरह गधा चक्की को घुमाता है, जहन्नमी लोग उस के पास जमा हो जाएँगेऔर तअज्जुब के मारे पूछेंगे : तुझे क्या हो गया? तू हम को भलाई का हुक्म करता था और बुराई से रोकता था! तो वह कहेगा : मैं वही आदमी हूँ, मग र मैं तुम को तो भलाई का हुक्म करता था, मगर खुद उस पर अमल नहीं करता था और तुम को तो बुराई से रोकता था मगर मैं खुद उस से नहीं रुकता था ! [बुखारी : ३२६७, अन उसामा ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | ज़रूरत से ज़ाइद इमारत वबाल है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स ज़रूरत से ज़ियादा इमारत बनाएगा, तो वह कयामत के दिन उस पर वबाल होगी।" [शोअबुल ईमान : १०३०६, अन अनस ﷺ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | अहले जहन्नम की फरियाद

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : काफिर लोग दोज़ख में खूब चिल्लाते होंगे के ऐ हमारे रब ! हम को (इस दोज़ख से निकाल ले) हम अब नेक काम किया करेंगे, वह काम नहीं करेंगे, जो पहले किया करते थे। (जवाब मिलेगा) क्या हम ने तुम को इतनी उम्र नही दी थी के जिस को समझना होता वह समझ लेता? और तुम्हारे पास डराने वाला भी पहुँचा था, तो अब अज़ाब का मज़ा चखो ऐसे ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं है। [सूर-ए-फातिर : ३७]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | कोढ़ का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "ज़ैतून का तेल खाओ और उसे लगाओ, क्योंकि इस में सत्तर बीमारियों से शिफा है, जिन में एक कोढ़ भी है।" [कन्ज़ुल उम्माल : २८२९५, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : तुम औरतों के साथ हुस्ने सुलूक से जिन्दगी गुज़ारोऔर अगर तुम को उन की (कोई आदत) अच्छी न लगे (तो उस की वजह से सख्ती का बर्ताव न किया करो, कियोंकि) मुमकिन है तुम किसी चीज़ को ना पसंद करो, मगर अल्लाह तआला ने उस में बहुत ज़ियादा भलाई रख दी हो। [सूर-ए-निसा : १९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत सअद बिन अबी वक्कास ﷺ

हज़रत सअद बिन अबी वक्कास ﷺ उन लोगों में से हैं जिन को हुज़ूर ﷺ ने दुनिया ही में जन्नत की खुशखबरी दे दी थी, आप का नाम सअद बिन मालिक कुरैशी है, आप ﷺ ने १७ साल की उम्र में इस्लाम कबूल किया। आप इस्लाम लाने वालों में सातवें शख्स हैं; लेकिन अल्लाह के रास्ते में तीर चलाने वाले पहले शख्स हैं, आप मुसतजाबुद दावात थे। गज़्व-ए-बद्र और उहुद के साथ तमाम गज़वात में रसूलुल्लाह ﷺ के साथ शरीक रहे हैं। अल्लाह के रास्ते में बड़ी तकलीफें उठाई हैं। हज़रत सअद ﷺ खुद बयान फर्माते हैं के हम ऐसी बे सरो सामानी की हालत में रसूलुल्लाह ﷺ का साथ देते थे, के हमारे पास खाने के लिए बबूल (केकर) के दरख्त के फल और उस के पत्तों के अलावा कुछ भी न होता था।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — गूंगा पन खत्म होना

रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में एक लड़का लाया गया, यह लड़का पैदाइशी गूंगा था, आप ﷺ ने उस से पूछा : ज़रा इतना बता के मैं कौन हूँ ? उस ने जवाब दिया के आप ﷺ अल्लाह के रसूल हैं (और उसी वक्त से बातें करने लगा)। [बैहकी फी दलाइलिन नुबुव्वह : २३११]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — शौहर की वरासत में बीवी का हिस्सा

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है। इन औरतों के लिए तुम्हारे छोड़े हुए माल में चौथाई हिस्सा है, जब के तुम्हारी कोई औलाद न हो और अगर तुम्हारी औलाद हो तो उन के लिए तुम्हारे छोड़े हुए माल में आठवां हिस्सा है (उन को यह हिस्सा) तुम्हारी वसिय्यत और कर्ज़ को अदा करने के बाद मिलेगा। [सूर-ए-निसा: १२]

फ़ायदा : शौहर के इन्तेकाल के बाद अगर उस की कोई औलाद न हो, तो बीवी को शौहर के माल का चौथाई हिस्सा देना और अगर कोई औलाद हो तो आठवां हिस्सा देना ज़रुरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — खाने से पहले की दुआ

जब खाना शुरु करे तो यह दुआ पढ़े :

((بِسْمِ اللّٰہِ)) [बुखारी : ५३७६, अन अबी सलमा ﷺ]

अगर खाने के शुरु में दुआ पढ़ना भूल जाए तो यह दुआ पढ़े: ((بِسْمِ اللّٰهِ أَوَّلَهُ وَآخِرَهُ))

तर्जमा : शुरू और आखिर में अल्लाह का नाम लेकर खाता हूँ। [अबू दाऊद : ३७६७, अन आयशा]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	सोते वक्त सूरह-ए-काफिरुन पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स रात में सोते वक्त सूरह ﴿قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ﴾ (पूरी) पढ़े, तो वह शिर्क से बरी होगा।" [तिर्मिज़ी : ३४०३, अन फरवह बिन नौफल]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	सूद खोर से जंग का एलान

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अगर तुम (सूद लेने से) बाज़ नहीं आए, तो अल्लाह और उस के रसूल की तरफ से जंग का एलान सुन लो (लिहाज़ा हर मुसलमान को सूद से बचना चाहिए)।"

[सूर-ए-बकरा : २७९]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया से बेहतर आखिरत का घर है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "दुनिया की ज़िन्दगी सिवाए खेल कूद के कुछ भी नहीं और आखिरत का घर मुत्तकियों (यानी अल्लाह तआला से डरने वालों) के लिए बेहतर है।"

[सूर-ए-अनआम : ३२]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	जन्नत में सब से ज़ियादा इज़्ज़त वाला

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जन्नत में सब से ज़ियादा इज़्ज़त वाला शख्स वह होगा, जो सुबह व शाम अल्लाह तआला का दीदार करेगा।" [तिर्मिज़ी : २५५३, अन इब्ने उमर]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	अंजीर से जोड़ों के दर्द का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अंजीर खाओ, क्यों कि यह बवासीर को खत्म करता है और जोड़ों के दर्द में मुफीद है।" [कन्ज़ुल उम्माल : २८२७६, अन अबी ज़र]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : रास्ते पर मत बैठो, सहाबा ने अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के रसूल ! हमारे लिए तो बैठना ज़रूरी है, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : ठीक है बैठो, लेकिन रास्ते का हक अदा करो, सहाबा ने अर्ज़ किया: रास्ते का हक क्या है? तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : निगाह नीची रखना, तकलीफ देने वाली चीज़ों को हटाना और सलाम का जवाब देना और भलाई का हुक्म करना और बुराई से लोगों को रोकना। [अबू दाऊद : ४८१५, अन अबी सईद खुदरी]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१५) रजबुल मुरज्जब

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत सअद बिन अबी वक्कास ﷺ की करामत

हज़रत उमर फारूक ﷺ ने अपने ज़मान-ए-खिलाफत में किसरा को फतह करने के लिए हज़रत सअद बिन अबी वक्कास ﷺ की इमारत में एक बड़ा लशकर ईरान की तरफ रवाना फर्माया। रास्ते में उन्हें दर्याए दज्ला मिला। उस को पार करने के लिए उन के पास न कोई कश्ती थी और न ही कोई दूसरा रास्ता। और दर्या का पानी भी काफी चढ़ा हुआ था। हज़रत सअद ﷺ ने लोगों को दर्या पार करने की दावत दी । इस पर एक जमात तय्यार हो गई और उस नेअपने घोड़े दर्या में डाल दिए। फिर हज़रत सअद ﷺ ने तमाम लोगों को दर्या में कूद जाने का हुक्म दिया। इस पर तमाम लोग दर्याए दज्ला में अपने घोड़ों के साथ कूद पड़े, घोड़े दर्या में इस तरह चल रहे थे जैसे ज़मीन पर हों और वह लोग दर्या पार करते हुए आपस में इस तरह बातें कर रहे थे जिस तरह ज़मीन पर चलते हुए किया करते हैं! हालांके दर्या बहुत जोश में था। ईरानियों ने जब यह मन्ज़र देखा तो घबरा गए और अपना साज़ो सामान छोड़ कर भाग निकले और मुसलमानों कोअल्लाह ने फतह दी। उन की वफ़ात सन ५५ हिजरी में हज़रत मुआविया ﷺ के दौरे खिलाफत में हुई।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — नींद अल्लाह की अज़ीम नेअ्मत

अल्लाह तआला ने इन्सान को बे शुमार नेअ्मतों से नवाज़ा है, उन्हीं में से एक अज़ीम नेअ्मत नींद है, जब आदमी सो जाता है तो उस का एहसास व शुऊर ख़त्म हो जाता है और आदमी अपने गिर्द व पेश बल्के अपने जिस्म के अहवाल से भी बे ख़बर हो जाता है। गोया उस वक्त यह कुव्वतें उस से ले ली जाती है, मगर मौत की तरह नींद दे कर फिर जीती जागती ज़िन्दगी कौन अता करता है ? यक़ीनन यह अल्लाह तआला ही अता करता है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़े अस्र की अहेमियत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस शख्स ने अस्र की नमाज़ छोड़ दी, तो उस का अमल ज़ाए हो गया।" [बुखारी : ५५३, अन बुरैदा ﷺ]

फ़ायदा : दिन और रात में तमाम मुसलमानों पर पाँचों नमाज़ों को अदा करना तो फर्ज़ है ही, लेकिन ख़ास तौर से अस्र की नमाज़ छोड़ने वालों के हक में रसूलुल्लाह ﷺ का वईद बयान फर्माना इस की अहेमियत को मज़ीद बढ़ा देता है, चुनान्चे हमारे लिए ज़रुरी है के हम अस्र की नमाज़ वक्त पर अदा करें और कज़ा न करें ।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — सामने वाले की बात पूरी तवज्जोह से सुनना

जब आप ﷺ से कोई मुलाकात करता और गुफ्तगू करता, तो आप ﷺ उस की तरफ से तवज्जोह न हटाते, यहाँ तक के वह आप ﷺ से रुख न हटा लेता। [इब्ने माजा : ३७१६, अन अनस ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	मुसाफा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब दो मुसलमान मिलते हैं और एक दूसरे से मुसाफह करते हैं (यानी हाथ मिलाते हैं) तो उन के जुदा होने से पहले पहले दोनो की मगफिरत कर दी जाती है।"

[तिर्मिज़ी : २७२७, अन बरा बिन आज़िब ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	सहाबा की सीरत को दागदार बनाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह से डरते रहना, मेरे बाद उन को निशाना मत बनाना। जो उन से मुहब्बत करेगा वह मुझ से मुहब्बत की बिना पर उन से मुहब्बत करेगा और जो उन से बुग्ज़ रखेगा वह मुझ से बुग्ज़ की बिना पर उन से बुग्ज़ रखेगा और जिस ने उन को तक्लीफ दी उस ने मुझ को तक्लीफ दी और जिस ने मुझ को तक्लीफ दी गोया उस ने अल्लाह को तक्लीफ पहुँचाई और जिस ने अल्लाह को तक्लीफ पहुँचाई करीब है के अल्लाह तआला उस को अज़ाब में पकड़ ले।"

[तिर्मिज़ी : ३८६२, अन अब्दुल्लाह बिन मुगफ़्फ़ल ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	बेजा ज़ीनत से बचना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "आदमी के लिए मुनासिब नहीं के वह नक्श व निगार वाले घर में दाखिल हो।"

[बैहकी शोअबुल ईमान : १०३२६, अन उम्मे सलमा ؓ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	कयामत के रोज़ सब को ज़िन्दा किया जाएगा

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : (दोबारा) सूर फूंका जाएगा, तो सब के सब कब्रों से निकल कर अपने रब की तरफ दौड़ पड़ेंगे। वह कहेंगे: हाय हमारी बरबादी ! हम को हमारी ख्वाब गाहों से किस ने उठा दिया (जवाब मिलेगा) यह वही है जिस का रहमान ने वादा किया था और रसूलों ने सच कहा था। बस वह एक ज़ोर की आवाज़ होगी, जिस से सब जमा हो कर हमारे पास हाज़िर कर दिए जाएँगे।

[सूर-ए-यासीन : ५१ ता ५३]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मेहंदी से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मेहंदी का खिज़ाब लगाओ, क्यों कि यह तुम्हारी जवानी, हुस्न व जमाल और मर्दाना कुव्वत को बढ़ाता है।"

[कन्ज़ुल उम्माल : १७३००, अन अनस ؓ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : तुम सब अल्लाह की इबादत करो, उस के साथ किसी को शरीक न करो, माँ बाप, रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों, क़रीबी पड़ोसियों और दूर के पड़ोसियों, पास बैठने वालों, मुसाफिरों और जो लोग तुम्हारे मातहत हों, सब के साथ हुस्ने सुलूक करो और अल्लाह तआला तकब्बुर करने वाले और शेख़ी मारने वाले को बिलकुल पसंद नहीं करता।

[सूर-ए-निसा : ३६]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

१६ रजबुल मुरज्जब

नंबर १ : इस्लामी तारीख — हज़रत सईद बिन ज़ैद ؓ

हज़रत सईद बिन ज़ैद ؓ भी उन दस मुबारक लोगों में हैं। जिन्हें रसूलुल्लाह ﷺ यने दुनिया ही में जन्नत की बशारत सुना दी थी। यह हज़रत उमर ؓ के बहनोई हैं, इन्हों ने हज़रत उमर ؓ से पहले इस्लाम कबूल किया वह और उन की बीवी फातिमा बिन्ते खत्ताब, हज़रत उमर ؓ के इस्लाम का ज़रिया बने। एक मर्तबा एक औरत ने अदालत में यह दावा किया के "सईद ؓ ने मेरी फलाँ ज़मीन दबाली है।" हज़रत सईद ؓ को इस से बड़ी तक्लीफ हुई और उन्होंने अदालत में हाकीम के सामन कहा : क्या मैं इस औरत की ज़मीन दबाऊँगा, जब के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना है के जो शख्स किसी की एक बालिश्त भर ज़मीन भी जुलमन दबाए तो ज़मीन का वह टुकड़ा सातों ज़मीन तक तौक बना कर उस के गले में डाला जाएगा। इस हदीस को सुनने के बाद हाकीम ने उन को बरी कर दिया। मगर उन्होंने दुखे हुए दिल से फर्माया : ऐ अल्लाह तू जानता है के वह औरत झूटी है तू उस को अंधा कर दे और उस की ज़मीन को उस की कब्र बना दे। और ऐसा ही हुआ वह अंधी हो गई और एक दिन वह गढे में गिर पड़ी और वह गढा उस की कब्र बन गया। हज़रत सईद बिन ज़ैद का इन्तेकाल सन ५० हिजरी में या उस के कुछ बाद हुआ, उस वक्त उन की उम्र सत्तर साल से भी ज़ियादा थी।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — टूटे हुए पैर का ठीक हो जाना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अतीक ؓ जब अबू राफेअ को कत्ल कर के वापस आने लगे तो सीढी (ज़ीना) से उतरते हुए गिर पड़े और पैर टूट गया, रसूलुल्लाह ﷺ ने उस पर अपना दस्ते मुबारक फेरा, तो फौरन ऐसा अच्छा होगया, गोया कभी टूटा ही न था। [बुखारी : ४०३९, अन बरा बिन आज़िब ؓ]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ में किबला की तरफ रुख करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता हैं : "तुम (नमाज़ में) जहाँ कहीं भी हो तो अपने चेहरों को उसी (बैतुल्लाह शरीफ) की तरफ किया करो।" [सूर-ए-बकरा : १४४]

फ़ायदा : किबला की तरफ रुख कर के नमाज़ अदा करना फर्ज है।

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — खाने के बाद की दुआ

खाना खाने के बाद यह दुआ पढे :

((اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَ سَقَانَا وَجَعَلَنَا مُسْلِمِیْنَ))

तर्जमा : तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें खिलाया, पिलाया और मुसलमान बनाया।

[अबू दाऊद : ३८५०, अबू सईद खुदरी ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	हर नमाज़ के बाद तसबीहे फातिमी पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया, जो शख्स हर फर्ज़ नमाज़ के बाद ३३ मर्तबा سُبْحَانَ اللّٰهِ ३३ मर्तबा اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ और ३४ मर्तबा اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहता है, वह कभी नुकसान में नहीं रहता।

[मुस्लिम : १३४९, अन कअब बिन उजरह رضی اللہ عنہ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	किसी पर तोहमत लगाना गुनाहे अज़ीम है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : जो शख्स कोई छोटा या बड़ा गुनाह करे, फिर उस की तोहमत किसी बेगुनाह पर लगा दे, तो उस ने बहुत बड़ा बोहतान और खुले गुनाह का बोझ अपने ऊपर लाद लिया।

[सूर-ए- निसा : ११२]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	नेक आमाल के बदले दुनिया की रौनक चाहना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख्स (अपने नेक आमाल के बदले) दुनियावी ज़िंदगी और उस की रौनक चाहेगा, तो हम उन लोगों को उन के आमाल का बदला दुनिया ही में दे देंगे ! और उन के लिए दुनिया में कोई कमी नहीं होगी, यही लोग हैं जिन के लिए आखिरत में सिर्फ और सिर्फ जहन्नम है और उन्होंने जो कुछ दुनिया में किया था (वह सब आखिरत में) बेकार साबित होगा।"

[सूर-ए-हूद : १५ ता १६]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	अहले जन्नत को खुशखबरी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "एक पुकारने वाला जन्नतियों को पुकारेगा तुम हमेशा तंदुरुस्त रहोगे, कभी बीमार न होगे, तुम हमेशा ज़िन्दा रहोगे, कभी मौत नहीं आएगी, तुम हमेशा जवान रहोगे, कभी बूढ़े नहीं होंगे, तुम हमेशा खुशहाल रहोगे, कभी मोहताज न होगे।" [मुस्लिम : ७१५७, अन अबी सईद رضی اللہ عنہ व अबी हुरैरह رضی اللہ عنہ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मेथी से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मेथी से शिफा हासिल करो।"

[ज़ादुल मआद : ४/२६९, अन कासिम इब्ने अब्दुर्रहमान رضی اللہ عنہ]

फ़ायदा: मेथी का जोशांदा नज़ला ज़ुकाम को दूर करता है पुरानी खांसी, पेट के फोड़ें और फेफड़े की बीमारियों में बहुत नफा बख्श है, सीने में जमे हुए बलगम के लिए बेहद मुफीद है और कब्ज़ को दूर करता है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : तुम अपने मुसलमान भाई से झगड़ा मत करो और न उस से ऐसा मज़ाक करो, जो झगड़े का सबब बने और न उस से ऐसा वादा करो, जिस को तुम पूरा न कर सको।

[तिर्मिज़ी : १९९५, अन इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

१७ रजबुल मुरज्जब

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह ﵁

हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह ﵁ का अस्ल नाम आमिर बिन अब्दुल्लाह है। वह भी उन मुबारक हस्तियों में हैं जिन्हें रसूलुल्लाह ﷺ ने दुनिया में ही जन्नत की खुशखबरी दे दी थी। गज़्व-ए-उहुद के दिन जब रसूलुल्लाह ﷺ के चेहर-ए-मुबारक में खौद (लोहे की टोपी) की दो कड़ियां दाखिल हो गई थीं तो उसे अबू उबैदह ﵁ ने अपने दांतों से पकड़ कर खींचा था जिस की वजह से उन के सामने के दो दांत टूट गए थे। रसूलुल्लाह ﷺ ने उन के बारे में फ़र्माया :"हर उम्मत के लिए एक अमीन (अमानतदार) होता है और मेरी उम्मत के अमीन अबू उबैदह बिन जर्राह हैं।" एक मर्तबा हज़रत उमर ﵁ ने उन से मुलाकात की तो देखा की ऊँट के कजावे की चादर पर लेटे हुए हैं और घोड़े को दाना खिलाने वाले थैले को तकिया बनाया है। हज़रत उमर ﵁ ने उन से फ़र्माया के आपने अपने साथियों की तरह मकान व सामान क्यों नहीं बना लिया, इस पर अबू उबैदह ने फ़र्माया : कब्र तक पहुँचने के लिए यह सामान काफ़ी है। उन की वफ़ात सन १८ हिजरी में मुल्के शाम में हुई।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — पानी अल्लाह की नेअ्मत

पानी अल्लाह तआला की अज़ीम नेअ्मत है, जिस के बग़ैर कोई मख़्लूक़ ज़िन्दा नहीं रह सकती, चुनान्चे अल्लाह तआला ने कहीं झील, दरिया, नदी की शक्ल में, तो कहीं समन्दर और मिट्टी की तह में पानी पैदा कर के क़ाबिले इस्तेमाल बनाया, जिस से इन्सानी ज़िन्दगी बहाल रह सके, फिर इस अज़ीम नेअ्मत को बिल्कुल आम कर दिया, ख़ुदा की कुदरत पर कुर्बान जाइये! के दुनिया जब से क़ायम हुई है उस वक़्त से पानी इस्तेमाल होता आ रहा है और न जाने कब तक इस्तेमाल होता रहेगा, मगर उस की कुदरत के ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं आई।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — दीनी इल्म हासिल करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "(दीनी) इल्म हासिल करना हर मुसलमान पर फर्ज़ है।"

[इब्ने माजा : २२४, अन अनस बिन मालिक ﵁]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — रुखसत के वक्त मुसाफह करना

रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी को रुखसत फर्माते, तो उस का हाथ अपने हाथ में ले लेते और उस वक्त तक (उस का हाथ) न छोड़ते, जब तक के वह आप ﷺ के हाथ को खुद न छोड़ दे।

[तिर्मिज़ी : ३४४२, अन इब्ने उमर ﵁]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	बेवा और मिस्कीन की मदद करने पर सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "बेवा और मिस्कीनों की जरूरत पूरी करने वाला, अल्लाह के रास्ते के मुजाहिद की तरह या तो दिन में रोज़ा रखने वाले और रात भर नमाज़ पढ़ने वाले की तरह है।"

[बुखारी : ६००६, अन सफ़वान बिन सुलैम ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	पड़ोसी को सताना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "वह आदमी जन्नत में दाखिल न होगा जिस के ज़ुल्म व सितम से उस के पड़ोसी महफ़ूज़ न हो।" (क्योंकि पड़ोसी को सताना हराम है) [मुस्लिम : १७२, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	ऐश व इश्रत से बचना

रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत मुआज़ को जब यमन भेजा तो फ़र्माया के नाज़ व नेअ्मत की ज़िंदगी से बचना इस लिए के अल्लाह के बंदे ऐश व इश्रत करने वाले नहीं होते। [मुस्नदे अहमद : २११११]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	मुजरिमों के खिलाफ आज़ा की गवाही

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : यही वह जहन्नम है, जिस का तुम से वादा किया जाता था, आज तुम अपने कुफ्र की वजह से इस में दाखिल हो जाओ, आज हम उन के मुँह पर मोहर लगा देंगेऔर जो कुछ यह करते थे, उन के हाथ हम से बयान कर देंगे और उन के पाँव उस की गवाही देंगे।

[सूर-ए-यासीन : ६३ ता ६५]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मुनक्का (Black Currant) से पठ्ठे वगैरह का इलाज

हज़रत अबू हिंददारी ؓ कहते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में मुनक्क़ा का तोहफा एक बंद थाल में पेश किया, गया आप ﷺ ने उसे खोल कर इर्शाद फर्माया : बिस्मिल्लाह कह कर खाओ। मुनक़्क़ा बेहतरीन खाना है जो पठ्ठों को मज़बूत करता है, पुराने दर्द को खत्म करता है, गुस्से को ठंडा करता है और मुँह की बदबू को ज़ाइल करता है, बलग़म को निकालता है और रंग को निखारता है।

[तारीखे दिमश्क इब्ने असाकिर : २१/६०]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जब तुम लोगों के दर्मियान फैसला करने लगो, तो अदल व इन्साफ के साथ फैसला किया करो, बेशक अल्लाह तआला जिस बात की तुम को नसीहत करता है यकीन जानो बहुत ही अच्छी है।" [सूर-ए-निसा : ५८]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

१८ रजबुल मुरज्जब

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत हम्ज़ह ﷺ

हज़रत हम्ज़ह ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ के चचा, रज़ाई भाई और मशहूर सहाबी हैं। नुबुव्वत के छटेही साल इस्लाम कबूल किया और रसूलुल्लाह ﷺ का हर तरह साथ दिया। मुश्रिकीने मक्का ने जब रसूलुल्लाह ﷺ और खान्दाने बनी हाशिम को शिअ्बे अबी तालिब में कैद होने पर मजबूर कर दिया था उस वक्त हज़रत हम्ज़ह ﷺ भी आप ﷺ के साथ थे। तमाम मुशकिलात में साथ दिया। उन्होंने मदीना की हिजरत फर्माई, और इस्लाम की अज़ीमुश्शान लड़ाई ग़ज़्व-ए-बद्र में खूब जौहर दिखाए और फिर दूसरे साल ग़ज़्व-ए-उहुद में बड़ी बहादुरी और जांबाज़ी दिखाई, तकरीबन अल्लाह के तीस दुश्मनों को जहन्नम रसीद किया। जंगे उहुद में जब वह शहीद हो गए, तो कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन ने उन का मुस्ला किया यानी जिस्म के मुख्तलिफ हिस्सों को काट डाला और हिंदा ने उन का कलेजा निकाल कर चबाया। रसूलुल्लाह ﷺ को उन की शहादत पर बड़ा रंज व गम हुआ, हुज़ूर ﷺ ने उन्हें सय्यदुश शुहदा (यानी शहीदों के सरदार) और असदुल्लाह (यानी अल्लाह का शेर) का खिताब दिया। उन के वारिसीन में सिर्फ एक छोटी बेटी और बीवी थीं।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हुज़ूर ﷺ के पसीने की खुशबू

हज़रत अनस ﷺ फर्माते हैं : "एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ हमारे यहाँ तशरीफ लाए और कैलूला फर्माया, जब आप ﷺ को पसीना आया, तो मेरी वालिदा एक शीशी लाईं और पसीना पोंछ कर जमा करने लगीं, उस दौरान रसूलुल्लाह ﷺ की आँख खुल गई, आप ﷺ ने पूछा : उम्मे सुलैम ! तुम यह क्या कर रही हो? उन्होंने अर्ज़ किया : मैं आप के पसीने को जमा कर रही हूँ, ताके हम इसे खुशबू के तौर पर इस्तेमाल करें।" [मुस्लिम : ६०५५]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — जमात के साथ नमाज़ अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स नमाज़ के लिए कामिल वुज़ू करता है फ़िर फर्ज़ नमाज़ के लिए चल कर जाता है और लोगों के साथ नमाज़ पढ़ता है या आप ﷺ ने फ़र्माया : जमात के साथ नमाज़ पढ़ता है या फ़र्माया : नमाज़ मस्जिद में अदा करता है, तो अल्लाह तआला उस के गुनाहों को माफ़ फ़र्मा देते हैं।" [मुस्लिम : ५४९, अन उस्मान बिन अफ्फान ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — खाने के बाद की एक खास दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जो खाना खाने के बाद यह दुआ पढ़ेगा उस के अगले पिछले सब गुनाह माफ़ हो जाएँगे :

((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنِیْ هٰذَا الطَّعَامَ وَ رَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ))

तर्जमा : तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने मुझे यह खाना खिलाया और कूव्वत व ताकत के बगैर मुझे यह रिज़्क अता फर्माया। [अबू दाऊद : ४०२३, अन मुआज़ बिन अनस ﷺ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	सूर-ए-वाक़िआ पढना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस शख्स ने सूर-ए-वाक़िआ पढ़ी उस पर फक्र व फ़ाका नहीं आएगा।"

[बैहक़ी फी शोअबिल ईमान : २३९५, अन इब्ने मसऊद رضی اللہ عنہ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	औलाद का क़त्ल गुनाहे कबीरा है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "गुरबत के डर से अपनी औलाद को कत्ल न करो, हम तुम को भी रिज़्क देते हैं और उन को भी।"

[सूर-ए-अनआम : १५१]

खुलासा: रोजी का जिम्मा अल्लाह तआला पर है लिहाजा रोजी की तंगी के डर से बच्चों को मार डालना या हमल गिराना या पैदाइश से बचने की कोई और तदबीर इख्तियार करना जैसा के आज के दौर में हो रहा है बहुत ही बड़ा गुनाह और हराम है।

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	दुनिया आज़माइश के लिए है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "हम ने ज़मीन के ऊपर की तमाम चीजों को ज़मीन के लिए ज़ीनत बनाया है, ता के हम इस के ज़रिये से लोगों का इम्तेहान लें के कौन शख्स इस में ज़ियादा अच्छा अमल करता है।"

[सूर-ए-कहफ : ७]

नंबर (८) : आखिरत के बारे में	जन्नती का ताज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अहले जन्नत के सर पर ऐसे ताज होंगे, जिन का अदना से अदना मोती भी मशरिक व मगरिब के दर्मियान की चीज़ों को रौशन कर देगा।"

[तिर्मिज़ी : २५६२, अन अबी सईद खुदरी رضی اللہ عنہ]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	बीमार के लिए जौ मुफीद है

एक मर्तबा उम्मे मुन्ज़िर ▯ के घर पर रसूलुल्लाह ﷺ के साथ हजरत अली भी खजूर खा रहे थे, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "ऐ अली ! बस करो, इस लिए के तुम अभी कमजोर हो।" उम्मे मुन्ज़िर का बयान है के मैं ने उन के लिए चुकंदर और जौ का खाना तय्यार किया, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ से फर्माया : "ऐ अली ! इस को खाओ, इस लिए के यह तुम्हारे लिए मुफीद तरीन है।"

[अबू दाऊद : ३८५६, अन उम्मे मुन्ज़िर बिन्ते कैस ▯]

फ़ायदा : चुकंदर और जौ बिमार आदमी के लिये बहुत मुफीद हैं और कमज़ोरी को दूर करते हैं।

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम में से कोई पेशाब करने के लिए जाए, तो अपनी शर्म गाह को दाहने हाथ से न छुए और जब पाखाना के लिए जाए, तो सफाई के लिए दाहना हाथ इस्तेमाल न करे और जब पानी पिये तो एक सांस में न पिये।"

[अबू दाऊद : ३१, अन अबी कतादा رضی اللہ عنہ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(१९) रजबुल मुरज्जब

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत हम्ज़ह ﷺ की बीवी और बेटी अम्मारा

हज़रत हम्ज़ह ﷺ की अहलिया का नाम सल्मा बिन्ते उमैस था। इन की बहन अस्मा बिन्ते उमैस हज़रत अली ﷺ के बड़े भाई जाफर बिन अबी तालिब की बीवी थीं; हुज़ूर ﷺ ने इन बहनों के बारे में फर्माया: "यह मोमिन बहनें हैं।" दोनों बहनें इब्तिदाए इस्लाम में मुसलमान हो गई थीं। हज़रत अस्मा अपने शौहर हज़रत जाफर ﷺ के साथ हब्शा हिजरत कर गई थीं, लेकिन हज़रत सल्मा मक्का में अपने शौहर हज़रत हम्ज़ह के साथ रहीं। उन से एक बेटी हज़रत अम्मारा बिन्ते हम्ज़ह हुईं। जंगे उहुद में हज़रत हम्ज़ह ﷺ की शहादत हुई, जब मुसलमान मदीना लौटे तो कमसिन अम्मारा अपने वालिद हज़रत हम्ज़ह से मिलने दौड़ती हुई आई ,जो सामने आता उस से पूछती : मेरे अब्बू कहाँ हैं? सहाबा हज़रत हम्ज़ह ﷺ की दर्दनाक शहादत को याद कर के रो पड़ते, जवाब न दे पाते। यहाँ तक के हज़रत अली ﷺ सामने आ गए, अम्मारा ﷺ ने कहा : भाई जान ! अब्बू कहाँ हैं? हज़रत अली ﷺ ने अम्मारा ﷺ को गोद में उठा लिया, तमाम सहाबा उस बच्ची के यतीम होने पर रोने लगे, चुनांचे हज़रत हस्सान ﷺ ने चंद अश्आर सुना कर बच्ची को तसल्ली दी।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — इन्सान की बनावट

अल्लाह तआला ने इन्सान को बेहतरीन और ख़ुबसूरत अन्दाज़ में ढाल कर हर एक उज़्व को मख़्सूस अन्दाज़ में फ़िट कर के किसी न किसी ख़ूबी का हामिल बनाया, आँखों में देखने की सलाहिय्यत, तो कानों में सुनने की कुव्वत, जहाँ हाथों में खाने पीने और पकड़ने की ताक़त वहीं पाँव में चलने की कुव्वत और दिल व दिमाग में सोचने की सलाहिय्यत, यहाँ तक के मेअ्दे को गिज़ा हज़्म करने की सलाहिय्यत दी। यक़ीनन यह कुदरत की बहुत बड़ी नेमत है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — कुर्आन मजीद पर ईमान लाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो ! अल्लाह की ज़ात, उस के रसूल और उस की किताब (यानी कुर्आन) पर ईमान लाओ, जिस को अल्लाह ने अपने रसूल पर नाज़िल फर्माया है और उन किताबों पर भी (ईमान लाओ) जो उन से पहले नाज़िल की जा चुकी हैं।" [सूर-ए-निसा : १३६]

फ़ायदा : कुर्आने करीम को अल्लाह तआला की उतारी हुई किताब समझना और उस के हर्फ ब हर्फ सही होने का यकीन रखना फर्ज़ है ।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — सफर से वापसी का सुन्नत तरीका

रसूलुल्लाह ﷺ सफर से वापस आने के बाद पहले मस्जिद जाकर दो रकात नमाज अदा करते और लोगों से मुलाकात फर्माते (फिर उस के बाद घर तशरीफ ले जाते।)

[अबू दाऊद : २७७३, अन कअब बिन मालिक ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | **मुसलमान की ज़रूरत पूरी करना**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स किसी मुसलमान की कोई तकलीफ व परेशानी दूर करेगा, तो इस अमल की वजह से अल्लाह तआला कयामत के दिन उस की तकालीफ और परेशानियों को दूर कर देगा और जो शख़्स अपने मुसलमान भाई का ऐब छुपाएगा, अल्लाह तआला कयामत के रोज़ उस के ऐब को छुपाएगा।"

[मुस्लिम : ६५७८, अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | **किसी गुनाह पर राज़ी रहना भी गुनाह है**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब रुए ज़मीन पर कोई गुनाह का काम किया जाए और वहाँ मौजूद लोग उस को ना पसंद करते हों तो वह लोग उस आदमी के हुक्म में हैं जो वहां पर मौजूद नहीं और जो लोग वहां मौजूद नहीं लेकिन वह उस गुनाह पर खुश होते हैं तो वह लोग उस आदमी के मानिंद है जो वहां पर मौजूद है (यानी उन को गुनाह होगा)।"

[अबू दाऊद : ४३४५, अन उर्स बिन अमीरा ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | **दुनिया और आखिरत का मज़ा**

हज़रत अबू मालिक अशअरी ؓ की जब वफात का वक्त करीब आया तो फर्माया: ऐ लोगो ! तुम दूसरों को यह बात पहुँचा देना के मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह फर्माते हुए सुना के दुनिया की मिठास आखिरत की कड़वाहट है और दुनिया की कड़वाहट आखिरत की मिठास है।

[मुसनदे अहमद : २२३९२]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | **खास बंदों के इनामात**

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता : हाँ जो अल्लाह के खास बंदे हैं, उन के लिए मुकर्रर शुदा रोज़ी है, यानी हर किस्म के मेवे हैं, और वह बड़े इकराम के साथ नेअ्मत के बागों में (शाही) तख़्तों पर एक दूसरे के सामने बैठे होंगे। उन अहले जन्नत के सामने लतीफ शराब के जाम पेश किए जाएँगे जिस का रंग सफेद और पीने वालों के लिए निहायत लज़ीज होगी, न उस से दर्दे सर होगा और न अक्ल में फुतूर आएगा।

[सूर-ए-साफ्फात : ४० ता ४७]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | **घेकवार और राई के फवाइद**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "दो कड़वी चीज़ों में किस कद्र शिफा है ! (यानी) घेकवार (एल्वा) और राई में।"

[सुननुल कुब्रा लिल बैहकी : ९/३४६, अन कैस इब्ने राफेअ अशजई ؓ]

फ़ायदा : घेकवार चेहरे पर लगाने से उस को निखारता है, जिल्द की खुशकी को दूर करता है, सर पर लगाने से बाल उगाता है, जले और कटे हुए निशानात को दूर करता है, इस के इसतेमाल करने से शूगर के मरीज़ को आफियत होती है। राइ का तेल दिमाग को कुव्वत बख्शता है, मालिश करने से जिस्म में चुसती पैदा करता है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : ऐ ईमान वालो ! तुम अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करो, और (शरीअत के मुताबिक फैसला करने वाले) हाकिमों की भी इताअत करो।

[सूर-ए-निसा : ५९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(२०) रजबुल मुरज्जब

नंबर (१): इस्लामी तारीख | हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब ﵁

हज़रत अब्बास ﵁ नबी-ए-करीम ﷺ के सगे चचा हैं और उम्र में आप ﷺ से सिर्फ़ दो साल बड़े हैं। रसूलुल्लाह ﷺ से उन को बेहद मुहब्बत थी और मुसलमान होने से पहले भी वह हुज़ूर ﷺ की मदद किया करते थे। हज़रत अबूज़र ﵁ को कुफ़्फ़ार जब तकलीफ़ पहुंचा रहे थे तो हज़रत अब्बास ﵁ ने ही बचाया था। उन्हों ने गज़्वा-ए-बद्र के फ़ौरन बाद इस्लाम कबूल किया। बाज़ का कहना है के हिजरत से पहले ही इस्लाम कबूल कर लिया था मगर अपने इस्लाम को छुपाए रखा और मक्का से मुशरिकों की खबरें हुज़ूर ﷺ के पास भेजते रहे। रसूलुल्लाह ﷺ की बड़ी इज़्ज़त और इकराम किया करते थे। एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ ने उन के बारे में फ़र्माया : "ऐ लोगो ! जिस ने मेरे चचा को तकलीफ़ पहुँचाई उस ने मुझे तकलीफ़ पहुँचाई, इस लिए के हर शख्स का चचा उस के बाप के मिस्ल होता है।" हज़रत अब्बास ﵁ की वफ़ात हज़रत उस्मान ﵁ के दौरे खिलाफ़त में ८२ साल की उम्र में जुमा के दिन १२ रजब सन ३२ हिजरी में हुई और जन्नतुल बकी में दफ़्न हुए हज़रत उस्मान ﵁ ने नमाज़े जनाज़ह पढ़ाई।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा | खिलाफते राशिदह की मुद्दत की पेशीन गोई

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: मेरे विसाल के बाद खिलाफते राशिदह तीस बरस रहेगी, फिर बादशाही हो जाएगी, चुनांचे आप ﷺ की पेशीन गोई के मुताबिक यह तीस साल की मुद्दत हज़रत अली ﵁ की खिलाफ़त तक चली, फिर उस के बाद बादशाहत का दौर शुरु हो गया। [तिर्मिज़ी : २२२६, अन सफीना ﵁]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म देना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : आप अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म करते रहिये और खुद भी नमाज़ के पाबंद रहिये, हम आप से रोज़ी तलब नहीं करते, रोज़ी तो आप को हम देंगे और अच्छा अन्जाम तो परहेज़गारी ही है। [सूर-ए-ताहा : १३२]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | दावत खाने के बाद क्या पढ़े

रसूलुल्लाह ﷺ ने दावत के मौके पर यह दुआ पढ़ी : ((اَللّٰهُمَّ اَطْعِمْ مَنْ اَطْعَمَنِىْ وَاسْقِ مَنْ سَقَانِىْ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! जिस ने हमें खिलाया तू उस को खिला, जिस ने हमें पिलाया तू उस को पिला। [मुस्लिम : ५३६२, अन मिकदाद ﵁]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | अज़ान और सफे अव्वल का सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अगर लोगों को मालूम हो जाए के अज़ान देने में और सफे अव्वल में कितना सवाब है, तो वह सफे अव्वल और अज़ान देने के लिए तलवारों से मुकाबला कर के आगे बढ़ने के लिए कोशिश करने लगें।" [बुखारी : ६१५, अन अबी हुरैरह ﵁]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | अहेद तोड़ने वालों का अन्जाम

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है: जो लोग अल्लाह से पुख़्ता अहेद करने के बाद तोड़ डालते हैं और जिन तअल्लुकात के जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया है, उन को तोड़ते है और ज़मीन में फसाद फैलाते हैं, उन्हीं लोगों पर अल्लाह की फिटकार होगी और आखिरत में उन के लिए बड़ी खराबी होगी।

[सूर-ए-रअ्द:२५]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनियवी ज़िंदगी की मिसाल

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल ऐसी है जैसा के हम ने आस्मान से पानी बरसाया हो फिर उस की वजह से ज़मीन के पेड़ पौदे पैदा हो कर खूब गुंजान हो गए हों (फिर यह किसी हादसे का शिकार हो कर) रेज़ा रेज़ा हो जाए के उस को हवा उड़ाए फिरती हो।"

[सूर-ए-कहफ : ४५]

फ़ायदा : जिस तरह पानी बरसने की वजह से ज़मीन के पेड़ पौदे खूब हरे भरे हो जाते हैं, फिर किसी आफत का शिकार हो कर सब खत्म हो जाता है, इसी तरह दुनियवी ज़िंदगी है, के आज सब कुछ मौजूद है और जब मौत आएगी, तो कुछ भी बाकी नहीं रहेगा।

नंबर (८): आखिरत के बारे में | दोज़खी के होंट

हज़रत अबू सईद ﷺ से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने ((وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ)) की तफसीर में फर्माया: "दोज़ख की आग चेहरों को ऐसा भून देगी के दोज़खी का ऊपर का होंट ऊपर को चढ़ जाएगा, यहाँ तक के सर के दर्मियान तक जा पहुँचेगा और उस का नीचे का होंट लटक जाएगा यहाँ तक के वह दोज़खी की नाफ तक पहुँच जाएगा।"

[तिर्मिज़ी : २५८७, अन अबी सईद खुदरी ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | सफर जल (Pear) के फ़वाइद

हज़रत तल्हा ﷺ फर्माते हैं के मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप ﷺ के दस्ते मुबारक में एक सफर जल (बही) था, फिर आप ﷺ ने फर्माया : "तल्हा ! इसे लो क्योंकि यह दिल को सुकून पहुँचाता है।"

[इब्ने माजा : ३३६९]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "औरतों के सिलसिले में वसिय्यत कबूल करो, इस लिए के औरत बदन की नाज़ुक और टेढ़ी पसली से पैदा की गई है, अगर तुम उस को सीधा करने की कोशिश करोगे, तो टूट जाएगी और अगर तुम उस को उस की हालत पर छोड़ दोगे, तो वह और ज़ियादा टेढ़ी हो जाएगी।" (यानी औरतों के साथ न ज़ियादा सख्ती करो और न ज़ियादा नर्मी करो)

[मुस्लिम : ३६४४, अन अबी हुरैरह ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(२१) रजबुल मुरज्जब

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ के चचा ज़ाद भाई हैं। आप ﷺ की विलादत हिजरत से तीन साल कब्ल मक्का मुकर्रमा में हुई और फतहे मक्का से पहले अपने वालिद अब्बास ﷺ और वालिदा उम्मे फ़ज़्ल ﷺ के साथ मदीना तय्यबा हिजरत की, रसूलुल्लाह ﷺ की वफ़ात के वक्त उन की उम्र सिर्फ़ तेरह साल की थी, इस लिए उन को हुज़ूर ﷺ की सोहबत से फ़ायदा उठाने का ज़ियादा मौका न मिल सका, मगर हुज़ूर ﷺ की दुआ और इल्म की तलब ने उन की इस कमी को पूरा कर दिया, रसूलुल्लाह ﷺ ने आप ﷺ के बारे में फ़र्माया : "ऐ अल्लाह ! इन को दीन की समझ अता फ़र्मा।" इसी दुआ का नतीजा था के बड़े बड़े सहाब-ए-किराम ﷺ आप ﷺ को हिबरुल उम्मह, तर्जमानुल कुर्आन, बहरुल इल्म और इमामुत्तफ़्सीर जैसे अल्फ़ाज़ से याद करते थे, हज़रत उमर ﷺ भी मुश्किल मसाइल को हल करने के लिए उन को बुलाते और उन के मश्वरे को कबूल फ़र्माते, उन की वफ़ात सन ८६ हिजरी में ताइफ़ में हुई।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — चमगादड़

अल्लाह तआला ने दुनिया में मुख्तलिफ़ किस्म के जानवर पैदा किए, उन्हीं में से एक उड़ने वाला जानवर चमगादड़ है; उसे दिन के मुकाबिल रात में ज़ियादा नज़र आता है, अल्लाह तआला ने उस के अंदर यह खासियत रखी है, के वह इन्सानों की तरह हँसती है, उस की मादा अंडे देने के बजाए जानवरों कि तरह बच्चे देती है और अपने बच्चों को दूध पिलाती है; हैरत की बात यह है के अपने बच्चों को मुँह में ले कर उड़ती रहती है और उसी दौरान दूध भी पिलाती रहती है, यह अल्लाह तआला की कुदरत है, जिस नेअजीब व गरीब जानवर पैदा फ़र्माया।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : हम ने इन्सान को अपने माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म दिया है, उस की माँ ने बड़ी मशक्कत के साथ पेट में रखा और बड़ी तकलीफ के साथ उस को जना है। [सूर-ए-अहकाफ़ : १५]

फ़ायदा : औलाद को चाहिए के अपने माँ बाप की खिदमत करे और उन के हुक्म की तामील करे, हां अगर शरीअत के खिलाफ कोई हुक्म दें तो उस को न करे।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — हर अच्छे कामों को दाहनी तरफ से करना

हज़रत आयशा ﷺ फर्माती हैं : रसूलुल्लाह ﷺ को जूता पहनना, कंघी करना, तहारत हासिल करना और अपने तमाम (अच्छे) कामों को दाहनी तरफ से शुरु करना पसंद था। [बुखारी : १६८]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	तिलावते कुर्आन में मशक्कत उठाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स कुर्आन शरीफ़ को अटक अटक कर पढ़ता है और उस में मशक्कत उठाता है, उस के लिए दोहरा अज्र है।" [मुस्लिम : १८६२, अन आयशा رضي الله عنها]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	इज़ार या पेंट टखने से नीचे पहनना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स तकब्बुर (और फैशन) के तौर पर अपने इज़ार को टखने से नीचे लटकाएगा, अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस की तरफ रहमत की नज़र से नहीं देखेगा।"

[बुखारी : ५७८८, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया खोल दी जाएगी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अनकरीब दुनिया की दौलत तुम पर खोल दी जाएगी, यहां तक के तुम अपने घरों को इस तरह आरास्ता करोगे जैसे काबा शरीफ को आरास्ता किया जाता है।"

[तबरानी कबीर : १७७३०, अन अबी जुहैफ़ा رضي الله عنه]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	क़यामत कैसे आएगी?

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : (क़यामत के दिन) सूर फूंका जाएगा, जिस से तमाम आस्मान व ज़मीन वालों के होश उड़ जाएंगे मगर जिस को खुदा चाहे (वह बेहोशी से महफूज़ रहेगा) फिर उस सूर में दोबारा फूंक मारी जाएगी, तो यकायक सब के सब खड़े हो कर (तअज्जुब से हर तरफ) देखने लगेंगे। [सूर-ए-ज़ुमुर : ६८]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	ज़ुकाम का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम लोग मरज़न्जूश को सुंघा करो क्योंकि यह ज़ुकाम के लिए मुफीद है।" [कन्ज़ुल उम्माल : १७३४१]

फ़ायदा: अल्लामा इब्ने कय्यिम رحمه الله फर्माते हैं के इस की खुश्बु ज़ुकाम की बंदिश को खोल देती है। इस से जमा हुआ नज़्ला पतला हो कर बह जाता है और फेफड़ों पर जमा हुआ बल्ग़म निकल जाता है नीज़ इस में दूसरे भी बहुत से फवाइद हैं। [तिब्बे नब्वी]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : ऐ ईमान वालो ! इन्साफ पर मज़बूती से कायम रहो और अल्लाह तआला के लिए सच्ची गवाही दो, अगरचे यह गवाही खुद तुम्हारे या तुम्हारे माँ बाप या रिश्तेदारों के खिलाफ ही क्यों न हो। [सूर-ए-निसा : १३५]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ के इल्म हासिल करने का शौक

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास ﷺ के अंदर इल्म हासिल करने का शौक कूट कूट कर भरा हुआ था। वह अपने ज़ौक व शौक का हाल खुद बयान फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ के इन्तेकाल के बाद मैं ने एक अन्सारी सहाबी ﷺ से कहा : "आज सहाबा ﷺ की बड़ी जमात मौजूद है आओ उन से पूछ पूछ कर कुर्आन व हदीस जमा कर लें।" वह हिम्मत न कर सके, मगर मैं इल्म हासिल करने के पीछे पड़ गया। मैं एक एक के पास जाता और उन से इल्म हासिल करता, अगर वह लोग अपने घर में आराम कर रहे होते, तो मैं उन के दरवाज़े की चौखट पर सर रख कर लेट जाता और हवा की वजह से मिट्टी मुझ पर पड़ती रहती। वह सहाबी ﷺ जब आराम से फ़ारिग हो कर बाहर आते तो मैं उन से इल्म हासिल करता, वह कहते : आप तो हुज़ूर ﷺ के चचा ज़ाद भाई हैं, मुझे क्यों न बुला लिया? मैं कहता : मैं तालिबे इल्म हूँ इस लिए मेरा आप के पास आना ज़ियादा मुनासिब है, इस तरह तफ़सीर व हदीस का बहुत बड़ा ज़खीरा मैं ने जमा कर लिया और लोग मेरे पास इल्म हासिल करने के लिए आने लगे।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — थोड़े से तोशे में बरकत

गज़्व-ए-तबूक में (जब सामाने खुराक खत्म हो गया और) लोगों को भूक ने सताया, तो आप ﷺ ने चमड़े का बड़ा दस्तरख्वान तलब फर्माया; चुनांचे वह बिछा दिया गया, फिर आप ﷺ ने लोगों से उन का बचा खुचा सामाने खुराक मंगवाया, पस कोई आदमी एक मुठ्ठी चना के दाने ही लिए आ रहा है, कोई एक मुठ्ठी खजूरें ला रहा है और कोई रोटी का एक टुकड़ा ही लिए चला आ रहा है, यहाँ तक के दस्तरख्वान पर थोड़ी सी मिकदार में यह चीज़ें जमा हो गईं, फिर आप ﷺ ने बर्कत की दुआ फर्माई, उस के बाद फर्माया : अब तुम सब इस में से अपने अपने बरतनों में भर लो, चुनांचे सब ने अपने अपने बरतन भर लिए फिर सब ने खाया, यहाँ तक के खूब सैर हो गए, और कुछ बच भी गया। [मुस्लिम : १३९]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — दाढ़ी रखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मूँछों को कतरवाओ और दाढ़ी को बढ़ाओ।"

[बुखारी : ५८९३, अन इब्ने उमर ﷺ]

फ़ायदा : दाढ़ी इस्लामी शिआर में से है और दाढ़ी रखना शरीअत में वाजिब है, इस लिए मुसलमानों पर दाढ़ी रखना ज़रुरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — परेशानी दूर करने की दुआ

जब परेशान कुन हालात हों तो यह दुआ पढ़ें :

﴿ وَأُفَوِّضُ أَمْرِي إِلَى اللّٰهِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۝ ﴾

तर्जमा : मैं ने अपने तमाम हालात को अल्लाह के हवाले किया, अल्लाह तआला अपने बन्दों का निगहबान है। [सूर-ए-मोमिन : ४४]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	नमाज़े अस्र से पहले चार रकात अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जो शख़्स नमाज़े अस्र से पहले चार रकात (सुन्नतें) अदा करे, तो अल्लाह तआला उस के बदन को दोज़ख पर हराम कर देते हैं।

[अल मुअजमुल कबीर लित्तबरानी : ११९०५, अन उम्मे सलमा ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	राहे खुदा से हट कर ज़िन्दगी गुज़ारना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो लोग (अपनी ख्वाहिशात की पैरवी कर के) अल्लाह तआला के रास्ते से भटकते है, उन के लिये सख्त दर्दनाक अज़ाब है, इस लिये के वह हिसाब के दिन को भूले हुए हैं।

[सूर-ए-साद: २६]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	ना फर्मान कौमों की हलाकत की वजह

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : हम ने ऐसी कितनी बस्तियों को हलाक कर डाला, जिन के रहने वाले अपने सामाने ऐश पर फख्र किया करते थे, अब उन के यह मकानात पड़े हुए हैं, जिन को हलाक होने के बाद से अब तक बसना नसीब नहीं हुआ, मगर बहुत थोड़ी देर के लिए, आखिर कार हम ही उन के वारिस हुए।

[सूर-ए-क़सस: ५८]

फ़ायदा : आयत से मालूम हुवा के दुनिया के साज़ व सामान पर नहीं इतराना चाहिये, क्योंकि अल्लाह तआला उस को कभी भी हम से छीन सकते हैं, जैसे के हम से पहले कितने ही आलीशान मकानात को तबाह कर दिया और आज उस का नाम व निशान भी बाक़ी नहीं है।

नंबर (८): आखिरत के बारे में	अदना दर्जे का जन्नती

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अदना दर्जे का जन्नती वह शख़्स होगा जिस के लिए अस्सी हज़ार खिदमत गुज़ार होंगे और बहत्तर बीवियाँ होंगी और एक मोती ज़बरजद और याकूत से बना हुआ खेमा होगा, जिस की लमबाई मक़ामे जाबिया से मक़ामे सनआ के मानिंद होगी।"

[तिर्मिज़ी : २५६२, अन अबी सईद खुदरी ؓ]

नंबर (९): कुर्आन से इलाज	शहद के फवाइद

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है ﴿يَخْرُجُ مِنْ بُطُونِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ﴾

तर्जमा : उन मक्खियों के पेट से पीने की चीज़ निकलती है जिस के रंग मुख्तलिफ होते हैं उस में लोगों के लिए शिफा है।

[सूर-ए-नहल : ६९]

फ़ायदा : शहद एक ऐसी कुदरती नेअ्मत है जो मुकम्मल दवा और भरपूर गिज़ा भी है जो हर शख़्स और हर उम्र वाले के लिए बेहद मुफीद है, खुसुसियत से सुबह सुबह नहार मुँह इस का इस्तेमाल बड़ी बड़ी बीमारियों से हिफाज़त का ज़रिया है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा : या रसूलल्लाह ﷺ! मैं अपने खादिम को कितनी बार माफ़ करूँ? तो रसूलुल्लाह ﷺ खामोश रहे कोई जवाब नहीं दिया, फिर जब उस ने दूसरी बार पूछा, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : हर दिन सत्तर मर्तबा माफ़ करो। [तिर्मिज़ी : १९४९, अन अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२३) रजबुल मुरज्जब

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत जाफर बिन अबी तालिब ﵁

हज़रत जाफर की शक्ल व सूरत हुज़ूर ﷺ जैसी थी, वह हज़रत अली ﵁ के हकीकी बड़े भाई और जनाब रसूलुल्लाह ﷺ के चचा ज़ाद भाई हैं और हज़रत हम्ज़ह ﵁ के हम ज़ुल्फ (साढू) हैं। हज़रत अबू तालिब की मआशी कमज़ोरी की वजह से हज़रत जाफर ﵁ की पर्वरिश हज़रत अब्बास ﵁ ने की। हज़रत जाफर ﵁ और उन की बीवी अस्मा बिन्ते उमैस दोनो शुरू ज़माने ही में हज़रत अबू बक्र ﵁ के हाथ पर मुसलमान हुए, यह वह ज़माना था के अभी हुज़ूर ﷺ ने मुसलमानों को दारेअरकम में जमा करने का सिलसिला शुरु नहीं किया था। दोनों मियाँ बीवी ने हब्शा और मदीना दोनो की हिजरत की। हज़रत जाफर तय्यार हब्शा हिजरत करने वाले सहाब-ए-किराम के अमीरे जमात थे। हब्शा की हिजरत के मौके पर आप ﵁ ने ही नजाशी के दरबार में ऐसी पुर असर तकरीर की के बादशाह के दिल में इस्लाम की हक्कानियत बैठ गई और उस ने मुसलमानों के साथ एजाज़ व इकराम का मामला फर्माया और कुफ्फारे मक्का के वफ्द को ज़िल्लत के साथ मक्का वापस होना पड़ा, कुछ दिनों बाद बादशाहे हब्शा नजाशी ने हज़रत जाफर ﵁ के हाथ पर इस्लाम कबूल कर लिया।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — दिमाग़ी कुव्वत

अल्लाह तआला ने इन्सान को दिमाग़ जैसी अज़ीम नेमत अता फ़र्माई है और उस में सोचने, समझने और बहुत सी बातों को याद रखने की सलाहियत रखी है, जिस की वजह से इस छोटे से दिमाग़ में दीन और दुनिया से मुतअल्लिक बे शुमार बातें महफ़ूज़ रहती हैं और वह उसे ज़रूरत के वक्त बहुत काम आती हैं। अगर अल्लाह तआला इन्सान को दिमाग़ के अन्दर महफ़ूज़ रखने की कुव्वत से न नवाज़ता, तो कितनी परेशानी होती। वाक़ई अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत से दिमाग़ में सोचने, समझने और याद रखने की कुव्वत पैदा फ़र्मा कर इन्सान पर बड़ा एहसान फ़र्माया है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — इशा की नमाज़ की अहेमियत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस शख्स ने इशा की नमाज़ जमात के साथ पढ़ी गोया उस ने आधी रात इबादत की और जिस ने फ़ज्र की नमाज़ जमात से पढ़ ली गोया उस ने सारी रात इबादत की।"

[मुस्लिम : १४९१, अन उस्मान बिन अफ्फान ﵁]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — खाने में ऐब न लगाना

हज़रत अबू हुरैरह ﵁ ने फर्माया : रसूलुल्लाह ﷺ खाने में ऐब न लगाते; अगर चाहते, तो उस को खा लेते और अगर उस को ना पसंद फर्माते, तो छोड़ देते। [बुखारी : ५४०९]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | मोमिन की मदद का मीठा फल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स किसी मोमिन को भूक के वक्त खाना खिलाए, अल्लाह तआला उस को क़यामत के दिन जन्नत के फलों में से खिलाएगा और जो शख़्स किसी मोमिन को प्यास के वक्त पानी पिलाएगा, तो अल्लाह तआला उस को खालिस शराब पिलाएगा और जो शख़्स किसी मोमिन को कपड़े न होने के वक्त कपड़े पहनाएगा, तोअल्लाह तआला जन्नत के सब्ज़ कपड़े पहनाएगा।"

[तिर्मिज़ी : २४४९, अन अबी सईद खुदरी ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | ज्योतिश की बातों पर यकीन करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो आदमी काहिन (ज्योतिश) के पास जाए और उस की कही हुई बात को सच्ची समझे, तो वह आदमी शरीअते मुहम्मदिया से हट गया।"

[अबू दाऊद : ३९०४, अन अबी हुरैरह ؓ]

फ़ायदा : किसी काहिन (ज्योतिश) के पास जा कर आइंदा की बातें मालूम करना और उस पर यक़ीन करना ना जाइज़ और हराम है, मुसलमनों को इस से बचना चाहिये।

नंबर (७): दुनिया के बारे में | लोगों का दुनिया की फिक्र करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "आखिर ज़माने में एक कौम ऐसी होगी जो मस्जिदों में हल्के लगा कर बैठेगी और उन के सामने दुनिया होगी (यानी दुनिया का तज़किरा और उसी की फिक्र में मुनहमिक होंगे) तो तुम ऐसे लोगों के साथ न बैठना, इस लिए के अल्लाह तआला को ऐसे लोगों की कोई जरुरत नहीं।"

[अलमुअ्जमुल कबीर : १०३००, अन इब्ने मसऊद ؓ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | अहले जन्नत का इकराम

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : अहले जन्नत के सामने सोने की प्लेट और जाम पेश किए जाएँगे और जन्नत में उन्हें दिलों की चाहत और आँखों की लज़्ज़त के मुताबिक हर एक चीज़ मिलेगी।

[सूर-ए-ज़ुख़रुफ़ : ७१]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | सन्तरे के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम लोग सन्तरे को इस्तेमाल किया करो, क्यों कि यह दिल को मज़बूत बनाता है।"

[कन्ज़ुल उम्माल : २८२५३]

फ़ायदा : मुहद्दिसीन तहरीर फर्माते हैं के इस का जूस पेट की गन्दगी को दूर करता है, क़ै और मतली को खत्म करता है और भूक बढ़ाता है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : यतीम के माल के करीब भी मत जाओ, मगर ऐसे तरीके से जो शरई तौर पर दुरुस्त हो, यहाँ तक के वह अपनी जवानी की मंज़िल को पहुँच जाए और नाप तोल इन्साफ से पूरा करो और हम किसी शख़्स को उस की ताकत से ज़ियादा अमल करने का हुक्म नहीं देते।

[सूर-ए-अन्आम : १५२]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२४) रजबुल मुरज्जब

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत जाफर ﷺ की मदीना में आमद

हज़रत जाफर ﷺ अपनी बीवी हज़रत अस्मा ﷺ बिन्ते उमैस के साथ हब्शा में तकरीबन चौदा साल रहे और सन ७ हिजरी में वह उस वक्त मदीना पहुँचे, जब हुज़ूर ﷺ खैबर फतह कर के तशरीफ लाए थे। रसूलुल्लाह ﷺ को इन के आने पर बेहद खुशी हुई हुज़ूर ﷺ ने उन्हें अपने सिने से लगाया और पेशानी को बोसा दिया और फर्माया : मैं नही कह सकता के मुझे जाफर ﷺ के आने की ज़ियादा खुशी है या फतहे खैबर की। अभी चंद ही दिन हज़रत जाफर ﷺ मदीना में ठहरे थे के हुज़ूर ﷺ ने उन्हें गज़व-ए-मूता में रवाना किया, जहाँ रुम के बादशाह ने मुसलमानों पर हमला करने के लिये एक लाख फौज भेजी, मुसलमानों की जमात में सिर्फ तीन हज़ार आदमी थे। इन तीन हज़ार नेअल्लाह पर भरोसा कर के मुकाबला किया और अल्लाह ने फतह दी। मारिका शुरु होने से पहले हज़रत जाफर ﷺ ने चंद अशआर पढ़े जिन का तर्जमा यह है : जन्नत का कुर्ब, उस की पाकीजा और ठंडी शराब कितनी अच्छी है, रुम निशाने पर है और उस की तबाही करीब आ चुकी है, वह गुमराही में भटक रहा है और उस की नसल अनकरीब खतम होने वाली है, उन से जब हमारा मुकाबला होगा, तो हम उन की गरदनें उड़ा देंगे। गज़व-ए-मूता सन ८ हिजरी में हुआ और उसी में हज़रत जाफर ﷺ शहीद हो गए।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — किसरा की हुकूमत के मुतअल्लिक पेशीनगोई

हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ फर्माते हैं के जब किसरा के बादशाह ने रसूलुल्लाह ﷺ के खत मुबारक को फाड़ दिया, तो आप ﷺ ने पेशीन गोई फर्माई, के किसरा ने (खत फाड़ कर) अपने मुल्क को टुकड़े टुकड़े कर दिया, (चुनांचे किसरा की हुकूमत जो उस वक्त सूपर पावर समझी जाती थी, ज़मान-ए-नुबुव्वत ही में टुकड़े टुकड़े हो गई और हुज़ूर ﷺ की पेशीन गोई सच्ची साबित हुई)। [बुखारी : ६४]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — गुस्ल के लिए तयम्मुम करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अगर तुम बीमार हो जाओ, या सफर में हो या तुम में से कोई शख्स अपनी तबई ज़रुरत (यानी पेशाब पाखाना कर के) आया हो, या अपनी बीवी से मिला हो और तुम पानी (के इस्तेमाल पर) ताकत न रखते हों, तो ऐसी हालत में तुम पाक मिट्टी का इरादा करो (यानी तय्यमुम कर लो)।" [सूर-ए-माइदा : ६]

फायदा: अगर किसी पर गुस्ल करना फ़र्ज़ हो जाए और पानी इस्तेमाल करने की ताकत न रखे, तो ऐसी सुरत में गुस्ल के लिए तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ है और गुस्ल के लिए तयम्मुम का तरीका वही है, जो वुज़ू के लिए तयम्मुम का तरीका है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — दस्तरख्वान उठाने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ जब अपने दस्तरख्वान को उठा लेते तो फर्माते :

((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَّلَا مُوَدَّعٍ وَّلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا))

तर्जमा : तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं ऐसी तारीफ़ जो बहुत ज़ियादा पाकीज़ा और बा बरकत हो, न उस पर किफायत की गई हो न उसे छोड़ी गई, न उस से बे परवाही की गई। ऐ हमारे पर्वरदिगार!

[बुखारी : ५४५८, अन अबी उमामा ﷺ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | बेटी व बहन के साथ भलाई करने वाला

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया :जिस शख़्स की तीन बेटियाँ, तीन बहनें, या दो बेटियां, दो बहनें हों और उन के साथ अच्छा सुलूक करे और उन के (हुकूक के) बारे में अल्लाह तआला से डरे, तो उस के लिए जन्नत है ।

[तिर्मिज़ी : ११९६, अन अबी सईद खुदरी ﷺ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में | बुरे कामों की सज़ा

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : जो लोग यह चाहते हैं के मुसलमानों में बेहयाई की बातों का चर्चा हो, तो उन के लिए दुनिया व आखिरत में दर्दनाक अज़ाब होगा और (ऐसे फित्ना करने वालों को) अल्लाह तआला खूब जानता है तुम नहीं जानते ।

[सूर-ए-नूर : १९]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में | दुनिया की ज़ाहिरी हालत धोका है·

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "यह लोग सिर्फ दुनयवी ज़िंदगी की ज़ाहिरी हालत को जानते हैं और यह आखिरत से बिलकुल गाफिल हैं।" (यानी इन्सान सिर्फ दुनिया की चीज़ों को जानते हैं और उसी को हासिल करने की फिक्र में लगे रहते हैं, उन्हें पता ही नहीं है के उस के बाद दूसरी ज़िंदगी आने वाली है और वह हमेशा हमेश की ज़िंदगी है, लिहाज़ा दुनिया में लगने के बजाए आखिरत की तैयारी में मशगूल रहना चाहिए)

[सूर-ए-रूम : ७]

नंबर (८) : आखिरत के बारे में | दोज़ख के साँप

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "दोज़ख में बड़ी लम्बी गर्दनों वाले ऊँटों के बराबर साँप हैं; उन में से एक साँप डसेगा, तो दोज़खी चालीस साल तक उसकी जलन महसूस करेगा।"

[मुसनदे अहमद : १७२६०, अन अब्दुल्लाह बिन हारिस ﷺ]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज | राई के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम लोग राई का इस्तेमाल किया करो, क्यों कि इस में अल्लाह तआला ने हर बीमारी से शिफ़ा रखी है।"

[जामेउस सगीर लिस्सुयूती :२६२, अन अबी हुरैरह ﷺ]

फ़ायदा : राई का तेल बालों में मज़बुती पैदा करता है और उस की सफेदी को रोकता है और जिल्द में नर्मी पैदा करता है।

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : अल्लााह तआला फर्माते हैं के ऐ इब्ने आदम ! तू मेरी इबादत के लिए फारिग हो जा, मैं तेरे सीने को दुनिया की बेरगबती से भर दूँगा और तेरे फ़क्र के दरवाज़े को बंद कर दूँगा, वरना तो फिर मैं तेरे हाथों को मशगूल कर दूँगा और तेरे फ़क्र के दरवारज़े को बंद नहीं करुगाँ।

[तिर्मिज़ी : २४६६, अन अबी हुरैरह ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(२५) रजबुल मुरज्जब

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत ज़ैद बिन हारिसा ﷺ

हज़रत ज़ैद बिन हारिसा ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ के मुतबन्ना (मुँह बोले बेटे) हैं बचपन में एक मर्तबा आप ﷺ अपनी वालिदा के साथ एक काफले में कहीं सफर पर जा रहे थे के डाकूओं ने माल लूट लिया और बच्चों को गुलाम बना लिया और उन्हें मक्का में लाकर फरोख्त कर दिया, उन गुलामों में से हज़रत ज़ैद को हकीम बिन हिज़ाम ने खरीद कर अपनी फूफी खदीजा ﷺ को दे दिया। जब रसूलुल्लाह ﷺ का निकाह हजरत खदीजा ﷺ से हुआ, तो उन्होंने यह गुलाम बतौर तोहफा हुज़ूर ﷺ को दे दिया, उस वक्त उन की उम्र तकरीबन आठ साल की थी। हज़रत ज़ैद के वालिद और चचा उन को तलाश करते करते मक्का पहुँचे और हुज़ुर ﷺ से हज़रत ज़ैद ﷺ को माँगा। हुज़ूर ﷺ ने फर्माया : अगर वह तुम्हारे साथ जाना चाहे तो मुझे कोई एतेराज़ नहीं और अगर न जाना चाहे, तो मैं ऐसे शख्स पर ज़बरदस्ती नहीं कर सकता। हज़रत ज़ैद ﷺ ने अपने बाप और चचा के मुकाबले में हुज़ुर ﷺ के साथ रहना पसंद किया और बाप के साथ जाने से इन्कार कर दिया। सन ८ हिजरी ग़ज़वा-ए- मूता में हज़रत ज़ैद ﷺ शहीद हुए।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — गिरगिट

अल्लाह तआला ने गिरगिट के अंदर अजीब व गरीब बात रखी है, यह पूरे दिन सूरज की रौशनी में रहता है और उस से गिज़ा हासिल करता है, जब शाम होती, तो कीड़े मकोड़ों का शिकार कर के अपना पेट भरता है और माहौल के रंग बदलने के साथ साथ अपना रंग भी बदलता रहता है, कभी लाल हो जाता है, कभी काला, तो कभी हरा रंग बदल लेता है, जिस रंग के दरख्त पर चढ़ता है, उसी रंग को इख़्तियार कर लेता है, उस की आँखें ऐसी होती हैं के वह चारों तरफ देख सकती हैं, अल्लाह की शान के उस ने एक छोटे से जानवर को बहुत सारी खूबियाँ दे रखी हैं।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — रुकू व सजदा अच्छी तरह करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "बदतरीन चोरी करने वाला वह शख्स है, जो नमाज़ में से चोरी कर लेता है। सहाबा ﷺ ने अर्ज किया : या रसूलल्लाह! आदमी नमाज़ में से किस तरह चोरी कर लेता है? इर्शाद फर्माया: वह रुकू और सजदा अच्छी तरह नहीं करता।"

[मुसनदे अहमद : ११९३८, अन अबी सईद खुदरी ﷺ]

फ़ायदा : रुकू और सजदा अच्छी तरह न करने को हुज़ूर ﷺ ने चोरी बताया है; इस लिए इन को अच्छी तरह इतमिनान से अदा करना ज़रुरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — हदिया कबूल करना

हज़रत आयशा ﷺ फर्माती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ हदिया कबूल फर्माते थे और उस का बदला भी दिया करते थे।

[बुखारी: २५८५]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	नमाज़े फ़ज्र व मगरिब के बाद दुआ पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम मगरिब की नमाज़ से फारिग हो जाओ तो यह दुआ सात मर्तबा पढ़ लो ((اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِيْ مِنَ النَّارِ)) फिर तुम उसी रात में मर गए, तो जहन्नम से खलासी लिख दी जाएगी और जब तुम फज्र की नमाज़ से फारिग हो जाओ तो इसी तरह पढ़ लो, अगर तुम उस दिन में मर गए, तो जहन्नम से खलासी लिख दी जाएगी।"

[अबू दाऊद : ५०७९, मुस्लिम बिन हारिस رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	गल्ला वगैरह रोके रखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो आदमी मुसलमानों से उन का गल्ला रोके रखेगा, अल्लाह तआला उस को कोढ़ और तंगदस्ती और फकीरी में मुब्तला कर देगा।"

[इब्ने माजा : २१५५, अन उमर बिन खत्ताब رضي الله عنه]

फ़ायदा : अवाम की सख्त ज़रूरत के वक्त महंगाई के इन्तेज़ार में गल्ला वगैरह रोके रखना दुरुस्त नहीं है, इस से लोगों को बचना चाहिये।

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया दुश्मनी का सबब

हज़रत उमर رضي الله عنه फर्माते हैं के मैं ने हुजूर ﷺ को फर्माते हुए सुना के "जब दुनिया (की दौलत) किसी पर खोल दी जाती है, तो अल्लाह तआला उन के आपस में कयामत तक दुश्मनी और बुग्ज़ डाल देते हैं और मैं इस से डरता हूँ।"

[मुसनदे अहमद : १४]

खुलासा : जब किसी के पास खूब माल व दौलत जमा हो जाता है तो लोग उस से हसद करने लगते हैं, जिस से दुश्मनी पैदा होती है।

नंबर (८): आखिरत के बारे में	जहन्नम में मौत नहीं होगी

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : (अहले दोज़ख जब नजात से बिल्कुल मायूस हो जाएंगे तो उस वक्त मौत की तमन्ना करेंगे) और दोज़ख के दारोग़ा को पुकारेंगे, के ऐ मालिक ! तुम्हारा परवर्दिगार (हम को मौत दे कर) हमारा काम तमाम कर दे, तो फ़रिश्ता कहेगा : तुम हमेशा इसी हाल में रहोगे। (न निकलोगे न मरोगे)।

[सूर-ए-जुखरूफ़ : ७७]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	गाय के दूध का फायदा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "गाय का दूध इस्तेमाल किया करो क्योंकि वह हर किस्म के पौदों को चरती है (इस लिए) इस के दूध में हर बीमारी से शिफ़ा है।" [मुसतदरक : ८२२४, अन अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरते रहो और सीधी सच्चि बात किया करो (ऐसा करोगे तो) अल्लाह तआला तुम्हारे काम संवार देगा और तुम्हारे गूनाह बख्श देगा और जिस ने अल्लाह तआला और उस के रसूल का कहना माना, तो उस ने बड़ी कामयाबी हासिल कर ली।"

[सूर-ए-अहज़ाब : ७० ता ७१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ मक्का मुअज़्ज़मा के रहने वाले हैं। आप ﷺ का शुमार उन सहाबा-ए-किराम में होता है जो फत्वा देने के ज़िम्मेदार थे, आप जिस्मानी एतेबार से दुबले पतले थे। एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ ने किसी ज़रुरत से उन को दरख्त पर चढ़ाया। सहाबा ﷺ उन की दुबली पतली टांगें देख कर हंसने लगे। इस पर रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : अल्लाह के नज़दीक अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ की यह दुबली पतली टांग उहुद पहाड़ से भी ज़ियादा वज़नी हैं। हुज़ूर ﷺ के खास खादिम होने की वजह से सहाबा ﷺ उन को साहिबुन्नअ्ल (जूता वाले), साहिबुल विसादा (तकिया वाले) कहा करते थे। उन को कुर्आने पाक से खुसूसी शगफ़ और तअल्लुक था, कुर्आन खूब पढ़ा करते थे। हुज़ूर ﷺ ने फ़र्माया : जिस शख्स को कुर्आन शरीफ बिलकुल इसी तरह पढ़ना हो जिस तरीके से उतरा है तो वह अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ के तरीके के मुवाफ़िक़ पढ़े। अपने ज़माने में हज़रत उस्मान ﷺ ने इन्हें कूफा का अमीर मुकर्रर कर दिया था। सन ३२ हिजरी में उन की वफात मदीना मुनव्वरा में हुई।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — फतह की पेशीन गोई

रसूलुल्लाह ﷺ ने खैबर के दिन फर्माया : कल इस झंडे को मैं ऐसे शख्स के हवाले करुगा; जिस से अल्लाह और उस के रसूल मुहब्बत करते हैं और जिस के हाथ पर अल्लाह तआला फतह देगा, दुसरे दिन आप ﷺ ने हज़रत अली ﷺ इब्ने अबी तालिब को बुला कर झंडा उन के हाथ में दे दिया, फिर उसी रोज़ अल्लाह तआला ने ख़ैबर को फतह कर दिया। [बुखारी : ३७०२, अन सलमा ﷺ]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — तमाम रसूलों पर ईमान लाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग अल्लाह तआला पर ईमान रखते हैं और उस के रसूलों पर भी और उन में से किसी में फर्क नहीं करते, उन लोगों को अल्लाह तआला ज़रुर उन का सवाब देंगे और अल्लाह तआला बड़े मगफिरत वाले हैं बड़ी रहमत वाले हैं।" [सूर-ए-निसा : १५२]

फ़ायदा : अल्लाह तआला ने इन्सानों की हिदायत और रहनुमाई के लिए जितने नबी और रसूल भेजे हैं, सब पर ईमान लाना फ़र्ज़ है।

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — पानी पीने की दुआ

पानी पीने के बाद यह दुआ पढ़े :

((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ سَقَانَا عَذْبًا فُرَاتًا بِرَحْمَتِهٖ وَلَمْ يَجْعَلْهُ مِلْحًا اُجَاجًا بِذُنُوْبِنَا))

तर्जमा : तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें अपनी रहमत से मीठा पानी पिलाया और उस को हमारे गुनाहों की वजह से खारा और कड़वा नहीं बनाया। [कन्ज़ुल उम्माल : १८२२२, अन अबी जाफर ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़जीलत	गुनाहों की माफ़ी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जो शख्स दिन में सौ मर्तबा ((سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ)) पढ़ ले उस के सारे गुनाह माफ हो जाएँगे अगरचे समुंदर की झाग के बराबर हो।
[तिर्मिज़ी : ३४६६, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	कुफ्र व ना फर्मानी का वबाल

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अल्लाह ही तो ऐसा है जिस ने तुम को ज़मीन में आबाद किया; लिहाज़ा जो शख्स कुफ्र करेगा, उस के कुफ्र का वबाल उसी पर होगा और काफिरों का कुफ्र, उन के रब के नज़दीक नाराज़गी ही को बढ़ाता है और काफिरों के लिए उन का कुफ्र सिर्फ नुक्सान बढ़ाने ही का सबब होता है।"
[सूर-ए-फातिर : ३९]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	शैतान के धोके से बचो

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, पस तुम को दुनिया की ज़िंदगी धोके में न डाले (के तुम इस में लग कर आखिरत को भूल जाओ) और न तुम को धोका देने वाला (शैतान) अल्लाह तआला (के अज़ाब से) धोके में डाल दे (के तुम उस के धोके में आ कर अल्लाह तआला के अज़ाब से बे फिक्र हो जाओ और यह समझने लगो के अज़ाब न होगा)।"
[सूर-ए-लुकमान : ३३]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	दोज़ख के बिच्छू का असर

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "दोज़ख में खच्चरों की तरह बिच्छू हैं, एक बार जब उन में से एक बिच्छू डसेगा, तो दोज़खी ४० साल तक उन की जलन महसूस करेगा।"
[मुस्नदे अहमद : १७२६०, अन अब्दुल्लाह बिन हारिस رضي الله عنه]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	हलीला से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "हलील-ए-सियाह को पिया करो इस लिए के यह जन्नत के पौदों में से एक पौदा है, जिस का मज़ा कड़वा होता है मगर हर बीमारी के लिए शिफा है।"
[मुस्तदरक : ८२३०, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

फ़ायदा : यह क़ब्ज़ कुशा है और बादी बवासीर में मुफीद है, हलील-ए-सियाह को हिंदी में काली हड़ कहते हैं। जिसे सिल पर घिस कर पीते हैं।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "ऐ लोगो! अल्लाह तआला से डरते रहो और कमाई में हलाल तरीका इख्तियार करो, इस लिए के कोई आदमी अपनी मुकद्दर की रोज़ी पूरी करने से पहले दुनिया से जाने वाला नहीं है, लिहाज़ा हलाल चीज़ों को इख्तियार करो और हराम को छोड़ दो।"
[इब्ने माजा : २१४४, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२७) रजबुल मुरज्जब

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत अबू हुरैरह ﷺ

आप की कुन्नियत अबू हुरैरह है, इमाम बुखारी رحمه الله फर्माते हैं के उन का इस्लाम में नाम अब्दुल्लाह रखा गया। उन का तअल्लुक कबील-ए-दौस से है, हज़रत तुफैल दोसी के हाथ पर मुसलमान हुए और मक्का मुकर्रमा में आकर हुज़ूर ﷺ से मुलाकात भी की लेकिन वतन वापस हो गए, कबील-ए-दौस के लिए रसूलुल्लाह ﷺ ने यह दुआ फर्माई थी ((اللّٰهُمَّ اهْدِ دَوْسًا وَائْتِ بِهِمْ)) यानी:इलाही! कबील-ए-दौस के लोगों को हिदायत दे और उन को मेरे पास पहुँचा दे, इसी दुआ का नतीजा था के सन ७ हिजरी में अस्सी आदमियों के साथ हज़रत अबू हूरैरह ﷺ मदीना तशरीफ लाए और हुज़ूर ﷺ की खिदमत में रह गए, उन्हें अहादीस को सुनने और उसे याद रखने का शौक बहोत ज़ियादा था। यही वजह है के तमाम सहाबा में सब से ज़ियादा अहादीस इन्हीं से मन्कूल हैं, जिन की तादाद तकरीबन पाँच हज़ार तीन सौ चौहत्तर है, जब बाज़ सहाबा ﷺ को उन की कसरते रिवायत पर इशकाल हुआ तो उन्होंने फर्माया: मुहाजिरीन हज़रात तो तिजारत में मशगूल रहते थे और अन्सार खेती बाड़ी में और मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में पड़ा रहता था (इसी लिए मुझे ज़ियादा हदीसें याद हैं)।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — जानवरों की बोलियां

ज़मीन पर हज़ारों किस्म के जानवर पाए जातें हैं जिन की सही तादाद अल्लाह ही जानता है, इस में से हर जानवर की बोली अलग अलग है, घोड़ा हिनहिनाता है, हाथी चिंघाड़ता है, शेर दहाड़ता है, तोता तितलाता है, ज़रा गौर कीजिए, के इन हज़ारों किस्म के जानवरों को अलग अलग बोलियां किस ने सिखाई, जिस से हमें अंधेरे में भी अंदाज़ा हो जाता है, के यह फलां जानवर की बोली है। यकीनन वह अल्लाह ही है, जिस ने अपनी कुदरते कामिला से रंग बिरंग के जानवरों को मुख्तलिफ किस्म की बोलियाँ सिखाई।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — मांगी हुई चीज़ का लौटाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "(वापसी की शर्त पर) माँगी हुई चीज़ को वापस किया जाएगा।"

[इब्ने माजा : २३९८ अन अबी उमामा ﷺ]

फ़ायदा : अगर किसी शख्स ने कोई सामान यह कह कर माँगा के वापस कर दूँगा, तो उस को मुकर्ररा वक्त पर लौटाना वाजिब है, उस कोअपने पास रख लेना और बहाना बनाना जाइज़ नहीं है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — छींक आए तो मुँह पर कपड़ा या हाथ रख लें

रसूलुल्लाह ﷺ को जब छींक आती, तो आवाज को आहिस्ता करते और चेहर-ए-मुबारक को कपड़े से या हाथ से ढांक लेते।

[तिर्मिज़ी : २७४५, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | इस्तिग़फार की पाबंदी पर इन्आमात

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स इस्तिग़फार का एहेतमाम करेगा, तो अल्लाह तआला उस के लिए हर तंगी से निकलने का रास्ता बना देगा और हर ग़म से खलासी व छुटकारा देगा और ऐसी जगह से रिज़्क अता फर्माएगा, जहाँ से गुमान भी न होगा।"

[तिर्मिज़ी : १५१८, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | शराब की नहूसत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अक्ल पर छा जाने वाली हर चीज़ शराब है और नशा आवर चीज़ हराम है और जिस ने नशा आवर चीज़ पीली, तो उस की चालीस दिन की नमाज़ो की बरकत उठा ली जाती है, अगर वह आदमी तौबा कर ले तो अल्लाह तआला उस की तौबा कबूल कर लेते हैं, अगर वह चौथी मर्तबा पीता है, तो अल्लाह तआला को हक है के वह उस को जहन्नमियों का खून और पीप पिलाए।"

[अबू दाऊद : ३६८०, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया की हिर्स व लालच

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "कयामत करीब आ चुकी है और लोग दुनिया की हिर्स व लालच में बढ़ते ही जा रहें हैं और अल्लाह तआला से दूर होते जा रहें है।" [मुस्तदरक : ७९१७, अन इब्ने मसऊद ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | जन्नत की नहरें

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जन्नत में बहुत सी नहरें ऐसे पानी की हैं, जिन में ज़रा भी तबदीली न होगी, बहुत सी नहरें ऐसे दूध की हैं, जिन का ज़ाएका ज़रा भी बदला हुआ न होगा और बहुत सी नहरें ऐसी शराब की हैं, जो पीने वालों के लिए बड़ी मज़ेदार होगी और साफ सुथरे शहद की नहरें हैं।"

[सूर-ए-मुहम्मद : १५]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | खजूर से पसली के दर्द का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "खजूर खाने से कौलंज नहीं होता है।"

[कन्ज़ुल उम्माल : २८१९१, अन अबी हुरैरह ؓ]

फ़ायदा : पसली के नीचे होने वाले दर्द को कौलंज कहा जाता है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जब तुम को कोई सलाम करे तो तुम उस से अच्छे अलफाज़ में सलाम करो (यानी उस का जवाब दो) या वैसे ही अलफाज़ कहे दो, बिला शुबा अल्लाह हर चीज़ का हिसाब लेंगे।"

[सूर-ए-निसा : ८६]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२८) रजबुल मुरज्जब

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ के जलीलुल कद्र सहाबी और हजरत उमर फारुक ﷺ के सब से ज़ियादा बा कमाल साहबज़ादे हैं। उन के नेकी व तक्वा की शहादत खुद रसूलुल्लाह ﷺ ने दी। हुजूर ﷺ ने फर्माया : अब्दुल्लाह बेहतरीन शख्स हैं क्या ही अच्छा हो जो तहज्जूद भी पढने लगें। इस फर्मान को सुनने के बाद अब्दुल्लाह ﷺ रात को बराए नाम सोते थे। सारी रात नमाज में मशगूल रहतेऔर जब सुबहे सादिक का वक़्त करीब आ जाता, तो इस्तिगफार शुरू कर देते। एक बार रसूलुल्लाह ﷺ ने उन का कन्धा पकड़ कर फर्माया : "दुनिया में ऐसे रहो जैसे के तुम परदेसी हो या मूसाफिर और अपने आप को मुर्दों में शुमार करो।" हुज़ूर ﷺ के इस इर्शाद के सबब हज़रत अब्दुल्लाह ﷺ ने पूरी ज़िन्दगी ज़ाहिदाना गुज़ार दी। बचपन में ही अपने वालिदैन के साथ ईमान लाए और अपने वालिद के साथ मदीना की हिजरत की। कम उम्री की वजह से गजव-ए-बद्र और उहुद में शरीक न हो सके। गज़व-ए-खन्दक में उन्होंने शिरकत की और उस वक्त उन की उम्र सिर्फ पंदरा साल की थी। चौरासी साल की उम्र में जिल हिज्जा सन ७३ हिजरी मक्का मुकर्रमा में वफात पाई और वहीं मदफून हूए।

नंबर (२): हुजूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — भेड़िये का आप ﷺ की नुबुव्वत की खबर देना

एक मर्तबा भेड़िया एक चरवाहे की बकरियों में से एक बकरी ले भागा, चरवाहे ने दौड़ कर फौरन अपनी बकरी उस से छुड़ा ली, भेड़िये को अल्लाह तआला ने बात करने की ताकत दी, उस ने चरवाहे से कहा : खुदा ने मुझे जो रिज़्क दिया था, उसे तू ने मुझसे छुड़ा लिया, चरवाहे ने कहा: बड़े तअज्जुब की बात है, यह भेड़िया तो बातें करता है? भेड़िये ने कहा : इस से ज़ियादा तअज्जुब की बात तो यह है के मदीने में एक शख़्स है, जो गुजरी हुई बातों की खबर देते हैं और आइन्दा पेश आने वाले हवादिसात की निशानदही करते हैं, वह चरवाहा यहूदी था, रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाजिर हो कर, सारा किस्सा बयान किया; और मुसलमान हो गया। [मिशकात : ५९२७, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़ पढना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स चालीस दिन इख्लास से तक्बीरे ऊला के साथ बा जमात नमाज़ पढता है, तो उस को दो परवाने मिलते हैं। एक जहन्नम से बरी होने का दूसरा निफ़ाक़ से बरी होने का।"

[तिर्मिज़ी : २४१, अन अनस बिन मालिक ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — इस्लाम पर वफात पाने के लिए

जो यह चाहे के उस का खातमा ईमान पर हो और नेक लोगों के साथ रहे, तो वह यह दुआ करे:

﴿فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَنْتَ وَلِيّٖ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ تَوَفَّنِیْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِیْ بِالصّٰلِحِیْنَ﴾

तर्जमा: ऐ ज़मीन व आस्मान के पैदा करने वाले ! आप ही दुनिया और आखिरत में हमारे आका है, हमें इस्लाम की हालत में वफात दीजिए और नेक लोगों में शामिल कर दीजिए। [सूर-ए-यूसुफ : १०१]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	दो कलिमो की फज़ीलत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : दो कलिमे ऐसे हैं जो ज़बान पर बहुत ही हल्के हैं, और तराज़ू में बहुत ही भारी हैं और रहमान को बहुत महबूब हैं : ((سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهِ، سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ))

[बुखारी : ७५६३, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	कुर्आन को झुटलाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : उस शख़्स से बड़ा ज़ालिम कौन हो सकता है, जोअल्लाह पर झूट बोले और जब उस के पास सच्ची बात (कुर्आन) आए तो उस की तकज़ीब कर दे, क्या ऐसे काफिरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं होगा ?

[सूर-ए-ज़ुमुर : ३२]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया चाहने वालों के लिए नुकसान

कुर्आन में अल्लाह तअला फर्माता है : "जो शख़्स आखिरत की खेती का तालिब हो, हम उस की खेती में तरक्की देंगे और जो दुनिया की खेती का तालिब हो (के सारी कोशिश उसी पर खर्च कर दे) तो हम उस को दुनिया में से कुछ दे देंगे और ऐसे शख़्स का आखिरत में कोई हिस्सा नहीं।" [सूर-ए-शूरा : २०]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	अहले दोज़ख का रोना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "दोज़ख वालों पर रोने का अज़ाब मुसल्लत किया जाएगा, तो वह इतना रोएँगे के आँसू खुश्क हो जाएँगे, उस के बाद रोते हुए आँखों से खून बहाएँगे, यहाँ तक के उन के चेहरों में गढ़े की तरह फटन पड़ जाएगी, अगर उन में कशतियों को छोड़ दिया जाए, तो वह भी उन में चल पड़ें।"

[इब्ने माजा : ४३२४, अन अनस ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	लहसन के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अगर मेरे पास फरिश्ते न आया करते, तो मैं लहसन ज़रूर खाता।"

[कन्ज़ुल उम्माल : ४०९३३]

फ़ायदा : आप ﷺ के फ़र्मान से साफ ज़ाहिर है के लहसन अपने अन्दर बहुत से फवाइद रखता है, चुनांचे अतिब्बा कहते हैं के इस के खाने से सीने का दर्द जाता रहता है, यह खाना हज़्म करता है और प्यास कम करता है वगैरह।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "रमज़ान की वजह से शाबान के चाँद को अच्छी तरह शुमार करो" (यानी शाबान के चाँद को अच्छी तरह देख कर उस की तारीख को शुमार करते रहो, ताके रमज़ान के रोज़े रखने में परेशानी न हो।)

[तिर्मिजी : ६८७, अन अबी हुरैरह ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(२९) रजबुल मुरज्जब

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — सय्यदना बिलाल

हज़रत बिलाल हब्शी एक मशहूर सहाबी हैं जो मस्जिदे नब्वी के मुअज़्ज़िन रहे। उन के वालिद का नाम रबाह और वालिदा का नाम हमामा था, आप हबशिउन नस्ल थे। इस्लाम के इब्तिदाई दौर में ही मुसलमान हो गए थे, मगर चूंकि वह मुश्रिकीने मक्का के गुलाम थे लिहाज़ा वह इस बात को किसी तरह भी बर्दाश्त न कर सकते थे के एक गुलाम उन के बुतों को बुरा कहे। इस जुर्म की सज़ा में उन्होंने हज़रत बिलाल को तरह तरह की तकलीफें दीं। कभी उन को सख्त गर्मी में दोपहर के वक्त तपती हुई रेत पर सीधा लिटा कर उन के सीने पर पत्थर की बड़ी चटान रख दी जाती तो कभी ज़ंजीरों में बांध कर कोड़े लगाए जाते ताके इस्लाम से फिर जाएँ। मगर हज़रत बिलाल अहद अहद कहते थे यानी खुदा एक है। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक ने जब उन को इस हाल में देखा तो खरीद कर आज़ाद कर दिया, हज़रत बिलाल ने सिर्फ मदीना की हिजरत की, गज़वा-ए-बद्र के साथ और दिगर तमाम गज़वात में हुज़ूर के साथ शरीक रहे। हुज़ूर की वफात के बाद मुल्के शाम चले गए और सन २० हिजरी के करीब दिमश्क में विसाल हुआ।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — मिट्टी के अन्दर चमकदार सोने का पैदा होना

सोना एक बहुत ही कीमती धात है, जो पीली और चमकदार होती है; अल्लाह तआला ने इस धात की मुहब्बत और चाहत इन्सानों के दिलों में रख दी है, इसे अल्लाह तआला ने ऐसा बनाया है के इस में कभी ज़ंग नहीं लगता; ज़रा गौर कीजिए के इसी ज़मीन से जिस से काला काला कोयला निकलता है, चमकदार सोना कौन निकालता है? यकीनन यह अल्लाह तआला ही की ज़ात है जो अपनी कुदरत से चमकदार सोना निकालता है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — अल्लाह के नज़दीक पसंदीदा अमल

एक आदमी ने आप से अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के रसूल ! इस्लाम में अल्लाह के नज़दीक सब से ज़ियादह पसंदीदा अमल क्या है ? आप ने फ़र्माया : नमाज़ को उस के वक्त पर अदा करना; और जो शख़्स नमाज़ को (जान बूझ कर) छोड़दे उस का कोई दीन नही है और नमाज़ दीन का सुतून है।

[बैहकी फी शोअबिल ईमान : २६८३, अन उमर]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — इयादत करने का सुन्नत तरीका

रसूलुल्लाह ने फर्माया : मरीज़ की मुकम्मल इयादत यह है के अपना हाथ उस की पेशानी या उस के हाथ पर रखे और पूछे के तबीअत कैसी है ?

[तिर्मिज़ी : २७३१, अन अबी उमामा]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

३० रजबुल मुरज्जब

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत मुसअब बिन उमैर ﷺ

हज़रत मुसअब बिन उमैर ﷺ कुरैश के अमीर तरीन घराने से तअल्लुक रखते थे। इस्लाम से कब्ल बड़े नाज़ व नेअ्मत में पले थे। हुज़ूर ﷺ के पास दारे अरकम में आकर मिले और इस्लाम कबूल किया लेकिन बहुत दिनों तक अपने इस्लाम को छुपाए रखा, एक दिन एक शख्स ने उन्हें नमाज़ पढ़ते देख लिया इस की इत्तिला उन के वालिदैन को कर दी वालिदैन ने उन से रिश्ता तोड़ लिया और उन को हर तरह की तक्लीफों और आज़माइशों से गुज़रना पड़ा। हज़रत मुसअब बिन उमैर ﷺ किसी तरह फरार हो कर हब्शा हिजरत कर गए। फिर जब मक्का वापस आए तो हुज़ूर ﷺ ने उन को मदीना वालों के साथ, मदीना के मुसलमानों को कुर्आन सिखाने और दीन की दावत व तबलीग के लिए रवाना फर्माया, चुनांचे यहाँ वह मुक्री (पढ़ाने वाले) के लकब से मशहूर हुए। गज़व-ए-बद्र में भी बड़े जोश से शरीक हुए। सन ३ तीन हिजरी गज़व-ए-उहुद में हज़रत मुसअब बिन उमैर ﷺ हुज़ूर ﷺ का झंडा उठाए हुए थे बहादुरी और हिम्मत से इस्लामी झंडे को संभाले हुए थे के इसी हालत में आप ﷺ शहीद हुए।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — फरिश्तों के ज़रिये मदद

हज़रत सअद बिन अबी वक्कास ﷺ फर्माते हैं के मैं ने जंगे उहुद के दिन रसूलुल्लाह ﷺ के दाएँ बाएँ जानिब निहायत सफेद कपड़े पहने हुए दो शख्सों को देखा, जो रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ से खूब लड़ रहे थे, जिन्हें मैं ने न इस से पहले कभी देखा था और न बाद में देखा और वह दो शख्स हज़रत जिब्रईल ﷺ और हज़रत मीकाईल ﷺ थे। [मुस्लिम : ६००४-६००५]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — बावुज़ू मस्जिद जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जो शख्स अच्छी तरह वुज़ू करे, फिर मस्जिद में नमाज़ के लिए जाए और वहां पहुंच कर मालूम हो के जमात हो चुकी, तो इस को जमात की नमाज़ का सवाब होगा और उस सवाब की वजह से उन लोगों के सवाब में कुछ कमी नहीं होगी, जिन्हों ने जमात से नमाज़ पढ़ी है।

[अबू दाऊद : ५६४, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — बैतुलखला में जाने और बाहर आने की दुआ

जब बैतुलखला जाए तो यह दुआ पढ़े :

((اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ)) [बुखारी : १४२, अन अनस ﷺ]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं नापाक जिनों से तेरी पनाह चाहता हूँ मर्द हों या औरत।

और बैतुलखला से बाहर निकलने के बाद यह दुआ पढ़े :

((غُفْرَانَكَ ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ)) [इब्ने माजा : ३००, ३०१]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं आप की मग़्फिरत चाहता हूँ, तमाम तारीफें अल्लाह के लिये हैं जिस ने मुझ से तकलीफ को दूर किया और आफियत बख्शी।

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	फकीरों को माफ करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "पहली कौमों में से एक आदमी का हिसाब लिया गया, तो (उस के नाम-ए-आमाल में) कोई नेकी न थी, हाँ मगर वह मालदार था और लोगों से खरीद व फरोख्त करता था और अपने बच्चों को कहता था के फकीर व तंगदस्त से दर गुज़र करना अल्लाह तआला ने फर्माया मैं उस आदमी से ज़ियादा हकदार हूँ (के उस से दर गुज़र करूँ, फिर फरिश्तों से फर्माया) के इसे माफ़ कर दो ।"

[मुस्लिम : ३९९७, अबू मसऊद अलबद्री ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	रसूल के हुक्म को न मानना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : जो लोग रसूलुल्लाह ﷺ के हुक्म की खिलाफ वरज़ी करते हैं, उन को इस से डरना चाहिये के कोई आफत उन पर आ पड़े या कोई दर्दनाक अज़ाब आजाए।

[सूर-ए-नूर : ६३]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	रिज़्क हिक्मते खुदावंदी से मिलता है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : अगर अल्लाह तआला अपने (सब) बंदों के लिए रिज़्क में जियादती कर देता, तो ज़रुर ज़मीन में फसाद करने लगते, लेकिन वह जिस कद्र चाहता है, अन्दाज़े के मुताबिक रोज़ी उतारता है और वह अपने बन्दों से बा खबर और (उन को) देखने वाला है।

[सूर-ए-शूरा : २७]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	कब्र आखिरत की पहली मंज़िल

हज़रत उस्मान ﷺ जब किसी कब्र के पास खड़े होते तो बहुत रोते यहाँ तक के आँसुओं से दाढ़ी तर हो जाती , उन से पूछा गया : यह क्या बात है, आप तो जन्नत व दोज़ख को याद करते हैं, तो इतना नहीं रोते जितना कब्र की वजह से रोते हैं? आप ﷺ ने जवाब दिया: रसूलुल्लाह ﷺ फर्माते थे के कब्र आखिरत की मंज़िलों में से पहली मंज़िल है, पस अगर बंदा इस से नजात न पा सका, तो इस के बाद की मंज़िलें इस से ज़ियादा सख्त (कठिन) हैं।

[तिर्मिज़ी : २३०८]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	सफर जल (Pear) के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : सफर जल खाओ क्योंकि यह दिल को राहत व कुव्वत पहुँचाता है और (पैदा होने वाले) बच्चे के हुस्न को बढ़ाता है।

[कन्ज़ुल उम्माल : २८२५६]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "इन्सान को अपनी हर ज़रुरत अल्लाह से माँगनी चाहिये, यहां तक के अगर जूते की पट्टी भी टूट जाए , तो अल्लाह ही से माँगे ।"

[तिर्मिज़ी : ३६०४, अन अनस ﷺ]

शाबानुल
मुअज़्ज़म

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

① शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर① : इस्लामी तारीख — हज़रत खालिद बिन वलीद ؓ

हज़रत खालिद बिन वलीद ؓ की बहादुरी और शुजाअत से कौन ना वाकिफ होगा, इस्लाम की खुबियों से मुतअस्सिर हो कर सुलहे हुदैबिया के बाद ईमान कबूल कर लिया। ईमान लाने से पहले कुफ़्फ़ार की तरफ़ से जिस जोश व ख़रोश से मैदाने जंग में शरीक होते थे, इस्लाम लाने के बाद इस से बहुत जियादा जोश और बहादुरी का मुज़ाहरा किया और सारी ज़िंदगी इस्लाम की हिमायत और कुफ़्र की मुखालफ़त में गुज़ार दी। ईमान लाने के कुछ ही अर्से बाद सन ८ हिजरी में गज़व-ए- मूता का वाक़िआ पेश आया, जिस में मुसलमानों के अमीर ज़ैद बिन हारिसा ؓ ,जाफ़र बिन अबी तालिब और अब्दुल्लाह बिन रवाहा ؓ बारी बारी शहीद हो गए। फिर हज़रत खालिद बिन वलीद ؓ अमीर बनाए गए और अल्लाह तआला ने उन के हाथों मुसलमानों को फ़तह अता फ़र्माई। इस के बाद फतहे मक्का में हुज़ूर ﷺ के साथ थे, उस मौक़े पर भी रसूलुल्लाह ﷺ ने उन को लश्कर के एक हिस्से का अमीर बनाया, हुजूर ﷺ की वफ़ात के बाद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने उन को मुरतद्दीन से क़िताल और मुसैलिमा क़ज़्ज़ाब से जिहाद करने के लिए भेजा जिस में उन को फ़तह नसीब हुई। इसी तरह रुम और फ़ारस की फ़तह में भी आप ؓ का बड़ा दखल रहा है। इन ही सिफात की वजह से रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : ख़ालिद बिन वलीद ؓ अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार हैं जिस को अल्लाह ने कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन के लिए नियाम से निकाल रखा है ।

नंबर② : अल्लाह की कुदरत — जानवरों के फ़वाइद

अल्लाह तआला ने दुनिया में जितने जानवर पैदा किए, तक़रीबन सब इन्सानों ही के फ़ायदे के लिये हैं, कोई सवारी के काम आता है, तो कोई बोझ ढोने के काम आता है, किसी का गोश्त खाते हैं, तो किसी का दूध पीते हैं, मज़ीद यह के दूध से मलाई, मक्खन और घी निकालते हैं और तरह तरह की मिठाइयाँ बनाते हैं, इसी तरह किसी के ऊन से कम्बल, क़ालीन तो चमड़े से मोज़े, जूते और बेश क़ीमत चीज़ें बनाई जाती हैं। यक़ीनन अल्लाह तआला ने हर एक चीज़ को इन्सान के फ़ायदे ही के लिये बनाया है।

नंबर③ : एक फ़र्ज़ के बारे में — सिर्फ अल्लाह की इबादत करो

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम्हारा माबूद (हक़ीक़ी) तो एक ही माबूद है, उस के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह बे इन्तिहा मेहरबान निहायत ही रहम करने वाला है।

[सूर-ए-बकरह : १६३]

फ़ायदा : आयत से मालूम हुआ के इबादत के लाइक अगर कोई ज़ात है, तो वह सिर्फ अल्लाह ही की ज़ात है , लिहाज़ा हम पर उस की इबादत करना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	घर के काम में हाथ बटाना

हज़रत आयशा ﷺ से पूछा गया के घर में हुज़ूर ﷺ क्या काम करते थे? हज़रत आयशा ﷺ ने फ़र्माया : आप ﷺ घर के काम में हाथ बटा दिया करते और जब नमाज़ का वक्त हो जाता तो नमाज़ के लिए चले जाते। [बुखारी : ६७६]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	रमज़ान में उम्रा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "रमज़ानुल मुबारक में उम्रा करने का सवाब एक हज के बराबर होता है।" [मुस्लिम : ३०३८, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	चंद गुनाह और उस के नुकसानात

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "चार गुनाह ऐसे हैं जिन के करते वक़्त आदमी का ईमान निकल जाता है : (१) जानी का जिना करते वक्त। (२) शराबी का शराब पीते वक्त। (३) चोर का चोरी करते वक्त। (४) क़ातिल का नाहक कत्ल करते वक्त।" [बुखारी : ६८०९, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया को अहेम समझने का नुकसान

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ" बन्दों को अल्लाह तआला की नाराज़गी से उस वक्त तक महफ़ूज़ रखता है, जब तक के वह दुनिया के मुकाबले में दीन को ज़ियादा अहेम समझें और जब वह दुनिया को अहेम समझने लगेंगे, तो "لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ" भी उन पर लौटा दिया जाएगा और यह कहा जाएगा के तुम झूट बोलते हो। [कन्ज़ुल उम्माल : २१७, अन अनस ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	हर एक को नाम-ए-आमाल दिया जाएगा

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : हम ने हर इन्सान का अच्छा या बुरा अमल उस के गले का हार बना रखा है और कयामत के दिन उस का नाम-ए-आमाल निकाल कर पेश कर देंगे, जिस को वह खुला हुआ पाएगा। कहा जाएगा के तू अपना नाम-ए-आमाल पढ ले, आज तू खुद ही अपना हिसाब कर लेने को काफी है। [सूर-ए-बनी इसराईल : १३ ता १४]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	शहद और कुर्आन से शिफा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम अपने लिए शिफा की दो चीज़ों यानी शहद और कुर्आन को लाज़िम पकड़ लो।" [इब्ने माजा : ३४५२, अन अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम (मेरी नेअमतों) पर मुझे याद करो, मैं (भी) तुम्हें याद करूँगा और मेरे (एहसानात का) शुक्र अदा करो और ना फ़र्मानी मत किया करो। [सूर-ए-बकरा : १५२]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — हज़रत खालिद बिन वलीद ؓ का इखलास

सहाब-ए-किराम ؓ के हर अमल में इखलासे निय्यत और अल्लाह तआला की रज़ा शामिल होती थी। इस लिए वह अपने इखलास और अल्लाह की रज़ामन्दी हासिल करने के लिए बड़े बड़े ओहदे कुर्बान कर दिया करते थे। हज़रत खालिद बिन वलीद ؓ की माज़ूली उन के इखलास की बेहतरीन मिसाल है, जब हज़रत उमर ؓ ने मुल्की इन्तेज़ाम और बाज़ दूसरी मसलिहतों की वजह से हजरत ख़ालिद ؓ को माज़ूल कर के उन की जगह हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ؓ को अमीर बनाया, तो हज़रत खालिद बिन वलीद ؓ ने लोगों से फ़र्माया : तुम पर अपने अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर ؓ ने उस शख्स को अमीर बनाया है जिस को रसूलुल्लाह ﷺ ने (अमीनुल उम्मत) का लक़ब दिया है यह कह कर इमारत को उन के हवाले कर दिया, इस इखलास और वफ़ादारी को देख कर हज़रत अबू उबैदा ؓ ने कहा के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को यह फर्माते हुए सुना है के (खालिद अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार है।) वह ज़िंदगी भर शहादत की आरज़ू करते रहे मगर शहादत मुकद्दर में नहीं थी, जब उन के इन्तेक़ाल का वक्त आया तो बिस्तर पर लेटे हूए फ़र्माया : जब मैं इन्तेक़ाल कर जाऊँ तो मेरा घोड़ा मेरे हथियारों को अल्लाह के लिए वक्फ़ कर देना। मुल्के शाम के हिम्स नामी शहर में सन २१ हिजरी में इन्तेक़ाल हुआ।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हज़रत फ़ातिमा ؓ के मुतअल्लिक़ पेशीन गोई

मर्ज़ुल वफ़ात में रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत फ़ातिमा ؓ को यह खबर दी के मेरी वफ़ात के बाद मेरे अहल व अयाल में सब से पहले तू आकर मुझ से मिलेगी। (चुनांचे रसूलुल्लाह ﷺ की वफ़ात के बाद आप की पेशीन गोई के मुताबिक सब से पहले हज़रत फातिमा ؓ की वफ़ात हुई)।

[बुखारी : ३७१६, अन आयशा ؓ]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — मस्जिद में दाखिल होने के लिए पाक होना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "किसी हाइज़ा औरत और किसी जुनुबी यानी नापाक आदमी के लिए मस्जिद में दाखिल होने की बिलकुल इजाज़त नहीं है।"

[अबू दाऊद : २३२, अन आयशा ؓ]

फायदा : मस्जिद में दाखिल होने के लिए पाक होना ज़रुरी है।

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — कपड़े पहनने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जो कोई कपड़ा पहने और यह दुआ पढ़े तो उस के अगले पिछले सब गुनाह माफ़ हो जाते हैं, दुआ यह है : ((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ هٰذَا وَرَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ))

[अबू दाऊद : ४०२३, अन मुआज़ बिन अनस ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	कुर्आन की तिलावत करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : कुर्आन शरीफ की तिलावत किया करो, इस लिये के क़यामत के दिन यह अपने साथी (यानी पढ़ने वाले) की शफाअत करेगा। [मुस्लिम : १८७४ अन अबी उमामह ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	ज़मीन में फसाद फैलाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "बिला शुबा वह लोग जो अल्लाह से पक्का अहद करने के बाद तोड़ डालते हैं और उन रिश्ते नातों को भी तोड़ डालते हैं, जिन को अल्लाह ने जोड़े रखने का हुक्म दिया है और ज़मीन में फसाद फैलाते फिरते हैं, तो ऐसे लोग बड़े खसारे वाले हैं।" [सूर-ए-बकरा : २७]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया मांगने वाला

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "(लोगों में से बाज़ ऐसे भी हैं, जो कहते हैं के ऐ हमारे परवर्दिगार ! हम को (जो कुछ देना हो) दुनिया में ही दे दीजिए (तो उन को जो कुछ मिलना होगा वह दुनिया ही में मिल जाएगा) और ऐसे शख्स को आखिरत में कुछ न मिलेगा।" [सूर-ए-बकरा : २००]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	कब्र का अज़ाब

रसूलुल्लाह ﷺ बनू नज्जार के बाग़ में तशरीफ ले गए वहां चंद कब्रें थीं, अचानक रसूलुल्लाह ﷺ का खच्चर बिदका, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मुर्दों को अज़ाब दिया जा रहा है इसी की आवाज़ स यह बिदका है; अगर यह डर न होता के तुम मुर्दों को दफन करना छोड़ दोगे, तो मैं तुम्हें भी वह आवाज़ सुनवा देता।" [मुस्लिम : ७२१३, अन ज़ैद बिन साबित ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	जिस्म के दर्द का इलाज

हज़रत उस्मान बिन अबिलआस ؓ ने रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हो कर अपने जिस्म के दर्द को बताया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जहां दर्द होता हो वहां हाथ रख कर तीन बार बिस्मिल्लाह और सात मर्तबा यह दुआ पढो: ((اَعُوْذُ بِاللّٰہِ وَ قُدْرَتِہٖ مِنْ شَرِّ مَا اَجِدُ وَ اُحَاذِرُ))
तर्जमा : मैं अल्लाह और उस की कुदरत की पनाह चाहता हुँ उस तकलीफ़ से जो मुझे पहुँची है और जिस से मैं डरता हुँ चुनांचे उन सहाबी ने जब यह कलिमात कहे तो उन का दर्द खत्म हो गया फिर वह सहाबी अपने घर वालों और दूसरे ज़रुरत मंदों को हमेशा इन कलिमात की तलकीन करते रहते थे। [मुस्लिम : ५७३७, अन उस्मान बिन अबिलआस ؓ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह के ज़िक्र के अलावा ज़ियादा बात मत करो क्योंकि इस से दिल में सख़्ती पैदा होती है और जिस के दिल में सख़्ती होती है वह अल्लाह की (रहमत) से सब से ज़ियादा दूर होता है।" [तिर्मिज़ी : २४११, अन इब्ने उमर ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(३) शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ | हज़रत मिक़दाद बिन अम्र ﷺ

हजरत मिक़दाद बिन अम्र ﷺ उन सात खुशनसीब सहाबा में से एक हैं जिन्हों ने हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में पहुंच कर पहले ईमान क़बूल किया और मक्की ज़िन्दगी में मुशरिकीने मक्का के ज़ुल्म व सितम का निशाना बनाए गए। उन्होंने हब्शा और मदीना दोनों की हिजरत फ़र्माई। जब हुज़ूर ﷺ ने जंगे बद्र के मुतअल्लिक़ मश्वरा किया तो उन्होंने ही अन्सार की तर्जमानी करते हुए अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! हम मूसा ﷺ की क़ौम की तरह नहीं हैं, बल्के हम आप के साथ मिल कर आगे पीछे दाएं बाएं हर तरफ़ से आख़री दम तक लड़ेंगे और हरगिज़ आप का साथ नहीं छोड़ेंगे। वह घोड़ सवारी, नेज़ा बाज़ी और तीर अंदाज़ी में कमाल दर्जे की महारत रखते थे। उन्होंने ग़ज़व–ए–बद्र में सौ ज़िरह पोश मश्रिकीन का बड़ी बे जिगरी से मुक़ाबला कर के तहल्का मचा दिया, बैअते रिज़वान में भी शरीक हुए और हज्जतुल वदाअ के मौक़े पर हुज़ूर ﷺ के साथ हज अदा करने की सआदत हासिल हुई। उन का क़ुर्आन सुन कर अल्लाह के नबी ﷺ ने फ़र्माया : यह इबादत गुज़ार बन्दा है। और अल्लाह ने मुझे अली ﷺ मिक़्दाद ﷺ, सलमान ﷺ और अबूज़र ﷺ से मुहब्बत करने का हुक्म दिया है। उन की ज़िन्दगी में इश्क़े रसूल और शहादत का जज़बा नुमायां नज़र आता है। बिल आख़िर ७० साल से ज़ाइद उम्र पा कर सन ३३ हिजरी में इन्तेक़ाल फ़र्माया। जनाज़े की नमाज़ अमीरूल मोमिनीन हज़रत उसमाने ग़नी ﷺ ने पढ़ाई। और जन्नतुल बक़ी में दफ़न किए गए।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत | हमारे जिस्म में खून कौन बनाता है

अल्लाह तआला ने इन्सानी ज़िंदगी का दारोमदार जिन चीज़ों पर रखा है, उन में से एक खून है, अगर जिस्म में खून की कमी हो जाए या खून बनना बंद हो जाए, तो इन्सान का ज़िंदा रहना मुश्किल हो जाएगा, खून के अन्दर एक किस्म की हरारत और गर्मी होती है, जिस से वह पूरे जिस्म में दौड़ता है और हमारी ज़िंदगी चलती रहती है, यकीनन यह अल्लाह का बनाया हुआ निज़ाम है के बे जान चीज़ों से इन्सान को हयात बख्शने वाला खून बनाता है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | जुमा की नमाज़ अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जुमा की नमाज़ जमात के साथ अदा करना हर मुसलमान पर लाज़िम है; मगर चार लोगों पर (लाज़िम नहीं है) (१) वह गुलाम जो किसी की मिलकियत मे हो। (२) औरत (३) नाबालिग़ बच्चा (४) बीमार। [अबू दाऊद : १०६७, अन तारिक़ बिन शिहाब ﷺ]

फ़ायदा : जहां जुमा के शराइत पाए जाते हों, तो वहां जुमा की नमाज़ अदा करना हर सही व तन्दुरुस्त और बालिग़ मुसलमान मर्द पर फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | सोते वक़्त मुअव्वज़तैन पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ हर रात जब बिस्तर पर लेटते थे तो दोनों हाथों को (दुआ मांगने की तरह) मिला कर सूरह -ए-इखलास और मुअव्वज़तैन ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝﴾ और ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝﴾ पढ

कर उन पर दम फर्माते, फिर तमाम बदन पर सर से पांव तक जहां जहां हाथ जाता हाथ फेर लिया करते थे, तीन मर्तबा ऐसा ही करते थे, सर से इब्तिदा करते और फिर मुंह और बदन के अगले हिस्से पर फिर बकिया बदन पर फेरते। [बुखारी : ५०१७, अन आयशा ﵂]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — औलाद को अदब सिखाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "किसी शख्स का अपनी औलाद को अदब सिखाना, एक साअ अनाज (यानी तकरीबन साढ़े तीन किलो गेहूँ) सदका करने से बेहतर है ।"

[तिर्मिज़ी : १९५१, अन जाबिर बिन समुरह ﵁]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में — मर्द व औरत का एक दूसरे की नक्ल करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने ऐसी औरत पर लानत फर्माई जो मर्द की मुशाबहत इख्तियार करती है और ऐसे मर्द पर लानत फ़र्माई जो औरतों की मुशाबहत इख्तियार करता है । [इब्ने माजा : १९०३, अन अबी हुरैरह ﵁]

फ़ायदा : मर्द का औरतों की शक्ल व सूरत इख्तियार करना और औरत का मर्दों की शक्ल व सूरत इख्तियार करना ना जाइज़ और हराम है ।

नंबर (७) : दुनिया के बारे में — दुनिया अल्लाह की नज़र में

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला के नज़दीक उस की मखलूकात में से कोई चीज दुनिया से ज़ियादा काबिले नफरत नहीं (यानी सब से ज़ियादा नफरत दुनिया से है) और उस ने जब से इस को पैदा किया है कभी भी इस की तरफ नज़र भर कर नहीं देखा।"

[कन्ज़ुल उम्माल : ६०९९, अन अबी हुरैरह ﵁]

नंबर (८) : आखिरत के बारे में — आमाल को तोला जाएगा

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : उस दिन आमाल का वज़न बरहक होगा फिर जिन का पल्ला भारी होगा, तो वह लोग कामयाब होंगे और जिन का पल्ला वज़न में हलका होगा, तो ऐसे लोगों ने अपने आप को नुकसान में डाला होगा; इस लिए के वह हमारी आयतों के साथ ना इन्साफी करते थे। [सूर-ए-आराफ़ : ८ ता ९]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज — राख से ज़ख्म का इलाज

गज़व-ए-उहुद में जब रसूलुल्लाह ﷺ का चेहर-ए-मुबारक ज़ख्मी हो गया तो आप ﷺ की साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा ﵂ खून धो रही थीं और हज़रत अली ﵁ ज़ख्मों पर पानी डाल रहे थे, हज़रत फ़ातिमा ﵂ ने जब देखा के खून बंद होने के बजाए बढ़ता ही जा रहा है, तो उन्होंने (खजूर के पत्तों की) चटाई का एक टुकड़ा ले कर जलाया और जब वह राख हो गया तो उस को ज़ख्मों पर लगा दिया जिस से खून बंद हो गया । [बुखारी : २९०३, अन सहल ﵁]

फ़ायदा : हकीमों ने लिखा है के टाट और चटाई की राख बहते हुए खून को रोकने में बेहद मुफ़ीद है।

नंबर (१०) : कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम अल्लाह के रास्ते में खर्च करते रहो और खुद को अपने हाथों हलाकत में न डालो और नेकी करते रहो। अल्लाह तआला नेकी करने वालों को पसंद करता है ।" [सूर-ए-बकरा : १९५]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

④ शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर ①: इस्लामी तारीख़ | हज़रत अमीर मुआविया ﷺ की पैदाइश और इस्लाम

हज़रत अमीर मुआविया ﷺ बेअसते नब्वी से पांच साल पहले अरब के मशहूर खानदान कुरैश में पैदा हुए , कबील-ए-कुरैश के ख़ानदाने बनु उमय्या से तअल्लुक़ रखते थे जो नसब व हसब और मनसब के एतेबार से बनु हाशिम के बाद सब से ज़ियादा मुअज़्ज़ज़ समझा जाता था। उन के वालिद माजिद हज़रत अबु सुफियान अपने कबीले के मुअज़्ज़ज़ सरदारों में शुमार होते थे, अपने खानदान के साथ फ़तहे मक्का के मौके पर इस्लाम का इज़हार किया, बचपन ही से अज़्म व हौसला के आसार ज़ाहिर थे। नौ उमरी की हालत में अबू सुफियान ने उन को देख कर कहा : मेरा बेटा बड़े सर वाला है और कौम का सरदार बनने के लाइक है। एक कयाफा शनास नेअमीरे मुआविया को देख कर कहा : मेरा खयाल है यह अपनी कौम का सरदार बनेगा। माँ बाप ने उन की तर्बियत खास तौर पर की, मुख्तलिफ़ उलूम व फ़ुनून से आरास्ता किया, लिखना पढ़ना सिखाया, मशहूर मुअर्रिख़ वाकिदी के मुताबिक आप सुलहे हुदैबिया के बाद ईमान ले आए थे। मगर बाज़ मजबूरियों और मसलिहतों की वजह से इस्लाम को छुपाए रखा, इस की बड़ी दलील यह है के वह बद्र, उहुद, खन्दक और गज़्व-ए-हुदैबिया में जवान होने के बावजूद कुफ़्फ़ार की जानिब से शरीक नहीं हुए। इन जंगों में आप का शरीक न होना इस बात की अलामत है के इब्तिदा ही से इस्लाम की सदाकत व सच्चाई आप के दिल में समा गई थी ।

नंबर ②: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा | बकरी का लंबी उम्र पाना

हज़रत उम्मे माबद फर्माती हैं के मेरी वह बकरी जिस पर रसूलुल्लाह ﷺ ने अपना मुबारक हाथ फेर कर दूध दूहा था, उसने बहुत लंबी उम्र पाई, चुनांचे वह हज़रत उमर ﷺ के ज़मान-ए-खिलाफ़त तक ज़िन्दा रही। (हालाँकि बकरी आम तौर पर इतनी लम्बी मुद्दत तक ज़िन्दा नहीं रहती है बिला शुबा यह आप ﷺ का मुअ्जिज़ा ही है)। [सीरते हलबिय्या : ३/१३०]

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में | औलाद की वरासत में माँ बाप का हिस्सा

कुर्आन मे अल्लाह तआला फर्माता है : "माँ बाप (में से हर एक) के लिये मय्यत के छोड़े हुए माल में छटा हिस्सा है, अगर मय्यत के लिये कोई औलाद हो ।" [सूर-ए-निसा : ११]

फ़ायदा: अगर किसी का इन्तेकाल हो जाए और उस के वरसा में माँ बाप और औलाद हैं, तो माँ बाप में से हर एक को अलग अलग छटा हिस्सा देना फर्ज है।

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में | मुशकिलात और परेशानियों के वक़्त की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जो मुसलमान बन्दा किसी मुश्किल मामले में इन कलिमात के ज़रिये अल्लाह तआला से दुआ करेगा तो अल्लाह तआला उस की दुआ क़बूल करेगा वह दुआ यह है :

((لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنْتَ سُبْحٰنَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ)) [तिर्मिज़ी : ३५०५, अन सअद बिन अबी वक्कास ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	कसरत से इस्तिग़फार पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स यह चाहे के कयामत के दिन उस का नाम-ए-आमाल उस को खुश कर दे तो उसे चाहिए के वह ज़ियादा से ज़ियादा इस्तिग़फार करे।"

[तबरानी औसत : ८५१, अन ज़ुबैर बिन अव्वाम ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	कुर्आन को छुपाना और बदलना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : जो लोग अल्लाह तआला की भेजी हुई किताब को छुपाते हैं और इस छुपाने पर थोड़ा सा बदला हासिल करते हैं यह लोग अपने पेटों में आग भर रहे हैं। क़यामत के दिन अल्लाह तआला न उन से कलाम करेगा और न उन को पाक करेगा और उन को दर्द नाक अज़ाब होगा।

[सूर-ए-बकरा : १७४]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की चीज़ें

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम लोगों को जो कुछ दिया गया है वह सिर्फ दुनियावी ज़िंदगी में (इस्तेमाली) चीज़ें हैं और जो कुछ (अज्र व सवाब) अल्लाह के पास है वह इस (दुनिया) से कहीं बेहतर और बाकी रहने वाला है और वह उन लोगों के लिए है, जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं।

[सूर-ए-शूरा : ३६]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	जन्नत की नहरें

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जन्नत में एक नहर पानी की, एक शहेद की, एक दूध की और एक शराब की होगी।"

[तिर्मिज़ी : २५७१, अन मुआविया ؓ]

नोट : जन्नत की शराब में न नशा होगा और न उस में बदबू होगी बल्के बड़ी खुशबूदार और लज़ीज होगी।

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मेहंदी से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ को जब भी कोई कांटा चुभा या ज़ख्म हुआ तो आप ﷺ ने उस पर मेहंदी लगाई।

[इब्ने माजा : ३५०२, अन सल्मा उम्मे राफेअ ؓ]

फ़ायदा : मेहंदी जरासीम को खत्म करती है जलन और सूजन को दूर करती है नीज़ इस में दूसरे भी बहुत से फवाइद हैं।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो आदमी तुम्हारे पास कोई चीज़ बतौरे अमानत रखे, तो (तलब करने पर) उस की अमानत वापस कर दो और जो आदमी तुम्हारे साथ ख़यानत करे, तो तुम (भी उस की तरह) खयानत मत करो।"

[अबू दाऊद : ३५३५, अन अबी हुरैरह ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

५ शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर १ : इस्लामी तारीख — हज़रत अमीर मुआविया ﷺ की सीरत व शख़्सियत

हज़रत अमीर मुआविया ﷺ को ज़ाहिरी हुस्न व जमाल के साथ अल्लाह तआला ने बेशुमार बातिनी खूबियों से भी नवाज़ा था । एक बेहतरीन आदिल व मुन्सिफ हुक्मराँ के सारे औसाफ व कमालात आप की ज़ात में मौजूद थे, उन के बारे में हज़रत उमर ﷺ फर्माया करते थे : तुम लोग कैसर व किसरा की अक्लमंदी व सियासत की तारीफ़ करते हो, हालांके अमीर मुआविया उन से भी बढ़ कर तुम्हारे दर्मियान मौजूद हैं। हज़रत अमीर मुआविया आलमे इस्लाम की उन चंद गिनी चुनी हस्तियों में से एक हैं जिन के एहसान का यह उम्मत कभी बदला नहीं दे सकती, आप को कातिबे वही होने का शर्फ हासिल है, आप इस्लामी दुनिया के वह मज़लूम शख्सियत हैं जिन की ज़ाती खूबी व कमालात को छुपाने की कोशिश की गई है। आप पर ऐसे बे बुनियाद इल्ज़ामात लगाए गए जिन की वजह से आप का वह हसीन ज़ाती किरदार नज़रों से गाइब हो गया जो हुज़ूर ﷺ के फैज़े सोहबत से हासिल किया था, आप की अमानत व दियानत, ऐहसासे ज़िम्मेदारी, किताबते वही और दूसरी सिफात की वजह से हुज़ूर ﷺ ने आप के लिए दुआ फर्माई :"ऐ अल्लाह ! मुआविया को हिदायत करने वाला और हिदायत पाने वाला और उस के ज़रिये हिदायत अता फर्मा ।"

नंबर २ : अल्लाह की कुदरत — कुंवें का पानी

अल्लाह तआला ने इन्सान के लिए पानी का जो इन्तेज़ाम किया है, इस में से एक शक्ल कुंवे की है, बहुत पुराने ज़माने से पानी कुंवे से हासिल किया जाता है; कुंवे में अल्लाह तआला यह इन्तेज़ाम करते हैं के सर्दी के दिनों में गर्म पानी निकलता है और जितनी सख्त सर्दी होती है, उतना ही गर्म पानी निकलता है और गर्मी के दिनों में ठंडा पानी निकलता है और जितनी ज़ियादा गर्मी होती है, उतना ही ठंडा पानी निकलता है, अल्लाह तआला की कुदरत पर कुर्बान जाइए के उस ने हमारे लिए कैसे कैसे इन्तेज़ाम कर रखे हैं।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — इस्लाम में नमाज़ की अहेमियत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "दीन बगैर नमाज़ के नहीं है नमाज़ दीन के लिये ऐसी है जैसा आदमी के बदन के लिए सर होता है।" [तबरानी कबीर : १९, अन इब्ने उमर ﷺ]

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — नींद से उठ कर मिस्वाक करना

हज़रत आयशा ﷺ बयान करती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ रात या दिन में जब भी नींद से उठते तो वुज़ू करने से पहले मिस्वाक करते। [अबू दाऊद : ५७]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	ज़िक्र की फज़ीलत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जो शख्स : ((سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ)) पढ़ता है, तो उस के लिए जन्नत में एक खजूर का पेड़ लग जाता है। [तिर्मिज़ी : ३४६४, अन जाबिर ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	बड़े गुनाह

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "गुनाहे कबीरा यह हैं : अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराना, वालिदैन की ना फ़र्मानी करना, किसी को जान बूझ कर कत्ल करना और झूटी कसम खाना।"

[बुखारी : ६६७५, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की अहेमियत

एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ अपने सहाबा ؓ के साथ बकरी के मरे हुए बच्चे के पास से गुज़रे, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने सहाबा ؓ से पूछा : "तुम्हारा क्या ख़याल है इस को मालिक ने बेक़िमत होने कि वजह से फेंक दिया है ? सहाबा ؓ ने जवाब में अर्ज़ किया : इस के बे कीमत होने की वजह से फेंक दिया है, इस पर रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : अल्लाह के नज़दीक दुनिया इस से भी ज़ियादा बे कीमत है, जितना के यह बकरी इस के मालिक के नज़दीक बे कीमत है।" [तिर्मिज़ी : २३२१, अनिल मुस्तौरिद बिन शद्दाद ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अच्छे बुरे आमाल का बदला

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : (कयामत के दिन) जो शख्स नेकी ले कर हाज़िर होगा, तो उस को उस का अच्छा बदला दिया जाएगा और वह उस दिन हर किस्म की घबराहट से अमन में रहेंगे; और जो शख्स (कुफ्र और शिर्क की) बुराई ले कर आएगा, तो ऐसे लोग औंधे मुंह दोज़ख़ की आग में डाल दिए जाएंगे। तुम को उन्हीं आमाल का बदला दिया जाएगा, जो तुम किया करते थे।

[सूर-ए-नम्ल : ८९ ता ९०]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	दिल के दौरे का इलाज

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास ؓ फर्माते हैं के एक मर्तबा मैं बीमार हुआ तो रसूलुल्लाह ﷺ मुझे देखने के लिए तशरीफ़ लाए और अपना मुबारक हाथ मेरे सीने पर रखा तो आप ﷺ के हाथ की ठंडक मेरे सीने में फैल गई, फ़िर फ़र्माया : इसे दिल का दौरा पड़ा है, इस को हारिस बिन कल्दा के पास ले जाओ, क्योंकि वह एक माहिर हकीम है और उस हकीम को चाहिए के वह मदीना की सात अजवह खजूरें गुठलियों के साथ कूट कर इसे खिलाए। [अबू दाऊद : ३८७५, अन सअ्द ؓ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला से डरते रहो जैसा के उस से डरने का हक़ है और तुम्हें इस्लाम की हालत ही पर मौत आए।" [सूर-ए-आले इम्रान : १०२]

फ़ायदा : अल्लाह तआला से डरने का हक यह है, के जिन चीज़ों के करने से मना किया गया है, उन्हें सिर्फ अल्लाह के खौफ़ और अज़ाब के डर से छोड़ दे और गुनाहों से बचता रहे।

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

६ शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर १ : इस्लामी तारीख — हज़रत अमीर मुआविया ﷺ की खिलाफ़त व हुकूमत

हज़रत अमीर मुआविया ﷺ से हज़रत हसन ﷺ ने सुलह कर के सन ४१ हिजरी में खिलाफ़त आप के सुपूर्द कर दी और हज़रत हसन ﷺ के लिए दस लाख दिरहम सालाना वज़ीफ़ा मुकर्रर कर दिया, इस साल को तारीखे अरब में आमुल जमात का नाम दिया गया है, जिहाद का सिलसिला अज़ सरे नौ जारी करने के लिए लश्कर को दो हिस्सों में तक़सीम कर दिया, एक हिस्सा सर्दी के मौसम में जिहाद करता और दूसरा ताज़ा दम हिस्सा गर्मी के दिनों में मसरुफे जिहाद रहता, आप ने रुमियों से सोला जंगे लड़ीं और लश्कर को वसिय्यत फ़र्माते के रुम का गला घोंट दो उन के दौरे खिलाफ़त में बहरी बेड़े के जरिये जज़ीर-ए-कबरस फ़तह हुआ। अफरीका और रुम के कुछ किले फ़तह हुए, जंगे सजिस्तान के ज़रिये सिंध का कुछ हिस्सा मुसलमानों के कब्ज़े में आया, मुल्के सूडानऔर क़ाबुल फ़तह हुआ और मुसलमान हिंदूस्तान में कन्द अमील के मकाम तक पहुँचे अफ़रीक़ा में सूडान तक इस्लामी पर्चम लहरा दिया, नहरे जैहून को पार करते हुए बुखारा और समरकंद को फ़तह किया, आप ने कुस्तुनतुनिया पर ज़बरदस्त लश्कर रवाना किया। यही वह ग़ज़्वा है जिस में शिरकत करने वालों की मग़फ़िरत की पेशीन गोई अल्लाह के रसूल ﷺ ने दी थी। हजरत अमीर मुआविया ﷺ ने एक कामयाब हुकमरां की हैसियत से बहरी फ़ौज तय्यार की, मिस्र व शाम के साहिली इलाकों में जहाज़ साज़ी के कारखाने क़ायम किए, एक हज़ार सात सौ जंगी जहाज़ रुमियों का मुकाबला करने के लिए तय्यार कराए, इस के अलावा और बहुत सारे कारनामे अंजाम दिए जो तारीख़ के सफ़हात में मौजूद हैं।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — इस उम्मत के बारे में पेशीन गोई

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम लोग हू बहू उन लोगों के तरीकों की पैरवी करोगे, जो तुम से पहले गुज़रे हैं, यहाँ तक के अगर वह (एक जंगली जानवर) सूसमार के सूराख में घुसे होंगे, तो तुम भी उस में घुस जाओगे" लोगों ने अर्ज किया या रसूलल्लाह ﷺ पहले आदमियों से यहूद व नसारा मुराद हैं? रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "और कौन"। [बुखारी : ३४५६, अन अबी सईद खुदरी ﷺ]

खुलासा: आज हम लोग यहूद व नसारा की कितनी पैरवी कर रहें हैं यह किसी को बतलाने की ज़रुरत नहीं, उम्मत के अहवाल से बिल्कुल ज़ाहिर है।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — अल्लाह ही मदद करने वाले हैं

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "अल्लाह तआला ही ज़िंदगी व मौत देता है, अल्लाह तआला के अलावा कोई काम बनाने वाला और मदद करने वाला नहीं है।" [सूर-ए-तौबा : ११६]

खुलासा : इन बातों पर ईमान लाना हर एक मुसलमान के लिये फ़र्ज़ है।

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — घर से निकलते वक्त की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स अपने घर से निकलते वक्त यह दुआ पढ़े, तो उस से कहा जाता है, (हर चीज के शर से) तेरी हिफ़ाज़त कर दी गई और शैतान उस से दूर भाग जाता है" दुआ यह है :

((بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ))

तर्जमा : मैं अल्लाह का नाम ले कर और उसी पर भरोसा करते हुए (घर से निकलता हूँ नेक काम करने की) कुव्वत और (गुनाहों से बचने की) ताकत अल्लाह ही की तरफ़ से है।

[तिर्मिज़ी : ३४२६, अन अनस ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — यतीम की पर्वरिश करने वाला

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: मैं और यतीम की पर्वरिश करने वाला जन्नत में इस तरह होंगे, आप ﷺ ने अपनी शहादत और बीच की उंगली से इशारा कर के फ़र्माया। (यानी जिस तरह यह दोनों उंगलियां करीब करीब हैं, इसी तरह मैं और यतीम की पर्वरिश करने वाला दोनों करीब होंगे)।

[बुखारी : ६००५, अन सहल बिन सअद ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में — बुख़्ल व कन्जूसी करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो लोग खुद भी कन्जूसी करते हैं और दूसरों को भी कन्जूसी करना सिखाते हैं और जो कुछ अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़ल से उन को दिया है उस को छुपाते हैं और हम ने ऐसे ना फर्मानों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब तय्यार कर रखा है।

[सूर-ए-निसा : ३७]

नंबर (७): दुनिया के बारे में — दुनिया की चीज़ें यहीं रह जाएंगी

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है: (दुनिया की) यह सारी चीज़ें दुनियवी ज़िंदगी में ही बरतने के लिए हैं (आखिरत में यह सब काम नहीं आएगा) और आखिरत की (जो नेअ्मतें) आप के रब के पास हैं वह परहेज़गारों (दीन पर चलने वालों) के साथ खास हैं। [सूर-ए-ज़ुख़रुफ़ : ३५]

नंबर (८): आखिरत के बारे में — क़यामत में लोग कहाँ होंगे ?

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा ﷺ ने रसूलुल्लाह ﷺ से दर्याफ़्त किया : (जिस दिन पहली मर्तबा सूर फूंकने से सब ज़मीन व आस्मान टूट फूट जाएंगे) फिर दोबारा बनाए जाएंगे, तो उस दिन लोग कहाँ होंगे ? रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : पुलसिरात पर होंगे। [मुस्लिम : ७०५६]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज — तलबीना से इलाज

हज़रत आयशा ﷺ बीमार के लिए तलबीना तय्यार करने का हुक्म देती थीं और फर्माती थीं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को फ़र्माते हुए सुना के तलबीना बीमार के दिल को सुकून पहुँचाता है और रंज व गम को दूर करता है। [बुखारी : ५६८९, अन आयशा ﷺ]

फ़ायदा: जौ (Barley) को कूट कर दूध में पकाने के बाद मिठास के लिए उस में शहद डाला जाता है; जिसे तलबीना कहते हैं। [तिब्बे नब्वी]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दुनिया में इस तरह रहो जैसे कोई अजनबी परदेसी रहता है या रास्ता चलता मुसाफिर।" [बुखारी : ६४१६, अन इब्ने उमर ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर ①: इस्लामी तारीख — हज़रत अमीर मुआविया ؓ के आदात व अखलाक

हज़रत अमीर मुआविया ؓ इताअते रसूल व इश्के नब्वी और खशिय्यते बारी तआला की ज़िन्दा तस्वीर थे। आप के हिल्म व बुर्दबारी का यह हाल था के आप के मुखालिफीन सख्त कलामी से पेश आते, मगर आप हंसी में टाल देते, हज़रत कबीसा बिन जाबिर ؓ कहते हैं मैं ने मुआविया ؓ से बढ कर किसी को नर्म मिज़ाज नहीं पाया, बसा औकात बुरा भला कहने वालों को इनाम व इकराम से नवाज़ते और फ़र्माते गुस्सा पी जाने में जो मज़ा मुझे मिलता है वह किसी चीज़ में नहीं मिलता, इश्के रसूल ﷺ का हाल यह था के हुज़ुर ﷺ की कुछ चीजों को महफ़ूज़ कर लिया था अपनी वफात से पहले उन्हों ने फ़र्माया: हुज़ूर ﷺ के बाल और नाखून मरने के बाद मेरी आँख कान और नाक में रख कर अल्लाह के हवाले कर देना और हुज़ूर ﷺ की चादर में मुझे कफ़न दे देना, इताअते रसूल ﷺ और इश्के नबी का यह हाल था के अबू मरयम अज़दी से यह हदीस सुनी : जिस शख्स कोअल्लाह ने मुसलमानों पर मुकर्रर किया और उस ने उन के और अपने दर्मियान पर्दे हाइल कर दिये तो अल्लाह उस के और अपने दर्मियान पर्दे हाइल कर देगा। यह हदीस सुनते ही आप ने लोगों की हाजतें अपने सामने पेश करने के लिए एक नुमाइंदा मुकर्रर कर दिया, उन की सादगी का यह आलम था के दमिश्क के बाज़ार में पेवंद लगी हुई क़मीस पहन कर चक्कर लगाते और दिमश्क की जामा मस्जिद में पेवंद लगे कपड़े पहन कर खुतबा देते। गर्ज़ इल्म व फ़ज़ल का यह सूरज दिमश्क में २२ रजबुल सन ६० हिजरी में हमेशा के लिए गुरूब हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

नंबर ②: अल्लाह की कुदरत — आसमान के मुख़्तलिफ़ रंग

अल्लाह तआला ने आसमान पैदा कर के चार (सी, एम, वाई, के) रंगों से मुज़य्यन किया, लेकिन जब उन रंगों में से एक का असर ज़ियादा और दूसरे का कम हो जाता है, तो तीसरा रंग पैदा होता है, अलग़र्ज़ रंगों की कमी ज़ियादती से आसमान कभी नीला, कभी पीला, तो कभी लाल और न जाने कैसे कैसे रंगों में ख़ुद बख़ुद बदल कर ख़ुबसूरत नज़र आता है, फिर उस में सूरज, चाँद और सितारे, सब के लिये अलग अलग रास्ते हैं, जो अपने अपने रास्ते से आता जाता, निकलता और छुपता है, जब के आसमान पर न रास्ते नज़र आ रहे हैं और न रंग बनाने का ख़ज़ाना नज़र आ रहा है। आख़िर यह सारा निज़ाम कहाँ से चल रहा है ? बेशक यह सब अल्लाह की क़ुदरत का नमूना है।

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — अज़ाने जुमा के बाद दुनियावी काम छोड़ देना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है: ऐ ईमान वालो ! जुमा के दिन जब (जुमा की) नमाज़ के लिए अज़ान दी जाए, तो (सब के सब) अल्लाह की तरफ़ दौड़ पड़ो और ख़रीद व फ़रोख़्त छोड़ दो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानते हो। [सूर-ए- जुमा : ९]

फ़ायदा : जुमा की अज़ान सुनने के बाद फौरन जुमा के लिये निकलने की तय्यारी करना और सारे दुनियावी काम काज का छोड़ना ज़रुरी है।

नंबर (४): *एक सुन्नत के बारे में*	तहज्जुद का मस्नून वक़्त

हज़रत असवद ﵁ बयान करते हैं के मैं ने हज़रत आयशा ﵂ से हुज़ूर ﷺ की रात की नमाज़ के बारे में पूछा, तो फ़र्माया : शुरु रात में सो जाते और आख़िर शब में बेदार होते और नमाज़ पढ़ते, फ़िर वापस बिस्तर पर तशरीफ़ ले आते और जब अज़ान होती, तो आप ﷺ बिस्तर से उठते और ग़ुस्ल की हाजत होती, तो ग़ुस्ल फ़र्माते वरना वुज़ू कर के मस्जिद चले जाते। [बुख़ारी : ११४६, अन आयशा ﵂]

नंबर (५): *एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत*	अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने का सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह के रास्ते में जो ख़र्च करेगा,उसे सात सौ गुना सवाब मिलेगा।" [मुस्तदरक हाकिम : २४४१, अन ख़रीम बिन फ़ातिक ﵁]

नंबर (६): *एक गुनाह के बारे में*	हलाक करने वाली चीजें

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हलाक करने वाली सात चीज़ों से बचो,लोगों ने पूछा वह क्या हैं? रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : (१) शिर्क करना (२) जादू करना (३) ना हक़ क़त्ल करना (४) सूद खाना (५) यतीम का माल खाना (६) इस्लामी जंग में पीठ फेर कर भाग जाना (७) पाक दामन औरतों पर तोहमत लगाना।" [बुख़ारी : २७६६, अन अबी हुरैरह ﵁]

नंबर (७): *दुनिया के बारे में*	दुनिया की अहेमियत अल्लाह के नज़दीक

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अगर दुनिया की कीमत अल्लाह तआला के नज़दीक मक्खी के पर बराबर भी होती तो अल्लाह तआला किसी काफ़िर को एक घूंट पानी न पिलाता।" [तिर्मिज़ी : २३२०, अन सहल बिन सअद ﵁]

नंबर (८): *आख़िरत के बारे में*	अहले ईमान के लिए जन्नत के बाला ख़ाने

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, हम उन्हें जन्नत के ऐसे बाला खानों में जगह देंगे, जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, वह उन में हमेशा रहेंगे।" [सूर-ए-अन्कबूत : ५८]

नंबर (९): *तिब्बे नब्वी से इलाज*	धूप में बैठने के नुकसानात

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "धूप में बैठने से बचो, क्योंकि इस से कपड़े ख़राब होते हैं (बदन से) बदबू फूटने लगती है और दबी हुई बीमारियाँ उभर आती हैं।" [मुस्तदरक : ८२६४, अन इब्ने अब्बास ﵁]

नंबर (१०): *कुर्आन की नसीहत*	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ ईमान वालो ! तुम अल्लाह और उस के रसूल के हुक़ूक़ की अदायगी में ख़यानत और कमी न किया करो, और आपस की अमानतों में भी ख़यानत न किया करो, हालांके तुम इस के नुकसान को जानते हो। [सूर-ए-अनफ़ाल : २७]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुरआन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी ﷺ

आप का पूरा नाम खालिद बिन ज़ैद नज्जारी है, अबू अय्यूब उन की कुन्नियत है, हुज़ुर ﷺ हिजरत फ़र्मा कर जब मदीना तशरीफ लाए, तो हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी ﷺ के मेहमान हुए, आप ﷺ ने तकरीबन सात माह उन के घर पर क़याम फर्माया। हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी ﷺ हमेशा दीन की ख़ातिर जान व माल लगाने के लिए तैयार रहते। हुज़ूर ﷺ को जब भी कोई ज़रूरत पेश आती, तो उस को पूरा करने के लिए वह हमेशा भरपूर कोशिश करते थे, इसी लिए हर ग़ज़वे में हुज़ूर ﷺ के साथ रहे। यहाँ तक के हुज़ूर ﷺ के दुनिया से वफ़ात फ़र्माने के बाद भी आप मुस्तकिल दीन के ख़ातिर लंबे लंबे सफर करते रहे। हज़रत अमीर मुआविया ﷺ के ज़मान-ए-खिलाफ़त में जब के उन की उम्र तकरीबन नव्वे साल की थी और तबीअत ना साज़ थी, उस वक्त दीन की ख़ातिर कुसतुनतुनिया का सफ़र किया। जब रास्ते में ज़ियादा तबीअत ख़राब हुई, तो फ़र्माया : मैं ने हुज़ूर ﷺ से सुना है के जो अल्लाह के रास्ते में अपने घर से जितना दूर जा कर मरेगा कयामत के दिन वह उतना ही मुझ से करीब होगा, इस लिए मेरी मौत के बाद भी मेरी लाश को साथ ले चलना और जहाँ तुम्हारी आखरी मंज़िल होगी वहाँ मुझे दफ़्न करना, चुनांचे यह आप ﷺ की करामत थी के आप ﷺ की लाश कई दिन तक साथ रही, उस के बावजूद वह पूरी तरह महफ़ूज़ रही, जब यह इस्लामी काफ़्ला कुसतुनतुनिया पहुँचा, तो वहाँ उन को दफ़्न किया गया। आप की वफ़ात सन ५२ हिजरी में हुई।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — एक मुनाफ़िक की मौत की ख़बर देना

रसूलुल्लाह ﷺ एक सफर से वापस मदीना तशरीफ ला रहे थे, जब मदीना के क़रीब पहुँचे, तो एक सख़्त हवा चली, उस वक्त रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "यह हवा एक मुनाफ़िक की मौत के लिए चली है।" चुनांचे जब मदीना पहुँचे, तो मालूम हुआ के एक बड़ा मुनाफ़िक मर गया है। [मुस्लिम: ७०४१, अन जाबिर ﷺ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — ज़कात की फर्ज़ियत

रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ को यमन भेजते वक्त फर्माया : "यमन वालों को बता देना के अल्लाह तआला ने उन पर उन के माल में ज़कात फर्ज़ की है।"

[बुखारी : १४९६, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

फ़ायदा : अगर किसी के पास निसाब के बराबर माल हो तो उस में से ज़कात अदा करना फर्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — घर में दाख़िल होने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब आदमी अपने घर में दाख़िल हो तो यह दुआ पढ़े :

اللّٰهُمَّ إِنِّىٓ أَسْئَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلَجِ وَخَيْرَ الْمَخْرَجِ
بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَعَلَى اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا

फिर घर वालों को सलाम करे।" [अबू दाऊद : ५०९६, अन अबी मालिक अशअरी ﷺ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | अल्लाह के नाम याद करने पर जन्नत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला के निनान्वे यानी एक कम सौ नाम हैं, जिस शख़्स ने उन को याद कर लिया वह जन्नत में दाखिल होगा।" [बुखारी : ६४१०, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में | दिखलावे के लिए खर्च करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : (वह लोग भी अल्लाह तआला को ना पसंद हैं) जो अपने माल सिर्फ़ लोगों को दिखाने के लिए खर्च करते हैं और न वह अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न यौमे आख़िरत (कयामत के दिन) पर और जिस का साथी शैतान हो गया, तो समझो के वह बहुत ही बुरा साथी है। [सूर-ए-निसा : ३८]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में | नाफर्मानों से नेअ्मतें छीन ली जाती हैं

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : वह ना फ़र्मान लोग कितने ही बाग़, चश्मे, खेतियां और उमदा मकानात और आराम के सामान जिन में वह मज़े किया करतेथे, (सब) छोड़ गए। हम ने इसी तरह किया और उन सब चीज़ों का वारिस एक दूसरी कौम को बना दिया, फिर उन लोगों पर न तो आस्मान रोया औ न ही ज़मीन और न ही उन को मोहलत दी गई। [सूर-ए-दुखान : २५ ता २९]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में | क़यामत के दिन ज़ियादा अमल भी कम लगेगा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अगर कोई अपनी पैदाइश के दिन से मौत के दिन तक बराबर अल्लाह तआला को खूश करने के लिए मस्जिद में पड़ा रहे, तो क़यामत के दिन अपने इस अमल को भी वह बहूत कम समझेगा और तमन्ना करेगा के उस को दुनिया में भेज दिया जाए ताके ज़ियादा से ज़ियादा अज्र व सवाब हासिल कर सके।" [मुसनदेअहमद : १७१९८, अन मुहम्मद बिन अबी उमैरह ﷺ]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज | अनार से मेअ्दे की सफाई

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अनार को उस के अंदरूनी छिल्के समेत खाओ, क्यों के यह मेअ्दे को साफ़ करता है।" [मुसनदे अहमद : २२७२६, अन अली ﷺ]

फ़ायदा : अल्लामा इब्ने कय्यिम رحمه الله फर्माते हैं के अनार जहाँ मेअ्दे को साफ़ करता है, वहीं पुरानी खांसी के लिए भी बड़ा कार आमद फल है।

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "रहम करने वालों पर रहमान रहम करता है तुम ज़मीन वालों पर रहम करो, आस्मान वाला तुम पर रहम करेगा।" [तिर्मिज़ी : १९२४, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा

(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१) शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत सलमान फारसी ﷺ

हज़रत सलमान फारसी ﷺ असफ़हान के करीब जय्यान नामी एक गाँव के रहने वाले थे, आप के वालिद वहाँ के सरदार थे, जिन का मज़हब मजूसियत था, इस लिए आग की पूजा करते थे, हजरत सलमान ﷺ के वालिद उन को कहीं जाने नहीं देते थे, एक मर्तबा उन का बाहर जाना हुआ, उन्होने गिर्जा में इसाइयों को इबादत करते देखा, उन्हें इसाइयों का मज़हब पसंद आया और इसाइयत इख़्तियार की, मगर दिली एतबार से मुत्मइन नहीं थे, दीने हक़ की तलाश में वह असफहान से शाम आए, कुछ अर्से यहाँ क़याम रहा, फिर मौसिल नामी शहर में पहूँचे, वहाँ एक पादरी की खिदमत में चंद साल रहे, फ़िर वहाँ से दूसरे शहर "नसीबीन" में एक पादरी की ख़िदमत में रहे, वहाँ से अम्मूरिया नामी शहर में एक गिरजा में रहे यहाँ के पादरी से मालूम हुआ के अरब में आखरी नबी के ज़ुहूर का वक़्त करीब है, वहाँ एक क़ाफ़्ले के साथ अरब रवाना हुए क़ाफ़्ले वालों ने धोका दिया और गुलाम बना कर एक यहूदी के हाथ बेच दिया। उस यहूदी के जरिये मदीना पहुँचे, हुज़ूर ﷺ जब हिजरत फ़र्मा कर मदीना तशरीफ़ लाए , तो हज़रत सलमान ﷺ ने इस्लाम क़बूल कर लिया, हुज़ूर ﷺ ने हज़रत अबू दर्दा ﷺ को उनका दीनी भाई बनाया था। हुज़ूर ﷺ ने फर्माया : जन्नत तीन आदमियों को बहूत चाहती है, अली, अम्मार और सलमान को। हज़रत सलमान ﷺ बहुत इल्म वाले थे, बड़े बड़े सहाबा इन के इल्म के मोअतरिफ़ थे, हज़रत उमर ﷺ ने इन को इराक़ का गवर्नर बनाया था, लेकिन इन की ज़िंदगी में वही सादगी बाकी रही जो पहले थी, हज़रत सलमान फारसी ﷺ का इन्तेक़ाल सन ३५ हिजरी में हुआ।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — हुद हुद

अल्लाह तआला ने खूबसूरत और अजीब व गरीब हुद हुद नामी एक परिंदा पैदा किया, उस के सर पर खूब सूरत सा ताज होता है, पर में बेल बूटे की नक्श व निगारी होती है चोंच ऐसी बनाई के मज़बूत से मज़बूत दरख़्त को खोद कर अपना घोंसला बना लेता है, अजीब बात यह है के उस परिंदे को अल्लाह तआला ने इन्जिनियरिन्ग का हुनर दिया है के कहाँ, किस ज़मीन के अंदर और कितनी गहराई में पानी है, वह बता देता है, यह अल्लाह की कुदरत है के एक परिंदे को इन्जिनियरिन्ग जैसा हुनर अता किया है, यही वजह है के हज़रत सुलेमान ﷺ का कासिद हुद हुद परिंदा था और उस को अक्सर व बेशतर साथ रखते थे।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — जमात से नमाज़ न पढ़ना

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास ﷺ से किसी ने पूछा के एक शख्स दिन भर रोज़ा रखता है और रात भर नफ्लें पढ़ता है मगर जुमा और जमात में शरीक नहीं होता (उस के मुतअल्लिक़ क्या हुक्म है) उन्हों ने फ़र्माया: "यह शख्स जहन्नमी है।"

[तिर्मिज़ी : २१८, अन मुजाहिद]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	बलंदी पर चढ़ने और उतरने पर ज़िक्र

रसूलुल्लाह ﷺ और आप के लश्कर के लोग जब बलंदी पर चढ़ते तो तकबीर اَللّٰهُ اَكْبَرُ और जब नीचे उतरते तो तसबीह سُبْحَانَ اللّٰهِ पढ़ते। [अबू दाऊद : २५९९, अन अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	मस्जिद बनाने की फज़ीलत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस शख़्स ने अल्लाह का घर (यानी मस्जिद) बनाया, तो उस के लिए अल्लाह उसी जैसा घर जन्नत में बनाएगा।" [मुस्लिम : ११९०, अन उस्मान बिन अफ़्फ़ान ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	मस्जिद में दुनिया की बातें करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "एक ज़माना ऐसा आएगा के लोग मस्जिद में हल्के लगा कर दुनियावी बातें करेंगे, तुम को चाहिए के उन लोगों के पास भी न बैठो, अल्लाह को उन लोगों से कोई वास्ता नहीं।" [मुस्तदरक : ७९१६, अन अनस बिन मालिक ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की मिसाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मेरा दुनिया से कोई वास्ता नहीं, मेरी और दुनिया की मिसाल तो बिल्कुल उस मुसाफिर की सी है जो (सख़्त गर्मी में) किसी पेड़ के साए में आराम करे और फ़िर उसे छोड़ कर चल दे।" [तिर्मिज़ी : २३७७, अन इब्ने मसऊद ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले जहन्नम का हाल

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो लोग मुन्किर (काफिर) हैं उन के लिए दोज़ख की आग है; न तो उन पर मौत ही का हुक्म किया जाएगा के वह मर जाएँ और न दोज़ख का अज़ाब ही उन से हल्का किया जाएगा। हम हर ना कद्रे मुन्किर को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं।" [सूर-ए- फ़ातिर : ३६]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	ज़हेर और जादू से हिफाज़त

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने सुबह सुबह बग़ैर कुछ खाए पिये मदीना की सात अजवा खजूरें इस्तेमाल कर लीं, उस को न तो उस दिन ज़हेर से नुकसान होगा और न जादू का असर होगा।" [बुखारी : ५७६९, अन सअद ؓ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ इमान वालो ! मुसीबतों पर सब्र करो और दुश्मन के मुक़ाबले में साबित क़दम रहोऔर हर वक़्त तैयार व आमादा रहो और अल्लाह से डरते रहो, ताके तुम अपने मक़सद में कामयाब हो जाओ। [सूर-ए-आले इमरान : २००]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

१० शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी ﷺ

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी ﷺ का पूरा नाम जुंदुब बिन जुनादा था, हज़रत अबूज़र ﷺ पहले शख़्स हैं, जिन्होंने हुज़ूर ﷺ की पहली मुलाक़ात के वक़्त अस्सलामु अलैकुम कहा था; हुज़ूर ﷺ ने जवाब में वअलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह फ़र्माया। इस तरह सलाम करने का रिवाज शुरू हुआ, हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी ﷺ मक्का में मुसलमान हुए और वापस आकर अपने गाँव में दावत देना शुरू किया, सब से पहले उन के भाई अनीस ग़िफ़ारी ﷺ मुसलमान हुए, इन दोनों की चंद महीनों की मेहनत से क़बील-ए-ग़िफ़ार के अक्सर लोग मुसलमान हो गए और जो रह गए वह हुज़ूर ﷺ की मदीना हिजरत के बाद मुसलमान हो गए, ग़ज़व-ए-खंदक के बाद हज़रत अबूज़र ﷺ मदीना आकर हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में रहने लगे, आप ﷺ के इन्तेकाल के बाद शाम के इलाके में चले गए, हज़रत उमर ﷺ के ज़माने तक वहीं रहे, वहां के लोगों का दुनिया की तरफ़ मैलान देख कर उन्हें दुनियादारी से रोकने में सख़्ती करने लगे, हज़रत उस्मान ﷺ ने अपने ज़मान-ए-ख़िलाफ़त में उन्हें मदीना बुला लिया, लेकिन अबूज़र ﷺ यहाँ भी ज़ियादा दिन नहीं रह सके, हज़रत उस्मान ﷺ के मशवरे से वह रब्ज़ह नामी देहात में चले गए और वहीं सन ३२ हिजरी में आप का इन्तेकाल हुआ।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — जंगे बद्र में सहाबा ﷺ के हक़ में दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ जंगे बद्र में तीन सौ तेरह (या इस से कुछ ज़ियादा) सहाबा को ले कर निकले और दुआ की ऐ खुदा ! यह लोग नंगे बदन हैं कपड़े दे, नंगे पाँव हैं सवारी अता फ़र्मा, भूके हैं खाना देदे इस दुआ का यह असर हुआ के जब यह लोग वापस हुए तो हर शख़्स के पास एक या दो ऊँट, कपड़े और खाने की चीज़ें मौजूद थीं।

[अबू दाऊद : २७४७, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — हमेशा सच बोलो

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम सच्चाई को लाज़िम पकड़ो और हमेशा सच बोलो, क्योंकि सच बोलना नेकी के रास्ते पर डाल देता है और नेकी जन्नत तक पहुँचा देती है।"

[बुख़ारी : ६६३९, अन अब्दुल्लाह ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — वुज़ू के दर्मियान की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ वुज़ू के दौरान यह दुआ पढ़ते थे :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ذَنْبِيْ وَوَسِّعْ لِيْ فِيْ دَارِيْ وَبَارِكْ لِيْ فِيْ رِزْقِيْ

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मेरे गुनाहों को माफ़ फ़र्मा और मेरे घर में वुसअत और रिज़्क़ में बरकत अता फ़र्मा।

[अमलुलयौम वल्लैलह लिन्नसई : ८०, अन अबी मूसा ﷺ]

नंबर ⑤: इस्लामी तारीख	वालिद के दोस्तों के साथ अच्छा बर्ताव करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "नेकियों में बेहतरीन नेकी यह है के आदमी अपने वालिद के दोस्तों के साथ अच्छा बर्ताव करे।"

[तिर्मिज़ी : १९०३, अन इब्ने उमर رضي الله عنه]

नंबर ⑥: एक गुनाह के बारे में	दीन के खिलाफ़ साज़िश करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : उन खयानत करने वाले लोगों की हालत यह है के लोगों से तो परदा करते है और अल्लाह ताआला से नही शरमाते, जब के अल्लाह तआला उस वक्त भी उन के पास होता है, जब यह रात को ऐसी बातों का मशवरा करते हैं जिन को अल्लाह पसंद नहीं करता और अल्लाह तआला उन की तमाम कारवाइयों को जानता है।

[सूर-ए-निसा : १०८]

नंबर ⑦: दुनिया के बारे में	दुनिया की ज़िंदगी खेल तमाशा है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : यह दुनिया की ज़िंदगी तो सिर्फ़ खेल तमाशा है, अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाओ और तक़्वा इख़्तियार करो, तो वह तुम को तुम्हारा अज्र व सवाब अता फ़र्माएगा और तुम से तुम्हारा माल तलब नहीं करेगा (और) अगर वह तुम से तुम्हारा माल तलब करने लगे और आख़री हद तक तलब करता रहे तो तुम कंजूसी करने लगो और तुम्हारी ना गवारी को ज़ाहिर कर दे।

[सूर-ए-मुहम्मद : ३६ ता ३७]

नंबर ⑧: आख़िरत के बारे में	जन्नती अल्लाह तआला का दीदार करेंगे

रसूलुल्लाह ﷺ ने लैलतुल्बद्र में चाँद को देखा और फर्माया : "तुम लोग अपने रब को इसी तरह देखोगे जिस तरह इस चाँद को देख रहे हो, तुम उस को देखने में किसी किस्म की परेशानी महसूस नहीं करोगे।"

[बुखारी : ५५४, अन जरीर رضي الله عنه]

नंबर ⑨: तिब्बे नब्वी से इलाज	फोड़े फुंसी का इलाज

आप ﷺ की बीवीयों में से एक बीवी बयान फ़र्माती हैं के एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ मेरे पास तशरीफ़ लाए और दर्याफ़्त फ़र्माया : क्या तेरे पास ज़रीरह है ? (चिरायता) मैं ने कहा: हाँ ! तो आप ﷺ ने उसे मंगाया और अपने पैर की उंगलियों के दर्मियान जो फुंसी थी उस पर रख कर यह दुआ फ़र्माई :

((اَللّٰهُمَّ مُطْفِئَ الْكَبِيْرِ، وَمُكَبِّرَ الصَّغِيْرِ اَطْفِهَا عَنِّىْ)) तर्जमा : ऐ बड़े को छोटा और छोटे को बड़ा करने वाले अल्लाह ! इस ज़ख्म को ख़त्म कर दे. चुनांचे वह फुंसी अच्छी हो गई।

[मुस्तदरक : ७४६३, अन बअ्ज़ि अज़्वाजिन्नबिय्यि ﷺ]

नंबर ⑩: नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "कुर्आन पढ़ा करो, क्योंकि कुर्आन कयामत के रोज़ अपने पढ़ने वालों की शफाअत करेगा।"

[मुस्लिम : १८७४, अन अबी उमामा رضي الله عنه]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(११) शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम ﷺ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम ﷺ मस्जिदे नब्वी के दूसरे मुअज़्ज़िन थे, आप के वालिद का नाम क़ैस बिन ज़ाइदा और वालिदा का नाम आतिका बिन्ते अब्दुल्लाह था, जिन्हें उम्मे मकतूम कहा जाता था, उसी नाम की तरफ मंसूब हो कर वह मशहूर हैं, आप ﷺ ने नाबीना होने के बावजूद दीन सीखने में कोई कमी नहीं की, बिल्कुल शुरु में मुसलमान हो गये थे, क़ुर्आने पाक में तकरीबन १६ आयात हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम ﷺ के हक़ में नाज़िल हुई, जिस की वजह से हुज़ूर ﷺ आप का बड़ा इकराम फ़र्माते थे, जब मदीना मुनव्वरा में तालीम के लिए मुस्अब बिन उमैर ﷺ को हुज़ूर ﷺ ने रवाना किया, तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम उन के साथ थे, हुज़ूर ﷺ जब मदीना मुनव्वरा से कहीं तशरीफ ले जाते तो मदीना में अपना नाइब मुकर्रर करते थे, फतहे मक्का के मौक़े पर हुज़ूर ﷺ ने मदीना में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम को अपना नाइब बनाया था, वह नाबीना होने बावजूद हर वक्त अल्लाह के रास्ते में जाने के लिए तय्यार रहते, सन १५ हिजरी में हज़रत उमर ﷺ के ज़माने में जंगे क़ादसिया में शहीद हुए।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — समुन्दरी मछली

जिस तरह अल्लाह तआला ने हमारे लिये ज़मीन पर बे शुमार ग़िज़ाएँ पैदा फ़र्माईं इसी तरह समुन्दर में बेशुमार क़िस्म की मछलियों को हमारी ग़िज़ा बना दिया। लोग हज़ारों साल से समुन्दरी मछलियों का शिकार कर के अपनी ग़िज़ा हासिल कर रहे हैं। लेकिन आज तक मछलियाँ ख़त्म नहीं हुई। और अजीब बात यह है के खारे और मीठे समुन्दर की मछलियों के ज़ायक़े में एक ख़ास फ़र्क़ भी होता है। बेशक यह अल्लाह की कुदरत और बन्दों पर उस की बड़ी इनायत है जिस ने उन के लिये मछली जैसी अहम ग़िज़ा का इन्तेज़ाम फ़र्माया।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — खड़े हो कर नमाज़ पढ़ना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है: "नमाज़ में अल्लाह के सामने आजिज़ बने हुए खड़े हुआ करो।"

[सूर-ए- बक़रह : २३८]

फ़ायदा : अगर कोई शख्स खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने की ताक़त रखता हो तो उस पर फ़र्ज़ और वाजिब नमाज़ खड़े हो कर पढ़ना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — अपने साथियों से मश्वरा करना

हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़र्माते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से ज़ियादा सहाब-ए-किराम के साथ मश्वरा करते हुए किसी को नहीं देखा।

[तिर्मिज़ी : १७१४]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	क़र्ज़ माफ़ करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "एक ताजिर लोगों को क़र्ज़ दिया करता था, फ़िर जब यह देखता के कोई मजबूर है, तो अपने आदमियों से कहता के उस के क़र्ज़ को माफ़ कर दो, उम्मीद है के अल्लाह हम को भी माफ़ कर देगा। (जब वह मर गया) तो अल्लाह तआला ने उस की मग़फ़िरत फ़र्मा दी।"

[बुख़ारी : २०७८, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	अपने इल्म को छुपाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अगर किसी शख़्स से कोई (इल्मे दीन की) बात पूछी गयी और उस ने उस को छुपाया हालांके वह चीज़ उस को मालूम है, तो क़यामत के दिन उस के मुंह में आग की लगाम दी जाएगी।"

[तिर्मिज़ी : २६४९, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	इन्सानों की हिर्स व लालच

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अगर आदमी के पास माल व दौलत की दो वादियां हों तो वह तीसरे की तलब करेगा और आदमी का पेट तो बस क़ब्र की मिट्टी ही भर सकती है।"

[बुख़ारी : ६४३६, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले जन्नत का खाना पीना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : यक़ीनन अल्लाह तआला से डरने वाले अमन की जगह में होंगे, (यानी) बागों और चश्मों में बारीक और मोटे रेशम का लिबास पहेन कर एक दुसरे के आमने सामने बैठे होंगे, यह सब बातें इसी तरह होंगी और हम बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरों से उन की शादी कर देंगें और वह उन बागों में इतमिनान से हर किस्म के मेवे मंगाते होंगे।

[सूर-ए-दुख़ान : ५१ ता ५५]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	इस्मिद सुरमा से आँखों का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम्हारे सुरमों में सब से बेहतर सुरमा "इस्मिद" है जो आँखों की रोशनी बढ़ाता है और पल्कों के बालों को उगाता है।"

[अबू दाऊद : ३८७८, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : यतीमों के माल उन को देते रहा करो और अच्छी चीज़ को बुरी चीज़ से न बदलो और उन के माल अपने मालों के साथ मिला कर मत खाओ, ऐसा करना यक़ीनन बहुत बड़ा गुनाह है।

[सूर-ए-निसा : २]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१२) शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत सुहैब रूमी ﷺ

आप का नाम सुहैब बिन सिनान था, आप असलन अरब हैं लेकिन बचपन में रूमी फ़ौज ने उन के गावं पर हमला कर के लूट लिया था और बच्चों को उठा ले गए , उन में एक यह भी थे, उन फ़ौजियों ने सारे बच्चों को गुलाम बना कर बेच दिया, जब वह बड़े हुऐ तो वहां से भाग निकले और मक्का चले आए, चूंकि आप रूम से आकर मक्का में बसे, इस लिए लोग सुहैब रूमी कहने लगे, मक्का में आप ﷺ ने तिजारत का पेशा इख़्तियार किया, अल्लाह तआला ने उन के माल में बड़ी बरकत दी और वह काफ़ी मालदार हो गए। एक मरतबा हज़रत सुहैब रूमी ﷺ तिजारती सफ़र से वापस हुए, तो हुज़ूर ﷺ की ईमानी दावत के शुरू होने की ख़बर सुनी, हालात की तहक़ीक़ की, आप ﷺ से मिलने दारे अरक़म पहुंचे, तो उसी वक़्त हज़रत अम्मार बिन यासिर ﷺ भी पहुंचे दोनों ने एक साथ इस्लाम क़बूल किया, हिजरत के दौरान जब कुफ़्फ़ार ने रोकना चाहा, तो अपने माल व दौलत का पता बता कर उन को वापस किया और फ़िर हिजरत फ़र्माई, अल्लाह तआला ने उन के इस अमल की तारीफ़ करते हुए फ़र्माया : "लोगों में बाज़ ऐसे हैं के अल्लाह की रज़ामंदी हासिल करने के लिए अपनी जान भी फ़रोख़्त कर देते हैं।" [सूर-ए-बक़रह :२०७] उन का इन्तेक़ाल ७३ साल की उम्र में सन ३८ हिजरी में मदीना में हुआ और वहीं दफ़न हुए।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — खजूरों में बरकत

हज़रत अबू हुरैरह ﷺ चंद खजूरें लेकर रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए,और अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल इन खजूरों में बरकत की दुआ कर दीजिए, रसूलुल्लाह ﷺ ने उसे लिया और बरकत की दुआ फ़र्माई और फ़र्माया : इस को अपनी थैली में डाल दो, जब खाना चाहो, तो हाथ डाल कर ले लेना,लेकिन थैली को कभी खाली मत करना, हज़रत अबू हुरैरह फ़र्माते हैं मैं एक मुद्दत तक उस में से अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करता रहा, खुद भी खाता और घर वालों और मेहमानों को भी खूब खिलाता रहा,वह थैली मेरी कमर से कभी अलग नहीं हुई, लेकिन जिस दिन हज़रत उस्मान ﷺ का क़त्ल हुआ,उस दिन वह थैली मुझ से खो गई। [तिर्मिज़ी : ३८३९]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नेकियों का हुक्म देना और बुराइयों से रोकना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है के तुम ज़रूर बिज़्ज़रूर भलाइयों का हुक्म करो और बुराइयों से रोको, वरना क़रीब है के अल्लाह तआला गुनहगारों के साथ तुम सब पर अपना अज़ाब भेज दे, उस वक़्त तुम अल्लाह तआला से दुआ मांगोगे तो क़बूल न होगी।" [तिर्मिज़ी : २१६९, अन हुज़ैफ़ा ﷺ]

फ़ायदा : नेकियों का हुक्म देना और बुराइयों से रोकना उम्मत के हर फ़र्द पर अपनी हैसियत और ताक़त के मुताबिक़ लाज़िम और ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — वुज़ू के बाद की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने अच्छी तरह वुज़ू किया, फ़िर इस दुआ को पढ़ा उस के लिए जन्नत

के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाए। [तिर्मिज़ी : ५५, अन उमर ﷺ]

أَشْهَدُ أَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَاشَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ،

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — वालिदैन की क़ब्र की ज़ियारत करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स हर जुमा को वालिदैन की, या उन में से किसी एक की क़ब्र की ज़ियारत करता है तो उस की मग़फ़िरत कर दी जाती है और उसे (वालिदैन) का फ़र्मांबरदार लिख दिया जाता है।" [तबरानी कबीर : १९३ अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में — मुरतद की सज़ा जहन्नम है

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : यक़ीनन जो लोग ईमान लाए, और फिर काफ़िर हो गए, फिर मुसलमान हुए, फिर काफ़िर हो गए, फिर अपने कुफ़्र में बढ़ते चले गए, तो ऐसे लोगों को अल्लाह तआला हरगिज़ नहीं बख़्शेगा और उन को सीधी राह भी नहीं दिखाएगा। [सूर-ए-निसा : १३७]

नंबर (७): दुनिया के बारे में — दुनियादारों से दूर रहना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : आप ऐसे शख़्स से अपना खयाल हटा लीजिये,जो हमारी नसीहत से मुंह मोड़ ले और दुनियवी ज़िन्दगी के अलावा उस का कोई मक़सद न हो, उन लोगों के इल्म की पहुंच यहीं तक है, (यानी वह लोग सिर्फ़ इसी दुनिया की चीज़ों के बारे में जानते हैं और इसी दुनिया ही को मक़सद बना रखा है)। [सूर-ए-नजम : २९ ता ३०]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में — हौज़े कौसर

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मेरे हौज़ की मसाफ़त एक महीने की है, जिस का पानी दूध से ज़ियादा सफ़ेद है और उस की ख़ुश्बू मुशक से ज़ियादा अच्छी है और उस के प्याले आस्मान के सितारों की तरह बहुत ज़ियादा चमकदार हैं, जो उसे पियेगा, कभी प्यासा न होगा।" [बुख़ारी : ६५७९, अन इब्ने अम्र ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज — चुकंदर (बीट रूट) के फ़वाइद

एक मर्तबा उम्मे मुन्ज़िर बिन्ते कैस ﷺ के घर पर रसूलुल्लाह ﷺ के साथ साथ हज़रत अली ﷺ भी खजूर खा रहे थे, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "ऐ अली ! बस करो, इस लिए के तुम अभी कमज़ोर हो।" उम्मे मुन्ज़िर का बयान है के मैं ने उन के लिए चुकंदर और जौ का खाना तैयार किया, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अली ﷺ से फ़र्माया : "ऐ अली ! इस को खाओ, इस लिए के यह तुम्हारे लिए फ़ायदेमंद है।" [अबू दाऊद : ३८५६]

फ़ायदा : चुकंदर और जौ कुव्वत बख़्शते हैं और कमज़ोरी को दूर करते हैं।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम अपने मरने वाले रिश्ते दार को "لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ" की तलक़ीन किया करो।" [मुस्लिम : २१२३ अन अबी सईद ख़ुदरी ﷺ]

फ़ायदा : तलक़ीन का मतलब यह है के कलिमे को इस तरह आवाज़ से पढ़ना चाहिये के मरने वाला सुने और सुन कर वैसा ही ख़ुद भी पढ़ने लगे।

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

⑬ शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हर्ब ﷺ

हज़रत अबू सुफ़ियान ﷺ का नाम सख़्र था, हुज़ूर ﷺ की नुबुव्वत से पचास साल पहेले पैदा हुए, आप ﷺ से वह उम्र में १० साल बड़े थे। मुसलमान होने से क़ब्ल वह हुज़ूर ﷺ और इस्लाम के बड़े दुश्मन थे, कई मर्तबा मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंग की, जंगे उहुद में कुफ़्फ़ार की क़ियादत की, लेकिन आप ﷺ की बेटी उम्मे हबीबा ﷺ शुरू ही में मुसलमान हो गईं थीं और अपने शौहर के साथ हब्शा हिजरत कर गईं थीं, उन के शौहर वहां मर गए तो हुज़ूर ﷺ ने बादशाहे हब्शा को अपना वकील मुक़र्रर फ़र्मा कर उन से निकाह कर लिया, इस तरह हज़रत अबू सुफ़ियान ﷺ हुज़ूर ﷺ के खुसर हो गये। हज़रत अबु सुफ़ियान ﷺ फतहे मक्का से एक दिन क़ब्ल रात में मुसलमान हुए, इस्लाम क़बूल करने के बाद हुज़ूर ﷺ से बहुत मोहब्बत हो गई और दीने इस्लाम की खातिर जान व माल लगा देने के लिए हर वक्त तय्यार रहते, चुनांचे जंगे हुनैन के मौक़े पर कुफ़्फ़ार से मुक़ाबला करते हुए उन की एक आँख फूट गई थी, रूम के मुक़ाबले में जंगे यरमूक के मौके पर मैदान में बहादुरी से आगे आगे मुक़ाबला करते रहे, दूसरी आँख भी इस जंग में फूट गई। हज़रत उस्मान ﷺ के ज़मान–ए–खिलाफ़त में सन ३३ हिजरी में ९३ साल की उम्र में इन्तेक़ाल फर्माया।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — तितली अल्लाह की निशानी है

अल्लाह तआला ने इस दुनिया को रंग बिरंगी चीज़ों से सजाया है, उन में से एक छोटी सी नाज़ुक मखलूक़ तितली है, तितली दिन भर बाग़ीचों और फुल्वारी के फूलों के आस पास मंडलाती रहती है और उस के रस चूस कर अपना पेट भरती है, उस के बदन पर इतने खुबसूरत पर होते हैं, के जैसे किसी माहिर तस्वीर बनाने वाले ने उन पर रंग बिरंगी तस्वीरें बनाई हों, और अजीब बात यह है के इस के दोनों पैरों की डिज़ाइन एक जैसी होती है। यह अल्लाह तआला की क़ुदरत की कारीगरी है, जिस ने एक छोटी सी मखलूक तितली को इत्ने रंग अता किए हैं।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — चंद बातों पर ईमान लाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तक कोई बन्दा इन चार बातों पर ईमान न लाए, तो वह मोमिन नहीं हो सकता (१) इस बात की गवाही दे के अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लाइक़ नहीं। (२) (इस की भी गवाही दे के) मैं अल्लाह का रसूल हुं मुझे हक़ के साथ भेजा है। (३) मरने और फिर दोबारा ज़िन्दा होने का यक़ीन रखे। (४) तक़दीर पर ईमान लाए।" [तिर्मिज़ी : २१४५, अन अली ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — मुसाफह से पहेले सलाम करना

हज़रत जुंदुब ﷺ से रिवायत है के आप ﷺ की आदते शरीफ़ा थी के जब भी आप ﷺ अपने अस्हाब से मिलते तो सलाम किये बग़ैर मुसाफह नहीं फर्माते थे। [मुअजमे कबीर : १७००, अन जुंदुब ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	नमाज़े तहज्जुद पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तहज्जुद की नमाज़ का एहतेमाम किया करो, इस लिए के तुम से पहेले के नेक लोगों का अमल रहा है, रात की नमाज़ अल्लाह तआला से क़ुरबत का ज़रिया है, गुनाहों से बचाने वाली है, खताओं का कफ़्फ़ारा है और जिस्म से बीमारी को दूर करने वाली है।"

[तिर्मिज़ी : ३५४९, अन बिलाल ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	पेशाब के छींटों से न बचना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "पेशाब के छींटों से बचो, क्योंकि आम तौर पर पेशाब में एहतियात न करने की वजह से ही क़ब्र का अज़ाब होता है।"

[दारे क़ुतनी : ४६९, अन अनस ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया का माल फितना है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हर उम्मत के लिए एक फितना होता है और मेरी उम्मत का फितना माल है।"

[तिर्मिज़ी : २३३६, अन कअब बिन अयाज़ ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले जहन्नम की ग़िज़ा

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : हम ने ज़क्कूम का दरख़्त ज़ालिमों के लिए एक फितना व आज़माइश बनाया है, वह ऐसा दरख़्त है, जो जहन्नम की तह से निकलता है, उस के फल ऐसे हैं जैसे शयातीन के सर, तो यह अहले जहन्नम उसी ज़क्कूम को खाएँगें और उसी से अपने पेटों को भरेंगे, फिर उस के ऊपर उन को सख़्त खौलता हुआ पानी मिला कर दिया जाएगा।

[सूर–ए–साफ़्फ़ात : ६२ ता ६७]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	हरीरा के फवाइद

हज़रत आयशा ﷺ फर्माती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ के घर वालों में से जब किसी को बुखार आता तो आप ﷺ हरीरह इस्तेमाल करने का हुक्म देते और फर्माते के यह रंजीदा आदमी के दिल को कुव्वत देता है और बीमार के दिल से रंज व ग़म को इस तरह दूर करता है, जिस तरह तुम पानी से अपने चेहरे के मैल कुचैल को दूर करती हो।

[इब्ने माजा : ३४४५, अन आयशा ﷺ]

फ़ायदा : जौ के आटे को भून कर उस में घी, मेवे और शकर डाल कर पकाया जाता है जिस को हरीरह कहते हैं।

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : ऐ इमान वालो ! तुम आपस में एक दूसरे के माल को नाहक़ मत खाओ, मगर जो माल आपस की रज़ामंदी से की हुई खरीद व फरोख़्त से हासिल हो, तो उस को खाने में कोई हर्ज नहीं।

[सूर–ए–निसा : २९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१४) शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत सुराक़ा बिन मालिक ﷺ

हज़रत सुराक़ा बिन मालिक मक्का मुकर्रमा के क़रीब कदीद नामी गांव के रहने वाले थे, हुज़ूर ﷺ और अबू बक्र ﷺ जब मक्का से मदीना हिजरत कर रहे थे उस वक्त उन्होंने ही पकड़ने के लिए पीछा किया था, लेकिन अल्लाह की मदद से सुराक़ा के घोड़े के पैर धंस गए, उस ने हुज़ूर ﷺ से माफ़ी मांगी, आप ﷺ ने माफ़ कर दिया और फ़र्माया : "तुम उस वक्त कैसे लगोगे, जब तुम किस्रा के कंगन पहनोगे" सुराक़ा ने हुज़ूर ﷺ के पीछा करने वालों को वापस करने का वादा किया, वापसी में तमाम कुफ्फ़ार को बहाना बना कर रोक दिया, जब इस का यक़ीन हो गया के हुज़ूर ﷺ और अबू बक्र ﷺ मदीना पहुँच गए होंगे, तो लोगों को अपना वाकिआ बताया, अबू जहल इन पर बहुत खफ़ा हुआ, हज़रत सुराक़ा एक अच्छे शायर थे, बरजस्ता उन्होंने शेअर में जवाब दिया के "ऐ अबू जहल ! अगर तू मेरी जगह होता, तो तुझे मालूम हो जाता के मोहम्मद ﷺ एक सच्चे रसूल हैं, जिन के पास खुली हुई निशानी है, उन की बराबरी कौन कर सकता है"? जब मक्का फ़तेह हुआ, तो हज़रत सुराक़ा ने हुज़ूर ﷺ की खिदमत में हाज़िर हो कर इस्लाम कबूल कर लिया, हज़रत उमर ﷺ के ज़मान–ए–खिलाफ़त में किसरा का खज़ाना आया, तो हज़रत उमर ﷺ ने हज़रत सुराक़ा ﷺ को किसरा का लिबास, ताज और कंगन पहेनाए तो सारे मुस्लमानों ने "اَللّٰهُ اَكْبَر" की आवाज़ लगाई और कहा के आज हुज़ूर ﷺ की पेशीन गोई हूबहू पूरी हुई, हज़रत सुराक़ा ﷺ का इन्तेक़ाल हज़रत उस्मान ﷺ कि खिलाफ़त में सन २४ हिजरी में हुआ।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — पत्थर का हुज़ूर ﷺ को सलाम करना

रसूलुल्लाह ﷺ नुबुव्वत के बाद फ़र्माया करते थे : "मैं मक्का के उस पत्थर को अभी भी जानता हूँ, जो मुझे नुबुव्वत से पहेले सलाम किया करता था।" [मुस्लिम : ५९३९, अन जाबिर बिन समुरह ﷺ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — पाँचों नमाज़ों की पाबंदी करना

रसूलुल्लाह ﷺ नें फर्माया : "जो शख्स पाँच फर्ज़ नमाज़ों को पाबंदी से पढ़ता है, वह अल्लाह तआला की इबादत से गाफिल रहने वालों में शुमार नहीं होता।" [इब्ने खुज़ैमा : १०७९, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — रहमत तलब करने की दुआ

दीन पर या किसी नेक काम पर जमे रहने और रहमत हासिल करने के लिए इस दुआ का एहतेमाम करना चाहिए :

﴿رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ﴾

तर्जमा : ऐ हमारे परवर्दिगार ! हमें हिदायत देने के बाद हमारे दिलों को मत फेरिये और अपनी तरफ से हमें रहमत अता फर्माइये, बेशक आप ही सब कुछ देने वाले हैं। [सूर–ए–आले इमरान : ८]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	तिलावते क़ुर्आन की फ़ज़ीलत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "नमाज़ में क़ुर्आन शरीफ की तिलावत, बग़ैर नमाज़ की तिलावत से बेहतर है और बग़ैर नमाज़ की तिलावते क़ुर्आन, "سُبْحَانَ اللّٰه" और "اَللّٰهُ اَكْبَر" की तसबीह पढ़ने से बेहतर है, "سُبْحَانَ اللّٰه" और "اَللّٰهُ اَكْبَر" की तसबीह सदक़े से अफ़ज़ल है और सदक़ा रोज़े से अफ़ज़ल है और रोज़ा जहन्नम से बचने की ढाल है।" [मिश्कात : २१६६, अन आयशा ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	हराम चीज़ों का बयान

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम पर मरा हुआ जान्वर, खून और खिन्ज़ीर का गोश्त हराम कर दिया गया है और वह जान्वर (भी) जिस पर (ज़बह करते वक़्त) अल्लाह के अलावा किसी दूसरे का नाम लिया गया हो । [सूर-ए-मायदा : ३]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनियावी ज़िन्दगी की हक़ीक़त

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम खूब जान लो के दुनियावी ज़िन्दगी (बचपन में) खेल कूद और (जवानी में) ज़ेब व ज़ीनत और बाहम एक दूसरे पर फ़ख्र करना (बुढ़ापे में) माल व औलाद में एक दूसरे से अपने को ज़ियादा बताना है । [सूर-ए-हदीद : २०]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जन्नत की इमारत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "(जन्नत की इमारत) की एक ईंट चांदी की है और एक ईंट सोने की है और उस का गारा खालिस मुश्क है और उस की कंकरियां मोती और याक़ूत हैं और उस की मिट्टी ज़ाफ़रान है।" [तिर्मिज़ी : २५२६, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	पछना और मेंहदी से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ से जब कोई सर में दर्द की शिकायत करता, तो आप ﷺ फ़र्माते के "तुम पछने लगाओ" और जब कोई पावँ के दर्द की शिकायत करता, तो फ़र्माते "तुम मेंहदी लगाओ" [अबू दाऊद: ३८५८, अन सल्मा ؓ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तीन गुनाह ऐसे हैं जो सब से पहले वजूद में आए, लिहाज़ा इन से बचो, (१) तकब्बुर से बचो, इस लिए के तकब्बुर ही ने शैतान को हज़रत आदम عليه السلام का सजदा करने से रोका था। (२) हिर्स (लालच) से अपने आप को बचाओ, इस लिए के हिर्स ही ने हज़रत आदम عليه السلام को दरख़्त (के फल) खाने पर उभारा था। (३) हसद से बचो, इस लिए के आदम के एक बेटे ने दूसरे बेटे को हसद में क़त्ल कर दिया था।" [इब्ने असाकिर : ४०/४९, अन इब्ने मसऊद ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(१५) शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ

हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ ने जवानी में हज़रत मुस्अब बिन उमैर ﷺ के हाथ पर इस्लाम क़बूल किया, जब हुज़ूर ﷺ मदीना मुनव्वरा पहुँचे,तो हज़रत मुआज़ ﷺ हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में हर वक़्त रहते,आप ﷺ उन छे सहाबा ﷺ में से थे, जिन लोगों ने हुज़ूर ﷺ के ज़माने में पूरा क़ुर्आन जमा कर लिया था, उन की इल्मी सलाहियत की वजह से हुज़ूर ﷺ ने फतहे मक्का के बाद मक्का में दीन सिखाने के लिए उन को मुअल्लिम मुकर्रर किया, इस तरह जब अहले यमन ईमान में दाखिल हुए, तो उन की तालीम व तरबियत के लिए उन्हीं को रवाना फर्माया । हुज़ूर ﷺ ने एक मर्तबा फर्माया : "मुआज़ बिन जबल हलाल व हराम को ज़ियादा जानने वाले हैं" हज़रत मुआज़ ﷺ को हज़रत उमर ﷺ ने अपनी खिलाफत में शाम रवाना किया, ताके वह लोगों को दीन सिखाएं, जब मौत का वक़्त क़रीब हुआ,आप क़िब्ला रूख हो गए, फिर आस्मान की तरफ देखा और फर्माया : ऐ आल्लाह ! तुझे मालूम है के मैं दरख़्त लगाने और नहरें खोदने के लिए दुनिया में लम्बी उम्र नहीं चाहता था, बल्के रोज़े की प्यास की सख्ती बर्दाश्त करने, मुसीबत झेलने और उलमा के साथ हल्क़-ए-ज़िक्र में मुजाकरा करने के लिए चाहता था । ऐ अल्लाह ! मुझे क़ुबूल फ़र्मा, उस के बाद आप की रूह परवाज़ कर गई यह वाकिआ सन १८ हिजरी में पेश आया, उस वक़्त आप की उम्र तक़रीबन ३८ साल थी।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — चुम्बक (Magnet)

अल्लाह तआला ने ज़मीन के अन्दर किस्म किस्म की धात रखी है, उस में से एक धात चुम्बक है,जो लोहे की एक किस्म है, यह लोहे को अपनी तरफ़ खींचता है और लोहे से चिपक जाता है और लोहे के अलावा किसी दूसरी चीज़ से नहीं चिपकता, अगर उस के सामने लकड़ी पत्थर वगैरा रखे जाएं, तो उस से नहीं चिपकता, ज़रा गौर कीजिए,के ज़मीन से निकली हुई मामूली सी धात में ऐसी ताक़त किस ने रखी है, यक़ीनन यह अल्लाह तआला की क़ुदरत है, जिस चीज़ में जैसा चाहता है वैसी ख़ासियत रखता है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — जान्वरों पर ज़कात

रसूलुल्लाह ﷺ ने क़सम खा कर फर्माया : "जिस के पास ऊंट, गाय या बकरा हो और वह उस का हक़ अदा न करता हो, तो क़यामत के दिन उन जान्वरों में से सब से बड़े और मोटे को लाया जाएगा, जो अपनी खुरों से उस को रौंदेगा और सींग मारेगा,जब जब भी आखरी जान्वर गुज़र जाएगा, तो पहेले जान्वर को लाया जाएगा, (यह सिलसिला उस वक्त तक चलता रहेगा), जब तक के लोगों का हिसाब (न) हो जाए।"

[बुखारी : १४६०, अन अबी ज़र ﷺ]

फ़ायदा : जिस तरह सोने, चांदी, और दूसरी चीज़ों में ज़कात फ़र्ज़ है, इसी तरह जान्वरों में भी ज़कात फ़र्ज़ है, जब के निसाब के बक़द्र हो।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	खुशी के वक्त सजद–ए–शुक्र अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ को जब खुशी का मौक़ा आता या कोई खुश खबरी सुनाई जाती, तो आप ﷺ सजद–ए–शुक्र बजा लाते।

[अबू दाऊद : २७७४, अन अबी बकरह رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	जानवर पर रहेम करने का सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ की बारगाह में सहाब–ए–किराम رضي الله عنهم ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! क्या जानवरों पर रहम करने में भी हमारे लिए सवाब है? आप ﷺ ने फ़र्माया : हर जानदार जिगर रखने वाले हैवान पर (रहम करने में) सावाब है।

[बुखारी : ६००९, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	हज न करने पर वईद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस के पास सवारी और तोशे का इतना इन्तेज़ाम हो जिस से वह ब आसानी बैतुल्लाह शरीफ पहुँच सकता हो, फ़िर भी हज न करे, तो कोई फ़र्क नहीं है के वह यहूदी हो कर या नसरानी हो कर मरे।"

[तिर्मिज़ी : ८१२, अन अली رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मुझे तुम लोगों के बारे में जिस चीज़ का सब से ज़ियादा डर है, वह दुनिया का बनाव सिंघार है, जो तुम पर खोल दिया जाएगा।"

[बुखारी : १४६५, अन अबी सईद رضي الله عنه]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	नेक बंदों की नेअमतों का बयान

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : परहेज़गार लोग बाग़ों और ऐश व राहत में होंगे। उन को जो चीज़ें ऐश व आराम की उन के रब ने अता की होगी उस को खा रहे होंगे और उन का रब उन को दोज़ख के अज़ाब से महफ़ूज़ रखेगा, (और कहा जाएगा) तुम खूब मज़े के साथ खाओ पियो (यह) तुम्हारे नेक आमाल के बदले में है, जो तुम (दुनिया) में किया करते थे (और वह लोग) बराबर बिछे हुए तख्तों पर तकिये लगाए हुए होंगे और हम बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरों से उन का निकाह कर देंगे।

[सूर–ए–तूर : १७ ता २०]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	लौकी से दिमाग की कमज़ोरी का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम लौकी (दूधी) खाया करो, क्योंकि यह अक़्ल को बढ़ाती है और दिमाग़ को ताक़त देती है।"

[कन्ज़ुल उम्माल : २८२७३, अन अनस رضي الله عنه]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जब तुम को कोई सलाम करे, तो उस से बेहतर अल्फ़ाज़ में या वैसे ही अल्फ़ाज़ में सलाम का जवाब दिया करो, बिला शुबा अल्लाह तआला हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है।

[सूर–ए–निसा : ८६]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(१६) शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत अम्मार

हज़रत अम्मार जब जवान हुए उस ज़माने में हुज़ूर ﷺ ने इस्लाम की दावत शूरू की, जिस से मुतअस्सिर हो कर हज़रत अम्मार ईमान में दाखिल हुए, इस्लाम में दाखिल होते ही अपनी वालिदा हज़रत सुमय्या के पास आए और उन के सामने तौहीद की दावत पेश की, वह भी मुसलमान हो गई, फ़िर इन दोनों माँ बेटे ने अपने वालिद हज़रत यासिर को इस्लाम की बातें बताई, बीवी और बेटे की बार बार दावत और ज़ेहन साज़ी से हज़रत यासिर ने भी ईमान क़बूल कर लिया, मुसलमान होते ही कुफ़्फ़ार ने ज़ुल्म ढाना शुरू कर दिया, एक रोज़ खूब तकलीफ देने के बाद कुफ्फार उन के जिस्म को जलाने लगे, तो हज़रत अम्मार ने उन से जान छुड़ाने के लिए उन के झूटे बुतों का नाम ले लिया, लोगों ने इन्हें छोड़ दिया, वह हुज़ूर ﷺ पास आए और चीख कर रोने लगे, हुज़ूर ﷺ ने वजह दर्याफ़्त की तो बताया के जान बचाने के लिये मैं ने बुतों का नाम ले लिया, हुज़ूर ﷺ ने फ़र्माया : तुम्हारा दिल ईमान पर साबित था? तो अर्ज़ किया : हां ! उसी वक़्त अल्लाह तआला ने हज़रत अम्मार के हक़ में आयत नाज़िल फ़र्माई फ़िर वह मक्का से हिजरत कर गए और क़ुबा में क़याम फ़र्माया और एक मस्जिद तामीर की, जिस मस्जिद की तारीफ़ क़ुर्आन में है। हज़रत अम्मार हुज़ूर ﷺ के साथ तमाम ग़ज़वात में साथ रहे, सन ३७ हिजरी में एक ग़ज़वह के दौरान इन को दूध दिया गया, तो फ़र्माया : मुझ से हुज़ूर ﷺ ने फ़र्माया था : "तुम दुनिया में सब से आख़री चीज़ दूध पिओगे।" फ़िर दूध पिया और मैदान में उतरे और शहीद हो गए, उस वक़्त उन की उम्र ९४ साल थी। हज़रत अली ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ा कर कूफ़ा में दफ़न किया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — एक मुट्ठी मिट्टी से काफ़िरों को शिकस्त

ग़ज़वा–ए–हुनैन के मौके पर काफ़िरों के तीरों की बौछार से सहाब–ए–किराम में एक किस्म की परेशानी पैदा हो गई थी और कुफ़्फ़ार चाहते थे के रसूलुल्लाह ﷺ पर हमला करें, चुनांचे रसूलुल्लाह ﷺ अपने खच्चर पर से उतरे और अल्लाह तआला से मदद मांगी और ज़मीन से एक मुट्ठी मिट्टी ले कर दुशमनों की तरफ़ फ़ेंकी और फ़र्माया : इन के चेहरे बुरे हों, चुनांचे कोई काफ़िर ऐसा न था, जिस की आँख मिट्टी से न भर गई हो; और वह सब पीठ फ़ेर कर भागने लगे।

[मुस्लिम : ४६१९, अन सलमा बिन अक़वा]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — अज़ान सुन कर नमाज़ को न जानेपर वईद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जो शख़्स अल्लाह के मुनादी (यानी मुअज़्ज़िन) की आवाज़ सुने और नमाज़ को न जाए, तो उस का यह फेल सरासर ज़ुल्म, कुफ़्र और निफाक़ है।

[तबरानी कबीर : १६८०४, मुआज़ बिन अनस]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — मस्जिद में दाखिल होते वक़्त की दुआ

जब कोई मस्जिद में दाखिल हो, तो यह दुआ पढ़े : ((اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह मेरे लिए रहमत के दरवाज़े खोल दे। [मुस्लिम : १६५२, अबू हुमैद, अबू सईद ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	ज़िक्र करने की फ़ज़ीलत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला फ़र्माता है के मैं उस वक़्त अपने बंदे के साथ होता हूं, जब बंदा मुझे याद करता है और मेरी याद में उस के होंट हिलते हैं।"

[इब्ने माजा : ३७९२, अन अबी हुरैरा ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	शिर्क की सज़ा

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "बिला शुबा जो शख़्स अल्लाह के साथ शरीक क़रार देगा, तो उस पर अल्लाह तआला जन्नत को हराम कर देगा और उस का ठिकाना जहन्नम होगा और ऐसे ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं होगा।" [सूर-ए-माइदा : ७२]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	अपने बीवी बच्चों से होशियार रहो

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ ईमान वालो ! तुम्हारी बाज़ बीवीयां और बाज़ औलाद तुम्हारे हक़ में दुश्मन हैं, तो तुम उन से होशियार रहो। [सूर-ए-तग़ाबुन : १४]

फ़ायदा : बीवी बच्चे बाज़ मर्तबा दुनियावी नफ़े के लिए खिलाफ़े शरीअत कामों का हुक्म देते हैं, उन्हीं लोगों को अल्लाह तआला ने दीन का दुश्मन बताया है और उन के हुक्म को बजा लाने से बचने की हिदायत दी है।

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	दोज़ख की आग की सख़्ती

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दोज़खी अगर दुनिया की आग में आ जाएं, तो उन को (जहन्नम की आग के मुक़ाबले में दुनिया की आग की गर्मी के कम होने की वजह से) नींद आ जाए।"

[तर्ग़ीब व तर्हीब : ५२०३, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	तीन सांस में पीने का फ़ायदा

रसूलुल्लाह ﷺ पीने वाली चीज़ों को तीन सांस में पीते थे और फ़र्माते थे "ऐसा करने से इतमिनान हो जाता है, तकलीफ़ और बीमारी से हिफ़ाज़त होती है और वह चीज़ खूब हज़्म होती है।"

[मुस्लिम : ५२८७, अन अनस ﷺ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तीन चीज़ें ऐसी हैं के जब उन का तज़किरा हो, तो उस वक्त अपनी ज़बान को रोके रखो। (१) जब तकदीर का तज़किरा हो। (२) जब सितारों का तज़किरा हो (यानी जब यह अक़ीदा बयान किया जा रहा हो के फ़लाँ सितारे की वजह से बारिश होती है वग़ैरा वग़ैरा) (३) जब मेरे सहाबा (के इख़्तिलाफ़) तज़किरा हो (यानी उन को बुरा कहा जा रहा हो)"

[इब्ने असाकिर : ४९/४०, अन इब्ने मस्ऊद ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

⑰ शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर ① : इस्लामी तारीख — हज़रत सुमय्या ﷺ

इस्लाम में सब से पहेले शहीद होने वाली खातून हज़रत सुमय्या ﷺ हैं, जो हज़रत अम्मार ﷺ की वालिदा और हज़रत यासिर ﷺ की बीवी हैं। यह खानदान वह है जिस ने शुरु ज़माने में अपने इस्लाम को ज़ाहिर कर दिया था। बनू मखज़ूम के लोगों ने गुस्से में आकर पूरे खान्दाने यासिर पर ज़ुल्म करना शुरु कर दिया, यहां तक के हज़रत यासिर ﷺ का इन्तेक़ाल हो गया। सुमय्या ﷺ कुरैश के खानदान अबू हुज़ैफ़ा ﷺ की बांदी थीं, इन लोगों ने आज़ाद कर के हज़रत यासिर ﷺ से निकाह कर दिया था, हज़रत सुमय्या ﷺ को इन के शौहर यासिर और बेटे अम्मार के साथ सज़ा दी जाती और कुफ़्फ़ार सज़ा देने में कोई कसर नहीं रखते। जब हुज़ूर ﷺ का गुज़र इस मज़लूम खानदान पर होता तो हुज़ूर ﷺ इन्हें सब्र करने की तलक़ीन फ़र्माते और जन्नत की बशारत देते। एक मर्तबा इसी तरह इन तीनों को सज़ा दी जा रही थी के अबू जहल वहां से गुज़रा उस ने हज़रत सुमय्या ﷺ को बहुत बुरी गाली दी और नेज़ा मार कर उन्हें शहीद कर डाला, यह इस्लाम में शहादत पाने वाली पहली खातून हैं।

नंबर ② : अल्लाह की कुदरत — बाज़ (शिकारी परिन्दा)

बाज़ एक शिकारी परिन्दा है, जिसे अल्लाह तआला ने जिस्मानी कुव्वत और फ़ज़ा में उड़ने की बेहतरीन सलाहिय्यत से नवाज़ा है, उस की हड्डियाँ खोखली होती हैं, मगर उस में हवा भरी होती है, जिस की वजह से फ़ज़ा में उड़ने, ज़मीन पर उतरने और शिकार करने में बहुत आसानी होती है, उस की आँख पर दो पपोटे होते हैं, जिस से अपने बच्चों को गिज़ा देते वक़्त उन की उछल कूद और पंजा लगने के ख़ौफ से अपने पपोटे से आँख की हिफ़ाज़त करता है, आख़िर यह सारी सलाहिय्यतें किस ने अता की ? यक़ीनन यह अल्लाह ही की कुदरत का करिश्मा है।

नंबर ③ : एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है

रसूलुल्लाह ﷺ ने सात चीज़ों का हुक्म दिया, जिस में से एक जनाज़े में शरीक होना भी है।

[बुखारी : १२३९, अन बराअ बिन आज़िब ﷺ]

फ़ायदा : नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है, फ़र्ज़े किफ़ाया ऐसे फ़र्ज़ को कहते हैं जो हर एक पर फ़र्ज़ हो, लेकिन उन में से किसी ने भी अगर अदा कर दिया तो सब की तरफ़ से काफ़ी हो जाएगा।

नंबर ④ : एक सुन्नत के बारे में — दस्तरख्वान बिछा कर खाना

हज़रत अनस ﷺ फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने न कभी मेज़ पर और न कभी तश्तरियों में खाना खाया, पूछा गया फ़िर किस पर खाते थे ? फ़र्माया : दस्तरख्वान पर। [बुखारी : ५४१५]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	गुस्सा पी जाने पर इनाम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स उस वक्त गुस्सा पी जाए, जब के वह अपना गुस्सा निकालने की ताक़त रखता हो, तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन तमाम लोगों के सामने उसे बुलाएंगे और उसे इस बात का इख़्तियार देंगे के जिस हूर को चाहे लेले।"

[अबू दाऊद : ४७७७, अन मुआज़ बिन अनस अलजहनी رضي الله عنه]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	तीन दिन से ज़ियादा तअल्लुक़ खत्म किये रहना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "किसी मुसलमान के लिए जाइज़ नहीं के वह अपने मुसलमान भाई से तीन दिन से ज़ियादा बोलना छोड़ दे और जिस ने ऐसा किया और उसी हालत में मर गया तो वह दोज़ख में जाएगा।"

[मुस्नदे अहमद : ८८४८, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	दुनिया से बे रग़बती का फ़ायदा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दुनिया की ख्वाहिश का न होना, जिस्म और दिल के लिए राहत है और दुनिया की आरज़ू और उम्मीद, ग़म और रंज को बढ़ाती है।" [कन्ज़ुल उम्माल : ६०५८, अन ताउस رضي الله عنه]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में	मुश्रिकीन की बद हाली

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : बेशक यह मुजरिम (काफ़िर व मुश्रिक) लोग बड़ी गुमराही और बेअक़ली में पड़े हैं, जिस दिन यह लोग अपने चेहरों के बल आग में घसीटे जाएंगे और कहा जाएगा के दोज़ख की आग के लिपटने का मज़ा चखो, बेशक हम ने हर एक चीज़ मुक़र्ररह अन्दाज़ के मुताबिक़ पैदा की है और हमारा हुक्म तो बस पलक झपकने के वक्त में जारी हो जाता है।

[सूर-ए-क़मर : ४७, ५०]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	ठंडे पानी से बुखार का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : तुम में से किसी को जब बुखार आए तो सेहरी के वक्त ठंडा पानी (उस के बदन पर) तीन रात तक छिड़का जाए। [मुस्तदरक : ८२२६, अन अनस बिन मालिक رضي الله عنه]

फ़ायदा : आज जदीद तरीक़-ए-इलाज के मुताबिक़ डॉक्टर हज़रात भी बुखार के मरीज़ के सर पर ठंडे पानी की पट्टी रखने का मश्वरा देते हैं।

नंबर (१०) : कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : ऐ ईमान वालो ! तुम उन लोगों को दोस्त न बनाओ, जिन्हो ने तुम्हारे दीन को मज़ाक और तमाशा बना रक्खा है, यह वह लोग हैं जिन्हें तुम से पहेले किताब दी जा चुकी है और दूसरे काफ़िरों को भी दोस्त मत बनाओ और अल्लाह से डरते रहो अगर तुम मोमिन हो।

[सूर-ए-माइदा : ५७]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत तुफ़ैल दोसी

हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र दोसी ﷺ ज़मान-ए-जाहिलियत में भी बड़ी अच्छी सिफ़ात के हामिल थे, मक्का मुकर्रमा अपने काम से आए थे, हुज़ूर ﷺ को हरम शरीफ़ में नमाज़ पढ़ते देखा और क़ुर्आन सुना, उन के पीछे घर गए और ईमान में दाख़िल हुए। अपने क़बील-ए-दौस की तरफ़ जब वापस हुए, तो हुज़ूर ﷺ से अर्ज़ किया अल्लाह से दुआ फ़र्माएं के मेरे लिए कोई ऐसी निशानी हो, जिस की वजह से कौम के सामने दावत पेश कर सकूं। हुज़ूर ﷺ ने दुआ फ़र्माई : जब आप ﷺ अपने क़बीले के पास पहुंचे, तो अल्लाह तआला ने उन की पेशानी पर एक नूर पैदा कर दिया, हज़रत तुफ़ैल ﷺ ने अल्लाह से दुआ की के यह निशानी मेरे जिस्म से हटा कर दूसरी किसी जगह कर दे, तो वह रौशनी हज़रत तुफ़ैल ﷺ के कोड़े के सिरे पर आ गई, उन के वालिद अम्र दौसी और उन की बीवी उन की दावत से मुसलमान हो गए, हुज़ूर ﷺ ने हज़रत तुफ़ैल ﷺ को सरिय्य-ए-ज़िल्कफ़ीन में रवाना किया, ज़िल्कफ़ीन नामी एक लकड़ी का बुत था जिस को क़बील-ए-दौस के मुशरिकीन पुजते थे। हज़रत तुफ़ैल दोसी ﷺ जब उस को जलाने पहुंचे तो तमाम मुशरिकीन मर्द व औरत जमा हो गए यह देखने के लिए के इस हरकत पर ज़िल्कफ़ीन बुत तुफ़ैल दोसी ﷺ पर किस तरह अज़ाब देगा। हज़रत तुफ़ैल ﷺ शेर पढ़ते हुए बुत को जला रहे थे, लोग तमाशा देख रहे थे, यहाँ तक के वह बुत राख हो गया, लेकिन हज़रत तुफ़ैल ﷺ को कुछ भी नहीं हुआ, तो सारी क़ौम मुसलमान हो गई। हज़रत तुफ़ैल ﷺ की शहादत जंगे यमामा में सन ११ हिजरी में हुई।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — काफ़िरों की नज़र से पोशीदा रहना

जिस वक्त रसूलुल्लाह ﷺ और अबू बक्र ﷺ ने हिजरत फ़र्माई, तो रास्ते में ग़ारे सौर था, वहाँ जा पहुँचे, उधर कुफ़्फ़ारे मक्का आप की तलाश में पहाड़ के क़रीब पहुँच गए, बल्के उस ग़ार के पास भी आए, मगर उस के मुंह पर मकड़ी ने जाला तन दिया था, जिस की वजह से उन लोगों ने ग़ार की तरफ़ तवज्जोह नहीं दी, वर्ना अगर ज़रा भी नीचे झुक कर देखते, तो वह लोग आप दोनों हज़रात को देख लेते, लेकिन यह मुअ्जिज़ा था के वह लोग नहीं देख पाए।

[मिश्कात : ५९३४, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — कर्ज़ अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "कर्ज़ की अदायगी पर कुदरत रखने के बावजूद टाल मटोल करना ज़ुल्म है।"

[बुखारी : २४००, अन अबी हुरैरह ﷺ]

फ़ायदा : अगर किसी ने क़र्ज़ ले रखा है और उस के पास क़र्ज़ अदा करने के लिये माल है, तो फिर क़र्ज़ अदा करना ज़रूरी है, टाल मटोल करना जाइज़ नहीं है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	मस्जिद से निकलते वक्त की दुआ

मस्जिद से निकलते वक्त यह दुआ पढ़ें : اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ

तर्जमा : ऐ अल्लाह मैं तुझ से तेरे फ़ज़्ल का सवाल करता हूं। [मुस्लिम : १६५२, अन अबी हुमैद ﷺ औ अबी उसैद ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	बेटी के साथ अच्छा सुलूक

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस शख्स की कोई लड़की हो और वह उसे ज़िन्दा दरगोर न करे और उस की बे इज़्ज़ती न करे और अपने लड़के को उस पर तरजीह न दे तो अल्लाह तआला उस को जन्नत में दाखिल फ़र्माएगा।" [अबू दाऊद : ५१४६, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	हज़रत ईसा عليه السلام को खुदा मानना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : बिला शुबा वह लोग भी काफिर हो गए जिन्हों ने यूँ कहा के अल्लाह तआला तीन (खुदाओं) में से एक है हालांके एक खुदा के अलावा कोई माबूद नहीं और अगर यह लोग इन बातों से बाज नहीं आऐंगे तो जो लोग इन में से कुफ्र पर काइम रहेंगे उन को ज़रूर सख्त अज़ाब पहुँचेगा। [सूर-ए-माइदा : ७३]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया में खाना पीना चंद रोज़ा है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम (दुनिया में) थोड़े दिन खालो और (उस से) फ़ायदा उठा लो, बेशक तुम मुजरिम हो (यानी यह दुनियवी ज़िन्दगी चंद रोज़ की है, अगर इस के पीछे पड़ कर अपनी आखिरत की ज़िन्दगी को भुला दोगे, तो क़यामत के दिन तुम मुजरिम बन कर उठोगे)। [सूर-ए- मुरसलात : ४६]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	जन्नत के परिन्दे

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब किसी जन्नती को परिन्दे का गोशत खाने की चाहत होगी, तो वह परिन्दा उस के सामने इस तरह हाज़िर होगा के वह पका हुआ होगा और उस के टुकड़े बने हुए होंगे।" [तर्गीब व तर्हीब : ५३३२, अन अबी उमामा ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	जिगर की हिफ़ाज़त का तरीक़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम में से कोई पानी पिये, तो ठहर ठहर कर चुस्की ले कर पिये और ग़टागट न पिये क्योंकि इस से जिगर में दर्द होता है।" [बैहक़ी शुअबुलईमान : ५७५२, अन इब्ने अबी हुसैन ﷺ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने गुलामों के मुतअल्लिक़ फ़र्माया : "मुसलमानों सुनो ! तुम्हारे गुलाम तुम्हारे भाई हैं, अल्लाह तआला ने उन को तुम्हारी मातहती में दे रखा है, लिहाज़ा जिस के मातहत उस का भाई हो तो उस को भी उसी में से खिलाए जो वह खाता है और उस को वैसे ही कपड़े पहनाए जैसे खुद पहनता है और सुनो ! कभी भी उन से उन की ताक़त से ज़ियादा काम न लेना और अगर कभी लेना हो तो उस में उन की मदद कर दिया करना।" [मुस्लिम : ४३१३, अन अबीज़र ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(१९) शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत सुमामा बिन उसाल हनफ़ी ﷺ

सन ६ हिजरी में हुज़ूर ﷺ ने अरब व अजम के तमाम बदशाहों के पास खुतूत लिखे उस में सुमामा बिन उसाल हनफी के पास भी भेजा। सुमामा यमामा के इलाके का बदशाह था उस ने हुज़ूर ﷺ के खत पर बड़ी नागवारी का इज़हार किया और हुज़ूर ﷺ को (नऊज़ु बिल्लाह) क़त्ल करने का इरादा किया, लेकिन नाकाम रहा, तो वह सहाबा ﷺ के रास्ते में घात लगा कर बैठता और हमला कर के शहीद कर देता एक मर्तबा सहाबा ﷺ ने उसे क़ैद कर लिया। मस्जिदे नब्वी ﷺ में लाए। तमाम सहाबा ﷺ चाहते थे के उसे मक़्तूल सहाबा के खून के बदले में क़त्ल कर दिया जाए। हुज़ूर ﷺ ने सहाबा ﷺ से कहा : अपने क़ैदी के साथ अच्छा बर्ताव करो और खुद हुज़ूर ﷺ ने भी खाना और दूध पेश किया दो रोज़ के बाद उस को रिहा करने का हुक्म दिया, सुमामा बिन उसाल ﷺ मदीना से बाहर गए वहां गुस्ल किया और वापस आकर हुज़ूर ﷺ के सामने कलिम-ए-शहादत का इक़रार किया। हज़रत सुमामा बिन उसाल ﷺ सब से पहले मुसलमान हैं जिन्हों ने इस्लामी तरीक़े पर उमरह किया और सब से पहेले आदमी हैं जो "लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक" कहते हुए मक्का में दाखिल हुए। सुमामा ﷺ ने इतमिनान से उमरह किया किसी को उन को रोकने की हिम्मत न हुई। हज़रत सुमामा ﷺ ने मुसैलिमा कज़्ज़ाब से जिहाद किया मुख़्तलिफ़ जंगें हुईं फिर सन ११ हिजरी में एक जंग के मौक़े पर शहीद हो गए।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — ज़मीन के ख़ज़ाने

अल्लाह तआला ने ज़मीन में हीरे मोती, सोना चाँदी, लोहा पीतल और न जाने कितनी क़िस्म की धातों को पैदा फ़र्माया है। जिस के इस्तेमाल से इन्सान हज़ारों क़िस्म की चीज़ें तय्यार कर लेता है, अल्लाह तआला ने हमारे फ़ायदे के लिये ज़मीन में कैसी कैसी क़ीमती धातों को पैदा फ़र्माया ! यक़ीनन यह अल्लाह की अज़ीम क़ुदरत की निशानी है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — वसिय्यत पूरी करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला नें चंद वारिसों के हिस्सों का ज़िक्र करने के बाद फ़र्माया : (यह सब वरसा के हिस्सों की तक़सीम) मय्यित की वसिय्यत की हुई चीज़ों को पूरा करने और क़र्ज़ अदा करने के बाद की जाएगी। [सूर-ए-निसा : १२]

फ़ायदा : मय्यित ने अगर किसी के हक़ में कुछ वसिय्यत की हो,तो वारिसों को उन का हिस्सा देने से पहले मय्यित के छोड़े हुए माल के तिहाई हिस्से से पूरी करना वाजिब है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	बच्चों से दिल जोड़ करना

रसूलुल्लाह ﷺ (सहाबा के बच्चों से फ़र्माते) जो मेरी तरफ दौड़ कर आएगा तो मैं उस को यह चीज़ दूँगा, तो बच्चे आप ﷺ के पास दौड़ कर आते और कोई आप ﷺ की पीठ पर और कोई सीने पर आकर गिरता, आप ﷺ उन्हें बोसा देते और चिमटा लेते। [मुसनदे अहमद : १८३९, अबदुल्लाह बिन हारिस رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	खाला की खिदमत करना

एक शख्स ने रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के रसूल ! मुझ से एक बहुत बड़ा गुनाह हो गया है, क्या मेरे लिए माफ़ी का कोई रास्ता है ? सरूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया "क्या तेरी माँ ज़िन्दा है?" उस शख्स के अर्ज़ किया : नहीं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क्या तेरी कोई खाला है?" उस ने कहा : हाँ, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: "तू उन के साथ भलाई का मामला कर।"

[तिर्मिज़ी : १९०४, अन इब्ने उमर رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	इज़ार या पैंट को टखने से नीचे लटकाने की वईद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स तकब्बुर के तौर पर अपने इज़ार को टखने से नीचे लटकाएगा, अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस की तरफ रहमत की नज़र से नहीं देखेगा।"

[बुखारी : ५७८८, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया मल्ऊन है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दुनिया और जो कुछ दुनिया में है, सब का सब मल्ऊन है (रहमतों से दूर है), सिवाए अल्लाह के ज़िक्र और उस के ज़िक्र वाली चीज़ें या आलिम या तालिबे इल्म।"

[इब्ने माजा : ४११२, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जन्नत की हूरों का बयान

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : (जन्नत के) बाग़ों के महलों में नीची निगाह रखने वाली हूरें होंगी, जिन को अहले जन्नत से पहले न किसी इन्सान ने छुवा होगा और न ही किसी जिन्न ने।

[सूर-ए- रहमान : ५६]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	हलक़ के कव्वे का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अपनी औलाद को हलाक न करो जब किसी औरत के बच्चे को (गले के) कव्वे की तकलीफ़ हो, तो उन्दे हिन्दी को पानी से रगड़ कर उस की नाक में चढ़ाए।"

[बुखारी : ५७१३, अन उम्मे क़ैस बिन्ते मिहसन رضي الله عنها]

फ़ायदा : कव्वा गोश्त का लटकता हुआ वह छोटा सा टुकड़ा है, जो आदमी के शुरू हलक़ में होता है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है "ऐ ईमान वालो ! जो चीज़ें अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की हैं उन को अपने ऊपर हराम न किया करो और शरई हुदूद से आगे मत बढ़ो बेशक अल्लाह तआला हद से तजावुज़ करने वालों को पसंद नहीं करता।" [सूर-ए- माइदा : ८७]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर १: इस्लामी तारीख — हज़रत वहशी बिन हर्ब ؓ

आप का नाम वहशी है जिस के माना "अकेला रहने वाला" है। उन को अबू दस्मा कहा जाता था, वह हब्शा के रहने वाले थे। और बड़े बेहतरीन नेज़े का निशाना जानते थे। यह मक्का में क़ुरैश के सरदार जुबैर बिन मुतइम के गुलाम थे। कुफ़्फ़ार ने यह शर्त रखी थी के अगर हज़रत हमज़ा ؓ को क़त्ल कर दोगे, तो तुम आज़ाद हो जाओगे; चुनांचे जंगे उहुद में हज़रत हमज़ा ؓ वहशी के नेज़े से शहीद हो गए। हज़रत वहशी कहते हैं जंगे उहुद में हज़रत हमज़ा ؓ को शहीद कर के मैं ख़ेमे में आकर बैठ गया; इस लिए के अपनी आज़ादी के अलावा मुझे कोई और दिलचस्पी न थी। हज़रत वहशी ؓ इस्लाम और मुसलमानों के दुश्मन होने के बावजूद इस्लाम की अच्छाइयों को देख कर खुद मदीना मुनव्वरह तशरीफ़ लाए और हुज़ूर ﷺ के हाथ पर इस्लाम क़बूल किया। इस्लाम क़बूल करने के बाद इस्लाम की दावत व इशाअत में जिन्दगी लगा दी हज़रत अबू बक्र ؓ ने अपने ज़माने में नुबुव्वत का झूठा दावा करने वाला मुसैलमा कज़्ज़ाब की सरकोबी के लिए एक लश्कर भेजा उस में हज़रत वहशी ؓ भी थे, उन्हों ने मुर्तद्दीन के सरदार मुसैलमा को नेज़ा मार कर हलाक किया और इर्तेदाद की जड़ उखाड़ दी।

नंबर २: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हज़रत हसन ؓ के बारे में पेशीन गोई

रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत हसन ؓ की तरफ इशारा कर के फ़र्माया : "मेरा यह बेटा सय्यद है और उम्मीद है के मुसलमानों की दो बड़ी जमातों के दर्मियान अल्लाह तआला इस से सुलह कराएगा।" [बुखारी : २७०४, अन अबी बक्र ؓ] (चुनाँचा हज़रत अली ؓ की वफात के बाद हज़रत हसन ؓ ने अमीर मुआविया ؓ से सुलाह कर ली, इस तरह हुज़ूर ﷺ की पेशीन गोई सच्ची साबित हुई)।

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — जमात के साथ नमाज़ पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मर्दों को चाहिए के वह जमात को छोड़ने से रुक जाएं; वरना मैं उन के घरों में आग लगवा दूंगा।" [इब्ने माजा : ७९५, अन उसामा बिन ज़ैद ؓ]

फ़ायदा : जमात छोड़ने वालों के लिए हदीसों में बहुत सख़्त वईदें बयान की गई हैं; इस लिए तमाम मुसलमान मर्दों पर जमात का एहतेमाम करना बहुत ज़रूरी है।

नंबर ४: एक सुन्नत के बारे में — नेक औलाद के लिए दुआ

नेक औलाद हासिल करने के लिए इस दुआ का एहतेमाम करना चाहिए हज़रत ज़करिया ؑ ने नेक औलाद मांगते वक्त यह दुआ फ़र्माई थी, जिस को क़बूल फ़र्मा कर अल्लाह तआला ने हज़रत यह्या ؑ को मरहमत फ़र्माया : ﴿رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً، إِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَاءِ﴾

तर्जमा : ऐ मेरे रब ! अपनी बारगाह से मुझे नेक और सालेह औलाद अता फ़र्मा। बेशक आप दुआ को बहुत सुनने वाले हैं। [सूरह-ए-आले इम्रान : ३८]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	जुमा का खुतबा सुनना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने अच्छी तरह वुज़ू किया, फिर जुमा की नमाज़ के लिए आया और खामोशी से खूब ग़ौर से खुतबा सुना, तो दोनों जुमा के दर्मियान और मज़ीद तीन दिन (यानी कुल दस दिन) उस की मग़फ़िरत कर दी जाती है और जिस ने (खुतबा के दौरान) कंकरी को भी छुवा, तो उस ने लग़व (यानी बेकार और बातिल) काम किया।" [मुस्लिम : १९८८, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	फ़ुज़ूल खर्ची करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : इस्राफ़ व फ़ुज़ूल खर्ची मत करो, क्यों कि अल्लाह तआला फ़ुज़ूल खर्ची करने वालों को पसंद नहीं करता। [सूर-ए-आराफ़ : ३१]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	खाने पीने की चीज़ों की पैदावार

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : इन्सान को अपने खाने पर नज़र रखनी चाहिए के हम ने खूब पानी बरसाया, फिर हम ने अजीब तरीके से ज़मीन को फाड़ा, फिर हम ने इस ज़मीन में से ग़ल्ला, अंगूर, तरकारी, ज़ैतून और खजूर, घने बाग़, मेवे और चारा पैदा किया। यह सब तुम्हारे और तुम्हारे जान्वरों के फ़ायदे के लिए है। [सूर-ए-अबस : २४ ता ३२]

नंबर (८) : आखिरत के बारे में	जन्नत की चौड़ाई

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क़सम है उस ज़ात की ! जिस के क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है ! जन्नत के दो दरवाज़ों के दर्मियान इतना बड़ा फ़ासला है, जितना शहरे मक्का और हिज्र के दर्मियान है। या आप ﷺ ने फ़र्माया के जितना फ़ासला मक्का और बसरा के दर्मियान है।" [मुस्लिम : ४८०, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	ज़म ज़म के फ़वाइद

हज़रत इब्ने अब्बास ؓ ने ज़म ज़म के बारे में फ़र्माया : "यह एक मुकम्मल खुराक भी है और बीमारियों के लिए शिफ़ा बख़्श भी है।" [बैहकी शुअबुलईमान : ३९७३, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : तुम में से कोई आदमी तकलीफ़ पहुँचने पर मौत की तमन्ना न करे, अगर तमन्ना करना ही हो, तो यह दुआ करे : ऐ अल्लाह जब ! तक मेरे लिए जिन्दगी बेहतर हो, मुझे जिंदा रखना और जब मेरे लिए मौत बेहतर हो, तो मौत दे देना। [बुखारी : ५६७१, अन अनस बिन मालिक ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान ﷺ

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान ﷺ बनू गितफ़ान के ख़ान्दान से तअल्लुक़ रखते थे। हिजरत से पहले ही इस्लाम क़बूल कर लिया। ग़ज़्व-ए-बद्र के मौक़े पर शिरकत के लिये आ रहे थे के मुश्रिकीने मक्का ने उन को पकड़ लिया, फिर इस शर्त पर छोड़ दिया के मुहम्मद ﷺ के साथ मिल कर हमारे ख़िलाफ़ नहीं लड़ेंगे, चुनान्चे इस शर्त की वजह से रसूलुल्लाह ﷺ ने शरीक होने की इजाज़त नहीं दी। उन्हें साहिबे सिर्र (रसूलुल्लाह ﷺ के राज़दाँ सहाबी) होने का शर्फ़ हासिल है। हुज़ूर ﷺ ने उन्हें मुनाफ़िक़ीन के नाम बता दिए थे के फुलां फुलां मुनाफ़िक़ है ताके उन की नक़्ल व हर्कत पर नज़र रखें और मुसलमान उन के फ़ितनों से महफ़ूज़ रह सकें। इसी तरह ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें मुश्रिकीन की ख़बर लाने के लिये भेजा और इस के बदले में जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनाई। हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ में रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नतों पर अमल करने का एक अजीब जज़्बा था। एक मर्तबा ईरान के बादशाह किसरा के शाही दस्तरख़्वान पर बैठे थे, खाने के दौरान लुक़्मा हाथ से गिर गया वह उस को उठा कर खाने लगे; साथ में बैठे हुए एक साहब ने कहा के यह मौक़ा गिरे हुए लुक़्मे के खाने का नहीं है, यह ईरान के बादशाह किसरा का दस्तरख़्वान है, उन्होंने उस को बड़ा उम्दा जवाब देते हुए फ़र्माया : तो क्या मैं इन बे वक़ूफ़ों की वजह से अपने प्यारे रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत को छोड़ दूँ , इस के बाद उन्होंने वह लुक़्मा खा लिया । जंगों में कई मुल्कों को उन्होंने फ़तह किया और सन ३५ हिजरी में उन का इन्तेक़ाल हो गया ।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — ज़िराफ़

ज़िराफ़ एक जानवर है, जिस का वज़न तक़रीबन आठ सौ किलो होता है, ऊंचाई सत्रह फ़िट और ज़बान पन्द्रह इंच लम्बी होती है, तेज़ रफ़्तारी का हाल यह है के फ़ी घंटा ५६ किलो मीटर तय कर लेता है, क़नाअत ऐसी के पानी मयस्सर न हो तो महीनों भर सब्र से काम लेता है, अजीब बात यह है के कभी बैठता नहीं है, जब उसे नींद आती है, तो खड़े खड़े सो लेता है। अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से कैसी अजीब व ग़रीब मख़्लूक़ पैदा फ़र्माई है !

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सिला रहमी करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो लोग अल्लाह के अहेद को तोड़ते हैं ,उस के मज़बूत कर लेने के बाद और उन तअल्लुक़ात को तोड़ते हैं, जिन के जोड़ने का अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है और ज़मीन में फ़साद मचाते हैं यही लोग नुक़्सान उठाने वाले हैं। [सूर-ए-बक़रह :२७]

फ़ायदा: रिश्ते, नाते और तअल्लुक़ात को बरक़रार रखना और उस को ख़त्म न करना बहुत ज़रूरी है ।

नंबर (४): *एक सुन्नत के बारे में*	सफ़र करना किस दिन बेहतर है

हज़रत कअब बिन मालिक ﷺ से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ को जुमेरात के दिन सफर करना पसंद था। [बुखारी: २९५०]

नंबर (५): *एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत*	इश्राक़ की दो रकात

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स फ़ज्र की नमाज़ के बाद अपनी जगह बैठा रहा, यहाँ तक के इश्राक़ की दो रकात पढ़ ले और अच्छी बात के अलावा कोई बात न करे,तो उस के गुनाह माफ कर दिये जाएंगे, अगरचे समुंदर के झाग से ज़ियादा हो।" [अबू दाऊद : १२८७, अन मुआज़ इब्ने अनस ﷺ]

नंबर (६): *एक गुनाह के बारे में*	एहसान जताने का अंजाम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "वालिदैन का ना फ़र्मान,शराबी और एहसान जताने वाला (यह तीनों किस्म के लोग) जन्नत में दाखिल नहीं होंगे।" [नसई :२५६३, अन इब्ने उमर ﷺ]

नंबर (७): *दुनिया के बारे में*	दुनिया में ज़ियादा खाने का अंजाम

एक शख्स ने रसूलुल्लाह ﷺ के पास डकार ली, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : हमारे सामने डकार मत लो, इस लिए के क़यामत के दिन सब से ज़ियादा भूखा वह शख्स होगा जो दुनिया में ज़ियादा पेट भरता है। [तिर्मिज़ी : २४७८, अन इब्ने उमर ﷺ]

नंबर (८): *आख़िरत के बारे में*	नेक बंदों का जन्नत में एहतेराम

क़ुरआन में अल्लाह तआला फर्माता है : यह मुक़र्रब बन्दे आराम के बाग़ों में होंगे, इन मुक़र्रब बन्दों का एक गिरोह अगले लोगों में से होगा और थोड़े लोग पिछले लोगों में से होंगे। वह लोग सोने के तारों स बने हुए तख्तों पर तकिये लगाए आमने सामने बैठे होंगे और हमेशा एक ही उम्र के लड़के (इन की खिदमत के लिए) कटोरे, लोटे और बहती हुई शराब के जाम लेकर गश्त लगा रहे होंगे, जिस शराब से न उन को दर्द होगा और न अक्ल में खराबी आएगी। [सूर-ए-वाक़िआ :१२ ता १९]

नंबर (९): *तिब्बे नब्वी से इलाज*	शराब से इलाज की मुमानअत

एक शख्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से शराब के बारे में सवाल किया तो आप ﷺ ने उस के इस्तेमाल से मना फ़र्माया, फ़िर वह शख्स कहने लगा के हम दवा के तौर पर इस को इस्तेमाल करेंगे,तो आप ﷺ ने फ़र्माया : "यह दवा है ही नहीं बल्के बीमारी है।" [मुस्लिम : ५१४१, अन वाइल हज़रमी ﷺ]

नंबर (१०): *क़ुर्आन की नसीहत*	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : ऐ ईमान वालो ! तुम अपनी जानों की फ़िक्र करो, जब तुम हिदायत पर होगे, तो कोई गुमराह शख्स तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचा सकेगा, तुम सब को अल्लाह ही के पास लौट कर जाना है, फ़िर वह तुम को उन सब कामों से बाखबर कर देगा, जो तुम किया करते थे। [सूर-ए-माइदा : १०५]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२२) शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत अबू दर्दा ﵁

हज़रत अबू दर्दा ﵁ का नाम उवैमिर बिन मालिक ख़ज़्रजी है, यह मदीना मुनव्वरा के बड़े ताजिर थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा से गहरे तअल्लुक़ात थे, वह इस्लाम लाने के बाद हज़रत अबू दर्दा ﵁ को तौहीद की दावत देते और शिर्क व बुत परस्ती से मना करते, एक रोज़ अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने उन के घर जा कर बुत के टुकड़े टुकड़े कर डाले, उस की यह बे बसी देख कर वह सोचने पर मजबूर हो गए के अगर इस में कोई ख़ूबी और नफ़ा व नुक़सान पहुँचाने की सलाहियत होती तो आज यह ज़रूर अपना बचाव कर लेता। इस ख़याल के आते ही वह शिर्क व बुत परस्ती से बेज़ार हो गए और रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में पहुँच कर इस्लाम क़बूल कर लिया और रात व दिन इल्म सीखने और इबादत करने में लग गए। जब उन्होंने देखा के तिजारत, इल्मी मजलिसों में हाज़री और इबादत की लज़्ज़त में रुकावट बन रही है तो तिजारत और दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत छोड़ कर इल्म सीखने और इबादत करने में मसरूफ़ हो गए, वह दुरवेशों की तरह बिल्कुल सादा ज़िन्दगी गुज़ारने लगे। हज़रत उमर ﵁ ने उन्हें शाम का गवरनर बनाना चाहा तो साफ़ कह दिया के मैं अहले शाम को नमाज़ और कुर्आन पढ़ाने के अलावा दूसरा काम नहीं कर सकता, हज़रत उस्मान ﵁ ने उन्हें दिमश्क़ का क़ाज़ी बना दिया था, फिर उन्हीं के दौरे ख़िलाफ़त में सन ३३ हिजरी में इन्तेक़ाल फ़र्माया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअजिज़ा — सूरज का लौटना

हुज़ूर ﷺ पर जब वही नाज़िल होती, तो आप ﷺ की ऐसी हालत हो जाती के अभी ग़शी तारी हो जाएगी,चुनांचे आप ﷺ पर एक मर्तबा वही उतरनी शुरू हुई, आप ﷺ का सर मुबारक हज़रत अली ﵁ की रान पर था, कुछ : देर बाद आप ﷺ ने हज़रत अली ﵁ की रान से सर मुबारक उठाया और हज़रत अली ﵁ से पूछा क्या तुम ने अस्र की नमाज़ पढ़ी? जवाब दिया केनहीं, आप ﷺ ने बारगाहे खुदावंदी में दुआ की, चुनांचे हज़रत अस्मा ﵂ फ़र्माती हैं के मैं ने देखा आफ़्ताब ग़ुरूब हो चुका था, लेकिन फिर निकल आया और हज़रत अली ﵁ ने नमाज़ अदा की। [तबरानी कबीर : १९८७०, अन असमा बिन्ते उमैस ﵂]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — तक्बीरे तहरीमा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "नमाज़ की कुंजी वुज़ू है, उस का तहरीमा तक्बीर है और नमाज़ को ख़त्म करने वाला तसलीम (यानी اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ कहना) है।" [तिर्मिज़ी : ३ अन अली ﵁]

फ़ायदा : नमाज़ शुरू करते वक़्त जो तक्बीर कही जाती है, उस को "तक्बीरे तहरीमा" कहते हैं, नमाज़ के शुरू में तक्बीरे तहरीमा कहना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — फ़र्ज़ नमाज़ के बाद की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद यह दुआ पढ़ते :

((لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ))۔

[बुख़ारी : ६३३०, अन मुग़ीरा बिन शोअबा ﵁]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	दुरूद शरीफ़ पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स मुझ पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा, तो अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़र्माएगा, और दस गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे। और दस दर्जात बलंद किये जाएंगे।"

[नसई : १२९८, अन अनस बिन मालिक ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	नुक़सान के बाद की आसानियों पर इतराना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जब हम लोगों को नुक़सान पहुंचाने के बाद अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं, तो वह हमारी इन निशानियों के बारे में भी शरारत करने लगते हैं (यानी मौजूदा आसानियों में पड़ कर गुज़री हुई मुसीबतों की तकज़ीब और मज़ाक उड़ते हैं, जब के उन्हें इन निशानियों से इबरत हासिल करनी चाहिये, ऐसे लोगों के मुतअल्लिक सख़्त वईदें आई हैं)।" [सूर-ए-यूनुस : २१]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	आखिरत की काम्याबी दुनिया से बेहतर है

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम लोगों को जो कुछ दिया गया है, वह सिर्फ़ दुनियवी ज़िन्दगी में (इस्तेमाल की) चीज़ें हैं और जो कुछ (अज्र व सवाब) अल्लाह के पास है, वह इस (दुनिया) से कहीं बेहतर और बाक़ी रहने वाला है।

[सूर-ए-शूरा : ३६]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	जन्नती को मौत नहीं आएगी

एक शख़्स ने सवाल किया : या रसूलल्लाह ﷺ ! क्या अहले जन्नत को नींद आएगी? रसूलुल्लाह ﷺ ने जवाब दिया : " नींद मौत की बहेन है और जन्नतियों को मौत न आएगी, लिहाज़ा नींद भी न आएगी।"

[बैहक़ी फ़ी शुअबिल ईमान : ४५५९, अन जाबिर ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	आपरेशन से फ़ोड़े का इलाज

हज़रत अस्मा बिन्ते अबी बक्र ﷺ कहती हैं के मेरी गर्दन में एक फ़ोड़ा निकल आया जिस का ज़िक्र नबीए पाक ﷺ से किया गया, तो आप ﷺ ने फ़र्माया : "इसे खोल दो, (फ़ोड़ दो) और छोड़ो मत वर्ना गोश्त खाएगा और खून चूसेगा", (यानी इस का खराब माद्दा अगर वक़्त पर न निकाला गया तो ज़ख्म को और ज़ियादा बढ़ा कर गोश्त और खून के बिगाड़ का ज़रिया बनेगा)। [मुस्तदरक हाकिम : ८२५०]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम अपनी जान, औलाद, खादिम और माल के हक़ में कभी भी हलाकत की बद्दुआ मत किया करो, कहीं ऐसा न हो के बद्दुआ करते हुए दुआ की क़बूलियत की घड़ी से तुम्हारी मुवाफ़क़त हो जाए और तुम्हारी बद्दुआ क़बूल कर ली जाए।"

[अबू दाऊद : १५३२, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(२३) शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत अदी बिन हातिम ताई

हज़रत अदी अरब के मशहूर सख़ी हातिम ताई के बेटे थे। उन का क़बीला यमन में आबाद था और ईसाइयों के रकवी फ़िरक़े में शामिल था। सन ९ हिजरी में रसूलुल्लाह ने ५० सहाबा को हज़रत अली के साथ क़बील-ए-बनू तै रवाना किया। इस क़बीले के रईस हज़रत अदी इत्तेला मिलते ही अपने अहले ख़ाना के साथ फ़रार हो कर शाम चले गए। मगर उन की बहन सफ़्फ़ाना बिन्ते हातिम जंगी क़ैदियों के साथ मदीने लाई गई, जब क़ैदियों को आप के सामने पेश किया गया तो सफ़्फ़ाना ने अपने बाप की सख़ावत और रहम दिली का ज़िक्र कर के रिहाई की दरख़्वास्त की तो रसूलुल्लाह ने उन्हें उस के मर्तबे के मुताबिक़ सवारी, लिबास और सफ़र का तोशा दे कर तमाम क़ैदियों के साथ रिहा कर दिया। सफ़्फ़ाना ने अपने भाई अदी के पास आ कर रसूलुल्लाह के हुस्ने सुलूक की तारीफ़ की, और भाई को आप की ख़िदमत में हाज़िर होने के लिये तय्यार कर लिया। जब मदीना पहुँचे तो अल्लाह के नबी ने बड़े एज़ाज़ के साथ उन्हें चमड़े के गद्दे पर बिठाया। उन्होंने आप की बातें सुन कर और अख़्लाक़ से मुतअस्सिर हो कर दिल में सोचा के यह शख़्स बादशाह नहीं बल्के नबी ही है और इस्लाम क़बूल कर लिया। हुज़ूर ने उन्हें क़बीले का अमीर मुक़र्रर फ़र्मा दिया। उन्होंने इराक़ और शाम की लड़ाई, जंगे सिफ़्फ़ीन, क़ादसिया और जंगे नहेरवान में हिस्सा लिया। आप ने कूफ़ा में सन ६७ हिजरी में एक सौ बीस साल की उम्र में वफ़ात पाई और वहीं दफ़न हुए।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — मुख़तलिफ मौसम और फल

अल्लाह तआला ने सर्दी, गर्मी और बारिश अलग अलग मौसम बनाए और मौसम के अलग अलग फ़ल और फूल बनाये। जो फ़ल गर्मी का है, वह हमेशा गर्मी में फ़लता है, जो सर्दी का है, वह सर्दी में फ़लता है और जो बारिश का है, वह बारिश के मौसम में फ़लता है और हर फ़ल का एक अलग ज़ायक़ा बनाया, अगर एक ही मौसम, एक ही फ़ल और फूल होते, तो इन्सान उकता जाता, लेकिन यह अल्लाह तआला की क़ुदरत है जिस ने बारह महीनों के लिए अलग अलग मौसम और फ़ल फूल बनाए।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम्हारे रब ने फ़ैसला कर दिया है के अल्लाह के अलावा किसी और की इबादत न कर और वालिदैन के साथ एहसान का मामला कर। [सूर-ए-बनी इसराईल : २३]

फ़ायदा : माँ बाप की खिदमत करना और उन के साथ अच्छा बर्ताव करना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — बच्चों को सलाम करना

हज़रत अनस बिन मालिक बच्चों के पास से गुज़रे, तो बच्चों को सलाम किया और फ़र्माया : आप भी इस तरह किया करते थे। [बुख़ारी : ६२४७, अन अनस बिन मालिक]

फ़ायदा : बच्चों को सिखाने की निय्यत से सलाम करना आप की सुन्नत है।

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	क़र्ज़दारों को मोहलत देना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस शख़्स को यह बात पसंद हो के अल्लाह तआला क़यामत के दिन परेशानियों से नजात दे, तो वह फ़क़ीर और तंगदस्त लोगों को (क़र्ज़ की अदायगी में) मोहलत दे दे या माफ़ कर दे।" [मुस्लिम : ४०००, अन अबी क़तादा ﷺ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	किसी की गीबत करना

रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा गया : ग़ीबत क्या है ? आप ﷺ ने फ़र्माया : "अपने भाई की ऐसी बात का ज़िक्र करना, जो उसे अच्छी न लगती हो।" सवाल करने वाले ने फ़िर पूछा : "आप का क्या ख़्याल है अगर वह बात उस के अंदर मौजूद हो, जो मैं कह रहा हूं ? आप ﷺ ने फ़र्माया :"जो तुम कह रहे हो, अगर वह उस के अंदर हो तभी तो तुम ने उस की ग़ीबत की और अगर वह बात उस के अंदर न हो, तब तो तुम ने उस पर इल्ज़ाम लगाया।" [तिर्मिज़ी : १९३४, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	माल आरियत है

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ फ़र्माते हैं के तुम में से हर एक मेहमान है और उस का माल आरियत (उधार) है और मेहमान जाने वाला है और आरियत उस के मालिक को लौटानी पड़ेगी। [शुअबुल ईमान : १०२४१]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में	अहले जहन्नम का तज़किरा

कुरआन में अल्लाह तआला फर्माता है : "बायें हाथ में नाम-ए-आमाल दिये जाने वाले कैसी (बुरी) हालत में हैं, वह लोग आग और खौलते हुए गर्म पानी में होंगे और सियाह धुएं के साए में होंगे, जो न ठंडा होगा न आरामदेह होगा, यह लोग इस से पहेले (दुनिया में) बड़ी खुशहाली में रहते थे और बड़े भारी गुनाह (कुफ्र व शिर्क) पर इस्रार किया करते थे।" [सूर-ए-वाक़िआ : ४१, ४६]

नंबर (९) : कुरआन से इलाज	बिच्छू के ज़हेर का इलाज

हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ कहते हैं के सहाबा ﷺ की एक जमात का गुज़र ऐसी जगह से हुआ जहां एक शख़्स को बिच्छू ने डस लिया था, वहां के लोगों में से एक शख़्स ने सहाबा ﷺ से दम करने की दर्ख़ास्त की चुनांचे एक सहाबी तशरीफ़ ले गये और सूर-ए-फ़ातिहा पढ़ कर दम कर दिया तो वह अच्छा हो गया। [बुखारी : ५७३७]

नंबर (१०) : कुरआन की नसीहत	

कुरआन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जब कुरआन पढ़ा जाये,तो उस को पूरी तवज्जोह और ग़ौर से सुना करो और ख़ामोश रहा करो; ताके तुम पर रहम किया जाए।" [सूर-ए-आराफ़ : २०४]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुरआन व हदीस की रौशनी में)

(२४) शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम ﷺ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम ﷺ हज़रत यूसुफ़ ﷺ की औलाद में से हैं। हुज़ूर ﷺ जब हिजरत फ़रमा कर मदीना मुनव्वरा पहुँचे, तो अब्दुल्लाह बिन सलाम ﷺ ने नुबुव्वत की निशानियां देख कर इस्लाम क़बूल कर लिया। आप यहूद मज़हब के आलिम थे यहूदियों के तमाम फ़िर्क़ों के लोग आप के तक़्वा और सलाहियत पर मुत्तफ़िक़ थे और आप की ताज़ीम करते थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम ﷺ फ़र्माते हैं के जैसे ही मैं ने मदीने में हुज़ूर ﷺ की आमद की ख़बर सुनी, फ़ौरन ख़िदमत में हाज़िर हुआ और इस्लाम क़बूल किया। वापस घर आकर मैं ने अपने बच्चों और बीवी को इस्लाम की दावत दी वह भी मुसलमान हो गये मेरी बूढ़ी फूफी ख़ालिदा भी मेरी दावत से मुसलमान हो गईं फिर हुज़ूर ﷺ के पास आया और अर्ज़ किया के यहूद के सरदारों को दावत दीजिए,आप ने यहूदियों के सरदारों को बुलाया और इस्लाम की दावत दी, लेकिन किसी ने भी दावत को क़बूल नहीं किया, हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम उसी वक़्त सामने आए और अल्लाह के रसूल ﷺ की तस्दीक़ की, यहूदी सरदारों ने हज़रत अब्दुल्लाह को बुरा कहना शुरू कर दिया और इस्लाम क़बूल नहीं किया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम ﷺ का इन्तेक़ाल हज़रत मुआविया ﷺ के ज़मान-ए-ख़िलाफ़त में सन ४३ हिजरी में हुआ।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — पागल लड़के का ठीक हो जाना

रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में एक औरत अपने पागल लड़के को ले कर हाज़िर हुई, रसूलुल्लाह ﷺ ने लड़के के सीने पर हाथ फ़ेरा और उस के लिए दुआ फ़र्माई, तो उस ने ज़ोर से कै (उल्टी) की, उस के बाद से ही वह लड़का अच्छा हो गया और पागल पन दूर हो गया।

[मिश्कात : ५९२३, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — जान बूझ कर नमाज़ क़ज़ा कर देना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: "जो शख़्स दो नमाज़ों को बिला किसी उज़्र के एक वक़्त में पढ़े वह कबीरा गुनाहों के दर्वाज़ों में से एक दर्वाज़े पर पहुँच गया।"

[मुस्तदरक : १०२०, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — दीन पर जमे रहने की दुआ

इस्लाम और नेक आमाल पर साबित क़दमी के लिए इस दुआ का मामूल रखना चाहिए :

﴿رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ﴾

तर्जमा : ऐ हमारे रब ! हमारे गुनाहों को और जो हम ने अपने काम में ज़ियादती की है, उस को माफ़ कर दीजिए और हमारे क़दमों को जमा दीजिए और हमें काफ़िरों पर ग़ालिब कर दीजिए। [सूर-ए-आले इमरान : १४७]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वाले

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब कोई क़ौम अल्लाह तआला के ज़िक्र के लिए बैठती है, तो मलाइका उन को घेर लेते हैं और रहमत उन को ढांप लेती है और उन पर सकीना उतरती है और अल्लाह तआला फरिश्तों के दर्मियान उन का तज़किरा करता है।" [मुस्लिम : ६८५५, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	लड़की की पैदाइश को बुरा समझना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जब उन में से किसी को बेटी पैदा होने की खबर दी जाती है, तो उस का चेहरा रंज की वजह से काला पड़ जाता है और दिल ही दिल में घुटता रहता है और जिस लड़की की पैदाइश की उस को खबर दी गई है उस की शर्मिंदगी की वजह से लोगों से छिपता फ़िरता है के उस को ज़िल्लत गवारा कर के रहने दे या उस को मिट्टी में छुपा दे वह बहुत ही बुरा फ़ैसला करते हैं।"

[सूर-ए-नह्ल : ५८ ता ५९]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया का धोका

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "ऐ इन्सान ! तुझे अपने रब की तरफ़ से किस चीज़ ने धोके में डाल रखा है (के तू दुनिया में पड़ कर उसे भुलाए रखता है हालांके) उस ने तुझे पैदा किया (और) फ़िर तेरे तमाम आज़ा एक दम ठीक अंदाज़ से बनाए।(फ़िर भी तू उस से ग़ाफ़िल है)।"

[सूर-ए-इन्फ़ितार : ६ ता ७]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	जहन्नमी का जिस्म कैसा होगा

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फ़र्माते हैं : "क्या तुम जानते हो के दोज़ख़ियों की चौड़ाई कितनी है ? हज़रत मुजाहिद رحمه الله फ़र्माते हैं के मैं ने कहा : नहीं, फ़र्माया : हां, ख़ुदा की क़सम तुम नहीं जानते, दोज़ख़ियों के कान की लौ और मोंढे के दर्मियान सत्तर साल चलने के बक़द्र फ़ासला होगा, जिस में ख़ून और पीप से भरी वादियां होंगी।" [मुस्तदरक हाकिम : ३६३०]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मरीज़ का नफ़सियाती (सायकॉलोजी) इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम किसी मरीज़ के पास जाओ तो उस की मौत के बारे में तसल्ली की बात कहो, क्योंकि तुम्हारी यह गुफ्तगू अगरचे अल्लाह के फ़ैसले को तो नहीं बदल सकती है मगर उस मरीज़ के दील को सुकून पहुँचाएगी।" [तिर्मिज़ी : २०८७, अन अबी सईद رضي الله عنه]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम जन्नत के बाग़ात के क़रीब से गुज़रो तो ख़ूब चरो।" सहाबा رضي الله عنهم ने अर्ज़ किया; जन्नत के बाग़ात क्या हैं ? रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मस्जिदें" फ़िर सहाबा ने पूछा : चरना क्या है ? तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : ((سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ)) का ज़िक्र करना। [तिर्मिज़ी : ३५०९, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२५) शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन ﷺ

हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन ﷺ कुरैश ख़ान्दान से तअल्लुक़ रखते थे। वह और उन के बेटे साइब, तेरा अफ़राद के मुसलमान होने के बाद इस्लाम लाए। पहली हिजरत हब्शा में बारा मर्द और चार औरतों के क़ाफ़ले के आप ही अमीर थे। तीन महीने बाद उन को ख़बर मिली के कुरैशे मक्का ने रसलुल्लाह ﷺ और मुसलमानों की मुख़ालफ़त छोड़ दी है। मक्का के क़रीब आकर मालूम हुआ के यह ख़बर ग़लत थी। तो वह वलीद बिन मुग़ीरा की पनाह में मक्का वापस आगए और चन्द ही दिनों के बाद हरम में जाकर एलान कर दिया के "मैं वलीद की पनाह से निकल कर अल्लाह की पनाह में दाखिल होता हूँ", फिर दूसरी मर्तबा ८३ मर्द और २० ख़वातीन के साथ हब्शा की तरफ़ हिजरत करने वाले क़ाफले के अमीर भी आप ही थे। उन्होंने हब्शा में तक़रीबन पाँच साल गुज़ारे थे के आप ﷺ के मदीना हिजरत कर जाने की इत्तेला मिली, तो यह अपने ख़ान्दान के साथ मक्का आए फिर चंद दिन बाद मदीना तय्यबा हिजरत कर गए और वहाँ अब्दुल्लाह बिन सलहा अजलान के मकान पर ठहरे। रसूलुल्लाह ﷺ ने अबुलहैसम बिन तैहान अन्सारी को आप का दीनी भाई बनाया। उन्होंने जंगे बद्र में शिर्कत फर्माई तो वापस आकर बीमार हो गए और सन २ हिजरी में मदीना तय्यबा में वफ़ात पाई। आप ﷺ ने उन की पेशानी को बोसा दे कर फ़र्माया :"तुम दुनिया से इस तरह रुख़्सत हुए के तुम्हारा दामन ज़र्रा बराबर इस से मैला नहीं हुआ।" जन्नतुल बक़ीअ् में दफ़न होने वाले यह पहले सहाबी हैं।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — चांद अल्लाह की निशानी है

अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत से चांद बनाया और उसे एक निज़ाम से जोड़ दिया के इसी हिसाब से वह निकलता और डूबता है, कभी बारीक होता है, कभी मोटा होता है, कभी पूरा गोल हो जाता है और हर महीने के शुरू में पच्छिम की जानिब आस्मान में निकलता है और हज़ारों लाखों सालों से वह इसी निज़ाम से निकलता और डूबता है, लेकिन कभी ऐसा नहीं होता के वह पच्छिम से निकलने के बजाए पूरब से निकल जाए, या महीने के शुरू में निकलने के बजाए गायब हो जाए, यक़ीनन यह अल्लाह की कुदरत है, जिस ने हर चीज़ को एक निज़ाम से जोड़ रखा है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — हज किन लोगों पर फ़र्ज़ है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : अल्लाह के वास्ते उन लोगों के ज़िम्मे बैतुल्लाह का हज करना (फर्ज़) है जो वहां तक पहुँचने की ताक़त रखते हों। [सूर-ए-आले इमरान : ९७]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — चार चीज़ें अंबिया की सुन्नत है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "चार चीज़ें तमाम नबियों की सुन्नत हैं, निकाह करना, मिस्वाक करना, हया करना और खुश्बू का इस्तेमाल करना।" [तिर्मिज़ी :१०८०, अन अबी अय्यूब ﷺ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	नमाज़ के बाद अपनी जगह बैठे रहना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम में से कोई शख्स नमाज़ के बाद अपनी जगह पर बैठा रहे, तो फ़रिश्ते उस वक्त तक उस के लिए मग़फ़िरत की दुआ करते हैं, जब तक उस का वुज़ू न टूट जाए, फ़रिश्ते यह दुआ देते हैं :

((اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهُ ، اَللّٰهُمَّ ارْحَمْهُ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! तू इस बंदे को माफ़ कर दे, ऐ अल्लाह ! तू इस बन्दे पर रहम फ़र्मा ।"

[बुखारी : ४४५, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	वुस्अत के बावजूद हज न करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला फ़र्माते हैं जो बन्दा ऐसा हो के मैं ने उस को सेहत व तन्दरुस्ती अता कर रखी हो और उस की रोज़ी में वुस्अत व फ़रावानी दे रखी हो और उस पर पांच साल ऐसे गुज़र जाएं के वह मेरे दरबार (काबा शरीफ़) में हाज़िर न हो तो वह ज़रूर महरूम है ।"

[सही इब्ने हिब्बान : ३७७३, अन अबी सईद खुदरी ؓ]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	दो हरीसों का हाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दो प्यासे कभी सैराब नहीं होते, एक इल्म का प्यासा जो कभी सैराब नहीं होता, दूसरा दुनिया का प्यासा वह हरीस जो कभी सैराब नहीं होता ।" [मुस्तदरक : ३१२, अन अनस ؓ]

नंबर (८) : आखिरत के बारे में	जन्नत की वुस्अत

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम अपने रब की मग़फ़िरत और ऐसी जन्नत की तरफ़ दौड़ो, जिस की लम्बाई (और) चौड़ाई आस्मान व ज़मीन की वुस्अत के बराबर है, जन्नत उन लोगों के लिए तैयार की गई है, जो अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान रखते हैं (और) यह मग़फ़िरत व जन्नत अल्लाह तआला का फ़ज़ल है, वह जिस को चाहता है अपना फ़ज़ल अता फ़र्माता है और अल्लाह तआला बड़े फ़ज़ल वाला है । [सूर-ए-हदीद :२१]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	एक हिफ़ाज़ती तदबीर

रसूलुल्लाह ﷺ ने मुंह के बल लेट कर खाना खाने से मना फ़र्माया है ।

[इब्ने माजा : ३३७०, अन अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ]

फ़ायदा : इस तरह खाने से मेअ्दे में खाना बड़ी तकलीफ़ से पहुँचता है और हज़म होने में भी तकलीफ़ होती है ।

नंबर (१०) : कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म मानो और उस के हुक्म की ना फ़र्मानी मत करो, हालांके तुम (कुर्आन) सुनते हो और उन लोगों की तरह मत हो जाना जो कहते तो हैं, के हम ने सुन लिया, हालांके वह कुछ नहीं सुनते हैं । [सूर-ए-अन्फ़ाल :२० ता २१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२६) शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ

हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ क़बील-ए-ख़ज़रज की शाख़ बनू सालिम से तअल्लुक़ रखते थे। रसूलुल्लाह ﷺ की हिजरत से पहले सन ११ हिजरी में मक्का आकर इस्लाम क़बूल किया। आप बैअते ऊला, बैअते सानिया में शरीक हुए। और लोगों को दीन सिखाने के लिये बनू क़वाफ़िल के अमीर मुक़र्रर किए गए। उन्होंने मदीने में रहते हुए अपने महबूब हज़रत मुहम्मद ﷺ की ज़ियारत के लिये दो मर्तबा मक्का का सफ़र किया। हुज़ूर ﷺ भी उन से बे पनाह मुहब्बत करते थे। उन्होंने ग़ज़्व-ए-बद्र व ख़न्दक़ में शिर्कत फर्माई। वह क़ुर्आन के माहिर, बेहतरीन क़ारी और असहाबे सुफ़्फ़ा के मुअल्लिम थे और ताबिईन के अलावा बाज़ सहाबा भी आप के शागिर्द थे। उन्होंने नबी ﷺ के ज़माने ही में पूरा क़ुर्आन जमा कर लिया था। इस के अलावा एक सौ एकयासी (१८१)अहादीस भी उन से मरवी हैं। हज़रत उमर ﷺ के ज़माने में मुल्के शाम फ़तह करने वालों में शामिल हो कर बहादुरी के जौहर दिखाए, इसी बहादुरी की वजह से उन्हें एक हज़ार सवारों के बराबर समझा जाता था। हज़रत उमर ﷺ के दौरे ख़िलाफ़त में आप को अहले शाम की तालीम के लिये भेजा गया और फ़लस्तीन के क़ाज़ी मुक़र्रर किए गए। उन्होंने ७३ साल की उम्र में हज़रत उस्मान ﷺ के दौरे ख़िलाफ़त में सन ३४ हिजरी में वफ़ात पाई और फ़लस्तीन के शहर रमला में दफ़्न हुए।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — घोड़े पर जम कर बैठना

हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह ﷺ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे ज़िलख़सला के बुत ख़ाने को गिरा देने के लिए इर्शाद फ़र्माया, जब के मेरा हाल यह था के मैं घोड़े की पीठ पर जम नहीं पाता था, बल्के अकसर गिर पड़ता था, तो मैं ने अपना यह हाल रसूलुल्लाह ﷺ के सामने बयान किया, तो आप ﷺ ने मेरे सीने पर हाथ मारा और दुआ फ़र्माई : "ऐ अल्लाह ! इस को घोड़े पर जमा दे और रास्ता बतलाने वाला और रास्ता पाया हुआ कर दे।" हज़रत जरीर ﷺ कहते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ की इस दुआ के बाद मैं घोड़े पर से कभी नहीं गिरा, डेढ़ सौ सवार ले कर चला, वहां जा कर बुत ख़ाने को तोड़ फ़ोड़ कर जला दिया।

[बुखारी : ४३५७, अन जरीर ﷺ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — रोज़े की फर्ज़ियत

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : ऐ ईमान वालो ! ज़िस तरह तुम से पहेले लोगों पर रोज़ा फर्ज़ किया गया था, इसी तरह तुम पर भी फर्ज़ किया गया है, ताके तुम परहेज़गार बन जाओ। [सूर-ए-बक़रह :१८३]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — जब आइना देखे तो यह दुआ पढ़े

जब आइने में अपना मुंह देखे तो यह दुआ पढ़े : ((اَللّٰهُمَّ حَسَّنْتَ خَلْقِيْ فَحَسِّنْ خُلُقِيْ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! तू ने ही मेरी सूरत अच्छी बनाई है, तू मेरे अख़लाक़ को भी अच्छे बना दे।

[इब्ने हिब्बान : ९६४, इब्ने मसऊद ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	बा जमात नमाज़ का सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जमात की नमाज़ तन्हा नमाज़ (पढ़ने के) मुकाबले में सत्ताइस दर्जा अफ़ज़ल है।"
[मुस्लिम : १४७७, अन इब्ने उमर رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	दुनिया कमाने की निय्यत से दीन पर चलना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : लोगों में कोई ऐसा भी है, जो किनारे पर खड़े हो कर अल्लाह की इबादत करता है, फ़िर अगर उस को कोई दुनियावी नफ़ा पहुंच गया, तो उस की वजह से (दीन) पर ठहरा रहा और अगर उस को कोई आज़माइश आ गई, तो अपने मुंह के बल उल्टे (यानी दीन से) फ़िर गया, वह दुनिया और आखिरत दोनों को खो बैठा, यह दोनों जहां का खुला हुआ नुक्सान है। [सूर-ए-हज : ११]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया को बेहतर समझना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : (ऐ मुन्किरो!) तुम दुनिया की ज़िन्दगी को (आखिरत के मुकाबले में) बेहतर समझते हो, हालांके आखिरत (दुनिया के मुक़ाबले में) ज़ियादा बेहतर और बाक़ी रहने वाली है।
[सूर-ए-आला : १६ ता १७]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	बग़ैर हिसाब जन्नत में जाने वाले

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मेरे रब ने मुझ से वादा फ़र्माया है, के आप की उम्मत के सत्तर हज़ार लोग बिला हिसाब व किताब जन्नत में दाखिल होंगे, जिन पर कोई अज़ाब न होगा, हर हज़ार के साथ (मज़ीद) सत्तर हज़ार होंगे और मेरे रब के तीन लप भर कर जन्नत में दाखिल होंगे।"
[तिर्मिज़ी : २४३७, अन अबी उमामा رضي الله عنه]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	गोश्त के फ़वाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दुनिया वालों और जन्नतियों का सब से उम्दा और लज़ीज़ खाना गोश्त है।"
[इब्ने माजा : ३३०५, अन अबी दर्दा رضي الله عنه]

फ़ायदा : हज़रत अली رضي الله عنه ने फ़र्माया : गोश्त खाओ, इस लिए के यह बदन के रंग को निखारता है पेट को बढ़ने से रोकता है और अखलाक व आदात को संवारता है। [तिब्बे नब्वी]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम इतना ही अमल करो जितनी ताक़त रखते हो, क्यों के अल्लाह तआला (सवाब देने से) नहीं थकता लेकिन तुम थक जाओगे और अल्लाह तआला के नज़दीक सब से ज़ियादा महबूब अमल वह है जो हमेशा किया जाए, अगरचे थोड़ा ही हो।"
[मुस्लिम : १८२७, अन आयशा رضي الله عنها]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर ①: इस्लामी तारीख — हज़रत हलीमा सादिया

हज़रत हलीमा सादिया अब्दुल्लाह बिन हारिस की बेटी और हारिस बिन अब्दुल उज़्ज़ा की बीवी थीं, वह एक अमानतदार और अख़्लाक़ मन्द ख़ातून थीं, उन का तअल्लुक़ कबील-ए-बनू सअद से था, जो पूरे अरब में फ़साहत व बलाग़त में मशहूर था, इसी ख़ुश क़िस्मत और नेक बख़्त ख़ातून ने अरब के रिवाज के मुताबिक सरकारे दो आलम को दूध पिलाया और तरबियत व परवरिश फ़र्माई, वह आप से बहुत मुहब्बत करती थीं, जब हुज़ूर हलीमा के यहाँ तशरीफ़ लाए तो उन की तंगी फ़राख़ी में बदल गई और वह रोज़ाना अजीब व ग़रीब ख़ैर व बरकत का मुशाहदा करने लगी, जिस की वजह से उन की मुहब्बत में रोज़ बरोज़ इज़ाफ़ा होता चला गया, तक़रीबन ४ साल तक उन्होंने नबी की परवरिश की फिर उन्होंने आप को वालिद-ए-मोहतरमा के हवाले कर दिया। एक ज़माना गुज़रने के बाद जब हुज़ूर की नुबुव्वत की ख़बर मिली, तो हज़रत हलीमा उन के शौहर हारिस और बेटी शैमा ने इस्लाम क़बूल कर लिया। ख़ुद रसूलुल्लाह भी उन का बहुत एहतेराम करते थे, अम्मी कह कर पुकारते, उन की आमद पर अपनी चादर मुबारक बिछा देते, उन की ख़िदमत और हर ज़रूरत पूरी फर्माते। हज़रत हलीमा हिजरत कर के मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले गईं और वहीं वफ़ात पा कर जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न हुईं।

नंबर ②: अल्लाह की कुदरत — जड़ी बूटियां

अल्लाह तआला ने ज़मीन पर मुख्तलिफ़ किस्म के पेड़ पौदे उगाए, उन पेड़ पौदों को इन्सान अपनी किसी न किसी ज़रूरत के लिए इस्तेमाल करता है, जिस में कुछ पेड़ पौदों को अपने इलाज के लिए इस्तेमाल करता है और हर एक में अल्लाह तआला ने अलग अलग खासियत रखी है, कोई बुखार में मुफ़ीद है, कोई नज़ले में मुफ़ीद है, तो कोई खांसी में मुफ़ीद है। ज़रा ग़ौर कीजिए के इन मुख्तलिफ़ जड़ी बूटियों में बिमारियों से शिफ़ा किस ने रखी है ? यक़ीनन वह अल्लाह ही की ज़ात है, जिस ने पेड़ पौदों में बिमारियों की शिफ़ा रखी है।

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — बे नमाज़ी का इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं

रसूलुल्लाह ने फर्माया "जो शख़्स नमाज़ नहीं पढ़ता है उस का इस्लाम में कुछ भी हिस्सा नहीं है और बग़ैर वुज़ू के नमाज़ नही होती।" [तरग़ीब व तरहीब : ७७२, अन अबी हुरैरह]

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — मुसलमान भाई से गले मिलना

हज़रत अबू ज़र गिफ़ारी फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ने मुझ से मुआनक़ा फ़र्माया (यानी गले मिले)। [अबू दाऊद : ५२१४, अन अबी ज़र]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अंधेरे में मस्जिद में जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मस्जिद की तरफ़ तारीकी में चलनें वालों को क़यामत के दिन मुकम्मल नूर की खुशखबरी सुना दो।"

[अबू दाऊद : ५६१, अन बुरैदा ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	रमज़ान का रोज़ा छोड़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स (क़स्दन) किसी शरई उज़्र के बग़ैर रमज़ान के एक रोज़े को भी तोड़ दे, तो उम्र भर रोज़ा रखना भी उस (एक रोज़े का) बदल नहीं हो सकता।"

[अबू दाऊद : २३९६, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	आखिरत के इरादे पर दुनिया

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह तआला दुनिया आखिरत के इरादे पर देता है और दुनिया के इरादे पर आखिरत देने से इन्कार करता है।"

[कंज़ुल उम्माल : ७२३७, अन अनस ؓ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	जहन्नम की ज़ंजीरें

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "(क़यामत के दिन फ़रिश्तों को हुक्म होगा के) इस जहन्नमी को पकड़ कर तौक़ पहेना दो, फ़िर दोज़ख में दाखिल कर के ऐसी ज़ंजीर में जकड़ दो जिस की लम्बाई सत्तर गज़ है।"

[सूर-ए-हाक्कह : ३० ता ३२]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	सेहत और बीमारी का राज़

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मेदा बदन का हौज़ है और जिस्म की सारी रगें इसी मेदे से सैराब होती हैं, लिहाज़ा जब मेदा सही होता है तो रगें पूरे जिस्म में सेहत को मुन्तक़िल करती हैं और जब मेदा खराब होता है तो रगें बीमारी को मुन्तक़िल करती हैं।"

[अलमुअजमुल औसत लित्तबरानी : ४४९४, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : तुम ऐसे अज़ाब से बचो, जो सिर्फ़ गुनाह करने वालों ही पर नहीं आएगा, बल्के गुनाह देख कर खामोश रहने वालों को भी अपनी पकड़ में लेगा, खूब जान लो के अल्लाह सख्त सज़ा देने वाला है।

[सूर-ए-अन्फाल : २५]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ | हज़रत उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब ﵂

हज़रत उम्मे हानी ﵂ हुज़ूर ﷺ के चचा अबू तालिब की बेटी थीं उन का नाम फ़ाख्ता है और उम्मे हानी उन की कुन्नियत है। उन का निकाह हुबैरा बिन अम्र से हुआ। शुरू ही से उन्हें आप ﷺ से अक़ीदत थी, मगर सन ८ हिजरी में मक्का जब फ़तह हुआ तब वह मुसलमान हुई। उन की खुश किस्मती यह के फ़तहे मक्का के दिन आप ﷺ ने उन ही के मकान पर क़याम फ़र्माया और उन के मकान में पनाह लेने वालों को अमान दी। आप ﷺ उन से बहुत मोहब्बत करते थे। मेअ्राज का मुक़द्दस सफ़र भी आप ﷺ ने उम्मे हानी के घर से ही किया था। वह आप ﷺ से कभी कभी मसाइल पूछा करती थीं। एक मर्तबा उन्हों ने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा के अब मैं बूढ़ी हो गई हूं और चलने फिरने में कमज़ोरी महसूस होती है, इस लिए कोई ऐसा अमल बता दीजिए जिस को बैठे बैठे ही अंजाम दे सकूं। आप ﷺ ने एक वज़ीफ़ा बतलाया और फ़र्माया के सुब्हानल्लाह एक सौ मर्तबा, अल्हम्दुलिल्लाह एक सौ मर्तबा, अल्लाहु अकबर एक सौ मर्तबा और ला इलाह इल्लल्लाह एक सौ मर्तबा पढ़ लिया करो। हज़रत उम्मे हानी ﵂ हज़रत अली ﵁ की वफ़ात के बाद काफ़ी दिनों तक ज़िन्दा रहीं और उन का इन्तेक़ाल हज़रत अमीर मुआविया ﵁ की खिलाफ़त के ज़माने में हुआ।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा | रसूलुल्लाह ﷺ की दुआ की बरकत

हज़रत अबू ज़ैद (अम्र बिन अख़्तब ﵁) फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने अपना मुबारक हाथ, मेरे चेहरे पर फेरा और मेरे लिए दुआ फ़र्माई, (उसी की बरकत थी के) उन की उम्र एक सौ बीस साल हो जाने के बावजूद सर में चंद ही बाल सफ़ेद हुए थे। [तिर्मिज़ी : ३६२९]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | हर मुसलमान पर रोज़ा रखना फ़र्ज़ है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम में से जो शख्स (रमज़ान के) महीने को पाए, तो उस को उस में (ज़रूर) रोज़ा रखना चाहिए। [सूर-ए-बक़रह : १८५]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | रमज़ान का महीना आए तो यह दुआ पढ़े

हज़रत उबादा बिन सामित ﵁ फ़र्माते हैं के जब रमज़ानुल मुबारक का महीना आता तो आप ﷺ हमें यह दुआ सिखाते : ((اَللّٰهُمَّ سَلِّمْنِىْ لِرَمَضَانَ وَ سَلِّمْ رَمَضَانَ لِىْ وَسَلِّمْهُ لِىْ مُتَقَبَّلًا))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! रमज़ान के रोज़ों के लिए मुझे सेहत व सलामती अता फ़र्मा और रमज़ान को मेरे लिए सलामती का महीना बना और इस (महीने में किये जाने वाले मेरे) आमाल को कुबूल फ़र्मा।

[कंज़ुल उम्माल : २४२७२]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	नमाज़े जनाज़ा का सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स जनाज़े में शरीक होकर (सिर्फ़) नमाज़ पढ़े, तो उस को एक क़ीरात सवाब मिलेगा और जो शख्स जनाज़े (की नमाज़ पढ़ने के बाद) दफ़न में शरीक हो, तो उस को दो क़ीरात सवाब मिलेगा।" मालूम किया गया दो क़ीरात की मिकदार क्या है? तो आप ﷺ ने फ़र्माया : "दो बड़े पहाड़ के बराबर है।"

[बुखारी : १३२५, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	पाकदामन औरतों पर तोहमत लगाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : जो लोग पाकदामन औरतों पर (ज़िना) की तोहमत लगाते हैं, फिर अपने दावे पर चार गवाह न ला सकें, तो ऐसे लोगों को अस्सी कोड़े लगाओ और आइंदा कभी उन की गवाही क़ुबूल न करो और यह लोग (सख्त) गुनहगार हैं, मगर जो लोग इस तोहमत के बाद तौबा कर लें और अपनी इस्लाह कर लें तो बेशक अल्लाह तआला बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है।

[सूर-ए-नूर : ४ ता ५]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया वालों का हाल

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जब अल्लाह तआला इन्सान को आज़माता है, तो उस की रोज़ी उस पर तंग कर देता है,फिर वह शिकायत करता फ़िरता है के मेरे रब ने मेरी क़द्र घटा दी (हलांके) हरगिज़ ऐसा नहीं, बल्के तुम यतीमों की इज़्ज़त नहीं करते और मिस्कीनों को आपस मे खाना खिलाने की तर्गीब नहीं देते हो (जिस की वजह से ऐसा हुआ)।

[सूर-ए-फज्र : १६ ता १८]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	सख्त हिसाब का नतीजा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क़यामत के दिन जिस से सख्त हिसाब लिया जाएगा, उस को अज़ाब हो कर रहेगा।"

[बुखारी : ६५३६, अन आयशा رضي الله عنها]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	सेहत के लिए एहतियाती तदबीर

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ खाने, पीने की चीज़ों में फूंक नहीं मारते थे और न बर्तन में सांस लेते थे।

[इब्ने माजा : ३२८८]

फ़ायदा : अतिब्बा कहते हैं के जो हवा सांस के ज़रिये बाहर निकलती है उस में मर्ज़ के एतेबार से लाखों जरासीम होते हैं, जब इन्सान बर्तन में तीन फूंक मारेगा या सांस लेगा, तो वह जरासीम फैल कर सेहत के लिए नुकसान देह साबित हो सकते हैं।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तहज्जुद ज़रूर पढ़ा करो अगरचे उतनी ही देर के लिए हो जितनी देर में बकरी का दूध दूहा जाता है और जो नमाज़ भी इशा के बाद पढ़ी जाए, वह तहज्जुद में शामिल है।"

[तबरानी कबीर : ७८५, अन अयास बिन मुआविया अलमुज़नी رضي الله عنه]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(२९) शाबानुल मुअज़्ज़म

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत सफ़िय्या बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब

हज़रत सफ़िय्या अबू तालिब की साहबज़ादी, हुज़ूर ﷺ की फूफी, हज़रत हम्ज़ा رضي الله عنه की बहन और हज़रत ज़ुबैर رضي الله عنه की वालिदा हैं, इस्लाम लाने के बाद उन्होंने अपने बेटे हज़रत ज़ुबैर के साथ हिजरत फ़र्माई, हज़रत हम्ज़ा رضي الله عنه की तरह वह भी बड़ी बहादुर थीं; वह ग़ज़्व-ए-उहुद में मदीना की चंद औरतों को साथ ले कर मैदान में पहुँचीं और मुसलमानों को पानी पिलाने और ज़ख्मियों की मरहम पट्टी करने में लग गई, हुज़ूर ﷺ उन्हें देख कर पहले नाराज़ हुए लेकिन बाद में इजाज़त दे दी, जब काफ़िरों का पल्ला भारी हुआ और मुसलमान पीछे हटने लगे, तो उन्होंने मुसलमानों को हिम्मत दिलाई। हज़रत हम्ज़ा رضي الله عنه की शहादत के बाद जब काफ़िरों ने उन के नाक, कान वग़ैरा काट लिये तो हुज़ूर ﷺ ने उन्हें लाश के क़रीब जाने से रोका, तो हज़रत सफ़िय्या ने अर्ज़ किया मैं इन्शाअल्लाह सब्र करूँगी तो हुज़ूर ﷺ ने जाने की इजाज़त देदी उन्होंने भाई की लाश को देख कर "إِنَّا لِلّٰه" पढ़ा और इत्मेनान के साथ नमाज़ अदा कर के उन के हक़ में दुआ फ़र्माई। ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर हुज़ूर ﷺ ने सारी औरतों को क़िला "फ़ारेअ़" में महफ़ूज़ कर दिया ताके दुश्मनों के शर से महफ़ूज़ रहें और एक बूढ़े सहाबी को उन का अमीर बना दिया एक यहूदी मौक़े की तलाश में क़िले के चारों तरफ़ घूम रहा था, वह बूढ़े सहाबी उस से मुक़ाब्ले की हिम्मत नहीं कर सके। हज़रत सफ़िय्या رضي الله عنها ने उस का काम तमाम कर दिया, उन की इस बहादुरी से हुज़ूर ﷺ बहुत ख़ुश हुए। हज़रत सफ़िय्या رضي الله عنها ने ७२ साल की उम्र पा कर सन २० हिजरी में हज़रत उमर رضي الله عنه की ख़िलाफ़त में वफ़ात पाई और जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़न की गई।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — रात और दिन

अल्लाह तआला ने जहां इन्सान के लिए ज़रूरियात की चीज़ें पैदा की हैं, वहीं आराम व सुकून के लिए रात और दिन बनाए और इन्सान के अन्दर ऐसा निज़ाम बना दिया के वह अगर चौबीस घंटे में किसी वक्त न सोए, तो उस की आँखे खुद बखुद बंद होने लगती हैं और आखिर उसे सोना ही पड़ता है, चुनांचे अल्लाह तबारक व तआला ने काम करने के लिए दिन को बनाया और दिन भर थक कर आराम की ग़र्ज़ से रात को बनाया; अगर अल्लाह तआला सिर्फ़ दिन बनाता और रात न बनाता, तो इन्सानों को सुकून नहीं मिलता, यक़ीनन अल्लाह तआला बड़ी हिकमत वाला है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — बीवी को उस का महेर देना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम लोग अपनी बीवियों को उन का महेर खुशदिली से दे दिया करो, अलबत्ता अगर वो अपने महेर में से कुछ छोड़ दें, तो उसे लज़ीज़ और खुशगवार समझ कर खाओ।

[सूर-ए-निसा : ४]

नंबर (४): *एक सुन्नत के बारे में*	खादिमों के साथ अच्छा बर्ताव करना

हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ बयान करते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ की दस साल खिदमत की, लेकिन आप ﷺ ने मुझे कभी "उफ़" तक नहीं कहा और न ही किसी चीज़ के बारे में यह फ़र्माया के "तुम ने ऐसा क्यों किया ?" और न ही ऐसा कहा के ऐसा क्यों नहीं किया?" [मुस्लिम : ६०११]

नंबर (५): *एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत*	रोज़ा जहन्नम से बचने का ज़रिया है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स अल्लाह तआला की रज़ा के लिए एक दिन का रोज़ा रखेगा, तो अल्लाह तआला उस के और जहन्नम के दर्मियान एक ऐसी खंदक बना देगा, जिस की मसाफ़त आस्मान व ज़मीन के दर्मियान के बराबर होगी।" [तिर्मिज़ी : १६२४, अन अबी उमामा अलबाहिली ﷺ]

नंबर (६): *एक गुनाह के बारे में*	हज में बिला वजह ताखीर करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस शख्स को किसी मजबूरी या ज़ालिम बादशाह या किसी मर्ज़ ने (हज से) नहीं रोका फिर भी उस ने हज नहीं किया, तो उसे यहूदी या नस्रानी हो कर मर जाना चाहिए।" [बैहकी फ़ी शोअबिलईमान : ३८१९, अन अबी उमामा ﷺ]

नंबर (७): *दुनिया के बारे में*	दुनिया का कितना हिस्सा फ़ायदे मंद है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "ऐ अबूज़र ! दुनिया में से जो हिस्सा आखिरत के लिए होगा वह तुझे नुकसान नहीं देगा, नुकसान वह देगा जो दुनिया ही के लिए हो।" [कंज़ुल उम्माल : ८५८९, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (८): *आखिरत के बारे में*	अच्छे और बुरे कामों का अंजाम

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : हम ने काफ़िरों के लिए ज़ंजीरें, तौक़ और दहेकती हुई आग तय्यार कर रखी है और नेक लोग प्यालों में ऐसी शराब पियेंगे जिन में काफ़ूर की मिलावट होगी, वह एक चश्मा है, जिस से अल्लाह के खास बन्दे पियेंगे और वह उस चश्मे को जहां चाहेंगे बहा कर ले जाएंगे।

[सूर-ए-दहर : ४ ता ६]

नंबर (९): *तिब्बे नब्वी से इलाज*	रात के खाने का फ़ायदा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "रात का खाना मत छोड़ो चाहे एक मुट्ठी खजूर ही क्यों न हो, इस लिए के रात का खाना छोड़ना बुढ़ापा लाता है।" [इब्ने माजा : ३३५५, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ]

नंबर (१०): *कुर्आन की नसीहत*	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ लोगो ! अल्लाह के तुम पर जो एहसानात हैं उन को याद करो, क्या अल्लाह तआला के सिवा कोई और भी खालिक़ है ? जो तुम को ज़मीन व आस्मान से रोज़ी पहुँचाता हो। उस के सिवा कोई माबूद नहीं फिर तुम कहां फिरे जा रहे हो?" [सूर-ए-फ़ातिर : ३]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत उम्मे हकीम बिन्ते हारिस ﷺ

उम्मे हकीम बिन्ते हारिस, हज़रत इक्रमा की बीवी और हज़रत खालिद बिन वलीद की भांजी थीं, फ़तहे मक्का के वक्त हुज़ूर ﷺ के आला अखलाक़, बलंद किरदार और रहम व करम को देख कर उन्होंने इस्लाम कुबूल कर लिया, उन के शौहर हज़रत इक्रमा मक्का छोड़ कर यमन चले गए थे, उम्मे हकीम ने उन के लिए आप ﷺ से अमान तलब किया और उन्हें बुला कर लायीं, जब मक्का के क़रीब पहुँचे, तो हुज़ूर ﷺ ने फ़र्माया : इक्रमा तुम्हारे पास मोमिन व मुहाजिर बन कर आए हैं चुनांचे उन्होंने आप की खिदमत में आकर ईमान क़बूल कर लिया, यह इस्लाम की सदाक़त व हक़्क़ानियत का नतीजा है के तौहीद व रिसालत के सब से बड़े दुश्मन अबू जहल के घराने के यह अफ़राद इस्लाम में दाखिल हो गए। हज़रत उम्मे हकीम ﷺ अपने शौहर के साथ जंगे यरमूक में शरीक हुईं, उस में हज़रत इक्रमा ﷺ शहीद हुए, इद्दत के बाद हज़रत खालिद बिन सईद ﷺ ने उन से निकाह कर लिया और तमाम मुजाहिदीन को वलीमा की दावत दी, अभी मुजाहिदीन दावते वलीमा से फ़ारिग़ भी न हुए थे के रूमी फ़ौज ने हम्ला कर दिया और जंग शुरू हो गयी और खालिद बिन सईद ﷺ भी शहीद हो गए, तो उम्मे हकीम ने खेमे की एक लकड़ी से फ़ौज पर बहादुरी से हम्ला किया और सात रूमियों को मौत के घाट उतार दिया। फ़िर उस के बाद उमर फ़ारुक़ ﷺ के निकाह में आईं और उन्हीं के दौरे खिलाफ़त में सन १४ हिजरी में वफ़ात हुई।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — मदीना मुनव्वरा की हर चीज़ का रौशन हो जाना

हज़रत अनस ﷺ फ़र्माते हैं के जिस दिन रसूलुल्लाह ﷺ (हिजरत कर के) मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए, (उस दिन आप ﷺ की आमद की बरकत से) मदीना मुनव्वरा की हर चीज़ रौशन हो गयी और जिस दिन रसूलुल्लाह ﷺ ने (इस दुनिया से) पर्दा फ़र्माया, (उस दिन आप ﷺ के चले जाने से) मदीना मुनव्वरा की हर चीज़ पर अंधेरा छा गया। [तिर्मिज़ी : ३६१८]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सजद-ए-सह्व करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम में से किसी को(नमाज़ में) भूल चूक हो जाए, तो सजद-ए-सह्व कर ले।" [मुस्लिम : १२८३, अन अबी शिबल ﷺ]

फ़ायदा : अगर नमाज़ में कोई वाजिब भूल से छूट जाए या वाजिबात और फ़राइज़ में से किसी को अदा करने में देर हो जाए, तो सजद-ए-सह्व करना वाजिब है; इस के बग़ैर नमाज़ नहीं होती।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — फ़ल खाने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ जब फल खाते तो यह दुआ पढ़ते :

((اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْ ثَمَرِنَا وَبَارِكْ لَنَا فِيْ مَدِيْنَتِنَا وَبَارِكْ لَنَا فِيْ صَاعِنَا وَ بَارِكْ لَنَا فِيْ مُدِّنَا))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हमारे फलों, हमारे शहर और हमारे साअ् और मुद् (यानी तोलने और नापने के पैमानों) में बरकत अता फ़र्मा। [मुस्लिम : ३३३४, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	बा वुज़ू सोना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो भी मुसलमान वुज़ू कर के अल्लाह तआला का ज़िक्र करते हुए सोता है, फिर रात में बेदार हो कर अल्लाह से दुनिया और आखिरत की भलाई का सवाल करता है, तो अल्लाह तआला उसे देते हैं।" [अबू दाऊद : ५०४२, अन मुआज़ बिन जबल रज़ि.]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	अल्लाह और उस के रसूल को तकलीफ़ देना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग अल्लाह को नाराज़ करते हैं और उस के रसूल को तकलीफ़ पहुँचाते हैं तो उन पर अल्लाह तआला दुनिया व आखिरत में लानत करता है और अल्लाह ने उन के लिए ज़लील व रुस्वा करने वाला अज़ाब तय्यार कर रखा है।" [सूर-ए-अहज़ाब : ५७]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	माल व औलाद की मोहब्बत

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "(माल व औलाद की) कसरत (और दुनिया के सामान पर) फ़ख्र ने तुम को ग़ाफ़िल कर दिया है, यहां तक के तुम कब्रस्तान जा पहुँचते हो, हरगिज़ ऐसा न करो, तुम को बहुत जल्द मालूम हो जाएगा।" [सूर-ए-तकासुर : १ता ३]

नंबर (८) : आखिरत के बारे में	क़ब्र क्या कहती है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क़ब्र रोज़ाना पुकार कर कहती है : मैं गुरबत और वहशत और कीड़ों का घर हूं, मैं आग का तन्नूर हूँ या जन्नत का बाग़।" [बैहक़ी फी शोबिल ईमान : ४३०, अन सअद बिन बिलाल रज़ि.]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	नशा आवर चीज़ों से एहतियात

हज़रत उम्मे सल्मा रज़ि. फ़र्माती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने हर नशा वाली और अक़्ल में खराबी पैदा करने वाली चीज़ों से रोका है। [अबू दाऊद : ३६८६]

फ़ायदा : अतिब्बा लिखते हैं के नशा वाली चीज़ों के नुकसान देह असरात सब से ज़ियादा दिमाग़ पर ज़ाहिर होते हैं। लिहाज़ा इस से बचने की सख्त ज़रूरत है।

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : अल्लाह तआला फ़र्माते हैं : ऐ मेरे बन्दो ! मैं ने अपने ऊपर और तुम्हारे ऊपर ज़ुल्म को हराम कर दिया है, लिहाज़ा तुम आपस में एक दूसरे पर ज़ुल्म न करो, ऐ मेरे बन्दो ! तुम में का हर आदमी सीधी राह से भटका हुआ है, मगर मैं जिस को हिदायत से नवाज़ दूँ, लिहाज़ा तुम मुझ से हिदायत तलब करो मैं तुम को हिदायत दूँगा, ऐ मेरे बन्दो ! तुम में का हर आदमी भूका है, मगर मैं जिस को खिलाऊं, लिहाज़ा मुझ से खाना तलब करते रहो, मैं देता रहूंगा,ऐ मेरे बन्दो ! तुम में का हर आदमी नंगा है, मगर जिस को मैं कपड़े पहना दूं , लिहाज़ा तुम मुझ से कपड़ा तलब करते रहो, मैं देता रहूंगा, ऐ मेरे बन्दो ! तुम रात दिन गुनाह करते रहते हो और गुनाह माफ़ करने वाला मैं ही हूं, लिहाज़ा तुम मुझ से मग़फ़िरत तलब करते रहो, मैं माफ करता रहूंगा। [मुस्लिम : ६५७२, अन अबीज़र रज़ि.]

रमज़ानुल
मुबारक

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत आदम ﷺ

हज़रत आदम ﷺ वह पहले इन्सान हैं, जिन से दुनिया में बसने वाले इन्सानों की इब्तिदा हुई है, अल्लाह तआला ने उन का खमीर तैयार करने से पहले फरिश्तों से कहा "अनकरीब मैं मिट्टी से एक मखलूक पैदा करने वाला हूँ, जिसे ज़मीन में हमारी खिलाफत का शर्फ हासिल होगा।" चुनांचे हज़रत आदम ﷺ का खमीर मिट्टी से गूंधा गया, फिर अल्लाह तआला ने उस में रूह फूंक दी, तो देखते ही वह ज़िंदा इन्सान बन गए, उन के सामने फरिश्तों को सजदा करने का हुक्म दिया, तो तमाम फरिश्ते अल्लाह तआला के हुक्म की इताअत करते हुए सजदे में गिर गए, मगर शैतान ने अपनी बड़ाई और तकब्बुर की वजह से सजदे से इन्कार कर दिया और कहने लगा : "के मैं उस से बेहतर हूँ, क्यों कि आप ने मुझे आग से पैदा किया और आदम को मिट्टी से पैदा किया है।" इस तरह शैतान हमेशा के लिए अल्लाह की लानत का मुस्तहिक बन गया, फिर उसी वक्त से वह आदम ﷺ और उन की औलाद का दुश्मन बन गया।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — खजूर में अल्लाह की कुदरत

खजूर एक उम्दा क़िस्म का फल है, इब्तेदा में वह निहायत कमज़ोर हालत में होती है। अल्लाह तआला ने अपनी हिकमत से इस तरह बनाया है के एक दूसरे से मिली हुई होती हैं। उन पर एक ग़िलाफ चढ़ा दिया, ताके हिफ़ाज़त रहे, फिर जब वह पुख़्ता और कामिल हो जाती हैं तो आहिस्ता आहिस्ता वह गिलाफ़ फट कर फल ज़ाहिर होने लगते हैं और फिर वह हवा और सरदी गरमी भी बरदाश्त करने लगती हैं, अल्लाह का यही निज़ामे कुदरत तमाम दरख़्तों और फलों फूलों में कार फ़र्मा है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — इस्लाम की बुनियाद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर है : (१) इस बात की गवाही देना के अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। (२) नमाज़ अदा करना। (३) ज़कात देना। (४) हज करना। (५) रमज़ान के रोज़े रखना।" [बुखारी : ८, अन इब्ने उमर رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — सहरी खाना

एक सहाबी رضي الله عنه फर्माते हैं के मैं आप ﷺ की खिदमत में आया, तो देखा के आप ﷺ सहरी खा रहे

थे, (मुझे देख कर)आप ﷺ ने फर्माया : "यह बरकत की चीज़ है अल्लाह ने इस से तुम को नवाज़ा, इस लिए तुम इस को कभी न छोड़ना।"

[नसई : २१६४, अन अब्दुल्लाह बिन हारिस رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	तरावीह का सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो रमज़ान की रात में अल्लाह तआला के वादों पर यकीन करते हुए और उस के अज्र व सवाब के शौक में नमाज़ (तरावीह) पढ़ता हो उस के पिछले सब गुनाह माफ हो जाते हैं।"

[बुखारी : ३७, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	हराम गिज़ा की नहूसत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "उस ज़ात की कसम जिस के कब्ज़े में मेरी जान है ! आदमी अपने पेट में हराम लुकमा डालता है, जिस की वजह से चालीस रोज़ तक उस का कोई अमल अल्लाह के यहां क़बूल नहीं होता।"

[तर्गीब : २४८४, अन इब्ने अब्बास رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	हलाल और हराम को समझो

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अनकरीब एक ज़माना ऐसा आने वाला है, जिस में आदमी को यह भी परवाह न रहेगी के माल हराम है या हलाल।"

[बुखारी : २०५९, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	सब को आमाल नामा दिया जाएगा

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : आमाल का रजिस्टर सामने रख दिया जाएगा, तो उस वक्त तुम मुजरिमों को देखोगे के वह लोग उन के आमाल नामों में लिखी हुई चीज़ों से डर रहे होंगे और अफसोस से कह रहे होंगे: हाय हमारी कम बख्ती ! यह कैसा दफ्तर और रजिस्टर है ? जिसने न कोई छोटा अमल छोड़ा है और न बड़ा अमल, सब ही इस में महफूज़ है। [सूर-ए- कहफ : ४९]

नंबर (९): कुर्आन से इलाज	कुर्आन हर मर्ज़ के लिए शिफा है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है :

﴿ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴾

तर्जमा : हम कुर्आन में ऐसी चीज़ें नाज़िल करते हैं, जो ईमान वालों के हक में शिफा व रहमत हैं।

[सूर-ए-बनी इसराईल : ८२]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो और वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करो और रिश्तेदारों, यतीमों और मिस्कीनों के साथ भी अच्छा बरताव करो, लोगों से खुश अखलाकी से बात करो और नमाज़ कायम करो और ज़कात अदा करो।"

[सूर-ए- बकरा ८३]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत आदम ﷺ का दुनिया में आना

हज़रत आदम ﷺ पैदाइश के बाद एक अर्से तक जन्नत में तन्हा रहते हुए बेचैनी महसूस करने लगे तो तसल्ली के लिए अल्लाह तआला ने उन की बाईं पसली से हज़रत हव्वा ﷺ को पैदा किया और दोनों को हुक्म दिया के इस दरख़्त के अलावा जन्नत की तमाम नेअमतों का इस्तेमाल करो। शैतान ने वसवसा डाला और कहा के इस दरख़्त की खुसूसियत यह है के इस का फल खाने के बाद तुम हमेशा जन्नत में रहोगे, चुनांचे शैतान के धोके में आकर उन्हों ने उस दरख़्त का फल खा लिया, अल्लाह तआला ने इस लग़ज़िश की वजह से जन्नत का लिबास उतार कर दोनों को दुनिया में भेज दिया। हज़रत आदम ﷺ अपनी लग़ज़िश पर बहुत शर्मिन्दा हुए और एक मुद्दत तक तौबा व इस्तिग़फार करते हुए अल्लाह के सामने रोते रहे, फिर अल्लाह तआला ने उन की तौबा कबूल फर्माई और दोनों दुनिया में ज़िंदगी गुज़ारने लगे। इस तरह हज़रत आदम व हव्वा से दुनिया में नस्ले इन्सानी का सिलसिला शुरु हुआ।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — आप ﷺ की विलादत का मुअ्जिज़ा

अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رضي الله عنه अपनी वालिदा शिफा से रिवायत करते हैं के मेरी वालिदा ने फर्माया: जब हज़रत आमिना के बतन से आप ﷺ पैदा हुए, तो मेरे हाथों में आए और बच्चों के मामूल के मुवाफिक आप ﷺ की आवाज़ निकली तो मैं ने कहने वाले को सुना के कोई कह रहा था "रहिमक रब्बुक" ऐ मुहम्मद ﷺ! आप पर अल्लाह तआला की रहमत हो और फिर मशरिक व मग़रिब का दर्मियानी हिस्सा रौशन हो गया, यहां तक के मैं ने मुल्के शाम के बाज़ महल्लात भी देखे।

[दलाइलुन्नुबुव्वह लिअबी नुऐम : ७७]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ व रोज़ा पिछले गुनाहों का कफ्फारा है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: "पाँचों नमाज़ें और जुमा की नमाज़ पिछले जुमा तक और रमज़ान के रोज़े पिछले रमज़ान तक दर्मियानी औक़ात के तमाम गुनाहों के लिए कफ्फारा हैं जब के उन आमाल को करने वाला कबीरा गुनाह से बचे।"

[मुस्लिम : ५५२, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — इफ्तार करने की दुआ

जब आप ﷺ इफ्तार फर्माते, तो यह दुआ पढ़ते : ((اَللّٰهُمَّ لَكَ صُمْتُ وَعَلٰى رِزْقِكَ أَفْطَرْتُ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं ने तेरे लिए रोज़ा रखा और तेरे ही दिए हुए रिज़्क से इफ्तार कर रहा हूँ।

[अबू दाऊद : २३५८, अन मुआज़ बिन ज़ोहरा رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | रमज़ान के तीन हिस्से

रसूलुल्लाह ﷺ ने रमज़ान के मुतअल्लिक फर्माया: "यह ऐसा महीना है के इस का अव्वल हिस्सा अल्लाह की रहमत है और दर्मियानी हिस्सा मग़फिरत है और आखिरी हिस्सा आग से आज़ादी है, जो शख्स इस महीने में अपने गुलाम (व खादिम) के बोझ को हल्का कर दे,अल्लाह तआला उस की मग़फिरत फर्माते हैं और आग से आज़ादी अता फर्माते हैं ।" [सही इब्ने खुज़ैमा : १७८०, अन सलमान फारसी ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | सूद खाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग सूद खाते हैं तो (कल कयामत के दिन कब्रों) से इस हालत में उठेंगे, जैसे किसी को जिन भूत ने लिपट कर पागल बना दिया हो ।" [सूर-ए- बकरा : २७५]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया पर राज़ी होना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "क्या तुम लोग आखिरत की ज़िंदगी के मुकाबले में दुनिया की ज़िंदगी पर राज़ी हो गए? दुनिया का माल व मताअ तो आखिरत के मुकाबले में कुछ भी नहीं ।" (इस लिए किसी इन्सान के लिए मुनासिब नहीं है , के वह आख़िरत को भूल कर ज़िंदगी गुज़ारे या दुनिया के थोड़े से साज़ व सामान की ख़ातिर अपनी आखिरत को बरबाद करे)। [सूर-ए- तौबा : ३८]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | कब्र के तीन सवाल

एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मोमिन बंदा जब कब्र में पहुँचता है , तो उस के पास दो फरिश्ते आते हैं और उस को बिठाते हैं फिर उस से पूछते हैं के तेरा रब कौन है ? वह कहता है के मेरा रब अल्लाह है। फिर पूछते हैं के तेरा दीन क्या है? वह कहता है : मेरा दीन इस्लाम है, फिर पूछते हैं : तुम्हारा नबी कौन है ? वह कहता है मुहम्मदर्रसूलुल्लाह ﷺ ।" [अबू दाऊद : ४७५३, अनिल बरा बिन आज़िब ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | हर मर्ज़ का इलाज मौजूद है

हज़रत उसामा ﷺ बयान करते हैं के मैं हुज़ूर ﷺ की खिदमत में मौजूद था के कुछ देहात के बाशिंदे आए और आप ﷺ से अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! क्या हम दवा करें ? तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : अल्लाह के बंदो ! ज़रुर दवा किया करो इस लिए के कोई बीमारी ऐसी नहीं है जिस की दवा अल्लाह ने न पैदा की हो, सिवाए एक बीमारी के । लोगों ने पूछा वह कौन सी बीमारी है? रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : बुढ़ापा । [मुसनदे अहमद : १७९८६]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम रोज़ा खोलो, तो खजूर से इफ्तार करो; क्यों कि यह सरापा बरकत है, अगर खजूर न मिले, तो पानी से रोज़ा इफ्तार करो, क्यों कि पानी (ज़ाहिर व बातिन को) पाक करने वाला है ।" [तिर्मिज़ी : ६५८, अन सलमान बिन आमिर ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

③ रमज़ानुल मुबारक

नंबर ①: इस्लामी तारीख — हज़रत नूह ﷺ

अल्लाह तआला ने हज़रत नूह ﷺ को रसूल बना कर उन की बुत परस्त कौम की हिदायत के लिए भेजा। साढ़े नौ सौ साल तक ईमान की दावत देते रहे, चंद लोगों के अलावा किसी ने ईमान कबूल नहीं किया। वह उन को हर तरह समझाते रहे; मगर पूरी कौम उन को सताने और मज़ाक उड़ाने में हद से आगे बढ़ गई, यहां तक के उन का एक बेटा कौम के साथ कुफ्र व शिर्क पर कायम रहा। जब अल्लाह तआला ने उन के ईमान न लाने की खबर दे दी, तो नूह ﷺ ने दुआ फर्माई के ऐअल्लाह ! इन में से किसी काफिर को ज़मीन पर ज़िंदा न छोड़िए, इन के बाकी रहने से शिर्क व कुफ्र और गुमराही बढ़ती चली जाएगी। उन की इस दुआ पर अल्लाह तआला ने कौम को हलाक करने की खबर दी और हुक्म दिया के तुम एक कश्ती तैयार कर लो, ताके तूफान के वक्त मोमिनीन को लेकर सवार हो जाओ उस के बाद पानी का तूफान आया और पूरी कौम हलाक हो गई। एक माह गुज़रने पर तूफान खत्म हुआ और आप मुहर्रम की दसवीं तारीख को कश्ती से उतरे और शुकराने के तौर पर रोज़ा रखा। तूफान के बाद हज़रत नूह ﷺ के तीन बेटे बाकी रह गए थे जिन से इन्सानी नस्ल का दोबारा सिलसिला शुरु हुआ।

नंबर ②: अल्लाह की कुदरत — पानी का इन्तेज़ाम

पानी अल्लाह की बहुत बड़ी नेअ्मत है, जिस पर सारे जानदारों की ज़िंदगी का दारोमदार है; अगर ज़मीन से पानी खत्म हो जाए, तो ज़मीन से इन्सान, हैवान हत्ता के पेड़ पौदे सब खत्म हो जाएँ; लेकिन यह अल्लाह तआला की बहुत बड़ी कुदरत है; जिस ने समुंदरों की शक्ल में पानी का बहुत बड़ा ज़खीरा जमा कर रखा है, फिर वहां से बादलों की शक्ल में पानी को उठा कर सूखी ज़मीन की तरफ बरसाता है और फिर इसी पानी को ज़मीन के अंदर ज़खीरे के तौर पर जमा कर देता है, जिस से पेड़ पौदों को पानी मिलता है, जिस से इन्सान खुद पीता है और अपनी खेतियाँ सैराब करता है। अल्लाह तआला ने अपनी इस कुदरत को कुर्आन में बयान फर्माया है के "हम एक अंदाज़े से आस्मान से पानी बरसाते हैं, फिर उस को ज़मीन में रोके रखते हैं और उस को ले जाने और खत्म कर देने पर भी हम कादिर हैं।"

[सूर-ए-मोमिनून: १८]

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — बा जमात इशा और फज्र की नमाज़ पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स इशा की नमाज़ जमात के साथ पढ़े गोया उस ने आधी रात इबादत की और जो फज्र की नमाज़ जमात से पढ़ ले गोया उस ने सारी रात इबादत की।"

[मुस्लिम : १४९१, अन उस्मान बिन अफ्फान ؓ]

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — दूध पीने के बाद कुल्ली करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने दूध पिया और कुल्ली फर्माई और फर्माया के इस में चिकनाई होती है।

[बुखारी : २११, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	रोज़ेदार को इफ़्तार कराना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स किसी रोज़ेदार को रोज़ा इफ्तार कराए उस के लिए गुनाहों के माफ होने और आग से खलासी का सबब होगा और रोज़ेदार के सवाब के मानिंद उस को सवाब मिलेगा, मगर रोज़ेदार के सवाब में से कुछ कम नहीं किया जाएगा। सहाबा ने अर्ज़ किया हम में से हर शख़्स इतनी वुस्अत नहीं रखता के इफ्तार कराए, तो आप ﷺ ने फर्माया : यह सवाब तो अल्लाह तआला एक खजूर से कोई इफ्तार करादे या एक घूँट पानी पिलादे या एक घूँट दूध पिलादे उस को भी मर्हमत फर्मा देते हैं।"

[सही इब्ने खुज़ैमा : १७८०, अन सलमान फारसी ؓ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	ज़कात अदा न करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस शख़्स के पास माल हो और वह उस की ज़कात अदा न करता हो, तो माल कल क़यामत के दिन एक ऐसा सांप बना दिया जाएगा जो गंजा होगा और उस की आँखों पर दो काले नुकते होंगे, फिर वह सांप उस को उस वक्त तक निगलता रहेगा जब तक बन्दों के दर्मियान फैसला न हो जाए।"

[मुसनदे अहमद : ७६९८, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	आखिरत के अमल से दुनिया हासिल करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: "जो शख़्स आखिरत के किसी अमल से दुनिया चाहता हो, उस के चेहरे पर फिटकार होती है, उस का ज़िक्र मिटा दिया जाता है और उस का नाम दोज़ख में लिख दिया जाता है।"

[मुअजमुल कबीर : २०८५, अन जारूद ؓ]

नंबर (८) : आखिरत के बारे में	मुसलमानों से जन्नत का वादा

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : अल्लाह तआला ने मुसलमान मर्दो और मुसलमान औरतों से ऐसे बागों का वादा कर रखा है, जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, यह लोग हमेशा उन बागों में रहेंगे और ऐसे उम्दा मकानों का वादा फर्माया, जो हमेशा रहने वाले बागों में होंगे और अल्लाह की रज़ामंदी सब से बड़ी चीज़ है। यह बहुत ही बड़ी कामयाबी है।

[सूर-ए-तौबा : ७२]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	कलौंजी में हर बीमारी से शिफा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम इस कलौंजी को इस्तेमाल करो, क्यों कि इस में मौत के अलावा हर बीमारी से शिफा मौजूद है।"

[बुखारी : ५६८७, अन आयशा ؓ]

फ़ायदा : अल्लामा इब्ने कय्यिम رحمۃ اللہ علیہ फर्माते हैं : इस के इस्तेमाल से पेट का गैस खत्म हो जाता है, बलगमी बुखार के लिए नफा बख़्श है, अगर इस को पीस कर शहद के साथ माजून बना लिया जाए और गर्म पानी के साथ इस्तेमाल किया जाए, तो गुर्दे और मसाना की पथरी को गला कर निकाल देती है। [तिब्बे नब्वी]

नंबर (१०) : कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "ऐ लोगो! ज़मीन की हलाल और पाकीज़ा चीज़ें खाओ, और शैतान के नक्शे कदम पर मत चलो, वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है, वह तुम को बुराई और बे हयाई की बातों का हुक्म देता है और इस बात का हुक्म देता है के तुम अल्लाह के मुतअल्लिक ऐसी बात कहो जिस का तुम्हें इल्म नहीं।"

[सूर-ए-बकरा : १६८ ता १६९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर १ : इस्लामी तारीख — हज़रत इब्राहीम

हजरत इब्राहीम इराक में बाबुल के मकाम पर एक बुत परस्त कौम में पैदा हुए। आप ने अपने घर वालों और वहां के जालिम बादशाह नमरूद को ईमान की दावत दी, बुत परस्ती से बाज़ रहने की नसीहत और झूटे माबूदों की बे कसी को बड़ी कुव्वत व शिद्दत से बयान किया, जब वह अपने बुतों की तौहीन बरदाश्त न कर सके, तो नमरूद और उस की कौम ने आप को आग में डाल दिया मगर अल्लाह तआला ने आग को हजरत इब्राहीम के लिए अम्न व सलामती के साथ ठंडा कर दिया और वह ज़िंदा सलामत आग में रहे, इस मंज़र को देख कर कुछ लोगों ने ईमान कबूल कर लिया, जिस की वजह से बादशाह और कौम की मुखालफत और शदीद हो गई, तो वह अपने अहले खाना को लेकर बाबुल से शाम और फिर वहां से मिस्र की तरफ हिजरत कर गए, अल्लाह तआला ने कुर्बानियों और आज़माइशों में कामयाब होने पर आप को "खलीलुल्लाह" का लकब अता फर्माया। हज़रत इब्राहीम की तीन बीवियाँ थीं। (१) हजरत हाजरा : जिन से हज़रत इस्माइल पैदा हुए और अल्लाह के हुक्म से माँ और बेटे को सर ज़मीने मक्का में आबाद किया और फिर बाप बेटे ने मिल कर बैतुल्लाह की तामीर फर्माई। (२) हज़रत सारा : जिन से हज़रत इस्हाक पैदा हुए और उन्हीं की औलाद से बनी इस्राईल के अंबिया का सिलसिला शुरु हुआ। (३) हज़रत कतूरा : जिन से मदयन पैदा हुए और इन्हीं के नाम पर बसने वाली कौम मदयन और ऐका के नाम से मशहूर हुई। हज़रत इब्राहीम को अबुल अंबिया यानी नबियों का बाप इसी लिए कहा जाता है के बाद में आने वाले तमाम अंबिया आप ही की नस्ल में पैदा हुए।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — दरख्त और पहाड़ का सलाम करना

हजरत अली बयान करते हैं के मक्की ज़िंदगी में एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ मक्का के किसी इलाके की तरफ निकले, तो मैं भी आप ﷺ साथ हो लिया (चुनांचे मैं ने देखा) के रास्ते में जिस दरख्त और पहाड़ के करीब से गुजरते वह रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ करता : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله"

[तिर्मिज़ी : ३६२६, अन अली बिन अबी तालिब]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — रोज़े की फ़र्ज़ियत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : ऐ ईमान वालो ! जिस तरह तुम से पहले लोगों पर रोज़ा फर्ज़ किया गया था, इसी तरह तुम पर भी फर्ज़ किया गया है, ता के तुम परहेज़गार बन जाओ।

[सूर-ए-बकरा : १८३]

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — इफ़्तार के बाद यह दुआ पढ़े

नबी ﷺ इफ़्तार करते तो यह दुआ पढ़ते : ((ذَهَبَ الظَّمَاُ وَابْتَلَّتِ الْعُرُوْقُ وَثَبَتَ الْاَجْرُ اِنْ شَاءَ اللهُ))

तर्जमा : प्यास बुझ गई, रगें तर हो गईं और इन्शा अल्लाह अज्र व सवाब भी मिलेगा।

[अबू दाऊद : २३५७, अन इब्ने उमर]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	रमज़ान में दुआ का कबूल होना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: "रमज़ानुल मुबारक की हर दिन व रात में अल्लाह के यहां से (जहन्नम के) कैदी छोड़े जाते हैं और हर मुसलमान के लिए हर दिन व रात में एक दुआ ज़रुर कबूल होती है।"

[मुअजमुल औसतुलित्तबरानी : ६५८९, अन अबी सईद खुदरी ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	इस्लाम के अलावा कोई दीन कबूल नहीं होगा

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : जो शख्स इस्लाम के अलावा किसी दूसरे दीन को पसंद करेगा तो उस का वह दीन हरग़िज़ कबूल न किया जाएगा। और वह आखिरत में नुकसान उठाने वालों में शामिल होगा।

[सूर-ए-आले इमरान : ८५]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	काफिरों के माल से तअज्जुब न करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : तुम उन (काफिरों) के माल और औलाद से तअज्जुब में मत पड़ना, क्यों कि अल्लाह तआला दुनिया ही की ज़िंदगी में उन काफिरों को अज़ाब में मुब्तला करना चाहता है और जब उन की जान निकलेगी, तो कुफ्र की हालत में मरेंगे।

[सूर-ए-तौबा : ५५]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	अहले जन्नत की आपस में मुहब्बत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जन्नत में सब से पहले दाखिल होने वाली जमात की शक्ल व सूरत चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमकदार होगी और उन के बाद आने वाले लोगों की शक्ल खूब सूरत और चमकदार सितारों की तरह रौशन होगी, उन सब के दिल एक आदमी के दिल की तरह होंगे, जिन में बुग़्ज़ व अदावत और हसद नहीं होगा, उन में से हर शख्स के लिए जन्नत की ऐसी दो खूबसूरत हूरें होंगी के उन की पिंडलियों का गूदा बाहर ही से नज़र आ रहा होगा।"

[बुखारी : ३२४६, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मिस्वाक के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मिस्वाक मुँह की सफाई और खुदा की रज़ामंदी का ज़रिया है।"

[नसाई : ५, अन आयशा ؓ]

खुलासा : अल्लामा इब्ने कय्यिम رحمه الله मिस्वाक के फवाइद में लिखते है : यह दांतों में चमक पैदा करती है, मसूढ़ों में मज़बूती और मुँह की बदबू खत्म करती है, दिमाग पाक व साफ हो जाता है, यह बलगम को काटती है, निगाह को तेज़ और आवाज़ साफ करती है।

[तिब्बे नब्वी]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम अगर किसी को बुराई करते देखो, तो अपने हाथ से रोको, अगर हाथ से न रोक सको, तो ज़बान से रोको और अगर ज़बान से भी न रोक सको, तो अपने दिल में बुरा समझो और यह ईमान का सब से कमज़ोर दर्जा है।"

[मुस्लिम : १७७, अन अबी सईद ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

५ रमज़ानुल मुबारक

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत मूसा ﷺ

हज़रत मूसा ﷺ बनी इसराइल के जलीलुल कद्र नबी व रसूल हैं, फिरऔन ने उन की पैदाइश के डर से बनी इसराइल के हज़ारों बच्चों को कत्ल करा दिया था, मगर अल्लाह तआला ने उन की पर्वरिश खुद उस के शाही महल में एक शहज़ादे की तरह कराई। हज़रत मूसा ﷺ जवानी की उम्र में मिस्र छोड़ कर मदयन चले गए, वहां हज़रत शोऐब ﷺ से मुलाकात हुई, जिन्होंने उन की अमानत दारी और अच्छे अखलाक व आदात को देख कर अपनी बेटी सफूरा का निकाह कर दिया, जब वह मिस्र लौटते वक्त वादि-ए-मुकद्दस में थे, तोअल्लाह तआला ने नुबुव्वत और मुअजिज़े अता फर्माए और हुक्म दिया के मिस्र जा कर फिरऔन को ईमान की दावत दो, उस ने मुल्क में ज़ुल्म व सितम और फसाद फैला रखा है। हज़रत मूसा ﷺ ने जा कर उसे ईमान की दावत दी और मुअजिज़े भी दिखाए, इस के बावजूद फिरऔन ने उन को जादूगर कह कर नबी मानने से इन्कार कर दिया, चुनांचे उस ने चंद जादूगरों को बुला कर मूसा ﷺ से मुकाबला कराया, इस मुकाबले में हज़रत मूसा ﷺ को काम्याबी मिली और तमाम जादूगरों ने ईमान कबूल कर लिया, इस तरह फिरऔन ना मुराद और ज़लील हुआ और हज़रत मूसा ﷺ की सच्चाई ज़ाहिर हो गई, जब फिरऔन का तकब्बुर और नाफ़र्मानी हद से बढ़ गई, तो अल्लाह तआला ने दर्या में गर्क कर दिया और हज़रत मूसा ﷺ और उन की कौम को फिरऔन के ज़ुल्म से नजात दी।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — दिमाग़ की बनावट और हिफ़ाज़त

अल्लाह तआला ने सोचने और समझने के लिये दिमाग़ को पैदा किया है और उस की हिफ़ाज़त के लिये उस पर एक बारीक झिल्ली चढ़ाई है फिर झिल्ली और दिमाग़ के दर्मियान बहने वाला माद्दा पैदा फ़र्मा कर खोपड़ी की मज़बूत हड्डी में फिट कर दिया है, ताके सरदी, गरमी और चोट वग़ैरा के असर से महफ़ूज़ रह सके, इस नाज़ुक दिमाग़ की हिफ़ाज़त के लिये अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत से कैसा अजीब व ग़रीब इन्तेज़ाम फ़र्माया है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — बग़ैर वुज़ू के नमाज़ नहीं होती

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: "इस्लाम में उस शख्स का कोई भी हिस्सा नहीं जो नमाज़ न पढ़ता हो और वुज़ू के बग़ैर नमाज़ नहीं होती।"

[तर्गीब व तर्हीब : ७७१, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — खाना खाने का सुन्नत तरीका

(१) दस्तरख्वान बिछाना। (२) दोनों हाथ गट्टो तक धोना और न पोछना। (३) खाने से पहले की दुआ पढ़ना। (४) सुन्नत तरीके के मुताबिक बैठना। (५) दाएँ हाथ से खाना। (६) अपने सामने से खाना। (७) तीन उंगलियों से खाना। (८) टेक लगा कर न खाना। (९) खाने में ऐब न निकालना।

(१०) अगर लुकमा हाथ से गिर जाए तो उठा कर खा लेना। (११) बहुत जियादा गर्म न खाना। (१२) बर्तन और उंगलियों को चाट कर साफ करना। (१३) खाने के बाद की दुआ पढ़ना। (१४) खाने के बाद हाथ धोना और कुल्ली करना।

नंबर ५: एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	रमज़ान में चार चीज़ों की पाबंदी करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "माहे रमजान में चार चीजों पर खूब अमल किया करो (क्योंकि) दो चीजों से अल्लाह राजी होंगे और (बकिया) दो चीजों से तुम बेनियाज़ नहीं हो सकते हो, (यानी उस को करना ही चाहिये) रब को राजी करने वाली दो चीजें यह हैं : (१) لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ पढ़ते रहना। (२) इस्तिगफार करते रहना; और दूसरी दो चीजें जिन से तुम बेनियाज नहीं हो सकते, यह हैं : (१) जन्नत का सवाल करना। (२) जहन्नम से पनाह मांगना।" [सही इब्ने खुज़ैमा : १७८०, अन सलमान फारसी رضي الله عنه]

नंबर ६: एक गुनाह के बारे में	सब से बड़ा गुनाह क्या है

एक शख्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से सवाल किया : या रसूलल्लाह ! अल्लाह तआला के नज़दीक बड़ा गुनाह कौन सा है ? आप ﷺ ने फर्माया : तूअल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराए हांलाके उस ने तुझ को पैदा किया है, उस ने फिर सवाल किया : उस के बाद कौन सा गुनाह बड़ा है? आप ﷺ ने फर्माया : तू अपनी औलाद को रिज़्क की तंगी के डर से मार डाले, उस ने फिर सवाल किया : तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : तेरा अपनी पड़ोस की औरतों से बदकारी करना।

[बुखारी : ६००१, अन इब्ने मसऊद رضي الله عنه]

नंबर ७: दुनिया के बारे में	हलाल रोज़ी कमाओ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "रोज़ी को दूर न समझो, क्यों कि कोई आदमी उस वक्त तक नहीं मर सकता जब तक के जो रोज़ी उस के मुकद्दर में लिख दी गई है, वह उस को न मिल जाए। लिहाज़ा रोज़ी हासिल करने में बेहतर तरीका इख्तियार करो, हलाल रोज़ी कमाओ और हराम को छोड़ दो।"

[मुस्तदरक : २१३४, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه]

नंबर ८: आखिरत के बारे में	जहन्नम में हमेशा का अज़ाब

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : बिलाशुबा जिन लोगों ने हमारी आयात व अहकाम का इन्कार किया, अन करीब हम उन को एक सख्त आग में दाखिल करेंगे, (वहाँ उन की मुसलसल यह हालत होगी के) जब एक दफा उन की खाल जहन्नम में झुलस जाएगी, तो हम पहली खाल की जगह फौरन दूसरी नई खाल पैदा कर देंगे, ताके यह लोग अज़ाब का मज़ा चखते रहें। [सूर-ए-निसा : ५६]

नंबर ९: तिब्बे नब्वी से इलाज	बड़ी बीमारियों से हिफाज़त

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स हर महीने तीन दिन सुबह के वक्त शहद को चाटेगा तो उसे कोई बड़ी बीमारी नहीं लगेगी।" [इब्ने माजा : ३४५०, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर १०: कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : ऐ ईमान वालो ! तुम सब पूरी तरह इस्लाम में दाखिल हो जाओ और शैतान के पीछे मत चलो यकीनन वह तुम्हारा खुला दुशमन है। [सूर-ए-बकरह : २०८]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(६) रमज़ानुल मुबारक

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ | हज़रत यूसुफ ؑ

हज़रत यूसुफ ؑ हज़रत याक़ूब ؑ के बेटे और हज़रत इस्हाक ؑ के पोते और हज़रत इब्राहीम ؑ के पर पोते हैं; इराक के शहर "फद्दान आराम" में पैदा हुए, बचपन ही में अपनें वालिद हज़रत याक़ूब ؑ के साथ फलस्तीन आ गए। हज़रत यूसुफ ؑ और हज़रत बिनयामीन दोनों एक माँ से थे, बाकी नौ बड़े भाई दूसरी माँ से थे बाप के दिल में हज़रत यूसुफ ؑ और बिनयामीन की शफकत व मुहब्बत ज़ियादा थी, जिस की वजह से सौतेले भाइयों को हसद हो गया। उन्हों ने साज़िश कर के हज़रत यूसुफ ؑ को एक कुँए में डाल दिया, उर्दुन से आने वाले एक काफले ने कुँए से निकाल कर मिस्र के बाज़ार में अज़ीज़े मिस्र के हाथ चंद दिर्हम के बदले बेच दिया, फिर शाही महल में पर्वरिश पाई, अज़ीज़े मिस्र की बीवी ने इल्ज़ाम लगा कर आप को जेल भेज दिया, जहाँ तकरीबन ९ साल गुज़ारे, बादशाह ने एक ख़्वाब देखा था, जिस की सही ताबीर बताने और कहत साली में हुकूमत चलाने की तदबीर से वह बहुत खुश हुए और आप को मिस्र का बादशाह बना दिया, तकरीबन ८० साल तक अद्ल व इन्साफ के साथ मिस्र पर हुकूमत करते रहे, वहाँ के लोग आप की नुबुव्वत पर ईमान लाए और उन को आला दर्जे का मुंतज़िम और मुदब्बिर तसलीम किया, एक सौ दस साल की उम्र में इन्तेकाल फर्माया, अल्लाह ने तफ्सील के साथ सूर-ए-यूसुफ में उन का ज़िक्र फर्माया है।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा | चाँद के दो टुकड़े हो जाना

एक रात आप ﷺ कुफ्फारे मक्का को दावते तौहीद देकर अपने सहाबा-ए-किराम ؓ के साथ लौट रहे थे के रास्ते में अबूजहल अपने साथियों के साथ मिला और उस ने कहा: अगर वाकई तुम सच्चे हो, तो अपने अल्लाह से कहो चाँद के दो टुकड़े कर दे, हम तुम्हारा दीन कबूल कर लेंगे, आप ﷺ ने चाँद की तरफ देखा चाँद दो टुकड़े हो गया, फिर चंद लम्हों के बाद दोनों टुकड़े मिल गए, इस पर अबू जहल फौरन बोला : ऐ मुहम्मद! वाकई तुम जादूगर हो, तुम ने हमारी आँख पर जादू कर दिया है।

[दलाइलुन्नुबुव्वह लिअबी नुऐम : २०४]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | वारिसीन के दर्मियान माले मीरास तक्सीम करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: "माल (वरासत) को किताबुल्लाह के हुक्म के मुताबिक हक वालों के दर्मियान तक्सीम करो।" [मुस्लिम : ४१४३, अन इब्ने अब्बास ؓ]

फ़ायदा : अगर किसी का इन्तेकाल हो जाए और उस ने माल छोड़ा हो, तो उस को तमाम हक वालों के दर्मियान तक्सीम करना वाजिब है, बगैर किसी शरई वजह के किसी वारिस को महरूम करना या अल्लाह तआला के बनाए हुए हिस्से से कम देना जाइज़ नहीं है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | दूसरों के यहाँ इफ्तार की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी के यहाँ इफ्तार करते तो यह दुआ पढ़ते थे :

((اَفْطَرَ عِنْدَكُمُ الصَّائِمُوْنَ وَاَكَلَ طَعَامَكُمُ الْاَبْرَارُ وَصَلَّتْ عَلَيْكُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ)) [अबू दाऊद: ३८५४, अन अनस ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	माहे रमज़ान में इबादत का इन्आम

रसूलुल्लाह ﷺ ने रमज़ानुल मुबारक की फज़ीलत बयान करते हुए फर्माया : "जो शख्स रमज़ान में ईमान की हालत में सवाब की निय्यत से (इबादत के) लिए खड़ा हो, तो वह गुनाहों से इस तरह पाक हो जाता है, जिस तरह उस की माँ ने उस को जना था।" [नसई : २२१०, अन अब्दुर्रहमान बिन औफ ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	यतीमों का माल खाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : जो लोग यतीमों का माल नाहक खाते हैं, वह लोग अपने पेटों में आग ही भर रहे हैं और यह लोग अन करीब आग में दाखिल होंगे। [सूर-ए-निसा : १०]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया का फायदा वक्ती है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : ऐ लोगो ! तुम्हारी ना फर्मानी और बगावत का वबाल तुम्ही पर पड़ने वाला है, दुनिया की ज़िंदगी के सामाने से थोड़ा फायदा उठा लो, फिर तुम को हमारी तरफ वापस आना है, तो हम उन सब कामों की हकीकत से तुम को आगाह कर देंगे जो तुम किया करते थे। [सूर-ए-यूनुस : २३]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	दोज़खियों का सब से हल्का अज़ाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अहले दोज़ख में सब से हल्का अज़ाब उस शख्स को होगा जिस की दोनों जूतियां और उस की डोरियाँ आग की होंगी, जिस की वजह से उस का दिमाग हांडी की तरह खौलता होगा; वह समझेगा के मुझे ही सब से ज़ियादा अज़ाब हो रहा है, हालांके उसे ही सब से हल्का अज़ाब हो रहा होगा।" [मुस्लिम : ५१७, नोअ्मान बिन बशीर ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	अन्जीर से बवासीर का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अन्जीर खाओ, क्यों कि यह बवासीर को खत्म करता है और जोड़ों के दर्द में मुफीद है।" [कन्ज़ुल उम्माल : २८२७६, अन अबीज़र ﷺ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फर्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरा हाथ पकड़ कर (बतौरे नसीहत) पाँच चीज़ें इर्शाद फर्माई : (१) हराम चीज़ों से बचो तुम इबादत गुज़ार बन जाओगे। (२) अल्लाह की तकसीम पर राज़ी रहो तुम सब से ज़ियादा मालदार हो जाओगे। (३) अपने पड़ोसी के साथ एहसान करो तुम कामिल ईमान वाले हो जाओगे। (४) लोगों के लिए वही चीज़ पसंद करो जो अपने लिए करते हो तुम पक्के सच्चे मुसलमान हो जाओगे। (५) ज़ियादा मत हंसो इस लिए के ज़ियादा हंसना दिल को मुर्दा कर देता है। [तिर्मिज़ी : २३०५]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(७) रमज़ानुल मुबारक

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत दाऊद ﷺ

अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद ﷺ को हज़रत ईसा ﷺ से तकरीबन एक हज़ार साल पहले बनी इसराईल में पैदा फर्माया, आप ने जालूत बादशाह को कत्ल कर के बनी इसराईल को उस के ज़ुल्म व सितम से नजात दिलाई, अल्लाह तआला ने उन्हें दौलत व हुकूमत के साथ नुबुव्वत व रिसालत भी अता फरमाई थी इस तरह वह बनी इसराईल की रुश्द व हिदायत की खिदमत भी अन्जाम देते रहे और उन की इज्तेमाई ज़िंदगी की निगरानी का फर्ज़ भी पूरा करते रहे। हज़रत आदम के बाद अल्लाह तआला ने आप ही को "खलीफा" का लकब अता किया। अल्लाह तआला ने उन्हें ज़बूर नामी किताब दी, जिस में तौरात के मुताबिक अहकाम थे, मगर उस का अक्सर हिस्सा अल्लाह की हम्द व सना, बशारत व खुश खबरी, वाज़ व नसीहत, इल्म व हिकमत और खुदा की तस्बीह पर मुश्तमिल था। अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद ﷺ को ऐसी आवाज़ अता फरमाई थी के जब ज़बूर की तिलावत करते, तो जिन्नात व इन्सान, जंगली जान्वर और परिंदे सब झूमने लगते और उन के साथ खुदा की हम्द व तस्बीह में मसरुफ हो जाते, अल्लाह तआला ने उन को परिंदों की बोलियाँ सिखाई, लोहे को उन के लिए नर्म कर दिया जिस की वजह से वह आसानी के साथ ज़िरहें बना लेते और लड़ाई के मौके पर उन को पहन कर दुश्मन से अपना बचाव कर लेते थे, उन को बेच कर अपनी रोज़ी का इन्तेज़ाम भी कर लिया करते थे। चालीस या सत्तर साल बनी इसराईल पर कामयाब हुकूमत की और सौ साल की उम्र में इबादत की हालत में उन का इन्तेकाल हुआ। शहर सेहून में दफ्न हुए।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — मख़्लूक़ को रिज़्क़ देना

अल्लाह तआला ने दुनिया में जितनी मख़्लूक़ात पैदा की हैं, उन तमाम को ख़्वाह वह ख़ुश्की में हो या तरी में, जहाँ कहीं भी हो, बरवक़्त रिज़्क़ पहुँचाता है और यह निज़ाम जब से दुनिया क़ायम हुई है उस वक़्त से ले कर क़यामत तक चलता रहेगा, मगर इस में न कोई परेशानी और न कोई थकन हो रही है, जब के इन्सान चंद अफ़राद की ज़रूरियाते ज़िन्दगी का इन्तेज़ाम करने में परेशान हो जाता है, आख़िर पूरी दुनिया के रिज़्क़ का इन्तेज़ाम करना अल्लाह की कितनी बड़ी क़ुदरत है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ के लिए मस्जिद जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स सुबह व शाम (नमाज़ के लिए) मस्जिद जाता है अल्लाह तआला उस के लिए जन्नत में मेहमानी का इन्तेज़ाम फ़र्माते हैं जितनी मर्तबा मस्जिद जाता है उतनी ही मर्तबा अल्लाह तआला उस के लिए मेहमानी का इन्तेज़ाम फ़र्माते हैं।" [बुख़ारी : ६६२, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — पानी पीने का सुन्नत तरीका

(१) दाएँ हाथ से पीना। (२) बैठ कर पीना। (३) पानी को देख कर पीना। (४) बिस्मिल्लाह पढ़ कर पीना। (५) तीन सांस में पीना। (६) पीने के बाद दुआ पढ़ना।

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — रोज़ेदार को इफ़तार कराना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स हलाल कमाई से रमज़ानुलमुबारक में रोज़े दार को इफ़तार कराए, उस पर रमज़ान की रातों में फ़रिश्ते रहमत भेजते हैं और शबे क़द्र में जिब्राईल ؑ उस से मुसाफ़ा करते हैं और जिस से जिब्राईल ؑ मुसाफ़ा करते हैं उस की पहचान यह है के उस का दिल नर्म और आँखों से आँसू बहते हैं।" [तरग़ीब : १४११]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में — खुदकुशी का अज़ाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने पहाड़ से लुढ़क कर खुदकुशी की वह जहन्नम में हमेशा हमेश लुढ़कता रहेगा। जिस ने लोहे के टुकड़े (यानी हथियार) से खुदकुशी की उस के हाथ में वह लोहा होगा और जहन्नम में हमेशा हमेश अपने पेट में घोंपता रहेगा। जिस ने ज़हेर खा कर खुदकुशी की उस के हाथ में ज़हर होगा और वह जहन्नम में हमेशा उसे फांकता होगा।" [बुखारी : ५७७८, अन अबी हुरैरह ؓ]

फ़ायदा : इस ज़माने में जो लोग घरेलू परेशानियों या किसी टेंशन में आकर दवा खाकर या ऊंचाई से गिर कर या किसी और तरीके से मर जाते हैं वह अपने लिए जहन्नम का रास्ता हमवार करते हैं।

नंबर (७): दुनिया के बारे में — हुज़ूर ﷺ के घर वालों का सब्र

हज़रत इब्ने अब्बास ؓ बयान करते है के रसूलुल्लाह ﷺ और आप के घर वाले बहुत सी रात भूके रहते थे, उन के पास रात का खाना नहीं होता था, जब के उन का खाना आम तौर से जौ की रोटी होती थी। [तिर्मिज़ी : २३६०]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में — परहेज़गार लोगों के लिए खुशखबरी

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : बेशक परहेज़गार लोग बागों और चश्मों में होंगे। (उन को कहा जाएगा) के तुम इन बागों में अम्न व सलामती के साथ दाखिल हो जाओ और हम उन के दिलों की आपसी रंजिश को (इस तरह) दूर कर देंगे के वह भाई भाई बन कर रहेंगे। और वह तख़्तों पर आमने सामने बैठा करेंगे। [सूर-ए-हिज्र : ४५ ता ४७]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज — मुनक्का से इलाज

हज़रत अबू हिंद दारी ؓ कहते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में मुनक्का का तोहफा एक बंद थाल में पेश किया गया आप ﷺ ने उसे खोल कर इर्शाद फर्माया : अल्लाह का नाम ले कर खाओ। मुनक्का बेहतरीन खाना है जो पठ्ठों को मज़बूत करता है, पूराने दर्द को खत्म करता है, गुस्से को ठंडा करता है और मुँह की बदबू को दूर करता है, बलगम को निकालता है और रंग को निखारता है। [तारीखे दिमश्क इब्ने असाकिर : २१/६०]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : अगर तुम सदकात को ज़ाहिर कर के दो, तो यह भी अच्छी बात है और अगर तुम सदकात को छुपा कर फकीरों को देदो, तो यह तुम्हारे लिए और ज़ियादा बेहतर है और अल्लाह तआला तुम्हारे बाज़ गुनाह माफ़ कर देगा और अल्लाह तआला तुम्हारे कामों से बा खबर है। [सूर-ए-बकरा : २७१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(८) रमज़ानुल मुबारक

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत सुलेमान ؑ

हज़रत सुलेमान ؑ हज़रत दाऊद ؑ के बेटे हैं, उन की पैदाइश बैतुल मकदिस में हुई बचपन ही से बड़े ज़हीन, समझदार और फैसला करने की सलाहियत रखते थे; चुनांचे हज़रत दाऊद ؑ अहेम कामों में उन से मशवरा करतेथे, जब हज़रत सुलेमान ؑ जवान हुए, तो हज़रत दाऊद ؑ का इन्तेकाल हुआ; अल्लाह तआला ने नुबुव्वत व सलतनत में सुलेमान ؑ को उन का वारिस बनाया और ऐसी हुकूमत अता फर्माई के उन के बाद किसी को ऐसी हुकूमत कयामत तक नहीं मिलेगी; तमाम जानवरों की बोलियाँ उन को सिखाई, जिन्नात और हवा को उन के ताबे कर दिया, आधे दिन में एक महीने का सफर पूरा कर लिया कर लेते थे, जिन्नात के ज़रिये मस्जिदे अक्सा की तामीर कराई। समुन्दरों से गोता लगा कर हीरे जवाहिरात निकालने का काम जिन्नात से लिया जाता था इसी तरह बड़ी बड़ी देगें और पत्थरों को तराश कर बड़े बड़े हौज़ बनाने की ज़िम्मेदारी जिन्नात के हवाले कर रखी थी, यह सब चीज़ें अल्लाह तआला ने हज़रत सुलेमान ؑ को इन्आम व एहसान के तौर पर अता फर्माई, जिन्नात बैतुल मकदिस की तामीर में मसरुफ थे के हज़रत सुलेमान ؑ अपनी लाठी का सहारा लिए खड़े थे इसी हाल में ५३ साल की उम्र में उन का इन्तेकाल हुआ।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — खाने में बरकत

हज़रत अनस ؓ फर्माते हैं : रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत ज़ैनब ؓ बिन्ते जहश से निकाह किया, तो उम्मे सुलैम ؓ ने खाना तैयार कर के मुझे दिया के हुज़ूर ﷺ को पेश कर दो और मेरी तरफ से सलाम अर्ज़ करने के बाद कहना के थोड़ा सा खाना है जो रसूलुल्लाह ﷺ के लिए है, हुज़ूर ﷺ ने उस को घर के एक कोने में रखवा दिया और मुझे भेजा के मैं सहाबा ؓ को बुला लाऊँ, वह गरीबी का ज़माना था तकरीबन तीन सौ लोग आ गए। रसूलुल्लाह ﷺ दस दस अफराद को घर में बुलातेऔर खाना खिलाते यहां तक के सब पेट भर कर खा चुके, जब मैं ने इस खाने के बर्तन को देखा, तो मैं यह नहीं समझ सका के जिस वक्त मैं खाने का बर्तन लाया था उस वक्त उस में खाना ज़ियादा था या अब ज़ियादा है।

[मुस्लिम : ३५०७]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — हलाल पेशा इख्तियार करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह के हुकुक व फराइज अदा करने के बाद हलाल रोज़ी हासिल करना भी फर्ज़ है।"

[तबरानी फ़िल कबीर : ९८५१, अन अब्दुल्लाह बिन मसऊद ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — ज़कात अदा करे तो यह दुआ पढ़े

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम ज़कात अदा करो, तो इस के सवाब को न भूलो और यह कहो :

((اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا مَغْنَمًا وَّلَا تَجْعَلْهَا مَغْرَمًا))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! इस ज़कात को नफा का ज़रिया बना, इसे नुकसान का सबब न बना।"

[इब्ने माजा : १७९७, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	पूरा महीना तरावीह पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "सदका मुसीबत के सत्तर दरवाज़े बंद कर देता है ।"

[तबरानी कबीर : ६७२४, अन राफेअ बिन खदीज ﷺ]

एक दूसरी हदीस में है के आप ﷺ ने फर्माया : "सदका अल्लाह तआला के गुस्से को ठंडा करता है और बुरी मौत से बचाता है ।"

[तिर्मिज़ी : ६६४]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	जान बूझ कर कत्ल करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो शख्स किसी मुसलमान को जान बूझ कर कत्ल कर दे, तो उस की सज़ा जहन्नम है, वह उस में हमेशा हमेश रहेगा और अल्लाह तआला का गुस्सा और उस की लानत उस पर होगी और अल्लाह तआला ने ऐसे शख्स के लिए बड़ा अज़ाब तय्यार कर रखा है।"

[सूर-ए-निसा : ९३]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनियावी ज़िंदगी पर खुश न होना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अल्लाह तआला जिस को चाहता है बेहिसाब रिज़्क देता है और जिस को चाहता है तंगी करता है ; और यह लोग दुनिया की ज़िंदगी पर खूश होते हैं (और इस के ऐश व इशरत पर इतराते हैं) हालांके आखिरत के मुकाबले में दुनिया की ज़िंदगी एक थोड़ा सा सामान है ।"

[सूर-ए- रअद : २६]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	दोज़ख का दरख्त

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अगर ज़क्कूम(जो जहन्नम का एक दरख्त है, इन्तिहाई कड़वा है इस) का एक कतरा भी दुनिया में टपका दिया जाए, तो उस की कड़वाहट की वजह से तमाम दुनिया वालों का जीना मुशकिल हो जाए, तो अब बताओ उस जहन्नमी का क्या हाल होगा, जिस की खोराक ही ज़क्कूम होगी ।"

[तिर्मिज़ी : २५८५, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	सन्तरे के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम लोग संतरा को इस्तेमाल किया करो; क्यों कि यह दिल को मज़बूत बनाता है।"

[कन्ज़ुल उम्माल : २८२५३]

फ़ायदा : मुहद्दिसीन तहरीर फर्माते हैं के इस का जूस पेट की गंदगी को दूर करता है कै और मतली को खत्म करता है और भूक बढ़ाता है ।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अपने मुसलमान भाई की मदद करो(ख्वाह) वह ज़ालिम हो या मज़लूम हो । एक सहाबी ने कहा : या रसूलल्लाह ! मज़लूम हो तो उस की मदद करुं, लेकिन ज़ालिम की किस तरह मदद करूं? आप ﷺ ने फर्माया : उस को ज़ुल्म से रोको और मना करो, यह ज़ालिम के हक में मदद होगी ।"

[बुखारी : ६९५२, अनस बिन मालिक ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

① रमज़ानुल मुबारक

नंबर ①: इस्लामी तारीख — हज़रत ईसा ﷺ

हज़रत ईसा ﷺ को यह फज़ीलत हासिल है के बगैर बाप के अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत से उन को पैदा फर्माया उन की वालिदा हज़रत मरयम ﷺ पर जब कौम ने इल्ज़ाम लगाया, तो मुअजिज़े के तौर पर पैदाइश के बाद ही हज़रत ईसा ﷺ ने अपनी वालिदा की पाकी और इस्मत को बयान किया के मैं अल्लाह का बंदा और उस का रसूल हुँ उस ने मुझे किताब "इंजील" अता फर्माई है। मुझे नमाज़ पढ़ने और ज़कात अदा करने का हुक्म दिया है, कौमे बनी इसराईल में उस वक्त मुशरिकाना अकाइद, बुग्ज़ व हसद और रुहानी बीमारियाँ आम हो गई थीं। अल्लाह के अहकाम में तबदीली, अंबिया की मुखालफत करते, उन की बदबख्ती यहां तक पहुँच गई थी के रसूलों के कत्ल से भी नहीं डरते थे। ऐसे माहौल में हज़रत ईसा ﷺ ने इस कौम को एक अल्लाह की इबादत व इताअत करने और उस को अपना रब माननेऔर सीधा रास्ता इख्तियार करने की दावत दी और फर्माया : हज़रत मूसा ﷺ पर अल्लाह ने जो सच्ची किताब "तौरात" नाज़िल फर्माई थी मैं उस की तस्दीक करता हूँ और इस बात की खुशखबरी देता हूँ के मेरे बाद तमाम रसूलों के सरदार आखरी नबी आने वाले हैं जिन का नाम "अहमद" होगा, तुम उन पर नाज़िल होने वाली किताब "कुर्आनि करीम" पर ईमान लाना और उन को सच्चा रसूल जानना, जो उन के दीन पर चलेगा वही कामयाब होगा। जिन लोगों ने हज़रत ईसा ﷺ की दावत को कबूल किया उन को हवारी कहते हैं।

नंबर ②: अल्लाह की कुदरत — घोड़ा

घोड़ा बहुत ही चुस्त व चालाक और तेज़ रफ़्तार जानवर है, जो सवारी के काम आता है, नबी ﷺ ने इस जानवर की बहुत तारीफ़ फ़र्माई है, अल्लाह तआला ने इस के अन्दर ऐसी सूझ बूझ अता की है के पेश आने वाले ख़तरात को भाँप कर आगाह कर देता है, वह अपने मालिक का बड़ा वफ़ादार भी होता है और अपने पराए को बख़ूबी जानता है। हैरत की बात तो यह है के जब इसे नींद आती है, तो खड़े खड़े सो जाता है। यकीनन अल्लाह की अज़ीम कुदरत है के एक जानवर में इतनी सारी ख़ूबियां रख दी हैं।

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — रोज़े के फराइज़

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : अब तुम को (रमज़ान के महीने में रात के वक्त) अपनी बीवियों से मिलने (की इजाज़त है) और अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो (औलाद) मुकर्रर कर दी हैं, उस को तलाश करो और खाओ और पियो, यहां तक के सफेद धारी (यानी सुबहे सादिक की रौशनी) सियाह धारी (यानी रात की सियाही) से बिलकुल वाज़ेह हो जाए, फिर (सुबहे सादिक से) रात तक रोज़े को पूरा किया करो। [सूर-ए-बकरा : १८७]

फ़ायदा : रोज़े की में हालत सुब्हे सादिक से गुरुबे आफताब तक खाने, पीनेऔर बीवी से मिलने से रुके रहना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	वुज़ू का सुन्नत तरीका

(१) वुज़ू की निय्यत करना। (२) बिस्मिल्लाह पढ़ कर वुज़ू शुरु करना। (३) तीन मर्तबा दोनों हाथ गट्टों तक धोना। (४) मिस्वाक करना, अगर मिस्वाक न हो तो उंगलियों से दांतों को मलना। (५) तीन बार कुल्ली करना। (६) तीन बार नाक में पानी चढ़ाना। (७) हाथों और पाँव को धोते वक्त उंगलियों का खिलाल करना। (८) हर उज़्व को तीन तीन बार धोना। (९) एक मरतबा पूरे सर का मसह करना। (१०) सर के मसह के साथ कानों का मसह करना। (११) पे दर पे वुज़ू करना। (१२) तरतीबवार वुज़ू करना।

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	सदक़ा देना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया "सदका करने से माल कम नहीं होता, सदका देने वाला जब माल का सदका देता है, तो मांगने वाले के हाथ में जाने से पहले ही अल्लाह तआला के हाथ में पहुँच जाता है" (यानी कबूल कर लेता है)। [तबरानी कबीर : ११९८२, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	नाहक ज़मीन ग़सब करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो आदमी किसी की एक बालिश्त ज़मीन भी नाहक दबाएगा, तो क्यामत के दिन उसे सात ज़मीनों का तौक पहनाया जाएगा।" [बुखारी : २४५३, अन आयशा ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया में सादगी इख्तियार करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "ऐ आयशा ! अगर तुम (क्यामत के दिन) मुझ से मिलना चाहती हो, तो बस तुम्हारे लिए इतना ही माल काफी है जितना एक मुसाफिर के पास होता है और अपने आप को मालदारों की सोहबत से बचाए रखना और पुराने फटे हुए कपड़े को पेवंद लगा कर इस्तेमाल करती रहना।" [तिर्मिज़ी : १७८०, अन आयशा ؓ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	जन्नत के फल

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जन्नत में लोगों की यह हालत होगी के उन पर (जन्नत के) दरख्तों के साए झुके हुए होंगे और जन्नत के फल उन के इख्तियार में दे दिए जाएँगे (यानी जहां से जो फल चाहेंगे खाएँगे)।" [सूर-ए-दहर : १४]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	गाय के दूध का फायदा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "गाय का दूध इस्तेमाल किया करो, क्यों कि वह हर किस्म के पौदों को चरती है (इस लिए) इस के दूध में हर बीमारी से शिफा है।" [मुसतदरक : ८२२४, अन इब्ने मसऊद ؓ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : तुम में से एक जमात ऐसी होनी चाहिए, जो नेकी व भलाई की तरफ बुलाए और नेक काम करने का हुक्म करे और बुराई से रोके। [सूर-ए-आले इमरान : १०४]

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत ईसा ﷺ के मुअजिज़ात

अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा ﷺ को नुबुव्वत की तसदीक के लिए बहुत से मुअजिज़े अता फर्माए थे। मसलन बगैर बाप के पैदा होना, पैदाइश के बाद माँ की गोद में उन की सफाई बयान करना, मुर्दों को ज़िंदा करना, अंधे और कोढ़ी कोअच्छा कर देना, मिट्टी से परिंदा बना कर फूंक मार कर उड़ा देना, लोगों के घर में रखी हुई चीज़ों का बता देना, उन की दुआ से आस्मान से दस्तरख्वान का उतरना, ज़िंदा आस्मान पर उठा लिया जाना, कयामत के करीब दुनिया में दोबारा तशरीफ लाना, यह वह मुअजिज़ात हैं जिस की शहादत कुर्आने पाक दे रहा है । जब हज़रत ईसा ﷺ ने लोगों को तौहीद व ईमान की दावत देनी शुरु फर्माई, तो आप की मुहब्बत व अकीदत और कबूलियत में दिन बदिन इज़ाफा होता जा रहा था, मगर यहूदी कौम इस दावत व शोहरत को अपने लिए बड़ा खतरा समझने लगी इस लिए उन्हों ने बादशाहे वक्त को अपना हम ख्याल बना कर कत्ल करने का मंसूबा बनाया, जिस मकान में आप अपने साथियों के साथ मौजूद थे, उस को घेर लिया मौका पाकर आप के साथी भाग खड़े हुए। अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत से हज़रत ईसा ﷺ को आस्मान पर ज़िंदा उठा लिया और एक यहूदी को आप का हम शक्ल बना दिया जिस को उन लोगों ने पकड़ कर सूली पर चढ़ा दिया और यूं समझा के हम ने ईसा ﷺ को ही सूली पर चढ़ा दिया ।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — दुआ की कबूलियत

हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه ने एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया : मैं आप से बहुत सी हदीसें सुनता हुँ, लेकिन भूल जाता हुँ, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : अपनी चादर फैलाओ, मैं ने अपनी चादर फैलाई, तो आप ﷺ ने हाथ से एक लप उस में डाला और फर्माया : अपने बदन से लगा लो, मैं ने अपने बदन से लगाया, उस रोज़ से मैं आप ﷺ की कोई हदीस नहीं भूला। [बुखारी : ३६४८]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ का दर्जा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस का वुज़ू नहीं, उस की नमाज़ नहीं और जो नमाज़ न पढ़े, उस का कोई दीन नहीं; नमाज़ का दर्जा दीन में ऐसा है, जैसे सर का दर्जा बदन में है : यानी जिस तरह सर के बगैर इन्सान ज़िंदा नहीं रह सकता, इसी तरह नमाज़ के बगैर दीन ज़िंदा नहीं रह सकता ।"

[तर्गीब व तर्हीब : ५१८, अन इब्ने उमर رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — शबे कद्र की दुआ

हज़रत आयशा رضي الله عنها ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ﷺ! अगर मुझे मालूम हो जाए के शबे कद्र कौन

सी है तो उस रात मैं क्या दुआ करूं? रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : यह दुआ करना :

((اَللّٰهُمَّ إِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّي))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! तू माफ करने वाला है और माफ करने को पसंद करता है, लिहाज़ा मुझे माफ फर्मा दे।
[तिर्मिज़ी : ३५१३]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | नमाज़े इशराक पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स फज्र की नमाज़ बा जमात पढ़े, फिर (अपनी जगह पर) बैठ कर अल्लाह तआला का ज़िक्र करता रहे, यहां तक के सूरज तुलूअ हो जाए, फिर दो रकात (इशराक) की नमाज़ पढ़े, तो उस के लिए एक मुकम्मल हज व उमरह का सवाब होगा।"

[तिर्मिज़ी : ५८६, अन अनस बिन मालिक ؓ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में | कुफ्र व शिर्क का नतीजा जहन्नम है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो भी अल्लाह के साथ शरीक ठहेराएगा उस पर अल्लाह तआला ने जन्नत हराम कर दी है और उस का ठिकाना जहन्नम है और ऐसे ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं है।"
[सूर-ए-माइदा : ७२]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में | दुनिया की चीज़ें खत्म होने वाली हैं

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो कुछ तुम्हारे पास (दुनिया में) है वह (एक दिन) खत्म हो जाएगा और जो अल्लाह तआला के पास है वह हमेशा बाकी रहने वाली चीज़ है।" [सूर-ए-नहल : ९६]

नंबर (८) : आखिरत के बारे में | क़यामत के दिन लोगों की हालत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "कयामत के दिन लोग आमाल के बकद्र पसीने में होंगे, कोई तो पसीने में टखनो तक डूबा हुआ होगा और किसी के घुटनों तक पसीना होगा और किसी का यह हाल होगा के पाँव से लेकर मुँह तक पसीने में होगा; उस का पसीना लगाम की तरह मुँह में घुसा हुआ होगा।"

[मुस्लिम : ७२०६, अनिल मिकदाद बिन असवद ؓ]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज | खरबूज़े के फवाईद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "खाने से पहले खरबूज़े का इस्तेमाल पेट को बिलकुल साफ कर देता है और बीमारी को जड़ से खत्म कर देता है।"
[इब्ने असाकिर : ६/१०२]

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "ऐ आयशा ! नर्मी इख्तियार करो, क्यों कि अल्लाह तआला खुद मेहरबान है और नर्मी और मेहरबानी करना उस को बहुत पसंद है और नर्मी पर वह इतना देता है, जितना के सख्ती और उस के अलावा पर नहीं देता।"
[मुस्लिम : ६६०१, ६६०३, अन आयशा ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(११) रमज़ानुल मुबारक

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हुज़ूर ﷺ की विलादत, खानदान और परवरिश

रसूलुल्लाह ﷺ की पैदाइश अरब के मशहूर और इज़्ज़तदार खानदान कुरैश में माहे रबीउल अव्वल पीर के दिन मक्का में हुई , आप के वालिद का नाम अब्दुल्लाह था, जिन का इन्तेकाल आप ﷺ की पैदाइश से पहले ही हो गया था, दादा अब्दुल मुत्तलिब ने इस दुर्रे यतीम का नाम "मुहम्मद" रखा। हुज़ूर ﷺ की वालिदा हज़रत आमिना कबील-ए-बनू ज़ोहरा के सरदार की बेटी थीं, जो इज़्ज़त व शराफत में कुरैश की तमाम खवातीन में बा इज़्ज़त समझी जाती थी। अरब के दस्तूर के मुताबिक जब भी कोई बच्चा पैदा होता था, तो उस को दूध पिलाने के लिए किसी दाई के हवाले कर दिया जाता था, इसी तरह आप ﷺ की परवरिश भी कबील-ए- बनु सअद में हज़रत हलीमा सादिया के यहां तकरीबन चार साल हुई, इस के बाद वालिदा मोहतरमा के पास मक्का वापस आ गए। सिर्फ दो साल ही वालिदा के साए में रह पाए, के इन का भी इन्तेकाल हो गया, चुनांचे आप की परवरिश की ज़िम्मेदारी दादा अब्दुल मुत्तलिब ने संभाली, दो साल ही गुज़रे के इन का भी साया सर से उठ गया, उस वक्त आप ﷺ की उम्र तकरीबन आठ साल थी, फिर आप की देख भाल और परवरिश की ज़िम्मेदारी हकीकी चचा अबू तालिब के सर आई।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — इन्सान की पैदाइश

इन्सान की पैदाइश में अल्लाह तआला की एक बड़ी कुदरत यह है के उस ने एक ऐसी जगह बनाई, जहां न तो हवा का इन्तेज़ाम है, न रौशनी का, इस के बावजूद अल्लाह तआला तीन तीन अंधेरीयों में बच्चे को पालता है, उस की आँखों को बनाता है, उस के कानो को बनाता है, कानो के पर्दों को बनाता है, उस के नन्हें नन्हें हाथों को बनाता है, हाथों की लकीरों को बनाता है, नाखुनों को बनाता है, गर्ज़ यह के हर चीज़ को बनाता है और फिर उसी अंधेरे में उस की शक्ल व सूरत भी बनाता है ; अल्लाह तआला ने कुर्आन में फर्माया है : "और वही वह ज़ात है जो रहम (यानी पेट) में तुम्हारी इसी शक्ल व सूरत को बनाता है ।"

[सूर-ए- आले इमरान : ६]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — बीमारी या सफर की हालत के रोज़े

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : जो शख्स बिमार हो या सफर में हो , तो दूसरे दिनों में शुमार कर के उस में (रोज़ा रखना वाजिब) है।

[सूर-ए-बकरह : १८५]

फ़ायदा: रमज़ान में अगर कोई शख्स बीमार हो जाए और रोज़ा रखने की ताकत न हो या सफर में हो और रोज़ा न रखा हो, तो बाद में उस की कज़ा वाजिब है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — वित्र में कौन सी सूरत पढना मसनून है

रसूलुल्लाह ﷺ वित्र की पहली रकात में سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى दूसरी में قُلْ يَاأَيُّهَا الْكَافِرُونَ और तीसरी में قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ पढते थे।

[नसई : १७२८, अन अब्दुर्रहमान बिन अब्ज़ा رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	यतीम की कफालत पर जन्नत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो किसी मुसलमान यतीम बच्चे के खाने पीने का खर्च बरदाश्त करेगा, तो अल्लाह तआला उसे जन्नत में यकीनन दाखिल करेंगे, सिवाए इस के के उस ने कोई ऐसा गुनाह किया हो, जिस पर मग़फिरत न की जाए ।" [तिर्मिज़ी : १९१७, अन इब्ने अब्बास رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	गीबत करने का अज़ाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब मुझे मेराज कराई गई, तो मेरा गुज़र कुछ ऐसे लोगों पर हुआ, जिन के नाखून सुर्ख तांबे जैसे थे, जिन से वह अपने चेहरों और अपने सीनों को नोच नोच कर ज़खमी कर रहे थे; मैं ने जिब्राईल عليه السلام से पूछा के यह कौन लोग हैं, जो ऐसे सख्त अज़ाब में मुब्तला हैं? जिब्राईल عليه السلام ने बताया : यह वह लोग हैं जो ज़िंदगी में लोगों के गोश्त खाया करते थे, यानी गीबत किया करते थे और उन की इज़्ज़त से खेलते थे ।" [अबू दाऊद : ४८७८, अन अनस बिन मालिक رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया को मक्सद न बनाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस शख्स का मक्सद दुनिया कमाना हो और वह उसी के लिए सफर करता हो, उसी का ख्याल दिल में रहता हो, तोअल्लाह तआला गरीबी और भूक का डर उस की आँखों के सामने कर देते हैं (हर वक्त इस से डरता है के आमदनी तो बहुत कम है ! क्या होगा? कैसे गुज़ारा होगा) और उस के औकात को इसी फिक्र में परेशान कर देते हैं और मिलता उतना ही है जितना मुकद्दर में होता है ।" [तर्गीब व तर्हीब : २४६३, अन अनस رضي الله عنه]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	कयामत का हौलनाक मंज़र

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : ऐ लोगो ! अपने रब से डरो बेशक कयामत का ज़लज़ला बड़ी ही हौलनाक चीज़ है ! जिस रोज़ तुम इस ज़लज़ले को देखोगे तो यह हाल होगा के हर दूध पिलाने वाली औरत अपने दूध पीते (बच्चे को) भूल जाएगी और तमाम हमल वाली औरतें अपना हमल गिरा देंगी और तमाम लोगों को नशे की सी हालत में देखोगे; हालांके वह नशे की हालत में न होंगे लेकिन अल्लाह तआला का अज़ाब बड़ा ही सख्त है । [सूर-ए-हज : १ ता २]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	तलबीना से इलाज

हज़रत आयशा رضي الله عنها बीमार के लिए तलबीना तय्यार करने का हुक्म देती थीं और फर्माती थी के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को फर्माते हुए सुना के "तलबीना बीमार के दिल को सुकून पहुँचाता है और रंज व ग़म को दूर करता है ।" [बुखारी : ५६८९]

फायदा : जौ (Barley) को कूट कर दूध में पकाने के बाद मिठास के लिए इस में शहद डाला जाता है; जिसे तलबीना कहते हैं ।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : अगर किसी बात पर तुम में इख्तिलाफ हो जाए, तो अल्लाह और उस के रसूल के हुक्म की तरफ रुजू करो, अगर तुम अल्लाह और कयामत के दिन पर ईमान रखते हो; यह तरीका तुम्हारे लिए बेहतर है और अच्छा भी है । [सूर-ए-निसा : ५९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१२) रमज़ानुल मुबारक

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हुज़ूर ﷺ का एक तारीखी फैसला

रसूलुल्लाह ﷺ की नुबुव्वत से चंद साल कब्ल खान-ए-काबा को दोबारा तामीर करने की ज़रूरत पेश आई । तमाम कबीले के लोगों ने मिल कर खान-ए-काबा की तामीर की, लेकिन जब हजरे अस्वद को रखने का वक्त आया, तो सख्त इख्तिलाफ पैदा हो गया, हर कबीला चाहता था के उस को यह शर्फ हासिल हो, लिहाज़ा हर तरफ से तलवारें खिंच गईं और कत्ल व खून की नौबत आ गई। जब मामला इस तरह न सुलझा, तो एक बूढ़े शख्स ने यह राय दी के कल सुबह जो शख़्स सब से पहले हरम में आएगा वही इस का फैसला करेगा । सब ने यह राय पसंद की। दूसरे दिन सब से पहले हुज़ूर ﷺ दाखिल हुए। आप ﷺ को देखते ही सब बोल उठे "यह अमीन हैं, हम इन के फैसले पर राज़ी हैं।" आप ﷺ ने एक चादर मंगवाई और हजरे अस्वद को उस पर रखा और हर कबीले के सरदार से चादर के कोने पकड़वा कर उस को काबे तक ले गए और अपने हाथ से हजरे अस्वद को उस की जगह रख दिया। इस तरह आप ﷺ के ज़रिये एक बड़े फितने का खातमा हो गया ।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — पहाड़ का हिलना

रसूलुल्लाह ﷺ एक मर्तबा उहुद पहाड़ पर चढ़े, आप ﷺ के साथ हज़रत अबू बक्र, उमर और उस्मान ؓ भी थे, वह पहाड़ हिलने लगा रसूलुल्लाह ﷺ ने पहाड़ पर अपना पाँव मार कर फर्माया : ऐ उहुद ! ठहर जा, तुझ पर एक नबी, एक सिद्दीक और दो शहीद हैं । (तो वह ठहर गया)

[बुखारी : ६३७५, अन अनस ؓ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — अज़ान सुन कर नमाज़ के लिए न जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "सरासर ज़ुल्म, कुफ्र और निफाक़ है उस शख़्स का फेल जो अल्लाह के मुनादी (यानी मोअज़्ज़िन) की आवाज़ सुने और नमाज़ को न जाए ।"

[तबरानी कबीर: १६८०४, मुआज़ बिन अनस ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — गुनाहों से माफी की दुआ

अपने गुनाहों से माफी मांगने और अल्लाह तआला से रहम व करम तलब करने के लिए यह दुआ करनी चाहिए, यह हज़रत आदम व हव्वा ؑ की दुआ है, जो उन्होंने अपनी माफी के लिए अल्लाह तआला से की थी : ﴿رَبَّنَا ظَلَمْنَآ أَنفُسَنَا وَإِن لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخٰسِرِينَ﴾

तर्जमा: ऐ हमारे रब ! हम ने अपनी जानों पर बड़ा ज़ुल्म किया (अब) अगर आप हमारी मग़फिरत नहीं फर्माएंगे और रहम नहीं करेंगे तो हमारा बड़ा नुकसान हो जाएगा ।

[सूर-ए-आराफ़ :२३]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | गलती माफ करने का बदला

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "कयामत के दिन एक पुकारने वाला पुकारेगा, के कहां हैं वह लोग जो लोगों की गलतियाँ माफ कर दिया करते थे, वह अपने परवरदिगार के हुज़ूर में आएँ और अपना इन्आम ले जाएँ, क्यों कि हर वह मुसलमान जिस की (लोगों को माफ करने की) आदत थी, वह जन्नत में जाने का हकदार है।"

[कन्ज़ुल उम्माल : ७०१२, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | हज़रत ईसा عليه السلام को खुदा मानना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : यकीनन वह लोग काफिर हो चुके जिन्हों ने यूं कहा के मसीह इब्ने मरयम ही खुदा है, हालांके खूद हज़रत ईसा عليه السلام ने बनी इसराईल से कहा था के तुम उस अल्लाह की इबादत करो जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है, यकीन जानो, जो शख्स अल्लाह के साथ किसी को शरीक करेगा, तोअल्लाह तआला उस पर जन्नत हराम कर देगा और उस का ठिकाना जहन्नम है और ऐसे ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं होगा।

[सूर-ए-माइदा : ७२]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया चाहने वालों का अंजाम

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है और जो कोई दुनिया ही चाहता है, तो हम उस को दुनिया में जितना चाहते हैं, जल्द देते हैं फिर हम उस के लिए दोज़ख मुकर्रर कर देते हैं, जिस में (कयामत के दिन) ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ ढकेल दिए जाएँगे।

[सूर-ए-बनी इसराईल : १८]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | कयामत के दिन के सवालात

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "इन्सान के कदम कयामत के दिन अल्लाह के सामने से उस वक्त तक नहीं हटेंगे, जब तक उस से पाँच चीज़ों के बारे में सवाल न कर लिया जाए : (१) उस की उम्र के बारे में के उस को कहां खत्म किया। (२) उस की जवानी के बारे में के उस को कहां खर्च किया। (३) माल कहां से कमाया। (४) कहां खर्च किया। (५) इल्म के मुताबिक क्या क्या अमल किया।"

[तिर्मिज़ी : २४१६, अन अब्दुल्लाह बिन मसऊद ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | अनार से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अनार को उस के अंदुरुनी छिलके समेत खाओ क्यों कि यह मेअ्दे को साफ करता है।"

[मुस्नदे अहमद : २२७२६, अन अली ؓ]

फ़ायदा : अल्लामा इब्ने कय्यिम رحمه الله फर्माते हैं के अनार जहां मेअ्दे को साफ करता है, वहीं पुरानी खांसी के लिए भी बड़ा कार आमद फल है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "दूसरों की औरतों से दूर रहो तुम्हारी औरतें भी पाक दामन रहेंगी, अपने वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करो, तुम्हारी औलाद भी तुम से हुस्ने सुलूक करेगी।"

[मुस्तदरक : ७२५८, अन अबी हुरैरह ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१३) रमज़ानुल मुबारक

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हुजूर ﷺ को नुबुव्वत मिलना

रसूलुल्लाह ﷺ गारे हिरा में अल्लाह की इबादत में मशगूल थे के आप ﷺ की नुबुव्वत की मुबारक घड़ी आ पहुँची। हजरत जिब्रईल عليه السلام गारे हिरा में तशरीफ लाए और आप ﷺ से कहा के पढ़िये, आप ﷺ ने जवाब दिया के मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ, रसूलुल्लाह ﷺ फर्माते हैं के उस के बाद उन्हों ने मुझे पकड़ कर दबाया, यहां तक के मैं ने उस की तकलीफ महसूस की फिर मुझे छोड़ दिया और कहा : पढ़िये ! मैं ने जवाब दिया के मैं पढ़ा हुआ नहीं हुँ। उन्हों ने फिर मुझे पूरी ताकत से दबाया और छोड़ दिया और कहा : اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِىْ خَلَقَ .... الخ तर्जमा : "(ऐ मुहम्मद) अपने पर्वरदिगार का नाम ले कर पढ़िये जिस ने (आलम को) पैदा किया।" यह हुज़ूर ﷺ पर नाज़िल होने वाली पहली वही थी और आप ﷺ की नुबुव्वत का पहला दिन था। आप हज़रत खदीजा رضي الله عنها के साथ वर्का बिन नौफल के पास गए जो नसरानियत के बड़े आलिम थे उन्हों ने इस बात की तसदीक की, के हज़रत मुहम्मद ﷺ आखरी नबी हैं जिन के आने की खबर पहली किताबों में मौजूद है ।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — ज़मीन से पौदा कौन उगाता है ?

बीज को ज़मीन के अंदर दबा दिया जाता है, इस का खोल बहुत सख्त होता है, कुछ बीज इतने सख्त होते हैं, के हम इन्हें दांतों से भी तोड़ नहीं सकते, लेकिन यही बीज जब मिट्टी में बो दिया जाता है, तो चंद दिनों में एक नाज़ुक और नर्म पौदा इस सख्त बीज को तोड़ कर और ज़मीन को फाड़ कर निकलता है, आखिर इस सख्त खोल को कौन तोड़ता है और ज़मीन से पौदा कौन निकालता है? कुर्आन पाक में है : "यकीनन अल्लाह ही बीजों और गुठलियों को तोड़ता है।" [सूर-ए-अन्आम: ९५]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — ज़कात मुस्तहिक को देना ज़रुरी है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "बेशक अल्लाह तआला ने ज़कात के मुस्तहिक को न किसी नबी की मर्ज़ी पर छोड़ा है और न ही नबी के अलावा किसी और की मर्ज़ी पर, बल्के खुद ही फैसला फर्मा दिया है और उस के आठ हिस्से मुतअय्यन कर दिये हैं।" [अबू दाऊद : १६३०, अन ज़ियाद बिन हारिस رضي الله عنه]

फ़ायदा : ज़कात का जो मुस्तहिक है, उसी को ज़कात देना ज़रुरी है और जो ज़कात का मुस्तहिक नहीं है, अगर उस को दे दिया तो ज़कात अदा नहीं होगी ।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — गुस्ल करने का सुन्नत तरीका

रसूलुल्लाह ﷺ जनाबत का गुस्ल यानी फर्ज़ गुस्ल फर्माते, तो सब से पहले हाथ धोते, फिर सीधे हाथ से बाएँ हाथ पर पानी डालते फिर इस्तिंजा की जगह धोते फिर जिस तरह नमाज़ के लिए वुज़ू किया

जाता है उसी तरह वुज़ू करते, फिर पानी ले कर अपनी उंगलियों के ज़रिये सर के बालों की जड़ों में दाखिल करते, फिर तीन दफा दोनों हाथ भर कर यके बाद दीगरे सर पर पानी डालते, फिर सारे बदन पर पानी बहाते और सब से अखीर में दोनों पाँव धोते। [मुस्लिम : ७१८ अन आयशा]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	खौफ़े ख़ुदा में रोना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो आदमी अल्लाह के डर से रोए, उस का जहन्नम में जाना इस तरह मुशकिल है, जिस तरह दूध का थनों में जाना।" [नसई : ३१०९, अन अबी हुरैरह]

खुलासा : यानी जिस तरह दूध बाहर आ जाने के बाद थन में दोबारा जाना मुशकिल है, इसी तरह अल्लाह के डर और खौफ से रोने वाले का जहन्नम में जाना मुशकिल है।

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	वारिस को मीरास से महरूम करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स अपने वारिस को मीरास देने से भागेगा, (और उसे मीरास से महरुम कर देगा) तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन जन्नत से उस की मीरास खत्म कर देगा।"

[इब्ने माजा : २७०३, अन अनस बिन मालिक]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	दुनिया की नेअ्मतों का खुलासा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "तुम में से जिस शख्स को सेहत व तंदुरुस्ती हासिल होऔर अपने घर वालों की तरफ से उस का दिल मुतमइन होऔर एक दिन का खाना उस के पास मौजूद हो, तो समझ लो के दुनिया की तमाम नेअमत उस के पास मौजूद है।"

[इब्ने माजा : ४१४१, अन उबैदुल्लाह बिन मिहसन]

नंबर (८) : आखिरत के बारे में	अहले जन्नत की नेअ्मत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : बेशक अहले जन्नत (ऐश व राहत के) मज़े ले रहे होंगे, वह और उन की बीवियां सायो में मसहरियों पर तकिए लगाए बैठे होंगे और उन के लिए उस जन्नत में हर किस्म के मेवे होंगे और जो वह तलब करेंगे उन को मिलेगा। [सूर-ए-यासीन : ५५ ता ५८]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	ज़म ज़म के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने ज़म ज़म के बारे में फर्माया : "यह एक मुकम्मल खोराक भी है और बीमारियों के लिए शिफा बख्श भी है।" [बैहकी शोअबुल ईमान : ३९७३, अन इब्ने अब्बास]

नंबर (१०) : कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : नेकी और परहेज़गारी के कामों में एक दूसरे की मदद किया करो, गुनाह और ज़ुल्म व ज़ियादती में किसी की मदद न करोऔर अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह तआला का अज़ाब बहुत सख्त है। [सूर-ए-माइदा : २]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१४) रमज़ानुल मुबारक

नंबर (१): इस्लामी तारीख — सब से पहले ईमान लाने वाले

नुबुव्वत मिल जाने के बाद रसूलुल्लाह ﷺ ने तबलीग शुरु कर दी। चूंकि अरब में सदियों से कुफ्र व शिर्क की वबा फैली हुई थी और हर शख्स उस में मुब्तला था इस लिए खुल्लम खुल्ला पैगामे हक पहुँचाना एक मुश्किल काम था। लिहाज़ा हुजूर ﷺ ने पोशीदा तौर से लोगों को इस्लाम की दावत दी। औरतों में सब से पहले आप की हमदर्द और ग़म गुसार ज़ौज-ए-मोहतरमा हज़रत खदीजा رضي الله عنها ने इस्लाम कबूल किया। मर्दों में आप ﷺ के बचपन के दोस्त, तिजारत के साथी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक رضي الله عنه सुनते ही (आमन्ना व सद्दकना) बोल उठे और ईमान ले आए। लड़कों में आप ﷺ के चचा अबू तालिब के बेटे हज़रत अली رضي الله عنه ईमान की दौलत से माला माल हुए। खादिमों में आप ﷺ के चहिते खादिम हज़रत ज़ैद बिन हारिसा رضي الله عنه ने इस्लाम कबूल किया यह चारो हज़रात पहले ही दिन मुसलमान हो गए इन हज़रात का ईमान लाना जो हुज़ूर ﷺ की नुबुव्वत से पहले की ज़िंदगी से बखूबी वाकिफ थे आप ﷺ के सच्चे नबी होने की रौशन दलील है।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — खजूर के गुच्छे का चलना

एक देहाती रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में आया और कहा के मुझे यह कैसे यकीन आए के आप नबी हैं? आप ﷺ ने फर्माया : अगर मैं उस खजूर के खोशे (गुच्छे) को बुला लूं तो तुम मेरे नबी होने को मान लोगे? उस ने कहा : हां! आप ﷺ ने उस गुच्छे को बुलाया, वह दरख्त से उतर कर रसूलुल्लाह ﷺ के पास आया और फिर आप ﷺ के हुक्म से वापस चला गया, देहाती फौरन इस मुअ्जिज़े को देख कर ईमान ले आया। [तिर्मिज़ी : ३६२८, अन इब्ने अब्बास رضي الله عنه]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सुबह की नमाज़ अदा करने पर हिफाज़त का ज़िम्मा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने सुबह की नमाज़ अदा की, वह अल्लाह की हिफाज़त में है।"

[मुस्लिम : १४९३, अन जुंदुब رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — कर्ज़ की अदायगी की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अली رضي الله عنه को यह दुआ कर्ज़ की अदायगी के लिए सिखाई :

((اَللّٰهُمَّ اكْفِنِىْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِىْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मुझे अपना हलाल रिज़्क अता कर के हराम से मेरी हिफाज़त फर्मा और मुझे अपने फज़्ल से अपने सिवा सब से बे नियाज़ कर दे। [तिर्मिज़ी : ३५६३]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — खज़ांची का बखुशी सदक़ा देना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अमानत दार खज़ांची दो सदका करने वालों में से एक है, जब के उसे सदक़ा देने का हुक्म दिया गया हो और वह खुश दिली से पूरा पूरा सदका उस शख़्स को देदे, जिस को

देने का हुक्म मिला है।" [अबू दाऊद : १६८४, अन अबी मूसा ﷺ]

फ़ायदा : दो सदक़ा करने वालों से मुराद एक खज़ांची, दूसरा मालिक है, जिस ने सदक़ा करने का हुक्म दिया है, अगर खज़ांची अमानतदारी के साथ मालिक के हुक्म के मुताबिक खुश दिली से सदका करे, तो हुज़ूर ﷺ ने उसे भी सदका करने वालों में शुमार फर्माया है।

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | ज़कात न देने का अंजाम

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : जो लोग सोना या चाँदी जमा कर के रखते हैं और उस को अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च नहीं करते (ज़कात अदा नहीं करते), आप उन को दर्दनाक अज़ाब की खबर सुना दीजिए के जिस दिन उस सोने चांदी को आग में तपाया जाएगा, फिर उस से उन की पेशानियों और उन के पहलुओं और उन की पीठों को दागा जाएगा (और) कहा जाएगा यही है वह (सोना चाँदी), जिस को तुम ने अपने लिए जमा किया था, तो (अब) अपने जमा किए हुए का मज़ा चखो। [सूर-ए-तौबा : ३४ ता ३५]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | माल व औलाद दुनिया के लिए ज़ीनत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "माल और औलाद यह सिर्फ दुनिया की ज़िंदगी की एक रौनक है और (जो) नेक आमाल हमेशा बाकी रहने वाले हैं, वह आप के रब के नज़दीक सवाब और बदले के एतबार से भी बेहतर हैं और उम्मीद के एतबार से भी बेहतर हैं "(लिहाज़ा नेक अमल करने की पूरी कोशिश करनी चाहिये और उस पर मिलने वाले बदले की उम्मीद रखनी चाहिये) [सूर-ए-कहफ़ : ४६]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | दोज़ख के कपड़े

हज़रत उमर ﷺ फर्माते हैं के हज़रत जिब्रईल ﷺ ने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया : मुझे उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को हक़ पर मबऊस फर्माया, अगर दोज़ख के कपड़ों में से किसी कपड़े को आस्मान और ज़मीन के दर्मियान लटका दिया जाए, तो ज़मीन पर रहने वाले सब जानदार उस की गर्मी से हलाक हो जाएंगे। [तबरानी : २६८३]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | दुआए जिब्रईल से इलाज

हज़रत आयशा ﷺ बयान करती हैं के जब रसूलुल्लाह ﷺ बीमार हुए तो जिब्रईल ﷺ ने इस दुआ को पढ़ कर दम किया।

((بِاسْمِ اللّٰهِ يُبْرِيكَ، وَمِنْ كُلِّ دَاءٍ يَشْفِيكَ، وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ، وَشَرِّ كُلِّ ذِي عَيْنٍ))

[मुस्लिम : ५६९९]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "झूठ से हमेशा बचते रहो, क्यों कि झूठ बोलने की आदत आदमी को बुराई के रास्ते पर डाल देती है और बुराई उस को दोज़ख तक पहुँचाती है और जब आदमी झूट बोलने का आदी हो जाता है, तो उस का अंजाम यह होता है के वह अल्लाह के यहाँ झूठों में लिख दिया जाता है।" [मुस्लिम : ६६३९, अन अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ]

नंबर (१): इस्लामी तारीख — कोहे सफा पर पहला ऐलाने हक

नुबुव्वत मिल जाने के बाद हुज़ूर ﷺ तीन साल तक पोशीदा तौर से अल्लाह के दीन की दावत देते रहे, जब अल्लाह तआला की तरफ से खुल्लम खुल्ला इस्लाम की दावत देने का हुक्म नाज़िल हुआ, तो आप ﷺ ने सफ़ा पहाड़ की चोटी पर चढ़ कर कुरैशे मक्का के बड़े बड़े लोगों को आवाज़ दी, जब सब जमा हो गए, तो आप ﷺ ने फर्माया : "ऐ लोगो! अगर मैं तुम से यह कहूँ के इस सफ़ा पहाड़ के पीछे एक लश्कर आ रहा है जो अनकरीब तुम पर हमला करने वाला है क्या तुम इस का यकीन करोगे ?" वह सब बोले : क्यों नहीं, आप ﷺ तो सादिक और अमीन हैं। फिर आप ﷺ ने फर्माया : "लोगो ! एक अल्लाह पर ईमान लाओ और बुतों की इबादत छोड़ दो, मैं तुम को एक सख़्त अज़ाब से डराने और आगाह करने आया हूँ जो बिल्कुल तुम्हारे सामने है।" यह सुन कर तमाम लोग सख़्त नाराज़ हुए और बुरा भला कह कर वापस हो गए, आप ﷺ के चचा अबू लहब ने बहुत सख़्ती से कलाम करते हुए कहा, के सारे दिन तुम्हारे लिए खराबी हो, क्या सिर्फ यही कहने के लिए तुम ने हमें बुलाया था? उस के बाद से ही आप से दुश्मनी और मुखालफत शुरु कर दी।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — जानवरों को रोज़ी पहुँचाना

अल्लाह तआला ने ज़मीन पर अन गिनत किस्म के जानवर पैदा किए, जिन में कुछ समुंदर में रहते हैं और कुछ ज़मीन पर, कुछ फज़ाओं में उड़ते हैं और कुछ ज़मीन के अंदर और जंगलों में रहते हैं, गर्ज़ यह के अल्लाह की मखलूक बे शुमार है, लेकिन यह जानवर न तो खाने पीने की चीज़ों को जमा कर के रखते हैं और न ही अपनी पीठ पर लाद कर चलते हैं, बल्के सुबह को खाली पेट अल्लाह की ज़मीन पर रोज़ी की तलाश में निकलते हैं और शाम को पेट भर कर वापस आ जाते हैं, गौर कीजिए इन हज़ारों किस्म के जानवरों के लिए रोज़ाना रोज़ी का इन्तेज़ाम कौन करता है? कुर्आन में है : और कितने ही जानवर ऐसे हैं जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं फिरते, (बल्के) अल्लाह ही उन को और तुम को रोज़ी देता है। [सूरए-ए-अंकबूत : ६०]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — रोज़े का कफ्फारा अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ के पास एक शख़्स आया और कहने लगा के या रसूलल्लाह ! मैं तो हलाक हो गया, रसूलुल्लाह ﷺ ने पूछा क्या हुआ ? उस ने कहा के मैं ने रोज़े की हालत में बीवी से सोहबत करली, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें कफ्फारा अदा करने का हुक्म दिया। [तिर्मिज़ी : ७२४, अन अबी हुरैरह رضی اللہ عنہ]

फ़ायदा : अगर किसी शख़्स ने रमज़ान के रोज़े की हालत में बीवी से सोहबत कर ली, तो उस पर मुसलसल साठ रोज़े रखना और अगर इस की ताक़त न हो, तो साठ मिसकीनों को पेट भर कर खाना खिलाना वाजिब है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — एतकाफ़

रसूलुल्लाह ﷺ हर साल रमज़ान के आखिरी अशरे में एतकाफ फर्माया करते थे। [बुखारी : २०२६, अन आयशा رضی اللہ عنہا]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	गरीब रिश्तेदार पर सदका करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "किसी गरीब को देने पर (सिर्फ़) सदके का सवाब मिलता है; लेकिन (ग़रीब) रिश्तेदार को (देने पर) दोहरा अज्र मिलता है (एक) सदके का (दूसरा) सिला रहमी का ।"

[मुस्तदरक : १४७६, अन सुलैमान बिन आमिर ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	सोने चांदी की ज़कात न देना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो आदमी सोने चांदी का मालिक हो और उस का हक (यानी ज़कात) अदा न करे, तो क़यामत के दिन उस सोने चांदी के पतरे बना कर जहन्नम की आग में तपाया जाएगा, फिर उस शख़्स का पहलू पेशानी और कमर को दागा जाएगा और यह दाग़ने का अमल क़यामत के दिन तक बराबर जारी रहेगा, जिस की मिक़दार पचास हज़ार साल के बराबर होगी, यहाँ तक के बंदों के दर्मियान फ़ैसला हो जाएगा, फिर उस का ठिकाना जन्नत या जहन्नम होगा ।"

[मुस्लिम : २२९०, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	कौन सा माल बेहतर है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब भी सूरज निकलता है तो उस के दोनों जानिब दो फ़रिश्ते रोज़ाना एलान करते हैं : ऐ लोगो ! अपने रब की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाओ ! जो माल थोड़ा हो और वह किफ़ायत कर जाए, वह बेहतर है, उस ज़ियादा माल से जो अल्लाह तआला के अलावा दूसरी चीज़ में मशगूल कर दे।"

[मुस्नदे अहमद : २१२१४, अन अबी दर्दा ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले जहन्नम की तमन्ना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जिस दिन यह गुनहगार लोग फ़रिश्तों को देखेंगे, उस दिन उन के लिए कोई खुशख़बरी नहीं होगी और उन की खतरनाक शकलें देख कर कहेंगे के हमारे और उन फ़रिश्तों के दर्मियान कोई आड़ कायम कर दी जाए ।"

[सूर-ए-फ़ुरकान : २२]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	सफरजल (बही) (Pear) से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "सफ़रजल (यानी बही) खाया करो क्यों कि यह दिल को राहत पहुँचाता है।"

[इब्ने माजा : ३३६९, अन तल्हा ؓ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : शैतान तो यही चाहता है के शराब और जुए के ज़रिये तुम्हारे दर्मियान दुश्मनी और बुग़्ज़ डाल दे और तुम को अल्लाह के ज़िक्र और नमाज़ अदा करने से रोक दे, तो क्या अब भी तुम इन बातों से बाज़ (नहीं) आओगे?

[सूर-ए-माइदा : ९१]

फ़ायदा : शराब और जुवा इतनी बुरी चीज़ है के इस से आपस में दुश्मनी पैदा हो जाती है और आदमी हर नेक काम करने से रुक जाता है, लिहाज़ा इन से बचना निहायत ज़रुरी है।

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१६) रमज़ानुल मुबारक

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ | हुज़ूर ﷺ के चचा अबू तालिब की हिमायत

जब रसूलुल्लाह ﷺ लोगों की नाराज़गी की परवाह किए बग़ैर बराबर बुत परस्ती से रोकते रहे और लोगों को दीने हक की दावत देते रहे, तो कुरैश के सरदारों ने आप ﷺ के चचा अबू तालिब से शिकायत की के तुम्हारा भतीजा हमारे माबूदों को बुरा भला कहता है, हमारे बाप दादाओं को गुमराह कहता है और हमें बेवकूफ ठहराता है, हम इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते, इस लिए या तो आप उन की हिमायत बंद कर दें या फिर आप भी मैदान में आजाएं ताके फ़ैसला हो जाए। अबू तालिब यह सुन कर घबरा गए और हुज़ूर ﷺ को बुला कर कहा के "मुझ पर इतना बोझ न डालो के मैं उठा न सकूं।" चचा की ज़बान से यह बात सुन कर आप ﷺ की आँखो में आँसू भर आए और आप ﷺ ने फर्माया : "चचा जान ! खुदा की कसम ! अगर यह लोग मेरे एक हाथ में सूरज और दूसरे हाथ में चाँद ला कर रख दें तब भी मैं अपने फ़र्ज से बाज न आऊंगा, या तो खुदा का दीन ज़िंदा होगा या मैं इस रास्ते में हलाक हो जाऊंगा।" अबू तालिब पर आप ﷺ की बात का बहुत ज़ियादा असर हुआ और उन्हों ने कहा : "जाओ और जिस तरह चाहो तबलीग करो, मैं तुम्हें किसी के हवाले नहीं करूंगा" चुनांचे इस्लाम कबूल न करने के बावजूद अबू तालिब ने हुज़ूर ﷺ का साथ दिया यहां तक के तीन साल कैद में भी साथ रहे रिहाई के बाद भी आप की हिमायत में कमी नहीं की।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअजिज़ा | बद्र में मक़तूलीन के मुतअल्लिक़ पेशीन गोई

रसूलुल्लाह ﷺ का यह मुअजिज़ा है के बद्र के मौके पर जंग शुरु होने के एक दिन पहले रसूलुल्लाह ﷺ ने एक एक काफिर का नाम ले कर जो बद्र में क़त्ल होने वाले थे खबर दी के फलां शख्स फलां जगह क़त्ल हो कर गिरेगा, चुनांचे जो जगह जिस के लिए आप ﷺ ने बयान फ़र्माई थी वह वहीं गिरा।

[मुस्लिम : ७२२२, अन उमर ؓ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | जमात की पाबंदी न करने पर वईद

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ से किसी ने पूछा के एक शख्स दिन भर रोज़े रखता है और रात भर नफ़लें पढ़ता है मगर जुमा और जमात में शरीक नहीं होता (उस के मुतअल्लिक क्या हुक्म है) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ ने फ़र्माया : "यह शख्स जहन्नमी है।" [तिर्मिज़ी : २१८, अन मुजाहिद]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | कर्ज़ से बचने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ फ़र्माते थे :

((اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَالْهَرَمِ وَالْمَاْثَمِ وَالْمَغْرَمِ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं सुस्ती, बुढ़ापे की कमज़ोरी, गुनाहों और कर्ज़ से तेरी पनाह चाहता हूँ।

[तिर्मिज़ी : ३४९५, अन आयशा ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	मुर्दों को सवाब पहुँचाना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ ने फ़र्माया : "एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया: मेरी माँ मर चुकी है, अगर मैं उन की तरफ़ से सदक़ा करूँ, तो क्या उन को फ़ायदा होगा ? तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : हाँ ! तो उस शख़्स ने कहा : मेरा एक बाग़ है, मैं आप ﷺ को गवाह बनाता हुँ के मैं ने अपनी माँ (के सवाब) के लिए उस को सदक़ा कर दिया। [मुस्तदरक : १५३१]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	तंगी के डर से फ़ॅमिली प्लॉनिंग

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "अपनी औलाद को तंगी के डर से कत्ल मत करो, हम इन को भी रिज़्क देंगे और तुम को भी, बेशक उन का कत्ल करना बड़ा गुनाह है।" [सूर-ए-बनी इसराईल : ३१]

खुलासा : मआशी तंगी के डर से बच्चों को मार डालना या हमल गिराना या और कोई तदबीर इख़्तेयार करना के हमल ही न ठहरे यह सब गुनाह और हराम है।

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की चीज़ें चंद रोज़ा हैं

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो कुछ भी तुम को दिया गया है वह सिर्फ चंद रोज़ा जिंदगी के लिए है और वह उस की रौनक है और जो कुछ अल्लाह तआला के पास है, वह इस से कहीं बेहतर और बाकी रहने वाला है। क्या तुम लोग इतनी बात भी नहीं समझते? [सूर-ए-कसस : ६०]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	दोज़ख की गहराई

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "एक पत्थर को जहन्नम के किनारे से फेंका गया, वह सत्तर साल तक उस में गिरता रहा, मगर उस की गहराई तक नहीं पहुँच सका। अल्लाह तआला फ़र्माते हैं के हम उस (जहन्नम) को इन्सान और जिन्नात से भर देंगे। क्या तुम इस पर तअज्जुब करते हो?"

[मुस्लिम : ७४३५, अन उतबा बिन ग़ज़वान ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	हाथ पाँव सुन हो जाने का इलाज

हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ की मौजूदगी में एक शख़्स का पाँव सुन हो गया, तो उन्हों ने फ़र्माया : अपने महबूब तरीन शख़्स को याद करो, उस ने कहा मुहम्मद ﷺ, फिर वह ठिक हो गया।

[इब्ने सुन्नी : १६९, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम में से कोई शख़्स अपनी बीवी के पास (तन्हाई में) जाए तो जहाँ तक हो सके सतर का खयाल रखे।" [बैहक़ी फि शुअबिल ईमान : ७५४३, अन अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ]

फ़ायदा : तन्हाई में बीवी के पास जाने में भी सतर का खयाल रखने का हुक्म दिया गया है, तो दूसरे मौक़ों पर सतर छुपाने का और ज़ियादा एहतमाम होना चाहिए।

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

⑰ रमज़ानुल मुबारक

नंबर (१): इस्लामी तारीख — ताइफ़ में इस्लाम की दावत

सन १० नब्वी में अबू तालिब के इन्तेक़ाल के बाद कुफ्फारे मक्का ने रसूलुल्लाह ﷺ को बहुत ज़ियादा सताना शुरू कर दिया। लिहाज़ा अहले मक्का से मायूस हो कर आप ﷺ इस खयाल से ताइफ तशरीफ ले गए के अगर ताइफ वालों ने इस्लाम क़बूल कर लिया, तो वहाँ इस्लाम के फैलने की बुनियाद पड़ जाएगी। ताइफ में बनू सकीफ का खानदान सब से बड़ा था, उन के सरदार अब्द या लैल, मसऊद और हबीब थे। यह तीनों भाई थे। हुज़ूर ﷺ ने इन तीनों को इस्लाम की दावत दी। इन में से किसी ने भी कबूल न किया फिर आप ﷺ ने आम लोगों को इस्लाम की दावत दी। मगर किसी ने आप ﷺ की दावत को क़बूल नहीं किया और कहा के फौरन हमारे शहर से निकल जाओ। जब आप ﷺ अपने आज़ाद कर्दा गुलाम ज़ैद बिन हारिसा رضي الله عنه के साथ वहाँ से वापस हुए, तो उन लोगों ने औबाश लड़कों को पीछे लगा दिया, जिन्हों ने आप ﷺ को पत्थर मार मार कर ज़ख्मी कर दिया। किसी तरह बच कर हुज़ूर ﷺ एक अंगूर के बाग में तशरीफ ले गए, वहाँ अल्लाह तआला ने ताइफ वालों पर अज़ाब के लिए फरिश्ते रवाना किए, मगर रहमते दोआलम ﷺ ने उन की हलाकत व बरबादी को गवारा न किया, बल्के उन के हक में हिदायत की दुआ भी फर्मा दी और उन के मुसलमान होने की उम्मीद ज़ाहिर की।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — आसमान में तारे किस ने बनाए ?

रात के वक्त आसमान में अन गिनत तारे झिलमिलाते हुए नज़र आते हैं, जिस से आसमान बहुत खूबसूरत नज़र आता है, इन्सान रात के वक्त खुले आसमान के नीचे बिस्तर लगा कर आस्मान के सितारों को देखता रहे तब भी उस का जी न भरेगा; हमें अल्लाह तआला की कुदरत में गौर करना चाहिए, के उस ने इन सितारों को कितने अच्छे निज़ाम के साथ जोड़ रखा है, के न तो आपस में टकराकर खत्म होते हैं, न तो ज़मीन पर गिर कर जमीन पर तबाही फैलाते हैं, यह अल्लाह तआला का बनाया हुआ निज़ाम है, जिस ने हर चीज़ को ठीक ठीक बनाया है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — औरतों पर भी ज़कात देना फर्ज़ है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "तुम (औरतें) नमाज़ की पाबंद रहो और ज़कात अदा करती रहो और अल्लाह और उस के रसूल की फर्मांबरदारी करती रहो।" [सूर-ए-अहज़ाब : ३३]

फ़ायदा : अगर औरतों के पास निसाब के बराबर ज़रुरत से ज़ाएद माल हो या सोना या चांदी हो और उस पर साल गुज़र जाए, तो उस में से ज़कात निकालना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — बैतुलखला जाने का सुन्नत तरीका

(१) सर ढांक कर जाना। (२) जूता या चप्पल वगैरह पहन कर जाना। (३) दुआ पढ़ कर अन्दर जाना। (४) पहले बायां पाँव अंदर रखना। (५) किबला की तरफ न रुख करना और न पीठ करना। (६) बिल्कुल बात चीत न करना। (७) खड़े हो कर पेशाब न करना। (८) बाएँ हाथ से इस्तिंजा करना।

(९) इस्तिंजा के बाद मिट्टी से या साबुन वगैरह से अच्छी तरह हाथ धोना। (१०) दाएँ पाँव से बाहर आना। (११) बाहर आने के बाद दुआ पढ़ना।

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | हज व उमरा की निय्यत से निकलना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया :" जो शख़्स हज के इरादे से निकला और रास्ते में मर गया तो कयामत तक उस के नाम-ए- आमाल में हज करने वाले के बराबर सवाब लिखा जाएगा और जो आदमी उम्रह के इरादे से निकला और रास्ते में मर गया तो कयामत तक उस के नाम-ए-आमाल में उम्रह करने वाले के बराबर सवाब लिखा जाएगा।" [अबू याला : ६३२७, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | तीन किस्म के लोगों का अंजाम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : तीन शख़्स ऐसे हैं के कयामत के दिन अल्लाह तआला न उन से बात करेंगे, और न उन की तरफ (रहमत की नज़र से) देखेंगे और न उन को पाक व साफ करेंगे और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा, हज़रत अबूज़र ؓ फर्माते हैं के मैं ने पूछा के अल्लाह के रसूल ﷺ! वह कौन लोग हैं ? तो आप ﷺ ने तीन मर्तबा यही बात कही, फिर मैं ने पूछा के अल्लाह के रसूल ﷺ! वह कौन लोग हैं? तो आप ﷺ ने फर्माया : "एक टखने से नीचे (कपड़े) लटकाने वाला, दूसरा एहसान जतलाने वाला, तीसरा झूटी कसम खा कर अपना सामान बेचने वाला।" [अबू दाऊद : ४०८७, अन अबी ज़र ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | गुनहगारों को नेअ्मत देने का मक्सद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तू यह देखे के अल्लाह तआला किसी गुनहगार को उस के गुनाहों के बावजूद दुनिया की चीज़ें दे रहा है, तो यह अल्लाह तआला की तरफ से ढील है।"

[मुसनदे अहमद : १६८६०, अन उक्बा बिन आमिर ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | क़यामत का हौलनाक मंज़र

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : जब कानों के पर्दे फाड़ देने वाला शोर बर्पा होगा, तो उस दिन आदमी अपने भाई से अपनी माँ से और बाप से,अपनी बीवी और बेटों से भागेगा। उस दिन हर शख़्स की हालत ऐसी होगी जो उस को हर एक से बे खबर कर देगी। [सूर-ए-अबस : ३३ ता ३७]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | तरबूज़ (Watermelon) के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ तरबूज़ को तर खजूर के साथ खाते और फर्माते के हम इस खजूर की गर्मी को तरबूज़ की ठंडक के ज़रिये और तरबूज़ की ठंडक को खजूर की गर्मी के ज़रिये खत्म करते हैं।

[अबू दाऊद : ३८३६, अन आयशा ؓ]

फ़ायदा : तरबूज़ गर्मी की शिद्दत को कम करता है, और गर्मी की वजह से होने वाले सर दर्द में मुफीद है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : ऐ आदम की औलाद ! तुम हर मस्जिद में हाज़री के वक्त अच्छा लिबास पहन लिया करोऔर खाओ पियो और फुज़ूल खर्ची मत किया करो, बेशक अल्लाह तआला फुज़ूल खर्ची करने वालों को पसंद नहीं करता। [सूर-ए-आराफ : ३१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

१८ रमज़ानुल मुबारक

नंबर १ : इस्लामी तारीख — हुज़ूर ﷺ के खिलाफ कुफ्फार की साज़िश

कुरैश को जब मालूम हुआ के मुहम्मद ﷺ भी हिजरत करने वाले हैं तो उन को बड़ी फिक्र लाहिक हुई के अगर मुहम्मद ﷺ भी मदीना चले गए, तो इस्लाम जड़ पकड़ लेगा और फिर वह अपने साथियों के साथ मिल कर हम से बदला लेंगे और हमें हलाक कर देंगे। इस बिना पर वह लोग कुसइ बिन किलाब के घर में जो दारुन नदवा के नाम से मशहूर था, साज़िश के लिए जमा हुए, इस में हर कबीले के सरदार मौजूद थे, सब लोगों नेआपस में यह तय किया के हर कबीले का एक एक शख्स जमा हो और सब मिल कर तलवारों से आप ﷺ का खात्मा कर दें, इस फैसले के बाद उन्हों ने रात के वक्त रसूलुल्लाह ﷺ का घर घेर लिया और इस इन्तिज़ार में रहे के जब मुहम्मद ﷺ सुबह को नमाज़ के लिए निकलेंगे, तो तलवारों से उन का खात्मा कर देंगे। मगर अल्लाह तआला ने आप ﷺ को कुरैश की इस साज़िश की खबर देदी, लिहाज़ा हुज़ूर ﷺ रात कोअपने बिस्तर पर हज़रत अली رضی اللہ عنہ को लिटा कर सूर-ए-यासीन पढ़ते हुए सामने से गुज़र गए और कुफ्फार को कुछ भी खबर न हुई। सुबह को जब उन लोगों ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ को बिस्तर पर देखा, तो अपनी रात भर की कोशिश पर बड़े नादिम व शरमिंदा हुए।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — वहशी जानवर का आप ﷺ की राहत का खयाल रखना

हज़रत आयशा رضی اللہ عنہا फर्माती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ के अहल व अयाल के यहाँ एक जंगली जानवर पाला हुआ था, उस की आदत यह थी के जब रसूलुल्लाह ﷺ घर से बाहर तशरीफ ले जाते तो वह खूब खेल कूद करता और इधर उधर घूमता फिरता था, मगर जूँ ही उस को यह एहसास होता, के आप ﷺ घर पर तशरीफ ला चुके हैं, तो जब तक आप ﷺ घर पर रहते, वह अपनी भूक प्यास की ज़रुरत का इज़्हार न करता, ताके रसूलुल्लाह ﷺ को तक्लीफ न हो।

[मुस्नदे अहमद : २४२९७]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — जमात छोड़ने पर वईद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मर्दों को जमात छोड़ने से रुक जाना चाहिये, वरना मैं उन के घरों में आग लगवा दूँगा।"

[इब्ने माजा : ७९५, अन उसामा बिन ज़ैद رضی اللہ عنہ]

फ़ायदा : जमात छोड़ने वालों के लिए हदीसों में बहुत सख्त वईदें बयान की गई हैं, इस लिए तमाम मुसलमान मर्दों पर जमात का एहतमाम करना बहुत ज़रुरी है।

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — नेक लोगों में शामिल होने की दुआ

गुनाहों से तौबा करने और नेक लोगों में शामिल होने के लिए यह दुआ करनी चाहिये।

رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ

तर्जमा : ऐ हमारे रब ! हमारे गुनाहों को माफ फर्मा, हमारी बुराइयों को खत्म फर्मा और हम को नेक लोगों के साथ मौत अता फर्मा। [सूर-ए-आले इमरान : १९३]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | कुर्आने करीम याद करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ने कुर्आन पढ़ा और उस को याद कर लिया और उस के हलाल को हलाल और हराम को हराम जाना, तो अल्लाह तआला (अव्वल मरहले में) उस को जन्नत में दाखिल फर्माएगा और उस की शफाअत उस के खान्दान के दस ऐसे लोगों के बारे में कबूल फर्माएगा, जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुकी होगी।" [तिर्मिज़ी : २९०५, अन अली رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | फुज़ूल कामों में माल खर्च करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : बाज़ लोग वह हैं जो गफलत में डालने वाली चीज़ों को खरीदते हैं ताके बे सोचे समझे अल्लाह के रास्ते से लोगों को गुमराह करें और सीधे रास्ते का मज़ाक उड़ाएं, ऐसे लोगों के लिये बड़ी रुसवाई का अज़ाब है। [सूर-ए-लुकमान : ६]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | माल व औलाद अल्लाह के कुर्ब का ज़रिया नहीं

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद ऐसी चीज़ नहीं जो तुम को हमारा मुकर्रब बना दे, मगर हाँ जो ईमान लाए और नेक अमल करता रहे, तो ऐसे लोगों को उन के आमाल का दो गुना बदला मिलेगा, और वह जन्नत के बाला खानों में आराम से रहेंगे। [सूर-ए-सबा : ३७]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | जन्नत में सोने चाँदी के बाग

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "(जन्नत में) दो बाग चाँदी के हैं उन के बरतन और सब सामान भी चाँदी का है और दो बाग सोने के हैं, उन के बरतन और सब सामान भी सोने का है, जन्नतेअद्न के रहने वालों और उन के रब के दीदार के दर्मियान जलाल की चादर होगी, वरना वह हर वक्त उस को देखते रहते।" [बुखारी : ४८७८, अन अब्दुल्लाह बिन कैस رضي الله عنه]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | खड़े हो कर पानी पीना मुज़िर है

रसूलुल्लाह ﷺ ने खड़े हो कर पानी पीने से मना फर्माया है। [इब्ने माजा : ३४२४, अन अनस رضي الله عنه]

फ़ायदा : खड़े हो कर पानी पीना मेअदे को नुक्सान पहुँचाता है, इस लिए इस से बचना ज़रुरी है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अपने ईमान को ताज़ा करते रहा करो, अर्ज़ किया गया : ऐअल्लाह के रसूल ! हम अपने ईमान को किस तरह ताज़ा करें ? रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ" को कसरत से पढ़ते रहा करो।" [मुसनदे अहमद : ८६९१, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(१९) रमज़ानुल मुबारक

नंबर (१): इस्लामी तारीख — रसूलुल्लाह ﷺ की हिजरत

जब रसूलुल्लाह ﷺ को हिजरत का हुक्म हुआ तो आप ﷺ हज़रत अबू बक्र رضی اللہ عنہ के घर तशरीफ ले गए और मशवरा कर के हिजरत की तैयारी शुरू कर दी और रात की तारीकी में हज़रत अबू बक्र رضی اللہ عنہ के साथ रवाना हो गए। चूंकि मुखालफत का ज़ोर था और कुफ्फार आप ﷺ के कत्ल के दरपे थे, इस लिए मक्का से चार पाँच मील के फासले पर एक पहाड के गार में जिसे "गारे सौर" कहा जाता है, वहाँ चले गए। कुफ्फारे मक्का आप ﷺ की तलाश में निकले और गार तक पहुँच गए, हज़रत अबू बक्र رضی اللہ عنہ घबरा गए, मगर रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : " घबराओ नहीं ! खुदा हमारे साथ है।" कुफ्फार इन दोनों हज़रात को न देख सके और वापस चले गए। रसूलुल्लाह ﷺ उस गार में तीन रोज़ रहे, चौथे रोज़ वहाँ से रवाना हो गए और रात दिन बराबर चलते रहे, रास्ते में सुराका नामी एक शख़्स नेआप ﷺ का पीछा किया, मगर वह भी नाकाम व ना मुराद हुआ, बिल आखिर रसूलुल्लाह ﷺ मशक्कत व खतरात से भरा हुआ सफर तय करते हुए मदीना पहुँचे, जहाँ आप ﷺ का पुर जोश इस्तिकबाल हुआ।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — ज़मीन में सारे खज़ाने अल्लाह ने रखे हैं

अल्लाह तआला ने ज़मीन के अंदर मुख्तलिफ किस्म के तेल के खज़ाने रखे हैं, जिन में पेट्रोल, डीज़ल और मिट्टी का तेल इन्सानी तरक्की के लिए बहुत ही अहम और ज़रूरी हैं, आज तेल की जितनी अहेमियत व ज़रुरत है, उतनी पहले कभी न थी, इन्सान दिन रात मुसलसल तेल निकालता ही जा रहा है, लेकिन तेल के ज़खाइर के खत्म होने का अंदेशा ही नहीं, अंदाज़ा लगाइए, अगर यह तेल के ज़खीरे खत्म हो जाएँ, तो इन्सानी ज़िंदगी ठहर जाएगी, ज़रा गौर कीजिए के ज़मीन के अंदर तेल के यह ज़खीरे किस ने रखे? यकीनन यह अल्लाह तआला के उस खज़ाने से है जिस के बारे में अल्लाह तआला ने क़ुर्आन में फर्माया है : "और हमारे पास हर चीज़ के खज़ाने हैं, और हम उसे एक मुतअय्यन अंदाज़ से उतारते हैं।"

[सूर-ए-हिज्र : २१]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — वालिदैन के साथ अच्छा बर्ताव करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करो।"

[सूर-ए-बनी इसराईल : २३]

फ़ायदा: वालिदैन कितनी मेहनत व मशक़्क़त से बच्चों की पर्वरिश करते हैं, इस लिए वालिदैन के साथ अच्छाई का मामला करना और उन की ज़रुरियात को अपनी ताकत और हैसियत के मुताबिक पूरी करना ज़रुरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — ज़ोहर से पहले की चार रकात सुन्नते मोअक्कदा है

हज़रत आयशा رضی اللہ عنہا बयान फर्माती हैं के सरवरे कायनात ﷺ ज़ोहर से पहले चार रकात और फ़ज्र से पहले दो रकात कभी नहीं छोड़ते थे।

[बुखारी : ११८२]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	कुर्आन के हुक्म पर अमल करने का इन्आम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स कुर्आन पढ़े, सीखे और उस पर अमल करे, तो उस को कयामत के दिन नूर से बना हुआ ताज पहनाया जाएगा, जिस की रौशनी सूरज की रौशनी की तरह होगी उस के वालिदैन को ऐसे दो जोड़े पहनाए जाएंगे, के तमाम दुनिया उस का मुकाबला नहीं कर सकती, वह अर्ज करेंगे : यह जोड़े हमें किस वजह से पहनाए गए? इर्शाद होगा : तुम्हारे बच्चे के कुर्आने मजीद पढ़ने के बदले में।"

[मुस्तदरक : २०८६, अन बुरैदह बिन असलमी ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	शिर्क और कत्ल करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह तआला हर गुनाह को माफ कर सकता है, मगर उस आदमी को माफ नहीं करेंगे, जो शिर्क की हालत में मर जाए, दूसरा वह आदमी जो किसी मुसलमान भाई को जान बूझ कर कत्ल कर दे।"

[अबू दाऊद : ४२७०, अन अबी दर्दा ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया का फायदा वक्ती है

एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी तकरीर में फर्माया : " गौर से सुन लो ! दुनिया एक वक्ती फायदा है, जिस से हर शख़्स फायदा उठाता है, चाहे नेक हो या गुनहगार।"

[मुअजमे कबीर : ७०१२, अन शद्दाद बिन औस ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले जन्नत का शुक्र अदा करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : (जन्नती जन्नत में दाखिल हो कर) कहेंगे के हम्द और शुक्र उस अल्लाह के लिए है, जिस ने हम से हर किस्म का ग़म दूर कर दिया। बेशक हमारा रब बड़ा बख़्शने वाला, बड़ा कद्रदान है, जिस ने अपने फ़ज़्ल से हम को हमेशा रहने की जगह में उतारा। जहाँ न हम को कोई तक्लीफ पहुँचेगी और न हम को किसी किस्म की थकान महसूस होगी।

[सूर-ए-फातिर : ३४ ता ३५]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	दस्त (बकरी की अगली रान) के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ को दस्त (अगली रान) का गोश्त बहुत पसंद था। [बुखारी : ३३४०, अन अबी हुरैरह ﷺ]

फ़ायदा : अल्लामा इब्ने कय्यिम رحمه الله ने लिखा है के बकरी के गोश्त में सब से हल्की गिज़ा का हिस्सा गर्दन और दस्त है, इस के खाने से मेअदे में भारी पन नहीं होता।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : तुम अपने रब से गिड़ गिड़ा कर और चुपके चुपके (भी) दुआ किया करो, बेशक अल्लाह तआला हद से निकल जाने वालों को पसंद नहीं करता और ज़मीन में उस की इस्लाह के बाद फसाद मत फैलाओ और अज़ाब का डर और रहमत की उम्मीद रखते हुए अल्लाह की इबादत किया करो, यकीनन अल्लाह तआला की रहमत अच्छे काम करने वालों के करीब है।

[सूर-ए-आराफ : ५५ ता ५६]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — मस्जिदे कुबा की तामीर

मदीना मुनव्वरा से तकरीबन तीन मील के फास्ले पर एक छोटी सी बस्ती है जिस का नाम कुबा है। यहाँ अन्सार के बहुत से खानदान आबाद थे और कुल्सूम बिन हद्म उन के सरदार थे। हिजरत के दौरान हुज़ूर ﷺ ने पहले यहीं कयाम फर्माया और कुल्सूम बिन हद्म के घर मेहमान हुए। हुज़ूर ﷺ ने यहाँ अपने मुबारक हाथों से एक मस्जिद की बुनियाद डाली जिस का नाम "मस्जिदे कुबा" है। मस्जिद की तामीर में सहाबा ﷺ के साथ साथ आप ﷺ खुद भी काम करते थेऔर भारी भारी पत्थरों को उठात थे। एक सहाबी ﷺ ने यह शेर कहा : لَئِنْ قَعَدْنَا وَالنَّبِيُّ يَعْمَلُ = لَذَاكَ مِنَّا الْعَمَلُ الْمُضَلِّلُ तर्जमा : अगर हम बैठे रहें और नबी काम करें , तो हमारा यह अमल गुमराही का सबब होगा यही वह मस्जिद है जिस की शान में कुआनि मजीद में है। لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ ...... الخ यानी वह मस्जिद जिस की बुनियाद पहले ही दिन से परहेज़ गारी पर रखी गई है वह इस बात की ज़ियादा मुस्तहिक है के आप ﷺ इस में (नमाज़ के लिए) खड़े हों। इस में ऐसे लोग हैं जिन को सफाई बहुत पसंद है और खुदा साफ व पाक रहने वालो को पसंद फर्माता है। हुज़ूर ﷺ यहाँ चौदह दिन कयाम फर्मा कर जुमा के दिन मदीना तैयबा के लिये रवाना हो गए ।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — ऊँट का आप ﷺ से शिकायत करना

एक दफा रसूलुल्लाह ﷺ एक अन्सारी के बाग में तशरीफ ले गए, वहाँ एक ऊँट खड़ा था, रसूलुल्लाह ﷺ को देख कर बिलबिलाने लगा और उस की दोनों आँखों में आँसू डबडबा आए। रसूलुल्लाह ﷺ ने करीब जा कर उस के सर और कन पट्टी पर हाथ फेरा, तो वह चुप हो गया, आप ﷺ ने दर्याफ्त किया के यह किस का ऊँट है? तो एक नौ जवान अन्सारी सहाबी आए, आप ﷺ ने उन से फर्माया : क्या तुम इन जानवरों के बारे में अल्लाह से नहीं डरते? जिन को खुदा ने तुम्हारे ताबे बनाया है, इस ऊँट ने मुझ से शिकायत की है के तुम इस को भूका रखते हो और इस को तक्लीफ देते हो।

[अबू दाऊद : २५४९, अन अब्दुल्लाह बिन जाफर ﷺ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सब से पहले नमाज़ का हिसाब होगा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "कयामत में सब से पहले नमाज़ का हिसाब लिया जाएगा, अगर वह अच्छी और पूरी निकल आई तो बाकी आमाल भी पूरे उतरेंगे और अगर वह खराब हो गई तो बाकी आमाल भी खराब निकलेंगे।"

[तिर्मिज़ी : ४१३, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — नया लिबास पहनने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जो बन्दा नया कपड़ा पहने और कहे :

((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ كَسَانِىْ مَا اُوَارِىْ بِهٖ عَوْرَتِىْ وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِىْ حَيَاتِىْ))

तर्जमा : तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं, जिस ने मुझे वह लिबास अता फर्माया, जिस से मैं

अपना जिस्म छुपाता हुँ और अपनी ज़िंदगी में ज़ेब व ज़ीनत हासिल करता हुँ, फिर इस(दुआ के पढ़ने) के बाद पुराना लिबास सदका कर दे, तो वह ज़िंदगी में और मरने के बाद अल्लाह तआला की हिफाज़त व अमानत में रहेगा। [तिर्मिज़ी : ३५६०, अन उमर बिन खत्ताब]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	सदका मुसीबतों को दूर करता है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "सदका मुसीबत के सत्तर दरवाज़े बंद कर देता है।" [तबरानी कबीर : ४२७६, अन राफेअ बिन खदीज]

एक दूसरी हदीस में है के आप ﷺ ने फर्माया : "सदका अल्लाह तआला के गुस्से को ठंडा करता है और बुरी मौत से बचाता है।" [तिर्मिज़ी : ६६४]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	झूठी तोहमत लगाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : जो लोग मुसलमान मर्दों और औरतों को बगैर किसी जुर्म के तोहमत लगा कर तक्लीफ पहुँचाते हैं, तो यकीनन वह लोग बड़े बोहतान और खुले गुनाह का बोझ उठाते हैं। [सूर-ए-अहज़ाब : ५८]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनियावी ज़िंदगी एक धोका है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता : ऐ लोगो ! बेशक अल्लाह तआला का वादा सच्चा है, फिर कहीं तुम को दुनियवी ज़िंदगी धोके में न डाल दे और तुम को धोके बाज़ शैतान किसी धोके में न डाल दे,यकीनन शैतान तुम्हारा दुशमन है । तुम भी उसे अपना दुशमन ही समझो। वह तो अपने गिरोह (के लोगों को) इस लिए बुलाता है के वह भी दोज़ख़ वालों में शामिल हो जाएं । [सूर-ए-फातिर : ५ ता ६]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	अल्लाह का अहले जन्नत से कलाम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह तआला अहले जन्नत से फर्माएगा : ऐ जन्नत वालो ! तो वह कहेंगे, ऐ हमारे रब ! हम हाज़िर हैं और सारी भलाई तेरी कुदरत में है । अल्लाह तआला फर्माएगा : क्या तुम राज़ी हो गए? तो कहेंगे, हम राज़ी क्यों नहीं होंगे? ऐअल्लाह !तूने हमें वह नेअ्मत अता फर्माई है, जो अपनी किसी मखलूक कोअता नहीं की। अल्लाह तआला फर्माएगा : क्या मैं तुम्हें इस से भी बेहतर नेअ्मत अता कर दूँ? वह अर्ज करेंगे : इस से बेहतर और कौन सी नेअ्मत होगी? तो अल्लाह तआला फर्माएगा : मैं हमेशा के लिए तुम से राज़ी हो गया, इस के बाद कभी तुम से नाराज़ नही होऊंगा।" [मुस्लिम : ७१४०, अन अबी सईद खुदरी]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	खत्ना के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया :" पाँच चीज़ें फितरत में से हैं, उन में से एक खत्ना करना है।" [मुस्लिम : ५९८, अन अबी हुरैरह]

फ़ायदा: खत्ना करने से शरमगाह के कैंसर, ऐगज़ीमा और गुर्दे की पथ्री जैसी बीमारियों से हिफाज़त होती है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "ईमान तुम्हारे दिलों में इस तरह पुराना हो जाता है, जिस तरह कपड़ा पुराना हो जाता है , लिहाज़ा अल्लाह तआला से दुआ किया करो के वह तुम्हारे दिलों में ईमान को ताज़ा रखें।" [मुस्तदरक हाकिम : ५ , अन अब्दुल्लाह बिन अम्र]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(२१) रमज़ानुल मुबारक

नंबर (१): इस्लामी तारीख — मदीना में हुज़ूर ﷺ का इस्तिकबाल

कुबा में चौदह दिन कयाम फर्मा कर रसूलुल्लाह ﷺ मदीना तैयबा के लिए रवाना हो गए । जब लोगों को आप ﷺ के तशरीफ लाने का इल्म हुआ, तो खुशी में सब के सब बाहर निकल आए और सड़क के किनारे खड़े हो गए, सारा मदीना अल्लाहु अकबर के नारों से गूँज उठा। अन्सार की बच्चियाँ खुशी के आलम में यह अशआर पढ रही थीं :

طَلَعَ الْبَدْرُ عَلَيْنَا   مِنْ ثَنِيَّاتِ الْوَدَاعِ

وَجَبَ الشُّكْرُ عَلَيْنَا   مَا دَعَا لِلّٰهِ دَاعِ

اَيُّهَا الْمَبْعُوْثُ فِيْنَا   جِئْتَ بِالْاَمْرِ الْمُطَاعِ

यानी वदाअ् पहाड़ की घाटियों से चौदहवीं का चाँद निकल आया है। लिहाज़ा जब तक दुनिया में अल्लाह के लिए दावत देने वाला बाकी रहेगा, उस का शुक्र हम पर वाजिब रहेगा। बनु नज्जार की लड़कियाँ दफ बजा बजा कर गा रही थीं :

نَحْنُ جَوَارٍ مِنْ بَنِى النَّجَّارِ   يَا حَبَّذَا مُحَمَّدًا مِنْ جَارِ

तर्जमा : हम खानदाने नज्जार की लड़कियाँ हैं, मुहम्मद ﷺ क्या ही अच्छे पड़ोसी होंगे-----हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه फर्माते हैं के मैं ने कोई दिन इस से ज़ियादा हसीन और रौशन नहीं देखा जिस दिन हुज़ूर ﷺ हमारे यहाँ (मदीना) तशरीफ लाए।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — पत्थरों में अल्लाह की निशानी

अल्लाह तआला की बनाई हुई यह कायनात बड़ी रंग बिरंगी है, हर चीज़ को अल्लाह तआला ने एक अनोखा रंग दिया है, जिस से इस की खूब सूरती और पहचान होती है। यहाँ तक के अल्लाह तआला ने पत्थरों को भी एक ऐसा रंग और चमक अता की है, जिस में काले, लाल, हरे और सफेद किस्म के पत्थर पैदा किए हैं । जिस को हम मुख्तलिफ तरह से इस्तेमाल करते है, ज़रा गौर कीजिए के यह किस की कारी गरी है, ज़मीन के नीचे छिपी हुई इन पत्थरों की चटानों को यह रंग, यह चमक और यह खूब सूरती किस ने दी है? यकीनन यह अल्लाह की कुदरत है, जिस ने यह रंग भरी कायनात बनाई है ।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — औरतों पर रोज़ों की कज़ा करना

हज़रत आयशा رضي الله عنها फर्माती हैं के (रसूलुल्लाह ﷺ के ज़माने में) जब हम लोगों को माहवारी आती (और उस की वजह से नमाज़ रोज़ा कुछ नहीं कर सकते तो) हमें उन दिनों के कज़ा रोज़ों को रखने का हुक्म दिया जाता था और कज़ा नमाज़ें पढ़ने का हुक्म नहीं दिया जाता था । [मुस्लिम : ७६१]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	इत्र लगाना सुन्नत है

हज़रत आयशा ﷺ से मालूम किया गया के रसूलुल्लाह ﷺ इत्र लगाया करते थे? उन्हों ने फर्माया : हाँ मुश्क वगैरह की उम्दा खुशबू लगाया करते थे। [नसई:५११९]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	लैलतुलकद्र में इबादत करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स लैलतुलकद्र में ईमान और सवाब की नियत से (इबादत के लिए) खड़ा होगा, तो उस के अगले सारे गुनाह माफ कर दिए जाएंगे।" [बुखारी : ३७, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	आखिरत के अमल से दुनिया तलब करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख़्स आखिरत के किसी अमल से दुनिया चाहता है, उस के चेहरे पर फिटकार होती है, उस का ज़िक्र मिटा दिया जाता है और उस का नाम दोज़ख में लिख दिया जाता है।" [तबरानी कबीर : २०८५, अन जारूद ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	इस्तिग़ना इन्सान को महबूब बना देता है

एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज किया : ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ ! मुझे कोई ऐसा अमल बता दीजिए, जिस को मैं करूँ, ताके अल्लाह और लोग मुझ से मुहब्बत करने लगे, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: "दुनिया से मुँह मोड़ लो, तो अल्लाह तुम से मुहब्बत करने लगेगा और जो लोगों के पास है (यानी माल व दौलत), इस से बेरुखी इख्तियार कर लो, तो लोग तुम से मुहब्बत करने लगेंगे।" [इब्ने माजा : ४१०२, अन सहल बिन सअद ﷺ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	अहले जहन्नम की फरियाद

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "दोज़खी फरियाद करते हुए कहेंगे: ऐ हमारे परवरदिगार ! हमें इस जहन्नम से निकाल कर (दुनिया में भेज दे) फिर अगर दो बारा हम ऐसे गुनाह करें, तो हम ही कुसूरवार और सज़ा के मुस्तहिक होंगे। अल्लाह तआला फर्माएगा : तुम इसी जहन्नम में फिटकारे हुए पड़े रहो और मुझ से बात मत करो।" [सूर-ए-मोमिनून : १०७ता १०८]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	सिरका के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "सिरका क्या ही बेहतरीन सालन है।" [मुस्लिम : ५३५०, अन आयशा ﷺ]

फ़ायदा : सिरका के बारे में मुहद्दिसीन हज़रात कहते हैं के यह तिल्ली के बढ़ने को रोकता है, जिस्म में वर्म नहीं होने देता, खाने को हज़्म करता है, खून को साफ करता है, फोड़े फुंसियों को दूर करता है। [अल इलाजुन्नब्वी]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : तुम फक्र व फाका की वजह से अपनी औलाद को कत्ल न करो, हम उन को भी रोज़ी देते हैं और तुम को भी। [सूर-ए-बनी इसराईल : ३१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(२२) रमज़ानुल मुबारक

नंबर (१): इस्लामी तारीख — इस्लाम में पहला जुमा

बारह रबीउल अव्वल सन १ हिजरी को जुमा के दिन रसूलुल्लाह ﷺ कुबा से मदीना तैयबा के लिए रवाना हुए। बनी सालिम के घरों तक पहुँचे थे के जुमा का वक्त हो गया। हुज़ूर ﷺ ने उन की मस्जिद में जुमा की नमाज़ अदा की । इस्लाम में यह पहली नमाज़े जुमा थी जिसे आप ﷺ ने मदीना तैयबा में अदा किया। आप ﷺ ने खुत्बा देते हुए फर्माया : खुदा के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं, वह तन्हा है, उस का कोई शरीक नहीं और मुहम्मद ﷺ उस के बंदेऔर रसूल हैं, लिहाज़ा जो कोई खुदा और रसूल की इताअत करेगा वह हिदायत पाएगा और जो उन का हुक्म न मानेगा वह भटक जाएगा, मुसलमानों ! मैं तुम्हें अल्लाह से डरने की वसिय्यत करता हुँ । बेहतरीन वसिय्यत जो मुसलमान किसी मुसलमान को कर सकता है ,वह यह है के उसे आखिरत के लिए आमादा करे और तकवा इख्तियार करने के लिए कहे। लोगो ! अल्लाह का ज़िक्र करो और आईंदा ज़िंदगी के लिए अमल करो, क्योंकि जो शख्स अपने और खुदा के दर्मियान मामले को दुरुस्त कर लेता है, अल्लाह तआला उस के और लोगों के दर्मियान मामला को दुरुस्त कर देता है।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअजिज़ा — मुर्दा बकरी का खबर देना

हज़रत अबू सलमा رضی اللہ عنہ फर्माते हैं के खैबर में एक यहूदी औरत ने एक भुनी हुई बकरी रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में बतौरे हदिया पेश की, जिस में उस ने ज़हर मिला दिया था, रसूलुल्लाह ﷺ ने उस में से कुछ खाया और सहाब-ए-किराम رضی اللہ عنہم जो मजलिस में हाज़िर थे, उन्हों ने भी उस में से कुछ खाया, मगर फौरन ही रसूलुल्लाह ﷺ ने सहाबा رضی اللہ عنہم से फर्माया : अपना हाथ खींच लो, इस बकरी ने मुझे खबर दी है के मुझ में ज़हर मिलाया गया है। [अबू दाऊद : ४५१२, अन अबी सलमा رضی اللہ عنہ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ छोड़ने वाला कुफ्र के करीब हो जाता है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : नमाज़ का छोड़ना आदमी को कुफ्र से मिला देता है ।

[मुस्लिम : २४६, अन जाबिर رضی اللہ عنہ]

दूसरी एक रिवायत में है के ईमान और कुफ्र के दर्मियान नमाज़ छोड़ने का फर्क है।

[इब्ने माजा : १०७८, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — वालिदैन के हक में दुआ

वालिदैन के लिए इस दुआ का एहतेमाम करना चाहिए :

رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا [सूर-ए- बनी इसराइल : २४]

तर्जमा : ऐ हमारे पर्वरदिगार ! हमारे वालिदैन पर रहम फर्मा जैसा के उन्हों ने बचपन में हमारी परवरिश की है ।

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	कौनसा सदका अफज़ल है ?

रसूलुल्लाह ﷺ से मालूम किया गया के रमज़ान के बाद कौन से रोज़े अफज़ल हैं? फर्माया : शाबान के, रमज़ान की ताज़ीम की वजह से, अर्ज़ किया गया : कौन सा सदका अफज़ल है? फर्माया : रमज़ान में सदका करना । [तिर्मिज़ी : ६६३, अन अनस बिन मालिक ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	अल्लाह और रसूल का हुक्म न मानना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "बिलाशुबा जो लोग अल्लाह और उस के रसूल को (उन का हुक्म न मान कर) तक्लीफ देते है, अल्लाह तआला उन पर दुनिया और आखिरत में लानत करता है और उन के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब तय्यार कर रखा है ।" [सूर-ए- अहज़ाब : ५७]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	अल्लाह ही रोज़ी तकसीम करते हैं

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : दुनियवी ज़िंदगी में उन की रोज़ी हम ने ही तकसीम कर रखी है और एक को दूसरे पर मर्तबा के एतबार से फज़ीलत दे रखी है, ताके एक दूसरे से काम लेता रहे । [सूर-ए-ज़ुखरुफ़ : ३२]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	कम दर्जे वाले जन्नती का इन्आम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अदना दर्जे का जन्नती वह होगा, जिस के एक हज़ार महल होंगे, हर दो महलों के दर्मियान एक साल के बराबर चलने का फासला होगा, यह जन्नती दूर के महलों को इसी तरह देखेगा जिस तरह करीब के महलों को देखेगा, हर एक महल में खूबसूरत गहेरी सियाह आँखों वाली हूर होंगी और उम्दा बाग और (खिदमत के लिए) लड़के होंगे, जिस चीज़ की भी वह तलब करेगा, उस को पेश कर दी जाएगी ।" [तर्गीब : ५२८०, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (९): कुर्आन से इलाज	मौसमी फलों के फवाइद

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖۤ اِذَاۤ اَثْمَرَ

तर्जमा : जब दरख्त पर फल आए, तो उसे खाओ । [सूर-ए-अन्आम : १४१]

फ़ायदा : मौसमी फलों का इस्तेमाल सेहत के लिए बेहद मुफीद है और बहुत सी बीमारियों से हिफाज़त का ज़रिया भी है ।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अपने बच्चों को सात साल की उम्र में नमाज़ का हुक्म किया करो, दस साल की उम्र में नमाज़ न पढ़ने की वजह से उन्हें मारोऔर इस उम्र में पहुँच कर (बहन भाई को) अलाहिदा अलाहिदा बिस्तरों पर सुलाओ ।" [अबू दाऊद : ४९५, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ؓ]

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — मस्जिदे नब्वी की तामीर

मदीना तैयबा में कयाम के बाद रसूलुल्लाह ﷺ ने सब से पहले एक मस्जिद की तामीर की जिसे (मस्जिदे नब्वी) से जाना जाता है। जहां आप ﷺ का कयाम था उस से मिली हुई दो यतीम बच्चों की ज़मीन थी, आप ﷺ ने इस को मस्जिद के लिए पसंद फर्माया। इन दोनों बच्चों ने उसे मुफ्त पेश करना चाहा; मगर आप ﷺ ने उसे कीमत दे कर खरीदा। रसूलुल्लाह ﷺ और सहाबा ؓ ने अपने हाथों से इस मस्जिद की तामीर की। सहाब-ए-किराम ؓ पत्थर उठा उठा कर लाते और खुशी में शौकिया अशआर पढ़ते और अल्लाह का शुक्र बजा लाते, रसूलुल्लाह ﷺ भी इन के साथ आवाज़ मिलाते और यह पढ़ते : "اَللّٰهُمَّ اِنَّ الْاَجْرَ اَجْرُ الْاٰخِرَةِ فَارْحَمِ الْاَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَةِ"

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! अस्ल उजरत तो आखिरत की उजरत है, ऐ अल्लाह ! अन्सार व मुहाजिरीन पर रहम फर्मा ——— यह मस्जिद इस्लाम की सादगी की सच्ची तस्वीर थी। इस की दीवारें कच्ची थीं, इस के पाए खजूर के तने थे और इस की छत खजूर के पत्ते के थे। मगर इस का इमाम अल्लाह का नबी ﷺ और इस के नमाज़ी सहाब-ए-किराम ؓ जैसी मुकद्दस हस्तियाँ थीं।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — ज़म ज़म का पानी

शहरे मक्का में बैतुल्लाह के करीब हज़ारों साल से ज़मज़म का चश्मा जारी है ; जिस से लाखों करोड़ों इन्सान पानी पीते हैं , हमारे ज़माने में तकरीबन तीस लाख मुसलमान हर साल हज के लिए जाते हैं, हर शख्स ज़म ज़म पीता है और घर लौटते वक्त ज़ियादा से ज़ियादा ले जाने की कोशिश करता है, अरब के मुख्तलिफ शहरों में पहुँचाया जाता है, इस के अलावा साल भर उम्रह करने वालों का हुजूम रहता है । यह अल्लाह तआला की ज़बरदस्त कुदरत है, के आज तक इस में पानी की कमी नहीं हुई; यकीनन यह अल्लाह के खज़ाने से आता है और उस के खज़ाने में किसी चीज़ की कमी नहीं ।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — ज़मीन की पैदावार में ज़कात

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस ज़मीन की सींचाई बारिश, चशमे या नहर के पानी से की जाती हो, उस (की पैदावार) में दसवाँ हिस्सा निकालना फर्ज़ है और जिस की सींचाई (कूएं वगैरह से) रहट (या ट्युबवेल या पंप वगैरह) के ज़रिये की जाती हो, तो उस (की पैदावार) में बीसवाँ हिस्सा निकालना फर्ज़ है।"

[बुखारी : १४८३, अन इब्ने उमर ؓ]

फायदा : जिस तरह माले तिजारत में ज़कात फर्ज़ है, इसी तरह ज़मीन की पैदावार में भी ज़कात फर्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	ईदुल फित्र की नमाज़ से पहले मीठी चीज़ खाना

रसूलुल्लाह ﷺ ईदुल फित्र के दिन ईदगाह जाने से पहले चंद खजूरें तनाउल फर्माते थे और उनकी तादाद ताक होती थी यानी (तीन, पाँच, सात वगैरह)। [बुखारी : १५३, अन अनस बिन मालिक ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	किसी को कपड़ा पहनाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स किसी को कपड़ा पहनाए, तो जब तक वह कपड़ा उस के बदन पर रहेगा, पहनाने वाला अल्लाह तआला की हिफाज़त में रहेगा।"

[मुस्तदरक : ७४२२, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	सूद की नहूसत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "सूद के सत्तर गुनाह हैं : सब से कमतर दर्जा ऐसा है, जैसे कोई शख्स अपनी माँ के साथ ज़िना करे।" [इब्ने माजा : २२७४, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया, आखिरत के मुकाबले में

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह की कसम ! दुनिया आखिरत के मुकाबले में इतनी सी है, के तुम में से कोई अपनी उंगली समुंदर में डाले, फिर निकाले और देखे के उस उंगली पर कितना पानी लगा है।" [मुस्लिम : ७१९७, अन मुस्तौरिद ؓ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	अहले जन्नत के लिए हूरें

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : उन अहले जन्नत के पास नीची निगाह रखने वाली, बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरें होंगी, वह हूरें सफाई में ऐसी होंगी, गोया वह छुपे हूए अंडे हैं।

[सूर-ए- साफ़्फ़ात : ४८ ता ४९]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	खाने के बाद उंगलियाँ चाटना

रसूलुल्लाह ﷺ जब खाना खा लेते तो अपनी तीनों उँगलियों को चाटते।

[मुस्लिम: ५२९६, अन कअब बिन मालिक ؓ]

फ़ायदा : अल्लामा इब्ने कय्यिम رحمه الله कहते हैं के खाना खाने के बाद उंगलियाँ चाँटना हाज़मे के लिए इन्तेहाई मुफीद है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : बेशक अल्लाह और उस के फरिश्ते हुज़ूर ﷺ पर रहमत भेजते हैं। ऐ ईमान वालो ! तुम भी उन पर दुरुद और सलाम भेजा करो। [सूर-ए- अहज़ाब : ५६]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२४ रमज़ानुल मुबारक

नंबर १: इस्लामी तारीख — ग़ज़व-ए-बद्र

जब मुसलमान हिजरत कर के मदीना चले गए और खुश गवार माहौल में लोगों को इस्लाम की दावत देनी शुरू की और दूर दूर इस का चर्चा होने लगा, तो लोग इस्लाम में दाखिल होने लगे, चुनांचे मुसलमानों की इस बढ़ती हुई तादाद को देख कर कुफ़्फ़ारे मक्का अपने लिए खतरा महसूस करने लगे, इस लिए उन्हों ने मुसलमानों को सफह-ए-हस्ती से मिटाने के लिए एक तिजारती काफले को अबू सुफियान की सरपरस्ती में सरमाया लगा कर मुल्के शाम भेजा, ताके उस की आमदनी से भारी जंगी साज़ व सामान खरीद कर मुसलमानों से फैसला कुन जंग की जाए। जब रसूलुल्लाह ﷺ को यह खबर मिली के अबू सुफियान एक बड़े तिजारती काफले को ले कर शाम से मक्का वापस आ रहा है, जिस में जंगी सामान भी है, तो आप ﷺ ने सहाबा को आगे बढ़ कर उस काफले को रोकने का हुक्म दिया। मुसलमानों की इस पेश कदमी की खबर मिलते ही अबू सुफियान ने मदद के लिए कुरैशे मक्का को इत्तिला दी, इस खबर को सुनते ही कुरैशे मक्का एक बड़ा लश्कर ले कर मुकाबले के लिए निकल पड़े, अबू सुफियान हालात को समझते हूए रास्ता बदल कर अपने तिजारती काफले के साथ साहिली रास्ते से मक्का पहुँच गया, इधर कुरैशे मक्का और मुसलमानों के लशकर का, मैदाने बद्र में आमना सामना हुआ, जिस के नतीज़े में जंगे बद्र का वाकिआ पेश आया।

नंबर २: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — सुतून का रोना

रसूलुल्लाह ﷺ मस्जिदे नब्वी में खजूर के एक सुतून से सहारा लगा कर खुतबा दिया करते थे, बाद में जब मिम्बर तैयार हो गया और रसूलुल्लाह ﷺ जुमा के दिन जब खुतबा देने के लिए मिम्बर पर तशरीफ ले गए, तो वह सुतून बच्चों की तरह रोने लगा, रसूलुल्लाह ﷺ मिम्बर से उतरे और उस को अपने बदन से चिमटाया, तो वह बच्चों की तरह सिसकने लगा, रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: यह सुतून हमेशा ज़िक्र (यानी खुतबा) सुना करता था, अब जो न सुना, तो रोने लगा।

[बुखारी : ३५८४, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه]

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — रुकू व सजदा अच्छी तरह न करने पर वईद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: बदतरीन चोरी करने वाला शख़्स वह है जो नमाज़ में से भी चोरी करले, सहाबा رضي الله عنهم ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! नमाज़ में से किस तरह चोरी करेगा? फर्माया: वह रुकू और सजदा अच्छी तरह से नहीं करता है।

[इब्ने खुज़ैमा : ६६३, अन अबी कतादह رضي الله عنه]

नंबर ४: एक सुन्नत के बारे में — शादी के मौके पर दुआ देना

जब कोई शादी करता तो रसूलुल्लाह ﷺ उस को मुबारक बादी पर यह दुआ देते:

((بَارَكَ اللهُ لَكَ وَبَارَكَ عَلَيْكَ وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِي خَيْرٍ))

तर्जमा : अल्लाह तुम्हारी शादी मुबारक करे और तुम पर बरकतें नाज़िल फर्माए और खैर व खूबी के साथ तुम्हारे दर्मियान मुहब्बत पैदा फर्माए। [अबू दाऊद : २१३०, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | अखीर रात में इबादत करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हर रात में जब रात का आखरी तिहाई हिस्सा बाक़ी रह जाता है, तो अल्लाह तआला पहले आसमान पर तशरीफ़ लाते हैं और यह एलान करते हैं,के कौन है, जो मुझ से दुआ मांगे और मैं उस की दुआ क़बूल करूँ और कौन है जो मुझ से सवाल करे और मैं उस को अता करूँ और कौन है जो मुझ से मग़फ़िरत तलब करे और मैं उस को माफ़ करुं।" [अबू दाऊद : १३१५, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | अल्लाह की आयतों को न मानना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : हर उस झूटे गुनहगार के लिए बड़ी तबाही होगी जोअल्लाह की आयतों को सुनता है, जब वह उस के सामने पढ़ी जाती है, फिर भी वह तकब्बुर करता हुआ (अपने कुफ्र पर इसी तरह) अड़ा रहता है गोया उसने उन आयतों को सुना ही नही, तो आप ऐसे शख़्स को दर्द नाक अज़ाब की खबर सुना दीजिए। [सूर-ए-जासिया : ७ता ८]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | जो कुछ खर्च करना है दुनिया ही में कर लो

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है: "हम ने तुम को जो कुछ दिया है, उस में से खर्च करो, इस से पहेले के तुम में से किसी को मौत आ जाए और फिर (मौत को देख कर) कहने लगे के ऐ मेरे रब ! तूने मुझ कोऔर थोड़े दिनों की मोहलत क्यों न दी? ताके खूब खर्च कर के नेक लोगों में शामिल हो जाता।" [सूर-ए- मुनाफिक़ून : १०]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | जन्नती औरत की खूबसूरती

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अगर जन्नत की कोई औरत ज़मीन वालों की तरफ झांक ले, तो जमीन व आस्मान के दर्मियान तमाम चीज़ों को रौशन कर देऔर उस को खुशबू से भर दे और उस के सर की ओढनी दुनिया और तमाम चीज़ों से बेहतर है।" [बुखारी : २७९६, अन अनस बिन मालिक ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | दर्द सर से हिफाज़त

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : हम्माम (गुस्ल ख़ाना) से निकलने के बाद क़दमों को ठंडे पानी से धोना दर्द सर से हिफाज़त का ज़रिया है। [कंज़ुल उम्माल : २७२९६, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो बन्दा यह चाहता है के अल्लाह तआला रंज व मुसीबत के वक्त उस की दुआ कबूल करे, तो उस को चाहिए के आराम व राहत में भी खूब से दुआ किया करे।" [तिर्मिज़ी : ३३८२, अन अबी हुरैरह ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२५) रमज़ानुल मुबारक

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — ग़ज़वा-ए-बद्र में मुसलमानों की फतह

कुरैशे मक्का ने मदीना पर हमला करने और अबू सुफियान के काफले की हिफाज़त के लिए एक हज़ार पर मुश्तमिल लश्कर और जंगी सामान से लैस हो कर मैदाने बद्र में पानी के चश्में के पास पड़ाव डाला, दूसरी तरफ हुज़ूर ﷺ सतरह रमज़ानुल मुबारक सन २ हिजरी में सहाब-ए-किराम ؓ को ले कर मैदाने बद्र पहुँच गए, मुसलमानों की तादाद तीन सौ तेरह या कुछ ज़ाइद थी, उन के पास सिर्फ सतरह ऊँट, दो घोड़े और आठ तलवारें थीं, मगर मुसलमान अपनी तादाद की कमी और बे सरो सामानी के बावजूद शहादत के शौक में बहादुरी के जौहर दिखाने के लिए बेताब थे, हुज़ूर ﷺ सहाबा की सफें दुरुस्त फर्मा कर खेमे में तशरीफ ले गए और सजदे की हालत में दुआ फर्माई "ऐ अल्लाह ! अगर आज तू ने इस मुट्ठी भर जमात को हलाक कर दिया तो रूए ज़मीन पर तेरी इबादत करने वाला कोई नही रहेगा" अल्लाह तआला ने आप की इस दुआ की बरकत और सहाबा की जाँ निसारी की बदौलत मुसलमानों को शानदार कामयाबी अता फर्माई। कुफ्फारे मक्का में से उतबा, शैबा, अबू जहल, उमय्या बिन खल्फ जैसे बड़े बड़े सत्तर काफिर मारे गए और सत्तर कैद कर लिए गए, जब के मुसलमानों में भी चौदह सहाब-ए-किराम ؓ शहीद हुए।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — एक अजीब परिंदा

"बया" नामी एक छोटा सा परिंदा है, जो ऊँचे ऊँचे दरख्तों पर अपना घोंसला बनाता है, इस का घोंसला सुराही की तरह हर तरफ से बंद हेता है, सिर्फ एक तरफ से जाने का रास्ता होता है, इस में बारिश का एक क़तरा पानी भी नही जा सकता, इस घोंसले में अपनी सारी ज़रूरतें पूरी करने का अलग अलग इन्तेज़ाम करता है, यहाँ तक के रौशनी का इन्तेज़ाम इस तरह करता है, के हर दिन एक जुगनू पकड़ कर लाता है और उस को घोंसले में फंसा देता है और वह जुगनू रात भर रौशनी देता रहता है, गौर कीजिए के वह कौन है, जिस ने एक छोटे से परिंदे को, इन्सानों की तरह ऐसे हुनर व फन अता किए। यह सब अल्लाह की कुदरत का नमूना है ।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — हज की फर्ज़ियत

रसूलुल्लह ﷺ ने फर्माया : ऐ लोगों ! "तुम पर हज फर्ज़ कर दिया गया है, लिहाज़ा उस को अदा करने की फिक्र करो ।" [मुस्लिम : ३२५७, अन अबी हुरैरह ؓ]

फ़ायदा : जो कोई अपने घर के नान व नफ़्क़े के अलावा हज करने पर कुदरत रखता हो, तो ऐसे शख़्स पर हज करना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — ईदगाह एक रास्ते से जाना, दूसरे से आना

रसूलुल्लाह ﷺ ईदगाह एक रास्ते से तशरीफ ले जाते और दूसरे रास्ते से तशरीफ़ लाते। [अबू दाऊद : ११५६, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	किसी को खिलाने पिलाने का इन्आम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स अपने (मुसलमान) भाई को खाना खिलाए हत्ता के उस को सैर करादे और उस को पानी पिलाए, यहां तक के उस की प्यास बुझा दे, तो अल्लाह तआला उस को जहन्नम से सात खंदकें दूर कर देंगे, जिन में से हर दो खंदकों के दर्मियान पाँच सौ साल की दूरी होगी।"

[मुस्तदरक : ७१७२, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	माल जमा करने का वबाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स अपने पीछे खज़ाना छोड़ जाए, तो वह खज़ाना एक गंजा दो नुक़्ते वाला सांप बन कर कयामत के दिन उस शख्स के पीछे लग जाएगा। वह शख्स घबरा कर कहेगा : तू क्या बला है? वह कहेगा : मैं तेरा खज़ाना हुँ, जिस को तू छोड़ कर आया था, फिर वह सांप उस के हाथ को खा लेगा, फिर सारे बदन को खाएगा।"

[सहीह इब्ने हिब्बान : ३३२६, अन सोबान ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	आदमी का दुनिया में कितना हक है?

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "इब्ने आदम को दुनिया में सिर्फ़ चार चीजों के अलावा और किसी की ज़रुरत नहीं : (१) घर : जिस में वह रहता है। (२) कपड़ा : जिस से वह सतर छुपाता है। (३) खुश्क रोटी। (४) पानी।"

[तिर्मिज़ी : २३४१, अन उस्मान बिन अफ़्फ़ान ؓ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	अहले जहन्नम पर दर्दनाक अज़ाब

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : बेशक ज़क्कूम का दरख्त बड़े मुजरिम का खाना होगा, जो तेल की तलछट जैसा होगा, वह पेट में तेज़ गर्म पानी की तरह खौलता होगा (कहा जाएगा) इस गुनहगार को पकड़ लो और घसीटते हुए दोज़ख के बीच में ले जाओ, फिर उस के सर पर तकलीफ देने वाला खौलता हुआ पानी डालो (फिर कहा जाएगा) अज़ाब का मज़ा चख ! तू अपनेआप को बड़ी इज़्ज़त व शान वाला समझता था, यही वह अज़ाब है जिस के बारे में तुम शक किया करते थे।

[सूर -ए-दुख़ान : ४३ ता ५०]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	सूरह-ए-फातिहा से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : सूर-ए-फातिहा हर मर्ज़ की दवा है।

[सुनने दार्मी : ३४३३, अन अब्दुल मलिक बिन उमैर ؓ]

फ़ायदा : अल्लामा इब्ने कय्यिम رحمہ اللہ फर्माते हैं : अगर जिस्म में कहीं दर्द हो, तो दर्द की जगह हाथ रख कर सात मर्तबा "सूर-ए-फ़ातिहा" पढे इन्शाह अल्लाह आराम मिलेगा।

[तिब्बे नब्वी]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ ईमान वालो ! अगर कोई गुनहगार तुम्हारे पास कोई खबर ले कर आए, तो उस की तहकीक कर लिया करो कहीं ऐसा न हो, के तुम किसी कौम को अपनी ला इल्मी से कोई नुक्सान पहुँचा दो, फिर तुम को अपने किए पर पछताना पड़े।

[सूर-ए-हुजरात : ६]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२६) रमज़ानुल मुबारक

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — ग़ज़व-ए-उहुद

बद्र की शिकस्त से कुरैशे मक्का के हौसले तो पस्त हो गए थे, मगर उन में गम व गुस्से की आग भड़क रही थी, उस आग ने उन को एक दिन भी चैन से बैठने न दिया, एक साल तो उन्हों ने किसी तरह गुज़ारा, मगर अगले ही साल सन ३ हिजरी में तीन हज़ार आदमियों का एक बड़ा लश्कर मक्का से रवाना हुआ और मदीना पहुँच कर उहुद पहाड़ के पास अपना पड़ाव डाला। रसूलुल्लाह ﷺ भी शव्वाल सन ३ हिजरी में जुमा की नमाज़ पढ कर एक हज़ार का लश्कर ले कर उहुद पहाड़ की तरफ रवाना हुए, मगर ऐन वक्त पर मुनाफिकों ने धोका दिया और अब्दुल्लाह बिन उबइ तीन सौ आदमियों को ले कर वापस हो गया, अब सिर्फ सात सौ मुसलमान रह गए। उहुद के मकाम पर लड़ाई शुरू हुई और दोनों जमातें एक दूसरे पर हमला आवर हुई, इस जंग में मुसलमानों को शुरू में फ़तह हुई मगर एक गलती की वजह से इस लड़ाई में सत्तर सहाब-ए-किराम رضي الله عنهم को जामे शहादत नोश करना पड़ा और रसूलुल्लाह ﷺ का एक दांत भी इस लड़ाई में शहीद हो गया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — आप ﷺ की उंगलियों से पानी जारी होना

हज़रत जाबिर رضي الله عنه फ़र्माते हैं : सुलहे हुदैबिया के दिन सहाबा प्यासे हो गए, रसूलुल्लाह ﷺ के सामने एक पानी का प्याला रखा था, आप ﷺ ने वुज़ू फर्माया, फिर (बचे हुए पानी) की तरफ लोग लपके, रसूलुल्लाह ﷺ ने पूछा : क्या हुआ? उन्हों ने अर्ज़ किया : न हमारे पास पीने को पानी है और न वुज़ू करने को, बस यही पानी है जो आप ﷺ के सामने रखा है । आप ﷺ ने अपना हाथ प्याले में रख दिया, पानी आप ﷺ की उंगलियों में से चश्मे की तरह उबलने लगा, हम ने पिया और वुज़ू भी किया, उन से पूछा गया : कितने आदमी थे, फर्माया : पन्द्रह सौ थे और अगर एक लाख होते तब भी काफी हो जाता।

[बुखारी : ३५७६]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — बीमार की नमाज़

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "नमाज़ खड़े हो कर अदा करो; अगर ताकत न हो तो बैठ कर अदा करो और अगर इस पर भी कुदरत न हो, तो पहलू के बल लेट कर अदा करो।"

[बुखारी : १११७, अन इमरान बिन हुसैन رضي الله عنه]

फ़ायदा : अगर कोई बीमार हो और खड़े होने पर कादिर न हो, तो रुकू व सजदा के साथ बैठ कर पढे;अगर रुकू व सजदे पर भी कादिर न हो, तो इशारे से पढे और अगर बैठ कर पढने की ताकत न रखता हो, तो लेट कर पढे।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — बीवी से मुलाकात के वक्त की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब कोई शख़्स अपनी बीवी के पास (तन्हाई में) आए और यह दुआ पढे : ((بِسْمِ اللهِ، اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا)) **तर्जमा :** अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, ऐ अल्लाह ! हमें शैतान से बचा और जो औलाद हमें दे उस की भी शैतान से हिफाज़त फर्मा। (जब यह दुआ पढ लेगा) तो उस के बाद जो औलाद पैदा होगी शैतान उस को कभी नुक्सान नहीं पहुँचा सकता।"

[बुखारी : १४१, अन इब्ने अब्बास رضي الله عنه]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — मुसलमान की ज़रुरत पूरी करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : मुसलमान मुसलमान का भाई है, लिहाज़ा न उस पर ज़ुल्म करे और न उस को बेयार व मददगार छोड़ दे, जो शख्स अपने भाई की ज़रुरत (पूरी करने) में लगा रहे, अल्लाह तआला उस की ज़रुरत (को पूरी करने में) लगे रहते हैं और जो शख्स किसी मुसलमान से एक परेशानी को दूर करेगा, अल्लाह तआला कयामत के दिन उस की परेशानी को दूर कर देगा और जो किसी मुसलमान के ऐब को छुपाएगा, तो अल्लाह तआला कयामत के दिन उस के ऐब को छुपाएगा।

[अबू दाऊद : ४८९३]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में — नाप तौल में कमी करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "बड़ी बरबादी है नाप तौल में कमी करने वालों के लिए के जब लोगों से (कोई चीज़) नाप कर लेते हैं, तो पूरा भर कर लेते हैं और जब लोगों को (कोई चीज़) पैमाने से नाप कर या वज़न कर के देते हैं तो (उस में) कमी कर देते हैं ।" [सूर-ए-मुतफ्फिफ़ीन : १ ता ३]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में — दुनिया की मुहब्बत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "यह लोग दुनिया से मुहब्बत रखते हैं और अपने आगे आने वाले एक भारी दिन को छोड़ बैठे हैं।" (यानी दुनिया की मुहब्बत ने ऐसा अंधा कर रखा है, के क़यामत के दिन की न तो कोई फिक्र है और न ही कोई तय्यारी है ; हालांके दुनिया में आने का मकसद ही आखिरत के लिए तय्यारी करना है)।

[सूर-ए-दहर : २७]

नंबर (८) : आखिरत के बारे में — काफिर व गुनहगार को क़ब्र में अज़ाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह तआला (गुनहगार और काफिर पर कब्र में) सत्तर अज़दहे मुसल्लत कर देता है, अगर उन में से एक भी अज़दहा ज़मीन पर फुंकार मार दे, तो कयामत तक ज़मीन कुछ भी नहीं उगाएगी, (कब्र में) कयामत के दिन तक वह अज़दहे उसे नोचते और डंक मारते रहेंगे।"

[तिर्मिज़ी : २४६०, अन अबी सईद رضي الله عنه]

नंबर (९) : कुर्आन से इलाज — गुर्दे की बीमारियों का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "पहलू के दर्द का सबब गुर्दे की नस है, जब वह हरकत करती है तो इन्सान को तकलीफ होती है और उस का इलाज गर्म पानी और शहद से करो ।"

[मुस्तदरक हाकिम : ८२३७, अन आयशा رضي الله عنها]

फ़ायदा : गुर्दे में जब पथरी वगैरह हो जाती है तो कूल्हों में दर्द होता है बलके अकसर उसी दर्द ही की वजह से बीमारी का पता चलता है, उस का इलाज आप ﷺ ने यह बतलाया के गरम पानी और शहद मिला कर पियो।

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "अल्लाह तआला रात के अखीर हिस्से में बन्दे से बहुत ज़ियादा करीब होते हैं , अगर तुम से हो सके तो उस वक्त अल्लाह तआला का ज़िक्र किया करो ।"

[मुस्तदरक हाकिम : ११६२, अन अम्र बिन अबसा رضي الله عنه]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — फतहे मक्का

रसूलुल्लाह ﷺ ने सुलहे हुदैबिया में मुशरिकीने मक्का से जो मुआहदा किया था उन्हों ने उस की खिलाफ वर्ज़ी करते हुए बनु बक्र के साथ मिल कर मुसलमानों के हलीफ कबील-ए-बनू खुज़ाआ पर हमला किया, हरम में पनाह लेने के बावजूद भी उन्हें कत्ल किया, जब हुज़ूर ﷺ को उन की बद अहदी और कत्ल व गारत गरी का हाल मालूम हुआ, तो आप ﷺ २१ रमज़ान सन ८ हिजरी को दस हज़ार सहाब-ए-किराम का अज़ीमुश्शान लश्कर ले कर फातेहाना शान से मक्का में दाखिल हुए, अहले मक्का ने जो ज़ुल्म व सितम तेरह साला दौर में हुज़ूर ﷺ और सहाबा पर ढाया था, आज वह यह सोच रहे थे के हम से हर एक ज़ुल्म का बदला लिया जाएगा, मगर रहमते आलम ﷺ के अफ़्व व दर गुज़र का हाल देखिए के जिन दुश्मनों ने आप को गालियाँ दी थीं, रास्ते में काँटे बिछाए थे, जिस्मे अतहर पर नमाज़ की हालत में गंदगी डाली थी, आप को दीवाना व पागल कहा था, हत्ता के आप को महबूब वतन मक्का छोड़ने पर मजबूर किया और हिजरत के बाद भी मदनी ज़िंदगी में आप के साथ जंग करते रहे और आप के क़त्ल की साज़िशें करते रहे, मगर कुर्बान जाइए के हुज़ूर ﷺ ने ऐसे तमाम ज़ालिम दुश्मनों के हक़ में आम माफी का एलान फर्मा दिया, आप के इस रहम व करम को देख कर बहुत से लोग इस्लाम में दाखिल हो गए। मोहसिने इन्सानियत ने अपने जानी दुश्मन के साथ जिस हुस्ने सुलूक, अच्छे अख्लाक़ और रहम व करम का मामला किया, क्या दुनिया की तारीख इस की मिसाल पेश कर सकती है? हरगिज़ नहीं।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — पहाड़ों से चश्मे का जारी होना

ज़मीन पर बड़े बड़े पहाड़ हैं, जिन को अल्लाह तआला ने सख्त पत्थरों से बनाया है, यह जमीन से सैकड़ों और हज़ारों फिट ऊंचे होते हैं, अगर सोचा जाए, तो वहां पानी का नाम व निशान भी नहीं होना चाहिए , लेकिन यह अल्लाह तआला की बड़ी अनोखी कुदरत है, के वह हजारों फिट ऊंचे पत्थरों से पानी के साफ व शफ्फ़ाफ़ चश्मे जारी कर देता है और यह चश्मे धीरे धीरे बढते रहते हैं, यहां तक के वह पहाड़ों से निकल कर नदियों और नहरों की शक्ल में जारी हो जाते हैं। यह अल्लाह की कुदरत है के सख्त तरीन पत्थरों के दर्मियान से पानी का चश्मा जारी कर देते हैं।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सदक़-ए-फित्र

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنه बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने बे हयाई और फुज़ूल बातों से रोज़े की सफाई और गरीबों के खाने के इन्तेज़ाम के लिए सदक-ए-फित्र को वाजिब करार दिया है।

[अबू दाऊद : १६०९]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — जुमा और इदैन के लिए गुस्ल करना

आप ﷺ जुमा, ईदैन और अरफा के दिन गुस्ल फर्माते थे।

[मुसनदे अहमद : १६२७९, अन फाकेह बिन सअद رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	बेटियों की अच्छी तरह पर्वरिश करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिस मुसलमान की दो बेटियाँ हों और उस ने उन के साथ अच्छा बर्ताव किया, तो यही बेटियाँ उस को जन्नत में दाखिल कराएँगी।" [इब्ने माजा : ३६७०, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

फ़ायदा : यहां दो बेटियों का ज़िक्र है, दूसरी हदीसों में एक या दो से ज़ाइद बेटियों का भी ज़िक्र आया है, इस से मालूम हुआ जितनी भी हो उन की अच्छी तर्बियत करनी चाहिए। इस पर अल्लाह ने बड़ा इन्आम रखा है।

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	नमाज़ छोड़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स जान बूझ कर नमाज़ छोड़ देता है, अल्लाह तआला उस के सारे आमाल बे कार कर देता है और अल्लाह का ज़िम्मा उस से बरी हो जाता है जब तक के वह अल्लाह से तौबा न कर ले।" [तर्गीब व तर्हीब : ७८३, अन उमर बिन खत्ताब ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की मुहब्बत हलाक करने वाली है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "खूश हो जाओ और अपने मतलूब की उम्मीद रखो ! अल्लाह की कसम ! मुझे तुम्हारे मोहताज होने का अन्देशा नही, मुझे तो इस बात का अन्देशा है, कहीं तुम पर दुनिया खोल न दी जाए, जिस तरह तुम से पहलों पर खोली गई थी, पस तुम इस में इस तरह रगबत ज़ाहिर करने लगो, जिस तरह उन लोगों ने की थी और वह दुनिया तुम्हें इस तरह हलाक कर दे, जिस तरह उन को किया था।" [बुखारी : ४०१५, अन अम्र बिन औफ ﷺ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	अहले जन्नत के उम्दा फर्श

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : (अहले जन्नत) सब्ज़ रंग के नक्श व निगार वाले फर्शों और उम्दा कॉलीनों पर तकिया लगाए बैठे होंगे। [सूर-ए- रहमान : ७६]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	सब से उम्दा गिज़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "बेहतरीन गिज़ा मौसम का पहला फल है।"

[कंज़ुल उम्माल : २८२९०, अन अनस ﷺ]

फ़ायदा : यूँ तो मेवा और मौसमी फल सेहत को बरकरार रखने और मौसमी बीमारियों से बचने का अहेम नुस्खा है, मगर मौसम का पहला फल गिज़ा के ऐतबार से सब से उम्दा होता है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "मुसलमान आपस में एक दूसरे के भाई हैं, (अगर इन के दर्मियान लड़ाई हो जाए) तो अपने दो भाईयों के दर्मियान सुलह करा दिया करो और अल्लाह से डरते रहा करो, ताके तुम पर रहम किया जाए"। [सूर-ए-हुजरात : १०]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२८) रमज़ानुल मुबारक

नंबर (१): इस्लामी तारीख — इस्लाम में पहला हज

हज इस्लाम के पाँच अर्कान में से एक रुक्न है जो सन ९ हिजरी में फर्ज़ किया गया। लिहाज़ा इस फरीज़े की अदायगी के लिए इसी साल रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक 🙉 को अमीरे हज बनाया और मुसलमानों को हज कराने की ज़िम्मेदारी सुपुर्द की। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक 🙉 के साथ मदीना से तीन सौ आदमीयों का काफला हज के लिए रवाना हुआ। इसके बाद रसूलुल्लाह ﷺ के हुक्म से हज़रत अली 🙉 भी रवाना हुए और कुर्बानी के रोज़ जब सब लोग मिना में जमा थे, एलान फर्माया : जन्नत में कोई काफिर दाखिल नहीं होगा और इस साल के बाद कोई मुशरिक हज नही कर सकता और कोई शख्स (जाहिली रस्म के मुताबिक) नंगा हो कर तवाफ नही कर सकता। इस्लाम में यह पहला फर्ज़ हज था जिस के अमीर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक 🙉 और खतीब हज़रत अली 🙉 थे।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — दरख्त का मुहम्मद ﷺ की गवाही देना

हज़रत इब्ने उमर 🙉 फर्माते हैं के हम एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ के साथ सफ़र में थे के एक देहाती आप ﷺ की खिदमत में आया, तो आप ﷺ ने फ़र्माया : तुम गवाही दो, इस बात की के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और उस का कोई शरीक नही और मुहम्मद ﷺ उस के बन्दे और रसूल हैं, तो वह कहने लगा, तुम्हारी इस बात पर गवाह कौन है? रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: यह सलम का दरख्त। वह दरख्त मैदान के किनारे पर था, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने उस को बुलाया, तो वह ज़मीन को चीरता हुआ आप ﷺ के सामने खड़ा हो गया, रसूलुल्लाह ﷺ ने उस से तीन मर्तबा गवाही चाही, तो उस ने तीन मर्तबा गवाही दी के आप ﷺ सच्चे रसूल हैं, फिर वह अपनी जगह चला गया।

[सुनने दार्मी : १६, अन इब्ने उमर 🙉]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — बगैर किसी उज़्र के नमाज़ कज़ा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: "जो शख्स दो नमाज़ों को बगैर किसी उज़्र के एक वक्त में पढ़े वह कबीरा गुनाहों के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े पर पहुँच गया।"

[मुस्तदरक : १०२०, अन इब्ने अब्बास 🙉]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — फक़ीरी और कुफ्र से पनाह मांगने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ इस दुआ को पढ कर कुफ्र और फक्र से पनाह मांगते :

((اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ)) तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं कुफ्र, फक्र व फाका और कब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ।

[नसई : ५४६७, अन मुस्लिम बिन अबी बकरा 🙉]

नंबर (५): *एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत*	ईद की रात इबादत करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स ईदुल फित्र और ईदुल अज़हा की दोनों रातों को जाग कर अल्लाह तआला की इबादत करेगा तो क़यामत के दिन उस का दिल ज़िन्दा रहेगा के जिस दिन लोगों के दिल मुर्दा हो जाएँगे।" [इब्ने माजा : १७८२, अन अबी उमामा ؓ]

फ़ायदा : ईदुल फित्र की रात अल्लाह तआला की इबादत और पूरे रमज़ान का इनाम लेने की रात है, इस लिये इस रात में आतिश बाज़ी और पटाख़े वग़ैरा से परहेज़ करना चाहिये जो के ग़ैरों का काम है।

नंबर (६): *एक गुनाह के बारे में*	नमाज़ में सुस्ती करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐसे नमाज़ियों के लिए बड़ी खराबी है, जो अपनी नमाज़ों की तरफ़ से गफ़लत व सुस्ती बरत्ते हैं, जो सिर्फ रियाकारी करते हैं। [सूर-ए-माऊन : ४ ता ६]

नंबर (७): *दुनिया के बारे में*	माल व दौलत आज़माइश की चीज़ें हैं

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : (जब अल्लाह तआला) इन्सान को आज़माता है तो उस को (ज़ाहिरन माल व दौलत दे कर) उस का इकराम करता है तो वह (बतौरे फख्र) कहने लगता है, के मेरे रब ने मेरी कद्र बढ़ा दी। (हालांके यह उस की तरफ से इस की आज़माइश का ज़रिया है)।

[सूर-ए-फज्र : १५]

नंबर (८): *आखिरत के बारे में*	कयामत में तीन किस्म के लोग

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "कयामत के दिन जहन्नम से एक गर्दन निकलेगी, जिस की दो देखने वाली आँखें, दो सुनने वाले कान और एक बोलने वाली ज़बान होगी, वह कहेगी : तीन किस्म के लोग मेरे सुपुर्द किए गए हैं : (१) हर मगरुर हक जान कर रुगरदानी करने वाला। (२) अल्लाह के साथ किसी और को खुदा समझ कर पुकारने वाला। (३) तस्वीर बनाने वाला।" [शोअबुल ईमान : ६०८४, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (९): *तिब्बे नब्वी से इलाज*	हर किस्म के दर्द का इलाज

हज़रत इब्ने अब्बास ؓ फर्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ सहाब-ए- किराम को हर किस्म के दर्द से नजात हासिल करने के लिए यह दुआ सिखाते थे :

((بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ، أَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ مِنْ شَرِّ كُلِّ عِرْقٍ نَعَّارٍ، وَمِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ))

[तिर्मिज़ी : २०७५]

नंबर (१०): *नबी ﷺ की नसीहत*	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "ऐ अली ! तीन काम वह हैं जिन में ताख़ीर न करो। (१) नमाज़, जब उस का वक्त आ जाए। (२) जनाज़ा, जब तैयार हो जाए। (३) बेशौहर वाली औरत का निकाह, जब उस के लिए कोई मुनासिब जोड़ मिल जाए।" [तिर्मिज़ी : १७१, अन अली बिन अबी तालिब ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(२१) रमज़ानुल मुबारक

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज्जतुल विदा में हुज़ूर ﷺ का तारीखी खुत्बा

९ ज़िल हिज्जा सन १० हिजरी को जुमा के दिन अरफात के मैदान जिस में कम व बेश एक लाख चौबीस हज़ार सहाब-ए-किराम ؓ मौजूद थे, रसूलुल्लाह ﷺ ने एक अलविदाई और तारीखी खुत्बा दिया। जिस में आप ﷺ ने फर्माया : गौर से सुनो ! तुम्हारा एक माबूद है और तुम एक बाप हज़रत आदम ؑ की औलाद हो। सब मुसलमान भाई भाई हैं, किसी को किसी पर बड़ाई हासिल नही, मगर जिन के आमाल नेक हों। और सुनो ! औरतों के बारे में अल्लाह से डरते रहना, तुम दोनों का एक दूसरे पर हक है । तुम्हारा खून और तुम्हारा माल एक दूसरे पर हराम है। देखो ! मेरे बाद गुमराह न हो जाना के एक दूसरे को कत्ल करने लगो। मेरे बाद तुम्हारे लिए खुदाए तआला की किताब और मेरी पैरवी सीधा रास्ता है, अगर इस पर मज़बूती से कायम रहोगे, तो कभी गुमराह न होगे। फिर आप ﷺ ने फर्माया : लोगो ! क्या मैं ने तुम को अपने रब का पैगाम पूरा पूरा पहुँचा दिया? लोगो ने अर्ज़ किया: बेशक आप ﷺ ने पूरा पूरा पैगाम पहुँचा दिया। आप ﷺ ने शहादत की उंगली आस्मान की तरफ उठाई और तीन मर्तबा फर्माया : "ऐ अल्लाह ! तू गवाह रहना"। खुत्बे के बाद आप ﷺ ज़िक्रे इलाही में मशगूल हो गए और हज के अर्कान मुकम्मल कर के मदीना वापस हूए।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — बरमोडा का अजीब व गरीब समंदर

अल्लाह तआला ने समंदर में एक ऐसी जगह बनाई है जिसे " बहीर-ए-बरमोडा मुसल्लस " कहते हैं, इस समंदरी इलाके के मुतअल्लिक बड़ी अजीब बात यह है, के इस में कोई हवाई जहाज़,पानी का जहाज़ वगैरह जाता है, तो वह गायब हो जाता है। कई दफा तो ऐसा हुआ के इस के पास से गुज़रने वाले जहाज़ में आग लग गई,जिस से वह जल कर राख हो गया, अब तक तकरीबन पाँच सौ इक्कीस (५२१) हवाई जहाज़ इस समंदरी इलाके के ऊपर से गुज़रते हुए अचानक जल कर तबाह हो गए, दुनिया के साईंसदां आज तक यह तहकीक न कर सके, फ़लकी सय्यारचे (Satelite) के ज़रिये जो तसवीर ली गई इस मे सिर्फ़ कुहरा नज़र आता है, आखिर दुनिया के इस हिस्से में क्या है ? यकीनन इन्सान को अल्लाह की कुदरत के आगे घुटने टेकने ही पढ़ते हैं और यह मान्ना ही पड़ता है के पूरी काइनात का चलाने वाला अल्लाह है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सदक-ए-फित्र किस पर वाजिब है

रसूलुल्लाह ﷺ ने हर बड़े छोटे,मर्द व औरत ,आज़ाद व गुलाम मुसलमानों पर एक साअ खजूर या एक साअ जौ सदक-ए-फित्र वाजिब करार दिया है और नमाज़े ईद से पहले उस की अदायगी का हुक्म दिया है।

[बुखारी : १५०३, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — तकबीर कहते हुए ईद गाह जाना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ फर्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ईदुल फित्र के दिन घर से निकल

कर ईद गाह जाते हुए (रास्ते में) तक्बीर पढ़ा करते थे। (तक्बीर यह है: اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ) [सुनने दारे कुत्नी : १७३३]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | इन्आम की रात

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जब ईदुल फ़ित्र की रात होती है तो उस का नाम आसमानों पर लैलतुल जाइज़ह (यानी इन्आम की रात) से लिया जाता है और जब ईद की सुबह होती है तो हक़ तआला शानुहू फ़रिश्तों को तमाम शहरों में भेजते हैं, वह ज़मीन पर उतर कर तमाम गलियों, रास्तों के सिरों पर खड़े हो जाते हैं और ऐसी आवाज़ से जिस को जिन्नात और इन्सान के अलावा हर मख़्लूक़ सुनती है। पुकारते हैं के ऐ मुहम्मद ﷺ की उम्मत उस करीम रब की बारगाह की तरफ़ चलो जो बहुत ज़ियादा अता फ़र्माने वाला है और बड़े से बड़े क़सूर को माफ़ करने वाला है। [बैहक़ी फ़ी शोअबिल ईमान : ३५४०, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | हराम माल से सदक़ा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: "जिस ने हराम माल जमा किया, फिर उस में से सदका किया, तो अज्र व सवाब के बजाए उल्टा वबाल होगा।" [मुस्तदरक : १४४०, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | सहाबा ؓ की दुनिया से बेज़ारी

हज़रत अबू हुरैरह ؓ कुछ लोगों के पास से गुज़रे, जिन के हाथों में भूनी हुई बकरी थी, उन लोगों ने हज़रत अबू हुरैरह ؓ को (खाने के लिए बुलाया) तो उन्होंने इन्कार कर दिया और कहा के अल्लाह के रसूल ﷺ इसी हाल में दुनिया से चले गए, के जौ की रोटी भी पेट भर कर कभी नहीं खाए। [बुख़ारी : ५४१४]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | जहन्नम का गुस्सा

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जब जहन्नमी लोग जहन्नम में डाले जाएंगे तो उस की खौफ़नाक आवाज़ सुनेंगेऔर वह ऐसी भड़क रही होगी के (गोया) गुस्से के मारे फट जाएगी।" [सूर-ए -मुल्क : ७ ता ८]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | बुखार का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जिसे बुखार आ जाए वह तीन दिन गुस्ल के वक्त यह दुआ पढ़े, तो (इन्शाअल्लाह) उसे शिफा हासिल होगी:

((بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اِنَّمَا اغْتَسَلْتُ رَجَاءَ شِفَائِكَ وَتَصْدِيْقَ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ ﷺ))

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! मैं ने तेरे नाम से गुस्ल किया, शिफा की उम्मीद करते हुए और तेरे नबी ﷺ की तस्दीक करते हुए। [इब्ने अबी शैबा : १७२, अन मक्हूल ؓ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है: "ऐ ईमान वालो ! जब तुम आपस में खुफिया बातें करो, तो गुनाह और ज़ुल्म व ज़ियादती और रसूल की ना फर्मानी की खुफिया बातें न किया करो, बल्के भलाई और परहेजगारी की बातों का मशवरा किया करो और अल्लाह से डरते रहो, जिस के पास तुम सब जमा किए जाओगे।" [सूर-ए-मुजादला : ९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुरआन व हदीस की रौशनी में)

(३०) रमज़ानुल मुबारक

नंबर (१): इस्लामी तारीख | रसूलुल्लाह ﷺ की वफात

हुज़ूर ﷺ जिस माहौल की इसलाह के लिए भेजे गए थे, आप ﷺ ने २३ साल की मुख्तसर ज़िंदगी में इन्क़िलाब बर्पा कर दिया, ज़लालत व गुमराही में भटकी हूई इन्सानियत को हिदायत व रहनुमाई का नमूना बना दिया, ज़ुल्म व सितम और चोरी व डाका ज़नी खत्म करके मुहब्बत व भाई चारगी व अमन व अमान की बुनियाद डाल दी, अलग़र्ज़ जब आप ने तबलीग व रिसालत का फरीज़ा अन्जाम दे दिया और जिस मक्सद के लिए आप को भेजा गया था, उसको मुकम्मल फर्मा दिया, तो हज़रत जिबरईल ؑ ने आकर इत्तिला दी, के अब आप की वफात का वक्त आ गया है, चुनांचे माहे सफर के आखिर में मर्ज़ शुरू हुआ और बढ़ता चला गया, फिर अपनी अज़वाजे मुतहहरात से इजाज़त लेकर हज़रत आयशा ؓ के घर में क्याम फर्माया, उस दौरान सहाबा को कुछ नसीहतें भी फर्माते रहे, लेकिन मर्ज़ की शिद्दत बढ़ती जा रही थी, बिल आखिर "اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاَلْحِقْنِيْ بِالرَّفِيْقِ الْاَعْلٰى، اَللّٰهُمَّ فِي الرَّفِيْقِ الْاَعْلٰى" कहते हुए रबिउल अव्वल में पीर के दिन, क्यामत तक आने वाली नस्लों के सामने दस्तूरे ज़िंदगी दे कर अपने महबूबे हकीकी से जा मिले, आप की वफात की खबर मुसलमानों पर बिजली बन कर गिरी, सहाब-ए-किराम ؓ मुहसिने इन्सानियत की जुदाइगी पर अक्ल व हवास खो बैठे, हर एक पर मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा, सभी रंज व गम से निढाल हो गए, चुनांचे हज़रत अबू बक्र ؓ ने कुर्आनी आयत पढ कर नसीहत फर्माई, फिर लोगों को समझाया और सब्र दिलाया, मंगल और बुध की दर्मियानी रात में तदफीन अमल में आई।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा | थोड़ा सा खाना हज़ार आदमियों को काफ़ी हो गया

हज़रत जाबिर ؓ फर्माते हैं, के ग़ज़व-ए-ख़न्दक के मौके पर मैं ने बकरी का एक बच्चा ज़बह किया और मेरी बीवी ने जौ का आटा गुँधा और गोश्त की हांडी चूल्हे पर चढ़ा दी और मैं रसूलुल्लाह ﷺ के पास गया और अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! चंद आदमियों को अपने साथ ले कर घर तशरीफ़ ले चलें, लेकिन आप ﷺ ने तमाम सहाबा में एलान फ़र्मा दिया, के जाबिर ने तुम्हारी दावत की है। हज़रत जाबिर ؓ फ़र्माते हैं, के मैं घबरा गया, लेकिन आप ﷺ तशरीफ़ लाए और खुदा की कसम ! सब ने इतने थोड़े से खाने को खूब पेट भर खाया, फिर भी हांडी भरी हुई थी और आटा भी कुछ कम नही हुआ था, हालांके सहाबा ؓ हज़ार की तादाद में थे। [बुखारी : ४१०२]

नंबर (३): एक फर्ज़ के बारे में | कज़ा नमाज़ों की अदायगी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: "जो कोई नमाज़ पढ़ना भूल गया या नमाज़ के वक्त सोता रह गया, तो (उस का कफ्फारा यह है के) जब याद आए उसी वक्त पढ़ले।" [तिर्मिज़ी : १७७, अन अबी कतादा ؓ]

फ़ायदा : अगर किसी शख़्स की नमाज़ किसी उज़्र की वजह से छूट जाए या सोने की हालत में नमाज़ का वक्त गुज़र जाए, तो बाद में उस की कज़ा पढ़ना फर्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | तमाम मुसलमानों के लिए दुआ करना

अगले पिछले तमाम मुसलमानों के लिए दुआए मग़फ़िरत इस तरह करे :

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ

[सूर-ए-हश्र : १०]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | अच्छे अख्लाक पर जन्नत के आला दर्जात

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: "जो बातिल पर रहते हुए झूट बात छोड़ दे, उस के लिए जन्नत के इर्द गिर्द घर बनाया जाएगा और जो हक पर रहते हुए झगड़ा छोड़ दे, उस के लिए जन्नत के बिलकुल बीच में घर बनाया जाएगा ; और जिस के अख्लाक अच्छे हों, उस के लिए जन्नत केआला दर्जे पर घर बनाया जाएगा ।"

[तिर्मिज़ी : १९९३, अन अनस बिन मालिक ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | मुसलमानों को तक्लीफ पहुँचाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है: "जिन लोगों ने मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतों को तक्लीफ़ पहुँचाई फिर तौबा भी नही की, तो उन के लिए दोज़ख और सख़्त जलने का अज़ाब है ।"

[सूर-ए-बुरूज : १०]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | माल जमा कर के खुश होना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो शख्स (इन्तेहाई हिर्स व लालच से) माल जमा करता है और (फिर वह खुशी से) उस को बार बार गिनता है और समझता है, के उस का यह माल उस के पास हमेशा रहेगा; हरगिज़ नहीं रहेगा; बल्के अल्लाह तआला उस को ऐसी आग में डालेगा जो हर चीज़ को तोड़ फोड़ कर रख देगी ।"

[सूर-ए-हुमज़ह : २ ता ४]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | जन्नत और जहन्नम का एक एक कतरा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अगर जन्नत का एक कतरा तुम्हारी इस दुनिया में तुम्हारे पास आ जाए, तो सारी दुनिया को मीठा कर दे और अगर जहन्नम का एक कतरा तुम्हारी दुनिया में आ जाए तो सारी दुनिया को तुम्हारे लिए यह कड़वा कर दे ।"

[अबू दाऊद : ४९४८, अन अबि दर्दा ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | जुवों का इलाज

हज़रत कअ्ब बिन उजरा ؓ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ मेरे पास तशरीफ़ लाए और उस वक्त मेरे सर से जुवें गिर रही थीं तो आप ﷺ ने फ़र्माया : "तुम को इन जुवों से तकलीफ़ है ? मैं ने अर्ज़ किया : जी हां, तो आप ﷺ ने फ़र्माया : सर मुंड्वा दो ।"

[बुखारी : ५७०३]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

हज़रत अनस ؓ फ़र्माते हैं के मुझ से रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: "ऐ बेटे ! जब घर पर जाओ तोअपने अहल व अयाल को सलाम कर के दाखिल होना, इस लिए के तेरा सलाम करना तेरे और तेरे अहल व अयाल के हक में बर्कत का बाइस होगा ।"

[तिर्मिज़ी : २६९८]

शव्वालुल
मुकर्रम

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१) शव्वालुल मुकर्रम

नंबर (१): इस्लामी तारीख — उम्मुल मोमिनीन हज़रत खदीजा ﷺ

हज़रत खदीजा ﷺ बिन्ते खुवैलिद बड़ी बा कमाल और नेक सीरत खातून थीं, उन का तअल्लुक कुरैश के मुअज़्ज़ज खानदान से था, वह खुद भी बा असर और कामयाब तिजारत की मालिक थीं। उन की पहली शादी अबू हाला से हुई जिन से दो लड़के पैदा हुए उन के इन्तेक़ाल के बाद दूसरी शादी अतीक बिन आबिद मखज़ूमी से हुई उन से एक लड़की पैदा हुई, कुछ दिनों के बाद अतीक़ की भी वफ़ात हो गई। हज़रत खदीजा ﷺ की शराफ़त व मालदारी की वजह से बहुत से सरदाराने कुरैश उन के साथ निकाह करने के ख्वाहिश मन्द थे, मगर उन्होंने सब से इन्कार कर दिया। जब उन्होंने हुज़ूर ﷺ की अमानत व सच्चाई की शोहरत सुनी तो उन से निकाह की रगबत पैदा हुई, मज़ीद तसल्ली के लिए आप को माले तिजारत देकर अपने गुलाम मैसरा के साथ मुल्के शाम भेजा, फिर जब आप ﷺ सफ़र से वापस तशरीफ़ लाए, तो हज़रत खदीजा ﷺ ने तिजारत में बरकत और आप ﷺ की अमानत व अख्लाक़ से मुतअस्सिर हो कर खुद निकाह का पैगाम भेजा। रसूलुल्लाह ﷺ ने इस का तज़किरा अपने मुश्फ़िक चचा अबू तालिब से किया, उन्होंने बखुशी मंज़ूर किया और आप ﷺ का निकाह हज़रत खदीजा ﷺ से कर दिया। उस वक्त हज़रत खदीजा ﷺ की उम्र चालीस साल और आप ﷺ की उम्र मुबारक पच्चीस साल थी।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — समुन्दर का उतरना चढ़ना

समुन्दर के किनारे अगर आप जाएँ तो देखेंगे के समुन्दर का पानी किनारे की तरफ़ कभी चढ़ जाता है और कभी उतर जाता है, लेकिन उस के चढ़ने की एक हद होती है; अगर वह उस हद को पार कर जाए तो ज़बरदस्त जानी व माली नुक्सान हो जाए, क्योंकि दुनिया का तीन हिस्सा पानी और एक हिस्सा खुश्की है। यह अल्लाह तआला की ज़बरदस्त कुदरत है जिस ने समुन्दरों को उन की हदों में रोक रखा है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — अल्लाह तआला पूरी कायनात का रब है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "सुन लो! अल्लाह तआला ही का काम है पैदा करना और हुक्म चलाना, वह बड़े कमालात वाला अल्लाह है, जो तमाम आलम का पर्वरदिगार है।"

[सूर-ए-आराफ़ : ५४]

खुलासा : पूरी दुनिया का रब अल्लाह तआला के अलावा कोई नहीं है; लिहाज़ा हमारे लिए ज़रूरी है के हम उस पर ईमान लाएँ और उस का हुक्म मानें।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — माफ़ करना

हज़रत आयशा ﷺ बयान करती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी ज़ात के लिए कभी किसी से कोई बदला नहीं लिया।

[मुस्लिम : ६०४५]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	शव्वाल में छ: (६) रोज़े रखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जो शख़्स रमज़ान के रोज़ों को रखने के बाद शव्वाल के छ: (६) रोज़े भी रखे, तो वह पूरे साल के रोज़े रखने के बराबर है । [मुस्लिम : २७५८, अन अबी अय्यूब अन्सारी ﷺ]

फ़ायदा: जो शख़्स शव्वाल के पूरे महीने में कभी भी इन छ: रोज़ों को रखेगा तो वह इस फजीलत का मुस्तहिक होगा।

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	मुनाफ़िक की निशानियाँ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : मुनाफ़िक की तीन निशानियाँ हैं : जब बात करे तो झूट बोले, वादा करे तो पूरा न करे, जब कोई अमानत रखी जाए तो उस में खयानत करे।

[बुख़ारी : ३३, मुस्लिम : २११, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	मौत और माल की कमी से घबराना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : आदमी दो चीज़ों को ना पसंद करता है, (हालांके दोनों उस के लिए खैर हैं) एक मौत को, हालांके मौत फ़ितनों से बचाव है, दूसरे माल की कमी को, हालांके जितना माल कम होगा उतना ही हिसाब कम होगा । [मुस्नदे अहमद : २३११३, महमूद बिन लबीद ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	हर एक को नाम-ए-आमाल के साथ बुलाया जाएगा

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : वह दिन याद करने के काबिल है, जिस दिन तमाम आदमियों को उन के नाम-ए-आमाल के साथ मैदाने हश्र में बुलाएंगे, फिर जिन का नाम-ए-आमाल उन के दाहिने हाथ में दिया जाएगा, तो वह (खुश हो कर) अपने नाम-ए-आमाल को पढ़ने लगेंगे उन पर एक धागे के बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। [सूर-ए-बनी इसराईल : ७१]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	हर बीमारी का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : अल्लाह तआला ने हर बीमारी के लिए दवा उतारी है, जब बीमारी को सही दवा पहुँच जाती है, तो अल्लाह तआला के हुक्म से बीमारी ठीक हो जाती है।

[मुस्लिम : ५७४१, अन जाबिर ﷺ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : अल्लाह तआला तुम को हुक्म देता है के अमानत वालों को उन की अमानतें वापस कर दिया करो। [सूर-ए-निसा : ५८]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२) शव्वालुल मुकर्रम

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत खदीजा ﵂ की फज़ीलत व खिदमात

उम्मुल मोमिनीन हज़रत खदीजा ﵂ को जो फज़ल व कमाल अल्लाह तआला ने अता फ़र्माया था, उस में क्यामत तक कोई खातून शरीक नहीं हो सकती, उन्होंने सब से पहले हुज़ूर ﷺ की नुबुव्वत की तसदीक करते हुए ईमान कबूल किया। सख्त आज़माइश में आप ﷺ का साथ देना, इस्लाम के लिए हर एक तकलीफ को बरदाश्त करना, रंज व गम के मौके पर आप ﷺ को तसल्ली देना, यह उन की वह सिफ़ात हैं, जो उन्हें दीगर उम्महातुल मोमिनीन से मुमताज़ कर देती हैं, अल्लाह तआला ने जिब्रईले अमीन के ज़रिए उन्हें सलाम भेजा। खुद पैगम्बर ﷺ ने फ़र्माया : खुदा की कसम ! मुझे खदीजा से अच्छी बीवी नहीं मिली, वह उस वक्त मुझ पर ईमान लाई जब लोगों ने इन्कार किया। उस ने उस वक्त मेरी नुबुव्वत की तसदीक़ की जब लोगों ने मुझे झुटलाया, उस ने मुझे अपना माल व दौलत अता किया जब के दूसरे लोगों ने महरुम रखा। हकीकत यह है के इब्तिदाए इस्लाम में उन्होंने दीन की इशाअत व तबलीग में अपनी जानी व माली खिदमात अंजाम दे कर पूरी उम्मत पर बड़ा एहसान किया है। अल्लाह तआला उन्हें इस का बेहतरीन बदला अता फ़र्माए। (आमीन) सन १० नब्वी में ६५ साल की उम्र में वफ़ात पाई और मक्का के हुजून नामी क़ब्रस्तान (यानी जन्नतुल माला) में दफ़्न की गईं।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — खजूर के दरख्त का थोड़ी ही मुद्दत में फल देना

हज़रत सलमान फ़ारसी ﵁ एक यहूदी के गुलाम थे, इस्लाम कबूल करना चाहते थे, जब इन के आका को यह बात मालूम हुई, तो उस ने एक शर्त लगाई, के इतने खजूर के दरख्त लगाओ और उन की देख भाल करो, जब वह फल देने लगें, तब तुम आज़ाद हो, जब यह बात रसूलुल्लाह ﷺ तक पहुँची, तो आप ﷺ ने खुद अपने मुबारक हाथों से वह दरख्त लगाए (जिस की बरकत से) वह दरख्त सिर्फ़ एक साल की मुद्दत में फल देने लगे (हालांके खजूर का दरख्त इतनी कम मुद्दत में फल नहीं देता है)।

[शमाइले तिर्मिज़ी : स ३]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ों का सही होना ज़रूरी है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : क्यामत के दिन सब से पहले नमाज़ का हिसाब होगा, अगर नमाज़ अच्छी हुई तो बाकी आमाल भी अच्छे होंगे और अगर नमाज़ खराब हुई तो बाकी आमाल भी खराब होंगे।

[तर्गीब व तर्हीब : ५१६, अन अब्दुल्लाह बिन कुर्त ﵁]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — मुसीबत के वक्त की दुआ

जब कोई मुसीबत पहुँचे या उस की खबर आए, तो यह दुआ पढ़े :

﴿ إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّآ إِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴾

तर्जमा : हम सब (मअ माल व औलाद हक़ीक़त में) अल्लाह तआला ही की मिल्कियत में है और (मरने के बाद) हम सब को उसी के पास लौट कर जाना है । [सूर-ए-बक़रह : १५६]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	इल्म हासिल करने के लिये सफर करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जो शख्स ऐसा रास्ता चले, जिस में इल्म की तलाश मक्सूद हो तो अल्लाह तआला उस के लिए जन्नत का रास्ता आसान कर देंगे । [मुस्लिम : ६८५३, अन अबी हुरैरह رضی اللہ عنہ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	अहेद और कस्मों को तोड़ना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "यकीनन जो लोग अल्लाह तआला से अहेद कर के उस अहेद को और अपनी कस्मों को थोड़ी सी कीमत पर फ़रोख्त कर डालते हैं, तो ऐसे लोगों का आखिरत में कोई हिस्सा नहीं और न अल्लाह तआला उन से बात करेगा और न क़यामत के दिन (रहमत की नज़र से) उन की तरफ़ देखेगा और न उन को पाक करेगा और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा ।"

[सूर-ए-आले इमरान : ७७]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	दुनिया पर मुतमइन नहीं होना चाहिए

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जिन लोगों को हमारे पास आने की उम्मीद नहीं है और वह दुनिया की जिंदगी पर राज़ी हो गए और उस पर वह मुतमइन हो बैठे और हमारी निशानियों से गाफ़िल हो गए हैं, ऐसे लोगों का ठिकाना उन के आमाल की वजह से जहन्नम है।" [सूर-ए-यूनुस : ७ ता ८]

नंबर (८) : आखिरत के बारे में	क़यामत का मंज़र

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : अगर (आखिरत के हौलनाक अहवाल के मुतअल्लिक) तुम्हें वह सब मालूम हो जाए जो मुझे मालूम है, तो तुम्हारा हंसना बहुत कम हो जाए और रोना बहुत बढ़ जाए ।

[बुखारी : ६४८६, अन अनस رضی اللہ عنہ]

नंबर (९) : कुर्आन से इलाज	सब से बेहतरीन दवा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : सब से बेहतरीन दवा कुर्आन है। [इब्ने माजा : ३५३३, अन अली رضی اللہ عنہ]

फ़ायदा : उलमाए किराम फर्माते हैं के कुर्आनी आयात के मफ़हूम के मुताबिक जिस बीमारी के लिए जो आयत मुनासिब हो, उस आयत को पढ़ने से इन्शा अल्लाह शिफा होगी और यह सहाब-ए-किराम رضی اللہ عنہم का मामूल था।

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : ऐसे शख्स की बद् दुआ से बचो, जिस पर ज़ुल्म किया गया हो, इस लिए के उस की बद् दुआ और अल्लाह के दर्मियान कोई आड़ नहीं होती है ।

[तिर्मिज़ी : २०१४, अन मुआज़ बिन जबल رضی اللہ عنہ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

③ शव्वालुल मुकर्रम

नंबर ①: इस्लामी तारीख — उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा ﷺ

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा ﷺ बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक ﷺ इल्म व फज़्ल, खैर व बरकत, अख्लाक व किरदार, जुरअत व हिम्मत और हौसलामंदी में बेमिसाल थीं, हक बात किसी की परवाह किए बगैर, बेखौफ हो कर कह दिया करती थीं, इन की पैदाइश नुबुव्वत के चौथे साल में मक्का मुकर्रमा में हुई , बचपन से ही बेहद ज़हीन और अक्लमंद थीं। घर में खादिमा होने के बावजूद अपना काम खुद किया करती थीं। गरीबों की मदद, यतीमों की पर्वरिश, मेहमान नवाज़ी और राहेखुदा में बड़ी दर्या दिली से खर्च करती थीं, एक मर्तबा अमीर मुआविया ﷺ ने उन की खिदमत में बतौरे हदिया एक लाख दिर्हम भेजा, तो शाम होने तक सब गरीबों में तकसीम कर दिया। इस के साथ ही अल्लाह की इबादत, हुज़ूर ﷺ की सुन्नत की पैरवी और शरीअत के एक एक हुक्म पर बड़े एहतेमाम से अमल किया करती थीं, नमाज़े तहज्जुद व चाश्त की बहुत पाबंद थीं और अक्सर रोज़े रखा करती थीं शरीअत के खिलाफ़ छोटी छोटी बातों से भी बचा करती थीं।

नंबर ②: अल्लाह की कुदरत — एक ही पानी से फल और फूल की पैदाइश

अल्लाह तआला ज़बरदस्त कुदरत वाला है, उस ने एक ही जमीन और एक ही पानी से मुख्तलिफ किस्म के दरख्त, फल और फूल बनाए, हर एक का मज़ा और रंग अलग अलग है, कोई मीठा है तो कोई खट्टा है, कोई सुर्ख है, तो कोई सफेद है, हालांके सब एक ही ज़मीन और एक ही पानी से पैदा हुए, वाकई अल्लाह तआला बड़ी कुदरत वाला है ।

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — पानी न मिलने पर तयम्मुम करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : पाक मिट्टी मुसलमान का सामाने तहारत है, अगरचे दस साल तक पानी न मिले, पस जब पानी पाए, तो चाहिए के उस को बदन पर डाले: यानी उस से वुज़ू या गुस्ल कर ले; क्योंकि यह बहुत अच्छा है। [अबू दाऊद : ३३२, अन अबीज़र ﷺ]

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — इस्तिंजा के वक्त कपड़ा हटाने का तरीका

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ जब कज़ाए हाजत करते, तो जमीन के करीब होने के बाद कपड़े हटाते। [अबू दाऊद : १४]

नंबर ⑤: एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — कुर्आन की कोई सूरत पढ़ कर सोना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जब मुसलमान बिस्तर पर (सोते वक्त) कुर्आने करीम की कोई भी सूरत पढ़ लेता है, तो अल्लाह तआला उस की हिफाज़त के लिए एक फरिश्ता मुकर्रर फ़र्मा देता है और उस के

जागने तक कोई तकलीफ़ देह चीज़ उस के करीब भी नहीं आती। [तिर्मिज़ी : ३४०७, अन शद्दाद बिन औस ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में — गलत हदीस बयान करने की सज़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मेरी हदीस को बयान करने में एहतियात करो और वही बयान करो जिस का तुम्हें यकीनी इल्म हो, जो शख्स जान बूझ कर मेरी तरफ से कोई गलत बात बयान करे वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।" [तिर्मिज़ी : २९५१, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में — बद नसीबी की पहचान

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : चार चीज़ें बद नसीबी की पहचान है : (१) आँखों का खुश्क होना (के अल्लाह के खौफ से किसी वक्त भी आँसू न टपके)। (२) दिल का सख्त होना (के आखिरत के लिए या किसी दूसरे के लिए किसी वक्त भी नर्म न पड़े। (३) उम्मीदों का लम्बा होना। (४) दुनिया की हिर्स (लालच)। [तर्गीब व तर्हीब : ४७४१, अन अनस ﷺ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में — जन्नत वालों का इन्आम व इकराम

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है (जन्नती लोग) जन्नत में सलाम के अलावा कोई बेकार व बेहूदा बात नहीं सुनेंगे और जन्नत में सुबह व शाम उन को खाना (वगैरह) मिलेगा। यही वह जन्नत है, जिस का मालिक हम अपने बंदों में से उस शख्स को बनाएंगे जो अल्लाह से डरने वाला होगा। [सूर-ए-मरयम : ६२ ता ६३]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज — शहेद से पेट के दर्द का इलाज

एक शख्स रसूलुल्लाह ﷺ के पास आया और अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के रसूल ! मेरे भाई के पेट में तकलीफ है। रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : शहेद पिलाओ। वह शख्स गया और शहेद पिलाया, वापस आकर फिर वही शिकायत की, तो आप ﷺ ने फ़िर शहेद पिलाने का हुक्म फर्माया; वह शख्स तीसरी मर्तबा यही शिकायत लेकर आया, तो फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने शहेद पिलाने को कहा, वह फिर आया और अर्ज़ किया के इतनी बार शहेद पिलाने के बावजूद आराम नहीं हुआ, बल्के तकलीफ बढ़ती जा रही है, तो हुज़ूर ﷺ ने फर्माया : (कुर्आन में) अल्लाह ने सच कहा है (के शहेद में शिफा है) और तेरे भाई का पेट झूटा है, चुनान्चे वह शख्स फिर वापस गया और शहेद पिलाया, तो उस का भाई अच्छा हो गया। [बुखारी : ५६८४, अन अबी सईद ﷺ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : ऐ ईमान वालो ! तुम मुसलमानों को छोड़ कर काफिरों को अपना दोस्त मत बनाओ। (यानी काफिरों से दिली तअल्लुक मत रखो के उस में ईमान व आमाल दोनों के तबाह होने का खतरा है।) [सूर-ए-निसा : १४४]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर ①: इस्लामी तारीख — हज़रत आयशा ﷺ का इल्मी मर्तबा

हज़रत सय्यदा आयशा ﷺ का इल्मी मकाम व मर्तबा बहुत बलंद था; चंद सहाबा को छोड़ कर तमाम मर्द व औरत पर उन्हें फौकियत हासिल थी, वह बयक वक्त कुर्आने करीम की हाफिज़ा, तफसीर व हदीस की माहिर और मुशकिल मसाइल को हल करने में बेमिसाल ज़हानत की मालिक थीं। बड़े बड़े सहाबा उन से शरीअत के अहकाम व मसाइल मालूम करते थे, हज़रत अबू मूसा अशअरी ﷺ का बयान है के जब भी हम लोगों के सामने कोई मुशकिल मस्अला पेश आता तो उस का हल हज़रत आयशा ﷺ से मालूम करते और वह फौरन उस का हल बता दिया करती थीं, इमाम ज़ोहरी फर्माते हैं के अगर तमाम मर्दों और उम्महातुल मोमिनीन का इल्म जमा किया जाए , तो हज़रत आयशा ﷺ का इल्म उन सब से ज़ियादा वसीअ् होगा। कहा जाता है के दीन का चौथाई हिस्सा इन्हीं से मुतअल्लिक है। वह दीने इस्लाम और शरीअत के अहकाम को फैलाना और हुज़ूर ﷺ की तालीमात को आम करना अपनी ज़िन्दगी का मकसद बना लिया था। तकरीबन २२१० अहादीस उन से मर्वी हैं, बिला शुबा पूरी उम्मत पर उन के बेपनाह एहसानात हैं, इसी वजह से उन्हें "मोहसिन-ए-उम्मत" कहा जाता है। सन ६६ हिजरी में मदीना में इन्तेकाल फ़र्माया और रात के वक्त जन्नतुल बकीअ् में दफ्न हुईं । अल्लाह तआला उन्हें पूरी उम्मत की तरफ से बेहतरीन बदला अता फ़र्माए। (आमीन)

नंबर ②: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — आंधी आने की खबर देना

हज़रत अबू हुमैद ﷺ फर्माते हैं : गज़्वा-ए-तबूक के मौके पर जब रसूलुल्लाह ﷺ सहाब-ए-किराम ﷺ के साथ वादिउलकुरा में पहुँचे, तो आप ﷺ ने फ़र्माया : रात को एक ज़ोर दार हवा चलेगी, लिहाज़ा उस वक्त कोई आदमी खड़ा न हो, नीज़ जिस के पास ऊंट हो,उस को भी रस्सी से बांध दें, चुनान्चे रसूलुल्लाह ﷺ के फ़र्मान के मुताबिक रात को बहुत ज़ोर से हवा चली और एक आदमी खड़ा हो गया, तो हवा ने उस को उठा कर "जबले तय्यिअ्" में गिरा दिया । [मुस्लिम : ५९४८, अन अबी हुमैद ﷺ]

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — हज किन लोगों पर फ़र्ज़ है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : अल्लाह के वास्ते उन लोगों के ज़िम्मे बैतुल्लाह का हज करना (फर्ज़) है, जो वहां तक पहुँचने की ताकत रखते हों। [सूर-ए-आले इमरान : ९७]

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — मुशकिल कामों की आसानी की दुआ

जब कोई मुशकिल काम आ जाए तो यह दुआ पढ़े:

((اَللّٰهُمَّ لَا سَهْلَ اِلَّا مَا جَعَلْتَهُ سَهْلًا وَاَنْتَ تَجْعَلُ الْحَزْنَ اِذَا شِئْتَ سَهْلًا))

तर्जमा : ऐ अल्लाह तेरे किए बगैर कोई काम आसान नहीं हो सकता और तू जब चाहे सख्त रंज व गम को भी आसानी में तबदील कर दे। [इब्ने सुन्नी : ३५१, अन अनस ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	सूर-ए-इख़लास तिहाई क़ुर्आन के बराबर है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क्या तुम में से कोई यह नहीं कर सकता के एक रात में तिहाई क़ुर्आन पढ़ले ?" सहाब-ए-किराम ؓ नेअर्ज़ किया : कैसे तिहाई क़ुर्आन पढ़ लेगा? आप ﷺ ने फ़र्माया : ﴿قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ﴾ तिहाई क़ुर्आन के बराबर है।" [मुस्लिम : १८८६, अन अबी दर्दा ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	फ़ितना व फ़साद करने की सज़ा

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो लोग अल्लाह और उस के रसूल से लड़ते हैं, ज़मीन में फ़साद करने की कोशिश करते हैं, ऐसे लोगों की बस यही सज़ा है के वह क़त्ल कर दिए जाएँ या सूली पर चढ़ा दिए जाएँ या उन के हाथ और पाँव मुख़ालिफ जानिब से काटे जाएँ या वह मुल्क से बाहर निकाल दिए जाएँ । यह सज़ा उन के लिए दुनिया में सख़्त रुस्वाई का ज़रिया है और आख़िरत में उन के लिए बहुत बड़ा अज़ाब है । [सूर-ए-माइदा : ३३]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया से ज़ियादा आख़िरत अहेम

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम तो दुनिया का माल व अस्बाब चाहते हो और अल्लाह तआला तुम से आख़िरत को चाहते हैं ।" [सूर-ए-अन्फ़ाल : ६७]

फ़ायदा : इन्सान हर वक़्त दुनियावी फायदे में मुन्हमिक रहता है और इसी को हासिल करने की फ़िक्र करता रहता है; हालांके अल्लाह तआला चाहते हैं के दुनिया के मुकाबले में आख़िरत की फ़िक्र ज़ियादा की जाए; क्योंकि आख़िरत की फ़िक्र करना ज़ियादा अहेम है ।

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	सब से पहले ज़िंदा होने वाले

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हम दुनिया में सब से आख़िर में आए हैं, लेकिन कल हश्र (यानी आख़िरत में जब सब को जमा किया जाएगा) तो हम सब से पहले ज़िंदा किए जाएंगे ।" [बुख़ारी : ८७६, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	नींद न आने का इलाज

एक शख़्स ने हुज़ूर ﷺ से नींद न आने की शिकायत की, तो आप ﷺ ने फ़र्माया : यह पढ़ा करो ।

((اَللّٰهُمَّ غَارَتِ النُّجُوْمُ، وَهَدَأَتِ الْعُيُوْنُ، وَاَنْتَ حَيٌّ قَيُّوْمٌ، يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ! اَنِمْ عَيْنِيْ وَاَهْدِئْ لَيْلِيْ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! सितारे छुप गए और आँखे पुरसुकून हो गई, तू हमेशा ज़िंदा और कायम रहने वाला है, ऐ हमेशा ज़िंदा और कायम रहने वाले ! मेरी रात को पुरसुकून बना दे और मेरी आँख को सुला दे । [मुअजमुल कबीर लित्तबरानी : ४६८३]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : अपना तहबंद आधी पिंडलियों तक ऊंचा रखा करो, अगर इतना ऊंचा न रख सको, तो कम अज़ कम टख़नो से ऊपर रखा करो । [अबू दाऊद : ४०८४, जाबिर बिन सुलैम ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत खौला बिन्ते सअ्लबा ﷺ

हज़रत खौला बिन्ते सअ्लबा ﷺ का तअल्लुक कबील-ए-खज़रज से था, जब हुज़ूर ﷺ मदीना मुनव्वरा तशरीफ लाए तो अपने पूरे खानदान के साथ इस्लाम में दाखिल हो गईं और बैत का शर्फ भी हासिल किया, इन के शौहर औस बिन सामित ने सब से पहले इन से ज़िहार किया (के तू मुझ पर मेरी माँ की पुश्त की तरह है), इस्लाम से पहले जिहार के ज़रिये बीवी को कतअन हराम समझा जाता था, इस लिए हज़रत खौला ﷺ फ़ौरन रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में गईं और अपने शौहर का हाल बयान कर के रोने लगीं, चुनान्चे अल्लाह तआला ने सूर-ए-मुजादला नाज़िल फर्मा कर ज़िहार का हुक्म और कफ़्फ़ारा अदा करने का तरीका बताया, फ़िर उन्होंने अपने शौहर की तरफ़ से ज़िहार का कफ़्फ़ारा अदा किया, गर्ज़ अल्लाह तआला ने इन के मसअले के हल के लिए कुर्आनी आयत नाज़िल कर के मुसलमानों को ज़िहार का सही तरीका बताया। हज़रत खौला ﷺ बड़ी शीरीं ज़बान, गुफ़्तगु में माहिर और वाज़ व नसीहत में बड़ी जुरअतमंद थीं, अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर ﷺ जैसी अज़ीम शखसियत को भी बिला किसी खौफ़ व झिजक के नसीहत कर दिया करती थीं, वह उन की नसीहत सुन कर फ़र्माते "(यह वह खातून है जिन की शिकायत सातवें आस्मान पर सुनी गई, इन के दौरे खिलाफ़त में वफात हुई ।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — बदन के जोड़

अल्लाह तआला ने हमारे पूरे बदन को कैसी अच्छी तर्तीब से बनाया,उस में कई जोड़ बनाए हैं, इस की वजह से हम को कितनी सहूलत होती है, हम सारे काम आसानी से कर लेते हैं, अगर कोई एक जोड़ भी काम न करे तो हम को कितनी तकलीफ होती। वाकई अल्लाह तआला बड़ी हिक्मत वाला है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ छोड़ने पर वईद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : नमाज़ का छोड़ना मुसलमान को कुफ्र व शिर्क तक पहुँचाने वाला है ।

[मुस्लिम : २४७, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — बैतुलखला जाने का तरीका

रसूलुल्लाह ﷺ जब इस्तिंजा के लिए तशरीफ ले जाते, तो चप्पल पहन लेते और सर को ढांप लेते।

[बैहकी फिस्सुननिल कुबरा : १/९६]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | रास्ते से तकलीफ देह चीज़ को हटाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "एक आदमी रास्ते से गुज़र रहा था, के उसे काँटे दार दरख़्त की शाख रास्ते में पड़ी मिली, तो उस ने हटा कर किनारे कर दिया और उस पर अल्लाह का शुक्रिया अदा किया, तो अल्लाह तआला ने उस की मग़फिरत फर्मा दी ।"

[बुखारी : ६५२, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | हंसाने के लिए झूट बोलना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : उस शख्स के लिए हलाकत है, जो लोगों को हंसाने के लिए कोई बात कहे और उस में झूट बोले, उस के लिए हलाकत है, हलाकत है । [अबू दाऊद : ४९९०, अन मुआविया बिन हैदह رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया को मकसद बनाने का अंजाम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जो शख्स अल्लाह का हो जाता है, तो अल्लाह तआला उस की ज़रुरियात का कफ़ील बन जाता है और उस को ऐसी जगह से रिज़्क देता है जहां उस का वहम व गुमान भी नहीं होता । जो शख्स मुकम्मल तौर पर दुनिया की तरफ़ झुक जाता है तो अल्लाह तआला उसे दुनिया के हवाले कर देता है ।

[बैहकी फी शुअबिल ईमान : १०९०, इमरान बिन हुसैन رضي الله عنه]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | जन्नत के ज़ेवरात

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो लोग ईमान लाए और नेक आमाल किए, अल्लाह तआला उन को (जन्नत के) ऐसे बाग़ों में दाखिल करेंगे जिस के नीचे नहरें जारी होंगी और उन बाग़ों में उन को सोने के कंगन और मोती (के हार) पहनाए जाएंगे और उन का लिबास खालिस रेशम का होगा।"

[सूर-ए-हज : २३]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | बिच्छू के ज़हर का इलाज

हज़रत अली رضي الله عنه फर्माते हैं : एक रात रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ पढ़ रहे थे के नमाज़ के दौरान एक बिच्छू ने आप ﷺ को डंक मार दिया, रसूलुल्लाह ﷺ ने उस को मार डाला । जब नमाज़ से फ़ारिग हुए, तो फ़र्माया : अल्लाह बिच्छू पर लानत करे, यह न नमाज़ी को छोड़ता है और न ग़ैरे नमाज़ी को, फिर पानी और नमक मंगवा कर एक बर्तन में डाला और जिस उंगली पर बिच्छू ने डंक मारा था, उस पर पानी डालते और मलते रहे और (सूर-ए-फ़लक़) व (सूर-ए-नास) पढ़ कर उस जगह पर दम करते रहे ।

[बैहकी फी शुअबिल ईमान : २४७१]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ इमान वालो ! अल्लाह तआला के लिए सच्चाई पर कायम रहने वाले और इन्साफ के साथ शहादत देने वाले बन जाओ; और किसी कौम की दुशमनी तुम्हें इस बात पर आमादा न कर दे, के तुम इन्साफ़ न करो (बल्के हर मामले में) इन्साफ़ करो, यह परहेज़ गारी के ज़ियादा करीब है और अल्लाह तआला से डरते रहो, बेशक जो कुछ तुम करते हो अल्लाह तआला उस से बा खबर है ।

[सूर-ए-माइदा : ८]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

⑥ शव्वालुल मुकर्रम

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत जमीला बिन्ते सअद बिन रबीअ رضي الله عنها

हज़रत सअद और उन के वालिद हज़रत रबीअ ऐसे दो अन्सारी सहाबी हैं, जो जंगे उहुद में हुज़ूर ﷺ की हिफाजत करते हुए शहीद हो गए, उस वक्त हज़रत सअद की बेटी जमीला बिन्ते सअद पैदा नहीं हुई थीं, सअद के इन्तेकाल के बाद उन की बीवी ने आकर शिकायत की के सअद के भाई ने मीरास का माल ले लिया और सअद की दोनों बेटियों को और मुझे कुछ भी नहीं दिया, उस पर अल्लाह तआला ने मीरास की तकसीम के बारे में आयात नाज़िल फ़र्माई। जिन में अल्लाह तआला ने बीवियों और बेटियों को भी माले वरासत का हक़दार बताया है। इस्लाम से कब्ल किसी मज़हब या समाज में औरतों को मीरास में हिस्सा देने का रिवाज नहीं था। जमीला बिन्ते सअद की वालिदा इल्मुल फ़राइज़ के नुज़ूल का सबब बनी, ऐसे दीनदार माँ बाप की बेटी हज़रत जमीला भी बहुत सारी खूबियों की मालिक थीं, आप आलिमा, फकीहा और कुर्आन की हाफिज़ा थीं, इल्मुल फ़राइज़ से खूब वाकिफ थीं, अपने घर में बच्चों को कुर्आन पढ़ाती और साथ ही आयात का शाने नुज़ूल बताती थीं, तलबा उन से आकर इस्तिफ़ादा करते, ऐसी आलिमा फ़ाज़िला सहाबिया की औलाद भी इल्म से मामूर थीं, हज़रत खारजा बिन ज़ैद رضي الله عنه इन के बेटे है, जो मदीना मुनव्वरा के सात बड़े फ़ुक़हा में से थे।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हुज़ूर ﷺ की दुआ का असर

हज़रत अबू लैला फ़र्माते हैं के हज़रत अली رضي الله عنه ठंडी में गर्मी के कपड़े पहनते थे और गर्मी में ठंडी के, मैं ने एक दिन उन से पूछा, तो हज़रत अली رضي الله عنه ने फ़र्माया : खैबर के दिन मेरी आँखे दर्द कर रही थीं, ऐसे वक्त में रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे बुला भेजा, तो मैं ने कहा : हुज़ूर मेरी आँखें दर्द कर रही हैं, उस वक्त हुज़ूर ﷺ ने मेरी आँखों में अपना थूक मुबारक लगाया और दुआ की या अल्लाह ! तू अली से गर्मी और सर्दी को दूर कर दे, चुनान्चे उस दिन से मुझे गर्मी और सर्दी का एहसास नहीं हुआ। [इब्ने माजा : ११७]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — दीनी इल्म हासिल करना ज़रूरी है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : (दीनी) इल्म हासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।

[इब्ने माजा : २२४, अन अनस बिन मालिक رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — हर तरह की परेशानी से छुटकारा

रसूलुल्लाह ﷺ को जब कोई बेचैनी व तक्लीफ पेश आती, तो आप ﷺ यह दुआ पढ़ते,

((لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ، لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ،
لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَرَبُّ الْأَرْضِ، وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ))

[बुखारी : ६३४६, अन इब्ने अब्बास رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | शहादत की मौत मांगना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स सच्ची तलब के साथ अल्लाह तआला से शहादत की मौत मांगता है, तो अल्लाह तआला उसे शहीदों के दर्जे तक पहुँचा देता है, चाहे वह अपने बिस्तर ही पर मरा हो।" [मुस्तदरक : २४१२, सहल बिन हुनैफ़ ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | हलाल को हराम समझना गुनाह है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो पाक व लज़ीज़ चीज़ें हलाल की हैं, उन को अपने ऊपर हराम न किया करो और (शरई) हुदूद से आगे मत बढ़ो, बेशक अल्लाह तआला हद से आगे बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता। [सूर-ए-माइदा : ८७]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | नेअ्मत देने में अल्लाह का कानून

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : अल्लाह जब किसी कौम को कोई नेअ्मत अता करता है, तो उस नेअ्मत को उस वक्त तक नहीं बदलता, जब तक वह लोग खूद अपनी हालत को न बदलें, यकीनन अल्लाह तआला बड़ा सुनने वाला और जानने वाला है। [सूर-ए- अन्फ़ाल : ५३]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | क़यामत किन लोगों पर आएगी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : कयामत सिर्फ बदतरीन लोगों पर ही आएगी।

[मुस्लिम : ७४०२, अन इब्ने मसऊद ﷺ]

खुलासा : जब तक इस दुनिया में एक शख्स भी अल्लाह का नाम लेने वाला ज़िंदा रहेगा, उस वक्त तक दुनिया का निज़ाम चलता रहेगा, लेकिन जब अल्लाह का नाम लेने वाला कोई न रहेगा और सिर्फ़ बदतरीन और बुरे लोग ही रह जाएंगे, तो उस वक्त कयामत कायम की जाएगी।

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | बुखार का इलाज

हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ फर्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने सहाब-ए-किराम ﷺ को बुखार और दुसरी तमाम बीमारियों से नजात के लिए यह दुआ बताई :

((بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ، اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ مِنْ شَرِّ كُلِّ عِرْقٍ نَعَّارٍ، وَمِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ))

तर्जमा : मैं अल्लाह के नाम से शुरु करता हुँ जो बहुत बड़ा है, मैं उस अल्लाह तआला की पनाह मांगता हुँ जो बहुत अज़मत वाला है, हर जोश मारने वाली रग की बुराई से और आग की गर्मी की बुराई से।

[तिर्मिज़ी : २०७५]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जब तुम्हारे यहां कोई ऐसा शख्स निकाह का पैगाम दे, जिस के दीन व अख्लाक से तुम मुतमइन हो, तो उस से निकाह कर दिया करो और अगर तुम ने ऐसा नहीं किया, तो ज़मीन में ज़बरदस्त फ़ितना व फसाद फैल जाएगा। [तिर्मिज़ी : १०८४, अन अबी हुरैरह ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर १ : इस्लामी तारीख — हज़रत हस्सान बिन साबित ﷺ

हज़रत हस्सान बिन साबित को शायरे रसूलुल्लाह ﷺ का लकब हासिल है, अल्लाह के नबी ﷺ ने अपनी ज़िंदगी में हज़रत हस्सान के अलावा किसी सहाबी को मिम्बर पर नहीं बिठाया, जब कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन हुज़ूर ﷺ के खिलाफ़ अशआर पढ़ते थे, तो हुज़ूर ﷺ ने हज़रत हस्सान बिन साबित को मौका दिया के वह मिम्बर पर खड़े हों और आप ﷺ की तारीफ़ बयान फ़र्माएं। हज़रत हस्सान अन्सारी ﷺ के बारे में कहा जाता है के जाहिलियत के ज़माने में वह अहले मदीना के शायर थे, फ़िर हुज़ूर ﷺ के ज़मान-ए-नुबुव्वत में वह शायरुन नबी बने, फ़िर तमाम आलमे इस्लाम के मुकद्दस शायर बन गए। हज़रत हस्सान बिन साबित अपने बुढ़ापे की वजह से हुज़ूर ﷺ के साथ किसी गज़वह में शरीक नहीं हो सके, लेकिन उन्होंने दुश्मनों का अपनी ज़बान यानी शेर से मुकाबला किया, कहा जाता है के अरब में सब से बेहतरीन शोअरा अहले यसरिब (यानी मदीने वाले) हैं और अहले मदीना में सब से ज़ियादा अच्छे शायर हस्सान बिन साबित ﷺ थे। हज़रत हस्सान ﷺ ने एक सौ बीस साल की उम्र पाई, साठ साल जाहिलियत में गुज़रे और साठ साल इस्लाम में गुज़रे।

नंबर २ : अल्लाह की कुदरत — समुन्दर के पानी का खारा होना

यह दुनिया एक हिस्सा ज़मीन और तीन हिस्सा समुन्दर है और इस में अल्लाह की बे हिसाब मखलूक हैं जिन में न जाने कितने रोज़ाना पैदा होते और मरते हैं और दुनिया भर की गंदगी समुन्दर में डाली जाती है लेकिन अल्लाह तआला ने समुन्दर के पानी को खारा बनाया, यह खारापन समुन्दर की हर किस्म की गंदगी को खत्म कर देता है, अगर ऐसा न होता तो इन गंदगियों की वजह से समुन्दर का पूरा पानी खराब और बदबूदार हो जाता, जिस की वजह से पानी और ज़मीन दोनो जगहों में रहने वाली मखलूक का बहुत बड़ा नुक्सान होता। यह अल्लाह तआला की कुदरत है के उस ने समुन्दर को खारा बनाया।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — अमानत का वापस करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : अल्लाह तआला तुम को हुक्म देता है के जिन की अमानतें हैं उन को लौटा दो। [सूर-ए-निसा:५८]

फ़ायदा : अगर किसी ने किसी शख्स के पास कोई चीज़ अमानत के तौर पर रखी हो, तो मुतालबे के वक्त उस का अदा करना ज़रुरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	मस्जिद की सफ़ाई करना सुन्नत है

रसूलुल्लाह ﷺ खजूर की शाखों से मस्जिद का गर्द व गुबार साफ़ फ़र्माते थे।

[मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा : १/४३५]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	नमाज़े इशराक की फज़ीलत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : अल्लाह तआला फ़र्माता है के ऐ इब्ने आदम ! तू दिन के शुरु हिस्से में मेरे लिए चार रकातें पढ लिया कर (यानी इशराक की नमाज़) तो मैं दिन भर के तेरे सारे काम बना दूंगा।

[तिर्मिज़ी : ४७५, अन अबी दर्दा व अबीज़र ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	वालिदैन की नाराज़गी का वबाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "ऐसे शख्स की नमाज़ कबूल नहीं की जाती, जिस के वालिदैन उस पर बरहक नाराज़ हों।"

[कन्ज़ुल उम्माल : ४५५१७, अन अबी हुरैरह ﷺ]

फ़ायदा : अगर किसी शख्स के वालिदैन बगैर किसी शरई उज्र के नाराज़ रहते हों, तो वह शख्स इस वईद में दाखिल नहीं है।

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया के पीछे भागने का वबाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जो शख्स दुनिया के पीछे पड़ जाए, उस का अल्लाह तआला से कोई तअल्लुक नहीं और जो (दुनियावी मक्सद के लिए) अपने आप को खुशी से ज़लील करे, उस का हम से कोई तअल्लुक नहीं।

[अल मुअ्जमुल औसत लित्तबरानी : ४७८, अन अबीज़र ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जहन्नम का जोश व खरोश

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जब जहन्नम (क़यामत के झुटलाने वालों) को दूर से देखेगी, तो वह लोग (दूर ही से) उस का जोश व खरोश सुनेंगेऔर जब वह दोज़ख की किसी तंग जगह में हाथ पाँव जकड़ कर डाल दिए जाएंगे, तो वहां मौत ही मौत पुकारेंगे। (जैसा के मुसीबत में लोग मौत की तमन्ना करते हैं)।

[सूरह-ए-फ़ुरकान : १२ ता १३]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मुअव्वज़तैन से बीमारी का इलाज

हज़रत आयशा सिद्दीका ﷺ फर्माती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ जब बीमार होते, तो मुअव्वज़तैन ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ﴾ और ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾ पढ कर अपने ऊपर दम कर लिया करते थे।

[मुस्लिम : ५७१५]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : यतीम के माल के करीब भी मत जाओ, मगर ऐसे तरीके से जो शरई तौर पर दुरुस्त हो, यहाँ तक के वह अपनी जवानी की मंज़िल को पहुँच जाए; और नाप तौल इन्साफ़ से पूरा करो और हम किसी शख्स को उस की ताकत से ज़ियादा अमल करने का हुक्म नहीं देते।

[सूर-ए-अन्आम : १५२]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ | हज़रत खब्बाब बिन अरत ﷺ

हज़रत खब्बाब बिन अरत ﷺ ने शुरु ज़माने में ही इस्लाम कबूल कर लिया था, मुसलमान हो जाने की वजह से कुफ़्फ़ार ने उन्हें बे पनाह तकलीफें पहुँचाई । नंगी पीठ पर लोहे की ज़िरह पहना कर चिलचिलाती धूप में डाल दिया जाता, धूप की गर्मी से लोहे की ज़िरह बिल्कुल गर्म हो जाती, कभी अंगारों पर लिटा दिया जाता जिस की वजह से कमर का गोश्त झुलस गया था, उन की मालकिन उम्मे अन्मार लोहे की सलाख गर्म कर के उन के सर पर दागा करती थी, मगर हज़रत खब्बाब ﷺ उन तमाम तकलीफों को बरदाश्त करते थे, एक दिन उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से इस की शिकायत की, आप ﷺ ने उन के बारे में यह दुआ फ़र्माई : ((اَللّٰهُمَّ انْصُرْ خَبَّابًا)) ऐअल्लाह ! खब्बाब की मदद फ़र्मा। आखिर आप ﷺ की दुआ से अल्लाह तआला ने हज़रत खब्बाब को नजात दी, हज़रत खब्बाब ﷺ कुर्आन के आलिम थे, हज़रत उमर ﷺ की बहन फ़ातिमा और सईद बिन ज़ैद के घर में कुर्आन की तालीम देते थे। सब से पहले मदीना की उन्हों ने ही हिजरत फ़र्माई, अखीर ज़माने में वह कूफ़ा चले गए थे और वहीं ७३ साल की उम्र में सन ३७ हिजरी में इन्तेकाल फ़र्माया ।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा | फलों में बरकत

हज़रत अनस ﷺ हुज़ूर ﷺ की खिदमत में दस साल रहे, आप ﷺ ने उन के लिए बरकत की दुआ फ़र्माई (ऐ अल्लाह ! इस के माल व औलाद) में ज़ियादती फ़र्मा और जो कुछ तू ने दिया है उस में बरकत अता फ़र्मा।

[बुखारी : ६३४४]

चुनान्चे रावी फ़र्माते हैं के हज़रत अनस ﷺ का एक बाग था जो साल में दो मर्तबा फल देता था और उस बाग में एक पौदे से मुश्क की खुशबू आती थी।

[तिर्मिज़ी : ३८३३, अन अबिल आलिया ﷺ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | तकबीरे ऊला से नमाज़ पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जो शख्स चालीस दिन इख्लास से तक्बीरे ऊला के साथ बा जमात नमाज़ पढ़ता है, तो उस को दो परवाने मिलते हैं । एक जहन्नम से बरी होने का दूसरा निफ़ाक़ से बरी होने का ।

[तिर्मिज़ी : २४१, अन अनस बिन मालिक ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | छींक की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जब तुम में से किसी को छींक आए तो ((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ)) कहे और उस

को सुनने वाला ((يَرْحَمُكَ اللهُ)) कहे और फ़िर उस के जवाब में ((يَهْدِيكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ)) कहे।

[इब्ने माजा : ३७१५, अन अली ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	खुशूअ वाली नमाज़ माफ़ी का ज़रिया

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह का जो बन्दा ऐसी दो रकात नमाज़ पढे, जिस में किसी तरह की कोई भूल चूक न हुई हो, तो अल्लाह तआला (उस नमाज़ के बदले में) उस के सारे पिछले गुनाह माफ़ फ़र्मा देगा।"

[मुस्नदे अहमद : २११८३, ज़ैद इब्ने खालिद अल जुहनी ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	ज़ुल्म से न रोकने का वबाल

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो कौमें तुम से पहले हलाक हो चुकी हैं उन में ऐसे समझदार लोग न हुए, जो लोगों को मुल्क में फसाद फैलाने से मना करते, सिवाए चंद लोगों के जो फ़साद से रोकते थे। जिन को हम ने अज़ाब से बचा लिया।

[सूर-ए-हूद : ११६]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	मखलूक का रिज़्क अल्लाह के ज़िम्मे है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ज़मीन पर चलने फिरने वाला कोई भी जानदार ऐसा नहीं के उस की रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे न हो।

[सूर-ए-हूद : ६]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	जहन्नमी हथोड़े

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : अगर जहन्नम के लोहे के हथोड़े से पहाड़ को मारा जाए, तो वह रेज़ा रेज़ा हो जाएगा, फिर वह पहाड़ दोबारा अपनी असली हालत पर लौट आएगा।

[मुस्नदे अहमद : ११३७७, अन अबी सईद ﷺ]

नंबर (९): कुर्आन से इलाज	बेहोशी का इलाज

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ ने एक बेहोश शख्स के कान में कुछ पढ कर दम किया, जिस से वह होश में आ गया, तो आप ﷺ ने दर्याफ़्त फ़र्माया : तुम ने क्या पढ़ा? उन्होंने अर्ज़ किया : أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا से आखिर सूर-ए-मोमिनून यानी وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ तक। आप ﷺ ने फ़र्माया : (अगर कोई शख्स पूरे यकीन के साथ इस को पढ कर पहाड़ पर दम करदे, तो वह भी अपनी जगह से हट जाए।

[इब्ने सुन्नी : ६३१]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा इस्लाम में कौन सी बात खूबी की है? रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : खाना खिलाओ और सलाम करो जिस को जानते होऔर जिस को न जानते हो।

[बुखारी : १२, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१) शव्वालुल मुकर्रम

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत उम्मे फ़ज़्ल बिन्ते हारिस ؓ

उम्मे फ़ज़्ल बिन्ते हारिस ؓ हुज़ूर ﷺ के चचा हज़रत अब्बास ؓ की बीवी, उम्मुल मोमिनीन हजरत मैमूना ؓ की बहन और खालिद बिन वलीद ؓ की खाला थीं। आप का नाम लुबाबा था। हज़रत खदीजा ؓ के बाद हज़रत उम्मे फ़ज़्ल ؓ मुसलमान होने वाली दूसरी औरत हैं, जब मुसलमान शिअ्बे अबी तालिब में कैद थे, तो उम्मे फ़ज़्ल ؓ भी उसी कैद व बंद में मशक्कत बरदाश्त कर रही थीं, और कैद ही की हालत में अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ की पैदाइश हुई। मक्का मुकर्रमा में कुफ़्फ़ार हुज़ूर ﷺ से दुश्मनी रखते थे, उस वक्त हज़रत उम्मे फ़ज़्ल ؓ हुज़ूर ﷺ का साथ देती थीं, हज़रत अब्बास ने अब तक इस्लाम कबूल नहीं किया था, इस लिए उम्मे फ़ज़्ल ؓ शुरु में हिजरत नहीं कर सकीं, लेकिन जब उन्हों ने इस्लाम कबूल कर लिया तो फिर हज़रत अब्बास के साथ हिजरत कर के मदीना आ गईं, उम्मे फ़ज़्ल ؓ बड़ी इबादत गुज़ार थीं, कसरत से नफ़्ल नमाज़ पढ़ती और नफ़्ल रोज़े रखतीं, खास तौर से पीर और जुमेरात को रोज़ा रखती थीं, हुज़ूर ﷺ कभी कभी खैरियत दर्याफ़्त करने के लिए उन के घर तशरीफ़ ले जाते कभी वहां कैलूला फ़र्माते। हज़रत उम्मे फ़ज़्ल ؓ का इन्तेक़ाल हज़रल अब्बास ؓ से कब्ल हज़रत उस्मान ؓ के ज़मान-ए-खिलाफ़त में हुआ, नमाज़े जनाज़ा हज़रत उस्मान ؓ ने पढ़ाई।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — जुगनू में अल्लाह की निशानी

अल्लाह तआला ने इस ज़मीन में मुख्तलिफ किस्म के जानदार बनाए हैं और हर जानदार की खासियत अलग अलग है, हम अगर अपनी ताकत से एक छोटा सा बल्ब भी जलाना चाहें तो बग़ैर बिजली के नहीं जला सकते, लेकिन अल्लाह तआला ने सिर्फ़ अपनी कुदरत से एक छोटा सा कीड़ा "जुगनू" बनाया जो अपने अंदर रौशनी ले कर चलता है, यह अल्लाह की कुदरत का एक ज़बरदस्त करिश्मा है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — वरासत में लड़की का हिस्सा

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है अल्लाह तआला तुम को तुम्हारी औलाद के हक में हुक्म देता है के एक लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के बराबर है। [सूर-ए-निसा : ११]

फ़ायदा : वालिदैन की वरासत में लड़के के दो हिस्से और लड़की का एक हिस्सा होता ह, जिस का अदा करना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — इस्तिंजा के बाद वुज़ू करना

हज़रत आयशा ؓ फ़र्माती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ जब बैतुल खला से निकलते तो वुज़ू फ़र्माते। [मुस्नदे अहमद : २५०११]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	कौन सी दुआ अफ्ज़ल है

रसूलुल्लाह ﷺ से दर्याफ़्त किया गया : "कौन सी दुआ अफ्ज़ल है? आप ﷺ ने फ़र्माया : आदमी का अपने लिए दुआ करना, (लिहाज़ा लोगों के सामने अपनी ज़रुरतें बताने के बजाए अल्लाह तआला ही से अपनी ज़रुरतों का सवाल करना चाहिए)।" [मुस्तदरक : १९९२, अन आयशा ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	दिखावे के लिए कपड़ा पहनना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स शोहरत के लिए दुनिया में कपड़े पहनेगा, अल्लाह तआला उस को कयामत के दिन रुसवाई के कपड़े पहनाएगा और फिर उस में आग भड़काएगा।"

[इब्ने माजा : ३६०८, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनियावी ख्वाहिशों को पूरा करने का अंजाम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स दुनिया में अपनी ख्वाहिशों को पूरा करता है, वह आखिरत में अपनी ख्वाहिशात के पूरा करने से महरूम होता है।" [बैहकी शुअबुल ईमान: ९३९०, अन बराअ बिन आज़िब ؓ]

फ़ायदा : अपनी तमाम चाहतों को इसी दुनिया में पूरी करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरना आखिरत में महरुम हो जाएगा।

नंबर (८): आखिरत के बारे में	अहले जन्नत की नेअ्मतें

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : परहेज़गारों के लिए (आख़िरत में) अच्छा ठिकाना है, हमेशा रहने वाले बागात हैं, जिन के दरवाज़े लोगों के लिए खुले हुए होंगे, वह उन बागों में तकिये लगाए बैठे होंगे, वह वहां (जन्नत के खादिमों से) बहुत से मेवे और पीने की चीज़ें मंगाएंगे और उन लोगों के पास नीची नज़रों वाली हम उम्र हूरें होंगी। [सूर-ए-सॉद : ४९ ता ५२]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	ज़ख्म वगैरह का इलाज

हज़रत आयशा ؓ फ़र्माती हैं : अगर किसी को कोई ज़ख्म हो जाता या दाना निकल आता, तो आप ﷺ (थूक के साथ) मिट्टी को उंगली में लगाते और ज़ख्म की जगह रखते और यह दुआ पढ़ते :

((بِسْمِ اللّٰهِ تُرْبَةُ اَرْضِنَا بِرِيْقَةِ بَعْضِنَا يُشْفٰى سَقِيْمُنَا بِاِذْنِ رَبِّنَا))

तर्जमा : अल्लाह के नाम से हमारी ज़मीन की मिट्टी हम में से किसी के थूक के साथ मिली हुई लगाता हूँ (ताके) हमारे रब के हुक्म से हमारा मरीज़ अच्छा हो जाए। [मुस्लिम : ५७१९, अन आयशा ؓ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ ईमान वालो ! सच्ची बात यह है के शराब, जुवा, बुतों के स्थान और फाल खोलने के तीर, यह सब शैतान के नापाक काम हैं ; लिहाज़ा तुम इन से बचो ताके तुम अपने मकसद में कामयाब हो जाओ। [सूर-ए-माइदा : ९०]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१०) शव्वालुल मुकर्रम

नंबर (१): इस्लामी तारीख | हुज़ूर ﷺ से सहाबा ﷺ की मुहब्बत

सन ५ हिजरी गज़्व-ए-बनी मुस्तलिक के मौके पर एक मुहाजिर और एक अन्सारी में किसी बात पर झगड़ा हो गया और दोनों तरफ़ जमातें बन गईं और करीब था के आपस में मअ्रिका गरम हो जाए, मगर बाज़ लोगों ने बीच में पड़ कर सुलह करा दी। ऐसे मौके पर अब्दुल्लाह बिन उबई जो मुनाफ़िक़ों का सरदार था, उस ने हुज़ूर ﷺ की शान में गुस्ताखाना अल्फ़ाज़ कहे और यह भी कहा के खुदा की कसम हम लोग अगर मदीना पहुँच गए, तो हम इज़्ज़त वाले मिल कर इन ज़लीलों को वहां से निकाल देंगे। अब्दुल्लाह बिन उबई के बेटे जिन का नाम भी अब्दुल्लाह था और बड़े पक्के सच्चे मुसलमान थे, जब उन को यह बात मालूम हुई, तो मदीना मुनव्वरा से बाहर तलवार खींच कर खड़े हो गए और बाप से कहने लगे; के उस वक्त तक मदीना में दाख़िल नहीं होने दूंगा जब तक इस का इकरार न करो के तुम ज़लील हो और मुहम्मद ﷺ इज़्ज़त वाले हैं। उस को बड़ा तअज्जुब हुआ, के मेरा बेटा जो हमेशा मेरी इज़्ज़त और फ़र्माबरदारी करता था, आज हुज़ूर ﷺ के खिलाफ़ मेरी बात को बरदाश्त न कर सका। इतने में रसूलुल्लाह ﷺ का उधर से गुज़र हुआ तो फ़र्माया : अब्दुल्लाह जाने दो ! जब तक वह हमारे दर्मियान है, हम उन के साथ अच्छा ही सुलूक करेंगे।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा | कुव्वते हाफिज़ा का बढ़ जाना

हज़रत उस्मान बिन अबिल आस ﷺ फ़र्माते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से कुर्आन याद न होने की शिकायत की, तो आप ﷺ ने फ़र्माया : यह खंज़ब नामी शैतान का काम है और फिर फ़र्माया : करीब आओ, मैं आप ﷺ के करीब आ गया, फिर हुज़ूर ﷺ ने मेरे सीने पर हाथ मुबारक रखा, जिस से मुझे ठंडक भी महसूस हुई और फ़र्माया : शैतान ! उस्मान के सीने से निकल जा। हज़रत उस्मान ﷺ फ़र्माते हैं : इस वाकिआ के बाद मैं जो भी चीज़ सुनता, वह मुझे याद हो जाती।

[दलाइलुन्नुबुव्वह लिल अस्बहानी : ३८३]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | वुज़ू में चमड़े के मोज़े पर मसह करना

हज़रत अली ﷺ फ़र्माते हैं : मैं नें हुज़ूर ﷺ को मोज़े के ऊपर के हिस्से पर मसह करते देखा।

[अबू दाऊद : १६२]

फ़ायदा : जब किसी ने बा वुज़ू चमड़े का मोज़ा पहना हो, फिर वुज़ू टूट जाए, तो वुज़ू करते वक्त उन मोज़ों के ऊपरी हिस्से पर मसह करना ज़रुरी है। मुसाफ़िर के लिये तीन दिन तीन रात और मुक़ीम के लिये एक दिन एक रात जाइज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | परेशानी दूर करने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जब तुम्हे ग़म व परेशानी हो, तो यह दुआ पढ़ लिया करो:

((حَسْبِيَ اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ))

तर्जमा : अल्लाह तआला मेरे लिए काफ़ी है और वही बेहतरीन काम बनाने वाले हैं।

[अबू दाऊद : ३६२७, अन औफ बिन मालिक ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | खुश दिली से मुलाकात करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब दो मुसलमान मुलाकात करते हैं और एक दूसरे को सलाम करते हैं, तो अल्लाह तआला के नज़दीक इन दोनो में से ज़ियादा महेबूब वह शख्स है, जो अपने साथी से ज़ियादा खुश दिली से मुलाकात करे जब वह दोनों मुसाफ़ा करते हैं, तो अल्लाह तआला उन पर सौ रहमतें नाज़िल फ़र्माता है, उन में से नव्वे रहमतें मुसाफ़ा में पहल करने वाले पर और दस रहमतें मुसाफ़ा करने वाले दूसरे आदमी पर नाज़िल फ़र्माता है।" [कन्ज़ुल उम्माल : २५२४०, अन उमर ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | शिर्क करने वाले की मिसाल

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम सिर्फ़ अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जेह रहो उस के साथ किसी को शरीक मत ठहराओ और जो शख्स अल्लाह के साथ शिर्क करता है, तो उस की मिसाल ऐसी है जैसा के वह आस्मान से गिर पड़ा हो, फिर परिंदों ने उस की बोटियाँ नोच ली हों या हवा ने किसी दूर दराज़ मकाम पर लेजा कर उसे डाल दिया हो। [सूर-ए-हज : ३१]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनियावी ज़िन्दगी धोका है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "दुनियवी ज़िन्दगी तो कुछ भी नहीं सिर्फ़ धोके का सौदा है।" [सूर-ए-आले इमरान:१८५] **फ़ायदा :** जिस तरह माल के ज़ाहिर को देख कर खरीदार फंस जाता है, इसी तरह दुनिया की चमक दमक से धोका खा कर आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाता है; इसी लिए इन्सानो को दुनिया की चमक दमक से होशयार रहना चाहिए।

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | कयामत किस दिन कायम होगी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम्हारे दिनों में अफ़ज़ल दिन जुमा का दिन है, इसी रोज़ हज़रत आदम ؑ को पैदा किया गया, इसी रोज़ उन का इन्तेकाल हुआ, इसी रोज़ सूर फूंका जाएगा और इसी दिन क्यामत कायम होगी।" [अबू दाऊद : १०४७, अन औस बिन औस ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | हर मर्ज़ का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : तुम में से कोई शख्स बीमार हो जाए या किसी के भाई को तकलीफ़ हो, तो यह दुआ पढे : ((رَبَّنَا اللّٰهُ الَّذِیْ فِی السَّمَاءِ تَقَدَّسَ اِسْمُكَ وَاَمْرُكَ فِی السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ كَمَا رَحْمَتُكَ فِی السَّمَاءِ فَاجْعَلْ رَحْمَتَكَ فِی الْاَرْضِ اِغْفِرْلَنَا حُوْبَنَا وَخَطَايَانَا اَنْتَ رَبُّ الطَّيِّبِيْنَ اَنْزِلْ رَحْمَةً مِنْ رَّحْمَتِكَ وَشِفَاءً مِنْ شِفَائِكَ عَلٰى هٰذَا الْوَجَعِ)) [अबू दाऊद : ३८९२, अन अबी दर्दा ؓ]

फ़ायदा : इस दुआ को मरीज़ पढ़ता रहे या और कोई पढ कर उस पर दम करे।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत मुआज़ ؓ से फ़र्माया : क्या मैं तुम्हें वह चीज़ बतला दुं जिस पर गोया इस्लाम का मदार है और जिस के बगैर यह सब चीज़े हेच और बे वज़न हैं? मैं नेअर्ज़ किया : हज़रत ! बतला दीजिए। पस आप ﷺ ने अपनी ज़बान पकड़ी और फ़र्माया : इस को रोको, (ताके यह चलने में बेबाक और बे एहतियात न हो जाए। [तिर्मिज़ी : २६१६, अन मुआज़ बिन जबल ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर १ : इस्लामी तारीख — हज़रत उम्मे ऐमन ﷺ

हज़रत उम्मे ऐमन ﷺ हुज़ूर ﷺ के वालिद की बांदी थीं, आप के वालिद के इन्तेक़ाल के बाद मीरास में आप के पास आगई, उन का नाम बरकत बिन्ते सालबा था, वालिदा मोहतरमा की वफ़ात के बाद उम्मे ऐमन ने आप की पर्वरिश फ़र्माई। इसी लिये हुज़ूर ﷺ फ़र्माते थे : मेरी वालिदा के बाद उम्मे ऐमन मेरी वालिदा हैं, हुज़ूर ﷺ ने आज़ाद कर के उन का निकाह उबैद बिन ज़ैद से कर दिया, बाद में उन का निकाह ज़ैद बिन हारसा ﷺ से हुआ। पहले शौहर से ऐमन ﷺ और दूसरे शौहर से उसामा पैदा हुए। उम्मे ऐमन ﷺ शुरू ही ज़माने में मुसलमान हो गईं, उन्होंने हब्शा और मदीने की हिजरत फ़र्माई, वह ग़ज़्व-ए-उहुद में ज़ख्मियों का इलाज, मरहम पट्टी और पानी पिलाने पर मुक़र्रर थीं। इसी तरह आप ﷺ ने ग़ज़्व-ए-ख़ैबर में भी शिरकत की। हुज़ूर ﷺ की वफ़ात पर हज़रत उम्मे ऐमन ﷺ ने बड़ा दर्द भरा क़सीदा कहा। हुज़ूर ﷺ की जुदाई बरदाश्त न कर सकीं और आप ﷺ की वफ़ात के सिर्फ़ पाँच महीने बाद शाबान सन ११ हिजरी में उन का भी इन्तेक़ाल हो गया।

नंबर २ : अल्लाह की कुदरत — नारियल में अल्लाह तआला की कुदरत

अल्लाह तआला ने नारियल को बनाया और अपनी कुदरत से इस में ऐसा पानी रखा के वह पानी अगर ज़मीन को खोदें तो उस में नहीं, दरख्त को काटें तो उस में नहीं, लेकिन अल्लाह तआला ने सिर्फ़ अपनी कुदरत से इस फल के अंदर ऐसा पानी रखा है जिस में बहुत सी बीमारियों के लिए शिफ़ा और इलाज है।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — कज़ा नमाज़ों की अदायगी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो कोई नमाज़ पढ़ना भूल गया या नमाज़ के वक्त सोता रह गया, तो (उस का कफ़्फ़ारा यह है के) जब याद आए उसी वक्त पढ़ ले।" [तिर्मिज़ी : १७७, अन अबी कतादा ﷺ]

फ़ायदा : अगर किसी शख्स की नमाज़ किसी उज़्र की वजह से छूट जाए या सोने की हालत में नमाज़ का वक्त गुज़र जाए, तो बाद में उस को पढ़ना फ़र्ज़ है।

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — सजदा करने का सुन्नत तरीका

रसूलुल्लाह ﷺ जब सजदा फ़र्माते तो अपनी नाक और पेशानी को ज़मीन पर रखते और अपने बाज़ुओं को पहलू से अलग रखते और अपनी हथेलियों को कांधे के बराबर रखते।

[तिर्मिज़ी : २७०, अन अबी हुमैद ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	मुसलमान भाई के लिए दुआ करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "सब से जल्द कबूल होने वाली दुआ वह है, जो दुआ कोई मुसलमान अपने ऐसे भाई के लिए करे जो मौजूद न हो।" [तिर्मिज़ी : १९८०, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	बड़े गुनाह

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : क्या मैं तुम्हें गुनाहों में सब से बड़े गुनाह की खबर न दे दूँ? यह बात रसूलुल्लाह ﷺ ने तीन बार फ़र्माई। सहाबा ؓ ने अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के रसूल ! क्यों नहीं ! (ज़रुर बताइए), रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : अल्लाह के साथ किसी को शरीक करना और माँ बाप की ना फ़र्मानी करना और झूटी गवाही देना। [मुस्लिम : २५९, अन अबी बकरा ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की मुहब्बत से बचना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला तुम्हारे दुश्मनों के दिल से तुम्हारा ख़ौफ़ खत्म कर देगा और तुम्हारे दिलों में वहन डाल देगा।" सहाबा ؓ ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! वहन क्या चीज़ है? रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : दुनिया की मुहब्बत और मौत को ना पसंद करना।"

[अबू दाऊद : ४२९७, अन सौबान ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले जन्नत का हाल

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो लोग अपने रब से डरते रहे, उन को भी गिरोह के गिरोह बना कर जन्नत की तरफ़ रवाना किया जाएगा और जन्नत के मुहाफिज़ (फरिश्ते) उन से कहेंगे : तुम पर सलामती हो अच्छी तरह (मज़े में) रहो, जाओ जन्नत में हमेशा हमेश के लिए दाखिल हो जाओ।

[सूर-ए-ज़ुमुर : ७३]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	नज़रे बद का इलाज

एक शख़्स को नज़र लग गई, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उस के सीने पर हाथ मार कर यह दुआ फ़र्माई :

((اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنْهُ حَرَّهَا وَبَرْدَهَا وَوَصَبَهَا))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! इस की गर्मी, इस की ठंडक और तकलीफ़ को दूर कर दे। चुनान्चे वह शख़्स खड़ा हो गया। [मुस्नदे अहमद : १५२७३, अन आमिर बिन रबीआ ؓ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम औरतों के साथ हुस्ने सुलूक से ज़िन्दगी गुज़ारो और अगर तुम को उन की (कोई आदत) अच्छी न लगे (तो उस की वजह से सख्ती का बर्ताव न किया करो बल्के उस पर सब्र करो) क्योंकि, मुमकिन है तुम कीसी चीज को ना पसंद करो, मगर अल्लाह तआला ने उस में बहुत ज़ियादा भलाई रख दी हो। [सूर-ए-निसा : १९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(१२) शव्वालुल मुकर्रम

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत दुर्रह बिन्ते अबी लहब ﵂

हज़रत दुर्रह ﵂ हुज़ूर ﷺ के चचा अबूलहब की बेटी थीं, हिजरत से पहले मक्का मुकर्रमा में मुसलमान हुई, उन के शौहर हज़रत हारिस बिन नौफल ने भी इस्लाम कबूल किया, फिर दोनों ने मदीना की हिजरत की। हजरत दुर्रह ﵂ जब मदीना पहुँची, तो मदीने की औरतों ने कहा : तुम्हारे हिजरत करने से कोई फ़ायदा नहीं इस लिए के तुम्हारे बाप अबू लहब के खिलाफ़ एक सूरह नाज़िल हुई; उन्होंने हुज़ूर ﷺ से शिकायत की, तो हुज़ूर ﷺ ने नमाज़ के बाद लोगों को जमा किया और फ़र्माया : मेरे खानदान वालों के बारे में मुझे क्यों तकलीफ़ दी जाती हैं? हुज़ूर ﷺ की इस बात से लोगों कोअपनी गलती का एहसास हुआ, हज़रत दुर्रह ﵂ की फ़ज़ीलत के लिए इतना काफ़ी है के हुज़ूर ﷺ ने उन के लिए फ़र्माया : जो तुम्हें गुस्सा दिलाएगा अल्लाह को उस पर गुस्सा आएगा और फ़र्माया : मैं तुम से हुँ और तुम मुझ से हो। हज़रत दुर्रह ﵂ के वालिद अबू लहब को हुज़ूर ﷺ से सख्त दुश्मनी थी, उस के बावजूद अपने वालिद की परवाह किए बगैर उन्हों ने इस्लाम कबूल किया । यह इस्लाम की हक्कानियत की दलील है। हुज़ूर ﷺ ने फ़तहे मक्का के बाद हज़रत दुर्रह ﵂ के शौहर हजरत हारिस ﵁ को जिद्दह का गवर्नर बनाया था । हजरत दुर्रह ﵂ से मुहद्दिसीन ने कुछ हदीसें नकल की हैं। उन की वफ़ात हज़रत उमर ﵁ के ज़मान-ए-खिलाफ़त में सन २० हिजरी में हुई।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — ज़ैद बिन अरकम ﵁ के बारे में गोई

हज़रत उनैसा ﵂ फर्माती हैं एक मर्तबा मेरे वालिद हज़रत ज़ैद बिन अरकम ﵁ बीमार हुए, तो रसूलुल्लाह ﷺ इयादत के लिए तशरीफ लाए, आप ﷺ ने फ़र्माया: यह बीमारी तो इतनी ज़ियादा खतरनाक नहीं इस लिए कोई हरज नहीं, लेकिन मेरी वफ़ात के बाद आप की बीनाई चली जाएगी और आप की उम्र भी ज़ियादा होगी, उस वक्त आप क्या करेंगे? तो हज़रत ज़ैद ﵁ ने फ़र्माया: तब तो मैं सवाब की उम्मीद रखूंगा और सब्र करुंगा, हुज़ूर ﷺ ने फ़र्माया : तुम बगैर हिसाब के जन्नत में दाखिल होगे, चुनान्चे आप ﷺ के फ़र्मान के मुताबिक आप ﷺ की वफ़ात के बाद हज़रत ज़ैद ﵁ की आँख से रौशनी खत्म हो गई फिर कुछ मुद्दत के बाद अल्लाह ने उन की बीनाई वापस कर दी और फ़िर वफ़ात पाई।

[दलाइलुन्नुबुव्वह लिल बैहकी : २८२३]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सच्ची गवाही देना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ ईमान वालो ! इन्साफ़ पर कायम रहते हुए अल्लाह के लिए गवाही दो, चाहे वह तुम्हारी ज़ात, वालिदैन और रिश्तेदारों के खिलाफ़ ही (क्यों न) हो।

[सूर-ए-निसा : १३५]

फ़ायदा : सच्ची गवाही देना और झूठी गवाही देने से बचना ज़रुरी है ।

नंबर (४) : एक सुन्नत के बारे में | **दुश्मन से बचने की दुआ**

रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी कौम से खौफ़ या डर महसूस करते तो यह दुआ पढ़ते :

((اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِىْ نُحُوْرِهِمْ وَ نَعُوْذُ بِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह हम तुझ को उन दुश्मनों के मुकाबले में पेश करते हैं और उन के शर से पनाह चाहते हैं। [अबू दाऊद : १५३७, अन अबी मूसा अशअरी ﷺ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | **तक़्वा और हुस्ने अख़लाक का दर्जा**

रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा गया के किस अमल से अक्सर लोग जन्नत में जाएंगे? तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : तक़्वा और अच्छे अख़लाक की वजह से।

[मुस्तदरक हाकिम : ७९१९, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में | **अल्लाह और रसूल की ना फ़र्मानी करना**

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जो शख़्स अल्लाह और उस के रसूल का कहना न माने वह खुली हुई गुमराही में है ।" [सूर-ए-अहज़ाब : ३६]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में | **सवारी के जानवर**

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "उसी (यानी अल्लाह ने) घोड़े और खच्चर और गधे भी पैदा किए ताके तुम उन पर सवार हो कर ज़ेब व ज़ीनत हासिल करो और आइन्दा भी ऐसी चीज़ें पैदा कर देगा, जिन को तुम अभी नहीं जानते।" [सूर-ए-नहल : ८]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में | **अहले जन्नत की उम्रें**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जन्नती लोग जन्नत में बग़ैर दाढ़ी के सुर्मा लगाए हुए तीस या तैंतीस साला नौजवान की शक्ल में दाखिल होंगे ।" [तिर्मिज़ी : २५४५, अन मुआज़ बिन जबल ﷺ]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज | **कान बजने का इलाज**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जब तुम में से किसी का कान बजे, तो मुझे याद करे और मुझ पर दुरूद भेजे। [इब्ने सुन्नी : १६६, अन अबू राफेअ ﷺ]

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : तुम मौत की तमन्ना न करो, क्यों कि आख़िरत का मामला निहायत सख़्त है; और नेक बख़्ती की अलामत यह है के उम्र ज़ियादा हो और उस को तौबा की तौफ़ीक मिल जाए। [मुस्नदे अहमद : १४१५४, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(१३) शव्वालुल मुकर्रम

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ | हज़रत उम्मे अय्यूब ﷺ

हज़रत उम्मे अय्यूब बिन्ते क़ैस मशहूर सहाबी हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी ﷺ की बीवी हैं, इस नेक सीरत खातून ने हिजरत से पहले ही इस्लाम कबूल कर लिया था, जब हुज़ूर ﷺ हिजरत फ़र्मा कर मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए, तो सात महीने तक उन्हीं के यहां कयाम फ़र्माया और दो जहां के सरदार की मेज़बानी का शर्फ हासिल हुआ, उम्मे अय्यूब बड़े शौक से आप ﷺ की पसंद के मुताबिक तरह तरह के खाने तय्यार करतीं ; और तमाम घर वाले राहत व आराम पहुंचाने में लगे रहते, हुज़ूर ﷺ घर के निचले हिस्से में तशरीफ़ फर्मा थे, इस लिए अहले खाना बड़ी एहतियात के साथ घर की छत पर रहतेऔर चलने फिरने में आप की राहत का खास खयाल रखते, एक रोज़ छत के ऊपर पानी से भरा हुआ घड़ा टूट गया, तो सर्दी के मौसम में लिहाफ़ से पानी को जज़्ब किया, ताके पानी आप ﷺ के ऊपर न गिरने पाए और खुद बगैर लिहाफ के सर्दी के आलम में पूरी रात गुज़ारी, सुबह होते ही खिदमते नब्वी में दरख्वासत की के आप ऊपर की मंज़िल पर कयाम फ़र्माएं, तो बड़ा एहसान होगा, इन की इस आजिज़ाना दरख्वासत पर आप ﷺ ने मकान के ऊपर कयाम फ़र्माया। उम्मे अय्यूब नेक सीरत और इबादत में मसरूफ रहने वाली खातून थीं।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत | बच्चों की पैदाइश और उन की मुहब्बत

इन्सान को अल्लाह तआला ने तमाम मखलूकात पर शराफ़त बख्शी, इन्सान अपने दिल में इज़्ज़त का जज़्बा रखता है, लेकिन ज़रा गौर करे के यह इज़्ज़त वाले इन्सान को अल्लाह ने कैसी बेहैसियत चीज़ से पैदा किया, अगर वह किसी के कपड़े में लग जाए, तो थोड़ी देर भी उस को बरदाश्त न करे, बल्के फौरन धो डाले, वही अल्लाह इस गंदे कतरे को अपनी कुदरत से तबदील कर के एक भोला भाला बच्चा बना देता है, जिस से माँ बाप ही नहीं बल्के सभी रिश्तेदार मुहब्बत करते हैं, जिस गंदे क़तरे से नफरत थी, उस से बच्चा बनने पर दिलों में मुहब्बत कौन पैदा करता है, यकीनन वह अल्लाह है जो अपनी कुदरत से नफ़रत को मुहब्बत से बदलता है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "हम ने इन्सानों को अपने वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक्करने का हुक्म दिया है।" [सूर-ए-अहक़ाफ़ : १५]

फ़ायदा : वज़्ए हमल से लेकर पैदाइश तक कितनी परेशानी उठानी पड़ती है, फिर पैदाइश के बाद पर्वरिश और तालीम व तर्बियत की ज़िम्मे दारी निभाना पड़ता है। इस लिए वालिदैन की फ़र्मांबर्दारी करना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | सजदे में उंगलियों को रखने का तरीका

रसूलुल्लाह ﷺ जब रुकूअ फ़र्माते तो (हाथों की) उंगलियों को खुली रखते और जब सजदा फ़र्माते, तो उंगलियां मिला लेते। [तबरानी कबीर : १७४९५, अन वाइल बिन हुज्र ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	सब से अफ़ज़ल सदका

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "सब से अफ़ज़ल सदका यह है, के एक मुसलमान इल्म सीख कर दूसरे मुसलमान भाई को सिखाए।" [इब्ने माजा : २४३, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	किसी मुसलमान का हक़ मारना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : (झूटी) कसम के ज़रिये मुसलमान का हक छीन लेने वाले पर अल्लाह तआला ने दोज़ख वाजिब कर दी है और जन्नत हराम कर दी है। एक शख्स ने अर्ज किया : या रसूलल्लाह ! अगर मामूली चीज़ हो? रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : अगरचे पीलू की एक लकड़ी ही क्यों न हो। [मुस्लिम : ३५३, अन अबी उमामा ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया के लालची अल्लाह की रहमत से दूर

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क़यामत करीब आचुकी है और लोग दुनिया की हिर्स व लालच और अल्लाह तआला की रहमत से दूरी में बढ़ते ही जा रहें है।" [मुस्तदरक : ७९१७, अन इब्ने मसऊद ؓ]

खुलासा : क़यामत के करीब आने की वजह से लोगों को नेकी कमाने की ज़ियादा से ज़ियादा फ़िक्र करनी चाहिए; लेकिन ऐसा करने के बजाए वह दुनिया की लालच में पड़ कर अल्लाह की रहमत से दूर होते जा रहें है।

नंबर (८): आखिरत के बारे में	इन्सानों के आज़ा की गवाही

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जिस दिन अल्लाह के दुश्मनों को दोज़ख पर जमा किया जाएगा, तो उन की जमातें बना दी जाएंगी, यहाँ तक के जब वह वहाँ पहूँचेगे, तो उन के कान, उन की आँखें और उन की खाल, उन के खिलाफ़ उन के किये हुए आमाल की गवाही देंगे। [सूर-ए-हामीम सजदा : १९ ता २०]

नंबर (९): कुर्आन से इलाज	सूर-ए-फ़ातिहा से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : सूर-ए-फ़ातिहा हर मर्ज़ की दवा है। [सुनने दारमी : ३४३३, अन अब्दुल मलिक बिन उमैर ؓ]

फ़ायदा : अल्लामा इब्ने कय्यिम رحمه الله फर्माते हैं : अगर जिस्म में कहीं दर्द हो, तो दर्द की जगह हाथ रख कर सात मर्तबा सुर-ए-फातिहा पढ़ें इन्शा अल्लाह आराम मिलेगा।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जब तुम बात किया करो, तो इन्साफ़ का खयाल रखा करो, अगरचे वह शख्स तुम्हारा रिश्तेदार ही हो और अल्लाह तआला से जो अहेद करो उस को पूरा किया करो, अल्लाह तआला ने तुम्हे इस का ताकीदी हुक्म दिया है। ताके तुम याद रखो (और अमल करो)। [सूर-ए-अन्आम : १५२]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१४) शव्वालुल मुकर्रम

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत उम्मे रुमान ﵂

हज़रत उम्मे रुमान ﵂ बिन्ते आमिर कनाना ﵁ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक ﵁ की ज़ौजा और उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा ﵂ की वालिद-ए-मोहतरमा हैं, पहले अब्दुल्लाह बिन सखबरा के निकाह में थीं, इन के इन्तेकाल के बाद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक ﵁ ने निकाह किया, इब्तेदाई ज़माने ही में मुसलमान हो गई थीं, जिस तरह हज़रत अबू बक्र ﵁ सच्चाई, अमानतदारी और करीमाना अख़लाक में मशहूर थे, बिलकुल इसी तरह हज़रत उम्मे रुमान भी सच्चाई, वफ़ादारी और सलीका मंदी में तमाम औरतों के दर्मियान एक अलग हैसियत रखती थीं। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक ﵁ जब हिजरत कर के मदीना आगए, तो तमाम अहले खाना मक्का ही में थे। हज़रत उम्मे रुमान ﵂ ने निहायत हौसलामंदी से बच्चों को संभाला और जब मदीना से हज़रत ज़ैद बिन हारिसा और अबू राफेअ वगैरा को चंद औरतों को लाने के लिए भेजा, तो उन्हीं के साथ उम्मे रुमान भी हज़रत आयशा ﵂ और हज़रत अस्मा को ले कर मदीना हिजरत कर गईं। उन्होंने सन ९ हिजरी, या उस के बाद इन्तेक़ाल फ़र्माया, आँ हज़रत ﷺ खूद कब्र में उतरे और दुआए मग़फिरत की।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — दूध में बरकत

एक मर्तबा हज़रत खब्बाब की बेटी एक बकरी लेकर रसूलुल्लाह ﷺ के पास हाज़िर हुई, तो हुज़ूर ﷺ ने उस को एक तरफ बांध दिया और फिर दूहा और फ़र्माया : बड़ा बरतन लाओ, हज़रत खब्बाब की बेटी एक बड़ा बरतन लेआई, जिस में आटा पीसा जाता था, फ़िर हुज़ूर ﷺ ने दूहना शुरु किया, यहाँ तक के वह बरतन भर गया, फिर फ़र्माया : अपने घर वालों को और पड़ोसियों को पिला दो।

[दलाइलुन्नुबुव्वह लिलबैहकी : २३८३]

फ़ायदा: बकरियां आम तौर पर इतना दूध नहीं देती हैं। उस बकरी से इतना ज़ियादा दूध निकलना के घर वाले और पड़ोसी भी पी लें, यह आप का मुअ्जिज़ा ही था।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — जमात से नमाज़ पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : आदमी का जमात से नमाज़ पढ़ना अकेले नमाज़ पढ़ने से बीस दर्जे से भी ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है।

[मुस्नदे अहमद : ३५५४, अन अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﵁]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — पाँच चीज़ों से बचने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ पाँच चीज़ों से इस तरह पनाह माँगते थे :

((اَللّٰهُمَّ إِنِّىْ أَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَالْجُبْنِ وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ سُوْءِ الْعُمُرِ وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الصَّدْرِ وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं कन्जूसी, बुज़दिली, बुरी ज़िंदगी, दिल की बीमारी और अज़ाबे कब्र से तेरी पनाह चाहता हूँ। [नसई : ५४९९, अन उमर]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत — तालिबे इल्म अल्लाह के रास्ते में

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स इल्म हासिल करने के लिए घर से निकलता है, वह अल्लाह के रास्ते में होता है, यहाँ तक के लौट कर वापस आजाए।" [तिर्मिज़ी : २६४७, अन अनस बिन मालिक]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में — झूटे खुदाओं की बेबसी

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जिस को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, वह खजूर की गुठली के एक छिलके का भी इख्तियार नहीं रखते; अगर तुम उन को पुकारो भी, तो वह तुम्हारी पुकार सुन भी नहीं सकते और अगर (बिल फ़र्ज) सुन भी लें तो तुम्हारी ज़रुरत पूरी न कर सकेंगे और क़यामत के दिन तुम्हारे शिर्क की मुखालफ़त व इन्कार करेंगे। [सूर-ए-फ़ातिर : १३ ता १४]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में — दुनिया की चीज़ों में गौर व फ़िक्र करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : इसी (बारिश के) पानी के ज़रिए अल्लाह तआला तुम्हारे लिए खेती, ज़ैतून, खजूर और अंगूर और हर किस्म के फल उगाता है, यकीनन इन चीज़ों में गौर व फ़िक्र करने वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं। [सूर-ए-नहल : ११]

नंबर (८) : आखिरत के बारे में — जहन्नम के दरवाज़े का फ़ास्ला

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जहन्नम के सात दरवाज़े हैं, हर दो दरवाज़ों के दर्मियान का फ़ास्ला एक सवार आदमी के सत्तर साल चलने के बराबर है।" [मुस्तदरक : ८६८३, अन लकीत बिन आमिर]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज — आग से जले हुए का इलाज

मुहम्मद बिन हातिब कहते हैं : गर्म हांडी पलट जाने की वजह से मेरा हाथ जल गया था, मेरी वालिदा मुझे रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में ले गईं, तो आप ﷺ मुझ पर यह पढ़ कर दम कर रहे थे,

((اَذْهِبِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ وَاشْفِ أَنْتَ الشَّافِى لَاشِفَاءَ إِلَّا شِفَائُكَ شِفَاءً لَايُغَادِرُ سُقْمًا))

[मुस्नदे अहमद : १५०२७]

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने एक आदमी से फ़र्माया : अगर तुम अपने दिल की नर्मी चाहते हो, तो यतीम के सर पर हाथ फेरा करो और मिस्कीन को खाना खिलाया करो। [मुस्नदे अहमद : ७५२२, अन अबी हुरैरह]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सल्मा

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सल्मा पहले अबू सल्मा बिन अब्दुल असद के निकाह में थीं, उन के इन्तेक़ाल के बाद हुज़ूर ﷺ ने निकाह फ़र्माया, वह अक्लमंद और बलंद अख़्लाक व किरदार वाली खातून थीं, ज़ाहिदाना ज़िंदगी गुज़ारतीं और राहे खुदा में बड़ी फ़य्याज़ी से खर्च किया करती थीं, लोगों को नेकी का हुक्म किया करतीं और बुराई से रोकतीं, हदीस सुनने का बहुत शौक था, हदीस में हज़रत आयशा के बाद कोई उन के मुकाबिल न थे, फ़िक्ही मालूमात, मामला फ़हमी, ज़हानत और दानिशमंदी में बलंद मकाम रखती थीं, जलीलुल कद्र सहाब-ए-किराम और बड़े बड़े ताबिईन उन से मसाइल की तहकीक़ किया करते थे, उन की राय की दुरुस्तगी और अक्लमंदी का अंदाज़ा इस से होता है के सुलह-ए-हुदैबिया के मौके पर जब कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों को उम्रह करने से रोक दिया, तो हुज़ूर ﷺ ने सहाब-ए-किराम को एहराम खोलने का हुक्म दिया, सहाब-ए-किराम पर उम्रह किए बग़ैर एहराम खोलना बहुत शाक गुज़रा, चुनान्चे उस मौके पर उम्मे सल्मा ही ने हुज़ूर ﷺ को मशवरा दिया के अभी सहाबा को सदमा है, इस लिए आप खुद पहले एहराम खोल दीजिए, फिर सहाबा भी अपने एहराम खोल देंगे, इस मशवरे को आप ﷺ ने पसंद फ़र्माया और ऐसा ही किया, उस वक्त सहाबा को यकीन हो गया के अब सुलह के शराइत बदल नहीं सकते, तो तमाम सहाबा ने एहराम खोल दिया। उन का इन्तेकाल शव्वाल सन ५९ हिजरी में हुआ और हज़रत अबू हुरैरह ने जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई ।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — शहद की मक्खी में अल्लाह की निशानी

अल्लाह तआला ने शहद की मक्खी को वह हुनर दिया है जिस से वह फूलों से रस चूस कर शहद बनाती है, उन के बनाए हुए शहद में इन्सान के लिए बहुत से फ़ायदे हैं, इतनी साइंसी तरक़्क़ी के बावजूद इन्सान शहद हासिल करने के लिए शहद की मक्खी का मोहताज है, कोई इन्सानी ताकत ऐसा करना चाहे तो यह ना मुमकिन है, यह अल्लाह की कुदरत की बहुत बड़ी निशानी है, वह एक छोटी सी मक्खी से इतना बड़ा काम लेता है ।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — शौहर के भाइयों से पर्दा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "(ना महरम) औरतों के पास आने जाने से बचो ! एक अन्सारी सहाबी ने अर्ज़ किया : देवर के बारे में आप क्या फ़र्माते हैं? तो आप ﷺ ने फ़र्माया: देवर तो (तुम्हारे लिए) मौत है (यानी शौहर के भाई वग़ैरह से पर्दा करना इन्तेहाई ज़रुरी है; क्योंकि वह तबाही व हलाकत में डालने का बड़ा सबब है ।)"

[बुखारी : ५२३२, अन उक़बा बिन आमिर]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — तीन उंगलियों से खाना खाना

हज़रत कअब बिन मालिक फ़र्माते हैं : रसूलुल्लाह ﷺ तीन उंगलियों से खाते थे और जब खाने से फ़ारिग हो जाते, तो उंगलियाँ चाट लेते थे।

[मुस्लिम : ५२९८, अन कअब]

खुलासा : खाने के बाद उंगलियों को चाटना सुन्नत है, लेकिन इस तरह नहीं चाटना चाहिए के देखने वाले को नागवार हो ।

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	यतीम के सर पर हाथ फेरना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जब कोई शख्स यतीम के सर पर हाथ फेरता है, तो अल्लाह तआला हर बाल के बदले में एक नेकी अता फ़र्माता है ।

[मुस्नदे अहमद : २१६४९, अन अबी उमामा ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	तकब्बुर की सज़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस शख्स के दिल में राई के बराबर भी तकब्बुर होगा, वह जन्नत में दाखिल न होगा। किसी ने कहा : आदमी अच्छे कपड़े और अच्छे जूते पसंद करता है, (तो क्या ऐसा करना तकब्बुर में शामिल है?) आप ﷺ ने फ़र्माया : अल्लाह तआला सफ़ाई सुथराई को पसंद करता है, तकब्बुर तो हक़ बात न मानना और लोगों को हकीर समझना है।"

[मुस्लिम : २६५, अन इब्ने मसऊद ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया में उम्मीदों का लम्बा होना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मुझे अपनी उम्मत पर सब से ज़ियादा डर ख्वाहिशात और उम्मीदों के बढ़ जाने का है ख्वाहिशात हक़ से दूर कर देती है और उम्मीदों का लम्बा होना आखिरत को भुला देता है यह दुनिया भी चल रही है और हर दिन दूर होती चली जा रही है और आखिरत भी चल रही है और हर दिन करीब होती जा रही है।" (यानी हर वक्त ज़िंदगी कम होती जा रही है और मौत करीब आती जा रही है, इस लिए आखिरत की तैयारी में लगे रहना चाहिए)।

[कन्ज़ुल उम्माल : ४३७५८, अन जाबिर ؓ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	नेक अमल करने वालों का इन्आम

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, वह जन्नत के बागों में दाखिल होंगे, वह जिस चीज़ को चाहेंगे उन के रब के पास उन को मिलेगी। (उन की) हर ख्वाहिश का पूरा होना भी बड़ा फ़ज़्ल व इन्आम है ।

[सूर-ए-शूरा : २२]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	जूँ पड़ने का इलाज

एक रिवायत में है के दो सहाबा ने रसूलुल्लाह ﷺ से एक गज़वह के मौके पर (कपड़ों में) जूँ पड़ जाने की शिकायत की, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन दोनों को रेशमी कमीस पहनने की इजाज़त दी ।

[बुखारी : २९२०, अन अनस ؓ]

फ़ायदा : जूँ पड़ना एक मर्ज़ है, जिस का इलाज आप ﷺ ने उस मौके पर रेशमी लिबास तजवीज़ फ़र्माया, यह लिबास अगरचे आम हालात में मर्दों के लिए जाइज़ नहीं है, लेकिन माहिर हकीम या डॉक्टर अगर ज़रुरत की वजह से तजवीज़ करे तो गुंजाइश है ।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : यह बताए हुए अहकाम ही मेरा सीधा रास्ता है, तुम इसी पर चलो और दूसरे (गलत) रास्तों पर मत चलो, वरना वह रास्ते तुम को राहे खुदा से हटा देंगे। अल्लाह तआला इस बात का तुम को ताकीद के साथ हुक्म देता है ; ताके तुम टेढ़े रास्ते से बच सको ।

[सूर-ए-अन्आम : १५३]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ्सा ؓ

हज़रत हफ्सा ؓ हज़रत उमर ؓ की साहबज़ादी और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर की हकीकी बहन हैं, नुबुव्वत से पाँच साल पहले पैदा हुई, पहले हज़रत खुनैस बिन हुज़ाफ़ा ؓ से निकाह हूआ, वह ग़ज़्व-ए-बद्र में शदीद ज़ख़्मी हो कर कुछ दिनों के बाद शहीद होगए, तो हुज़ूर ﷺ ने उन से निकाह फ़र्माया। हज़रत हफ़्सा ؓ बड़ी फ़ज़ल व कमाल की मालिक थीं उन के बारे में इब्ने सअद ने लिखा है के वह दिन में रोज़ा रखतीं और रात में इबादत करती थीं, और आखिर तक उन का रोज़ा रखने का अमल जारी रहा, इख़तिलाफ़ से बड़ी नफ़रत करती थीं, दज्जाल और उस के फितने से बहुत डरती थीं, उन्हें इल्मे हदीस व फ़िक़ह में भी महारत हासिल थी, हदीस की किताबों में इन से साठ हदीसें बयान की गई हैं, जो उन्होंने हुज़ूर ﷺ और हज़रत उमर ؓ से सुनी थीं, हज़रत अमीर मुआविया ؓ के दौरे खिलाफ़त में शाबान सन ४५ हिजरी में मदीना में उन का इन्तेकाल हुआ मदीना के गवर्नर मरवान ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और जन्नतुल बक़ी में दफ़्न की गई।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — लागर और बीमार का शिफ़ा पाना

एक औरत अपने कमज़ोर और बीमार बच्चे को ले कर रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई और कहने लगी : या रसूलल्लाह ! इस की इतनी उम्र हुई है, लेकीन इस की हालत तो देखिये, दुआ कीजिए के अल्लाह इसे मौत देदे, तो हुज़ूर ﷺ ने फ़र्माया : नहीं बल्के मैं इस के लिए दुआ करता हुँ के अल्लाह इसे शिफ़ा अता फ़र्माए और जवानी बख्शे और नेक आमाल करने वाला बन जाए और फिर अल्लाह के रास्ते में किताल करते हुए शहीद हो जाए और जन्नत में चला जाए, चुनान्चे हुज़ूर ﷺ की दुआ की वजह से अल्लाह ने उसे शिफ़ा बख्शी और जवानी पाई और नेक आमाल भी किए और फिर अल्लाह के रास्ते में किताल करते हुए शहीद हो गए और फिर जन्नत में दाखिल हो गए।

[बैहकी फ़ी दलाइलिन्नुबुव्वह : २४११]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — मस्जिद में नमाज़ अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो मुसलमान नमाज़ और अल्लाह तआला के ज़िक्र के लिए मसाजिद को अपना ठिकाना बना लेता है, तो अल्लाह तआला उस से ऐसे खुश होते हैं, जैसे घर के लोग अपने किसी घर वाले के वापस आने पर खुश होते हैं।"

[इब्ने माजा : ८००, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — जहन्नम के अज़ाब से हिफ़ाज़त की दुआ

जहन्नम के अज़ाब से बचने के लिए इस दुआ का एहतेमाम करना चाहिये :

﴿ رَبَّنَا إِنَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴾

तर्जमा : ऐ हमारे परवरदिगार! हम ईमान लाए हैं लिहाज़ा हमारे गुनाह माफ़ कर दीजिए और हमें दोज़ख के अज़ाब से बचा लीजिए। [सूर-ए-आले इमरान : १६]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | दो रकात पढ़ कर गुनाह से माफ़ी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "किसी ने कोई गुनाह किया और फिर वुज़ू कर के नमाज़ पढ़े और अल्लाह तआला से उस गुनाह की माफ़ी मांगे, तो अल्लाह तआला उस को माफ़ कर देता है।"

[तिर्मिज़ी : ४०६, अन अबी बक्र ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | मुअ्जिज़ात को न मानना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है जब हमारे रसूल उन पहली कौमों के पास खुली हुई दलीलें ले कर आए तो वह लोग अपने इस दुनियवी इल्म पर नाज़ करते रहे, जो उन्हें हासिल था, आखिर कार उन पर वह अज़ाब आ पड़ा जिस का वह मज़ाक उड़ाया करते थे। [सूर-ए-मोमिन : ८३]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | समुंदर इन्सानों की गिज़ा का ज़रिया है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : अल्लाह तआला ही ने समुंदर को तुम्हारे काम में लगा दिया है, ताके तुम उस में से ताज़ा गोश्त खाओ और उस में से ज़ेवरात (मोती वगैरह) निकाल लो, जिन को तुम पहनते हो और तुम कश्तियों को देखते हो, के वह दरया में पानी चीरती हुई चली जा रही है, ताके तुम अल्लाह तआला का फ़ज़ल यानी रोज़ी तलाश कर सको और तुम शुक्र अदा करते रहो।

[सूर-ए-नहल : १४]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | क़यामत से हर एक डरता है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "कोई मुकर्रब फ़रिश्ता, कोई आस्मान, कोई ज़मीन, कोई हवा, कोई पहाड़, कोई समुंदर ऐसा नहीं, जो जुमा के दिन से न डरता हो (इस लिए के जुमा के दिन क़यामत कायम होगी।" [इब्ने माजा : १०८४, अबू लुबाबा ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | कलौंजी से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "बीमारियों में मौत के सिवा ऐसी कोई बीमारी नहीं जिस के लिए कलौंजी में शिफा न हो।" [मुस्लिम : ५७६८, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "कैदियों को छुड़ाओ, भूके को खाना खिलाओ और बीमारों की इयादत करो।" [बुखारी : ३०४६, अन अबी मूसा ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश ؓ

हज़रत ज़ैनब ؓ हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश ؓ की बहन और हुज़ूर ﷺ की फूफी ज़ाद बहन थीं, उन्होंने शुरू ही में इस्लाम क़बूल कर लिया था। आप ﷺ ने उन का निकाह अपने मुंह बोले बेटे ज़ैद बिन हारिसा से कर दिया था। मगर दोनों में ख़ुशगवार तअल्लुक़ात क़ायम न रह सके। इस लिये हज़रत ज़ैद ने उन्हें तलाक़ दे दी। हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश ؓ के हक़ में कई आयतें नाज़िल हुईं। जिन में हुज़ूर ﷺ से निकाह कर देने की ख़बर दी गई, ज़मान-ए-जाहिलियत में अपने मुंह बोले बेटे की बीवी से शादी करने को नाजाइज़ समझते थे। इसी लिये अल्लाह तआला ने इस जाहिली रस्म को आप ही के ज़रिये ख़त्म करवाया और पर्दे की आयतें भी उन के सबब नाज़िल हुईं। हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश ؓ दस्तकारी के फ़न से वाक़िफ़ थीं, यह अपने हाथ के फ़न से रोज़ी कमा कर मदीने के ग़रीबों में तक़सीम कर दिया करती थीं। हज़रत आयशा ؓ फ़र्माती हैं के मैं ने ज़ैनब से ज़ियादा परहेज़गार, सच बोलने वाली, सख़ावत करने वाली और अल्लाह की रज़ा तलब करने वाली किसी औरत को नहीं देखा। उन से कई हदीसें मन्क़ूल हैं। उन्होंने ५३ साल की उम्र पाकर सन २० हिजरी में वफ़ात पाई और जन्नतुल बक़ीअ् में दफ़न हुईं।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — दांत अल्लाह की नेअ्मत

जब बच्चा पैदा होता है तो उस के मुँह में दांत नहीं होते, इस लिए के उसे सिर्फ़ माँ का दूध पीना है। बच्चा जैसे जैसे बड़ा होता है, उस को दूध के अलावा दूसरी नर्म चीज़ें दी जाती हैं, उस वक़्त अल्लाह तआला उस बच्चे को छोटे छोटे दांत देते हैं। जब बच्चा सात आठ साल का होता है, तो उस की ख़ोराक भी बढ़ जाती है और वह सख़्त चीज़ें भी खाने लगता है, उस वक़्त अल्लाह तआला वह छोटे छोटे दांत गिरा कर दूसरे नए दाँत देते हैं, जो पहले दाँतों से मज़बूत और बड़े होते हैं। इन के ज़रिए इन्सान के चबाने की सलाहियत बढ़ जाती है। अल्लाह की कुदरत पर ज़रा ग़ौर करें तो पता चलता है के इन्सान की ज़रूरियात के लिए अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत से कैसा अच्छा इन्तेज़ाम किया है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — मय्यत का कर्ज़ अदा करना

हज़रत अली ؓ फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने कर्ज़ को वसिय्यत से पहले अदा करवाया, हांलाके तुम लोग (कुर्आने पाक में) वसिय्यत का तज़किरा कर्ज़ से पहले पढ़ते हो। [तिर्मिज़ी : २१२२]

फ़ायदा : अगर किसी शख़्स ने कर्ज़ लिया और उसे अदा करने से पहले इन्तेकाल कर गया, तो कफ़न व दफ़न के बाद माले वरासत में से सब से पहले कर्ज़ अदा करना ज़रूरी है, चाहे सारा माल उस की अदायगी में ख़त्म हो जाए।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — इशा के बाद जल्दी सोना

रसूलुल्लाह ﷺ इशा से पहले नहीं सोते थे और इशा के बाद नहीं जागते थे (बल्के सो जाते थे)।

[मुस्नदे अहमद : २५७४८, अन आयशा ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	बेहतरीन सदका

रसूलुल्लाह ﷺ से सवाल किया गया : कौन सा सदका अफ़ज़ल है? आप ﷺ ने फ़र्माया: (अफ़ज़ल सदका यह है के) "तू उस वक्त सदका करे, जब सेहत मंद हो और माल की ख़्वाहिश हो और मालदारी की उम्मीद रखता हो और फ़क्र व फ़ाका से डरता हो।"

[बुख़ारी : २७४८, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	अपने इल्म पर अमल न करने का वबाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया:"कयामत के दिन सब से ज़ियादा सख़्त अज़ाब उस आलिम को होगा, जिस को उस के इल्मे दीन ने नफ़ा नहीं पहुँचाया।" [तबरानी सगीर : ५०८, अन अबी हुरैरह ؓ]

फ़ायदा:जिस आदमी को शरीअत के बारे में जितना भी इल्म हो, उस के मुताबिक अमल करना ज़रूरी है अपनी जानकारी के मुताबिक अमल न करने पर सख़्त अज़ाब की वईद सुनाई गई है।

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया से बचो

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "सुनो ! दुनिया मीठी और हरी भरी है और अल्लाह तआला ज़रूर तुम्हें इस की खिलाफ़त अता फ़र्माएंगे, ताके देखें के तुम कैसे आमाल करते हो, पस तुम दुनिया से और औरतों (के फ़ितने) से बचो।" [मुस्लिम : ६९४८, अन अबी सईद खुद्री ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जन्नत की नेअ्मतें

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है:(मुकर्रब बन्दों के लिए जन्नत में) ऐसे मेवे होंगे, जिन को वह पसंद करेंगे और परिंदों का ऐसा गोश्त होगा, जिस की वह ख्वाहिश करेगा और उन के लिए बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरें होंगी, जैसे हिफाज़त से रखा हूआ पोशीदा मोती हो। यह सब उन के आमाल का बदला होगा और वहाँ कभी वह बेहूदा और बुरी बात नही सूनेंगे, हर तरफ़ से सलाम ही सलाम की आवाज़ आएगी। [सूर-ए-वाकिआ : २० ता २६]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	हाथ पाओं सुन हो जाने का इलाज

हज़रत इब्ने अब्बास ؓ की मौजूदगी में एक शख़्स का पांव सुन हो गया, तो उन्हों ने फ़र्माया : अपने महबूब तरीन शख़्स को याद करो, उस ने कहा : मुहम्मद ﷺ फिर वह ठीक हो गया।

[इब्ने सुन्नी : १६९]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "तुम सुबह व शाम अपने रब को अपने दिल में गिड़गिड़ा कर, डरते हुए और दर्मियानी आवाज़ के साथ याद किया करो और ग़ाफिलों में से मत हो जाओ।"

[सूर-ए-आराफ़ : २०५]

नंबर (१): इस्लामी तारीख — उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवैरिया बिन्ते हारिस ﷺ

हज़रत जुवैरिया बिन्ते हारिस ﷺ का तअल्लुक़ उम्मे ख़ुज़ाआ के ख़ान्दान मुस्तलिक़ से है। ग़ज़्व-ए- बनी मुस्तलिक़ के क़ैदियों में जुवैरिया ﷺ भी थीं। जो तक़सीम में हज़रत साबित बिन क़ैस ﷺ के हिस्से में आईं। यह अपने क़बीले की शहज़ादी और रईस की बेटी थीं। इस लिये बाँदी बन कर रहना गवारा न किया। उन्होंने हज़रत साबित बिन क़ैस ﷺ से आज़ाद होने की रक़म मुतअय्यन कर के मुआहदा कर लिया और माली मदद के लिये हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुईं। तो आप ﷺ ने फ़र्माया : क्या मैं तुम से अच्छा सुलूक न करूँ, तो हज़रत जुवैरिया ने फ़र्माया वह क्या है? आप ﷺ ने फ़र्माया : "मैं तुम्हारी तरफ़ से रक़म अदा कर देता हूँ और तुम से निकाह कर लेता हूँ।" हज़रत जुवैरिया ﷺ राज़ी हो गईं। जब सहाब-ए-किराम ﷺ को इस बात का इल्म हुआ के इस ख़ान्दान से रसूलुल्लाह ﷺ का सुसराली रिश्ता क़ायम हो गया है। तो सहाब-ए-किराम ﷺ ने एहतेराम की वजह से तक़रीबन ६०० क़ैदियों को आज़ाद कर दिया। इस हुस्ने सुलूक की वजह से उन के वालिद हारिस ﷺ और पूरी क़ौम ने इस्लाम क़बूल कर लिया। इसी लिये हज़रत आयशा ﷺ फ़र्माती थीं के "मैंने किसी औरत को जुवैरिया ﷺ से बढ़ कर अपनी क़ौम के हक़ में मुबारक नहीं देखा।" वह बड़ी इबादत गुज़ार, देर तक दुआ में मसरूफ़ रहने और नफ़ली रोज़े रखने वाली ख़ातून थीं। उन्होंने सन ५६ हिजरी में वफ़ात पाई, मदीने के गवरनर मरवान बिन हकम ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़न की गईं।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — ज़ख़्मी हाथ का अच्छा हो जाना

एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ खाना खा रहे थे, इतने में हज़रत जरहद ﷺ अस्लमी हाज़िरे ख़िदमत हुए, हुज़ूर ﷺ ने फ़र्माया : खाना खा लीजिए, हज़रत जरहद ﷺ के दाहने हाथ में कुछ तक्लीफ़ थी, लिहाज़ा उन्हों ने अपना बायाँ हाथ बढ़ाया, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : दाहने हाथ से खाओ, हज़रत जरहद ﷺ ने फ़र्माया : इस में तक्लीफ़ है तो हुज़ूर ﷺ ने उन के हाथ पर फूँक मार दी, तो वह ऐसा ठीक हूआ के उन को मौत तक फ़िर वह तक्लीफ़ महसूस नहीं हुई। [तबरानी कबीर : २१०८]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सामान का ऐब ज़ाहिर करना

एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ गल्ले के ढेर के पास से गुज़रे, आप ने अपना मुबारक हाथ उस ढेर के अंदर दाखिल कर दिया, तो आप ﷺ की उंगलियों ने गीला पन महसूस किया, आप ﷺ ने उस गल्ला बेचने वाले से फ़र्माया : "(तुम्हारे ढेर के अंदर) यह तरी कैसी है? उस ने कहा: या रसूलल्लाह! इस पर बारिश की बूँदें पड़ गई थीं, आप ﷺ ने फ़र्माया : इस भीगे हुए गल्ले को तुम ने ऊपर क्यों नही रखा, ताके खरीदने वाले इस को देख सकते? (सुनो) जिस ने धोका दिया वह हम में से नहीं।"

[मुस्लिम : २८४, अन अबी हुरैरह ﷺ]

खुलासा : जो सामान बेचा जा रहा है ; अगर उस में कोई ऐब हो, तो उस को ज़ाहिर कर देना यानी खरीदने वाले को बता देना ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	दुनिया व आखिरत की कामयाबी के लिये दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ कसरत से यह दुआ फ़र्माते थे :

((اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ))

तर्जमा : ऐ हमारे रब ! हमें दुनिया और आखिरत में भलाई अता फ़र्मा और दोज़ख़ के अज़ाब से हमारी हिफाज़त फर्मा । [बुखारी : ४५२२, अन अनस ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	मिस्वाक कर के नमाज़ पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मिस्वाक कर के पढ़ी जाने वाली नमाज़, बगैर मिस्वाक किए पढ़ी जाने वाली नमाज़ से सत्तर गुना अफ़ज़ल है ।" [मुस्नदे अहमद : २५८०८, अन आयशा ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	कुर्आन सुनने से रोकना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : यह काफ़िर लोग एक दूसरे से कहते हैं के इस कुर्आन को मत सुना करो और उस के दौरान शोर मचाया करो, उम्मीद है के इस तरह तुम गालिब आ जाओगे । उन काफिरों को हम सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएंगे और यकीनन उन को उन बुरे आमाल का बदला दिया जाएगा, जो वह किया करते थे । [सूर-ए-हामीम सजदा : २६ ता २७]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया के मुकाबले में आखिरत बेहतर है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो लोग परहेज़गार हैं, जब उन से पूछा जाता है के तुम्हारे रब ने क्या चीज़ नाज़िल की है? तो जवाब में कहते है : बड़ी खैर व बरकत की चीज़ नाज़िल फ़र्माई है। जिन लोगों ने नेक आमाल किए, उन के लिए इस दुनिया में भी भलाई है और बिलाशुबा आखिरत का घर तो दुनिया के मुकाबले में बहुत ही बेहतर है और वाकई वह परहेज़गार लोगों का बहुत ही अच्छा घर है। [सूर-ए-नहल : ३०]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	काफ़िर की बदहाली

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "कयामत के दिन काफ़िर अपने पसीने में डूब जाएगा, यहाँ तक के वह पुकार उठेगा : ऐ मेरे रब ! जहन्नम में डाल कर हीं मुझे इस से नजात दे दीजिए ।" [कंज़ुल उम्माल : ३८९२२, अन इब्ने मसऊद ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	सफ़र जल (बही) से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: सफ़र जल (यानी बही) खाया करो क्योंकि यह दिल को राहत पहुँचाता है। [इब्ने माजा : ३३६९, अन तल्हा ﷺ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया:"अपनी सफ़ों को सीधा करो, क्योंकि नमाज़ को अच्छी तरह अदा करने में सफ़ों का सीधा करना भी शामिल है ।" [बुखारी : ७२३, अन अनस ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१९) शव्वालुल मुकर्रम

नंबर (१): इस्लामी तारीख | उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा ﵂

हज़रत उम्मे हबीबा ﵂ का नाम रमला बिन्ते अबू सुफियान है। उन की पैदाइश नुबुव्वत के सतरह साल क़ब्ल हुई। उन का पहला शौहर उबैदुल्लाह बिन जहश अल असदी था, जिन से एक बेटी हबीबा पैदा हुई जिस की वजह से उम्मे हबीबा कहा जाता है, यह खान्दान मुसलमान हुआ और हब्शा की हिजरत की। उबैदुल्लाह बिन जहश हब्शा में मुर्तद हो कर इसाई बन गए, उम्मे हबीबा ﵂ ने उन से अलाहिदगी इख्तियार की, उबैदुल्लाह बिन जहश का इसी कुफ्र की हालत में हब्शा में मौत हो गई। फिर बाद में हुज़ूर ﷺ ने निकाह का पैगाम भेजा, जिस को उन्होंने बखुशी कुबूल कर के हज़रत खालिद बिन सईद को अपना वकील बनाया और हज़रत नजाशी शाहे हब्शा ने निकाह पढ़ाया, उस के बाद वह काफ़ले के साथ मदीना मुनव्वरा आप ﷺ की खिदमत में तशरीफ़ ले गईं, वह फ़ितरतन नेक मिज़ाज थीं, रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत पर बड़े ज़ौक व शौक और एहतेमाम से अमल करती और दूसरों को भी इस की ताकीद किया करती थीं, खुद फ़र्माती हैं के एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया के जो शख्स रोज़ाना बारा रकात नफ़्ल पढ़ेगा, उस के लिए जन्नत में घर बनाया जाएगा। जब से मैं ने इस फ़ज़ीलत को सुना, तो हमेशा इस पर अमल करती रही। मुहद्दिसीने किराम ने उन से अहादीस की ६५ रिवायतें नक्ल की हैं, उन्होंने अपने भाई अमीर मुआविया ﵁ के ज़मान-ए-खिलाफत में सन ४४ हिजरी में इन्तेकाल फ़र्माया और मदीना में दफ़्न हुई।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत | आँख की हिफ़ाज़त

अल्लाह तआला ने हम को बहुत सारी नेअमतों से नवाज़ा है, उन नेअमतों में एक नेअमत आँख है, यह नेअमत जहाँ बहुत कीमती है वहीं बड़ी नाज़ुक भी है, अल्लाह ने इस की हिफ़ाज़त का कितना अच्छा इन्तेज़ाम फ़र्माया के अगर आँख की तरफ़ कोई छोटी सी चीज़ भी आए, तो अल्लाह ने ऐसी पल्कों को बनाया जो फ़ौरन बंद हो जाती हैं और अगर कोई बड़ी चीज़ आँख की तरफ़ आए, तो आँख के चारों तरफ़ उभरी हुई मज़बूत हड्डी बना दी, जो आँखों की हिफ़ाज़त करती है, बेशक अल्लाह बड़ी कुदरत वाला है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | नमाज़ में इमाम की पैरवी करना

हज़रत अबू हुरैरह ﵁ फर्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ हमें सिखाते थे के (नमाज़ में) इमाम से पहले रुक्न अदा न किया करो। [मुस्लिम: ९३२, अन अबी हुरैरह ﵁]

खुलासा: अगर इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ रहा हो तो तमाम अरकान को इमाम के पीछे अदा करना चाहिए, इमाम से आगे बढ़ना जाइज़ नहीं है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	वुज़ू में तीन बार कुल्ली करना

हज़रत अली ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ के वुज़ू की कैफ़ियत बयान करते हुए फ़र्माते हैं : "रसूलुल्लाह ﷺ ने तीन बार कुल्ली की।"

[मुस्नदे अहमद : ८७४, अन अली ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	हर हाल में अल्लाह की तारीफ़ करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया:" सब से पहले जन्नत की तरफ़ वह लोग पुकारे जाएंगे, जो खुशी और ग़मी, आसानी और परेशानी में अल्लाह की तारीफ़ और हम्द बयान करते हैं।"

[मुस्तदरक : १८५१, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	हराम खाने का वबाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया :" जिस आदमी का बदन हराम रोज़ी से पलता और बढ़ता है, ऐसे बदन के लिए जहन्नम ज़ियादा बेहतर है।"

[तिर्मिज़ी : ६१४, अन कअब बिन उजरा ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	थोड़ी सी रोज़ी पर राज़ी होना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : " जो शख़्स अल्लाह तआला से थोड़ी रोज़ी पर राज़ी रहे, तो अल्लाह तआला भी उस की तरफ़ से थोड़े से अमल पर राज़ी हो जाते हैं।"

[बैहक़ी शोअबुल ईमान : ४४०९, अन अली ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जहन्नमियों का खाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है: जहन्नम वालों का आज न कोई दोस्त होगा और (उन को)ज़ख़्मों के धोवन और पीप के सिवा कोई चीज़ खाने को नसीब न होगी, इस खाने को बड़े गुनहगार ही खाएंगे।

[सूर-ए-हाक्का : ३५ ता ३७]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	पागल पन का इलाज

सूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: "अज्वह (खजूर) जन्नत का फल है और जुनून (पागलपन) का इलाज है।"

[इब्ने माजा : ३४५३, अन अबी सईद खुद्री ﷺ व जाबिर ﷺ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है: "तुम अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करो और आपस में झगड़ा न करो, वरना तुम बुज़दिल हो जाओगे और दुश्मन के मुकाबले में तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और (मुसीबत के वक्त) सब्र करो, बेशक अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है।"

[सूर-ए-अन्फ़ाल : ४६]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(२०) शव्वालुल मुकर्रम

नंबर (१): इस्लामी तारीख — उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना ؓ

उम्मूल मोमिनीन हज़रत मैमूना ؓ बिन्ते हारिस पहले मसऊद बिन उमर सक़फ़ी के निकाह में थीं। तलाक़ के बाद अबू रुह्म बिन अब्दुल उज्ज़ा ने निकाह कर लिया।अब रुह्म के इन्तेक़ाल के बाद सही रिवायत के मुताबिक इस निकाह की तहरीक व पेश कश हज़रत अब्बास ؓ ने की और जब रसूलुल्लाह ﷺ उमर-ए-कज़ा करने के लिए सन ७ हिजरी में तशरीफ़ ले गए,तो पाँच सौ दिरहम महर पर हज़रत अब्बास ؓ ही ने मकामे सरिफ़ में आप का निकाह पढाया। इस रिशते की वजह से हज़रत अब्बास ؓ आप के हमज़ुल्फ़ (साढू) हूए। हज़रत मैमूना ؓ से मुहद्दिसीने किराम ने ४६ हदीसें नक्ल की हैं, जिन में से बाज़ से इन की फ़िक्ही महारत और मसाइल की गहरी वाकिफ़ियत का पता चलता है। हज़रत आयशा ؓ फ़र्माती थीं के हज़रत मैमूना ؓ अल्लाह से बहुत ज़ियादा डरने वाली और सिला रहमी करने वाली थीं। यह अजीब हुस्ने तक्दीर है के मकामे सरिफ़ में हज़रत मैमूना ؓ का निकाह हुआ और सरिफ़ में ही सन ५१ हिजरी में उन का इन्तेकाल हुआ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ ने जनाज़े की नमाज़ पढाई।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — चेहर-ए-अनवर की बरकत से सुई मिल गई

हजरत आयशा सिद्दीक़ा ؓ बयान करती हैं के मैं आप ﷺ के कपड़े सी रही थी, पस मेरे हाथ से सुई गिर गई, बहुत तलाश की, मगर न मिली, इतने में रसूलुल्लाह ﷺ दाखिल हुए तो आप ﷺ के चेहर-ए-अनवर की रोशनी से सुई नज़र आगई। [तारीखे दिमश्क लिइब्ने असाकिर: ३/३१०]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — जन्नत में दाखले के लिए ईमान शर्त है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस शख्स की मौत इस हाल में आए के वह अल्लाह तआला पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखता हो, तो उस से कहा जाएगा के तुम जन्नत के आठों दरवाज़ों में से जिस से चाहो दाखिल हो जाओ।" [मुस्नदे अहमद: ९८, अन उमर ؓ]

फ़ायदा : जन्नत में जाने के लिए मरते वक्त दीन की बुनियादी बातों का अकीदा रखना ज़रुरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — नमाज़ के बाद दुआ मांगना

रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ते थे :

((اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ))

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! मैं कुफ्र फ़क्र व फ़ाका और कब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ। [नसई : १३४८, अन अबी बकरा ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	नेक इरादे पर सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो आदमी पाक व साफ़ हो कर अपने घर से (किसी नेक इरादे से) निकले, तो उस को हाजी के बराबर सवाब मिलता है और जो आदमी सिर्फ़ नमाज़े चाश्त के इरादे से चले, तो उस को उमरा करने वाले के बराबर सवाब मिलता है।" [तबरानी कबीर : ७६५५, अन अबी उमामा ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	बातिल परस्तों के लिए सख़्त अज़ाब है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो लोग खुदा के दीन में झगड़ते हैं, जब के वह दीन लोगों में मक़बूल हो चुका है (लिहाज़ा) उन लोगों की बहस उन के रब के नज़दीक बातिल है, उन पर खुदा का ग़ज़ब है और सख़्त अज़ाब (नाज़िल होने वाला है)। [सूर-ए-शूरा : १६]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की ज़िंदगी खेल तमाशा है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "दुनिया की ज़िंदगी खेल कूद के सिवा कुछ भी नहीं है और आख़िरत की ज़िंदगी ही हक़ीक़ी ज़िंदगी है काश यह लोग इतनी सी बात समझ लेते।"

[सूर-ए-अन्कबूत : ६४]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत के दिन लोगों की हालत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: "क़यामत के रोज़ सूरज एक मील के फ़ास्ले पर होगा और उस की गर्मी में भी इज़ाफ़ा कर दिया जाएगा, जिस की वजह से लोगों की खोपड़ियों में दिमाग इस तरह उबल रहा होगा, जिस तरह हांडियां जोश मारती हैं, लोग अपने गुनाहों के ब़क़द्र पसीने में डूबे हुए होंगे, बाज़ टखनों तक, बाज़ पिंडलियों तक, बाज़ कमर तक और बाज़ के मुँह में लगाम की तरह होगा।"

[मुस्नदे अहमद : २१६८२, अन अबी उमामा ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बुखार का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जिसे बुखार आजाए, वह तीन दिन गुस्ल के वक़्त यह दुआ पढ़े, तो उसे शिफ़ा हासिल होगी :

((بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اِنَّمَا اغْتَسَلْتُ رَجَاءَ شِفَائِكَ وَتَصْدِيْقَ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ ﷺ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं ने तेरे नाम से गुस्ल किया, शिफ़ा की उम्मीद करते हुए और तेरे नबी ﷺ की तसदीक़ करते हुए। [इब्ने अबी शैबा : १४५१७, अन मकहूल ؓ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : कुर्आन को हमेशा पढ़ते रहा करो, अल्लाह की कसम ! कुर्आन उस से भी जल्द निकल भागता है जितना जल्द ऊँट रस्सी तोड़ कर भाग जाता है।

[बुख़ारी : ५०३३, अन अबी मूसा ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२१ शव्वालुल मुकर्रम

नंबर १: इस्लामी तारीख — हज़रत मारिया किबतिया

हज़रत मारिया किबतिया ؓ हुज़ूर ﷺ के बेटे इब्राहीम ؓ की वालिदा हैं। हुज़ूर ﷺ ने हज़रत हातिब इब्ने बल्तअ् के हाथ शाहे असकंदरिया मकूकस के पास खत भेजा, जिस ने खत को बोसा दिया और हुज़ूर ﷺ के एलची हज़रत हातिब ؓ का बड़ा इकराम किया, वापसी में हज़रत हातिब ؓ के हमराह दीगर तोहफ़े के साथ तीन बांदियां भी रवाना किया, इन तीन बांदियों में एक हज़रत मारिया किबतिया ؓ और उन की बहन सीरीन ؓ थीं, हज़रत हातिब ؓ ने उन को इस्लाम की रगबत दिलाई, यह दोनों बहनें मुसलमान हुईं, बेहतरीन दीनदार बनीं, हुज़ूर ﷺ ने सीरीन ؓ को हज़रत हस्सान ؓ को दिया और मारिया ؓ को अपनी खिदमत में रखा, हज़रत मारिया ؓ से ज़िल हिज्जा सन ८ हिजरी में हुज़ूर ﷺ के एक बेटे इब्राहीम पैदा हुए, जिन की वजह से हज़रत मारिया ؓ उम्मे वलद हो गईं, हज़रत इब्राहीम ؓ का इन्तेकाल अठारा माह की उम्र में हुआ, हुज़ूर ﷺ की वफ़ात के बाद हज़रत अबू बक्र ؓ और उमर ؓ इन की खिदमत में हदिये का माल भेजा करते थे, हज़रत मारिया किबतिया ؓ की वफ़ात मुहर्रम सन १६ हिजरी में हुई और बकी में दफ़्न हुईं।

नंबर २: अल्लाह की कुदरत — ऊँट में अल्लाह की निशानी

अल्लाह तआला ने इस दुनिया में मुख्तलिफ़ किस्म के जानवर पैदा किए, इन में से एक जानवर ऊँट है, अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत से इस को ऐसी खूबियां दी हैं के वह हफ़्ते भर का पानी अपने अंदर जमा कर लेता है और जब इस को रेगिस्तानी इलाके में पानी की ज़रुरत होती है, तो उस को इस्तेमाल करता है, इसी तरह ऊँट के पैर नर्म गद्दी की तरह होते हैं, जिस की वजह से वह रेत में नहीं धंसते और वह आसानी से रेत पर चलता है और भागता है, इसी तरह अल्लाह ने हर जानदार को उस की ज़रूरत की चीज़ें अपनी कुदरत से अता फ़र्माई हैं।

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ में खामोश रहना

हज़रत ज़ैद बिन अरकम ؓ फ़र्माते हैं : "(शुरू इस्लाम में) हम में से बाज़ अपने बाज़ू में खड़े शख्स से नमाज़ की हालत में बात किया करता था, फ़िर यह आयत नाज़िल हुई,"अल्लाह के लिए खामोशी के साथ खड़े रहो (यानी बातें न करो)" फिर हमें खामोश रहने का हुक्म दे दिया गया और बात करने से रोक दिया गया।" [तिर्मिज़ी : ४०५]

फायदा : नमाज़ में खामोश रहना और हर किस्म के नमाज़ के मनाफ़ी काम करने से बचना ज़रूरी है।

नंबर ४: एक सुन्नत के बारे में — तहनीक सुन्नत है

हज़रत अस्मा ؓ फ़र्माती हैं के जब अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ؓ पैदा हुए, तो मैं ने उन को

रसूलुल्लाह ﷺ की गोद में दिया, रसूलुल्लाह ﷺ ने खजूर मंगवाई और चबा कर अपना मुबारक थूक अब्दुल्लाह के मुँह के अंदर लगाया।

[बुखारी : ५४६९]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | जहन्नम की आग से आंखों की हिफ़ाज़त

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : दो आँखो को जहन्नम की आग नहीं लगेगी, एक वह आँख जो अल्लाह के खौफ़ से रोई हो और एक वह आंख जिस ने अल्लाह की राह में पहरा दिया हो।

[तिर्मिज़ी: १६३९, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | इज़ार या पैन्ट टख्ने से नीचे पहनना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स तकब्बुर के तौर पर अपने इज़ार को टख्ने से नीचे लटकाएगा, अल्लाह तआला कयामत के दिन उस की तरफ़ रहमत की नज़र से नहीं देखेगा।"

[बुखारी : ५७८८, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | ज़रूरत से ज़ाइद सामान शैतान के लिए

रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ؓ से फ़र्माया : एक बिस्तर आदमी के लिए और एक उस की बीवी के लिए और तीसरा मेहमान के लिए और चौथा शैतान के लिए होता है।

[मुस्लिम : ५४५२]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | कयामत का हौलनाक मंज़र

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है: (कयामत का मुन्किर) पूछता है के कयामत का दिन कब आएगा? जिस दिन आंखें हैरान रह जाएंगी और चांद बेनूर हो जाएगा और सूरज व चांद (दोनों बेनूर हो कर) एक हालत पर कर दिए जाएंगे; उस दिन इन्सान कहेगा : आज कहीं भागने की जगह है? जवाब मिलेगा: हरगिज़ नहीं (आज) कहीं पनाह की जगह नहीं है, उस दिन सिर्फ़ आप के रब के पास ठिकाना होगा।

[सूर-ए-क़ियामह : ६ ता १२]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | निमोनिया का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने निमोनिया के लिए वर्स, कुस्त और रोग़ने ज़ैतून पिलाने को मुफीद बतलाया है।

[इब्ने माजा : ३४६७, अन ज़ैद बिन अरक़म ؓ]

फ़ायदा: "वर्स" तिल के मानिंद एक किस्म की घास है, जिस से रंगाई का काम लिया जाता है और कुस्त एक खुशबू दार लकड़ी है, जिस को ऊदे हिंदी भी कहते हैं।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम उन लोगों की तरह मत हो जाना जो अपने घरों से इतराते हूए और लोगों को दिखाने के लिए निकले; और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोक रहे थे और अल्लाह उन के तमाम कामों को अपने घेरे में लिए हूए है।

[सूर-ए-अन्फ़ाल : ४७]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२२ शव्वालुल मुकर्रम

नंबर (१): इस्लामी तारीख — उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब ؓ

हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा ؓ का तअल्लुक़ क़बील-ए-हिलाल से है, आप के वालिद का नाम ख़ुज़ैमा है, हज़रत मैमूना ؓ की माँ शरीक बहन हैं और अन्सारिया में से हैं, उन के शौहर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश ؓ ग़ज़्व-ए-उहुद में शहीद हो गए, तो आप ﷺ ने रमज़ान सन ३ हिजरी में चार सौ दिरहम महर के बदले निकाह फ़र्माया, बड़ी सख़ी थीं, ग़रीबों और मोहताजों की ख़बर गीरी करती थीं, अपने हाथ से कमाई करतीं और ग़रीबों में तक़सीम कर देतीं, इसी लिये उन का लक़ब ही उम्मुल मसाकीन यानी मोहताजों की माँ हो गया। इतनी कसरत से सद्क़ा ख़ैरात अज़्वाजे मुतह्हरात में से सिर्फ़ इन्हीं का हिस्सा है। ३० साल की उम्र में रबिउल आख़िर सन ४ हिजरी में उन की वफ़ात हुई, आप ﷺ ने ख़ुद नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और जन्नतुल बक़ीअ् में दफ़न की गईं।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — उंगलियों से पानी का निकलना

हज़रत हय्यान बिन बुह्ह ؓ बयान करते हैं के मैं एक रात सुबह तक आप ﷺ के साथ रहा और मैं ने फ़ज्र की नमाज़ के लिए अज़ान दी, फ़िर जब नमाज़ का वक्त हुआ, तो हुज़ूर ﷺ ने मुझे एक बर्तन दिया और मैं ने उस में से वुज़ू किया और नबी ﷺ बर्तन में अपनी उंगलियाँ रखे हुए थे, मैं ने देखा के पानी आप ﷺ की उंगलियों से जारी था। आप ﷺ ने फ़र्माया: तुम में से जो वुज़ू करना चाहे कर ले।

[तबरानी कबीर : ३४९४, अन हय्यान बिन बुह्ह ؓ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — हमेशा सच बोलो

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: " तुम सच्चाई को लाज़िम पकड़ो और हमेशा सच बोलो, क्योंकि सच बोलना नेकी के रास्ते पर डाल देता है और नेकी जन्नत तक पहुँचा देती है।"

[मुस्लिम : ६६३९, अन अब्दुल्लाह बिन मसऊद ؓ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — वित्र के बाद की दुआ

हज़रत उबइ बिन कअब ؓ फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ जब नमाज़े वित्र से सलाम फेरते, तो यह दुआ पढ़ते : ((سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ))

तर्जमा : (मैं) हर ऐब से पाक बादशाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ।

[अबू दाऊद : १४३०, अन उबइ बिन कअब ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | मर्ज़ पर सब्र करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: "जब कोई बन्दा बीमार होता है, तो अल्लाह तआला दो फ़रिश्तों को भेजता है, ताके वह देखें के वह इयादत करने वाले को क्या कहता है। अगर इयादत करने वाले की आमद पर वह अल्लाह की हम्द और तारीफ़ करता है, तो वह दोनों फ़रिश्ते उस बात को अल्लाह के पास ऊपर ले जाते हैं, तो अल्लाह तआला जो सब कुछ जानने वाला है, कहता है : "मैं अपने इस बन्दे को वफ़ात देने के बाद ज़रूर जन्नत में दाखिल करूँगा, अगर मैं ने इसे शिफ़ा दी, तो उस के गोश्त को इस से बेहतर गोश्त से और खून को इस से बेहतर खून से बदल दूँगा और उस के गुनाह माफ़ कर दूँगा।"

[मोअत्ता इमाम मालिक : १४७५, अन अता बिन यसार ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | अच्छे बुरे बराबर नहीं हो सकते

कुर्आन में अल्लाह ताआला फ़र्माता है: क्या वह लोग जो बुरे काम करते हैं यह समझते हैं के हम उन्हें और उन लोगों को बराबर कर देंगे जो ईमान लाते हैं और नेक अमल करते हैं के उन का मरना जीना बराबर हो जाए, वह बहुत ही बुरी बात का फ़ैस्ला करते हैं।

[सूर-ए-जासिया : २१]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया आरज़ी और आखिरत मुस्तकिल है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "दुनिया की ज़िंदगी महज़ चंद रोज़ा है और अस्ल ठहरने की जगह तो आखिरत ही है।"

[सूर-ए-मोमिन : ३९]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | हमेशा की जन्नत व जहन्नम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: "अल्लाह तआला जन्नतियों को जन्नत में दाखिल कर देगा और जहन्नमियों को जहन्नम में दाखिल कर देगा, फिर उन के दर्मियान एक एलान करने वाला कहेगा के ऐ जन्नतियों! अब मौत नही आएगी, ऐ जहन्नमियों! अब मौत नही आएगी (तुम में का जो जहाँ है हमेशा उस में रहेगा)।"

[मुस्लिम : ७१८३, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | खुंबी (मशरूम) से आँखों का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: खुंबी का पानी आँखों के लिए शिफ़ा है। [बुखारी : ५७०८, सईद बिन ज़ैद ؓ]

फ़ायदा: हज़रत अबू हुरैरह ؓ अपना वाकिआ बयान करते हैं : मैं ने तीन या पाँच या सात खुंबियाँ लीं और उस का पानी निचोड़ कर एक शीशी में रख लिया, फ़िर वही पानी मैं ने अपनी बांदी की दुखती हुई आँख में डाला तो वह अच्छी हो गई।

[तिर्मिज़ी : २०६९]

नोट : खुंबी को हिंदुस्तान के बाज़ इलाकों में साँप की छतरी और बाज़ दूसरे इलाकों में कुकुर मुत्ता कहते हैं, याद रहे के बाज़ खुंबियाँ ज़हरीली भी होती हैं, लिहाज़ा तहकीक के बाद इस्तेमाल की जाएं।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

हज़रत हसन बिन अली ؓ बयान करते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से यह बात महफ़ूज़ की है के जिस चीज़ में शक व शुबा पैदा हो जाए उस को छोड़ दो और उस चीज़ को इख़्तेयार करो जिस में शक व शुबा न हो, इस लिए के सच्चाई में सुकूने कल्ब होता है और झूट में शुबा ही शुबा है।

[तिर्मिज़ी : २५१८]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२३) शव्वालुल मुकर्रम

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा ﵂

हज़रत सौदा बिन्ते ज़मआ ﵂ क़ुरैश के मशहूर क़बीले "आमिर बिन लुवइ" से तअल्लुक़ रखती थीं। उन का पहला निकाह हज़रत सकरान बिन अम्र से हुआ। वह नुबुव्वत के शुरू ज़माने में ही मुसलमान हो गई थीं। और अपने शौहर के साथ हब्शा की दूसरी हिजरत फ़र्माई। उन से अब्दुर्रहमान नामी एक लड़का पैदा हुआ। फिर कई साल बाद मक्का लौटीं तो उन के शौहर का इन्तेक़ाल हो गया। हुज़ूर ﷺ ने हज़रत ख़दीजा ﵂ की वफ़ात के बाद सन १० नब्वी में हज़रत सौदा ﵂ से निकाह फ़र्माया। लेकिन उन से कोई औलाद नहीं हुई। वह सख़ावत व फ़य्याज़ी में मुमताज़ मक़ाम रखती थीं। हज़रत उमर ﵁ ने उन के पास दिरहमों से भरी एक थैली भेजी, तो उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा ﵂ ने उसी वक़्त सब को तक़सीम कर दिया। इताअत व फ़र्मांबरदारी का यह हाल था का हज्जतुलवदा के मौक़े पर रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी तमाम बीवियों को मुख़ातब कर के फ़र्माया : "तुम मेरे बाद घर में बैठे रहना।" चुनान्चे वह इस हुक्म पर शिद्दत से अमल करती हुई फ़र्माती थीं के मैं हज व उमरा कर चुकी हूँ, अब अल्लाह और उस के रसूल के हुक्म के मुताबिक़ घर में बैठी रहूँगी। उन से कुछ अहादीस भी मरवी हैं। उन्होंने हज़रत उमर ﵁ के दौरे ख़िलाफ़त में ज़िलहिज्जा सन २३ हिजरी में मदीना मुनव्वरा में वफ़ात पाई।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — लुक्मे की हिफ़ाज़त

अगर हमें कुछ खाना होता है, तो उस को हम अपने हाथों के ज़रिए उठाते हैं, उंगलियों के छूने से एहसास हो जाता है के खाना गर्म है या ठंडा, फिर लुक्मा मुँह की तरफ़ ले जाते वक़्त आँखें देख लेती हैं के खाने में कुछ ख़राबी है या नहीं और आगे आता है, तो नाक से सूँघ लेता है के खाने में बदबू तो नहीं आ रही और फिर जैसे ही वह मुँह में रखता है तो ज़बान उस का ज़ाएका बता देती है और उस के ठंडे और गर्म और अच्छे बुरे होने का एहसास करा देती है, इतनी हिफ़ाज़त से गुज़र कर एक साफ़ लुक्मा हमारे पेट में जाता है, अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से लुक्मे की हिफ़ाज़त के लिए किस तरह इन्तेज़ाम फ़र्माया है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — दीन में नमाज़ की अहेमियत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: दीन बग़ैर नमाज़ के नहीं है नमाज़ दीन के लिए ऐसी है जैसा आदमी के बदन के लिए सर होता है। [तबरानी कबीर : ११, अन इब्ने उमर ﵁]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — इशा के बाद दो रकात नमाज़ पढ़ना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﵁ बयान फ़र्माते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ इशा की

फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दो रकात (सुन्नत) पढ़ी है। [बुखारी:११७२]

फ़ायदा : इशा की नमाज़ के बाद वित्र से पहले दो रकात पढ़ना सुन्नते मोअक्कदा है।

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	सदके से शैतान की शिकस्त

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब कोई शख़्स किसी चीज़ को सदके में निकाल देता है, तो सत्तर शैतानों के जबड़े टूट जाते हैं।" [मुस्तदरक : १५२१ अन बुरैदा رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	नमाज़ का छोड़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "नमाज़ का छोड़ना आदमी को कुफ्र से मिला देता है।"

[मुस्लिम : २४६, अन जाबिर رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया खोल दी जाएगी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अनक़रीब दुनिया की दौलत तुम पर खोल दी जाएगी, यहाँ तकके तुम अपने घरों को इस तरह आरास्ता करोगे जैसे काबा शरीफ़ को आरास्ता किया जाता है।" [तबरानी कबीर : ४०३५, अन अबी जुहैफ़ा رضي الله عنه]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले जन्नत की शराब

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : उन अहले जन्नत पर चाँदी के बर्तन और शीशे के प्याले पेश किए जाएंगे, वह शीशे चाँदी के होंगे, जिन को भरने वाले (ख़ादिमों ने) मुनासिब अन्दाज़ से भरा होगा और उन को ऐसी शराब के जाम पिलाए जाएँगे, जिस में सोंठ की मिलावट होगी।

[सूर-ए-दहर : १५ ता १७]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बरनी ख़जूर से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: "तुम्हारी खजूरों में बेहतरीन खजूर बरनी है और वह ऐसी दवा है जिस में कोई नुक्सान नहीं।" [मुस्तदरक : ८२४३, अन मज़ीदह رضي الله عنه]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह ताआला फ़र्माता है: ऐ इमान वालो ! तुम्हारे बाप और भाई अगर ईमान के मुकाबले में कुफ्र पसंद करते हों, तो तुम उन को अपना दोस्त न बनाओ और तुम में से जो शख़्स उनसे दोस्ती करेगा, तो वही ज़ुल्म करने वाले होंगे। [सूर-ए-तौबा : २३]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

२४ शव्वालुल मुकर्रम

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत ज़ैनब ﷺ बिन्ते रसूलुल्लाह ﷺ

हज़रत ज़ैनब ﷺ हुज़ूर ﷺ की सब से बड़ी साहब ज़ादी थीं, नुबुव्वत मिलने से तकरीबन दस साल क़ब्ल हजरत खदीजा ﷺ से पैदा हुई, रसूलुल्लाह ﷺ की दावत के शुरु ज़माने में ही मुसलमान हो गईं, उन का निकाह खाला जाद अबुलआस बन रबीअ से हुआ था, वह उस वक्त तक मुसलमान नही हुए थे; इस लिए हिजरत न कर सकीं, गज़व-ए-बद्र में कुफ्फ़ारे मक्का के साथ अबुलआस भी कैद हुए, सब ने अपने कैदी को छुड़ाने के लिए फ़िदया भेजा, ज़ैनब ﷺ ने भी वह हार जो हजरत ख़दीजा ﷺ का दिया हुआ था फ़िदये में भेजा, जब हुज़ूर ﷺ की नज़र उस हार पर पड़ी, तो आप ﷺ को हज़रत ख़दीजा ﷺ की याद आगई और आँखों से आँसू जारी हो गए, सहाबा ﷺ से मशवरह किया, यह बात तै हुई के अबुलआस को बग़ैर फ़िदया के रिहा किया जाए, इस शर्त पर के वह मक्का पहुँचने के बाद ज़ैनब ﷺ को मदीना भेज दें। चुनांचे वह गए और अपने छोटे भाई के साथ मदीना रवाना किया मगर कुफ्फ़ारे मक्का ने उन को रोका उस वक्त उन को ज़ख्म भी आया, आखिर कार अबुलआस ने कुफ्फ़ार से छुपा कर उन्हें मदीना भेज दिया। छ: साल बाद सन ८ हिजरी में ज़ैनब ﷺ का हिजरत वाला ज़ख्म हरा हुआ और उसी ज़ख्म की वजह से उन की शहादत हो गई।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हज़रत कतादा ﷺ की आँख का ठीक हो जाना

जंगे बद्र के दिन हज़रत कतादा बिन नोअ्मान ﷺ की आँख में तीर लग गया, जिस की वजह से खून रुखसार पर बहने लगा, तो सहाबा ﷺ ने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा : क्या उन की आँख निकाल दें? तो आप ﷺ ने मना फ़र्माया और हज़रत कतादा ﷺ को बुला कर अपनी हथेली से उन की आँख की तरफ़ इशारा किया, तो वह इतनी अच्छी हो गई के पता नहीं चलता था के कौन सी आँख में तीर लगा था। [बैहकी फ़ी दलाइलिन्नुबुव्वा : ११९२]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — गिर्वी रखी हुई चीज़ से फ़ायदा न उठाना

हज़रत इब्ने मसऊद ﷺ के पास एक शख़्स आए और कहा, एक घोड़ा (मेरे पास) गिर्वी रखा गया था, लेकिन मैं उस पर सवार हो गया था (तो क्या मेरे लिए गिर्वी रखे हुए घोड़े पर सवार होना जाइज़ है?) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ ने फ़र्माया : "उस घोड़े से तुम ने जितना फ़ायदा उठाया वह सूद है।" [कन्ज़ुल उम्माल : १५७४९]

फ़ायदा : गिर्वी रखी हुई चीज़ से फायदा उठाना जाइज़ नहीं है, इस से बचना ज़रुरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — कयामत की रुसवाई से बचने की दुआ

कयामत के दिन ज़िल्लत व रुसवाई से बचने के लिए इस दुआ का एहतेमाम करना चाहिए :

﴿رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ﴾

तर्जमा : ऐ हमारे परवरदिगार ! आप ने जो अपने रसूलों से वादा किया है, वह हमें अता फ़र्माइये और कयामत के दिन हमें रुसवा न कीजिए बेशक आप वादा खिलाफ़ी नहीं करते। [सूर-ए-आले इमरान : १९४]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	खाने के बाद शुक्र अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "खाना खा कर जो (अल्लाह का) शुक्र अदा करता है, वह (नफ़्ल) रोज़ा रख कर सब्र करने वालों के बराबर है।" [मुस्तदरक : १५३७, अन मआन बिन मुहम्मद गिफ़ारी रज़ि.]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	कुफ्र करने वाले नाकाम होंगे

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : बेशक जो लोग काफ़िर हो गए और (दूसरों को भी) अल्लाह के रास्ते से रोका और हिदायत ज़ाहिर होने के बाद अल्लाह के रसूल की मुखालफ़त की, तो यह लोग अल्लाह (के दीन) को ज़रा भी नुकसान नहीं पहुँचा सकेंगेऔर अल्लाह तआला उन के तमाम आमाल को बरबाद कर देगा।" [सूर-ए- मुहम्मद : ३२]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	लोगों की कन्जूसी

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : सुन लो ! तुम ऐसे हो के जब तुम को अल्लाह की राह में खर्च करने के लिए बुलाया जाता है, तुम में से बाज़ लोग बुख्ल करते हैं और जोशख़्स कन्जूसी करता है, तो वह हकीकत में अपने ही लिए कन्जूसी करता है और अल्लाह तआला ग़नी है (किसी का मोहताज नहीं) और तुम सब उस के मोहताज हो। [सूर-ए-मुहम्मद : ३८]

नंबर (८) : आखिरत के बारे में	हौज़े कौसर क्या है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "कौसर जन्नत में एक नहर है, जिस के दोनों किनारे सोने के हैं और वह मोती और याकूत पर बहती है, उस की मिट्टी मुश्क से ज़ियादा खुशबूदार, उस का पानी शहद से ज़ियादा मीठा और बर्फ से ज़ियादा सफेद है।" [तिर्मिज़ी : ३३६१, अन इब्ने उमर रज़ि.]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	खजूर से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "ज़चगी की हालत में तुम अपनी औरतों को तर खजूरें खिलाओ और अगर वह न मिलें तो सूखी खजूरें खिलाओ।" [मुस्नदे अबू यअला : ४३४, अन अली रज़ि.]

फ़ायदा: बच्चे की पैदाइश के बाद खजूर खाने से औरत के जिस्म का फ़ासिद खून निकल जाता है और बदन की कमज़ोरी खत्म हो जाती है।

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम में से कोई आदमी मजलिस में जाए, तो सलाम करे और फिर जी चाहे, तो मजलिस में शरीक हो जाए, और फिर जाते वक्त भी सलाम कर के जाए।" [तिर्मिज़ी : २७०६, अन अबी हुरैरह रज़ि.]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(२५) शव्वालुल मुकर्रम

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत रुक़य्या बिन्ते रसूलुल्लाह ﷺ

हज़रत रुक़य्या رضی اللہ عنہا हुज़ूर ﷺ की दूसरी साहबज़ादी थीं, वह पहले अबू लहब के बेटे उत्बा के निकाह में थीं, जब हुज़ूर ﷺ को नुबुव्वत मिली और लोगों को दावत देना शुरू किया, तो अबू लहब के हुक्म पर उत्बा ने हज़रत रुक़य्या رضی اللہ عنہا को तलाक़ दे दी, फिर हज़रत उस्मान رضی اللہ عنہ से उन का निकाह हुआ, उन से एक लड़का अब्दुल्लाह पैदा हुए, हज़रत रुक़य्या رضی اللہ عنہا हज़रत उस्मान رضی اللہ عنہ के साथ हब्शा हिजरत कर गईं, हिजरत के वक्त हुज़ूर ﷺ ने फ़र्माया:इस उम्मत में सब से पहले हिजरत करने वाले उस्मान رضی اللہ عنہ और उन की अहलिया हैं । कुछ अर्से बाद दोनों हब्शा से मक्का आए और फिर हिजरत कर के मदीना आ गए। ग़ज़्वा-ए-बद्र के मौके पर हज़रत रुक़य्या رضی اللہ عنہا बहुत बीमार हो गईं थीं,इस लिए हुज़ूर ﷺ ने हज़रत उस्मान رضی اللہ عنہ को उन की तिमारदारी के लिए रोक दिया था और उसी बीमारी में सन २ हिजरी में हज़रत रुक़य्या رضی اللہ عنہا का इन्तेकाल हो गया,जंगे बद्र में शिरकत की वजह से हुज़ूर ﷺ उन की नमाज़े जनाज़ा में शरीक न हो सके। वह जन्नतुल बकी में मदफून हुईं।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — अल्लाह का बा बरकत निज़ाम

अल्लाह तआला का कितना अच्छा इन्तेज़ाम है के दुनिया में जो चीज़ें बहुत ज़ियादा इस्तेमाल होती हैं उन को बहुत ज़ियादा आम कर दिया है जैसे हवा,पानी वग़ैरा; अगर हम खाए जाने वाले जानवरों में से बकरे पर ग़ौर करें, तो हम देखेंगे के दुनिया में रोज़ाना लाखों की तादाद में और बकर ईद के दिनों में अरबों की तादाद में बकरे ज़बह किए जाते हैं, लेकिन कभी यह बात सामने नहीं आती के बकरों की नस्ल में कमी हो गई, क्यों कि अल्लाह तआला ज़ियादा इस्तेमाल होने वाली चीज़ों में बरकत अता करते हैं ।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सजद-ए-तिलावत अदा करना

हज़रत इब्ने उमर رضی اللہ عنہ फ़र्माते हैं : "हुज़ूर ﷺ हमारे दर्मियान सजदे वाली सूरह की तिलावत फ़र्माते, तो सजदा करते और हम लोग भी सजदा करते, हत्ता के हम में से बाज़ आदमी को अपनी पेशानी रखने की जगह नहीं मिलती।" [बुखारी : १०७५, अन इब्ने उमर رضی اللہ عنہ]

फ़ायदा : सजदे वाली आयत तिलावत करने के बाद, तिलावत करने वाले और सुनने वाले दोनों पर सजदा करना वाजिब है ।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — बीमारों की इयादत करना

रसूलुल्लाह ﷺ बीमारों की इयादत करते और जनाज़े में शरीक होते और गुलामों की दावत कबूल फ़र्माते थे। [मुस्तदरक लिल हाकिम : ४३७२, अन अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | सूर-ए-यासीन की तिलावत करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : हर चीज़ का एक दिल होता है और कुर्आन का दिल सूर-ए-यासीन है और जो शख्स सूर-ए-यासीन पढे तो उस के पढने पर अल्लाह तआला दस मर्तबा कुर्आने करीम पढ ने का सवाब लिखते हैं। [तिर्मिज़ी : २८८७, अन अनस ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | किसी की बात को छुप कर सुनना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जिस ने दूसरों की कोई ऐसी बात छुप कर सुनी जिस को वह उस से छुपाना चाहते थे, तो कयामत के दिन ऐसे शख्स के कान में शीशा पिघला कर डाला जाएगा। [तिर्मिज़ी : १७५१, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया से बेरग़बती का इनाम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स जन्नत का ख्वाहिशमंद होगा वह भलाई में जल्दी करेगा और जो शख़्स जहन्नम से खौफ करेगा, वह ख्वाहिशात से गाफ़िल (बे परवाह) हो जाएगा और जो मौत का इन्तेज़ार करेगा उस पर लज़्ज़तें बेकार हो जाएंगी और जो शख़्स दुनिया में ज़ुहद (दुनिया से बे रगबती) इख्तियार करेगा, उस पर मुसीबतें आसान हो जाएंगी।" [शोअबुल ईमान : १०२१९, अन अली ؓ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | जन्नतियों का लिबास

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : उन जन्नतियों के बदन पर बारीक और मोटे रेशम के कपड़े होंगे और उन को चाँदी के कंगन पहनाए जाएंगे और उन का रब उन को पाकीज़ा शराब पिलाएगा (अहले जन्नत से कहा जाएगा के) यह सब नेअमतें तुम्हारे आमाल का बदला हैं और तुम्हारी दुनियवी कोशिश कबूल हो गई। [सूर-ए-दहर : २१ ता २२]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | हर बीमारी का इलाज

एक मर्तबा हज़रत जिब्राईल ؑ रसूलुल्लाह ﷺ के पास तशरीफ़ लाए और पूछा : ऐ मुहम्मद ! क्या आप को तक्लीफ है? रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: हाँ ! तो जिब्राईल ؑ ने यह दुआ पढी :

((بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُّؤْذِيْكَ، مِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ وَعَيْنِ حَاسِدٍ بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ وَاللّٰهُ يَشْفِيْكَ))

तर्जमा : अल्लाह के नाम से झाड़ता हूँ हर उस चीज़ से जो आप को तक्लीफ़ दे ख्वाह किसी जान्दार की बुराई हो या हसद करने वाली आँख की बुराई हो, अल्लाह के नाम से झाड़ता हूँ, अल्लाह आप को शिफ़ा दे। [तिर्मिज़ी : ९७२, अन अबी सईद ؓ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला से डरते रहो और सच्चे लोगों के साथ रहो। [सूर-ए-तौबा : ११९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२९) शव्वालुल मुकर्रम

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत उम्मे कुलसूम ﵂ बिन्ते रसूलुल्लाह ﷺ

हज़रत उम्मे कुलसूम ﵂ हुज़ूर ﷺ की तीसरी साहबज़ादी थीं, उन का निकाह पहले अबू लहब के दूसरे बेटे उतैबा से हुआ, मगर रुखसती नहीं हुई थी, जब हुज़ूर ﷺ को नुबुव्वत मिली और तौहीद की दावत देनी शुरू की, तो अबू लहब के हुक्म से उतैबा ने उन को तलाक दे दी, उन की बड़ी बहन हज़रत रुक़य्या ﵂ के इन्तेकाल के बाद सन ३ हिजरी में हुज़ूर ﷺ ने उन का निकाह हज़रत उस्मान ﵁ से कर दिया, आप ﷺ ने फ़र्माया : "मैं ने उस्मान ﵁ से उम्मे कुलसूम ﵂ का निकाह सिर्फ़ आस्मानी वही की वजह से किया है", उन से कोई औलाद नहीं हुई, हज़रत उम्मे कुलसूम ﵂ की वफ़ात शाबान सन ९ हिजरी में हुई।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — मशकीज़े के पानी का ख़त्म न होना

एक सफ़र में लोगों नेआप ﷺ से पानी की कमी की शिकायत की, तो आप ﷺ ने एक शख़्स को पानी तलाश करने भेजा, चुनान्चे उन को एक औरत मिली जिस के पास दो बड़ी मश्कें पानी की थीं, उसे हुज़ूर ﷺ की खिदमत में लाया गया। आप ﷺ ने एक बर्तन मंगवाया और उन मश्कों का पानी बर्तन में डलवाया और फिर फ़र्माया के पियो। रावी फ़र्माते हैं के हम चालीस आदमियों ने खूब सैर हो कर पिया और अपने बर्तनों को भी भर लिया और खुदा की कसम उस औरत की दोनों मश्कें पहले जैसे ही भरी हुई थीं।

[बुखारी : ३५७१, अन इमरान बिन हुसैन ﵁]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सूद से बचना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ ईमान वालो ! तुम कई गुना बढ़ा कर सूद मत खाया करो(क्यों कि सूद लेना मुतलकन हराम है) और अल्लाह तआला से डरते रहो ताके तुम कामयाब हो जाओ।

[सूरए-ए-आले इमरान : १३०]

फ़ायदा : सूद लेना, देना, खाना, खिलाना नाजाइज़ व हराम है। कुर्आन और हदीस में इस पर बड़ी सख़्त सज़ा आई है, लिहाज़ा हर मुसलमान पर सूदी लेन देन से बचना ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — हलाल रिज़्क और इल्मे नाफे की दुआ

हज़रत उम्मे सलमा ﵂ फ़र्माती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ फज्र की नमाज़ के बाद यह दुआ फ़र्माते :

((اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَّرِزْقًا طَيِّبًا وَعَمَلًا مُتَقَبَّلًا))

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से हलाल रिज़्क, नफा पहुँचाने वाला इल्म और मक़्बूल अमल का सवाल करता हूँ।

[इब्ने माजा : ९२५, अन उम्मे सलमा ﵂]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	वुज़ू के बावजूद वुज़ू करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने वुज़ू होने के बावजूद वुज़ू किया, उस के लिए दस नेकियाँ लिखी जाती हैं।" [अबू दाऊद : ६२, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	कुफ्र की सज़ा जहन्नम है

कुर्आन मेंअल्लाह तआला फ़र्माता है : जिन लोगों ने कुफ्र किया और खुदा के रास्ते (दीन से) लोगों को रोका, फिर कुफ्र की हालत ही में मर गए, तो अल्लाह तआला उन को कभी नहीं बख़्शेगा ।

[सूर-ए-मुहम्मद : ३४]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	आखिरत दुनिया से बेहतर है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम दुनियवी ज़िंदगी को मुकद्दम रखते हो, हालांके आखिरत दुनिया से बेहतर है और बाकी रहने वाली है (इस लिए आखिरत ही की तय्यारी करो)।

[सूर-ए- आला : १६ ता १७]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	हौज़े कौसर की कैफ़ियत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हौज़े कौसर के बर्तन सितारों के बराबर होंगे, उस से जोभी इन्सान एक घूंट पी लेगा, तो हमेशा के लिए उस की प्यास बुझ जाएगी ।" [इब्ने माजा : ४३०३, अन सौबान ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	वरम (सूजन) का इलाज

हज़रत अस्मा ؓ के चेहरे और सर में वरम हो गया, तो उन्होंने हज़रत आयशा ؓ के ज़रिये आप ﷺ को इस की खबर दी। चुनान्चे हुज़ूर ﷺ उन के यहाँ तशरीफ़ ले गए और दर्द की जगह पर कपड़े के ऊपर से हाथ रख कर तीन मर्तबा यह दुआ फ़र्माई :

((اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنْهَا سُوْئَهُ وَفَحْشَهُ بِدَعْوَةِ نَبِيِّكَ الطَّيِّبِ الْمُبَارَكِ الْمَكِيْنِ عِنْدَكَ ، بِسْمِ اللّٰهِ))

फिर इर्शाद फ़र्माया : यह कह लिया करो, चुनांचे उन्हों ने तीन दिन तक यही अमल किया तो उन का वरम जाता रहा। [दलाइलुन्नुबुव्वह लिल बैहकी : २४३०]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : आपस में दुश्मनी न रखो, एक दूसरे से बढ़ने की हवस न करो, आपसी तअल्लुकात मत तोड़ो, बल्के ऐ अल्लाह के बन्दो ! अल्लाह के हुक्म के मुताबिक भाई भाई बन कर रहो। [बुखारी : ६०६५, अन अनस बिन मालिक ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर १ : इस्लामी तारीख | हज़रत फ़ातिमा ؓ बिन्ते रसूलुल्लाह ﷺ

हज़रत फ़ातिमा ؓ रसूलुल्लाह ﷺ की सब से छोटी साहबज़ादी और हजरत अली ؓ की ज़ौजा हैं। नुबुव्वत से पाँच साल कब्ल बैतुल्लाह की तामीर के वक्त उन की पैदाइश हुई, इस्लाम की खातिर मक्की दौर में तक्लीफें बर्दाशत करती रहीं, फिर बाद में हिजरत कर के मदीना चली आईं। सन २ हिजरी में हज़रत अली ؓ से उन का निकाह हुआ। उन की ज़िंदगी औरतों के लिए एक नमूना है। हुज़ूर ﷺ की चारों बेटियों में सब से महेबूब और चहेती बेटी होने के बावजूद घर का सारा काम बज़ाते खुद अन्जाम देती थीं, चक्की पीसने की वजह से हाथ में छाले पड़ गए थे, घर में कोई खादिमा नहीं थीं। दुनिया की थोड़ी सी चीज़ों पर ब खुशी राज़ी रहती और उस पर सब्र करती थीं। इसी वजह से हुज़ूर ﷺ ने फर्माया के तुम्हारे लिए दुनिया की तमाम औरतों में मर्यम ؑ, खदीजा ؓ, फ़ातिमा ؓ और आसिया की ज़िंदगियाँ नमूने के लिए काफ़ी हैं, सच्चाई और साफ गोई में हजरत फ़ातिमा ؓ बेमिसाल थीं। रमज़ान सन ११ हिजरी में हुज़ूर ﷺ की वफ़ात के छ:माह बाद मदीना मुनव्वरा में उन का इन्तेकाल हुआ और जन्नतुल बकी में दफ़्न हुईं।

नंबर २ : अल्लाह की कुदरत | रात और दिन का अदलना बदलना

जब से दुनिया आबाद है, उस वक्त से लेकर आज तक दिन और रात अपने मुतअय्यना वक्त पर बदलते रहते हैं , कभी ऐसा नहीं हुआ के रात कोअचानक सूरज निकला और सुबह हो गई और न ही ऐसा हुआ के दोपहर को सूरज गुरूब हुआ और रात होगई, बल्के रात न तो अपने वक्त से एक सेकंड पहले आ सकती है और न ही दिन अपने वक्त से एक सेकंड पहले आ सकता है। यह सारा गैबी निज़ाम सिर्फ़ अल्लाह ही अपनी कुदरत से चला रहे हैं।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में | बीवी की वरासत में शौहर का हिस्सा

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियों के छोड़े हूए माल में से आधा हिस्सा है, जब के उन को कोई औलाद न हो और अगर उन की औलाद हो, तो तुम्हारी बीवियों के छोड़े हुए माल में चौथाई हिस्सा है (तुम्हें यह हिस्सा) उन की वसिय्यत और कर्ज अदा करने के बाद मिलेगा।

[सूर-ए-निसा : १२]

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में | दुआ के खत्म पर चेहरे पर हाथ फेरना

रसूलुल्लाह ﷺ जब दुआ के लिए हाथ उठाते तो चेहरे पर हाथ फेरने के बाद ही रखते थे।

[तिर्मिज़ी : ११८६, अन उमर बिन खत्ताब ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	चालीस लाख नेकियाँ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जिस शख़्स ने दिन में दस मर्तबा

((اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ اِلٰهًا وَّاحِدًا

اَحَدًا صَمَدًا لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَّهُ كُفُوًا اَحَدٌ))

पढ़ा, तो अल्लाह तआला उस के लिए चालीस लाख नेकियाँ लिख देगा।

[तिर्मिज़ी : ३४७४, तमीम दारी رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	सूद खाने वाले का अंजाम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: "मेराज की रात मेरा गुज़र एक ऐसी कौम पर हुआ जिन के पेट इतने बड़े थे जैसे कोई घर हो, उस में साँप और बिच्छू थे जो बाहर से नज़र आ रहे थे। मैं ने जिब्राईल عليه السلام से पूछा : यह कौन लोग हैं? जिब्राईल عليه السلام ने कहा : यह सूद खाने वाले लोग हैं।"

[इब्ने माजा : २२७३, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया से क्या कहा गया

हज़रत सलत बिन हकीम رحمه الله फ़र्माते हैं के हमें यह बात पहुँची है के दुनिया को यह वही की गई है के जो तुझे छोड़ दे, तू उस की खिदमत कर और जो तुझे तरजीह दे उस से खिदमत ले।

[अज़ ज़ुह्द इब्ने अबिद्दुनिया : १४५]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	कयामत के हालात

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जब सूरज बेनूर हो जाएगा और सितारे टूट कर गिर पड़ेंगे और जब पहाड़ चला दिए जाएँगे और जब दस माह की गाभन ऊँटनियाँ (कीमती होने के बावजूद आज़ाद) छोड़ दी जाएँगी और जब जंगली जानवर जमा हो जाएँगे और जब दर्या भड़का दिए जाएँगे।

[सूर-ए-तक्वीर: १ ता ६]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	दाढ़ के दर्द का इलाज

एक मर्तबा हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा رضي الله عنه ने हुज़ूर ﷺ से दाढ़ में शदीद दर्द की शिकायत की, तो आप ﷺ ने उन्हें करीब बुला कर दर्द की जगह अपना मुबारक हाथ रखा और सात मर्तबा यह दुआ फ़र्माई : ((اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنْهُ سُوْءَ مَا يَجِدُ وَفُحْشَهُ بِدَعْوَةِ نَبِيِّكَ الْمُبَارَكِ الْمَكِيْنِ عِنْدَكَ))

चुनान्चे फ़ौरन आराम हो गया।

[दलाइलुन्नुबुव्वह लिल बैहकी : २४३३]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम अपने रब से अपने गुनाह माफ़ कराओ और उस की जानिब मुतवज्जेह रहा करो।

[सूर-ए-हूद: ९०]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा

(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(२८) शव्वालुल मुकर्रम

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — रसूलुल्लाह ﷺ के बेटे

रसूलुल्लाह ﷺ के दो फ़र्ज़न्द हज़रत ख़दीजा رضي الله عنها से मक्का में पैदा हुए, बड़े हज़रत क़ासिम رضي الله عنه हैं, जिन की वजह से आप ﷺ की कुन्नियत अबुल क़ासिम है। दूसरे हज़रत अब्दुल्लाह رضي الله عنه हैं जिन को ताहिर और तय्यब भी कहा जाता है, उन की पैदाइश नुबुव्वत के बाद हुई थी, उन के इन्तेकाल पर कुफ़्फ़ार ने यह अफ़वाह उड़ाई थी के हुज़ूर ﷺ के बेटे की मौत हो गई इस लिए अब उन का दीन भी नहीं चलेगा,उन की नस्ल भी नहीं चलेगी। हुज़ूर ﷺ को इस अफ़वाह से बहुत सदमा पहुँचा था हुज़ूर ﷺ की तसल्ली के लिए अल्लाह ने सूर-ए-कौसर नाज़िल फ़र्माई। हुज़ूर ﷺ के तीसरे बेटे हज़रत मारिया किबतिया رضي الله عنها के बतन से माहे ज़िल हिज्जा सन ८ हिजरी में पैदा हुए, जिन का नाम इब्राहीम رضي الله عنه था, हुज़ूर ﷺ ने हज़रत मारिया رضي الله عنها को मदीना के मोहल्ला आलिया में रखा था। यह मोहल्ला बाद में सरया उम्मे इब्राहीम कहा जाने लगा। हज़रत इब्राहीम رضي الله عنه ने अठारह माह यानी डेढ़ साल की उम्र में इन्तेकाल फ़र्माया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — आप ﷺ की दुआ से बारिश का होना

आप ﷺ और सहाबा رضي الله عنهم सफर में जा रहे थे और पानी बिल्कुल ख़त्म हो गया, तो सहाबा رضي الله عنهم ने आप ﷺ के सामने इस की शिकायत की। हुज़ूर ﷺ ने अल्लाह से दुआ फ़र्माई, अल्लाह ने उसी वक्त एक बादल भेजा वह इतना बरसा के सब लोग सैराब हो गए और अपनी अपनी ज़रूरत के बकद्र (पानी जमा कर के) साथ ले लिया। [बैहकी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : १९८५, अन आसिम बिन उमर बिन कतादा رحمه الله]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ों को सही पढ़ने पर माफ़ी का वादा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "पाँच नमाज़ें अल्लाह तआला ने फ़र्ज़ की हैं, जिस ने उन के लिए अच्छी तरह वुज़ू किया और ठीक वक्त पर उन को पढ़ा और रुकू व सजदा जैसे करना चाहिए वैसे ही किया, तो ऐसे शख़्स के लिए अल्लाह तआला का वादा है, के वह उस को बख़्श देगा; और जिस ने ऐसा नहीं किया तो उस के लिए अल्लाह तआला का कोई वादा नहीं, चाहेगा तो उस को बख़्श देगा और चाहेगा तो सज़ा देगा।" [अबू दाऊद : ४२५, अन उबादा बिन सामित رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — सुबह व शाम पढ़ने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जो शख़्स इस दुआ को सुबह व शाम पढ़ेगा, तो अल्लाह तआला उस को खुश कर देगा : ((رَضِينَا بِاللّٰهِ رَبًّا وَّ بِالْإِسْلَامِ دِينًا وَّ بِمُحَمَّدٍ رَسُولًا))

तर्जमा : मैं अल्लाह तआला को अपना रब, इस्लाम को अपना दीन और मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ को अपना रसूल मान कर खुश हो गया। [अबू दाऊद : ५०७२, अन अबी सल्लाम رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	रोज़ा जहन्नम से दूर करने का सबब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स एक दिन अल्लाह तआला के लिए रोज़ा रखेगा, अल्लाह तआला उस से जहन्नम को सौ साल की मसाफ़त के बराबर दूर कर देगा।"

[नसई : २२५६, अन उक़्बा बिन आमिर ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	इस्लाम की दावत को ठुकराना एक बड़ा ज़ुल्म

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "उस शख़्स से बड़ा ज़ालिम कौन होगा, जो अल्लाह पर झूट बाँधे, जब के उसे इस्लाम की दावत दी जा रही हो और अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को हिदायत नहीं दिया करता।"

[सूर-ए-सफ़ : ७]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	इन्सान की खस्लत व मिज़ाज

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : इन्सान का हाल यह है के जब उस का रब उस को आज़माता है और उस को इज़्ज़त व नेअ्मत से नवाज़ता है, तो कहने लगता है : मेरे रब ने मुझे बड़ी इज़्ज़त अता फ़र्माई और जब उस का रब उस को (एक और अंदाज़ से) आज़माता है और उस की रोज़ी तंग कर देता है, तो कहने लगता है: मेरे रब ने मुझे ज़लील कर दिया।

[सूर-ए-फ़ज्र : १५ ता १६]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जन्नत का खेमा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जन्नत में मोती का खोल दार खेमा होगा, जिस की चौड़ाई साठ मील होगी। उस के हर कोने में जन्नतियों की बीवियाँ होंगी, जो एक दूसरी को नहीं देख पाएँगी और (अहले जन्नत) मोमिनीन अपनी बीवियों के पास आते जाते रहेंगे।"

[बुखारी : ४८७९, अन अब्दुल्लाह बिन कैस ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बीमार को परहेज़ का हुक्म

एक मर्तबा उम्मे मुन्ज़िर ؓ के घर पर रसूलुल्लाह ﷺ के साथ साथ हज़रत अली ؓ भी खजूर खा रहे थे, तो आप ﷺ ने फ़र्माया : "ऐ अली ! बस करो, क्योंकि तुम अभी कमज़ोर हो।"

[अबू दाऊद : ३८५६]

फ़ायदा : बीमारी की वजह से चूंकि सारे ही आज़ा कमज़ोर हो जाते हैं, जिन में मेअ्दा भी है, इस लिए ऐसे मौके पर खाने पीने में एहतियात करना चाहिए और मेअ्दे में हल्की और कम ग़िज़ा पहुँचनी चाहिए ताके सही तरीके से हज़्म हो सके।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : तुम पहली सफ को पूरा करो, फिर उस सफ़ को जो उस से मिली हुई हो और अगर कुछ कमी हो तो आखरी सफ़ में होनी चाहिए। (यानी अगली सफें मुकम्मल तौर पर पुर होनी चाहिए)।

[नसई : ८१९, अन अनस ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत अनस बिन मालिक ؓ

हज़रत अनस बिन मालिक ؓ सन ३ नब्वी में मदीना में पैदा हुए, हुज़ूर ﷺ जब हिजरत फ़र्मा कर मदीना तय्यबा तशरीफ़ लाए, तो उस वक्त उन की उम्र नौ या दस साल की थी, उन का घराना आप ﷺ की मदीना आमद से पहले ही मुसलमान हो गया था। उन की वालिदा उम्मे सुलैम हज़रत अनस को लेकर हुज़ूर ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! मदीना के मर्द और औरतों ने आप ﷺ की खिदमत में कोई न कोई हदिया पेश किया है, लेकिन मेरे पास इस लड़के के अलावा कुछ भी नहीं है, आप इस को अपनी खिदमत के लिए कबूल फ़र्मा लें तो बड़ा एहसान होगा। आप ﷺ ने हज़रत अनस ؓ को अपनी खिदमत के लिए कबूल फ़र्मा लिया। वह दस साल हुज़ूर ﷺ की खिदमत में रहे, मगर आप ﷺ ने कभी उन की खता पर उफ़ तक नहीं कहा, उन से खुश हो कर एक मर्तबा हुज़ूर ﷺ ने दुआ फ़र्माई ((اَللّٰهُمَّ ارْزُقْهُ مَالًا وَوَلَدًا وَبَارِكْ لَهُ)) ऐ अल्लाह ! इस को माल व दौलत अता फ़र्मा और उस में बरकत अता फ़र्मा, इस दुआ का यह असर हुआ के वह मदीना में सब से ज़ियादा मालदार और साहिबे औलाद बन गए उन के अस्सी लड़के और दो लड़कियाँ थी, हज़रत अनस ؓ ने बड़ी लम्बी उम्र पाई, वह आखरी सहाबी हैं जिन का मदीना में सन ९३ हिजरी में इन्तेकाल हुआ।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — सितारों में अल्लाह की कुदरत

आसमान में हम सूरज और चाँद को देखते हैं, उन के अलावा बहुत सारे सितारे हैं जो छोटे छोटे और चमकते हुए नज़र आते हैं, यह सब छोटे नहीं हैं, बल्के इन में से कुछ सूरज और चाँद से भी कई गुना ज़ियादा बड़े हैं, दूर होने की वजह से हम को छोटे नज़र आते हैं, यह अल्लाह ही की ज़ात है जिस ने इन को चमकता हुआ रखा है और इन को अपनी कुदरत से रोके रखा है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — दीन में पैदा की हुई नई बातों से बचना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "(दीन में) नई पैदा की हुई बातों से अपने को अलग रखो; इस लिए के दीन में नई पैदा की हुई हर बात बेअस्ल है और हर बेअस्ल बात गुमराही है।"

[अबू दाऊद : ४६०७, अन इरबाज़ बिन सारिया ؓ]

फ़ायदा : शरीअत के ख़िलाफ़ दीन में पैदा की हुई नई बातों से बचना ज़रूरी है क्यों के वह गुमराही का सबब है।

नंबर (४): **एक सुन्नत के बारे में**	**सोने के आदाब**

रसूलुल्लाह ﷺ जब सोने का इरादा करते तो अपने दाहिने हाथ को रुखसार (दाहिने गाल) के नीचे रख कर सोते फिर तीन बार यह दुआ पढ़ते:

((اَللّٰهُمَّ قِنِيْ عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ)) [अबू दाऊद : ५०४५, अन हफ़्सा ؓ]

नंबर (५): **एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत**	**चाश्त की नमाज़ पढ़ना**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स चाश्त की बारा रकात पढ़ेगा, तो अल्लाह तआला उस के लिए जन्नत में सोने का महल बनाएगा।" [तिर्मिज़ी : ४७३, अन अनस बिन मालिक ؓ]

नंबर (६): **एक गुनाह के बारे में**	**नाम कमाने के लिए ज़बान का सीखना**

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जो आदमी ज़बान की फ़साहत व बलागत सिर्फ़ इसलिए सीखे के लोगों के दिलों को अपनी तरफ़ माइल करे, तो अल्लाह तआला कयामत के दिन ऐसे आदमी के नवाफ़िल और फ़राइज़ कबूल नहीं फ़र्माएँगे। [अबू दाऊद : ५००६, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (७): **दुनिया के बारे में**	**दुनिया की मुहब्बत बीमारी है**

हज़रत अबू दर्दा ؓ फर्माते थे के क्या मैं तुम को तुम्हारी बीमारी और दवा न बताऊँ ! तुम्हारी वह बीमारी दुनिया की मुहब्बत है और दवा अल्लाह तआला का ज़िक्र है। [शोअबुल ईमान : १०२४४]

नंबर (८): **आख़िरत के बारे में**	**जन्नत की चीज़ें**

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है: जन्नत में ऊँचे ऊँचे तख़्त होंगे और बड़े बड़े प्याले रखे होंगे। और बराबर तकिये लगे होंगे और मख़्मली मस्नद बिछी हुई होंगी। [सूर-ए-गाशिया : १३ ता १६]

नंबर (९): **तिब्बे नब्वी से इलाज**	**पछना के ज़रिये दर्द का इलाज**

हज़रत इब्ने अब्बास ؓ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने एहराम की हालत में दर्द की वजह से सर में पछना लगवाया। [बुख़ारी : ५७०१]

फ़ायदा : पछना लगाने से बदन से फ़ासिद ख़ून निकल जाता है जिस की वजह से दर्द वग़ैरह ख़त्म हो जाता है और आँख की रोशनी तेज़ हो जाती है।

नंबर (१०): **कुर्आन की नसीहत**	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से सच्ची पक्की तौबा कर लो, उम्मीद है के तुम्हारा रब तुम्हारी ख़ताओं को माफ़ कर देगा और जन्नत में दाख़िल कर देगा। [सूर-ए-तहरीम : ८]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर ①: इस्लामी तारीख़ — हज़रत सुहैल बिन अम्र ؓ

हजरत सुहैल बिन अम्र ؓ "ख़तीबे कुरैश" के लकब से मशहूर थे, शायरी में भी कमाल रखते थे, इस्लाम लाने से पहले तमाम जंगों में तकरीर व शायरी के जरिए मुशरिकीने मक्का को मुसलमानों के खिलाफ़ उभारते रहे, जब ग़ज़व-ए-बद्र में मुसलमानों के हाथों कैद हुए, तो हजरत उमर ؓ ने उन के सामने के दो दांत तोड़ने की इजाज़त चाही तो, हुजूर ﷺ ने फ़र्माया : उमर जाने दो शायद इस की तकरीर व खिताबत और शायरी तुम्हारे काम आजाए, चुनान्चे सुलहे हुदैबिया के मौके पर कुरैशे मक्का की तरफ़ से सुलह नामा लिखने के लिए सुहैल बिन अम्र ؓ ही को मुन्तखब किया गया था। फ़तहे मक्का के मौके पर अबूजनदल की दरख्वास्त पर आप ﷺ ने उन के बाप सुहैल को अमान दी। लिहाज़ा आप ﷺ के इस हुस्ने सुलूक से मुतअस्सिर हो कर ईमान में दाखिल हो गए, नमाज़, रोज़ा, सदका व खैरात में बे मिसाल थे, मुसलसल इबादत की वजह से उन का बदन सूख कर लकड़ी की तरह हो गया था। वह इस्लाम से पहली ज़िंदगी को याद कर के और कुर्आन शरीफ़ सुन कर बहुत रोया करते थे। हजरत अबू बक्र ؓ के दौर में फ़ितनों को खत्म करने में हजरत सुहैल और उन के घराने की कोशिशें काबिले तारीफ़ हैं। रात भर इबादत करते और दिन सिपेह सालार की हैसियत से यरमूक के मैदान में गुज़ारते। और इसी जंग में १३ हिजरी में जामे शहादत नोश फ़र्माया।

नंबर ②: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — एक वसक जौ में बरकत

हज़रत आयशा ؓ बयान करती हैं के जब आँहज़रत ﷺ ने वफ़ात पाई, तो कुछ वसक (वज़न) बराबर जौ के सिवा घर में कुछ न था, हम बक़द्रे ज़रूरत उस में से इस्तेमाल करते रहते थे, लेकिन वह खत्म ही नहीं होता था, तो हम ने उस को तोला, बस फ़िर वह खत्म हो गया यानी वह बरकत जाती रही।

[बुखारी : ३०९७]

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — बीवी को उस का महर देना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम लोग अपनी बीवियों को उन का महर खुश दिली से दे दिया करो, अलबत्ता अगर वह अपने महर में से कुछ छोड़ दें, तो उसे लज़ीज़ और खुश गवार समझ कर खाओ।

[सूर-ए-निसा : ४]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	औलाद के फ़र्मांबरदार होने के लिए

जो शख़्स यह चाहता हो के उस की औलाद फर्मांबरदार और नेक हो, तो वह यह दुआ पढे :

﴿رَبِّ أَوْزِعْنِيٓ أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيٓ أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِيٓ ۖ إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ﴾

[सूर-ए-अहकाफ : १५]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	पहली सफ़ की फ़ज़ीलत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : अल्लाह तआला पहली सफ़ वालों पर रहमत भेजते हैं और फ़रिश्ते दुआए मग़फ़िरत फ़र्माते हैं ।

[इब्ने माजा : ९९९, अन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	कुर्आन का मज़ाक उड़ाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जब इन्सान के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, तो कहता है के यह पहले लोगों के किस्से कहानियाँ हैं । हरगिज़ नहीं ! बल्के उन के बुरे कामों के सबब उन के दिलों पर ज़ंग लग गया है ।

[सूर-ए-मुतफ़्फ़िफ़ीन : १३ ता १४]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	माल की मुहब्बत खुदा की ना शुक्री का सबब है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : इन्सान अपने रब का बड़ा ही ना शुक्रा है, हालांके उस को भी इस की खबर है (और वह ऐसा मामला इस लिए करता है) के उस को माल की मुहब्बत ज़ियादा है ।

[सूर-ए-आदियात : ६ ता ८]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	हर शख़्स मौत के बाद अफ़सोस करेगा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: हर शख़्स मौत के बाद अफ़सोस करेगा, सहाबा ﷺ ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! किस बात पर अफसोस करेगा ? आप ﷺ ने फ़र्माया: अगर नेक है, तो ज़ियादा नेकी न करने पर अफ़सोस करेगा और अगर गुनहगार है तो गुनाह से न रुकने पर अफ़सोस करेगा।

[तिर्मिज़ी : २४०३, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बड़ी बीमारियों से हिफ़ाज़त

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स हर महीने तीन दिन सुबह के वक्त शहद चाटेगा, तो उसे कोई बड़ी बीमारी नहीं लगेगी।"

[इब्ने माजा : ३४५०, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जब तुम में से कोई ऐसे शख़्स को देखे जो माल व दौलत और शक्ल व सूरत में उस से बढ़ा हुआ हो, तो उस को चाहिए के किसी ऐसे शख़्स को देखे, जो उस से (माल व दौलत में) कम हो (ताके शुक्र की कैफ़ियत पैदा हो)।

[बुखारी : ६४९०, अन अबी हुरैरह ﷺ]
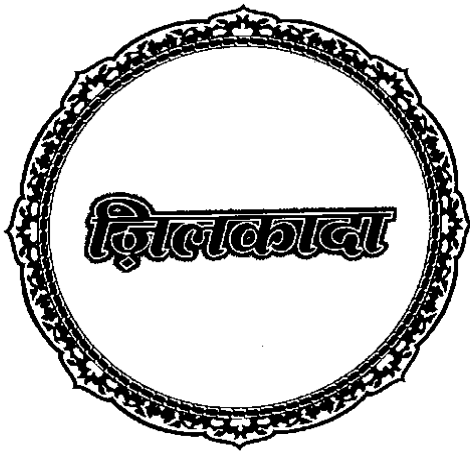
ज़िलकादा

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(१) ज़िलक़ादा

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — बैतुल्लाह की तामीर

अल्लाह तआला ने इन्सानों की पैदाइश से हज़ारों साल पहेले फ़रिश्तों के ज़रिए बैतुल्लाह की तामीर कराई, यह रूए ज़मीन पर पहेला बाबरकत घर और दुनिया वालों के लिए अमन व सुकून की जगह है, फिर हज़रत आदम ﷺ ने दुनिया में आने के बाद बैतुल्लाह की तामीर फ़र्माई, तूफ़ाने नूह के मौक़े पर अल्लाह तआला ने हिफ़ाज़त के लिए इस घर को आस्मान पर उठा लिया था, फिर अल्लाह के हुक्म से हज़रत इब्राहीम ﷺ व इस्माईल ﷺ ने इस की तामीर फ़र्माई और जिब्रीले अमीन जन्नत से एक क़ीमती पत्थर ले कर आए जिस को बैतुल्लाह के कोने में लगाया गया और दूसरा वह जन्नती पत्थर है जिस पर हज़रत इब्राहीम ﷺ खड़े हो कर बैतुल्लाह की तामीर करते थे, मुअ्जिज़ाना तौर पर यह पत्थर काबा की दीवारों के साथ बलंद हो जाता था, यह मकामे इब्राहीम के नाम से मशहूर है। जब तवील ज़माना गुज़रने की वजह से काबा की दीवारें कमज़ोर पड़ गयीं, तो हुज़ूर ﷺ की नुबुव्वत से पहले क़ुरैशे मक्का ने हतीम का हिस्सा छोड़ कर और बैतुल्लाह का पिछला दर्वाज़ा बंद कर के इमारत को मुरब्बा (चौकोर) अंदाज़ में बनाया। ग़र्ज़ तामीरे बैतूल्लाह के साथ तमाम हज व उमरह करने वालों के लिए अल्लाह तआला ने इस का तवाफ़ फ़र्ज़ कर दिया है और इसी घर को तमाम मुसलमानों की इबादत का मरकज़ और क़िब्ला क़रार दे दिया है।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — सूरज अल्लाह की निशानी

अल्लाह तआला ने सूरज बनाया, जिसे हम आग का एक दहेकता हुआ गोला समझते हैं, जिस से हमें रौशनी और गर्मी हासिल होती है यह हज़ारों साल से इसी तरह दहेक रहा है, रोज़ाना पूरब से निकलता है और पच्छिम में जा कर छुप जाता है। अब हम गौर करें के इस दहेकते हुए सुरज को ईंधन कौन देता है? कौन है जो इस के लिए पेट्रोल या गैस या लकड़ी का इंतेज़ाम करता है? जिस से वह हज़ारों साल से इसी तरह दहेक रहा है और फिर इतना ज़्यादा ईंधन कहां से आ रहा है, जिस के जलने से सारी दुनिया को रौश्नी और गर्मी मिल रही है? और कौन है, जो एक मुकर्ररह वक्त पर इस को हमारे लिए निकालता है और एक मुकर्ररह वक्त पर छुपा देता है ? यक़ीनन वह ज़ात अल्लाह की है, जिस ने हम को और हर चीज़ को पैदा किया।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — इस्लाम की बुनियाद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है : (१) इस बात की गवाही देना के अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं और मोहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। (२) नमाज़ अदा करना। (३) ज़कात देना। (४) हज करना। (५) रमज़ान के रोज़े रखना। [बुख़ारी : ८, अन इब्ने उमर ﷺ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	एहराम के लिये गुस्ल करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने जब एहराम का इरादा किया तो गुस्ल किया।

[मुअजमुलकबीर लित्तबरानी : ४७२९, अन ज़ैद बिन साबित رضی اللہ عنہ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	हज व उमरह एक साथ करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हज और उमरह को एक साथ किया करो इस लिए के वह दोनों फक्र और गुनाहों को खत्म कर देते हैं, जैसा के भट्टी लोहे और सोने चांदी के मैल को खत्म कर देती है और हज्जे मबरूर (मक़बूल) का बदला तो सिर्फ़ जन्नत ही है।" [तिर्मिज़ी : ८१०, अन इब्ने मस्ऊद رضی اللہ عنہ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	झूटी कसम खा कर माल बेचना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स झूटी कसम खा कर माल फ़रोख्त करता है, कयामत में अल्लाह तआला उस की तरफ़ रहमत की नज़र से नहीं देखेगा।" [बुखारी : २३६९, अन अबी हुरैरह رضی اللہ عنہ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया अमल की जगह है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : हर ऐसे शख्स के लिए बड़ी खराबी है, जो ऐब लगाने वाला और ताना देने वाला हो, जो माल जमा करता हो और उस को गिन गिन कर रखता हो। वह ख्याल करता है के उस का माल हमेशा उस के पास रहेगा। हरगिज़ ऐसा नहीं है, उस को रौंदने वाली आग में फेंका जाएगा। [सूर-ए-हुमज़ह : १ ता ४]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	जन्नती का दिल पाक व साफ होगा

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : हम उन अहले जन्नत के दिलों से रंजिश व कुदूरत को बाहर निकाल देंगे और उन के नीचे नहरें बह रही होंगी और वह कहेंगे के अल्लाह का शुक्र है, जिस ने हम को इस मकाम तक पहुँचाया और अगर अल्लाह हम को न पहूँचाता, तो हमारी कभी यहां तक रसाई न होती। [सूर-ए-आराफ़ : ४३]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	इलाज करने वालों के लिये अहेम हिदायत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अगर किसी ने बगैर इल्म और तजर्बे के इलाज किया तो क्यामत के दिन उस के बारे में पूछा जाएगा।" [अबू दाऊद : ४५८६, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र رضی اللہ عنہ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : ऐ ईमान वालो ! जब तुम में से किसी को मौत आने लगे, तो वसिय्यत के वक्त शहादत के लिए तुम में से दो इन्साफ़ पसंद आदमी गवाह होने चाहिए या तुम्हारे अलावा दूसरी क़ौम के लोग भी गवाह बन सकते हैं अगर मुसलमान न मिलें। [सूर-ए-मायदा : १०६]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

② ज़िलकादा

नंबर ①: इस्लामी तारीख — ज़म ज़म का चश्मा

हज़रत इब्राहीम عليه السلام अल्लाह के हुक्म से अपनी बीवी हाजरा और लख्ते जिगर इस्माईल का बेआब व गयाह और चटियल मैदान में छोड़ कर चले गए, जब इन के थैले की खजूर और मशकीज़े का पानी खत्म हो गया और भूक व प्यास की वजह से हज़रत हाजरा का दूध खुश्क हो गया तो बच्चा भूक के मारे बिलबिलाने लगा, इधर हाजरा رضي الله عنها बेचैन हो कर पानी की तलाश में सफ़ा व मर्वह पहाड़ी पर चक्कर लगाने लगीं, जब सातवें चक्कर में मर्वह पहाड़ी पर पहूँचीं, तो ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी, तो समझ गई के अल्लाह की तरफ़ से कोई खास बात ज़ाहिर होने वाली है। वापस आईं तो देखा के जिब्रईले अमीन तशरीफ़ फ़र्मा हैं और उन्हों ने ज़मीन पर अपनी एड़ी मार कर पानी का चश्मा जारी कर दिया। बहते पानी को देख कर हज़रत हाजरा ने ज़मज़म (रूक जा) कहा। उसी दिन से इस का नाम ज़म ज़म हो गया। अगर हज़रत हाजरा इस पानी को न रोकतीं तो वहां पानी की नहेर जारी हो जाती। यह चश्मा हज़ारों साल तक बंद पड़ा रहा, आप ﷺ के दादा अब्दुल मुत्तलिब ने ख्वाब की रहनुमाई से इस कुवें की खुदाई की, तो साफ़ सुथरा पानी निकल आया, उस दिन से आज तक इस का पानी खत्म नहीं हुआ, जब के हर वक्त मशीनों से पानी निकालने का काम जारी है।

नंबर ②: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — आप ﷺ की दुआ से सर्दी खत्म हो गई

हज़रत बिलाल رضي الله عنه बयान करते हैं के एक मरतबा सर्दी के मौसम में मैं ने सुबह की अज़ान दी, आप ﷺ अज़ान के बाद हुजर-ए-मुबारक से बाहर तश्रीफ़ लाये मगर मस्जिद में आप ﷺ को कोई शख्स नज़र न आया। आप ﷺ ने पुछा : लोग कहां हैं ? मैं ने अर्ज़ किया : लोग सर्दी की वजह से नहीं आए। आप ﷺ ने उसी वक्त दुआ फ़र्माई के ऐ अल्लाह ! इन से सर्दी की तकलीफ़ को दूर कर दे। हज़रत बिलाल رضي الله عنه कहते हैं के उस के बाद मैं ने एक एक कर के लोगों को नमाज़ के लिए आते देखा।

[बैहक़ी फ़ी दलाइलिन्नुबुव्वह : २४८३, अन बिलाल رضي الله عنه]

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — सफा और मर्वह की सई करना

रसूलुल्लाह ﷺ (सफ़ा और मर्वह) की सई करते हुए सहाबा से फ़र्मा रहे थे के सई करो, क्योंकि अल्लाह तआला ने सई को तुम पर लाज़िम करार दिया है।

[मुस्नदे अहमद : २६८२१, अन हबीबा बिन्ते तजज़ा رضي الله عنها]

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — एहराम बांधने की दुआ

जब रसूलुल्लाह ﷺ एहराम बांधने के लिए सवारी से उतरे तो यह दुआ पढ़ी ((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ، سُبْحَانَ اللّٰهِ ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ)) तर्जमा : सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है, अल्लाह की ज़ात पाक है, अल्लाह सब से बड़ा है।

[बुखारी :१५५१, अन अनस رضي الله عنه]

नंबर (५): एक गुनाह के बारे में | बैतुल्लाह का तवाफ़ करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने बैतुल्लाह के पचास तवाफ़ किये, तो वह अपने गुनाहों से उस दिन की तरह पाक हो जाएगा, जिस दिन उस की माँ ने उस को जना था।"

[तिर्मिज़ी : ८६६, अन इब्ने अब्बास رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | किसी को तकलीफ देना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मुर्दों को बुरा भला मत कहो, इस लिए के तुम इस से जिन्दों को तकलीफ़ दोगे।" मुर्दों को बुरा भला कहना मना है, क्योंकि इस से उन के वह रिश्तेदार जो ज़िन्दा हैं उन्हें तकलीफ़ होगी। और किसी को तकलीफ़ देना जाइज़ नहीं है।

[तिर्मिज़ी : १९८२, अन मुग़ीरह बिन शोअबा رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनियावी ज़िन्दगी धोका है

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "दुनियवी जिन्दगी तो कुछ भी नहीं, सिर्फ़ धोके का सौदा है।" [सूर-ए-आले इमरान : १८५]

फ़ायदा : जिस तरह माल के ज़ाहिर को देख कर खरीदार फंस जाता है, इसी तरह दुनिया की चमक दमक से धोका खा कर आखिरत से ग़ाफ़िल हो जाता है, इसी लिए इन्सानों को दुनिया की चमक दमक से होशियार रहना चाहिए।

नंबर (८): आखिरत के बारे में | क़यामत के दिन खुश नसीब इन्सान

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क़यामत के दिन लोगों में से वह खुश नसीब मेरी शफ़ाअत का मुसतहिक़ होगा, जिस ने सच्चे दिल से कलिम-ए-तय्यिबा "لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ" पढ़ा होगा।"

[बुखारी:९९, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | आबे ज़म ज़म से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "ज़मीन पर सब से बेहतरीन पानी आबे ज़म ज़म है, यह खाने वाले के लिए खाना और बीमार के लिए शिफ़ा है।" [मुअजमुल औसत लित्तबरानी : ४०५९, अन अब्बास رضي الله عنه]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दुनिया लम्हा ब लम्हा गुज़रती जा रही है और आखिरत सामने आती जा रही है और (इस दुनिया में) दोनों के चाहने वाले मौजूद हैं, तुम को दुनिया के मुकाबले में आखिरत इख्तियार करनी चाहिए। क्योंकि दुनिया अमल की जगह है, यहां हिसाब व किताब नहीं है और आखिरत हिसाब व किताब की जगह है, वहां अमल करने का मौका नहीं है।"

[कंज़ु लउम्माल : ४३७५७, अन जाबिर رضي الله عنه]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

③ ज़िलक़ादा

नंबर ①: इस्लामी तारीख़ — सफ़ा व मर्वह

सफ़ा व मर्वह मक्का में बैतुल्लाह के बिल्कुल क़रीब दो पहाड़ियां हैं, जब इब्राहीम عليه السلام अल्लाह के हुक्म से हज़रत हाजरा और इस्माईल عليه السلام को मक्का में छोड़ कर चले गये तो खाना पानी खत्म हो गया तो हज़रत हाजरा पानी की तलाश में इन्हीं दो पहाड़ियों के दर्मियान दौड़ी थीं। फ़िर जब कुछ ज़माने के बाद बुत परस्ती का दौर शुरू हुआ तो सफ़ा मर्वह पर भी दो बुत रख दिए गए थे, इस्लाम से पहले लोग सई के बाद इन का बोसा लेते और ताज़ीम के तौर पर यह समझते के तवाफ़ व सई इन्हीं के नाम पर किया जाता है, इस्लाम में जब सफ़ा व मर्वह के दर्मियान सई करने का हुक्म दिया गया, लोगों को शुबा पैदा हुआ के इस सई से कहीं बुत परस्तों की मुशाबहत न हो जाए, तो अल्लाह तआला ने फ़र्माया के हम ने हज़रत हाजरा की इस अदा को क़यामत तक हज व उम्रह करने वालों के लिए बाइसे अज्र व सवाब और इस्लामी यादगार बना दिया है। यह कोई गुनाह की बात नहीं, बल्के तुम्हारे लिए इबादत व तकर्रुबे इलाही का ज़रिया है। चुनान्चे हज व उम्रह करने वालों के लिए सफ़ा व मर्वह के दर्मियान सइ करना वाजिब है और बिला किसी शरई उज़्र के सई छोड़ देने पर दम वाजिब है।

नंबर ②: अल्लाह की क़ुदरत — अंडे से बच्चे का पैदा होना

अंडा एक छिल्का है, जिस के अंदर से चूज़ा पैदा होता है और वह एक वक्त तक उस में पलता रहता है, लेकिन जब अल्लाह तआला उस को बाहर निकालना चाहता है, तो उस नाज़ुक और कमज़ोर बच्चे को एक मज़बूत चोंच दे देता है, जिस से वह अंदर से बराबर अंडे के खोल को तोड़ने की कोशिश करता रहता है, यहां तक के एक वक्त ऐसा आता है जब वह इस छिल्के को तोड़ कर बाहर आ जाता है और ज़मीन पर दौड़ने लगता है। यह अल्लाह तआला की ज़बरदस्त क़ुदरत है, जो एक ऐसे अंडे से जिस को तोड़ो तो सफ़ेद और पीले पानी के सिवा कुछ न निकले, एक चलती फ़िरती जान पैदा कर देता है।

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — मीक़ात से एहराम बांध कर गुज़रना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "कोई शख्स बगैर एहराम बांधे हुए मीक़ात से न गुज़रे।"

[मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा : ४/५०९]

फ़ायदा : खान-ए-काबा से कुछ फ़ास्लों पर चंद जगहें हैं जहां से एहराम बांधते हैं इन्हें "मीक़ात" कहा जाता है। यहां से गुजरते वक्त मक्का से बाहर रहने वालों पर ऐहराम बाँधना लाज़िम है।

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — एहराम से पहले खुश्बू लगाना

हज़रत आयशा رضي الله عنها फ़र्माती हैं के वह सरवरे कायनात ﷺ के एहराम से पहले और एहराम खोलने के बाद खुश्बू लगाया करती थीं जिस में मुश्क मिला होता था।

[मिश्कात : २५४०]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	हज के दौरान गुनाहों से बचना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने हज के दौरान बीवी से न जिमाअ् किया और न ही किसी छोटे बड़े गुनाह का इर्तिकाब किया, तो उस के पिछले सारे गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे।"

[तिर्मिज़ी : ८११, अन अबी हुरैरह ؓ]

एक दूसरी रिवायत में है के वह शख्स हज से ऐसा वापस होता है जैसा उस दिन था जिस दिन मां के पेट से निकला था।

[बुखारी : १८२०, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	ज़िना और शराब पर वईद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो शख्स ज़िना करता है या शराब पीता है, तो अल्लाह तआला उस के ईमान को दिल से ऐसे निकाल देता है, जिस तरह आदमी क़मीस सर की तरफ़ से निकाल देता है।"

[मुस्तदरक : ५७, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दो आदतें

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स दीनी मामले में अपने से बलंद शख्स को देख कर उस की पैरवी करे और दुनियावी मामले में अपने से कम तर को देख कर अल्लाह तआला की अता कर्दा फ़ज़ीलत पर उस की तारीफ़ करे तो अल्लाह तआला उस को (इन दो आदतों की वजह से) साबिर व शाकिर लिख देते हैं। और जो शख्स दीनी मामले में अपने से कमतर को देखे और दुनियावी मामले में अपने से ऊपर वाले को देख कर अफसोस करे, तो अल्लाह तआला उस को साबिर व शाकिर नहीं लिखते हैं।"

[तिर्मिज़ी : २५१२, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ؓ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	दोज़खियों का खाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "दोज़खियों को खौलते हुए चश्मे का पानी पिलाया जाएगा, उन को कांटेदार दरख्त के अलावा कोई खाना नसीब न होगा, जो न मोटा करेगा और न भूक को दूर करेगा।"

[सूर-ए-ग़ाशिया : ५ ता ७]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बीमारियों का इलाज

हज़रत अनस ؓ के पास दो शख्स आए, जिन में से एक ने कहा : ऐ अबू हमज़ा (यह हज़रत अनस ؓ की कुन्नियत है) मुझे तकलीफ़ है, यानी मैं बीमार हूं, तो हज़रत अनस ؓ ने फ़र्माया : क्या मैं तुम को उस दुआ से न दम कर दूं जिस से रसूलुल्लाह ﷺ दम किया करते थे? उस ने कहा जी हाँ जरूर तो उन्होंने यह दुआ पढ़ी :

((اَللّٰهُمَّ رَبَّ النَّاسِ، مُذْهِبَ الْبَاسِ، اِشْفِ اَنْتَ الشَّافِيْ، لَا شَافِيَ اِلَّا اَنْتَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا))

[बुखारी : ५७४२]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न करो, मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो और तंगदस्ती के खौफ़ से अपनी औलाद को क़त्ल न करो, हम तुम को भी रिज़्क़ देते हैं और उन को भी, खुले और छुपे बेहयाई के कामों के क़रीब न जाओ।"

[सूर-ए- अन्आम:१५१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — मिना

मिना बैतुल्लाह के मशरिक़ में तीन मील के फ़ास्ले पर वादीए मोहस्सर से जमरह-ए-अक़बा तक एक वसीअ मैदान है, यहीं पर जब शैतान ने तीन मर्तबा हज़रत इब्राहीम ﷺ व इस्माईल ﷺ को बहकाने की कोशिश की थी, तो हज़रत इब्राहीम ﷺ ने बिस्मिल्लाह पढ़ कर उस को कंकरी मारी, तो वह रास्ते से हट गया, उसी की याद में यहां पर जमरह-ए-अक़बा, जमरह-ए-वुस्ता और जमरह-ए-ऊला के नाम के तीन सुतून बना दिए गए हैं , उन्हीं जमरात पर हाजी लोग दस से बारह ज़िलहिज्जा तक कंकरियां मार कर सुन्नते इब्राहीमी की याद ताज़ा करते हैं, मिना से मुत्तसिल वादीए मोहस्सर में हाजियों को क़याम करना मम्नूअ है, क्यों कि इसी जगह पर अब्रहा नामी बादशाह और उस की फ़ौज को अल्लाह के हुक्म से अबाबील परिन्दों ने कंकरियों के ज़रिए हलाक कर दिया था और अल्लाह तआला ने अपने घर की हिफ़ाज़त फ़र्माई थी।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — ज़ख्मी पैर का अच्छा हो जाना

कअब बिन अशरफ़ यहूदी के क़त्ल के मौक़े पर ज़ैद बिन मुआज़ ﷺ के पैर पर तल्वार का ज़ख्म आ गया था। आप ﷺ ने उन के ज़ख्म पर अपना मुबारक थूक डाल दिया, तो वह उसी वक्त ठीक हो गया। [सुबुलुलहुदा वर्रशाद : १०/४२]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — बीवी के साथ अच्छा सुलूक करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "और (औरतों) के साथ हुस्ने सुलूक से ज़िन्दगी बसर करो।" [सूर-ए-निसा : १९]

फ़ायदा : अपनी बीवी के साथ अच्छाई का मामला करना और अच्छे सुलूक से ज़िन्दगी गुज़ारना बहुत ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — एहराम बांधे तो इस तरह तल्बिया कहे

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ का तल्बिया इस तरह था :

((لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَاشَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ، إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَاشَرِيْكَ لَكَ))

तर्जमा : मैं हाज़िर हूं ऐ अल्लाह ! हाज़िर हूं, तेरा कोई शरीक नहीं है, मैं हाज़िर हूं, हर किस्म की तारीफ़, नेअ्मतें और मुल्क व हुकूमत का मालिक तू ही है, तेरा कोई शरीक नहीं। [बुखारी : १५४९]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | हज व उमरह करने वाले

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हज और उम्रह करने वाले लोग अल्लाह की जमात हैं। जब वह लोग दुआ करते हैं, तो अल्लाह तआला उन की दुआ कुबूल फ़र्माते हैं और जब मग़फ़िरत तलब करते हैं, तो अल्लाह तआला उन की मग़फ़िरत फ़र्मा देते हैं।" [इब्ने माजा : २८९२, अन अबी हुरैरह रज़ि.]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | रसूलुल्लाह ﷺ के हुक्म को न मानना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "जो लोग रसूलुल्लाह के हुक्म की खिलाफ़ वर्ज़ी करते हैं, उन को इस से डरना चाहिए के कोई आफ़त उन पर आ पड़े या कोई दर्दनाक अज़ाब उन पर आ जाए।" [सूर-ए-नूर : ६३]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया का सामान चंद रोज़ा है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "दुनिया का सामान कुछ ही दिन रहने वाला है और उस शख़्स के लिए आखिरत हर तरह से बेहतर है, जो अल्लाह तआला से डरता हो और (क़यामत) में तुम पर ज़र्रा बराबर भी ज़ुल्म न किया जाएगा।" [सूर-ए-निसा : ७७]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | जन्नत के दरख़्तों की सुरीली आवाज़

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जन्नत में एक दरख़्त है, जिस की जड़ें सोने की और उन की शाखें हीरे जवाहिरात की हैं, उस दरख़्त से एक हवा चलती है, तो ऐसी सुरीली आवाज़ निकलती है, जिस से अच्छी आवाज़ सुनने वालों ने आज तक नहीं सुनी।" [तर्गीब : ५३२२, अन अबी हुरैरह रज़ि.]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | दुआए जिब्रईल से इलाज

हज़रत आयशा रज़ि. बयान करती हैं के जब रसूलुल्लाह ﷺ बीमार हुए, तो जिब्रईल अलै. ने इस दुआ को पढ़ कर दम किया :

((بِاسْمِ اللهِ يُبْرِيكَ، وَمِنْ كُلِّ دَاءٍ يَشْفِيكَ، وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ وَشَرِّ كُلِّ ذِي عَيْنٍ))

[मुस्लिम : ५६९९]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो आदमी तुम से अल्लाह का वास्ता दे कर पनाह मांगे उसे पनाह दे दो और जो आदमी तुम से अल्लाह का वास्ता दे कर सवाल करे उसे दे दो और जो शख़्स तुम्हारे साथ कोई भलाई करे तो तुम उस का बदला दे दो, लेकिन अगर तुम उस का बदला देने के लिए कोई चीज़ न पाओ तो उस के लिए दुआ ही करो, यहां तक के तुम को इतमिनान हो जाए के तुम ने उस का बदला दे दिया।" [नसई : २५६८, अन इब्ने उमर रज़ि.]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — अरफ़ात

मक्का मुअज़्ज़मा से मशरिक की सिम्त से ताइफ़ जाने वाली सड़क पर तकरीबन १६ किलो मीटर की दूरी पर मैदाने अरफ़ात वाके है, जन्नत से निकलने के बाद इसी जगह पर आदम व हव्वा ने मुलाकात के बाद एक दूसरे को पहचाना, इसी लिए इस को अरफ़ात कहते हैं, मैदाने अरफ़ात ही में हज़रत जिब्रईल ने हज़रत इब्राहीम ﷺ को हज के अरकान सिखाए, इसी मैदान में सहाब-ए-किराम को दीन के मुकम्मल होने की खुश्खबरी दी गई और यहीं रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी ऊंटनी पर सवार हो कर हज्जतुल विदा का वह तारीखी खुतबा दिया, जिस में तमाम जाहिलाना रस्मों का खात्मा फ़र्माया और दुनियाए इन्सानियत को एक दुसरे के हुकूक व फ़राइज़ अंजाम देने की तालीम दी और अपनी उम्मत को खुदा के सामने रोने और गिड़गिड़ाने का सलीका सिखाया और इसी जगह पर कयामत के दिन मैदाने हश्र कायम होगा और बंदों का हिसाब व किताब होगा। दुनिया भर से हज करने वाले ९ ज़िलहिज्जा को इसी मैदान में पहुंच कर फ़रीज़-ए-हज अदा करते हैं। अरफ़ात में ठहरने को वुकूफ़े अरफ़ा कहते हैं ज़वाल से लेकर गुरूबे आफ़ताब तक यहां ठहेरना ज़रूरी है।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — समुंदरी मखलूक की हिफाज़त

अल्लाह तआला अपनी मखलूक पर बड़ा रहीम व करीम है। वह अपनी मखलूक की हर तरफ़ से हिफ़ाजत करता है, चाहे वह ज़मीन की मखलूक हो या समुंदर की। समुंदर के बारे में यह बात बड़ी अजीब है के जाड़े के मौसम में जब सख्त किस्म की सर्दी पड़ती है और पानी बड़ी तेज़ी से जम कर बर्फ़ बनने लगता है, तो यह खतरा पैदा हो जाता है के पूरा समुंदर जम कर बर्फ़ बन जाएगा, जिस से सारी समुंदरी मखलूक मर कर खत्म हो जाएगी, लेकिन यहां अल्लाह तआला अपनी कुदरत दिखाता है और समुंदर के ऊपर बर्फ़ की एक मोटी तह जमा देता है, जो पानी के ऊपर तैरती रहती है जिस से नीचे का पानी जमने से बच जाता है और पूरी मख्लूक वहां सुकून से जिन्दा रहती है। यह अल्लाह तआला की कुदरत है जो हर तरह से अपनी मख्लूक की हिफ़ाज़त करता है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सई को तवाफ के बाद करना

हज़रत इब्ने उमर ﷺ से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ (खान-ए-काबा) तशरीफ़ लाए तो उस का सात चक्कर लगाया और मकामे इब्राहीम के पीछे दो रकात नामाज़ अदा की फिर सफ़ा और मर्वह के दर्मियान सई किया और फ़र्माया : तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह ﷺ की ज़ात में बेहतरीन नमूना है।

[नसई :२९६३]

फ़ायदा : हज व उमरह में सई को तवाफ़ के बाद करना ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — सवारी पर सवार होने के बाद की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ जब सफ़र के इरादे से निकलते और सवारी पर बैठ जाते तो तीन मर्तबा तक्बीर

(अल्लाहु अकबर) फ़र्माते और यह दुआ पढ़ते :

((سُبْحَانَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ وَاِنَّا اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ))

[तिर्मिज़ी : ३४४७, अन इब्ने उमर ﷺ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह के रास्ते में हज़ार आयत की तिलावत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने (कुर्आन की) एक हज़ार आयत् अल्लाह के रास्ते में पढीं अल्लाह तआला उस का नाम नबियों, सिद्दीक़ीन , शुहदा और सालिहीन के साथ लिख देते हैं।"

[मुस्तदरक : २४४३, अन मुआज़ अलजुहनी ﷺ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	शिर्के खफी क्या है?

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क्या मैं तुम को दज्जाल से भी ज़ियादा खतरनाक चीज़ न बताऊं?" सहाबा ﷺ ने अर्ज़ किया : ज़रूर बतलाएं, वह क्या चीज़ है ? रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "शिर्के खफ़ी है, के आदमी नमाज़ पढ़ने के लिए खड़ा हो, फिर अपनी नमाज़ इस लिए लम्बी करे के कोई आदमी उस को नमाज़ पढ़ता देख रहा है।"

[इब्ने माजा : ४२०४, अन अबी सईद खुदरी ﷺ]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	दो बुरी चीज़ें

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "बूढ़े आदमी का दिल दो चीज़ों के बारे में हमेशा जवान रहता है, एक दुनिया की मुहब्बत और दूसरी लम्बी लम्बी उम्मीदें।"

[बुखारी : ६४२०, अन अबी हुरैरह

नंबर (८) : आखिरत के बारे में	जन्नत के फल और दरख्तों का साया

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "मुत्तक़ियों से जिस जन्नत का वादा किया गया है, उस की कैफ़ियत यह है के उस के नीचे नहरें जारी होंगी और उस का फल और साया हमेशा रहेगा।"

[सूर-ए-रअद : ३५]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	अजवा खजूर से ज़हर का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अजवा खजूर जन्नत का फल है और इस में ज़हर से शिफ़ा है।"

[तिर्मिज़ी :२०६८, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (१०) : कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "अल्लाह तआला अदल व इन्साफ़ और अच्छा सुलूक करने का और रिश्ते दारों को माली मदद करने का हुक्म देता है और बेहयाई, ना पसंद कामों और ज़ुल्म व ज़ियादती से मना करता है, वह तुम्हें ऐसी बातों की नसीहत करता है ताके तुम (इन को) याद रखो।"

[सूर-ए-नहल : ९०]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

६ ज़िलकादा

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत उवैस क़रनी رحمة الله عليه

हज़रत उवैस बिन आमिर क़रनी رحمة الله عليه एक मशहूर ताबिई हैं, यमन के रहने वाले थे, उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ का ज़माना तो पाया, मगर एक उज़्र की वजह से हुज़ूर ﷺ से मुलाक़ात का शर्फ़ हासिल न कर सके, उन की बूढ़ी मां थीं, जिन की खिदमत को सब से बड़ी सआदत और इबादत समझते थे। चूनान्चे जब तक वह ज़िन्दा रहीं उन की तन्हाई के ख्याल से हज नहीं किया। रसूलुल्लाह ﷺ ने ग़ायबाना तौर से उन को खैरुत्ताबिईन (तमाम ताबिईन में सब से बेहतर) का लक़ब अता फ़र्माया। हुज़ूर ﷺ ने हज़रत उमर फ़ारूक़ رضي الله عنه को उन का नाम और अलामतें बता कर फ़र्माया के "वह अपनी मां की खिदमत करता है, जब वह खुदा की क़सम खाता है, तो अल्लाह उस को पुरी करता है, अगर तुम उस से दुआए मग़फ़िरत हासिल कर सको तो करा लेना।" उस के बाद से हज़रत उमर رضي الله عنه बराबर उन की तलाश में रहे, यहां तक के हज़रत उमर رضي الله عنه के ज़मान-ए-खिलाफ़त में हज़रत उवैस رحمة الله عليه तशरीफ़ लाए, उन से मुलाक़ात की और दुआ की दरखास्त की। इस पर हज़रत उवैस क़रनी رحمة الله عليه ने हज़रत उमर رضي الله عنه के लिए दुआए मग़फ़िरत की। हज़रत उवैस क़रनी رحمة الله عليه फिर कूफ़ा में जा कर बस गए थे और बहुत ही सादा ज़िंदगी गुज़ारते थे।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — अली बिन हकम رضي الله عنه के हक़ में दुआ

हज़रत मुआविया बिन हकम رضي الله عنه फ़र्माते हैं के ग़जव-ए-खंदक़ में जब मेरे भाई अली बिन हकम अपने घोड़े पर सवार हुए और उस को दौड़ाया, तो किसी दिवार से उन का पैर टकरा गया, जिस की वजह से उन के पैर की हड्डी टूट गई। हम लोग उन को आप ﷺ की खिदमत में ले आए। आप ﷺ ने "बिस्मिल्लाह" कह कर उन के पैर पर अपना मुबारक हाथ फेरा, तो घोड़े से नीचे उतरने से पहले ही उन का पैर ठीक हो गया था।

[सुबुलुल हुदा वर्रशाद : ४/३७०]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — अज़ाने जुमा के बाद दुनियावी काम छोड़ना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "ऐ ईमान वालो ! जुमा के दिन जब (जुमा की) नमाज़ के लिए अज़ान दी जाए, तो (सब के सब) अल्लाह के ज़िक्र(यानी नमाज़) की तरफ़ दौड़ पड़ो और खरीद व फ़रोख्त छोड़ दो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानते हो।"

[सूर-ए-जुमा : ९]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — तवाफ के दौरान यह दुआ पढे

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जो शख्स बैतुल्लाह का तवाफ़ करे और कोई गुफ़्तगू न करे और यह पढ़ता रहे :

((سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ))

तो उस के दस गुनाह माफ़ होते हैं, दस नेकियां लिखी जाती हैं और दस दर्जे बलंद होते हैं।

[इब्ने माजा : २९५७, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह की राह में चौकीदारी करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने एक दिन व रात अल्लाह के रास्ते में चौकीदारी की, तो उसे एक महीने के रोज़े और तहज्जुद पढ़ने का सवाब मिलेगा। अगर उस चौकीदारी में उस की मौत हो गई तो यह अज्र उस का हमेशा जारी रहेगा और उसे रिज़्क़ मिलेगा और (आख़िरत की तमाम) आफ़तों से महफ़ूज़ रहेगा।"

[मुस्तदरक : २४२२, अन सलमान फ़ारसी ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	बुरे आमाल की नहूसत

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : खुश्की और तरी (यानी पूरी दुनिया) में लोगों के बुरे आमाल की वजह से हलाकत व तबाही फैल गई है, ताके अल्लाह तआला इन्हें इन के बाज़ आमाल (की सज़ा) का मज़ा चखा दे , ताके वह अपने बुरे आमाल से बाज़ आ जाएं।

[सूर-ए-रूम : ४१]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया से बेहतर आखिरत का घर है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "दुनिया की ज़िन्दगी सिवाए खेल कूद के कुछ भी नहीं और आखिरत का घर मुत्तक़ियों (यानी अल्लाह तआला से डरने वालों) के लिए बेहतर है।"

[सूर-ए-अन्आम : ३२]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	हर नबी का हौज़ होगा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हर नबी के लिए एक हौज़ होगा और अंबिया आपस में फ़ख्र करेंगे के किस के हौज़ पर ज़ियादा उम्मती पानी पीने के लिए आते हैं। मुझे उम्मीद है के मेरे हौज़ पर आने वालों की तादाद ज़ियादा होगी।"

[तिर्मिज़ी : २४४३, अन समुरह बिन जुन्दुब ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	सना के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मौत से अगर किसी चीज़ में शिफ़ा होती तो सना में होती।"

[तिर्मिज़ी : २०८१, अन अस्मा बिन्ते उमैस ﷺ]

फ़ायदा : सना एक दरख़त का नाम है, जिस की पत्ती तकरीबन दो इंच लम्बी और एक इंच चौड़ी होती है, इस में छोटे छोटे पीले रंग के फूल होते हैं , उस की पत्ती कब्ज़ के मरीज़ के लिये मुफ़ीद है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

हज़रत अबू ज़र ﷺ को मुख़ातब कर के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "के मैं तुम्हें ऐसी दो ख़स्लतें बता दूं जो बहुत हल्की हैं और अल्लाह के तराज़ू में वह बहुत भारी हैं ? फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया: "ज़ियादा ख़ामोश रहने की आदत और हुस्ने अख़लाक़।"

[बैहक़ी फ़ी शोअबिलईमान : ७७७५, अन अनस ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत अली رحمه الله बिन हुसैन رضي الله عنه

हज़रत अली رحمه الله बिन हुसैन जिन की कुन्नियत अबुल हसन और लक़ब ज़ैनुल आबिदीन है, हज़रत हुसैन رضي الله عنه के सब से छोटे बेटे थे, हज़रत ज़ैनुल आबिदीन رحمه الله जो न सिर्फ़ एक ताबिई थे बल्के खानदाने नुबुव्वत के चश्म व चिराग़ भी थे, मैदाने करबला में अहले बैत की शहादत के बाद मर्दों में सिर्फ़ इन की ज़ात ही बाकी रह गई थी जिन से हज़रत हुसैन رضي الله عنه की नस्ल चली । वाक़ेअए करबला के वक्त सफ़र में अपने वालिद के साथ थे, मगर बीमारी की वजह से जंग में शरीक न हो सके थे । इन की एक खास सिफ़त दर्या दिली से अल्लाह के रास्ते में खर्च करना था । मदीना के तकरीबन सौ घराने इन के सदक़ात से पर्वरिश पाते थे और किसी को खबर तक न होने पाई थी । वह खुद रातों को जा कर लोगों के घरों पर सदका पहुंचाते थे, इन की वफ़ात के बाद मालूम हुआ के इन घरानों की कफ़ालत इन्हीं के ज़रिए हुआ करती थी । सन ९४ हिजरी में मदीना में वफ़ात हुई और जन्नतुल बकी में हज़रत हसन رضي الله عنه के बाज़ू में दफ़्न किये गए ।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — फलों में रंग, मज़ा और खुश्बू

ज़मीन पर बेशुमार किस्म के फ़ल पाए जाते हैं, जिस में से हर एक की अपनी एक खुश्बू अपना एक रंग और मज़ा है, लेकिन ग़ौर करें के यह रंग,यह खुश्बू , यह मज़ा कहां से आया ? अगर पेड़ की जड़ को खोद कर देखें तो वहां मिट्टी ही मिट्टी है, डालियों को काट कर देखें तो वहां न तो रंग है, न खुश्बू है और न यह मज़ा है, पेड़ को जो पानी दिया गया उस में भी यह चीज़ें नहीं, तो आखिर यह चीज़ें कहां से आई ? यकीनन यह अल्लाह के खज़ाने से आती हैं ।

[सूर-ए-मुनाफ़िकून : ७]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — हज के महीने में एहराम बांधना

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضي الله عنه फ़र्माते हैं : सुन्नत यह है के हज का एहराम हज के महीनों में ही बांधा जाए ।

[बुखारी : ३३]

फ़ायदा : शव्वाल, ज़ीकादा और ज़िलहिज्जा के पहले दस दिनों को "أَشْهُرُ الْحَجِّ" (अश्हुरे हज) यानी हज के महीने कहा जाता है। इन्हीं महीनों के अंदर अंदर हज का एहराम बांधना ज़रूरी है ।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — ज़म ज़म खड़े हो कर पीना

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने ज़म ज़म का पानी खड़े हो कर पिया ।

[बुखारी : ५६१७]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह के रास्ते में सवारी देना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स अल्लाह और उस के वादे पर यक़ीन के साथ उस के रास्ते में अपनी सवारी देगा तो उस सवारी का खाना, पीना, लीद और पेशाब का वज़न भी क़यामत के दिन नेकियों में शुमार होगा।" [मुस्तदरक : २४५६, अन अबी हुरैरह ﷺ]

फ़ायदा : इस हदीस के अंदर हर तरह की गाड़ियां भी दाखिल हैं।

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	रिशवत की लेन देन करना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ फ़र्माते हैं : रसूलुल्लाह ﷺ ने रिशवत देने वाले और रिशवत लेने वाले पर लानत फ़र्माई है। [तिर्मिज़ी : १३३७, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया मोमिन के लिए क़ैद खाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दुनिया मोमिन के लिए क़ैद खाना है और काफ़िर के लिए जन्नत है।" [मुस्लिम : ७४१७, अन अबी हुरैरा ﷺ]

फ़ायदा : शरीअत के अहकाम पर अमल करना, नफ़्सानी ख़्वाहिशों को छोड़ना, अल्लाह और उस के रसूलों के हुक्मों पर चलना नफ़्स के लिए क़ैद है और काफ़िर अपने नफ़्स की हर ख़्वाहिश को पूरी करने में आज़ाद है, इस लिए गोया दुनिया ही उस के लिए जन्नत का दर्जा रखती है।

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	गुनाहगारों के लिए जहन्नम की आग है

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : (अल्लाह का अज़ाब उस दिन होगा) जिस दिन आस्मान थरथर कांपने लगेगा और पहाड़ अपनी जगह से चल पड़ेंगे। उस दिन झुटलाने वालों के लिये बड़ी ख़राबी होगी, जो बेहूदा मशग़ले में लगे रहते हैं उस दिन उन को जहन्नम की आग की तरफ़ धक्के मार कर ढकेला जाएगा (और कहा जाएगा) यही वह आग है जिस को तुम झुटलाया करते थे। [सूर-ए-तूर : ९ ता १४]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	खुजली का इलाज

हज़रत अनस इब्ने मालिक ﷺ फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷺ और ज़ुबैर बिन अव्वाम ﷺ को खुजली की वजह से रेशमी कपड़े पहनने की इजाज़त मरहमत फ़र्माई थी। [बुखारी : ५८३९]

फ़ायदा : आम हालात में मर्दों के लिए रेशमी लिबास पहनना हराम है, मगर ज़रूरत की वजह से माहिर हकीम या डॉक्टर कहे तो गुंजाइश है।

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ज़मीन पर अकड़ कर मत चलो (क्योंकि) तुम न तो ज़मीन को फाड़ सकते हो और न तन कर चलने से पहाड़ों की बलंदी तक पहुंच सकते हो। [सूर-ए-बनी इसराईल : ३७]
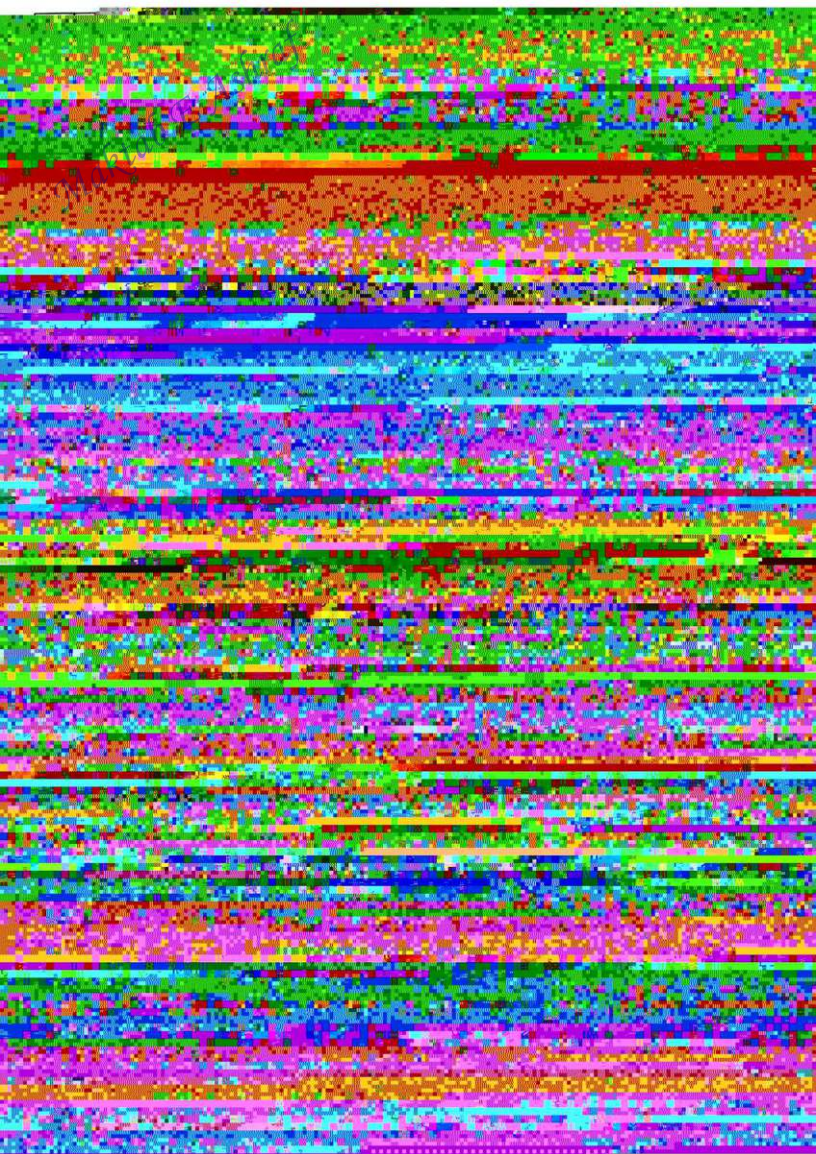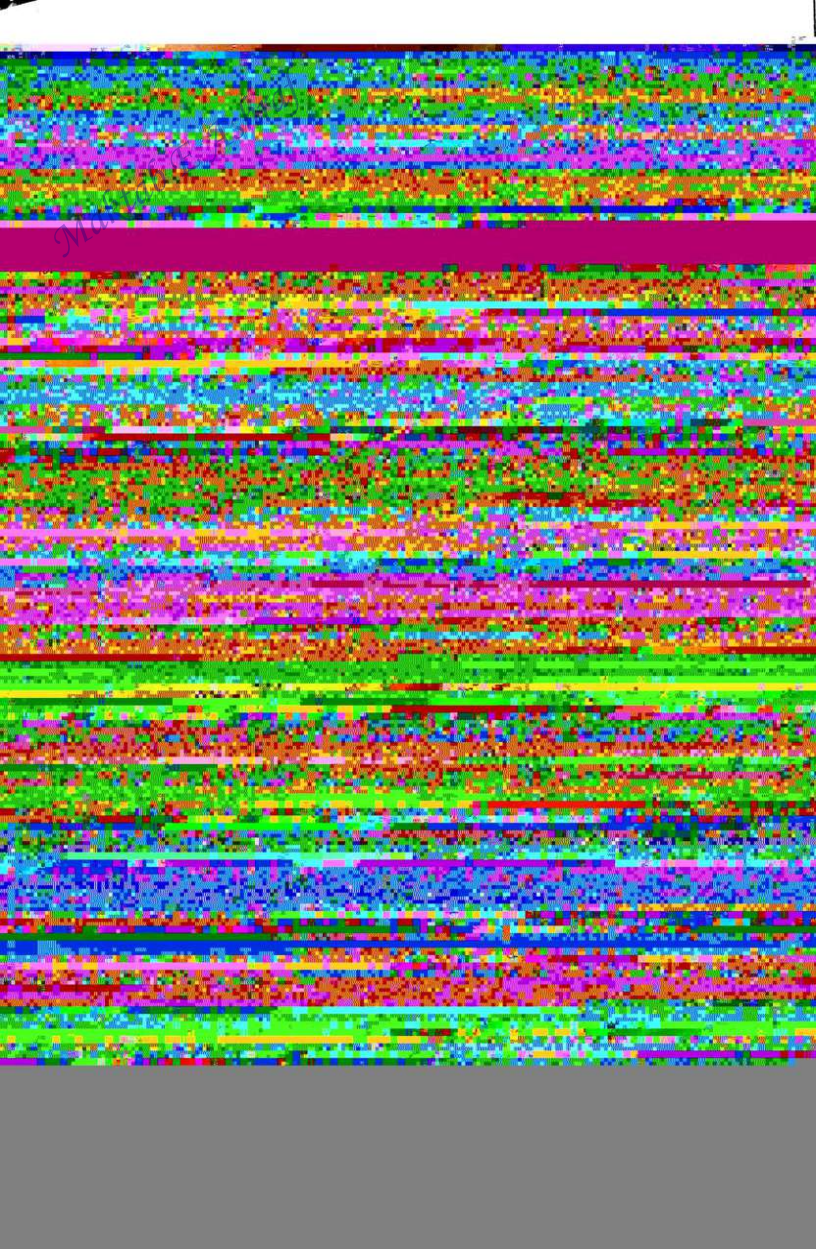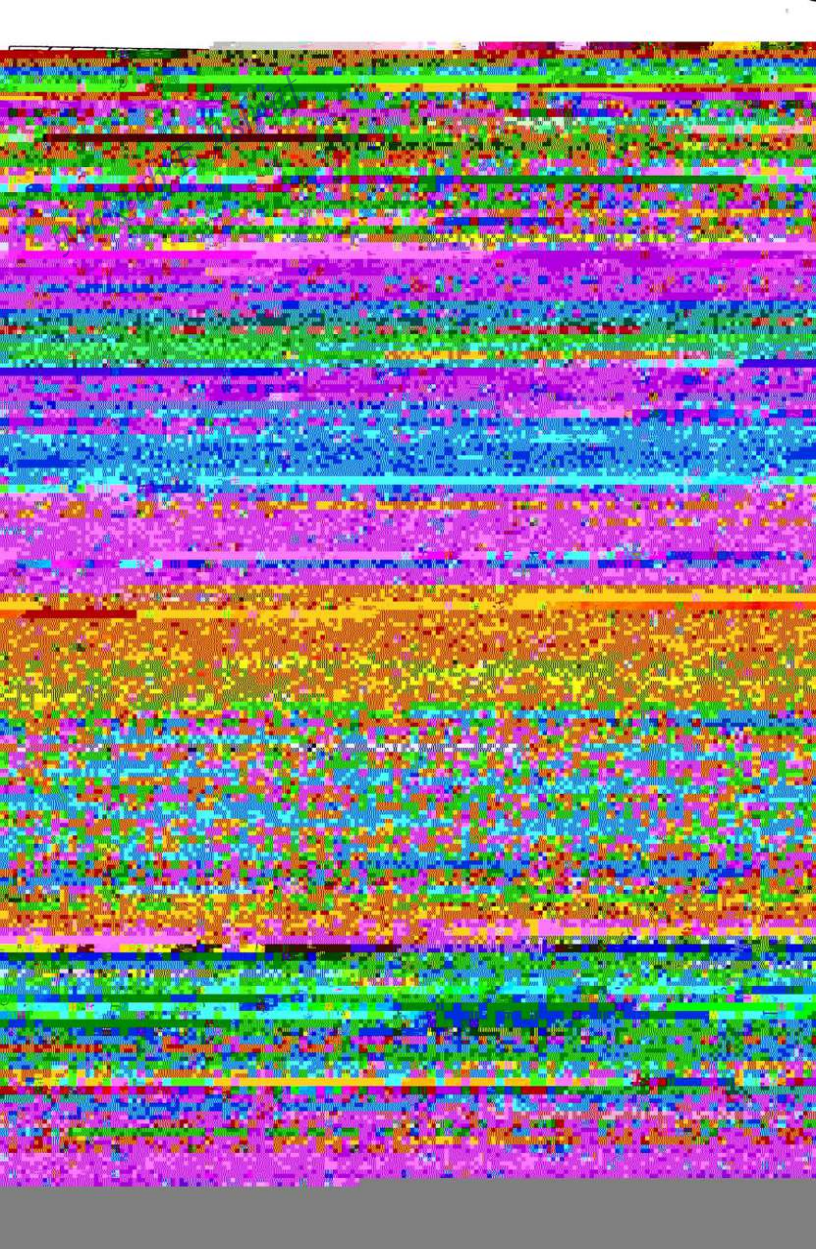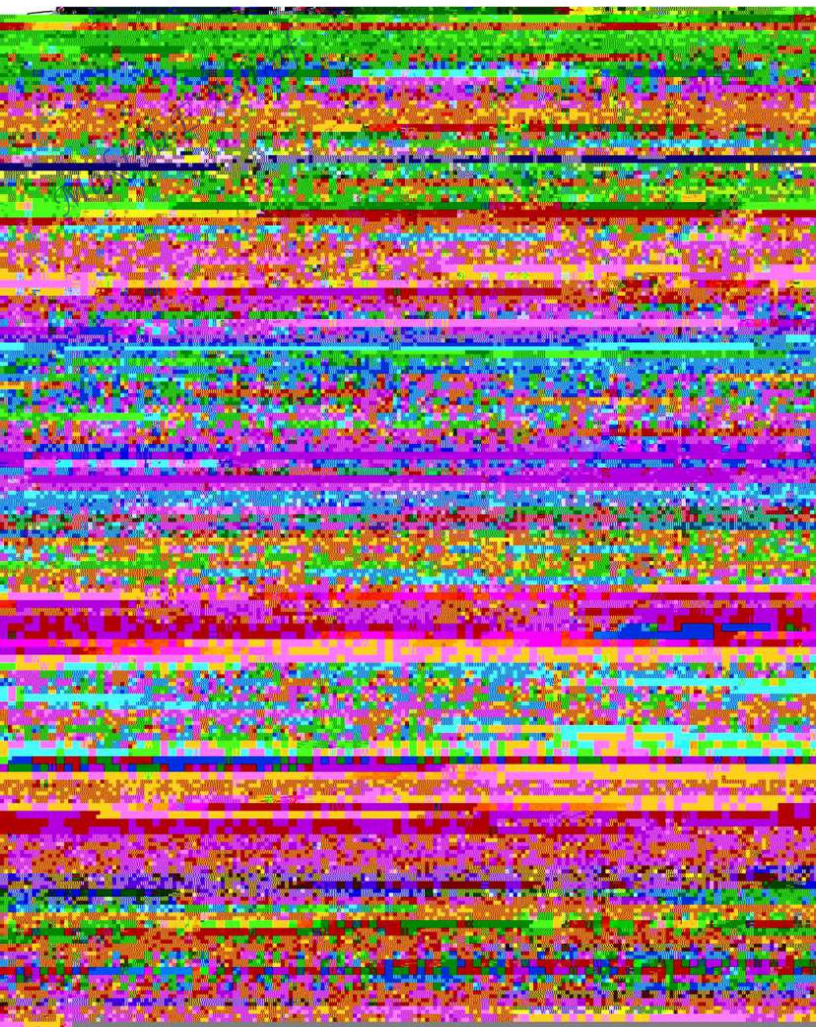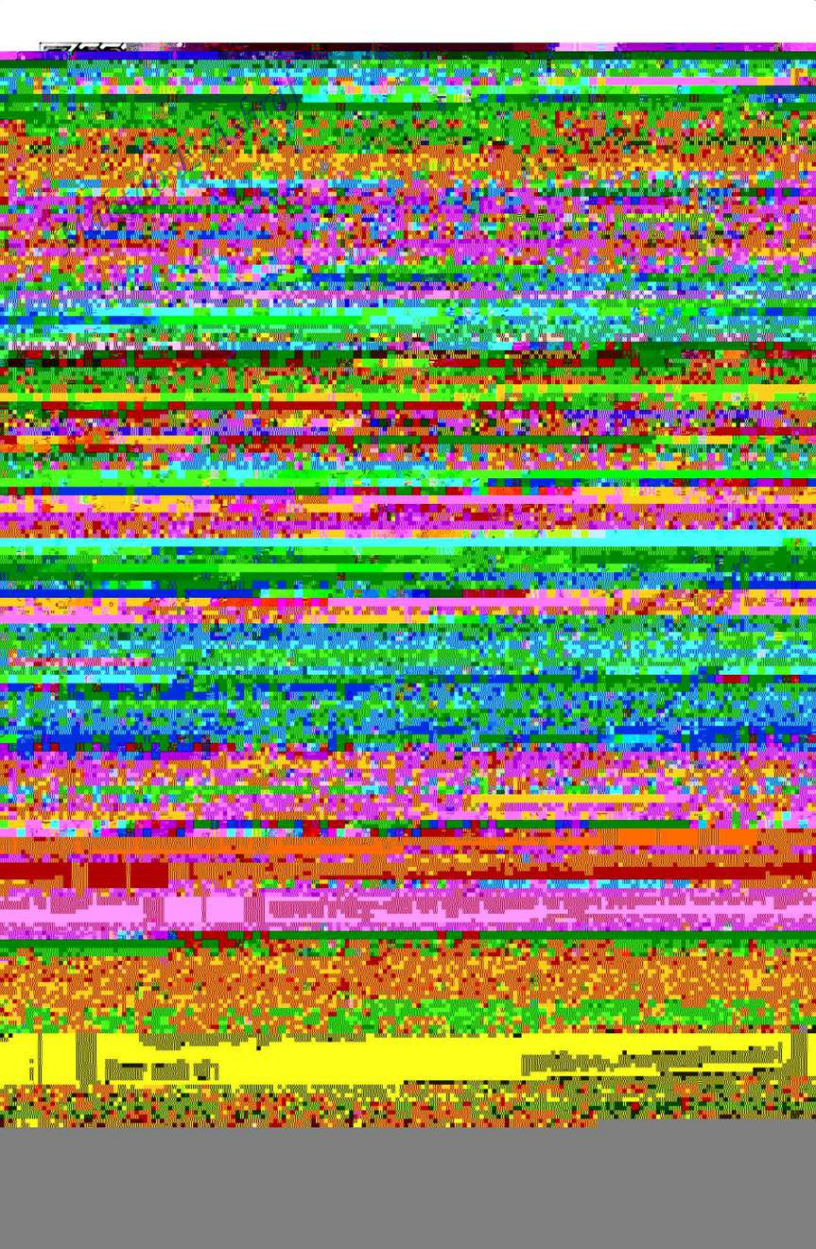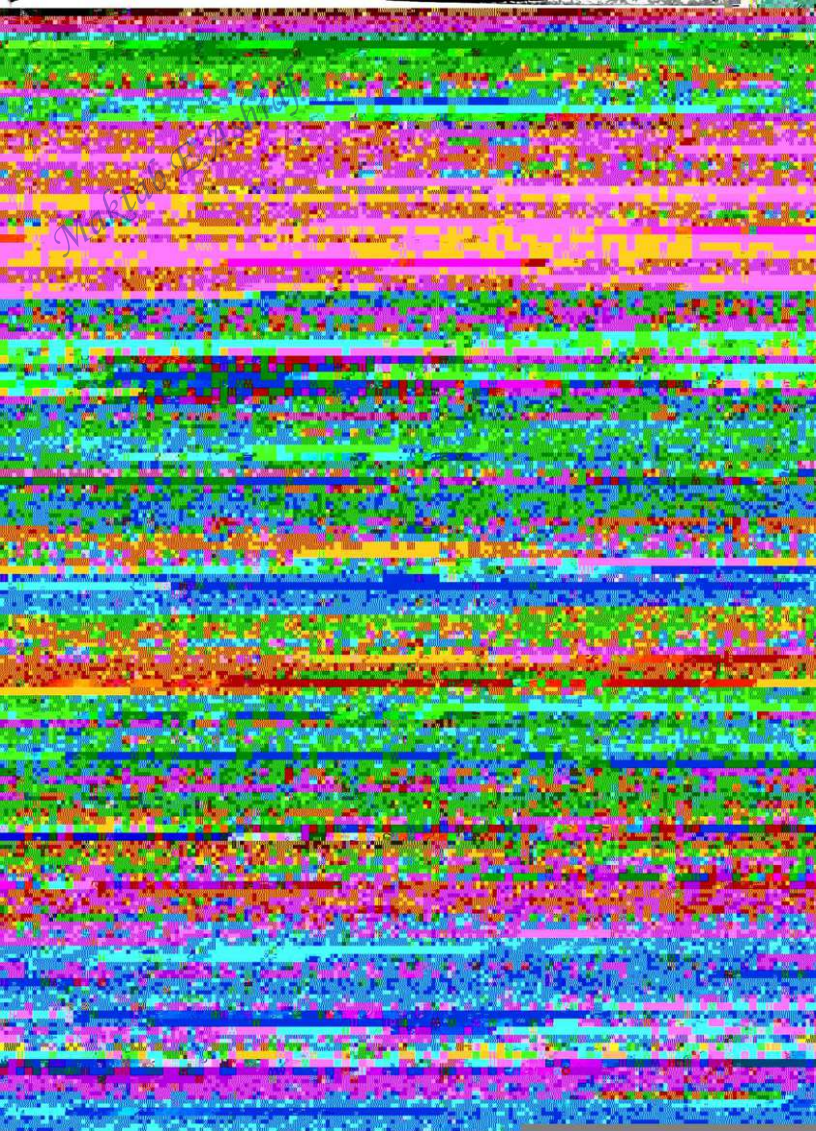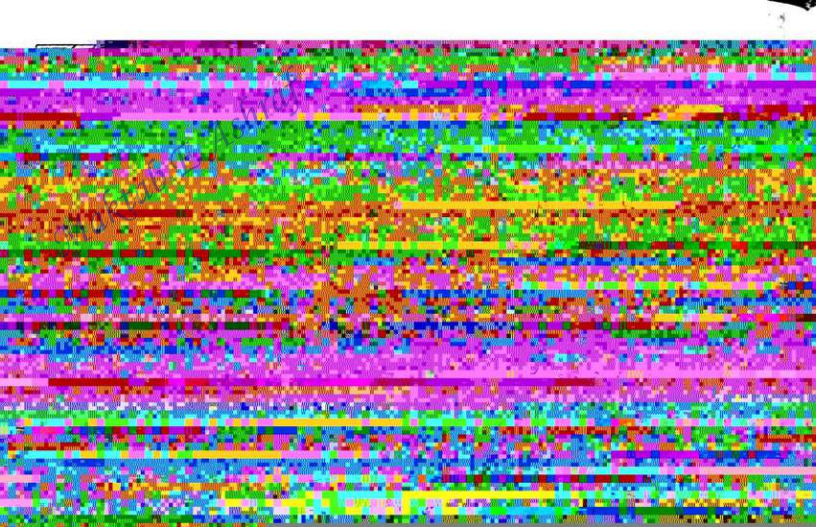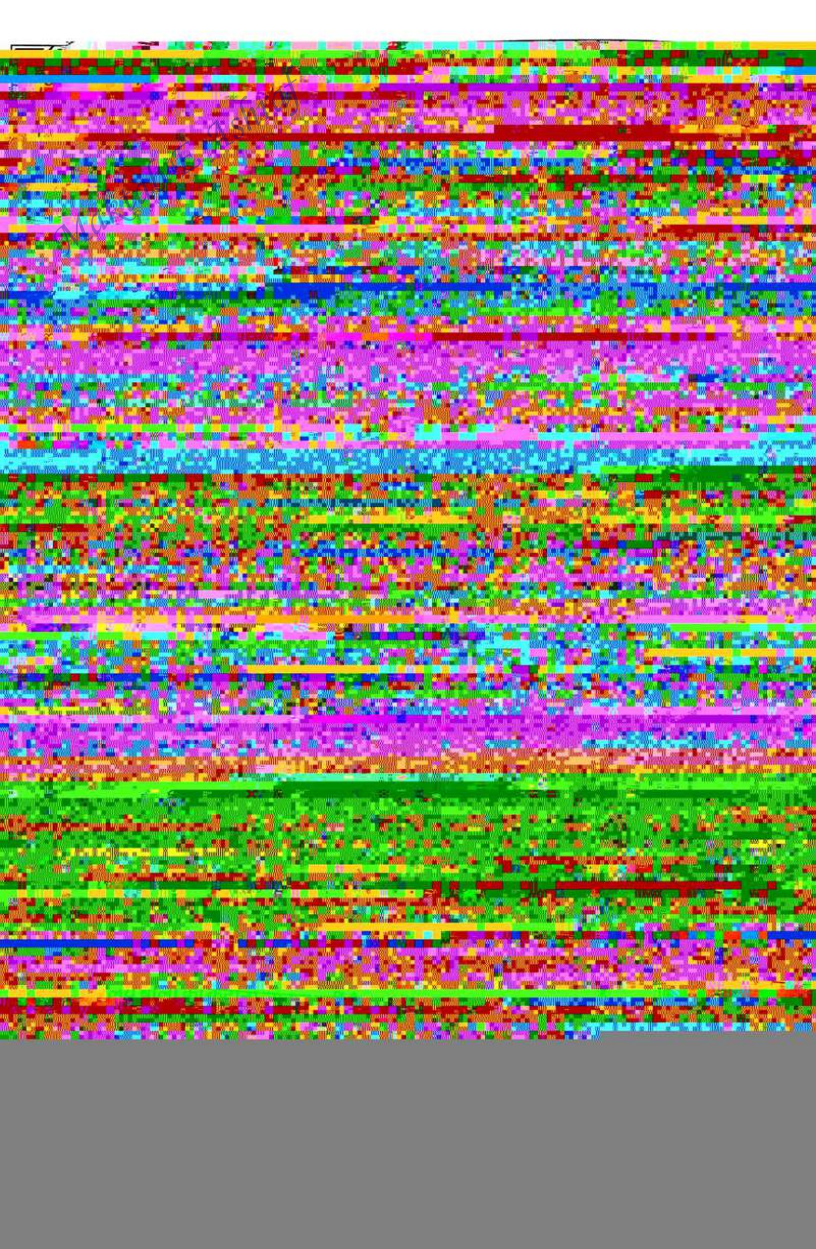
सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर १ : इस्लामी तारीख — इत्तिबाए सुन्नत का एक नमूना

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ﷺ के ज़मान-ए-खिलाफ़त में जब मुसलमानों ने समरकंद फ़तह कर लिया और मुसलमान वहाँ बस गए और अपने घर बना लिए और एक अर्सा गुज़र गया, तो समरकंद वालों को मालूम हुआ, के मुसलमानों ने अपने नबी ﷺ की सुन्नत के खिलाफ़ हमारे मुल्क को फ़तह कर लिया है, यानी यह के सब से पहले इस्लाम की दावत दें फिर जिज़्या की पेशकश करें और अगर वह भी मन्ज़ूर न हो तो फिर मुकाबला करें, लिहाज़ा उन्होंने हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ﷺ की खिदमत में चंद लोगों को रवाना किया और उन्हें यह बताया के आप ﷺ की फौज ने अपने नबी ﷺ की इस सुन्नत पर अमल किए बगैर समरकंद को फ़तह कर लिया है। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ﷺ ने समरकंद के काज़ी को हुक्म दिया के अदालत कायम करो, फिर अगर यह बात सही साबित हो जाए, तो मुसलमान फौजों को हुक्म दें के समरकंद छोड़ कर बाहर खड़ी हो जाएं, फिर इस सुन्नत पर अमल करें। चुनान्चे काज़ी ने ऐसा ही किया,वह बात सही साबित हुई, तो मुसलमानों ने समरकंद खाली कर दिया और शहर से बाहर जा कर खड़े हो गए। जब वहाँ के बुत परस्तों ने मुसलमानों का यह अदल व इन्साफ़ देखा, जिस की मिसाल दुनिया की तारीख में नहीं मिलती, तो उन्होंने कहा अब लड़ाई की ज़रूरत नहीं, हम सब मुसलमान होते हैं। चुनांचे सारा का सारा समरकंद मुसलमान हो गया।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — दरख्त का आप ﷺ की खिदमत में आना

हज़रत बुरैदा ﷺ फ़र्माते हैं के एक देहाती रसूलुल्लाह ﷺ के पास आकर कहने लगा: मैं इस्लाम कबूल कर चुका हुँ। अब मुझे कोई चीज़ दिखाइए जिस से मेरा ईमान बढे, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: उस दरख्त के पास जा कर कहो रसूलुल्लाह ﷺ बुला रहे हैं, उस ने जा कर कहा, तो वह दरख्त दाएं बाएं जानिब झुका और फ़िर जड़ों से अलग हो कर रसूलुल्लाह ﷺ के पास आया और सलाम किया, उस देहाती ने कहा : बस या रसूलल्लाह ! फिर वह दरख्त आप ﷺ के कहने पर वापस अपनी जगह चला गया और जड़ों से मिल गया।

[दलाइलुन्नुबुव्वह लिअबी नुऐम : २८१]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — तक्बीरे तहरीमा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "नमाज़ की कुंजी वुज़ू है, उस का तहरीमा तक्बीर है और नमाज़ को ख़त्म करने वाला तस्लीम है ।"

[तिर्मिज़ी : ३, अन अली ﷺ]

फ़ायदा: नमाज़ शुरू करते वक्त जो तक्बीर कही जाती है, उस को "तक्बीरे तहरीमा" कहते हैं, नमाज़ के शुरू में तक्बीरे तहरीमा कहना फर्ज़ है।

नंबर (४): *एक सुन्नत के बारे में*	अरफ़ात में अफ़ज़ल तरीन दुआ

तमाम अंबिया मैदानेअरफ़ात में यह दुआ कसरत से पढ़ते थे :

((لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ))

[तिर्मिज़ी : ३५८५, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ]

नंबर (५): *एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत*	सलाम में पहेल करने वाला

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "लोगों में अल्लाह तआला के सब से ज़ियादा करीब वह शख़्स है, जो सलाम करने में पहेल करे ।" [अबू दाऊद : ५१९७, अन अबी उमामा ﷺ]

नंबर (६): *एक गुनाह के बारे में*	गुमराही इख़्तियार करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो लोग अल्लाह तआला के रास्ते से भटकते हैं, उन के लिए सख़्त अज़ाब है, इस लिए के वह हिसाब के दिन को भूले हूए हैं । [सूर-ए-सॉद : २६]

नंबर (७): *दुनिया के बारे में*	ना फ़र्मानों से नेअ्मतें छीन ली जाती हैं

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : वह ना फ़र्मान लोग कितने ही बाग, चश्मे, खेतियाँ और उम्दा मकानात और आराम के सामान जिन में वह मज़े किया करते थे, (सब)छोड़ गए। हम ने इसी तरह किया और उन सब चीज़ों का वारिस एक दूसरी कौम को बना दिया। फिर उन लोगों पर न तो आस्मान रोया और न ही ज़मीन और न ही उन को मोहलत दी गई । [सूर-ए- दुखान: २५ ता २९]

नंबर (८): *आख़िरत के बारे में*	ईमान की बरकत से जहन्नम से छुटकारा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब जन्नती जन्नत में चले जाएंगे और जहन्नमी जहन्नम में चले जाएंगे, तो अल्लाह तआला फ़र्माएगा : जिस के दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान हो उसे भी जहन्नम से निकाल लो, चुनान्चे उन लोगों को भी निकाल लिया जाएगा, जिन की यह हालत होगी के वह जल कर काले सियाह हो गए होंगे। उस के बाद उन को "नहरे हयात" में डाला जाएगा, तो इस तरह निकल आएंगे जैसे दाना सैलाब के कूड़े में (खाद और पानी मिलने की वजह से) उग आता है ।"

[बुख़ारी : २२, अन अबी सईद ख़ुदरी ﷺ]

नंबर (९): *तिब्बे नब्वी से इलाज*	बीमारों को ज़बरदस्ती न खिलाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अपने बीमारों को ज़बरदस्ती खिलाने पिलाने की कोशिश न करो, क्यों कि खुदा तआला उन्हें खिलाता पिलाता है ।" [तिर्मिज़ी : २०४०, उक्बा बिन आमिर ﷺ]

नंबर (१०): *नबी ﷺ की नसीहत*	

एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से कुछ नसीहत करने की दरख़्वास्त की। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : गुस्सा न किया करो। उस ने अपनी वही दरख़्वास्त कई बार दोहराई, आप ﷺ ने हर बार यही फ़र्माया : गुस्सा न किया करो। [बुख़ारी : ६११६, अन अबी हुरैरह ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

⑮ ज़िलकादा

नंबर ①: इस्लामी तारीख — हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رحمه الله की सादगी

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رحمه الله अपने ज़माने में दुनिया की सब से बड़ी सलतनत के मालिक थे। लेकिन आप के अंदर न शाहाना जाह व जलाल था और न ही तकब्बुर और बड़ाई की कोई झलक दिखाई देती थी। आप का लिबास सीधा सादा और खाना मामूली था। आप निहायत मुतवाज़े इन्सान थे। लौंडी गुलामों के साथ बराबर का सुलूक करते। नौकरों के आराम का भी खयाल रखते थे, उन के आराम के वक्त में खुद अपने हाथों से काम कर लेते। एक मर्तबा आप किसी मेहमान से गुफ़्तगू कर रहे थे के रात ज़ियादा हो गई और चिराग बुझने लगा। नौकर सोया हुआ था, मेहमान ने चाहा के नौकर को जगा दे, मगर आप رحمه الله ने मना कर दिया। मेहमान ने खुद दुरूस्त करना चाहा, तो फ़र्माया के मेहमान से काम लेना अच्छा नहीं। लिहाज़ा उन्हों ने खुद उठ कर चिराग में तेल डाला और उस को दुरूस्त किया। और फ़र्माया के मैं चिराग को दुरूस्त करने से पहले भी उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ था और अब भी उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ हूँ। यानी इन कामों को करने से आदमी छोटा नहीं बनता। क्या आज के ज़माने में कोई है जो अपने नौकरों का इतना खयाल रखे?

नंबर ②: अल्लाह की कुदरत — इन्सान का जिस्म

अल्लाह तआला ने इन्सानी जिस्म को बड़ी हिकमत से बनाया है और उस में बहुत सी निशानियाँ रखी हैं; जिस में एक निशानी रगें हैं। अल्लाह तआला ने हमारे जिस्म में बेशुमार रगें बनाई हैं। जो जिस्म के तमाम हिस्सों में खून पहुँचाती है और यह इतनी ज़ियादा हैं के अगर उन को निकाला जाए और ज़मीन के चारों तरफ लपेटा जाए, तो उन्हें तीन मर्तबा ज़मीन के चारों तरफ़ लपेटा जा सकता है यह अल्लाह तआला की ज़बरदस्त कुदरत है के इतनी लम्बी रगें अल्लाह तआला ने इन्सानी जिस्म में समों दी है।

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — तवाफ़ में सात चक्कर लगाना

हज़रत जाबिर से رضي الله عنه रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने (तवाफ़ करते हुए) सात चक्कर लगाए (और पहले) तीन चक्करों में रमल किया और बकिया चक्करों में अपनी हालत पर चले। [नसई: २९६५]

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — दाहिनी तरफ़ से तक्सीम करना

हज़रत अनस رضي الله عنه बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में पानी मिला हुआ दूध पेश किया गया। आप ﷺ के दाएँ तरफ़ एक देहाती था और बाएँ तरफ़ हज़रत अबू बक्र رضي الله عنه थे। आप ﷺ ने उस दूध को पी कर बचा हुआ, उस देहाती को पहले देते हूए, फ़र्माया : दाहिनी तरफ़ वाला ज़ियादा हकदार है। [बुखारी: ५६१९]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | घर में दो रकात नमाज़ पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम अपने घर में दाखिल हो, तो दो रकात पढ़ो, यह नमाज़ घर में बुरे दाखिले को रोक देगी और जब घर से निकलो, तो दो रकात नमाज अदा करो, यह बुरे निकलने को रोक देगी ।" [बैहकी फी शुअबिल ईमान : २२३४, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | कुर्आन शरीफ़ को भुला देना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस शख्स ने कुर्आन शरीफ़ हिफ्ज़ किया, फ़िर उसे गफ़लत की वजह से भुला दिया, तो वह कयामत के दिन अल्लाह तआला से इस हाल में मुलाकात करेगा, के उस का हाथ या कोई उज़्व कटा हुआ होगा ।" [अबू दाऊद : १४७४, अन सअद बिन उबादा رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया मोमिनों के लिए कैद खाना है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दुनिया मोमिन के लिए कैद खाना और खुश्क साली है जब वह दुनिया से जाता है, तो कैद खाने और खुश्क साली से निकल जाता है ।"

[मुस्नदे अहमद : ६८१६, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र رضي الله عنه]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | जन्नत के खादिम

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : (शराब के जाम) ले कर जन्नत वालों की खिदमत में ऐसे लड़के दौड़ते फिरेंगे जो हमेशा लड़के ही रहेंगे, (वह इस कद्र हसीन व खूब सूरत हैं) के जब तुम उन्हें देखोगे, तो ऐसा महसूस होगा के वह बिखरे हुए मोती हैं जब तुम उस जगह को देखोगे, तो बकस्रत नेअ्मत और बड़ी सलतनत दिखाई देगी। [सूर-ए-दहर : १९ ता २०]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | गर्म गिज़ा के असरात का तोड़

रसूलुल्लाह ﷺ खजूर के साथ खीरे खाते थे। [बुखारी : ५४४७, अब्दुल्लाह बिन जाफ़र رضي الله عنه]

फ़ायदा : मुहद्दीसीने किराम फ़र्माते हैं के खजूर चूंकि गर्म होती है इस लिए आप ﷺ उस के साथ ठंडी चीज़ यानी खीरा ककड़ी इस्तेमाल फ़र्माते थे ताके दोनों मिल कर मुअ्तदिल हो जाएं ।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : हम ने इन्सान को उस के माँ बाप के बारे में ताकीद की है के माँ बाप के साथ अच्छा बर्ताव करे, (क्योंकि) उस की माँ ने तक्लीफ़ पर तक्लीफ़ उठा कर उस को पेट में रखा और दो साल में उस का दूध छुड़ाया है, ऐ इन्सान ! तू मेरा और अपने माँ बाप का हक मान। (इस लिये के) तुम सब को मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है । [सूर-ए-लुकमान : १४]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

१६ ज़िलकादा

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत हसन बसरी

आप का नाम हसन, कुन्नियत अबू सईद और वालिद का नाम यसार था, इन के वालिद हज़रत ज़ैद बिन साबित ﷺ के आज़ाद कर्दा गुलाम और वालिदा हज़रत उम्मे सलमा ﷺ की बांदी थीं। सन २० हिजरी में पैदा हुए, बारह साल की उम्र में कुर्आन मुकम्मल हिफ़्ज़ कर लिए। कुर्आन के बड़े आलिम और दर्से कुर्आन में बड़े माहिर थे और किबारे ताबिईन में से थे, हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़र्माते हैं के किसी गैरे सहाबी को हसन से ज़ियादा सहाब-ए-रसूल से मुशाबेह नहीं देखा। हज़रत हसन बसरी उलूमे ज़ाहिरी में शेखुल इस्लाम का दर्जा रखतेथे, लेकिन उन का अस्ल जौहर इल्मे बातिन और तसव्वुफ़ था, जिस की वजह से कूव्वते ईमानी, वाज़ व नसीहत और दावत व तलकीन के ज़रिए लाखों इन्सानों को हलाकत से बचाए, तसव्वुफ़ की तमाम नहरें उन्हीं का सर चश्मा हैं, तसव्वुफ़ के अकसर सिल सिले आप के वास्ते से हज़रत अली तक पहुँचते हैं, सलातीन व उमरा और सियासत से दूर रहते थे, लेकिन ज़रूरत पर हज्जाज के सामने भी हक बात कहने से गुरेज़ नहीं करते थे। सन ११०हिजरी में जुमा की रात में इन्तेकाल फ़र्माया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — खाने में बरकत

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी ﷺ फ़र्माते हैं : मैं ने एक मर्तबा सिर्फ़ दो आदमियों का खाना बनवाया आप ﷺ और हज़रत अबू बक्र ﷺ का, लेकिन आप ﷺ ने मुझे हुक्म दिया के अन्सारियों को बुला लाओ, चुनान्चे उस खाने में एक सौ अस्सी आदमियों ने सैर हो कर खाया और सब ने आप ﷺ के नबी होने की गवाही दी और आप ﷺ के हाथ पर बैअत की। [तबरानी कबीर : ३९८३]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — हाजी पर कुर्बानी करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : जो शख़्स उमरा को हज के साथ मिला कर फ़ायदा उठाए (यानी हज के दिनों में उमरा भी कर ले) तो उस के ज़िम्मे कुर्बानी वाजिब है , जो भी उसे मयस्सर हो। [सूर-ए-बकरा : १९६]

फ़ायदा : जो शख़्स हज के ज़माने में एहराम बांध कर मक्का जाए और उमरा कर के एहराम खोल दे, फिर आठवीं ज़िल हिज्जा को एहराम बांध कर हज करे तो उस पर कुर्बानी करना वाजिब है ।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — अहल व अयाल के लिए दुआ

नेक बंदे अपनी औलाद के लिए कसरत से यह दुआ करते थे :

﴿ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴾

तर्जमा : ऐ हमारे रब ! हमारी बीवियों और औलाद को हमारी आँखों की ठंडक बना दे और हम को मुत्तकियों का इमाम बना दे। [सूर-ए-फ़ुर्कान : ७४]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | अल्लाह तआला नर्मी को पसंद करता है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "बेशक अल्लाह तआला नर्मी करने वाले हैं और नर्मी को पसंद करते हैं और नर्मी करने पर वह (अज्र व सवाब) अता फ़र्माते हैं, जो सख़्ती करने पर नहीं अता फ़र्माते।"
[अबू दाऊद : ४८०७, अन अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल رضی اللہ عنہ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | ईमान को झुटलाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जिस शख़्स ने बुख़्ल किया और ला परवाही करता रहा और भली बात, यानी ईमान को झुटलाया, तो हम उस के लिए तक्लीफ़ व मुसीबत का रास्ता आसान कर देंगे। (यानी जहन्नम में पहुँचा देंगे)।
[सूर-ए-लैल: ८ ता १०]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | अपने बीवी बच्चों से होशियार रहो

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है: ऐ ईमान वालो ! तुम्हारी बाज़ बीवियाँ और बाज़ औलाद तुम्हारे हक में दुशमन हैं, तो तुम उन से होशियार रहो।
[सूर-ए-तग़ाबुन: १४]

फ़ायदा : बीवी बच्चे बाज़ मर्तबा दुनियावी नफ़ा के लिए खिलाफ़े शरीअत कामों का हुक्म देते हैं, उन्हीं लोगों को अल्लाह तआला ने दीन का दुशमन बताया है और उन के हुक्म को बजा लाने से बचने की हिदायत दी है।

नंबर (८): आखिरत के बारे में | अहले ईमान और क्यामत का दिन

रसूलुल्लाह ﷺ से पचास हज़ार साल के बराबर दिन (यानी कयामत) के बारे में पूछा गया के वह कितना लंबा होगा? तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "उस ज़ात की कसम जिस के कब्ज़े में मेरी जान है ! वह दिन मोमिन के लिए इतना मुख्तसर कर दिया जाएगा, जितनी देर में वह फर्ज़ नमाज़ अदा किया करता था।"
[मुस्नदे अहमद : ११३२०, अन अबी सईद खुद्री رضی اللہ عنہ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | कद्दू (दूधी) से इलाज

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ फर्माते हैं के मैं ने खाने के दौरान रसूलुल्लाह ﷺ को देखा के प्याले के चारों तरफ़ से कद्दू तलाश कर कर के खा रहे थे, उसी रोज़ से मेरे दिल में कद्दू की रगबत पैदा हो गई। [बुखारी : ५३७९]

फ़ायदा : अतिब्बा ने इस के बेशुमार फ़वाइद लिखे हैं और अगर बही के साथ पका कर इस्तेमाल किया जाए तो बदन को उम्दा गिज़ाइयत बख्शता है गर्म मिज़ाज और बुखार ज़दा लोगों के लिए यह गैर मामूली तौर पर नफ़ा बख़्श है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम में से कोई शख़्स अपने भाई के सामान को न मज़ाक में ले और न हकीकत में (बिला इजाज़त) ले।"
[अबू दाऊद : ५००३, अन यज़ीद बिन सईद رضی اللہ عنہ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

१७ ज़िलकादा

नंबर (१): इस्लामी तारीख — क़ाज़ी शुरैह का तारीखसाज़ फैसला

काज़ी शुरैह जिन्होंने आलमे इस्लाम में साठ (६०) साल तक काज़ी यानी जज की हैसियत से खिदमत अन्जाम दी, उन की सब से बड़ी खूबी यह थी के वह फैस्ला करने में किसी से मुतअस्सिर न होते थे चाहे खलीफ-ए-वक्त ही क्यों न हो। चुनांचे मशहूर है के एक मर्तबा हज़रत अली की जिरह खो गई जो एक यहूदी के हाथ लगी। जब हज़रत अली ने उस ज़िरह को यहूदी के पास देखा, तो काज़ी शुरैह के यहाँ मुकदमा पेश किया और बतौरे गवाह के हज़रत हसन और कुंबुर नामी एक शख्स को पेश किया। काज़ी शुरैह ने कहा : कुंबुर की गवाही तो कुबूल करता हूँ, मगर हसन की गवाही कुबूल नही करता, इस लिए के बाप के हक में बेटे की गवाही को मैं मुअ्तबर नहीं समझता, लिहाज़ा आप दूसरा गवाह लाएँ। हज़रत अली दूसरा गवाह पेश नहीं कर पाए, लिहाज़ा काज़ी शुरैह ने यहूदी के हक में फैस्ला फ़र्माया। ज़रा गौर कीजिए मुकदमे में एक तरफ़ यहूदी है और दूसरी तरफ़ खलीफ़-ए-राशिद हज़रत अली हैं और गवाह हज़रत हसन हैं जिन्हें हुज़ूर ने जन्नत के नौजवानों का सरदार कहा है। मगर फ़ैस्ला यहूदी के हक में होता है। यह इस्लाम की हक्कानियत का एक आला नमूना है। जिस से मुतअस्सिर हो कर वह यहूदी मुसलमान हो गया।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — पेड़ पौदों की सैराबी

अगर हमें किसी ऊँची जगह पानी पहुँचाना हो, तो मशीन और मोटर की ज़रूरत पड़ेगी, उस के बगैर ऊपर पानी पहुँचाना हमारे बस की बात नही, लेकिन अल्लाह तआला ने ज़मीन पर तरह तरह के पेड़ उगाए, जिन में कुछ छोटे हैं और कुछ तो इतने बड़े हैं, जिन की लम्बाई दो दो सौ फ़िट है और अल्लाह तआला ज़मीन की तह से पानी उठा कर पेड़ की जड़ तक पहुँचाता है और फिर जड़ो से बगैर किसी मशीन और मोटर के दरख्त की डालियों में पहुँचाता फिर डालियों से पत्तों, फलों और फूलों तक पहुँचाता है, यह तमाम का तमाम निज़ाम अल्लाह तआला का है, जो उस के रब होने की दलील है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — जमरात की रमी करना

हज़रत जाबिर बिन अबदुल्लाह फ़र्माते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह को (दसवीं ज़िल हिज्जा को) अपनी सवारी पर से रमी करते हुऐ देखा। आप (उस वक्त) फ़र्मा रहे थे : मुझ से मनासिके हज (यानी हज के अर्कान) सीख लो, मैं नहीं जानता, शायद इस के बाद और हज न कर सकूँ। [नसई : ३०६४]

फ़ायदा : मिना में मुखतलिफ़ जगहों पर तीन सुतून बने हुए हैं, उन पर कंकरियाँ मारने को "रमिये जमरात" कहते है, जो के लाज़िम है। इस को छोड़ देने से दम वाजिब हो जाता है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — फ़ज्र की सुन्नत में किरत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फ़र्माते हैं के मैं बराबर एक महीने तक देखता रहा के रसूलुल्लाह फज्र की सुन्नत में ﴿قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ﴾ और ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ﴾ पढ़ते थे। [तिर्मिज़ी : ४१७]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	बीवी को शौहर के माल से सदके का सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अगर कोई औरत अपने शौहर की इजाज़त से उस के माल से इस तरह सदका करे के कोई फुज़ूल खर्ची और माल की बरबादी न हो, तो उस को उस सदके का पूरा सवाब मिलता है और शौहर को भी उतना ही सवाब मिलता है; इस लिए के वह कमा कर लाया है, इसी तरह खज़ांची को भी उतना ही सवाब मिलता है और एक के सवाब की वजह से दूसरे के सवाब में कमी नहीं होती ।"

[अबू दाऊद : १६८५, अन आयशा ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	जुमा का छोड़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स तीन जुमा को मामूली समझ कर छोड़ देगा, तो अल्लाह तआला उस के दिल पर मुहर लगा देगा।"

[अबू दाऊद : १०५२, अन अबी जअद ज़मरी ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की रग़बत का खौफ़

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मैं तुम से पहले जाने वाला हूँ और मैं तुम पर गवाह हूँ, तुम से मिलने की जगह हौज़ होगी और अब मैं यहाँ खड़े हो कर उसे देख रहा हूँ, मुझे इस बात का डर नहीं, तुम मेरे बाद शिर्क करोगे, मगर इस बात का डर है, तुम कहीं दुनिया में रगबत न करने लगो।"

[मुस्नदे अहमद : १६९४९, अन उक्बा बिन आमिर ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	कयामत का मन्ज़र

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : (कयामत के दिन) जब सितारे बेनूर कर दिए जाएंगे और आस्मान फट जाएगा और पहाड़ उड़ा दिए जाएंगेऔर रसूलों को (वक्ते मुतअय्यन पर) जमा किया जाएगा। इन तमाम चीज़ों में किस दिन के लिए ताखीर की गई है ? (उन तमाम चीज़ों को) फ़ैस्ले के दिन के लिए रखा गया है।

[सूर-ए-मुर्सलात : ८ ता १३]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	आटे की छान से इलाज

हज़रत उम्मे ऐमन ؓ आटे को छान कर रसूलुल्लाह ﷺ के लिए चपातियाँ तय्यार कर रहीं थी के आप ﷺ ने दर्याफ़त फ़र्माया: यह क्या है ? उन्होंनेअर्ज़ किया यह हमारे मुल्क का खाना है, जो आप ﷺ के लिए तय्यार कर रही हूँ, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम ने आटे में से जो कुछ छान कर निकाला है उस को उसी में डाल दो और फिर गूँधो।"

[इब्ने माजा : ३३३६]

फ़ायदा : जदीद तहकीकात से मालूम हुआ है के आटे की छान (भूसी) पूरानी कब्ज और डाइबिटिस के मरीज़ों के लिए बेहतरीन दवा है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : यह (कुर्आन) एक बा बरकत किताब है, जिस को हम ने आप पर इस लिए नाज़िल किया है के लोग उस की आयतों में गौर व फ़िक्र करें और अक्लमंद लोग इस से नसीहत हासिल करें।

[सूर-ए-सॉद : २९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(१८) ज़िलकादा

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत उर्वा बिन ज़ुबैर

हज़रत उर्वा बिन ज़ुबैर मशहूर सहाबी हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम के बेटे और अबू बक्र सिद्दीक के नवासे हैं। उन का शुमार मदीना के सात फुकहा में होता है इन का इल्म इस कद्र मुसल्लम था के बड़े बड़े सहाबी मसाइल में इन से रुजूअ करते थे। हज़रत उर्वा नौजवानों को कस्रत से इल्म हासिल करने की तरगीब देते थे। फ़र्माते थे के हम लोग भी एक ज़माने में छोटे थे, आज वह दिन आया के हमारा शुमार बड़ों में है। तुम भी अगरचे आज कम सिन हो, लेकिन एक ज़माना आएगा जब बड़े होगे, इस लिये इल्म हासिल करके सरदार बन जाओ ! के लोगों को तुम्हारी ज़रूरत पड़ने लगे। आप बड़े आबिद व ज़ाहिद थे। आप की ज़ात में इल्म, सियादत और इबादत सब जमा थीं। एक रात के अलावा तहज्जुद कभी नागा न हुई। कस्रत से रोज़ा रखते थे। सफ़र की हालत में भी रोज़ा न छुटता था। मर्ज़ुल मौत में भी इस मामूल में फ़र्क न आया। चुनांचे इन्तेकाल के दिन भी रोज़े से थे।

नंबर (२): हुज़ूर का मुअ्जिज़ा — बदन से खुशबू आना

उत्बा बिन फ़रकद की बीवी बयान करती हैं के मेरे शौहर खुशबू इस्तेमाल नहीं करते थे। सिर्फ़ दाढ़ी में तेल लगाते, लेकिन फिर भी आप के बदन से इतनी अच्छी खुशबू फूटती थी के जब वह लोगों से मिलते, तो लोग कहते के हम ने आज तक उत्बा की खुशबू की मानिंद कोई खुशबू नही सूँघी। उन की बीवी फ़र्माती हैं के मैं ने एक दिन उन से पूछा : आखिर यह खुशबू किस वजह से आती है ? तो उन्होंने फ़र्माया : मुझे नबी के ज़माने में पूरे बदन में फुंसियाँ निकल आई थीं तो मैंने आप के सामने उस का इज़्हार किया। आप ने मुझे अपने सामने बिठा दिया और फ़र्माया : अपना कुर्ता उतार लो मैं ने उतार लिया फिर हुज़ूर ने अपने हाथ पर लुआब (थूक) ले कर मेरे पूरे बदन पर फेरा, तो सारी फुंसियाँ ख़त्म हो गई और उस दिन से मेरे बदन से खुशबू आने लगी।

[तबरानी सगीर : ९८, अन उम्मे आसिम]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — रुकूअ व सजदा अच्छी तरह करना

रसूलुल्लाह ने फ़र्माया : "बद तरीन चोरी करने वाला वह शख़्स है, जो नमाज़ मे से चोरी कर लेता है?" सहाबा ने अर्ज किया : या रसूलल्लाह ! आदमी नमाज़ में से किस तरह चोरी कर लेता है? इर्शाद फ़र्माया : "वह रुकूअ और सजदा अच्छी तरह नहीं करता।"

[मुस्नदे अहमद : ११९३८, अन अबी सईद खुदरी]

फ़ायदा : रुकूअ और सजदा अच्छी तरह न करने को हुज़ूर ने चोरी बताया है, इस लिए इन को अच्छी तरह इत्मीनान से अदा करना ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — किसी को रुखसत करे तो यह दुआ दे

रसूलुल्लाह इन कलिमात के ज़रिए रुखसत फ़र्माया करते थे :

((اَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِيْنَكَ وَاَمَانَتَكَ وَخَوَاتِيْمَ عَمَلِكَ))

तर्जमा : मैं तुम्हारे दीन, तुम्हारी अमानत और तुम्हारे आमाल के अन्जाम को अल्लाह के हवाले करता हूँ। [तिर्मिज़ी : ३४४३, अन इब्ने उमर ﷺ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | सूर-ए-मुल्क की तिलावत मग्फ़िरत का ज़रिया है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "एक सूरह कुर्आन शरीफ़ में है, जो तीस आयतों पर मुश्तमिल है, उस ने एक शख़्स की शफ़ाअत की यहाँ तक के उस की मगफ़िरत हो गई, वह सूर-ए ﴿تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ﴾ है।" [तिर्मिज़ी : २८९१, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में | अल्लाह की आयतों का इन्कार तकब्बुर व बड़ाई है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो लोग बग़ैर किसी दलील के अल्लाह तआला की आयतों में झगड़े निकाला करते हैं, उन के दिलों में बड़ा बनने की ऐसी ख्वाहिश है जिस तक वह कभी नहीं पहुँच सकते। [सूर-ए-मोमिन : ५६]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में | दुनिया में खाना पीना चंद रोज़ा है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है: तुम (दुनिया में) थोड़े दिन खालो और (इस से) फ़ायदा उठालो, बेशक तुम मुजरिम हो (यानी यह दुनियवी ज़िंदगी चंद रोज़ की है, अगर इस के पीछे पड़ कर अपनी आखिरत की ज़िंदगी को भुला दोगे, तो कयामत के दिन तुम मुजरिम बन कर उठोगे)। [सूर-ए-मुर्सलात : ४६]

नंबर (८) : आख़िरत के बारे में | जहन्नम की आग की सख़्ती

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दोज़ख को एक हज़ार साल तक दहकाया गया, तो वह सुर्ख हो गई, फिर एक हज़ार साल तक दहकाया गया, तो वह सफेद हो गई, फिर एक हज़ार साल तक दहकाया गया, तो अब वह बहुत ज़ियादा सियाह हो गई।" [शोअबुल ईमान : ८१२, अन अनस ﷺ]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज | तबीअत के मुवाफ़िक ग़िज़ा से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब मरीज़ कोई चीज़ खाना चाहे तो उसे खिलाओ।" [कन्ज़ुल उम्माल : २८१३७, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

फ़ायदा : जो गिज़ा चाहत और तबीअत के तकाज़ा से खाई जाती है, वह बदन में जल्द असर करती है, लिहाज़ा मरीज़ किसी चीज़ के खाने का तकाजा करे तो उसे खिलाना चाहिये। हां अगर ऐसी गिज़ा है के जिस से मर्ज़ बढ़ने का क़वी इमकान है, तो ज़रूर परहेज़ करना चाहिये।

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला छींक को पसंद और जमाई को ना पसंद करता है, लिहाज़ा जब तुम में से किसी को जमाई आए, तो जहाँ तक हो सके, उस को रोकने की कोशिश करे और "हाह, हाह" न कहे, इस लिए के यह शैतान की तरफ़ से होता है और वह उस पर हंसता है।" [अबू दाऊद : ५०२८, अन अबी हुरैरह ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(११) ज़िलक़ादा

नंबर (१): इस्लामी तारीख — फातिहे सिंध मुहम्मद बिन कासिम رحمة الله عليه

फातिहे सिंध मुहम्मद बिन कासिम رحمة الله عليه की शख़सियत तारीखे इस्लाम में नुमायाँ मक़ाम रखती है। उन्हों ने ही सिंध को फ़तह किया था। यहाँ के लोग अरब ताजिरों को बहुत नुक्सान पहुँचाते थे, उन के जहाज़ों पर कब्ज़ा कर लेते और सामान लूट लेते थे। एक मर्तबा उन लोगों ने अरब के जहाज़ों पर कब्ज़ा कर लिया, मर्दों, औरतों और बच्चों को कैद कर लिया, जब सिंध के हाकिम राजा दाहिर से उन सब को वापस करने की दरख्वास्त की गई, तो कैद कर्दा लोग जेल खाने में मौजूद होने के बावजूद यह कह दिया के जहाज़ लूटने वालो पर हमारा बस नही चलता, तुम खुद आकर अपने कैदियों को छुड़ालो और अपना माल व अस्बाब हासिल कर लो। तब मुहम्मद बिन कासिम सन ९३ हिजरी में छे हज़ार का लश्कर लेकर सिंध रवाना हूआ और अपने आला अखलाक व किरदार से सिंध और मुलतान वगैरा को फ़तह कर लिया और पूरे मुल्क में अमन व अमान और अदल व इन्साफ़ कायम किया, सब को मज़हबी आज़ादी देदी, हत्ता के बुत खानों की हिफ़ाज़त व मरम्मत अपने खज़ाने से कराई। काश्त कारों और कारीगरों की मदद फ़र्माई और हर एक के साथ बराबरी, अदल व इन्साफ़ का मामला किया और तमाम लोगों को शहरी बन कर अमन व अमान के साथ आज़ादाना ज़िंदगी गुज़ारने का हक दिया। ग़र्ज़ मुहम्मद बिन कासिम के आला किरदार और मुसलमानों के अखलाक को देख कर अवाम बहुत मुतअस्सिर हुई, लेकिन बद किस्मती से सन ९६ हिजरी में खलीफ़ा ने मुहम्मद बिन कासिम को दारुलखिलाफ़ा बुला लिया और एक साज़िश के तहत शहीद कर डाला।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — पानी में अल्लाह की कुदरत

सारे फूल और फलों की खूबसूरती, उन का रंग और उन का मज़ा यह सब अल्लाह की कुदरत की ऐसी निशानियाँ हैं के अल्लाह ने उन में पानी की आमेज़िश रखी है, एक को अल्लाह ने कड़वा बनाया, दूसरे को मीठा, किसी को फीका बनाया, तो किसी को खट्टा, किसी पौदे पर काँटे लगाए और फिर उसी में से फूल भी निकाला, फूल के पानी को शहद की मक्खी के मुँह में डाला, तो वह शहद बन गया, पानी ही को सदफ़ यानी सीपी के मुँह में डाला, तो वह मोती बन गया, पानी ही को रेशम के कीड़े के मुँह में डाला, तो वह रेशम बन गया। यह सब अल्लाह की कुदरत है, जिस ने पानी से शहद, मोती और रेशम बनाए।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — कुर्बानी के जान्वरों का ऐब से पाक होना

हज़रत अली رضي الله عنه फर्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें हुक्म दिया के हम (कुर्बानी के जान्वरों के) कान और आँख को अच्छी तरह देख लें और इस का भी हुक्म दिया के (हम ऐसे जान्वरों की कुर्बानी न करें) जिन के कान आगे से कटे हुए हों या पीछे से कटे हुए हों या वह लम्बाई में फटे हों या जिस के कान में सूराख़ हो।

[तिर्मिज़ी : १४९८]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — ज़ोहर और अस्र में मस्नून क़िरत

रसूलुल्लाह ﷺ ज़ोहर और अस्र की नमाज़ में ﴿وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ﴾ और ﴿وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ﴾ पढ़ा करते थे।

[अबू दाऊद : ८०५, अन जाबिर बिन समुरह رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	मस्जिदे नब्वी में नमाज़ का सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मेरी इस मस्जिद (यानी मस्जिदे नब्वी) में पढ़ी जाने वाली एक नमाज़ मस्जिदे हराम के अलावा दूसरी मस्जिद में पढ़ी जाने वाली, एक हज़ार नमाज़ों से बेहतर है।"

[बुखारी : ११९०, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	शराब पीने वाले की सज़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मेरे रब ने कसम खाई के मेरी इज़्ज़त की कसम ! मेरे बन्दों में जो भी बंदा शराब का कोई घूँट पिएगा, तो उस को उतना ही पीप पिलाऊँगा और जो बन्दा मेरे डर से शराब छोड़ेगा उस को पाक साफ़ हौज़ों से पिलाऊँगा।"

[मुस्नदे अहमद : २१८०४, अन अबी उमामा رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया में लगे रहने का वबाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स अल्लाह का हो जाता है, तो अल्लाह तआला उस की हर ज़रूरत पूरी करते हैं और उस को ऐसी जगह से रिज़्क देते हैं के उस को गुमान भी नही होता; और जो शख़्स पूरे तौर पर दुनिया की तरफ़ लग जाता है, तो अल्लाह तआला उस को दुनिया के हवाले कर देते हैं (के तू जान और तेरा काम)।"

[कन्ज़ुल उम्माल : ६२७०, अन इमरान बिन हुसैन رضي الله عنه]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जहन्नम का अज़ाब

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : (मुन्किरीन अज़ाब से कहा जाएगा) जिस अज़ाब को तुम झुटलाया करते थे, उस अज़ाब की तरफ़ चलो तुम (जहन्नम के) एक ऐसे सायबान की तरफ़ चलो जिस की तीन शाखें हैं, जिस में न साया है और न वह आग की लिपट और शोलों से बचाता है, वह (सायबान) बड़े बड़े महल जैसे शोले फेंकता है, गोया के वह ज़र्दी माइल काले ऊँट हैं। उस दिन झुटलाने वालों के लिए बड़ी खराबी होगी।

[सूर-ए-मुर्सलात : २९ ता ३४]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मुफ़ीद तरीन इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मुझे जिब्राईल عليه السلام ने यह बात बताई के हजामत (पछना लगाना) सब से ज़ियादा नफा बख़्श इलाज है।"

[कन्ज़ुल उम्माल : २८१३८, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : अगर तुम मुन्किर होगे, तो यकीन जानो के अल्लाह तआला तुम से बेनियाज़ है और अपने बंदों के लिए कुफ़्र को पसंद नहीं करता और अगर तुम शुक्र करोगे, तो तुम्हारे इस शुक्र को पसंद करेगा।

[सूर-ए-ज़ुमर : ७]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — फ़ातिहे उंदलुस तारिक़ बिन ज़ियाद

फ़ातिहे उंदलुस तारिक़ बिन ज़ियाद तारीखे इस्लाम की वह हस्ती है, जिन्होंने उंदलुस (इस्पेन) के रहने वालों को इन्सानों की गुलामी से नजात दिलाई, वहां का बादशाह कमज़ोर लोगों पर बहुत ज़ुल्म किया करता था। वहाँ के बाशिंदों ने मूसा बिन नसीर से बादशाह के ज़ुल्म व सितम की शिकायत की और मदद की दरख्वास्त की। मूसा बिन नसीर ने सन ९१ हिजरी को सात हज़ार लश्कर के साथ तारिक बिन ज़ियाद को इस्पेन रवाना किया वह अल जज़ाइर वगैरा के इलाकों को फ़तह करता हूआ बादशाह रज़ीक के लश्कर के सामने पहुँच गया। बादशाह के साथ एक लाख का लश्कर था। मूसा बिन नसीर ने तारिक बिन ज़ियाद की मदद के लिए मज़ीद पाँच हज़ार का लश्कर रवाना किया इस तरह तारिक बिन ज़ियाद ने सन ९२ हिजरी में कुल बारह हज़ार की जमइय्यत को ले कर एक लाख फौजों का मुकाबला किया। और अल्लाह तआला ने उन्हें शानदार फ़तह अता फ़र्माई। और यूरप पर भी इस्लाम का परचम लहराने लगा। पूरे मुल्क में अमन व अमान कायम हो गया, अदल व इन्साफ़ की हवा चलने लगी और ज़ुल्म व सितम का खातमा हो गया, फिर बाद में इसी इस्पेन में "मस्जिदे करतबा" नामी एक तारीखी मस्जिद बनी उस की लम्बाई पाँच सौ फ़िट के करीब थी, उस की मेहराबें एक हज़ार सात सौ सत्तर सुतूनों पर कायम थीं और तकरीबन ३०० खुद्दाम काम करते थे।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — खारे पानी का मीठा होना

हम्माम बिन नुफैल رضي الله عنه बयान करते हैं के मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ, मैं ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ﷺ ! हम ने एक कुँवा खोदा है मगर उस का पानी खारा है, आप ﷺ ने मुझे एक मशकीज़ा इनायत फ़र्माया, जिस में पानी था और फ़र्माया : इस पानी को उस में डाल देना, मैं ने वह पानी कुँवे में डाल दिया तो उस का पानी मीठा हो गया। [इसाबा : ९०२०]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — पर्दा करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : (ऐ औरतो !) तुम अपने घरों में ठहरी रहा करो और दौरे जाहिलियत की तरह बे पर्दा मत फिरो। [सूर-ए-अहज़ाब : ३३]

फ़ायदा: तमाम मुस्लिम औरतों के लिए ज़रूरी है, के जब किसी सख़्त ज़रूरत के तहत घर से निकलें, तो अच्छी तरह पर्दे का एहतेमाम करते हुए बाहर जाएं, क्योंकि पर्दा करना तमाम औरतों पर फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	शैतानी वस्वसे से बचने की दुआ

शैतानी वस्वसे से बचने के लिए इस दुआ का एहतेमाम करना चाहिए:

﴿رَّبِّ اَعُوْذُبِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ وَاَعُوْذُبِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ﴾

तर्जमा : ऐ मेरे रब ! मैं शैतान के वस्वसों से तेरी पनाह चाहता हूँ और ऐ मेरे रब ! तेरी पनाह चाहता हूँ इस से के वह मेरे करीब आएं। [सूर-ए-मोमिनून : ९७ ता ९८]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	मस्जिदे कुबा में नमाज़ का सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स इस मस्जिद यानी "मस्जिदे कुबा" में आकर नमाज़ पढे, तो वह उस के लिए उमरा के बराबर है ।" [नसई : ७००, अन सहल बिन हुनैफ़ رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	मुन्किरीन का अज़ाब

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है जो लोग हमारी आयतों का इन्कार करते रहे हैं, तो वही बद बख्त हैं (जिन को बाएँ हाथ में नाम-ए-आमाल दिया जाएगा) उन पर चारों तरफ़ से बंद की हूई आग को मुसल्लत कर दिया जाएगा । [सूर-ए-बलद : १९ ता २०]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया का धोका

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "ऐ इन्सान ! तुझे अपने रब की तरफ़ से किस चीज़ ने धोके में डाल रखा है (के तु दुनिया में पड़ कर उसे भुलाए रखता है हालांके) उस ने तुझे पैदा किया (और) फिर तेरे तमाम आज़ा एक दम ठीक अन्दाज़ से बनाए। (फिर भी तू उस से गाफ़िल है)" [सूर-ए-इन्फ़ितार : ६ ता ७]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	जहन्नम की हालत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "कयामत के दिन जहन्नम को सत्तर हज़ार लगामों के साथ लाया जाएगा और हर लगाम के साथ सत्तर हज़ार फरिश्ते होंगे जो उस को खींच रहे होंगे ।" [मुस्लिम : ७१६४, अन इब्ने मसऊद رضي الله عنه]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	हर मर्ज़ का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हलाल कमाई से शहद खरीद कर बारिश के पानी में मिला कर पिया जाए, तो हर बीमारी से शिफ़ा होगी ।" [कन्ज़ुल उम्माल : २८१७२, अन अनस رضي الله عنه]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला की ना फ़र्मानी में किसी की इताअत न करो, इताअत तो सिर्फ़ नेकी के कामों में है ।" [अबू दाऊद : २६२५, अन अली رضي الله عنه]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२१ ज़िलकादा

नंबर १ : इस्लामी तारीख — हज़रत कअबे अहबार رحمه الله

हज़रत कअबे अहबार رحمه الله मशहूर ताबिई हैं, क़बूले इस्लाम से पहले वह यहूद के बड़े उलमा में थे, जनाबे रसूलुल्लाह ﷺ के ज़माने में मौजूद थे, इस्लाम कबूल नहीं किया था। हज़रत उमर رضي الله عنه के ज़मान-ए-ख़िलाफ़त में इस्लाम क़बूल किया । हज़रत अब्बास رضي الله عنه ने उन के इस्लाम लाने का सबब पूछा तो आप ने फ़र्माया : मेरे वालिद ने मुझ को तौरात से एक तहरीर लिख कर दी थी और हिदायत कर दी थी के इस पर अमल करना और अपनी तमाम मज़हबी किताबों पर मोहर लगा कर मुझ से क़सम ली थी के मोहर को कभी न तोड़ना। लिहाज़ा मैं अपने वालिद की नसीहत के मुताबिक अमल करता रहा; मगर जब इस्लाम का गल्बा हुआ तो मेरे दिल में यह ख़याल आया के मेरे वालिद ने मुझ से कुछ छुपाया है, मुझे इन किताबों को खोल कर देखना चाहिए, चुनांचे मैं ने मोहर तोड़ कर किताबें पढ़ीं, तो उन में मुहम्मद ﷺ और उन की उम्मत के औसाफ़ नज़र आए, उस वक्त मुझ पर अस्ल हक़ीक़त वाज़ेह हुई और मैं मुसलमान हो गया।

नंबर २ : अल्लाह की क़ुदरत — पानी का इन्तेज़ाम करना

पानी अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेअ्मत है, उस ने हर एक चीज़ को पानी के ज़रिए ज़िंदगी अता फ़र्माई है, वह आस्मान से पानी बरसाता है और तमाम जानदारों और पेड़ पौदों को सैराब कर देता है और ज़रुरत से ज़ाइद पानी को, नदी और नालों के ज़रिए बड़ी बड़ी झीलों में जमा कर देता है। फिर लोग अपनी ज़रूरत के मुताबिक इस को इस्तेमाल कर लेते हैं और कभी बर्फ़ की शक्ल में ऊँचे ऊँचे पहाड़ों पर पानी को महेफ़ूज़ (Store) कर देता है, अगर पानी का यह ग़ैबी निज़ाम खत्म हो जाए, तो रुए ज़मीन से ज़िंदगी का नाम व निशान मिट जाए, मुख्तलिफ़ तरीकों से पानी का इन्तेज़ाम करना अल्लाह तआला की अज़ीम क़ुदरत है।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — बा वुज़ू तवाफ़ करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "खान-ए-काबा का तवाफ़ करना नमाज़ ही की तरह है" (जिस तरह नमाज़ बग़ैर वुज़ू के सही नहीं होती है, इसी तरह तवाफ़ भी बग़ैर वुज़ू के दुरुस्त नहीं होता है)।

[तिर्मिज़ी : ९६०, अन इब्ने अब्बास رضي الله عنه]

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — मग़रिब की नमाज़ में मसनून किरत

हज़रत उम्मे फ़ज़्ल رضي الله عنها बयान करती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ मग़रिब की नमाज़ में ﴿وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ۝﴾ पढ़ा करते थे।

[अबू दाऊद : ८१०]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	वुज़ू के बाद कलिम-ए-शहादत पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम में से जो भी अच्छी तरह वुज़ू करे, फ़िर यह कहे :

((أَشْهَدُ أَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ))

तो उस के लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, जिस दरवाज़े से चाहे दाखिल हो जाए।"

[मुस्लिम : ५५३, अन उमर बिन खत्ताब ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	इज़ार या पैन्ट टखने से नीचे पहनना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स तकब्बुर के तौर पर अपने इज़ार को टखने से नीचे लटकाएगा, तो अल्लाह तआला कयामत के दिन उस की तरफ़ रहमत की नज़र से नहीं देखेगा।"

[बुखारी : ५७८८, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	हलाल रोज़ी कमाओ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "रोज़ी को दूर न समझो, क्योंकि कोई आदमी उस वक्त तक नहीं मर सकता जब तक के जो रोज़ी उस के मुकद्दर में लिख दी गई है, वह उस को न मिल जाए। लिहाज़ा रोज़ी हासिल करने में बेहतर तरीका इख्तियार करो, हलाल रोज़ी कमाओ और हराम को छोड़ दो।"

[मुस्तदरक : २१३४, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	अहेले जन्नत का इन्आम

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : बेशक अल्लाह से डरने वालों के लिए कामयाबी है (उन के लिए) बाग, अंगूर, हम उम्र नौजवान औरतें होंगी और छलकते हुए शराब के जाम होंगे।

[सूर-ए-नबा : ३१ ता ३४]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	सदक़े से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "सदके से अपने मरीज़ों का इलाज किया करो, क्यों कि सदका बीमारियों और पेश आने वाली मुसीबतों को दूर करता है।"

[कन्ज़ुल उम्माल : २८१७८, अन इब्ने उमर ﷺ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम अपने रब की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाओ (और गुनाहों से तौबा कर लो) उस की फ़र्मांबरदारी और उस का हुक्म मानो इस से पहले के (तुम्हारे गुनाहों का वबाल) तुम्हें आ पकड़े और फिर कोई तुम्हारी मदद न कर सके।

[सूर-ए-ज़ुमुर : ५४]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुरआन व हदीस की रौशनी में)

(२२) ज़िलक़ादा

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा رحمه الله

इमाम अबू हनीफ़ा नुअ़्मान बिन साबित رحمه الله की पैदाइश सन ८० हिजरी में हुई, उन का खानदान तिजारत किया करता था उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ के जलीलुल क़द्र सहाबी और खादिमे खास हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه वग़ैरह को देखा है। अल्लाह तआला ने उन्हें ज़बरदस्त हाफ़िज़ा इनायत फ़र्माया था वह ग़रीबों की मदद, पड़ोसी का खयाल और उस के हुक़ूक़ की अदायगी, दुश्मनों और हासिदों के साथ भी दोस्ताना बर्ताव किया करते थे। इबादत व रियाज़त का यह हाल था के पूरी पूरी रात अल्लाह की इबादत करते और अल्लाह तआला के डर से इतना रोते के बाहर सुनाई देता था यहां तक के पड़ोस वाले इन पर तरस खाते थे नस्र बिन हाजिब कहते हैं के मैं कभी कभी रात को इमाम अबू हनीफ़ा के पास सो जाता था मैं ने उन को देखा के वह सारी रात नमाज़ पढ़ते रहते और उन के आंसू बारिश की तरह चटाई पर गिरते रहते मैं गिरने की आवाज़ सुनता था। वह अपने पास पढ़ने वाले ग़रीब तलबा की मदद किया करते थे, हत्ता के उन के घर वालों को भी खर्च भेज दिया करते थे, हाकिमों और बादशाह से बहुत दूर रहते और उन के हदाया और तहाइफ़ कबूल नहीं करते थे। एक मर्तबा इमाम आज़म की बेबाकी और हक गोई से मुतअस्सिर हो कर खलीफ़ा मंसूर की बीवी ने पचास हज़ार दिरहम, एक बांदी और एक खूबसूरत सवारी आप की खिदमत में भेजा मगर यह कह कर वापस कर दिया के मैं ने जो कुछ कहा है वह अल्लाह के लिए और उस के दीन की हिमायत में कहा है। मेरा मकसद दुनिया कमाना नहीं है।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — ग़ज़वा-ए-हुदैबिया के मौके पर एक खास मुअ्जिज़ा

हज़रत बराअ बिन आज़िब رضي الله عنه फ़र्माते हैं के सुलहे हुदैबिया के दिन हम लोगों की तादाद १४०० थी वहां एक कुवां था, हम ने उस का सारा पानी निकाल लिया हत्ता के एक कतरा भी नहीं छोड़ा, फिर नबीए करीम ﷺ कुंवें के किनारे पर बैठे और पानी मंगाया और कुंवें में कुल्ली फ़र्माई थोड़ी ही देर में (काफ़ी पानी निकल आया) हम लोगों ने पानी लिया और खूब सैराब हो कर पिया और हमारी सवारी के जानवर भी सैराब हो गए ।

[बुखारी : ३५७७]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — जुमा के लिए खुत्बा देना

रसूलुल्लाह ﷺ जुमा के रोज़ खड़े हो कर खुत्बा देते थे (उस के बाद) बैठ जाते फिर (दूसरे खुत्बे के लिए) खड़े होते थे।

[मुस्लिम : १९९४, अन इब्ने उमर رضي الله عنه]

नोट : जुमा के रोज़ जुमा की नमाज़ से पहले खुत्बा देना ज़रुरी है ।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — शहर या गांव में दाखिल होने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी बस्ती में दाखिल होते, तो तीन मर्तबा यह पढ़ते :

((اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهَا))

((اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا جَنَاهَا وَحَبِّبْنَا اِلٰى اَهْلِهَا وَحَبِّبْ صَالِحِيْ اَهْلِهَا اِلَيْنَا))

तर्जमा : (ऐ अल्लाह ! इस में हमारे लिए बरकत अता फ़र्मा) फिर यह फ़र्माते : तर्जमा : ऐ अल्लाह ! इस बस्ती से हमें फ़ायदा नसीब फ़र्मा, यहां के लोगों के दिलों में हमारी मुहब्बत पैदा फ़र्मा और यहां के नेक लोगों की मुहब्बत हमारे दिलों में पैदा फ़र्मा । [तबरानी कबीर : ६३२, अन इब्ने उमर ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़ अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स अल्लाह ही के लिए चालीस दिन जमात के साथ नमाज़ पढ़े(इस तौर पर के तक्बीरे ऊला फ़ौत न हो) तो उस के लिए दो खलासियाँ लिख दी जाती हैं, एक खलासी जहन्नम से और एक निफ़ाक से ।" [तिर्मिज़ी : २४१, अन अनस बिन मालिक ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | ज़ुल्म व ज़ियादती करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो अपने ऊपर ज़ुल्म किए जाने के बाद बराबर बदला लेले, तो ऐसे लोगों पर कोई इल्ज़ाम नहीं, इल्ज़ाम तो सिर्फ़ उन लोगों पर है, जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं, नाहक दुनिया में सरकशी करते फिरते हैं । यही वह लोग हैं जिन के लिए दर्दनाक अज़ाब है । [सूर-ए-शूरा : ४१ ता ४२]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | माल व औलाद की मुहब्बत

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : (माल व औलाद की) कसरत (और दुनिया के सामान) पर फ़ख्र ने तुम को (अल्लाह की याद) से गाफ़िल कर दिया है यहां तक के तुम कब्रस्तान जा पहुंचते हो, हरगिज़ ऐसा न करो, तुम को बहुत जल्द मालूम हो जाएगा । [सूर-ए-तकासुर : १ ता ३]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | कयामत के दिन अमीर व गरीब की तमन्ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "कयामत के दिन हर मालदार और गरीब आदमी यह तमन्ना करेगा के काश उस को दुनिया में सिर्फ़ गुज़ारा करने की रोज़ी दी जाती ।" [इब्ने माजा : ४१४०, अन अनस ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | इलाज में हराम से बचना

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन उसमान ﷺ कहते हैं के एक हकीम ने हुज़ूर ﷺ से मेंडक के बारे में पूछा के उस को (मार कर) दवा में डाल सकते हैं? तो आप ﷺ ने उस को मना फ़र्माया । [अबू दाऊद : ३८७१]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम किसी काम का इरादा करो, तो गौर व फ़िक्र के बाद करो यहां तक के अल्लाह तआला उस का सही अंजाम दिखला दे ।" [बैहकी फ़ी शोअबिल ईमान : ११९२]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२३ ज़िलकादा

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — फ़न्ने हदीस में इमाम अबू हनीफ़ा رحمة الله عليه का मकाम

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा رحمة الله عليه ने बड़े हो कर इल्म हासिल करने की तरफ़ तवज्जोह फ़र्माई, कूफ़ा के बड़े असातिज़ा और अइम्म-ए-फ़न से इल्म हासिल किया, यहां तक के तमाम उलूम में महारत हासिल कर ली, फुक्हा व मुहद्दिसीन की एक बड़ी जमात उन की महारत और उन के कमाल का एतराफ़ किया करती थी, अहादीस के हाफ़िज़ थे, जब कूफ़ा के मशहूर मुहद्दिसों से हदीसें पढ़ लीं, तो फिर मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा का सफ़र किया और वहां के असातिज़ा से इल्मे हदीस हासिल किया, उन्होंने तकरीबन बेशुमार मुहद्दिसीने किराम से इल्मे हदीस हासिल किया। अल्लामा ज़हबी फ़र्माते थे "इमाम अबू हनीफ़ा رحمة الله عليه हदीस के माहिर थे, उन का शुमार हुफ़्फ़ाज़े हदीस में होता था" अहादीस के बाब में भी इमाम अबू हनीफ़ा رحمة الله عليه ने नुमायां कारनामा अंजाम दिया है, पहले सारी हदीसें मुख्तलिफ़ जगह फैली हुई थीं और हज़ारों झूटी हदीसें हुज़ूर ﷺ की तरफ़ मंसूब हो गई थीं । सब से पहले इमाम अबू हनीफ़ा رحمة الله عليه ने ही अहादीस बयान करने के शराइत बयान किए और अहादीस के मरातिब मुतअय्यन किए । रावियों के हालात और उन की हैसियत से वह खूब अच्छी तरह वाकिफ़ थे, इसी वजह से इमाम अबू यूसुफ़ رحمة الله عليه फ़र्माते थे के इमाम अबू हनीफ़ा رحمة الله عليه मुझ से ज़ियादा सही हदीसों को जानने वाले हैं ।

नंबर २ : अल्लाह की कुदरत — शहद का कारखाना

अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत से इन्सानों की खिदमत के लिए एक छोटी सी मखलूक शहद की मक्खी बनाई, जो फूलों से रस जमा कर के छत्तों में महफ़ूज़ कर देती है । अल्लाह तआला ने इस छोटी सी मक्खी को कैसा हुनर दे रखा है के वह अपने रहने के लिए जो छत्ता बनाती है, उस में छोटे छोटे खाने होते हैं और हर खाने में छे कोने होते हैं, जो सारे के सारे एक ही साइज़ के होते हैं और वह फूलों के रस ला कर उन्हीं खानों में जमा करती है। ज़रा गौर कीजिए के अल्लाह तआला ने हमारे लिए खालिस शहद पैदा करने के लिए कितना अच्छा इन्तेज़ाम किया है, यकीनन वह बड़ी कुदरत वाला है।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — गुस्ल के लिए तयम्मुम करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "अगर तुम बीमार हो जाओ या सफ़र में हो या तुम में से कोई शख्स अपनी तबई ज़रुरत (यानी पेशाब पाखाना कर के) आया हो या अपनी बीवी से मिला हो और तुम पानी (के इस्तेमाल पर) ताकत न रखते हो, तो ऐसी हालत में तुम पाक मिट्टी का इरादा करो (यानी तयम्मुम कर लो)" [सूर-ए- माइदा : ६]

फ़ायदा : अगर किसी पर गुस्ल करना फ़र्ज़ हो जाए और पानी इस्तेमाल करने की ताकत न रखे, तो ऐसी सूरत में गुस्ल के लिए तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ है और तयम्मुम का तरीका यह है के दोनों

हाथों को ज़मीन पर मार कर चेहरे पर मसह कर लें फिर ज़मीन पर मारें और दोनों हाथों पर कोहनियों समेत मसह कर लें।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	इशा की नमाज़ में मसनून किरत

रसूलुल्लाह ﷺ इशा की नमाज़ में ﴿وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا﴾ और इसी जैसी सूरतें पढ़ा करते थे। [तिर्मिज़ी : ३०९, अन बुरैदा ؓ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	एक दिन के नफ़ली रोज़े का सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अगर कोई शख़्स अल्लाह के वास्ते एक दिन का नफ़ली रोज़ा रखे और उस के बदले में उस को सारी ज़मीन भर कर सोना (रोज़ाना) दिया जाए, तो कयामत के दिन तक भी इस रोज़े के सवाब का बदला अदा नहीं हो सकता।" [कंज़ुल उम्माल : २४१५१, अन अनस ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	इमाम से पहले सर उठाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क्या वह शख़्स जो इमाम से पहले अपने सर को उठाता है, इस बात से नहीं डरता, के अल्लाह तआला उस के सर को गधे का सर बना देगा या उस की शक्ल गधे जैसी बना देगा।" [बुख़ारी : ६९१, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया का तज़किरा न करो

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया :"अपने दिलों को दुनिया की याद में मशगूल न करो।" [कंज़ुल उम्माल : ६१५०, अन मुहम्मद बिन नज़्र अलहारसी ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत के दिन का अंदाज़

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जिस दिन तमाम जानदार और फ़रिश्ते सफ़ बांध कर खड़े होंगे उस रोज कोई कलाम न कर सकेगा, अल्बत्ता जिस को खुदाए रहमान (यानी अल्लाह तआला बात करने की) इजाज़त देदे और वह बात भी ठीक ही कहेगा उस दिन का आना यकीनी है, जो शख़्स चाहे अपने रब के पास ठिकाना बना ले। [सूर-ए-नबा : ३८ ता ३९]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	जोड़ों के दर्द का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अंजीर खाओ (फिर उस की अहेमियत बताते हुए इर्शाद फ़र्माया) अगर मैं कहता के जन्नत से कोई फल उतरा है तो यही है, क्यों कि जन्नत के फलों में गुठली नहीं है (और अंजीर का यही हाल है) लिहाज़ा इसे खाओ, इस लिए के यह बवासिर को खत्म करता है और जोड़ो के दर्द में मुफ़ीद है।" [कंज़ुल उम्माल : २८२७६, अन अबी ज़र ؓ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम्हारे रब ने फ़र्माया है के मुझ से दुआ मांगो मैं तुम्हारी दुआ कबूल करूंगा, बिला शुबा जो लोग मेरी इबादत करने से तकब्बुर करते हैं, वह अनकरीब ज़लील हो कर जहन्नम में दाखिल होंगे। [सूर-ए-मोमिन : ६०]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा رحمة الله عليه की फ़िक्ही खिदमात

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा की ज़िंदगी का अस्ल कारनामा फ़िकह की तर्तीब व तदवीन है, उन के ज़माने में सैकड़ों नए और पेचीदा मसाइल सामने आए, जिन का हल उन्होंने कुर्आन व हदीस से बताया। उन का उसूल ही था मसाइल की तहकीक करने में कुर्आन, अहादीस इज्माअ और अकवाले सहाबा से हरगिज़ बाहर न जाए। उन्होंने उलमाए किराम की एक कमेटी तय्यार कर रखी थी, जिस में एक एक मसअले पर कई कई पहलू से कुर्आन व हदीस और इज्माअ व कयास की रौशनी में गौर होता और उन का मुत्तफ़का फ़ैस्ला लिख लिया जाता। इसी तरह तीस साल की मुद्दत में यह अज़ीमुश शान काम मुकम्मल हुआ। उलमा लिखते हैं के इमाम अबू हनीफ़ा رحمة الله عليه ने इबादात व मुआमलात और दीगर मौज़ूआत से मुतअल्लिक तकरीबन बारा लाख नव्वे हज़ार मसाइल को हल कर के उम्मत के सामने पेश किया। फ़िकह में उन की ज़हानत और कुर्आन व अहादीस के मुताबिक जचे तुले फ़ैस्ले को देख कर बड़े बड़े फुकहा व मुहद्दिसीन फ़र्माने लगे के इमाम अबू हनीफ़ा رحمة الله عليه अपने दौर के सब से बड़े फ़कीह और कुर्आन व अहादीस के मकासिद को समझने वाले हैं, इमाम शाफ़ई फ़र्माते थे के मैं ने इमाम अबू हनीफ़ा से बड़ा फ़कीह किसी को नहीं देखा। इल्मे फ़िकह में सारे लोग उन के मोहताज हैं।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — शेर का हज़रत सफ़ीना رضي الله عنه को रास्ता बताना

हज़रत सफ़ीना رضي الله عنه फ़र्माते हैं के हम समुंदर में सफ़र कर रहे थे, अचानक हमारी कश्ती टूट गई, तो मैं ने कश्ती का एक तख्ता पकड़ लिया और उस पर सवार हो गया तो तख्ता बहता हुआ एक घने जंगल के पास पहुंचा, जिस में शेर बैठा हुआ था। वह मेरी तरफ़ लपका, तो मैं ने कहा : मैं रसूलुल्लाह ﷺ का गुलाम हूँ। तो फ़ौरन शेर ने अपना सर झुका दिया और मुझे अपने ऊपर सवार कर लिया और फिर मुझे जंगल से निकाल कर रास्ते पर ला छोड़ा और दहाड़ मारा, मैं ने समझा के मुझे वह अल्विदा कह रहा है। [मुस्तदरक हाकिम : ६५५०]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — हतीम के बाहर तवाफ़ करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : और (कुर्बानी के बाद) लोगों कोअपना मैल कुचैल साफ़ करना और अपनी मन्नतों यानी हज के वाजिबात को पूरा करना चाहिए और खान-ए-काबा का तवाफ़ करना चाहिए। [सूर-ए-हज : २९]

फ़ायदा : अल्लाह तआला ने खान-ए-काबा के तवाफ़ का हुक्म दिया है और "हतीम" खाना-ए-काबा में दाखिल है, इस लिए हतीम से बाहर ही तवाफ़ करना वाजिब है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — सब्र और इस्लाम पर वफ़ात की दुआ

ईमान पर खात्मे के लिए इस दुआ का एहतेमान करना चाहिए :

﴿ رَبَّنَآ اَفۡرِغۡ عَلَيۡنَا صَبۡرًا وَّتَوَفَّنَا مُسۡلِمِيۡنَ ﴾

तर्जमा : ऐ हमारे रब ! हम पर सब्र के दहाने खोल दे और हमें इस्लाम पर वफ़ात अता फ़र्मा ।

[सूर-ए-आराफ़ : १२६]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	हर चीज़ के मुकाबले में काफ़ी होने वाला अमल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "सुब्ह और शाम के वक्त तीन मर्तबा ﴿قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ﴾ और ﴿قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ﴾ और ﴿قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾ पढ लिया करो, तो हर चीज़ से तुम्हारी (हिफ़ाज़त के लिए) काफ़ी हो जाएगा ।" [अबू दाऊद : ५०८२, अन अब्दुल्लाह बिन

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	अल्लाह के हुक्म से गफ़लत का वबाल

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो शख्स रहमान (यानी अल्लाह) की नसीहत से आँखें बंद कर ले, तो हम उस पर शैतान मुसल्लत कर देते हैं, जो (हर वक्त) उस के साथ रहता है और वह शयातीन ऐसे लोगों को सीधे रास्ते से रोकते रहते हैं और वह यह समझते हैं के हम सीधे रास्ते पर हैं ।

[सूर-ए-ज़ुख़रुफ़ : ३६ ता ३७]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	सिर्फ़ दुनिया की नेअ्मतें मत मांगो

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो शख्स (अपने आमाल के बदले में) सिर्फ़ दुनिया के इन्आम की ख्वाहिश रखता है (तो यह उस की नादानी है के उसे मालूम नहीं) के अल्लाह तआला के यहां दुनिया और आखिरत दोनों का इन्आम मौजूद है (लिहाज़ा अल्लाह से दुनिया और आखिरत दोनों की नेअ्मतें मांगो) अल्लाह तुम्हारी दुआओं को सुनता और तुम्हारी निय्यतों को देखता है ।

[सूर-ए-निसा : १३४]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	कब्र में नमाज़ की तमन्ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब मय्यत को कब्र में रख दिया जाता है, तो उस को सूरज गुरुब होता हुआ दिखाई देता है, तो वह बैठ कर आँखे मलने लगता है और कहता है, मुझे नमाज़ पढ़ने दो ।"

[इब्ने माजा : ४२७२, अन जाबिर ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	दर्दे सर से हिफ़ाज़त

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हम्माम (गुस्ल खाना) से निकलने के बाद कदमों को ठंडे पानी से धोना दर्दे सर से हिफ़ाज़त का ज़रिया है ।" [कंज़ुल उम्माल : २८२९६, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" की गवाही कसरत से देते रहा करो, इस से पहले के ऐसा वक्त आए के तुम इस कलिमे को न कह सको । [मुस्नदे अबी यअ्ला : ६०१२, अन अबी हुरैरह ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

२५ ज़िलक़ादा

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ | हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा رحمه الله की वफ़ात

हाकिमे वक्त ने कई मर्तबा इमाम अबू हनीफ़ा رحمه الله से कज़ा का ओहदा संभालने की दरख्वास्त की थी, मगर हर मर्तबा उन्होंने इस को कबूल करने से इन्कार कर दिया था, आख़िर कार खलीफ़ा मंसूर ने उन को कूफ़ा से बगदाद बुलाया और फिर इस ओहदे को संभालने की दरख्वास्त की, मगर उन्होंने इस मर्तबा भी साफ़ इन्कार कर दिया, जिस की वजह से खलीफ़ा ने उन्हें कैद करा दिया और बहुत ज़ियादा तकलीफें पहुँचाने लगे रोज़ाना कोड़े लगाए जाते, इस की वजह से वह लहू लुहान हो जाते थे। आख़िर एक रोज़ रो पड़े और हाथ उठा कर अल्लाह के दरबार में अपनी बेबसी और मुसीबतों की शिकायत कर दी। मुहम्मद बिन मुहाजिर का बयान है के एक रोज़ प्याले में ज़हर ले कर ज़बरदस्ती आप के हलक़ के अंदर डाल दिया, इस के बाद ही उन की वफ़ात हो गई, यह सन १५० हिजरी का ज़माना था। पचास हज़ार से ज़ाइद लोगों ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ी, आप की नमाज़े जनाज़ा छे मर्तबा पढ़ी गई, सब से पहले काज़िए बग़दाद हसन बिन अम्मारा ने और आख़िर में आप के साहब ज़ादे हज़रत हम्माद ने नमाज़ पढ़ाई। हज़ारों उलमा पर आप की वफ़ात की खबर बिजली बन कर गिरी और रंज व ग़म से निढाल हो गए, इमाम शुअबा को जब वफ़ात की खबर हुई तो "इन्ना लिल्लाह" पढ़ा और कहने लगे के कूफ़ा से इल्म का नूर बुझ गया। सुनो! अब अहले कूफ़ा इमाम अबू हनीफ़ा जैसा शख़्स नहीं देखेंगे।

नंबर २ : अल्लाह की क़ुदरत | मकड़ी का जाला बुनना

अल्लाह ने एक छोटी सी मखलूक मकड़ी बनाई, देखने में तो वह एक छोटी सी मखलूक है; लेकिन अल्लाह तआला ने इस कोअजीब व गरीब हुनर दिया है। वह अपने अंदर से इतना जाला निकाल सकती है, जिस से इस का पूरा घर तय्यार हो जाता है और शिकार करने के लिए जाल भी तय्यार हो जाता है और मकड़ी का यह बारीक तार, इतना मज़बूत होता है के जब कोई कीड़ा उस में फंस जाता है, तो हज़ार कोशिशों के बावजूद इस में से निकल नहीं पाता। यह अल्लाह की ज़बरदस्त कुदरत है। जिस ने छोटी सी मकड़ी को ऐसा हुनर अता किया।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में | क़ुर्बानी करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस के पास वुस्अत हो, फिर भी क़ुर्बानी न करे, तो वह हमारी ईदगाह के करीब भी न आए।"

[इब्ने माजा : ३१२३, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

फ़ायदा : जो शख़्स साहिबे निसाब हो उस पर क़ुर्बानी करना वाजिब है।

नंबर ४: एक सुन्नत के बारे में	नमाज़े जुमा में मसनून किरत

रसूलुल्लाह ﷺ जुमा की नमाज़ में ﴿سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى﴾ और ﴿هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ﴾ पढ़ा करते थे। [अबू दाऊद : ११२५, अन समुरह बिन जुन्दुब ؓ]

नंबर ५: एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	रास्ते से तकलीफ़ देह चीज़ को हटाना

हज़रत अबू बर्ज़ा ؓ ने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के रसूल ! मुझे कोई चीज़ सिखा दीजिए, जिस से मैं फायदा उठाता रहूँ, तो आप ﷺ ने फ़र्माया : मुसलमानों के रास्ते से तकलीफ़ देने वाली चीज़ों को हटा दिया करो। [मुस्लिम : ६६७३]

नंबर ६: एक गुनाह के बारे में	सोने चांदी के बर्तन का इस्तेमाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स सोने या चांदी के बर्तन में (कुछ खाता या) पीता है, तो वह अपने पेट में दोज़ख की आग भरता है।" [मुस्लिम : ५३८७, अन उम्मे सलमा ؓ]

नंबर ७: दुनिया के बारे में	दुनिया में चैन व सुकून नहीं है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "खबरदार ! दुनिया के बारे में जो कुछ मैं जानता हूँ, अगर तुम भी जानने लगो, तो तुम्हें कभी दुनिया में चैन नसीब न हो।" [मुस्तदरक : ६६४०, अन ज़ुबैर ؓ]

नंबर ८: आखिरत के बारे में	क्यामत में मोमिन व काफ़िर की हालत

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : उस दिन (क्यामत के दिन) बहुत से चेहरे रौशन, हँसते हुए खुशियाँ मनाते होंगेऔर बहुत से चेहरों पर उस दिन गर्द व गुबार पड़ी होगी (और) उन पर ज़िल्लत व रुसवाई छाई हुई होगी, यही लोग मुन्किर व बदकार होंगे। [सूर-ए- अबस : ३८ ता ४२]

नंबर ९: तिब्बे नब्वी से इलाज	इर्कुन्नसा निसा (Scitica) का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "इर्कुन्नसा निसा का इलाज अरबी बकरी (दुम्बे) की चक्ती है, जिसे पिघलाया जाए, फिर उस के तीन हिस्से किए जाएँ और रोज़ाना एक हिस्सा निहार मुँह पिया जाए।" [इब्ने माजा : ३४६३, अन अनस बिन मालिक ؓ]

नंबर १०: कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करो, अपने आमाल को बरबाद न करो। [सूर-ए-मुहम्मद : ३३]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२६ ज़िलकादा

नंबर ①: इस्लामी तारीख — हज़रत इमाम मालिक رحمه الله

इमाम मालिक رحمه الله की पैदाइश सन ९३ हिजरी में हुई, वह मदीना मुनव्वरा के सब से बड़े मुहद्दिस, आलिम और फ़कीह थे। आप رحمه الله का और इमाम अबू हनीफ़ा رحمه الله का ज़माना तकरीबन एक ही है। जुहद व तक्वा, इल्म व फ़ज़्ल और फ़िक्र व अमल में आप इमाम अबू हनीफ़ा رحمه الله के हम पल्ला थे। खलीफ़-ए-वक़्त भी उन के हलक-ए-दर्स में एक मामूली शख़्स की तरह शरीक होता था। इमाम अबू हनीफ़ा رحمه الله उम्र में उन से बड़े होने के बावजूद उन के दर्स में शरीक होते थे। इमाम मालिक رحمه الله की तसानीफ़ में "मोअत्ता इमाम मालिक" सब से अहेम तसनीफ़ है, जो अहादीसे नब्वी का बेहतरीन खज़ाना है। सही बुखारी से पहले "मोअत्ता इमाम मालिक" ही को कुर्आन के बाद सब से ज़ियादा सही किताब मानी जाती थी। उन के इल्म, जुहद व तक्वा से एक बड़े इलाके यानी तराबुल्स, तीवनिस, अल जज़ाइर, मराक़श और इसपेन में बड़ा असर पड़ा। इमाम मालिक رحمه الله बड़े बेबाक और जरी इन्सान थे, फ़तवा देने में किसी का लिहाज़ न करते थे चाहे खलीफ़-ए-वक्त के खिलाफ़ ही क्यों न हो। इसी वजह से उन्होंने हुकूमते वक़्त के कोड़े भी खाए, मगर हक का दामन हाथ से जाने न दिया।

नंबर ②: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — सुस्त रफ़्तार घोड़े का तेज़ होना

हज़रत अबू तल्हा رضي الله عنه का घोड़ा निहायत सुस्त रफ़्तार था, एक दफ़ा मदीने में शोर व गुल हुआ रसूलुल्लाह ﷺ ने उसी घोड़े पर सवार हो कर मदीने का चक्कर लगाया वह हुज़ूर ﷺ की सवारी की बरकत से इस कद्र तेज़ रफ़्तार हो गया के जब रसूलुल्लाह ﷺ वापस तशरीफ़ लाए, तो फ़र्माया के यह (घोड़ा) दर्या (की तरह तेज़) है इस के बाद कोई घोड़ा उस का मुकाबला नहीं कर सकता था।

[बुखारी : २९६९, अन अनस رضي الله عنه]

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — वतन लौटते वक्त तवाफ़ करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "कोई शख्स उस वक्त तक वतन वापस न हो, जब तक के उस की आखरी हाज़री खान-ए-काबा पर न हो जाए। (यानी जब तक तवाफ़े विदाअ न कर ले) अलबत्ता जिस औरत को माहवारी आ रही हो, तो वह इस हुक्म में दाखिल नहीं है।" [मुस्लिम : ३२२०, अन इब्ने अब्बास رضي الله عنه]

फायदा : हुदूदे हरम से बाहर रहने वालों पर वतन लौटते वक्त "तवाफ़े विदाअ" करना वाजिब है।

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — जब किसी चीज़ से तअज्जुब हो

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स किसी चीज़ को देखे और अच्छी लगे तो यह दुआ पढ़े:

((مَاشَاءَ اللّٰهُ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ))

तर्जमा : जो अल्लाह चाहता है (वह होता है) ताकत व कुव्वत का मालिक सिर्फ़ अल्लाह है।"

[इब्ने सुन्नी : २०७ अन अनस ﷺ]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	हज व उमरा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "एक उमरा दूसरे उमरा तक के सारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाता है और हज्जे मकबूल का बदला सिर्फ़ और सिर्फ़ जन्नत है।" [बुखारी : १७७३, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	अल्लाह की आयतों को झुटलाने की सज़ा

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : हम ने इन (कौमे आद) के लोगों को उन चीज़ों की कुदरत दी थी के जिन की कुदरत तुम को नहीं दी और हम ने उन को कान और आँखें और दिल अता किए थे, चूँकि वह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे इस लिए न उन के कान उन के कुछ काम आए, न उन की आँखे और न उन के दिल; और जिस अज़ाब का वह मज़ाक उड़ाया करते थे उसी ने उन को आ घेरा। [सूर-ए-अहक़ाफ़ : २६]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	आखिरत के मुकाबले में दुनिया से राज़ी होना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "क्या तुम लोग आखिरत की ज़िंदगी के मुकाबले में दुनिया की ज़िंदगी पर राज़ी हो गए? दुनिया का माल व मताअ तो आखिरत के मुकाबले में कुछ भी नहीं।" (यानी मुसलमान के लिए मुनासिब नहीं है के वह दुनिया ही की ज़िंदगी पर राज़ी हो जाए या दुनिया के थोड़े से साज़ व सामान की ख़ातिर अपनी आख़िरत को बरबाद करे)। [सूर-ए-तौबा : ३८]

नंबर (८) : आखिरत के बारे में	एक साथ जन्नत में जाने वाले

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मेरी उम्मत के सत्तर हज़ार या सात लाख अफ़राद एक साथ जन्नत में दाखिल होंगे, उन के चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमक रहे होंगे।"

[बुखारी : ३२४७, अन सहल बिन सअद ﷺ]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	मिस्वाक के फ़वाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मिस्वाक ज़रुर किया करो, क्योंकि इस से खुदा की खुश्नूदी हासिल होती है और आँख की रौशनी तेज़ होती है।" [मुअजमुल औसत लित्तबरानी : ७७०९, अन इब्नेअब्बास ﷺ]

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स यह चाहे के कयामत के दिन उस का नाम-ए-आमाल उस को खुश कर दे तो उसे कसरत से इस्तिग़फार करते रहना चाहिए।"

[तबरानी औसत : ८५१, अन ज़ुबैर बिन अव्वाम ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२७ ज़िलक़ादा

नंबर १: इस्लामी तारीख — हज़रत इमाम मालिक رحمه الله का दर्स

इमाम मालिक رحمه الله ने सन ११७ हिजरी में २४ साल की उम्र में अपनी मजलिसे दर्स कायम की और मुसलसल ६२ साल तक इल्मे दीन की ख़िदमत में मसरुफ़ रहे। आप رحمه الله की मजलिसे दर्स की अजीब शान थी। तलबा, उमरा और उलमा कसरत से आप رحمه الله के दर्स में शरीक रहते थे। उन की हुकूमत लोगों के दिलों पर थी यहाँ तक के बादशाह भी उन के आस्ताने पर हाज़िर होते थे। एक मर्तबा खलीफ़ा हारुन रशीद رحمه الله मदीना आए तो इमाम साहब से मोअत्ता सुनने की ख्वाहिश की। इमाम साहब رحمه الله ने कहा : कल का दिन उस के लिए है। हारुन रशीद यह समझा के वह हमारे दरबार में आएंगे, मगर इमाम साहब رحمه الله हस्बे दस्तूर अपनी ही मजलिस में रहे और दरबार न गए, हारुन रशीद ने वजह पूछी तो फ़र्माया : इल्म के पास लोग आते हैं, लोगों के पास इल्म नहीं जाता; हारुन रशीद ने कहा: आम लोगों को बाहर कर दीजिए, आप رحمه الله ने फ़र्माया : मैं एक आदमी के फायदे के लिए हज़ारों का नुकसान नहीं कर सकता।

नंबर २: अल्लाह की कुदरत — आँखों में अल्लाह की कुदरत

आँख अल्लाह की बहुत बड़ी नेअ्मत है, आँख ही से हम किस्म किस्म की चीज़ों को देखते हैं मगर हमारी आँखें सिर्फ़ उजाले में देख सकती हैं, अंधेरे में नहीं देख सकतीं, जब के अल्लाह तआला ने एक परिंदे "उल्लु" को ऐसी आँखें दी हैं, जिस से वह अंधेरे में उतनी ही अच्छी तरह देखता है जैसा के हम उजाले में देखते हैं, लेकिन वह उजाले में बिल्कुल नहीं देख सकता। यह अल्लाह तआला की कुदरत है, जिस ने हमें उजाले में देखने की ताकत दी और उसी को अंधेरे में देखने की ताकत दी।

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ में इमाम की पैरवी करना

हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه फ़र्माते हैं : के रसूलुल्लाह ﷺ हमें सिखाते थे के "(नमाज़ में) इमाम से पहले रुक्न अदा न किया करो।" [मुस्लिम: ९३२,]

खुलासा : अगर इमाम के पीछे नमाज़ पढ रहा हो तो तमाम अरकान को इमाम के पीछे अदा करना चाहिए, इमाम से आगे बढना जाइज़ नहीं है।

नंबर ४: एक सुन्नत के बारे में — सलाम फेरते वक्त गर्दन कितनी घुमाए

रसूलुल्लाह ﷺ (नमाज़ में) दाएँ और बाएँ जानिब सलाम फेरते हुए, (इतना गर्दन को घुमाते) के आप के रुख़सारे मुबारक की सफ़ेदी नज़र आ जाती। [मुस्लिम: १३१५, अन सअद رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | हाजी को खुशखबरी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हाजी जब जब भी अल्लाह तआला की तसबीह और तक्बीर बयान करता है तो उस पर उस को बशारत सुनाई जाती है।"

[औसत लित्तबरानी : ५६१३, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | तसवीर बनाने वाले की सज़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क्यामत के दिन अल्लाह के नज़दीक सब से ज़ियादा सख्त अज़ाब तसवीर बनाने वालों को होगा।"

[बुखारी : ५९५०, अन अब्दुल्लाह बिन मसऊद ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया ही को मक्सद बना लेने का नुक्सान

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस का मक्सद दुनिया बन जाए, तो अल्लाह तआला उस के मुआमलात को बिखेर देता है और उस की गुरबत और मोहताजगी को उस की आँखों के सामने कर देता है (जिस से वह हमेशा डरता रहता है) और उस को दुनिया उतनी ही मिलती है जितना उस के मुकद्दर में है और जिस आदमी का मक्सद आख़िरत हो, तो अल्लाह तआला उस के कामों को समेट देते हैं और उस के दिल को ग़नी (यानी मुतमइन) कर देते हैं और दुनिया उस के पास ज़लील हो कर आती है।"

[इब्ने माजा : ४१०५, अन ज़ैद बिन साबित ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | दाहिने हाथ में आमाल नामे वाले

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "ऐ इन्सान ! तू अपने रब के पास जाने तक अमल करने की पूरी कोशिश कर रहा है और तुझे इस अमल का बदला मिलने वाला है, तो जिस का नाम-ए-आमाल दाहिने हाथ में दिया गया, उस से आसान हिसाब लिया जाएगा, वह अपने घर वालों के पास खुश हो कर लौटेगा।"

[सूर-ए-इन्शिकाक : ६ ता ९]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | मेंहदी से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मेंहदी का खिज़ाब लगाओ, क्योंकि यह तुम्हारी जवानी, हुस्न व जमाल और मरदाना कुव्वत को बढ़ाती है।"

[कन्जुल उम्माल : १७३००, अन अनस ؓ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ ईमान वालो ! तुम अल्लाह और उस के रसूल (के) आगे बढ़ कर बात मत करो और अल्लाह तआला से डरते रहो। बेशक अल्लाह (तुम्हारी बातों को) सुनने वाला और कामों को) जानने वाला है।

[सूर-ए-हुजरात : १]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

२८ ज़िलकादा

नंबर १ : इस्लामी तारीख — हज़रत इमाम शाफ़ई رحمة الله عليه

हज़रत इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ई رحمة الله عليه अपने वक़्त के बेमिसाल आलिमे दीन ज़हानत और कुव्वते हाफ़िज़ा में मुमताज़ और हक के रास्ते में मुसीबतें बरदाश्त करने वाले थे उन की पैदाइश सन १५० हिजरी में हुई, पैदाइश से कुछ दिन कब्ल ही वालिद का इन्तेकाल हो चुका था, दो साल की उम्र में वालिदा मोहतरमा के साथ मक्का मुकर्रमा चले आए, सात साल की उम्र में कुर्आने करीम हिफ़्ज़ कर लिया, फिर मक्का मुकर्रमा के उलमाए किराम से इल्मे हदीस और इल्मे फ़िक़ह हासिल करना शुरु किया, जब किसी आलिम से कोई हदीस या कोई मसअला सुनते, तो फ़ौरन याद कर लेते थे, बाद में इमाम मालिक رحمة الله عليه की खिदमत में मदीना मुनव्वरा चले आए और उन से तीन साल तक दर्स लेते रहे। कम उमरी में ही तमाम उलूम व फुनून में इमामत का दर्जा हासिल कर लिया, सब से पहले उन्होंने ही उसूले फ़िक़ह में "अर्रिसाला" नामी किताब लिखी मुख्तलिफ उलूम व फुनून पर उन्होंने तकरीबन ११३, किताबें तसनीफ़ फ़र्माई है; उन की मकबूलियत व महबुबियत का यह आलम था, के जब वह इराक से मुन्तकिल हो कर मिस्र आए, तो शाम व यमन और इराक और दीगर अतराफ़ से उलमा की बड़ी जमात उन की खिदमत में हाज़िर होती और इस्तिफ़ादा करती थी। सुलेमान बिन रबीअ कहते हैं के एक रोज़ मैं ने शुमार किया तो इमाम शाफ़ई رحمة الله عليه के दरवाज़े पर ९००, सवारियाँ अहले इल्म की मौजूद थीं, मिस्र में ही ५४, साल की उम्र में तीस रजबुल मुरज्जब सन २०४ हिजरी, को बाद नमाज़े मगरिब वफ़ात पाई और बरोज़े जुमा बाद नमाज़े अस्र तदफ़ीन अमल में आई।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअजिज़ा — नबी ﷺ के पानी छिड़कने की बरकत

एक रोज़ आप ﷺ गुस्ल फ़र्मा रहे थे, इसी दौरान आप ﷺ की रबीबा बेटी ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा رضي الله عنها तशरीफ़ लाईं, गुस्ल करने के बाद बचा हुआ पानी शफ़क़तन आप ﷺ ने उन के मुँह पर छिड़क दिया। इस का असर यह हुआ के हज़रत ज़ैनब رضي الله عنها के चेहरे पर बुढ़ापे तक जवानी की ताज़गी बाकी रही। [अल इस्तीआब : २/९९]

नोट : बीवी के पहले शौहर की बेटी को रबीबा कहते हैं।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — हलाल पेशा इख्तियार करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह के हुकूक व फ़राइज़ के बाद हलाल रोज़ी कमाना भी फ़र्ज़ है।" [तबरानी फ़िल कबीर : ९८५१, अन अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه]

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — लुक्नत (हक्ला पन) दूर करने के लिए

दिल को रौशन करने और ज़बान में कुव्वत और लुक्नत को दूर करने के लिए इस दुआ को पढ़ना चाहिए। ﴿رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ۝ وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ۝ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّن لِّسَانِي ۝ يَفْقَهُوا قَوْلِي ۝﴾

तर्जमा : ऐ मेरे रब ! तू मेरे सीने को खोल दे और मेरे काम को आसान कर दे और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे ताके लोग मेरी बात समझ सकें। [सूर-ए-ताहा : २५ता २८]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | हज गुनाहों को मिटाने का ज़रिया

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हाजी का ऊंट जैसे ही अपने पैरों को ज़मीन पर रखता है तो अल्लाह तआला उस के बदले में हाजी के लिए एक नेकी लिख देता है या फिर एक गुनाह माफ़ कर देता है या फिर उस के बदले में जन्नत में एक दर्जा बलंद फ़र्मा देता है।"

[बैहकी फ़ि शोअबिल ईमान : ३९६१, अन इब्ने उमर رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | कुफ्र करने वाले नाकाम होंगे

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : बेशक जो लोग काफ़िर हो गए और उन्होंने (औरों कोभी) अल्लाह के रास्ते से रोका और हिदायत ज़ाहिर होने के बाद अल्लाह के रसूल की मुखालफ़त की, तो यह लोग अल्लाह (के दीन) को ज़रा भी नुकसान नहीं पहुँचा सकेंगे अल्लाह तआला उन के तमाम आमाल को बरबाद कर देगा। [सूर-ए-मुहम्मद : ३२]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | काफ़िरों के माल पर तअज्जुब न करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम उन (काफ़िरों) के माल और औलाद से तअज्जुब मे मत पड़ना, क्यों कि अल्लाह तआला दुनिया ही की ज़िंदगी में उन काफ़िरों को अज़ाब में मुबतला करना चाहता है और जब उन की जान निकलेगी, तो कुफ्र की हालत में मरेंगे। [सूर-ए-तौबा : ५५]

खुलासा : काफ़िरों को जो माल व औलाद दी जाती है, उन की ज़ियादती से किसी को तअज्जुब नहीं होना चाहिए, क्योंकि उन्हें अल्लाह तआला इन चीज़ों के ज़रिये उन की नाफ़र्मानी और बगावत की वजह से अज़ाब देना चाहता है।

नंबर (८): आखिरत के बारे में | जन्नत में सब से अफज़ल मक़ाम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम अल्लाह तआला से सवाल करो, तो जन्नतुल फ़िरदौस का सवाल किया करो, क्यों कि वह जन्नत का सब से अफ़ज़ल और बलंद दर्जा है और उस के ऊपर रहमान का अर्श है और उसी से जन्नत की नहरें निकलती हैं।" [बुखारी : ७४२३, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | सफ़र जल से दिल का इलाज

हज़रत तल्हा رضي الله عنه फर्माते हैं के मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ, तो आप ﷺ के मुबारक हाथ में एक सफ़र जल (बही) था फिर आप ﷺ ने फ़र्माया : "तल्हा ! इसे लो, क्योंकि यह दिल को सुकून पहुँचाता है।" [इब्ने माजा : ३३६९]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "आदमी दूसरे आदमी का और औरत दूसरी औरत का सतर न देखे, और दो मर्द एक साथ और दो औरतें एक साथ एक ही लिहाफ़ (यानी चादर और बिस्तर) में न लेटें।" [मुस्लिम : ७६८, अन अबी सईद अल खुदरी رضي الله عنه]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२१ ज़िलकादा

नंबर १: इस्लामी तारीख — हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल رحمة الله عليه

आप का नाम अहमद है, इन्ही की तरफ़ हम्बली फिकह मंसूब है, बगदाद में माहे रबीउल अव्वल सन १६४ हिजरी में पैदा हुए; सऊदी अरबिया में तकरीबन अकसरियत हम्बली मस्लक की है और वहां के सरकारी कवानीन भी हम्बली मस्लक पर हैं, विलादत से पहले ही वालिद का इन्तेकाल हो गया था, माँ ने बड़ी हिम्मत और हौसले से परवरिश की, बचपन ही में कुर्आने करीम हिफ़्ज़ कर लिया और ज़बान की तालीम हासिल कर ली, फिर इल्मे हदीस में मशगूल हो गए, इस के लिए अपने वतन बगदाद से फ़ारिग हो कर बसरा, हिजाज़, यमन, मुल्के शाम और जज़ीरा का सफ़र किया और बड़े बड़े मुहद्दिसीन से इल्म हासिल किया। आप رحمة الله عليه को लाखों हदीसें याद थीं; अपने ज़माने के बड़े मुहद्दिस, मुजाहिद और फ़कीह थे। आप رحمة الله عليه की तसनीफ़ में सब से आला तरीन तसनीफ़ "मुस्नदे अहमद" हदीस की किताब है।

नंबर २: अल्लाह की कुदरत — ज़बान में तीन हज़ार खाने

ज़बान अल्लाह तआला की बनाई हुई बहुत बड़ी नेअ्मत है, यह हमारे बोलने में मदद करती हैं, अगर ज़बान न होती, तो हम किसी से बात नहीं कर सकते और ज़बान ही से हम किसी चीज़ का मज़ा भी मालूम कर लेते हैं, इस के लिए अल्लाह तआला ने ज़बान में तीन हज़ार बिलकुल छोटे छोटे खाने बनाए हैं, जो देखने में नज़र नहीं आते; लेकिन यह हमें हर चीज़ का मज़ा बता देते हैं अगर मीठा खाएँ तो यह बताएँगे के यह चीज़ मीठी है, नमकीन खाएँ तो यह बताएँगे के यह चीज़ नमकीन है, अगर अल्लाह तआला इन बारीक खानों को बंद कर दे, तो मीठा, खट्टा, कड़वा और नमकीन सब बराबर हो जाए। यह अल्लाह तआला की ज़बरदस्त कुदरत है जिस ने हर एक चीज़ का ज़ाएका मालूम करने के लिए, ज़बान जैसी चीज़ को बेहतरीन आला बनाया।

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — अमीर की फ़र्मांबरदारी करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस शख्स ने मेरी फ़र्मांबरदारी की, उस ने अल्लाह की फर्मांबरदारी की और जिस ने मेरी ना फ़र्मानी की, उस ने अल्लाह की ना फ़र्मानी की; और जिस ने अमीर की फ़र्मांबरदारी की, उस ने मेरी फ़र्मांबरदारी की और जिस ने अमीर की ना फ़र्मानी की उस ने मेरी ना फ़र्मानी की।" [मुस्लिम : ४७४७, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

फ़ायदा : अमीर की इताअत और फर्मांबरदारी हर उस चीज़ में ज़रुरी है जो शरीअत के खिलाफ़ न हो; अगरचे उस हुक्म पर अमल करने की तबीअत न चाहती हो।

नंबर ४: एक सुन्नत के बारे में — अपने बच्चों को बोसा देना सुन्नत है

हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने साहबज़ादे इब्राहीम رضي الله عنه को बोसा दिया। [बुखारी : १३०३]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह के रास्ते में निकलने का सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह के रास्ते की धूल और जहन्नम की आग, मोमिन के चेहरे पर हरगिज़ जमा नहीं हो सकती, (यानी अल्लाह के रास्ते में निकला हुआ शख्स जहन्नम की आग से बच जाएगा)।" [मुस्तदरक : २३९६, अन अबी हुरैरह رضی اللہ عنہ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	दिखलावे से बचो !

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने दिखावे की नमाज़ पढ़ी, उस ने शिर्क किया, जिस ने दिखावे के लिए रोज़ा रखा, उस ने शिर्क किया और जिस ने दिखावे के लिए सदका खैरात किया, उस ने भी शिर्क किया।" [मुस्नदे अहमद : १६६९०, अन शद्दाद رضی اللہ عنہ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	बूढे आदमी की ख्वाहिश

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "आदमी बूढ़ा हो जाता है, लेकिन उस की दो चीजें जवान रहती हैं, (१) लंबी उम्र की ख्वाहिश । (२) माल की हिर्स व लालच ।" [तिर्मिज़ी : २३३९, अन अनस رضی اللہ عنہ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	बाएँ हाथ में आमाल नामे वाले

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "जिस शख्स को उस का नाम-ए-आमाल पीठ के पीछे से (बाएँ हाथ में) दिया गया, तो वह मौत को पुकारेगा और जहन्नम में दाखिल होगा।" [सूर-ए-इन्शिक़ाक : १० ता १२]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	खरबूज़ा के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "खाने से पहले खरबूज़ा का इस्तेमाल पेट को बिलकुल साफ़ कर देता है और बीमारी को जड़ से खत्म कर देता है ।" [इब्ने असाकिर : ६/१०२]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उन दोनों के दर्मियान सुलह व सफ़ाई करा दिया करो, फिर अगर उन में एक गिरोह दूसरे पर ज़ियादती करे तो ज़ियादती करने वाले गिरोह से लड़ो यहां तक के वह अल्लाह के हुक्म की तरफ़ लौट आए, फिर अगर वह ज़ियादती करने वाला रुजूअ कर ले, तो उन दोनों के दर्मियान इन्साफ़ के साथ सुलह करा दो; और इन्साफ़ करते रहा करो; बेशक अल्लाह तआला इन्साफ़ करने वालों को पसंद करता है । [सूर-ए-हुजरात :९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल رحمة الله عليه का कारनामा

इमाम अहमद बिन हम्बल رحمة الله عليه हदीस में अपने वक्त के इमाम थे, उन्हीं के ज़माने में मुअतज़िला नामी फ़िरके ने एक बड़ा फ़ितना "खल्के कुर्आन" का मसअला खड़ा किया, उस फ़िर्के का अकीदा था के कुर्आन मखलूक है ; चुनांचे उस ने अपने इस अकीदे से खलीफ-ए-वक्त मामून, मोअतसिम और वासिक को भी मुतअस्सिर कर रखा था; इमाम अहमद बिन हम्बल رحمة الله عليه उस वक्त फ़ितने से बा खबर थे लिहाज़ा उन्हों ने सख्त मुखालफ़त की और फ़र्माया के कुर्आन गैर मखलूक (यानी अल्लाह का कलाम) है । इस फ़तवे की वजह से बादशाहे वक्त ने आप के पैर में बेड़ियाँ डाल दीं और कोड़े इतने लगाए के जिस्म छल्नी हो गया, इस के बावजूद हक बात से पीछे न हटे, चुनांचे आप जुरअत व हिम्मत और हक पर रहने की वजह से फ़िरक-ए-मोअतज़िला का नाम व निशान मिट गया। इस तरह अल्लाह तआला ने उम्मत को एक बड़े फ़ितने से नजात दी। आप की वफ़ात ७७ साल की उम्र में जुमा के दिन १२ रबीउल अव्वल सन २४१ हिजरी में हुई ।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — खाने में बरकत

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र رضي الله عنه फ़र्माते हैं हम एक सौ तीस आदमी नबीए करीम ﷺ के साथ एक सफ़र में थे। साढ़ेतीन सेर आटे की रोटी पकाई गई और बकरी ज़बह कर के उस की कलेजी भूनी गई। कलेजी में इतनी बरकत हुई के हम में से हर एक को उस की बोटी पहुंची और बकरी का गोश्त दो बड़े प्याले में भर दिया गया, हम लोगों ने खूब पेट भर कर खाया, इस के बाद भी खाना बच गया ।

[बुखारी : २६१८]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — मय्यत का कर्ज़ उस के माल से अदा करना

हज़रत अली رضي الله عنه फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने कर्ज़ को वसिय्यत से पहले अदा करवाया, हांलाके तुम लोग(कुर्आने पाक में) वसिय्यत का तज़किरा कर्ज़ से पहले पढ़ते हो। [तिर्मिज़ी : २१२२]

फ़ायदा : अगर किसी शख्स ने क़र्ज़ लिया और उसे अदा करने से पहले इन्तेकाल कर गया, तो कफ़न व दफ़न के बाद माले वरासत में से सब से पहले कर्ज़ अदा करना ज़रूरी है, चाहे सारा माल उस की अदायगी में खत्म हो जाए ।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — जब कोई चीज़ गुम हो जाए

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जब तुम्हारी (सवारी) या कोई चीज़ गुम हो जाए या ऐसे वीराने में पहुँच जाओ के तुम्हारा कोई मददगार न हो और तुम किसी की मदद चाहते हो तो (तीन मर्तबा) कहो :

((يَا عِبَادَ اللّٰهِ اَعِيْنُوْنِيْ يَا عِبَادَ اللّٰهِ اَعِيْنُوْنِيْ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह के बन्दो ! मेरी मदद करो। तो अल्लाह तआला के (फ़रिश्ते) ऐसे बन्दे हैं, जिन्हें हम नहीं देखते (वह मदद करते हैं।) [मुअजमुल कबीर : १३७३७, अन उत्बा बिन गज़वान ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | अल्लाह को याद करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला क़यामत के दिन फ़र्माएगा के दोज़ख से हर उस (मोमिन) शख्स को निकाल लो, जिस ने मुझे कभी याद किया हो, या किसी जगह मुझ से डरा हो।" [तिर्मिज़ी : २५९४, अन अनस ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | सरगोशी करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐसी सरगोशी (खुफ़िया मशवरा) सिर्फ़ शैतान की तरफ़ से है जो के मुसलमानों को रंज में मुब्तला कर दे और वह अल्लाह की मशिय्यत व इरादे के बगैर मुसलमानों को कुछ भी नुकसान नहीं पहुँचा सकता और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। [सूर-ए-मुजादला : १०]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया का नफ़ा वक्ती है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ लोगो ! तुम्हारी नाफ़र्मानी और बगावत का वबाल तुम ही पर पड़ने वाला है, दुनिया की ज़िंदगी के सामान से थोड़ा फ़ायदा उठालो, फिर तुम को हमारी तरफ़ वापस आना है, तो हम उन सब कामों की हकीकत से तुम को आगाह कर देंगे जो तुम किया करते थे। [सूर-ए-यूनुस : २३]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | जन्नत का अंगूर

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मेरे सामने जन्नत पेश की गई तो मैं ने तुम्हें दिखाने के लिए अंगूर का एक गुच्छा लेना चाहा, तो मेरे और उस खोशे के दर्मियान आड़ कर दी गई, किसी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ﷺ ! अंगूर का दाना कितना बड़ा है? तो आप ﷺ ने फ़र्माया: एक बड़े डोल के बराबर है।" [अबू यअ्ला अलमूसली : ११०९, अन अबी सईद अल खुदरी ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | इस्मिद से आँखो का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम्हारे सुर्मों में सब से बेहतर सुर्मा "इस्मिद" है जो आँखो की रौशनी को बढ़ाता है और पल्कों के बाल को उगाता है।" [अबू दाऊद : ३८७८, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने सात चीज़ों का हुक्म दिया और वह यह हैं, (१) मरीज़ की इयादत करना। (२) जनाज़े के पीछे जाना। (३) छींकने वाले को ((يَرْحَمُكَ اللهُ)) यानी उस की छींक का जवाब देना। (४) कमज़ोर की मदद करना। (५) मज़लूम की मदद करना। (६) सलाम को फ़ैलाना। (७) कसम को पूरा करना। [बुखारी : ६२३५, अन बराअ बिन आज़िब ﷺ]
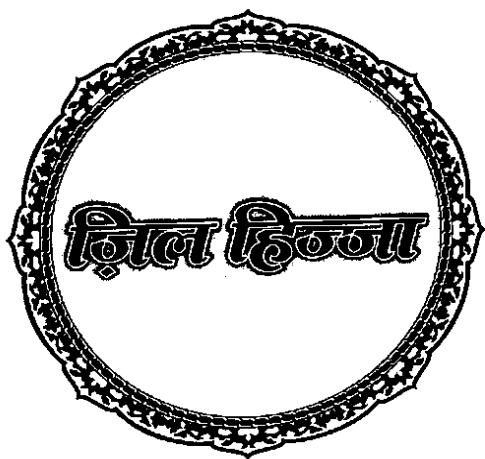
ज़िल हिज्जा

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक رحمه الله

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक رحمه الله ज़बरदस्त आलिम थे, बड़े मुहद्दिस, इल्मे फ़िकह के माहिर और मारिफ़ते इलाही में कामिल नमूना थे, आप इमाम अबू हनीफ़ा رحمه الله और सुफ़ियान सौरी رحمه الله के शागिर्द हैं। इमाम साहब और दीगर अहले इल्म की बड़ी क़द्र करते थे। आप को इल्मे हदीस से खास तअल्लुक़ था,हज़ारों तलबा ने आप के दर्स में शरीक हो कर इल्मे हदीस हासिल किया, उन की इज़्ज़त व शोहरत पर हारून रशीद जैसा ख़लीफ़ा भी रश्क करता था। इबादत व रियाज़त, ज़ुह्द व तक़्वा, आदात व अख़्लाक़ और हुस्ने मुआशरत में सहाबा के नक़्शे क़दम पर थे और सख़ावत में उन की मिसाल मुशकिल से मिलती थी, अहले इल्म हज़रात को ख़ुसूसी हदाया और तोहफ़ों से नवाज़ते थे, एक साल हज,दूसरे साल जिहाद और तीसरे साल तिजारत में मसरूफ़ रहते। और माली नफ़ा ज़रूरत मंदों पर तक़सीम कर देते, ख़ौफ़े ख़ुदा, फ़िक्रे आख़िरत , मख़लूक से बे नियाज़ी, कम दर्जे के लोगों से आजिज़ी और मालदारों से खुददारी से मिलना आप की अहेम सिफ़ात हैं, ६३ साल की उम्र पा कर सन १८१ हिजरी में वफ़ात पाई।

नंबर २ : अल्लाह की कुदरत — अंबर मछली

समुंदर में अल्लाह की बेशुमार मख़लूक मौजुद हैं। मछलियों की भी बहूत सी किस्में हैं, उन में एक मछली अंबर (Whael) भी है,वह इतनी बड़ी होती है के आसानी से पूरे इन्सान को निगल सकती है। इस मछली के पेट से एक खुश्बूदार मोमियाई माद्दा निकलता है जिसे अंबर कहते हैं जिस से कीमती दवाइयां और इत्र वगैरा तय्यार किया जाता है जब इस मछली के पेट में अंबर पैदा हो जाता है तो वह उसे क़ै (उल्टी) कर देती है। फिर वह सुमंदर के पानी पर झाग की शक्ल में तैरने लगता है। मछेरे उसे जमा कर के बाज़ार में फ़रोख्त कर देते हैं। इसी तरह लोग इस कीमती चीज़ से फ़ायदा उठाते हैं। और अल्लाह की क़ुदरत का करिशिमा देखिये के जब उस मछली की मौत का वक़्त क़रीब आता है तो वह समुंदर से निकल कर खुशकी पर आ जाती है। और वहां उस का दम निकलता है। इस तरह बग़ैर किसी परेशानी के इतनी बड़ी मछली खुद शिकार बन कर लोगों को खोराक मुहय्या कर देती है यह अल्लाह की कितनी अज़ीम क़ुदरत है।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — अल्लाह तआला सब को दोबारा ज़िन्दा करेगा

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : अल्लाह ही वह है, जिस ने तुम को पैदा किया और वही तुम्हें रोज़ी देता है फिर (वक़्त आने पर) वही तुम को मौत देगा और फिर तुम को वही दोबारा ज़िन्दा करेगा।

[सूर-ए-रूम : ४०]

फ़ायदा : मरने के बाद अल्लाह तआला दोबारा ज़िन्दा करेंगे, जिस को " बअ्स बअ्दल मौत " कहते हैं, उस के हक़ होने पर ईमान लाना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	तवाफ की दो रकात में मसनून क़िरात

हज़रत जाबिर ﷺ फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने तवाफ़ की दोनों रकातों में ﴿قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ﴾ और ﴿قُلْ يٰاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ﴾ पढ़ी है। [तिर्मिज़ी : ८६९]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	कुर्बानी जहन्नम से हिफाज़त का ज़रिया

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने खुश दिली और अपने कुर्बानी के जान्वर के बदले सवाब की निय्यत से कुर्बानी की, तो यह उस के लिए जहन्नम से रोकने का सबब बनेगा।" [मोअजमे कबीर लित्तबरानी : २६७०]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	कुर्बानी न करने पर वईद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो आदमी कुर्बानी करने की ताक़त रखता हो, उस के बावजूद कुर्बानी न करे, तो वह हमारी ईदगाह में न आए।" [मुस्तदरक लिल हाकिम : ३४६८, अन अबी हुरैरह ﷺ]

फ़ायदा : साहिबे निसाब पर कुर्बानी करना वाजिब है, अगर किसी ने कुर्बानी न की तो वह गुनहगार होगा।

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया अल्लाह को कितनी ना पसंद है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला ने कोई चीज़ ऐसी पैदा नहीं फ़र्माई, जो उस को बहुत ही ना पसंद हो सिवाए दुनिया के, के जब से इस को बनाया है आज तक इस की तरफ़ नहीं देखा।" [बैहक़ी फ़ी शोअबिलईमान : १०११०, अन मूसा बिन यसार ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़यामत के दिन बदला कुबूल न होगा

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जिन लोगों ने कुफ्र किया और कुफ्र ही की हालत में मर गए, तो ऐसे शख्स से पूरी ज़मीन भर कर भी सोना कुबूल नहीं किया जाएगा, अगरचे वह सोने की उतनी मिक़दार (अज़ाब के बदले) में ला कर हाज़िर कर दे, ऐसे लोगों के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा और उन का कोई मदद करने वाला न होगा। [सूर-ए-आले इमरान : ९१]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	ज़म ज़म के फवाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने ज़म ज़म के बारे में फ़र्माया : "यह एक मुकम्मल खोराक भी है और बीमारियों के लिए शिफ़ा बख्श भी है।" [बैहक़ी शोअबुल ईमान : ३९७३, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ इमान वालो ! जब जुमा के दिन नमाज़ के लिए अज़ान कही जाए, तो तुम अल्लाह तआला की याद (यानी खुतबा सुनने और नमाज़ पढ़ने) के लिए चल पड़ो और खरीद व फ़रोख्त (और दूसरे काम धंदे) छोड़ दिया करो, यह तुम्हारे लिए ज़ियादा बेहतर है। [सूर-ए-जुमा : ९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

② ज़िल हिज्जा

नंबर ①: इस्लामी तारीख़ — हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ رحمة الله

इमाम अबू यूसुफ़ बग़दाद में सन ११३ हिजरी में पैदा हुए, वह इमाम अबू हनीफ़ा के शागिर्दों में सब से ज़ियादा मशहूर हुए इन की फ़ज़ीलत के लिए इतनी बात काफ़ी है के उन्हों ने क़ज़ा का ओहदा संभाल कर सलतनत के निज़ाम को अदल व इन्साफ़ से भर दिया। वह ख़लीफ़ा हारून रशीद के ज़माने में वज़ीरे क़ानून और क़ाज़ियुल क़ुज़ात (Chief Justice) के ओहदे पर फ़ाइज़ हुए, उन की "किताबुल ख़िराज" मुल्की दस्तूर का एक ऐसा मजमुआ है जिस में खुल्फ़ाए अर्बा और ख़िलाफ़ते राशिदा के फ़ैस्लों को बुनियाद बनाया गया है, उन्हों ने इस किताब में ख़लीफ़ा की ज़िम्मेदारी और फ़राइज़ की अदायगी और अल्लाह के सामने जवाबदही का एहसास दिलाया। शहेरियों के फ़राइज़ बयान फ़र्माए, बैतुल माल को बादशाह की मिलकिय्यत के बजाए अल्लाह की अमानत क़रार दिया। मालदारों से ज़कात ले कर ग़रीबों पर खर्च करने का हुक्म दिया। और ना जाइज़ जिज़िया और टॅक्स लगाने से मना किया, तोहमत की बिना पर गिरफ़्तार लोगों को आज़ाद करने का हुक्म जारी किया, उन्हों ने अखलाक़ी व ईमानी जुरअत की बिना पर एक मुक़द्मे में ख़लीफ़ा के ख़िलाफ़ फ़ैसला करने में ज़रा भी दरेग़ नहीं किया। जब इन्तेक़ाल का वक़्त क़रीब आया, तो वसिय्यत फ़रमाई के चार लाख दिर्हम मक्का, मदीना, कूफ़ा व बग़दाद के ग़रीबों में तक़सीम कर दिए जाएं, फ़िर इल्म का यह सूरज सन १८२ हिजरी में हमेशा के लिए ग़ुरूब हो गया।

नंबर ②: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — कुंवे का खुश्बुदार हो जाना

रसूलुल्लाह ﷺ के पास एक डोल में पानी लाया गया, आप ﷺ ने उस में से पिया फिर कुंवें में कुल्ली कर दी, जिस के बाद कुंवें से मुश्क जैसी खुश्बू आने लगी। [बैहक़ी फ़ी दलाइलिन्नुबुव्वह : २१४]

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ छोड़ने का नुक़्सान

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस शख़्स की एक नमाज़ भी फ़ौत हो गई वह ऐसा है के गोया उस के घर के लोग और माल व दौलत सब छीन लिया गया हो।" [इब्ने हिब्बान : १४९०, अन नौफ़ल बिन मुआविया رضي الله عنه]

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — मुसीबत या खतरे को टालने की दुआ

जब किसी मुसीबत या बला का अंदेशा हो, तो इस दुआ को कसरत से पढ़े :

((حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا))

तर्जमा : हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है और वह बेहतरीन काम बनाने वाला है हम उसी पर भरोसा करते हैं। [तिर्मिज़ी : २४३१, अन अबी सईद ख़ुद्री رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	मस्जिदे नब्वी में चालीस नमाज़ों का सवाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने मेरी मस्जिद में चालीस नमाज़ें अदा कीं और कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं की, तो उस के लिए जहन्नम से बरात और अज़ाब से नजात लिख दी जाती है और निफ़ाक़ से बरी कर दिया जाता है ।" [मुस्नदे अहमद : १२१७३, अन अनस ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	तकब्बुर से दिल पर मुहर लग जाती है

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो लोग बग़ैर किसी दलील के अल्लाह तआला की आयात में झगड़े निकाला करते हैं, अल्लाह तआला और अहले ईमान के नज़दीक यह बात बड़ी क़ाबिले नफ़रत है, इसी तरह अल्लाह तआला हर मुतकब्बिर सर्कश के दिल पर मुहर लगा देता है । [सूर-ए-मोमिन : ३५]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया से राज़ी होना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : क्या तुम लोग आख़िरत की ज़िन्दगी के मुक़ाबले में दुनियाकी ज़िन्दगी पर राज़ी हो गए? दुनिया का माल व मताअ तो आख़िरत के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं । (लिहाज़ा किसी इन्सान के लिए मुनासिब नहीं है, के वह आख़िरत को भूल कर ज़िन्दगी गुज़ारे या दुनिया के थोड़े से साज़ व सामान की ख़ातिर अपनी आख़िरत को बरबाद करे) । [सूर-ए-तौबा : ३८]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	मोमिनों का पुल सिरात पर गुज़र

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया :"पुलसिरात पर मोमिनीन "रब्बि सल्लिम सल्लिम" ऐ रब! सलामती अता फ़र्मा, कहते हुए गुज़रेंगे ।" [तिर्मिज़ी : २४३२, अन मुग़ीरा बिन शोअ्बा ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मरीज़ की शिफ़ा का कामयाब नुस्ख़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस शख़्स ने किसी ऐसे मरीज़ की इयादत की जिस की मौत का वक़्त अभी नहीं आया है और उस के लिए सात मर्तबा यह दुआ की :

((اَسْاَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ، رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَنْ يَّشْفِيَكَ))

तर्जमा : तो अल्लाह तआला उसे ज़रूर शिफ़ा अता फ़र्माएंगे ।" [अबू दाऊद:३१०६,अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "लोगो ! क़ुर्बानी करो और जान्वर के ख़ून के बदले सवाब की नियत रखो, इस लिए के ख़ून अगरचे ज़मीन पर गिरता है, लेकिन हक़ीक़त में वह अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में चला जाता है।" [मुअजमुल औसत लित्तबरानी : ८५५४, अन अली ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

③ ज़िल हिज्जा

नंबर ①: इस्लामी तारीख — इमाम बुखारी رحمه الله

आप का नाम मुहम्मद और वालिद का नाम इस्माईल, आप बुख़ारा के रहने वाले थे, आप की पैदाइश इसी शहर में १३ शाबान सन १९४ हिजरी में हुई। बचपन ही में आप के वालिदे मोहतरम का साया सर से उठ गया और तालीम व तरबियत के लिये सिर्फ़ वालिदा का सहारा रह गया, बचपन ही में उन की बीनाई चली गई थी, वालिदा को बहुत सदमा था और बारगाहे इलाही में आह व ज़ारी करती थीं, एक रात हज़रत इब्राहीम عليه السلام को ख़्वाब में देखा, फ़र्मा रहे थे के तेरी दुआ क़बूल हुई, सुबह देखा तो बेटे की आँखों में रौश्नी लौट आई थी, आप बड़े ज़हीन व फ़तीन थे, बचपन ही से हदीस सुनने का बे इन्तेहा शौक़ था। इस के लिये बहुत सारे ममालिक का सफ़र किया, कोई हदीस सुनते तो फ़ौरन याद कर लेते; चुनान्चे ख़ुद फ़र्माते थे के मुझे एक लाख सही अहादीस और दो लाख इस के अलावा याद हैं। इसी शौक़ व जज़्बे की बिना पर अल्लाह तआला ने आप को वह दिन दिखाया के लोग आप को अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीस के लक़ब से याद करने लगे। आप ने तक़रीबन २३ किताबें लिखीं हैं, जिन में सब से बुलन्द पाया तसनीफ़ "सही बुख़ारी" है। आप ने इस किताब को लिखने में तक़वा व तहारत का बे इन्तेहा एहतेमाम किया के जब एक हदीस लिखने का इरादा फ़र्माते तो पहले गुस्ल करते, दो रकात नमाज़ पढ़ते फिर उस के बाद एक हदीस तहरीर फ़र्माते, इसी तरह सोला साल की मुद्दत में यह किताब मुकम्मल हुई, जिस को असह्हुल कुतुब बाद किताबिल्लाह का दर्जा हासिल हुआ, और यह अहादीस के ज़ख़ीरों में सब से ज़ियादा सही तरीन किताब मानी गई है, इमाम बुख़ारी ने १० शव्वाल सन २५६ हिजरी में बाद नमाज़ इशा इन्तेक़ाल फ़र्माया।

नंबर ②: अल्लाह की कुदरत — हीरा और कोयला

अल्लाह तआला की कुदरत देखिए उस ने ज़मीन के अंदर बहुत सी धात पैदा कर दी है, उन में से पत्थर की शक्ल में हीरा और कोयला भी निकलता है। साइंस दानों का कहना है के हीरा और कोयला एक ही जिन्स की दो अलग अलग शक्लें हैं, मगर वह हकीकत में कार्बन (Corbon) हैं। वह कौन सी ज़ात है जो कार्बन जैसी चीज़ को कभी हीरे की शक्ल दे कर रौशन और चमकदार बना देती है और कभी कोयला की शक्ल दे कर उसे सियाह और बद सूरत बना देती है। यकीनन अल्लाह ही की ज़ात है जो एक जिन्स की चीज़ों को मुख्तलिफ़ शक्लों में तब्दील कर देती है।

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — शौहर के भाइयों से पर्दा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "ना महरम" औरतों के पास आने जाने से बचो ! एक अन्सारी सहाबी ने अर्ज़ किया : देवर के बारे में आप क्या फ़र्माते हैं? तो आप ﷺ ने फ़र्माया : "देवर तो (तुम्हारे लिए) मौत है" (यानी जिस तरह मौत से डरा जाता है, उसी तरह शौहर के भाइयों से डरना चाहिए और पर्दे का एहतेमाम करना चाहिए)।

[बुख़ारी : ५२३२, अन उक़्बा बिन आमिर رضي الله عنه]

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — रुकू में हाथों को गुठनों पर रखना

रसूलुल्लाह ﷺ रुकू फ़र्माते, तो अपने हाथों को गुठनों पर रखते ऐसा लगता था जैसे उन को पकड़ रखा होऔर दोनों हाथों को मोड़ कर पहलुओं से अलग रखते थे। [तिर्मिज़ी : २६०, अन अबी हुमैद साअदी رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	खान-ए-काबा को देख कर दुआ मांगना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "चार मौकों पर आस्मान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और दुआ कबूल होती है, उन में से एक काबा शरीफ़ पर नज़र पड़ते वक्त (दुआ करना) है।"

[बैहकी फ़िस्सुननिल कुबरा : ३/३६०, अन अबी उमामा ؓ]

फ़ायदा : सब से पहले काबा पर जहां से नज़र पड़ जाए, हाथ उठाए फ़िर दुआ मांगे, क्यों कि यह दुआ की कबूलियत का खास वक्त है ।

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	ज़मीन नाहक लेने का अज़ाब

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने किसी दूसरे की ज़रा सी ज़मीन भी नाहक लेली, उस को कयामत के रोज़ सातवीं जमीन तक धंसा दिया जाएगा।" [बुखारी : २४५४, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	सब से ज़ियादा खौफ़ की चीज़

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मुझे तुम पर सब से ज़ियादा खौफ़ इस बात का है के कहीं अल्लाह तआला तुम पर ज़मीन की बरकात को ज़ाहिर न कर दे", पूछा गया के ज़मीन की बरकात से क्या मुराद है ? रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दुनिया की रंगीनी, इस की खूबसूरती और ज़ेब व ज़ीनत।"

[बुखारी : ६४२७, अन अबी सईद अल खुदरी ؓ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	अल्लाह और रसूल ﷺ की इताअत का बदला

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो शख्स अल्लाह और उस के रसूल के हुक्म पर चलेगा, तो अल्लाह तआला उस को ऐसे बागों में दाखिल करेगा, जिन के नीचे नहरें बहती होंगी । वह हमेशा उन बागों में रहेंगे और यही बहुत बड़ी कामयाबी है । [सूर-ए-निसा : १३]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	जिन के असरात से हिफ़ाज़त

हज़रत खालिद बिन वलीद ؓ ने अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के रसूल ! मुझे एक मक्कार जिन परेशान करता है, तो आप ﷺ ने फ़र्माया : यह कलिमात कहो :

((اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ الَّتِيْ لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّلَا فَاجِرٌ مِنْ شَرِّ مَا ذَرَأَ فِي الْاَرْضِ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا، وَمِنْ شَرِّ مَا يَعْرُجُ فِي السَّمَاءِ وَمَا يَنْزِلُ مِنْهَا وَمِنْ شَرِّ كُلِّ طَارِقٍ اِلَّا طَارِقًا يَطْرُقُ بِخَيْرٍ يَا رَحْمٰنُ))

चुनांचे वह सहाबी ؓ कहते हैं के मैं ने यह अमल किया, तो अल्लाह तआला ने मेरी वह परेशानी खत्म कर दी । [कंज़ुल उम्माल : २८५३९]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह की जानिब मन्सूब चीज़ों की बेहुर्मती न करो और न अदब वाले महीने की और न उन कुर्बानियों की जिन के गले में कलादा (यानी कुर्बानी की अलामत के पट्टे पड़े हों) और उन लोगों की भी बेअदबी न करना जोअल्लाह का फ़ज़ल और उस की रज़ामंदी तलब करने बैतुल्लाह जा रहे हों । [सूर-ए-माइदा : २]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

④ ज़िल हिज्जा

नंबर ①: इस्लामी तारीख — इमाम मुस्लिम رحمه الله

आप का इस्मे गिरामी मुस्लिम बिन हज्जाज और कुनिय्यत अबुल हसन थी। आप की विलादत बा सआदत सन २०४ हिजरी में अरब के मशहूर क़बीला बनू कुशौर में हुई, इब्तेदाई तालीम अपने वतन नीसापूर में हासिल की जब कुछ बड़े हुए तो इल्म के लिये दूसरे ममालिक मक्का, कूफ़ा, इराक़, मिस्र वग़ैरा का सफ़र शुरू किया और वहाँ जा कर बड़े बड़े मुहद्दिसीन की मजलिसों में शिर्कत की और अपनी इल्मी प्यास बुझाने लगे, यहाँ तक के लोग आप को वक़्त की चंद जलीलुलक़द्र हस्तियों में शुमार करने लगे, आप ने अलग अलग फ़न में कई किताबें लिखी हैं, जिन में से हदीस शरीफ़ की एक किताब "सही मुस्लिम" है, जिस को शुरू दिन से वह मक़ाम व मर्तबा और कुबूलियत हासिल हुई के इस का शुमार कुतुबे सित्ता की सही तरीन किताबों में होने लगा, रहती दुनिया तक के तमाम इन्सानों बिलख़ुसूस मुसलमानों के लिये यह किताब अज़ीमुश्शान तोहफ़ा है, जो अपनी हुस्ने तरतीब में बे मिसाल और सेहत में ला जवाब है, इस में तक़रीबन चार हज़ार हदीसें हैं, जिस को इमाम मुस्लिम नें तीन लाख हदीसों में से छान कर लिखा है, २५ रजबुल मुरज्जब इतवार के दिन सन २६१ हिजरी में अपने वतन नीसापूर में इन्तेक़ाल फर्माया।

नंबर ②: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — कंधे का अच्छा हो जाना

एक ग़ज़्वे में हज़रत खुबैब बिन यसाफ़ رضي الله عنه को कंधे और गर्दन के बीच में तलवार लगी, जिस की वजह से वह हिस्सा लटक पड़ा, वह आप ﷺ के पास आए तो हुज़ूर ﷺ ने उस हिस्से पर अपना लुआबे मुबारक (थूक) लगाया और फिर उस को जोड़ा, तो वह चिपक कर ठीक हो गया।

[बैहकी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : २४२७]

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़े अस्र की अहेमियत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस शख़्स ने अस्र की नमाज़ छोड़ दी, तो उस का अमल ज़ाए हो गया।"

[बुखारी : ५५३, अन बुरैदा رضي الله عنه]

फ़ायदा : दिन और रात में तमाम मुसलमानों पर पाँचों नमाज़ों को अदा करना तो फ़र्ज़ है ही, लेकिन खास तौर से अस्र की नमाज़ छोड़ने वालों के हक में रसूलुल्लाह ﷺ का वईद बयान फ़र्माना इस की अहेमियत को और बढ़ा देता है।

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — इस्मे आज़म के साथ दुआ करना

हज़रत आयशा رضي الله عنها फ़र्माती हैं : मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना के आप ﷺ ने फ़र्माया : जब इन कलिमात (इस्मे आज़म) ((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ بِاسْمِكَ الطَّاهِرِ الطَّيِّبِ الْمُبَارَكِ الْأَحَبِّ إِلَيْكَ)) से दुआ की जाती है, तो कबूल होती है, जब सवाल किया जाता है, तो अता किया जाता है जब रहम की दुआ की जाती है, तो रहम किया जाता है, जब मुसीबत से नजात मांगी जाती है, तो नजात हासिल होती है।

[इब्ने माजा : ३८५९]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | रास्ते से तकलीफ़ देह चीज़ को हटाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "एक आदमी का इन्तेकाल हो गया, उस ने कोई नेकी नहीं की थी, हां! सिर्फ़ उस ने रास्ते से कांटे की टहनी उठा कर फेंकी थी या (रास्ते पर) कोई दरख़्त था जिसे उस ने काट डाला था और उसे किनारे डाल दिया था, अल्लाह तआला ने उसे इस के बदले में जन्नत में दाख़िल कर दिया।" [अबू दाऊद : ५२४५, अन अबी हुरैरह ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | कुफ़्र व ना फ़र्मानी की सज़ा

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो शख़्स मुंह मोड़ेगा और कुफ़्र करेगा, तो अल्लाह तआला उस को बड़ा अज़ाब देगा फिर उन को हमारे पास आना है। फिर हमारे ज़िम्मे उन का हिसाब लेना है। [सूर-ए-गाशिया : २३ ता २६]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | काफ़िरों के माल से तअज्जुब न करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम उन (काफ़िरों) के माल और औलाद से तअज्जुब में मत पड़ना, क्यों कि अल्लाह तआला दुनिया ही की ज़िंदगी में उन काफ़िरों को अज़ाब में मुब्तला करना चाहता है और जब उन की जान निकलेगी, तो कुफ़्र की हालत में मरेंगे। [सूर-ए-तौबा : ५५]

खुलासा : काफ़िरों को माल व औलाद जो दी जाती हैं, उन की ज़ियादती से किसी को तअज्जुब नहीं होना चाहिए, क्योंकि उन्हें अल्लाह तआला उन चीज़ों के ज़रिए उन की ना फ़र्मानी और बगावत की वजह से अज़ाब देना चाहता है।

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | काफ़िरों की हालत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "काफ़िर अपनी ज़बान को एक या दो फ़रसख़ (यानी तक़रीबन बारा किलो मीटर) तक ज़मीन पर घसीटते हुए चलेगा, लोग उस को रौंदते हुए उस पर चलेंगे।" [तिर्मिज़ी : २५८०, अन इब्ने उमर ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | ऑपरेशन से फोड़े का इलाज

हज़रत अस्मा बिन्ते अबी बक्र ؓ कहती हैं के मेरी गर्दन में एक फोड़ा निकल आया, जिस का ज़िक्र हुज़ूर ﷺ से किया गया, तो आप ﷺ ने फ़र्माया : "उसे खोल दो (फोड़ दो) और छोड़ो मत, वरना गोश्त खाएगा और ख़ून चूसेगा, (यानी उस का ख़राब माद्दा अगर वक़्त पर न निकाला गया तो ज़ख़्म को और ज़ियादा बढ़ा कर गोश्त और ख़ून को बिगाड़ता रहेगा)।" [मुस्तदरक हाकिम : ८२५०]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "ऐ नौजवानों की जमात! तुम में से जो नान व नफ़्क़ा की ताक़त रखता हो उसे ज़रूर शादी कर लेना चाहिए इस लिए के यह आँख और शर्मगाह की हिफ़ाज़त का ज़रिया है और जो इस की ताक़त नहीं रखता, तो उसे चाहिए के रोज़ा रखे, इस लिए के यह उस की शहवत को कम करने में मोअस्सिर है।" [बुख़ारी : ५०६६, अन अब्दुल्लाह ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(५) ज़िल हिज्जा

नंबर (१): इस्लामी तारीख — इमाम अबू दाऊद رحمه الله

आप का नाम सुलेमान और वालिद का नाम अशअस था, अबू दाऊद आप का शुरू ही से लक़ब था, आप की विलादत बा सआदत सन २०२ हिजरी में शहर "सजिस्तान" में हुई। आप ने इल्म हासिल करने के लिए मिस्र, जज़ीरा, इराक़ और खुरासान वग़ैरा के सफ़र किए, आप बड़े बड़े हुफ़्फ़ाज़े हदीस और फ़ुकहा में से एक हैं, लेकिन फ़न्ने हदीस में आप का एक खास मकाम है, आप की शान में यह कहा जाता है के आप के लिये, हदीसें इसी तरह आसान और सहल कर दी गई थीं, जिस तरह हज़रत दाऊद عليه السلام के लिए लोहे को नर्म कर दिया गया था और बाज़ उलमा फ़र्माते हैं के इमाम अबू दाऊद दुनिया में हदीस के लिए और आखिरत में जन्नत के लिए पैदा किये गए हैं और हम ने उन से अच्छा और अफ़ज़ल किसी को नहीं देखा। आप ने बेशुमार किताबें लिखीं, जिन में बलंद पाया किताब "सुनने अबी दाऊद" है, जो चार हज़ार आठ सौ हदीस पर मुश्तमिल है, आप खुद फ़र्माते हैं के मैं ने आप ﷺ की पाँच लाख हदीसों में से चार हज़ार आठ सौ हदीस इस किताब में लिखा है। आप की वफ़ात बसरा में १६ शव्वाल सन २७५ हिजरी को हुई।

नंबर (२): अल्लाह की क़ुदरत — बिजली कूंदना

बारिश के आने से पहले आस्मान पर तह ब तह बादल जमा होना शुरू हो जाते हैं, लेकिन अल्लाह की कुदरत का तमाशा देखिये के इन बादलों में न कोई मशीन फिट होती है और न ही किसी किस्म का कोई जनरेटर लगा होता है, मगर इन घने बादलों में अल्लाह बिजली की, ऐसी चमक और कड़क पैदा कर देता है के रात की तारीकी में भी उजाला फैल जाता है और कभी कभी इत्नी सख़्त गरजती और बिजली कूंदती है के दिलों में घब्राहट और सारे माहौल में खौफ़ तारी हो जाता है। बेशक यह अल्लाह तआला की कुदरत की दलील है ?

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नेकियों का हुक्म देना और बुराइयों से रोकना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "कसम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, के तुम ज़रूर बिज़्ज़रूर भलाइयों का हुक्म करो और बुराइयों से रोको, वरना क़रीब है के अल्लाह तआला गुनेहगारों के साथ तुम पर अपना अज़ाब भेज दे, उस वक्त तुम अल्लाह तआला से दुआ मांगोगे तो क़बूल न होगी।" [तिर्मिज़ी : २१६९, अन हुज़ैफ़ा رضي الله عنه]

फ़ायदा : नेकियों का हुक्म देना और बुराइयों से रोकना उम्मत के हर फ़र्द पर अपनी हैसियत और ताक़त के मुताबिक़ लाज़िम और ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — इमामा का शम्ला छोड़ना

रसूलुल्लाह ﷺ जब इमामा बांधते, तो उस का शम्ला अपने दोनों कांधों के दर्मियान छोड़ देते। [तिर्मिज़ी : १७३६, अन अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | अच्छे अखलाक़ वाले का मर्तबा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "यक़ीनन मोमिन अपने अच्छे अखलाक़ के ज़रिए, नफ़्ल नमाज़ें पढ़ने वाले रोज़ेदार शख्स के मर्तबे को हासिल कर लेता है।" [अबू दाऊद : ४७९८, अन आयशा ﵂]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | नमाज़ से मुंह मोड़ना

मेअ्राज की रात रसूलुल्लाह ﷺ का गुज़र ऐसे लोगों पर हुआ जिन के सरों को कुचला जा रहा था, जब सर कुचल दिया जाता तो दोबारा फिर अपनी हालत पर लौट आता, फिर कुचल दिया जाता, इस अज़ाब में ज़र्रा बराबर कमी नहीं होती थी, हुज़ूर ﷺ ने हज़रत जिब्राईल ﷺ से पूछा : यह कौन लोग हैं? हज़रत जिब्राईल ﷺ ने जवाब में फ़र्माया : यह वह लोग हैं जिन के चेहरे नमाज़ के वक़्त भारी हो जाते थे, (यानी नमाज़ से मुंह चुराते थे)। [अत्तरग़ीब वत्तरहीब : ७९५, अन अबी हुरैरह ﵁]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया से बे रग़बती

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स दुनिया में रग़बत करेगा और इस में लम्बी लम्बी उम्मीदें बांधेगा, अल्लाह तआला उस के दिल को दुनिया में रग़बत के हिसाब से अंधा करेगा और जो शख्स दुनिया से बे रग़बती करेगा और अपनी उम्मीदों को कम करेगा, अल्लाह तआला उस को बग़ैर सीखे इल्म अता करेगा और बग़ैर किसी की रहनुमाई के हिदायत अता फ़र्माएगा।"

[कंज़ुल उम्माल : ६१९१, अन इब्ने अब्बास ﵁]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | ईमान वालों का ठिकाना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : इन (ईमान वालों) के लिए हमेशा रहने वाले बाग़ हैं, जिन में वह दाख़िल होंगे और उन के माँ बाप, उन की बीवियों और उन की औलाद में जो (जन्नत) के लायक़ होंगे, वह भी जन्नत में दाख़िल होंगे और हर दरवाज़े से फरिश्ते उन के पास यह कहते हुए दाख़िल होंगे : तुम्हारे दीन पर मज़बूत जमे रहने की बदौलत तुम पर सलामती हो, तुम्हारे लिए आख़िरत का घर कितना उम्दा है! [सूर-ए-रअ्द : २३ ता २४]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | फ़ासिद ख़ून का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "बेहतरीन दवा हजामत (पछना लगाना) है, क्यों कि वह फ़ासिद ख़ून को निकाल देती है, निगाह को रौशन और कमर को हल्का करती है।"

[मुस्तदरक : ८२५८, अन इब्ने अब्बास ﵁]

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : मांगने वाले को, नर्मी से जवाब दे देना और उस को माफ़ कर देना उस सद्क़ा व खैरात से बेहतर है जिस के बाद तकलीफ़ पहूंचाई जाए। अल्लाह तआला बड़ा बेनियाज़ और ग़ैरतमंद है। [सूर-ए-बक़रह : २६३]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

६ ज़िल हिज्जा

नंबर (१): इस्लामी तारीख — इमाम तिर्मिज़ी رحمة الله عليه

आप رحمة الله عليه का इस्मे गिरामी मुहम्मद बिन ईसा कुन्नियत अबू ईसा थी, आप सन २०० हिजरी के क़रीब जैहून नामी समुंदर के साहिली इलाक़े के "तिर्मिज़" नामी गांव में पैदा हुए, वालिदैन के साय-ए-आतिफ़त में पले बढ़े और फिर इल्मे नब्वी हासिल करने की खातिर समुंदर के उस पार खुरासान इराक और हरमैन शरीफ़ैन का सफ़र किया और वहां के उलमा से खूब इस्तिफ़ादा किया अल्लाह ने ग़ज़ब का हाफ़ज़ा दिया था, जिस की मज्लिस में भी जाते उस मज्लिस में बयान की गई सारी रिवायतें पहली बार में हिफ़्ज़ कर लेते, बाद में आप ने हदीस की एक ऐसी किताब लिखी जिस ने एक इन्क़िलाब बर्पा कर दिया और उस की जामिइय्यत और हमा गीरी ने लोगों को बिलखुसूस उलमा की अक़्ल को हैरान कर दिया । इस में सीरत, आदाब, तफ़सीर, अकाइद, अहकाम, फ़ितनों, क़यामत की निशानियों और सहाबा के फ़ज़ाइल का ज़िक्र किया गया है, यही वह किताब है जिस को हम और आप "जामे तिर्मिज़ी" के नाम से जानते हैं, इमाम तिर्मिज़ी फ़र्माते हैं मैं ने अपनी यह किताब हिजाज़ इराक़ और खुरासान के उलमा के सामने पेश की, तो वह लोग बहुत खुश हुए । एक मर्तबा फ़र्माया : जिस के घर में मेरी किताब होगी समझो उस के घर में नबी है, जो बात करते हैं । अखीर उम्र में आप की बीनाई चली गई, आप رحمة الله عليه ने १३ रज्जब सन २७९ हिजरी को इन्तेक़ाल फ़र्माया।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — बकरियों का अपने अपने मालिक के पास चले जाना

खैबर में आप ﷺ किसी क़िले से लड़ रहे थे, इतने में एक बकरियां चराने वाला आया और इस्लाम क़ुबूल कर लिया और फिर कहने लगा : या रसूलल्लाह ﷺ ! इन बकरियों को मैं क्या करूं? तो आप ﷺ ने फ़र्माया : "तु इन के मुंह पर कंकरियां मार दे! अल्लाह तेरी अमानत अदा कर देगा और इन सब बकरियों को अपने अपने घर पहुंचा देगा" चुनांचे उस शख्स ने ऐसा ही किया, तो वह सब बकरियां अपने अपने घर पहुंच गईं।

[बैहक़ी फ़ी दलाइलिन्नुबुव्वह : १५६३]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — हज की फ़र्ज़ियत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "ऐ लोगो ! तुम पर हज फर्ज कर दिया गया है, लिहाजा उस को अदा करो।"

[मुस्लिम : ३२५७, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — आमाल की कुबूलियत की दुआ

आमाल क़ुबूल होने के लिए इस दुआ का एहतेमाम करना चाहिए :

﴿ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ۖ إِنَّكَ أَنتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴾

तर्जमा : ऐ हमारे पर्वरदिगार ! हमारे आमाल और दुआओं को अपने फ़ज़ल से क़ुबूल फ़र्माइए । बेशक आप सुनने वाले और जानने वाले हैं।

[सूर-ए-बक़रा : १२७]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	यतीम के सर पर हाथ फेरना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब कोई शख़्स सिर्फ़ अल्लाह की खुश्नूदी के लिए यतीम के सर पर हाथ फ़ेरता है, तो अल्लाह तआला हर बाल के बदले में नेकियां अता फ़र्माता है और जो यतीम के साथ अच्छा बर्ताव करेगा, मैं और वह जन्नत में दो उंगलियों की तरह होंग।" हुज़ूर ﷺ ने शहादत और बीच की उंगली को फैला कर बताया।

[मुस्नदे अहमद : २१६४९, अन अबी उमामा ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	दीन को झुटलाना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : मैं ने तुम को एक भड़कती हुई आग से डरा दिया है। उस में वही बद बख़्त दाखिल होगा जिस ने (दीन को) झुटलाया और उस से मुंह मोड़ा।

[सूर-ए-लैल : १४ ता १६]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	नाफर्मानी और बग़ावत का वबाल

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ लोगो ! तुम्हारी ना फ़र्मानी और बग़ावत का वबाल तुम ही पर पड़ने वाला है, दुनिया की जिन्दगी के सामान से थोड़ा फ़ायदा उठा लो, फिर तुम को हमारी तरफ़ वापस आना है, तो हम उन सब कामों की हक़ीक़त से तुम को आगाह कर देंगे। जो तुम किया करते थे।

[सूर-ए-यूनुस : २३]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जन्नत का बाज़ार

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जन्नत में एक बाज़ार है, जिस में खरीद व फ़रोख़्त नहीं है, उस में सिर्फ़ मर्द और औरतों की सूरतें हैं, उन को देख कर जब आदमी किसी शक्ल की तमन्ना करेगा, (के मैं भी इस जैसा होता) तो उस की शक्ल वैसी ही हो जाएगी।"

[तिर्मिज़ी : २५५०, अन अली ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	ज़ुकाम का फौरी इलाज न किया जाए

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हर इन्सान के सर में ज़ुज़ाम (कोढ़) की जोश मारने वाली एक रग होती है जब वह जोश मारती है,तो अल्लाह तआला उस पर ज़ुकाम मुसल्लत कर देता है, लिहाज़ा ज़ुकाम का इलाज मत करो।"

[मुस्तद्रक : ८२६२, अन आयशा ؓ]

फ़ायदा : हुकमा हज़रात भी ज़ुकाम का फ़ौरी इलाज बेहतर नहीं समझते, बल्के कुछ दिनों के बाद इलाज करने का मश्वरा देते हैं।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "गुस्सा शैतान के असर से होता है, शैतान की पैदाइश आग से हुई है, और आग पानी से बुझाई जाती है, लिहाज़ा जब तुम में से किसी को गुस्सा आए तो उस को चाहिए के वुज़ू कर ले।"

[अबू दाऊद : ४७८४, अन अतिय्या ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

⑦ ज़िल हिज्जा

नंबर ①: इस्लामी तारीख — इमाम नसई رحمة الله

आप رحمة الله का नाम अहमद बिन शुऐब कुन्नियत अबू अब्दुर्रहमान है, आप खुरासान के "नसा" नामी शहर में सन २१५ हिजरी में पैदा हुए, इब्तिदाई तालीम अपने शहर में हासिल की और फिर अपनी इल्मी प्यास बुझाने के लिए अपने शहर से निकल कर खुरासान, हिजाज़, मिस्र, इराक़, जज़ीरा और शाम का सफ़र किया और फिर मिस्र को अपना वतन बना लिया, वहीं दीन की इशाअत और तदरीसे हदीस में लगे रहे और इतनी शोहरत पाई के उस ज़माने में मिस्र में उन के बराबर कोई न था। आप ने हदीस की कई किताबें लिखीं जिन में से आप की किताब "अलमुजतबा" जो हमारे और आप के दर्मियान नसई शरीफ़ के नाम से मशहूर है "अस्सुननुलकुब्रा" का इखतिसार है, इमाम नसई एक तरफ़ हदीस में माहिर थे, तो दुसरी तरफ़ फ़िक़्हे हदीस और रावियों को परखने और जांचने में लासानी थे, जिस का अंदाज़ा आप की किताब "अलमुजतबा" से होता है, के आप एक ही हदीस को बार बार लाते हैं और अलग अलग मसाइल का इस्तिम्बात करते हैं। इस के साथ साथ आप बड़े आबिद व ज़ाहिद थे, रातों को इबादत करना आप का मामूल था जीकादा सन ३०२ हिजरी में आप मिस्र से निकले और फ़लस्तीन पहूंचे, पीर के दिन सन ३०३ हिजरी में आप की वफ़ात हुई।

नंबर ②: अल्लाह की कुदरत — मुखतलिफ तरीके से पानी का उतरना

अल्लाह तआला की कुदरत भी बड़ी अजीब है के कभी बगैर किसी बादल के शबनम की शकल में पानी उतार देता है, जिस के ज़रिए हर चीज़ नम और तर हो जाती है और सूरज की गर्मी और तपिश से हिफ़ाज़त हो जाती है और कभी शदीद बारिश बरसा कर हलाकत व तबाही का माहौल पैदा कर देता है और कभी बर्फ़ और ओले बरसा कर सख़्त सर्दी का समाँ पैदा कर देता है। और बरफ़ीले पहाड़ और हसीन वादियां अल्लाह की कुदरत की हम्द व सना में मसरूफ़ हो जाते हैं, आस्मान से शबनम, बारिश, बर्फ़ व ओले बरसा कर मौसमों को बदलना अल्लाह की कुदरत की ज़बरदस्त दलील है।

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — आप ﷺ की आखरी वसिय्यत

रसूलुल्लाह ﷺ ने आखरी वसिय्यत यह इर्शाद फ़र्माई : "नमाज़ों को (पाबंदी से पढ़ते रहा करो) और अपने गुलामों (और नौकरों) के बारे में अल्लाह तआला से डरो" यानी उन के हुक़ूक़ अदा करो।

[अबू दाऊद : ५१५६, अन अली رضي الله عنه]

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — कुर्ते की आस्तीन गट्टों तक होना

रसूलुल्लाह ﷺ के कुर्ते की आस्तीन गट्टों तक होती थी। [अबू दाऊद : ४०२७, अन अस्मा बिन्ते यज़ीद رضي الله عنها]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अरफ़ा के दिन रोज़ा रखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अरफ़ा के दिन का रोज़ा रखना एक साल अगले एक साल पिछले गुनाहों को माफ़ करा देता है।" [सही इब्ने ख़ुज़ैमा : ३०१४]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	नमाज़ दिखलावे के लिये पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स नमाज़ को इस लिए पढ़े ताके लोग उसे देखें और जब तन्हाई में जाए, तो नमाज़ ख़राब पढ़े, तो यह ऐसी ख़राब बात है, जिस के ज़रिए वह अल्लाह की तौहीन कर रहा है।" [बैहक़ी : २/२९०, अन इब्ने मसऊद ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया से बचो

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "यह दुनिया मेरे सामने ज़ाहिर हुई, तो मैं ने उस से कहा : तु मुझ से दूर हट जा, फ़िर वह जाते हुए कहने लगी : आप ﷺ तो मुझ से बच गए हैं, मगर आप ﷺ के बाद आने वाले मुझ से न बच सकेंगे।" [बैहक़ी फ़ी शोअबिलईमान : १०१२८, अन अबी बक्र सिद्दीक़ ؓ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	ईमान वालों का नूर

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जिस दिन ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतों को देखोगे के उन का नूर (ईमान)उन के आगे और उन के दाहनी तरफ़ दौड़ता होगा, (उन से कहा जाएगा) आज तुम को ऐसे बाग़ों की ख़ुशख़बरी दी जाती है जिन के नीचे नहरें जारी हैं, वह उन बाग़ों में हमेशा रहेंगे। (यह नूरे बशारत) ही बड़ी कामयाबी है। [सूर-ए-हदीद : १२]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	आसेबी असरात का इलाज

हज़रत अबू लैला ؓ फ़र्माते हैं के मैं ख़िदमते नब्वी में हाज़िर था के एक देहाती आया और कहने लगा : मेरे भाई को तकलीफ़ है। आप ﷺ ने दरयाफ़्त फ़र्माया : "क्या तकलीफ़ है"? उस ने कहा : कुछ असरात हैं। आप ﷺ ने फ़र्माया : "उसे मेरे पास लाओ"। चुनांचे लाया गया, तो हुज़ूर ﷺ ने चंद आयतें पढ़ कर दम फ़र्मा दीं, जिस से वह बिल्कुल ठीक हो गया। वह आयतें यह हैं : सूर-ए-फ़ातिहा, शुरू सूर-ए-बक़रा की चार आयतें और दर्मियान की दो आयतें और وَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ आयतुलकुर्सी और सूर-ए-बक़रा की आख़री तीन आयतें और सूर-ए-आले इम्रान की एक आयत شَهِدَ اللَّهُ और सूर-ए-आराफ़ की एक आयत إِنَّ رَبَّكُمُ और सूर-ए-मोमिनून की एक आयत وَمَن يَدْعُ مَعَ اللَّهِ और सूर-ए-जिन की एक आयत وَأَنَّهُ تَعَالَىٰ और शुरू सूर-ए-साफ़्फ़ात की दस आयतें और सूर-ए-हश्र की आख़री तीन आयतें फिर قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ، قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ और قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ। [इब्ने माजा : ३५४९]

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत	

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : तुम गवाही मत छुपाया करो और जो शख़्स इस (गवाही) को छुपाएगा, तो यक़ीनन उस का दिल गुनेहगार होगा और अल्लाह तआला तुम्हारे कामों को ख़ूब जानता है। [सूर-ए-बक़रह : २८३]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

८ ज़िल हिज्जा

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — इमाम इब्ने माजा رحمة الله عليه

आप رحمة الله عليه का नाम मुहम्मद और कुनिय्यत अबू अब्दुल्लाह वालिद का नाम यज़ीद बिन अब्दुल्लाह बिन माजा क़ज़्वीनी है। जद्दे अमजद की तरफ़ निस्बत करते हुए इब्ने माजा कहा जाता है। आप २०९ हिजरी में इराक़ के मशहूर शहर क़ज़वीन में पैदा हुए। इब्ने माजा ने इल्मे हदीस व तफ़सीर और तारीख़ में महारत हासिल करने के लिये मुख़्तलिफ़ ममालिक का सफ़र किया और माहिरीन उलमा और असातिज़ा से इल्म हासिल कर के फ़न के इमाम बन गए। उन्होंने हदीस व तफ़सीर और तारीख़ में बहुत सी मुफ़ीद किताबें लिखी हैं, मगर उन में सब से ज़ियादा मशहूर किताब "सुनन इब्ने माजा" है। जो "सिहाहे सित्ता" यानी हदीस की छ मशहूर किताबों में से एक है। जिस में चार हज़ार हदीसों को बयान किया गया है। उन की यह किताब हुस्ने तरतीब और बिला तकरार अहादीस और दूसरी कुतुबे हदीस के मुक़ाब्ले में तौहीद व अक़ाइद को बयान करने में लाजवाब व बेमिसाल है। जब उन्होंने इस किताब को तालीफ़ कर के इमाम अबू ज़रआ राज़ी के सामने पेश किया तो उन्हों ने इस को देख कर फ़र्माया : अगर यह किताब लोगों के हाथों में आ गई तो मुझे डर है के कहीं दूसरी अहादीस की किताबें न छोड़ बैठें। आख़िर दीनी ख़िदमत अन्जाम देते हुए २२ रमज़ानुल मुबारक बरोज़े पीर सन २७३ हिजरी में वफ़ात पाई और मंगल के दिन दफ़न किये गए।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — थोड़े से छूहारों में बरकत

रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत उमर رضي الله عنه को हुकम दिया के क़बील-ए-मुज़ैना के चार सौ सवारों को सफ़र में खाने के लिए कुछ सामान दे दो हज़रत उमर رضي الله عنه ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मेरे पास कोई चीज़ ऐसी नहीं जो मैं उन को दे सकूं। आप ﷺ ने फ़र्माया : "जाओ तो सही" हज़रत उमर رضي الله عنه उन लोगों को अपने घर ले गए, घर पर थोड़े से छुहारे रखे हुए थे, वह उन लोगों के दर्मियान तक़सीम कर दिया। हज़रत नुमान बिन मुक़रिन رضي الله عنه फ़र्माते हैं : (तक़सीम के बाद भी) छुहारे जितने थे उतने ही बाक़ी रहे (उन में कुछ कमी नहीं हुई)।

[बैहक़ी फ़ी दलाइलिन्नुबुव्वह : २११२, अन नोअ्मान बिन मुक़रिन رضي الله عنه]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — तक्बीराते तशरीक़

नवीं ज़िलहिज्जा की फ़ज्र की नमाज़ से तेरहवीं ज़िलहिज्जा की अस्र तक हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद हर मुसलमान मर्द व औरत पर तक्बीरे तशरीक़ कहना ज़रूरी है।

((اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَاللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ))۔

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — खैर व भलाई की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ फ़र्माते थे ((اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ كُلِّ خَيْرٍ خَزَائِنُهُ بِيَدِكَ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से, उन तमाम भलाइयों का सवाल करता हूं, जिन के ख़ज़ाने तेरे क़ब्ज़े में हैं।

[मुस्तदरक : १९२४, अन इब्ने मस्ऊद رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	नमाज़ में क़ुर्आन करीम की तिलावत करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "नमाज़ में क़ुर्आन शरीफ़ की तिलावत, नमाज़ से बाहर की तिलावत से बेहतर है और नमाज़ से बाहर की तिलावते क़ुर्आन "سُبْحَانَ اللّٰهِ" और "اَللّٰهُ اَكْبَرُ" की तस्बीह पढ़ने से अफ़ज़ल है, "سُبْحَانَ اللّٰهِ" और "اَللّٰهُ اَكْبَرُ" की तस्बीह सद्क़े से अफ़ज़ल है और सद्क़ा रोज़े से अफ़ज़ल है और रोज़ा जहन्नम से बचने की ढाल है।" [बैहक़ी :२१६७, अन आयशा ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	ज़लील तरीन लोग

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो लोग अल्लाह और उस के रसूल की मुखालफ़त करते हैं तो यही लोग (अल्लाह के नज़दीक) बड़े ज़लील लोगों में दाखिल हैं। [सूर-ए-मुजादला :२०]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनियावी ज़िंदगी पर खुश न होना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "अल्लाह तआला जिस को चाहता है बेहिसाब रिज़्क़ देता है और जिस को चाहता है तंगी करता है; और यह लोग दुनिया की ज़िंदगी पर खुश होते हैं (और उस के ऐश व इशरत पर इतराते हैं) हालांके आखिरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िंदगी एक थोड़ा सा सामान है।" [सूर-ए-रअ्द: २६]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	अहले जन्नत की सफें

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अहले जन्नत की एक सौ बीस सफ़ें होंगी, उन में अस्सी सफ़ें इस उम्मत की और चालीस बाक़ी उम्मतों की होंगी।" [तिर्मिज़ी : २५४६, अन बुरैदा ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बीमारी से मुतअल्लिक़ अहेम हिदायत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम्हें मालूम हो के फ़लाँ जगह ताऊन (प्लैग) फैला हुआ है, तो वहाँ मत जाओ और जिस जगह तुम रह रहे हो वहाँ ताऊन फैल जाए, तो उस जगह से (बिला ज़रूरत) मत निकलो।" [बुखारी : ५७२८, अन उसामा बिन ज़ैद ﷺ]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "एक दूसरे से हसद न करो, खरीद व फ़रोख्त में धोका देने के लिए बोली में इज़ाफ़ा न करो, (यानी बढ़ा चढ़ा कर न बोलो) एक दूसरे से दुशमनी न रखो, एक दूसरे से मुंह न फेरो और तुम में से कोई दूसरे के सौदे पर सौदा न करे।" [मुस्लिम : ६५४१, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत जुनैद बग़दादी رحمة الله عليه

हज़रत जुनैद बग़दादी رحمة الله عليه बड़े पाए के बुज़ुर्ग और तीसरी सदी के इल्म व मारिफ़त के इमाम थे, हज़रत सिर्री सक़ती رحمة الله عليه आप के मामूं और शेख़ व मुरब्बी थे,सात साल की उम्र में जब उन से शुक्र के बारे में पूछा तो फ़र्माया : शुक्र की तारीफ़ यह है के जब अल्लाह तआला कोई नेमत अता करे, तो उस की वजह से कभी नेमत देने वाले की नाफ़रमानी न करे । यह सुन कर लोगों ने कहा : आप की कुव्वते गोयाई अल्लाह का अतिय्या है । हज़रत सुफ़ियान सौरी رحمة الله عليه से फ़िक़ह की तालीम मुकम्मल फ़र्माई और बीस साल की उम्र में इफ़्ता की मसनद पर फ़ाइज़ हो गए, कुर्आन व हदीस के बारे में फ़र्माई करते: जो शख़्स कुर्आने करीम का हाफ़िज़ और हदीसे रसूल का कातिब न हो, उस की इत्तिबा न किया करो, क्योंकि हमारे मज़हब की बुनियाद कुर्आन व हदीस है । वह इल्मे शरीअत के साथ साथ इल्मे तरीक़त के भी इमाम थे, अपने बारे में फ़र्माया करते के मुझे सुलूक व मारिफ़त का बलंद तरीन मक़ाम फ़ाका कशी, तर्के दुनिया और शब बेदारी की वजह से हासिल हुआ है । वाज़ गोई से दूर भागते थे; एक मरतबा ख्वाब में हुज़ूर ﷺ ने वाज़ कहने का हुक्म दिया, तो बयान करना शुरू कर दिया जिस को सुन कर बहुत से लोग ईमान कुबूल कर लेते थे । मौत के वक्त ज़िक्र में मसरूफ़ थे के इसी हाल में सन २९७ हिजरी में जुमा के दिन अपने मालिके हकीकी से जा मिले और इमाम कर्ख़ी के क़ब्रस्तान "शोनेज़िया" में दफ़्न किये गए।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — च्यूँटी अल्लाह की कुदरत का नमूना है

च्यूंटी भी अल्लाह की अजीब मखलूक है । इतने छोटे से जान्वर में अल्लाह तआला ने आँख नाक कान दिल व दिमाग़ हाथ पैर कितनी कारीगरी से बनाए । फिर इन को सोचने, समझने और सूंघने की बे पनाह सलाहियतों से नवाज़ा । वह एक मील की दूरी से मीठी चीज़ों का सूंघ कर पता लगा लेती है । च्यूंटियों की सरदार को जब कोई चीज़ मिलती है, तो वह अपने मातहत तमाम च्यूंटियो को बुलाती है और वह उस चीज़ को उठा कर अपने बिलों में ले जाती हैं; अगर किसी दाने के जमने का खतरा महसूस करती हैं, तो उस के टुकड़े कर देती हैं और गर्मी के मौसम में सर्दी के लिए और इसी तरह बरसात का मौसम आने से पहले ही ज़खीरा जमा कर लेती हैं, बग़ैर किसी मशीन व आला के गर्मी और बरसात के मौसम की खबर उन्हें किस ने दी? इतनी छोटी सी मखलूक को ऐसे ऐसे हुनर सिखा देना अल्लाह की कुदरत का करिश्मा है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़ के लिये मस्जिद जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम में से जो शख्स अच्छी तरह मुकम्मल तौर पर वुज़ू करता है, फिर सिर्फ नमाज़ ही के इरादे से मस्जिद में आता है, तो अल्लाह तआला उस बन्दे से ऐसे खुश होते हैं जैसे के किसी दूर गए हूए रिश्तेदार के अचानक आने से उस के घर वाले खुश होते हैं।"

[इब्ने खुज़ैमा : १४९१, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	कुर्ते का इस्तेमाल करना

रसूलुल्लाह ﷺ को कपड़ों में क़मीस बहुत पसंद थी। [अबू दाऊद : ४०२६, अन उम्मे सलमा رضي الله عنها]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	हर नमाज़ के बाद तस्बीहे फातिमी अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद ३३ मर्तबा "سُبْحَانَ اللهِ" ३३ मर्तबा "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ" और ३४ मर्तबा "اَللّٰهُ اَكْبَرُ" कहता है, वह कभी नुकसान में नहीं रहता।"

[मुस्लिम : १३४९, अन कअब बिन उजरा رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	औरतों का खुश्बू लगा कर बाहर निकलना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो औरत इत्र लगा कर लोगों के पास से गुज़रे, ताके लोग उस की खुश्बू महेसूस करें, तो वह ज़ानिया है और हर (देखने वाली) आँख ज़िनाकार होगी।"

[तिर्मिज़ी : २७८६, अन अबी मूसा رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया में खुद को मशगूल न करो

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम में से क़यामत के दिन मुझ से ज़ियादा क़रीब वह शख्स होगा, जो दुनिया से उसी तरह निकल आए, जिस तरह में छोड़ कर जा रहा हूँ; अल्लाह की क़सम ! मेरे सिवा तुम में से हर एक दुनिया की किसी न किसी चीज़ में फंसा हुआ है।" [मुस्नदे अहमद : २०९४७, अन अबी ज़र رضي الله عنه]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	जन्नत का मौसम

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : उन (अहले ईमान) के सब्र के बदले में (उन्हें) जन्नत और रेशमी लिबास अता किया जाएगा, उन की यह हालत होगी के जन्नत में मसेहरियों पर तकिये लगाए बैठे होंगे, वहाँ उन्हें न गर्मी का एहसास होगा और न वह सर्दी महसूस करेंगे। [सूर-ए-दह्र : १२ ता १३]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	नज़र लगने से हिफाज़त

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : जिस शख्स ने कोई ऐसी चीज़ देखी जो उसे पसंद आ गई, फ़िर उस ने (مَاشَاءَ اللهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ) कह लिया, तो उस की नज़र से कोई नुक्सान नहीं पहूंचेगा।

[कंज़ुल उम्माल : १७६६६, अन अनस رضي الله عنه]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : (ऐ मुहम्मद ﷺ) आप कह दीजिए के अगर तुम अल्लाह तआला से मोहब्बत रखते हो, तो तुम लोग मेरी पैरवी करो, अल्लाह भी तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाहों को बख्श देगा। [सूर-ए-आले इमरान : ३१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

⑩ ज़िल हिज्जा

नंबर ①: इस्लामी तारीख — सुल्तान महमूद ग़ज़नवी رحمة الله عليه

सुल्तान महमूद ग़ज़नवी رحمة الله عليه इस्लामी तारीख में बड़े नामवर बादशाह गुज़रे हैं, आप अमीर सुबुकतगीन के बेटे थे, सन ३५७ हिजरी में पैदा हुए और आला तालीम हासिल की, वालिद साहब के इन्तेकाल के बाद हुकूमत की बाग डोर संभाली और उस को मजबूत करते चले गए आप ने अपने दौरे हुकूमत में कई इलाके फ़तह किये और अमन व अमान काइम किया। ज़ुल्म व ज़ियादती को बिल्कुल पसंद नहीं करते थे, मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम हर एक के साथ इन्साफ़ का मामला करते थे। रिआया की पूरी खबर रखते थे और उन की ज़रूरियात को बड़े एहतेमाम से पूरा करते। ग़ैर मुस्लिमों के मज़हब और उन की इबादत गाहों का भी बड़ा लिहाज रखते, उन को उन का पूरा हक देते और मज़ीद इनामात से भी नवाज़ते, अल्बत्ता बेहयाई और फ़ितनों के अड्डों को बेखौफ़ व खतर सफ़ह-ए-हसती से मिटा देते। सुल्तान महमूद इल्म व फ़ज़ल में भी बहुत आगे थे, अहले इल्म और अस्हाबे कमाल के बड़े कद्रदाँ थे। खास ग़ज़नी में बहुत बड़ा मद्रसा तामीर कराया और उस के इखराजात के लिए एक बड़ा फ़ंड मुकर्रर कर दिया। आप के दारुस्सलतनत में इतने अरबाबे कमाल जमा हो गये थे के एशिया के किसी बादशाह को यह फ़ख्र हासिल न था, तकरीबन ३५ साल तक इकतिदार को रौनक बख्शने के बाद यह आदिल, मुन्सिफ़, रिआया परवर, खुदा तर्स, उलमा नवाज़ और अज़ीम काइद व सरबराह सन ४२१ हिजरी में इस दारे फ़ानी से रूख्सत हो गया; जिस के मिसाली कारनामे कयामत तक तारीख के औराक़ में महफ़ूज़ रहेंगे।

नंबर ②: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — हज़रत हुज़ैफा رضي الله عنه को सर्दी का एहसास न होना

हज़रत हुज़ैफ़ा رضي الله عنه फ़र्माते हैं : "ग़ज़व-ए-खंदक के मौके पर सख्त ठंडी हवा चल रही थी, ऐसे वक्त में रसूलुल्लाह ﷺ ने सहाबा से फ़र्माया : है कोई जो मेरे पास दुश्मनों के क़ाफ़्ले की खबर ले आए, तो (ठंडी की वजह से) कोई भी खड़ा न हुआ, दुसरी मर्तबा फ़र्माया : फिर भी कोई खड़ा न हुआ, जब तीसरी मर्तबा भी कोई खड़ा न हुआ तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : ऐ हुज़ैफ़ा ! तुम खड़े हो जाओ और दुश्मनों के क़ाफ़्ले की खबर ले आओ, हज़रत हुज़ैफ़ा رضي الله عنه फ़र्माते हैं चूंकि रसूलुल्लाह ﷺ ने अब मेरा नाम ले ही लिया था, इस लिए खड़ा होना ज़रूरी था, बहर हाल मैं खड़ा हो गया और वहां से चला, तो (रसूलुल्लाह ﷺ की बात मानने की बर्कत से) मुझे रास्ते में ज़र्रह बराबर भी ठंडी महसूस नहीं हुई, यहां तक के मैं वापस भी आ गया, ऐसा लग रहा था, गोया के मै सख्त गर्मी में चल रहा हूं।"

[मुस्लिम : ४६४०, अन हुज़ैफा رضي الله عنه]

नंबर ③: एक फ़र्ज के बारे में — दाढ़ी रखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मुंछों को कतरवाओ और दाढ़ी को बढ़ाओ।"

[बुखारी : ५८९३, अन इब्ने उमर رضي الله عنه]

फ़ायदा : दाढ़ी रखना शरीअते इस्लाम में वाजिब और इस्लामी शिआर में से है; इस लिए तमाम मुसलमानों के लिए इस पर अमल करना इन्तिहाई ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	हज के मौके पर दुआ पढ़ना

हज मे मौके पर इस दुआ को पढ़ते रहना चाहिए :

﴿رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا، اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ﴾

तर्जमा : ऐ हमारे परवर्दिगार ! हम को अपना फ़र्मांबरदार बना लिजिए और हमारी औलाद में से भी एक ऐसी जमात पैदा फ़र्मा, जो आप की फ़र्मांबरदार हो और हम को हमारे हज के अहकाम सिखा दीजिए और हमारी तौबा कुबूल फ़र्मा, क्यों कि आप ही तौबा को कुबूल करने वाले और रहम करने वाले हैं। [सूर–ए–बक़रा : १२८]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़जीलत	घर में नवाफिल पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम में से कोई मस्जिद में (फ़र्ज़) नमाज़ अदा कर ले , तो अपनी नमाज़ में से कुछ हिस्सा घर के लिए भी छोड़ दे; क्योंकि अल्लाह तआला बन्दे की (नफ़्ल) नमाज़ की वजह से उस के घर में खैर नाज़िल करते हैं ।" [मुस्लिम : १८२२, अन जाबिर ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	अल्लाह तआला के साथ शिर्क करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है : "बिला शुबा अल्लाह तआला शिर्क को माफ़ नहीं करेगा, शिर्क के आलावा जिस गुनाह को चाहेगा माफ़ कर देगा और जिस ने अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक किया, तो उस ने अल्लाह के खिलाफ़ बहुत बड़ा झूट बोला ।" [सूर–ए–निसा : ४८]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की चीज़ें खत्म होने वाली हैं

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो कुछ तुम्हारे पास (दुनिया में) है वह (एक दिन) खत्म हो जाएगा और जो अल्लाह तआला के पास है वह हमेशा बाकी रहने वाली चीज़ है । [सूर–ए–नहल : ९६]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	दोज़ख की गहराई

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "एक पत्थर को जहन्नम के किनारे से फेंका गया, वह सत्तर साल तक उस में गिरता रहा मगर उस की गहराई तक नहीं पहुंच सका ।" [मुस्लिम : ७४३५, अन उतबा बिन ग़ज़वान ؓ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	जुज़ाम (यानी कोढ़) का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "सात दिन तक रोज़ाना सात मर्तबा मदीना की अज्वह खजूरों का इस्तेमाल जुज़ाम (कोढ़) के लिए फ़ायदामंद हैं ।" [कंज़ुल उम्माल : २८३३२, अन आयशा ؓ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "जब तुम में से कोई घर में दाखिल होने के लिए तीन मर्तबा इजाज़त मांगे और उस को इजाज़त न मिले, या कोई जवाब न मिले तो उस को वापस हो जाना चाहिए ।" [अबू दाऊद : ५१८९, अन अबी मूसा ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

११ ज़िल हिज्जा

नंबर (१): इस्लामी तारीख — इमाम गज़ाली रहमतुल्लाह अलैह

हुज्जतुल इस्लाम इमाम गज़ाली रहमतुल्लाह अलैह का शुमार तारीखे इस्लाम की अज़ीम शख्सियतों में होता है। आप का नाम मुहम्मद और कुन्नियत अबू हामिद थी । सन ४५० हिजरी में इराक के इलाका ताहेरान में पैदा हुए। इब्तेदाई तालीम अपने वतन में हासिल करने के बाद नीशापूर जाकर इमामुल हरमैन के हलक-ए-दर्स में शामिल हो गए। थोड़े ही दिनों में आप का शुमार अपने ज़माने के बड़े उलमा में होने लगा। और सिर्फ़ ३४ साल की उम्र में निज़ामुल मलिक ने बगदाद के मद्रस-ए-निज़ामिया की सदारत के लिए आप का इन्तिखाब किया जो उस वक्त एक आलिम के लिए सब से बड़ी इज़्ज़त और शर्फ़ की बात थी। आप ने अपने इल्मी व अमली कमालात के ज़रिये आलमे इस्लाम के दिल व दिमाग पर गहरा असर डाला और अल्लाह तआला ने आप के ज़रिये उम्मते मुसलिमा को बेहद नफ़ा पहुंचाया। अपने तज़किये नफ़्स के लिए तक्रीबन १२ साल जंगलों में गाएब रहे, फ़िर लोगों के सामने आए और तज़किये नफ़्स पर एक किताब लिखी जो "इहयाउल उलूम" के नाम से ख्वास व अवाम दोनों तब्कों में बेहद मक्बूल हुई और उम्मते मुसलिमा के एक बड़े तब्के ने इस से फ़ायदा उठाया। आप की वफ़ात सन ५०५ हिजरी को ५५ साल की उम्र में अपने वतन में हुई और आप वहीं मदफ़ून हैं।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — पहाड़ों में कुदरत का नमूना

अल्लाह तआला ने ज़मीन पर बलंद और ऊँचे ऊँचे पहाड़ बनाए, जिस की चोटियां बादलों से भी ऊपर तक पहुंची हुई होती हैं और फिर उन्हीं पहाड़ों से नदियां, समुंदर, दर्या, झील और मीठे मीठे पानी के चश्मे जारी किये, जिस से तमाम मख्लूक अपनी अपनी प्यास और ज़िन्दगी की ज़रूरियात पूरी करती हैं, पानी के यह बहते हुए चश्मे, मज़बूत और सख्त चटानों से जारी हो कर खुदा की अज़ीम कुदरत का नमूना दुनिया की निगाहों के सामने पेश कर रहे हैं।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म देना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : आप अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म करते रहिये और खुद भी नमाज़ के पाबंद रहिये, हम आप से रोज़ी तलब नहीं करते, रोज़ी तो आप को हम देंगे और अच्छा अन्जाम तो परहेजगारों का है।

[सूर-ए-ताहा १३२]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — बात ठहर ठहर कर और साफ़ साफ़ करना

हज़रत आयशा रज़ि. फ़र्माती हैं के हुज़ूर ﷺ की बात जुदा जुदा होती थी, जो सुनता, समझ लेता था।

[अबू दाऊद ४८३९, अन आयशा रज़ि.]

फ़ायदा : जब किसी से बात करे, तो साफ़ साफ़ बात करे, ताके सुनने वाले को समझने में कोई परेशानी न हो, यह आप ﷺ की सुन्नत है।

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	बारा रकात नफ़्ल नमाज़ अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स एक दिन में बारा रकात नफ़्ल नमाज़ पढ़ेगा, तो इन नमाज़ों के बदले में उस के लिए जन्नत में एक घर बनाया जाएगा ।" [अबू दाऊद : १२५०, अन उम्मे हबीबा رضي الله عنها]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	किसी के सतर को देखना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला लानत करते हैं, उस शख़्स पर जो जान बूझ कर किसी के सत्र को देखता हो और उस पर भी लानत है, जो बिला उज़्र सत्र दिखलाता हो ।"

[बैहकी फ़ी शोअबिल ईमान : ७५३८, अन हसन رحمه الله मुर्सलन]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया से बे रगबती का दर्जा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "दुनिया की बे रगबती से बढ़ कर और कोई इबादत नहीं है ।"

[कन्ज़ुल उम्माल : ६१७३, अन अम्मार बिन यासिर رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	कयामत के दिन बदला

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जब हम उन लोगों को उस दिन जमा करेंगे, जिस के आने में कोई शक नहीं और हर एक आदमी को उस के आमाल का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। [सूर-ए-आले इमरान : २५]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बुखार का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "बुखार जहन्नम के असर के फ़ैलाव का नतीजा है, लिहाज़ा उसे पानी से बुझाओ ।" [बुखारी : ५७२३, अन इब्ने उमर رضي الله عنه]

फ़ायदा : पानी में तर किए हुए कपड़े को निचोड़ कर बदन को पोछना या पेशानी पर तर की हुई पट्टी को रखना बुखार में मुफ़ीद है ।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : नेकी और परहेज़गारी इख्तियार करने और लोगों के दर्मियान सुलह कराने में अल्लाह को अपनी कस्मों में आड़ मत बनाया करो । (यानी नेक और अच्छे काम न करने की कस्में मत खाओ) बेशक अल्लाह तआला सुनने वाला और जानने वाला है । [सूर-ए-बकरह :२४२]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

⑫ ज़िल हिज्जा

नंबर ①: इस्लामी तारीख़ — शेख अब्दुल कादिर जीलानी رحمة الله عليه

पीरानेपीर शेख अब्दुल कादिर जीलानी رحمة الله عليه की विलादत बा सआदत ईरान के शहर गीलान में सन ४७० हिजरी में हुई, आप हज़रत हसन رضي الله عنه की नस्ल से हैं, जब अठारा साल के हुए तो इल्मे दीन का मरकज़ बगदाद इल्म हासिल करने के लिए तशरीफ़ लाए, दुनिया उन के इल्म व फज़ल और तक्वा व सलाह की कायल है, अल्लाह तआला ने आप की ज़बान में बड़ी तासीर दी थी, कोई मजलिस ऐसी न होती, जिस में यहूदी या ईसाई इस्लाम कबूल न करते हों और बहुत से लोग फ़िस्क व फ़ुजूर से तौबा न करते हों, चुनांचे आप के हाथ पर एक लाख से ज़ियादा लोगों ने तौबा की, पांच हज़ार से ज़ियादा ईसाई और यहूदी मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए। हज़रत अब्दुल कादिर जीलानी رحمة الله عليه बड़े कमाल व करामात वाले थे, उन के ज़माने में लोग दुनिया की तरफ़ ऐसे मुतवज्जेह हो गए थे जैसे उन्हें आखिरत की तरफ़ जाना ही नहीं है, चुनांचे आप के वाज़ व नसीहत की वजह से लोगों ने आखिरत की तय्यारी का रुख किया और उन के दिलो में अल्लाह की मुहब्बत और इताअत पैदा हुई, आप के वाज़ व नसीहत में वह असर था के मजमे पर गिरया तारी हो जाता था, आप तसव्वुफ़ व सुलूक में मशहूर सिलसिल-ए-कादिरिय्या के बानी हैं। सन ५६१ हिजरी में नव्वे साल की उम्र में आप ने वफ़ात पाई।

नंबर ②: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — एक प्याला खाने में बरकत

हज़रत समुरह बिन जुन्दुब رضي الله عنه फ़र्माते हैं के एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ के पास कहीं से एक प्याला आया जिस में खाना था, तो उस को आप ﷺ ने सहाबा رضي الله عنهم को खिलाया, एक जमात खाना खा कर फ़ारिग होती फिर दूसरी जमात बैठती, यह सिलसिला सुबह से ज़ोहर तक चलता रहा, एक आदमी ने हज़रत समुरह رضي الله عنه से पूछा क्या खाना बढ़ता था, तो हज़रत समुरह رضي الله عنه ने फ़र्माया : इस में तअज्जुब की क्या बात है, खाना आस्मान से उतरता था। [बैहकी फी दलाइलिन्नुबुव्वह : २३४२]

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — कर्ज़ अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "कर्ज़ की अदाइगी पर ताकत रखने के बावजूद टाल मटोल करना ज़ुल्म है।" [बुखारी : २४००, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

फ़ायदा : अगर किसी ने कर्ज़ ले रखा है और उस के पास कर्ज़ अदा करने के लिए माल है, तो फिर कर्ज़ अदा करना ज़रूरी है, टाल मटोल करना जाइज़ नहीं है।

नंबर ④: एक सुन्नत के बारे में — इस्मे आज़म के साथ दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने एक शख़्स को दुआ मांगते हुए सुना तो फ़र्माया : "तुम ने इस्मे आज़म के साथ दुआ मांगी है के उस के साथ जो भी सवाल व दुआ की जाती है वह पूरी की जाती है" वह इस्मे आज़म यह है : ((اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِاَنِّیْ اَشْهَدُ اَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ

لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِیْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ))

[तिर्मिज़ी : ३४७५, अन बुरैदा رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	लोगों के साथ नर्मी से पेश आना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "क्या मैं तुम्हें न बता दूँ, के जहन्नम किस पर हराम है? फिर फ़र्माया: हर उस शख़्स पर जहन्नम हराम है, जो लोगों के साथ नर्मी और सहूलत का मामला इख़्तियार करे।"

[तिर्मिज़ी : २४८८, अन इब्ने मसऊद ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	सच्ची गवाही को छुपाना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम गवाही मत छुपाया करो और जो शख़्स इस (गवाही) को छुपाएगा, तो बिला शुबा उस का दिल गुनहगार होगा और अल्लाह तआला तुम्हारे किए हुए कामों को खूब जानता है।

[सूर-ए-बकरा : २८३]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया चाहने वालों का अन्जाम

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो कोई दुनिया ही चाहता है, तो हम उस को दुनिया में जितना चाहते हैं, जल्द देते हैं फिर हम उस के लिए दोज़ख़ मुकर्रर कर देते हैं, जिस में (ऐसे लोग क़यामत के दिन) ज़िल्लत व रुसवाई के साथ ढकेल दिए जाएंगे।

[सूर-ए-बनी इसराईल : १८]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	क़ब्र का अज़ाब बरहक़ है

रसूलुल्लाह ﷺ दो क़ब्रों के क़रीब से गुज़रे, आप ﷺ ने फ़र्माया : "इन दो क़ब्र वालों को अज़ाब हो रहा है, इन्हें किसी बड़े गुनाह की वजह से अज़ाब नहीं दिया जा रहा है, इन में से एक तो पेशाब (के छींटों) से नहीं बचता था और दूसरा चुगल खोरी किया करता था।"

[बुखारी : २१८, अन इब्ने अब्बास ؓ]

फ़ायदा : इस हदीस से मालूम हुआ के क़ब्र का अज़ाब बरहक़ है और इन्सानों को अपने गुनाहों की सज़ा क़ब्र से ही मिलनी शुरू हो जाती है।

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	कलोंजी में हर बीमारी का इलाज है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम इस कलोंजी को इस्तेमाल करो, क्यों कि इस में मौत के अलावा हर बीमारी की शिफ़ा मौजूद है।"

[बुखारी : ५६८७, अन आयशा ؓ]

फ़ायदा : अल्लामा इब्ने कय्यिम رحمہ اللہ फ़र्माते हैं : इस के इस्तेमाल से उफारा (पेट फूलना) खत्म हो जाता है, बलगमी बुखार के लिए नफ़ा बख्श है, अगर इस को पीस कर शहद के साथ माजून बना लिया जाए और गर्म पानी के साथ इस्तेमाल किया जाए, तो गुर्दे और मसाने की पथरी को गला कर निकाल देती है।

[तिब्बे नब्वी]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "छोटों को चाहिए के बड़ों को सलाम करें और चलने वालों को चाहिए के बैठे हुए को सलाम करें और कम लोगों को चाहिए के ज़ियादा लोगों को सलाम करें।"

[अबू दाऊद : ५१९८, अन अबी हुरैरह ؓ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख — इमाम अबुल हसन अशअरी

इमाम अबुल हसन अली अशअरी ﷫ मशहूर सहाबी हज़रत अबू मूसा अशअरी ﷛ की औलाद में थे। आप के ज़माने में इस्लाम का एक फ़िर्का जो मुअतज़िला के नाम से जाना जाता है, उस ने इल्मी हलके में काफ़ी असर डाल रखा था और आम तौर पर यह समझा जाने लगा था के मुअतज़िला बड़े ज़हीन, अक्लमंद और मुहक्किक होते हैं और उन की राय और तहकीक अक्ल से ज़ियादा करीब होती है और लोग फ़ैशन के तौर पर इस नज़रिये को इख्तियार करने लगे थे और एक बड़ा फ़ितना बर्पा था। अल्लाह तआला ने इस अज़ीम काम के लिए इमाम अबुल हसन अली अशअरी ﷫ को चुना, वह उन के बातिल अकीदे की तरदीद और उन की दावत देने को तकर्रुब इलल्लाह का ज़रिया समझते थे। खुद मुअतज़िला की मजलिसों में जाते और उन को समझाने की कोशिश करते। लोगों ने उन से कहा के आप अहले बिदअत से क्यों मिलते जुलते हैं? उन्होंने जवाब में फ़र्माया : क्या करूं, अगर मैं उन के पास न गया तो हक कैसे ज़ाहिर होगा और उन को कैसे मालूम होगा के अहले सुन्नत का भी कोई मददगार और दलाइल से उन के मज़हब को साबित करने वाला है। वह मुअतज़िला की मुखालफ़त और तरदीद में लगे रहे यहाँ तक के फ़िर्क-ए-मुअतज़िला का ज़ोर कमज़ोर पड़ गया। आप की वफ़ात सन ३२४ हिजरी में बगदाद में हुई।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — बचाव की सलाहियत

अल्लाह तआला ने हर एक जानवर को अपनी हिफ़ाज़त व बचाव की सलाहियत से नवाज़ा है चुनांचे बैल, भैंस, बकरियों को सींग अता कर दिए और जंगली जानवरों में से हिरन, बारा सिंघा और गेंडे को ऐसे सींग लगाए के अगर कोई खूँख्वार दरिंदा उन पर हमला करे तो आसानी से यह अपनी हिफ़ाज़त कर लेते हैं, इस तरह तमाम जानवरों को बचाव का सामान और हिफ़ाज़त का तरीका सिखा देना यह अल्लाह की कुदरत की बड़ी निशानी है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — हज़रत मुहम्मद ﷺ को आखरी नबी मानना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : (हज़रत मुहम्मद ﷺ) अल्लाह के रसूल और खातमुन नबिय्यीन हैं।

[सूर-ए-अहज़ाब : ४०]

फ़ायदा : रसूलुल्लाह ﷺ अल्लाह के आखरी नबी और रसूल हैं ; लिहाज़ा आप ﷺ को आखरी नबी और रसूल मानना और अब क्यामत तक किसी दूसरे नबी के न आने का यकीन रखना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — खाना खाते वक्त टेक न लगाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मैं टेक लगा कर नहीं खाता हूँ।" [बुखारी : ५३९८, अन अबी जुहैफ़ा ﷛]

फ़ायदा : बिला उज़्र टेक लगा कर खाना सुन्नत के खिलाफ़ है।

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | इस्तिग़फ़ार की बेशुमार बरकतें

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स पाबंदी के साथ इस्तिग़फ़ार करेगा, अल्लाह तआला हर तंगी में उस के लिए आसानी पैदा करेंगे, उसे हर ग़म से नजात दिलाएँगे और उसे ऐसी जगह से रिज़्क पहुँचाएँगे, जहाँ से उस को वहम व गुमान भी नहीं होगा।" [अबू दाऊद : १५१८, अन इब्ने अब्बास ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | मियाँ बीवी अपना राज़ बयान न करें

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "कयामत के रोज़ अल्लाह की नज़र में लोगों में सब से बदतरीन वह शख़्स होगा, जो अपनी बीवी के पास जाए और उस की बीवी उस के पास आए; फिर उन में से एक अपने साथी का राज़ किसी दूसरे से बताए ।" [मुस्लिम : ३५४२, अन अबी सईद ख़ुदरी ؓ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | माल जमा करने का नुक्सान

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम माल व दौलत जमा न करो, जिस की वजह से तुम दुनिया की तरफ माइल हो जाओगे ।" [तिर्मिज़ी : २३२८, अन इब्ने मसऊद

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | परहेज़गारों की नेअ्मतें

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : (कयामत के दिन) परहेज़गार लोग (जन्नत) के सायों में और चश्मों में और पसंदीदा मेवों में होंगे (उन से कहा जाएगा) अपने (नेक) आमाल के बदले में खूब मज़े से खाओ पियो, हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं । उस दिन झुटलाने वालों के लिए बड़ी ख़राबी होगी । [सूर-ए-मुरसलात : ४१ ता ४५]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | मिस्वाक के फ़वाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : "मिस्वाक मुंह की सफाई और ख़ुदा की रज़ामंदी का ज़रिया है ।" [निसई : ५, अन आयशा ؓ]

ख़ुलासा : अल्लामा इब्ने कय्यिम رحمہ اللہ मिस्वाक के फ़वाइद में लिखते हैं : यह दांतों में चमक और मसढ़ों में मज़बूती पैदा करती ह, इस से मुंह की बदबू ख़त्म हो जाती है और दिमाग पाक व साफ़ हा जाता है, यह बलगम को काटती है, निगाह को तेज़ करती है और आवाज़ को साफ़ करती है। [तिब्बे नब्वी]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला का खूब ज़िक्र किया करो और सुब्ह व शाम उस की पाकी बयान किया करो। [सूर-ए-अहज़ाब : ४१ ता ४२]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख | अल्लामा अब्दुर्रहमान बिन जौज़ी

छटी सदी हिजरी में अब्दुर्रहमान बिन जौज़ी एक बहुत बड़े मुहद्दिस, मोअर्रिख, मुसन्निफ़ और खतीब गुजरे हैं। सन ५०८ हिजरी में बगदाद में पैदा हुए, बचपन में बाप का साया सर से उठ गया और जब पढ़ने के काबिल हुए, तो माँ ने मशहूर मुहद्दिस इब्ने नासिर के हवाले कर दिया और आप ने बड़ी मेहनत और शौक के साथ अपना तालीमी सफ़र शुरु किया। वह खुद फ़र्माते हैं के मैं छे साल की उम्र में मकतब में दाखिल हुआ, बड़ी उम्र के तलबा मेरे हम सबक थे, मुझे याद नहीं के मैं कभी रास्ते में बच्चों के साथ खेला हूँ या ज़ोर से हंसा हूँ। आप को मुताले का बड़ा गहरा शौक था, वह खुद बयान करते हैं के जब कोई नई किताब पर मेरी नज़र पड़ जाती तो ऐसा मालूम होता के कोई खज़ाना हाथ आ गया। मैं ने सिर्फ़ तालिबे इल्मी के ज़माने में बीस हज़ार किताबों का मुताला किया। नौ उम्री से ही आप तसनीफ़ व तालीफ़ की तरफ़ मुतवज्जेह हो गए और तकरीबन एक हज़ार किताबें लिखीं, आप की तसनीफ़ात में किताबुल मौज़ुआत, सिफ़तुस सफ़वा और सैदुल खातिर बहुत बलंद पाया हैसियत रखती है। आप की वफ़ात सन ५९७ हिजरी में बगदाद में हुई।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा | बेहोशी से शिफ़ा पाना

हज़रत जाबिर फ़र्माते हैं के एक मर्तबा मैं सख़्त बीमार हुआ, तो रसूलुल्लाह ﷺ और हजरत अबू बक्र सिद्दीक दोनों हज़रात मेरी इयादत को तशरीफ़ लाए, यहां पहुँच कर देखा के मैं बेहोश हूँ। तो आप ﷺ ने पानी मंगवाया और उस से वुज़ू किया और फिर बाकी पानी मुझ पर छिड़का, जिस से मुझे इफ़ाका हुआ और मैं अच्छा हो गया। [मुस्लिम : ४१४७, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में | क़ज़ा नमाज़ों की अदायगी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो कोई नमाज़ पढ़ना भूल गया या नमाज़ के वक्त सोता रह गया, तो (उस का कफ़्फ़ारा यह है के) जब याद आए उसी वक्त पढ ले।" [तिर्मिज़ी : १७७, अन अबी कतादा]

फ़ायदा : अगर किसी शख्स की नमाज़ किसी उज्र की वजह से छूट जाए या सोने की हालत में नमाज़ का वक्त गुज़र जाए, तो बाद में उस को पढ़ना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | गुनाहों से बचने की दुआ

गुनाहों से बचने के लिए यह दुआ पढ़े :

((اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِىْ بِتَرْكِ الْمَعَاصِىْ اَبَدًا مَّا اَبْقَيْتَنِىْ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! जब तक मैं ज़िंदा रहूँ मुझे गुनाहों से बचने की तौफ़ीक अता फ़र्मा।

[तिर्मिज़ी : ३५७०, अन इब्ने अब्बास]

नंबर (५): एक अहम अमल की फ़ज़ीलत	मस्जिद की सफ़ाई का इन्आम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स मस्जिद का कूड़ा करकट साफ़ करेगा, अल्लाह तआला उस का घर जन्नत में बनाएँगे ।"

[इब्ने माजा : ७५७, अन अबी सईद]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	कुफ्र की सज़ा जहन्नम है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो लोग कुफ्र करते हैं तो अल्लाह तआला के मुकाबले में उन का माल और उन की औलाद कुछ काम नहीं आएगी और ऐसे लोग ही जहन्नम का इंधन होंगे ।

[सूर-ए-आले इमरान : १०]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	माल व औलाद दुनिया के लिए ज़ीनत

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : माल और औलाद यह सिर्फ़ दुनिया की ज़िंदगी की एक रौनक है और (जो) नेक आमाल हमेशा बाकी रहने वाले हैं, वह आप के रब के नज़दीक सवाब और बदले के एतेबार से भी बेहतर हैं और उम्मीद के एतेबार से भी बेहतर हैं । (लिहाज़ा नेक अमल करने की पूरी कोशिश करनी चाहिए और उस पर मिलने वाले बदले की उम्मीद रखनी चाहिए।) [सूर-ए- कहफ़ : ४६]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	कब्र की पुकार

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "कब्र रोज़ाना पुकार कर कहती है , मैं तन्हाई का घर हूँ, मैं मिट्टी का घर हूँ, मैं कीड़े मकोड़े का घर हूँ।"

[तिर्मिज़ी : २४६०, अन अबी सईद खुदरी]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बड़ी बीमारियों से हिफ़ाज़त

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स हर महीने तीन दिन सुबह के वक्त शहद को चाटेगा तो उसे कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी ।"

[इब्ने माजा : ३४५०, अन अबी हुरैरह]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला की इबादत करते रहो, खाना खिलाते रहो और सलाम फैलाते रहो, (इन आमाल की वजह से) जन्नत में सलामती के साथ दाखिल हो जाओगे ।"

[तिर्मिज़ी : १८५५, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(१५) ज़िल हिज्जा

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत मोईनुद्दीन चिश्ती رحمة الله عليه

हज़रत मोइनुद्दीन चिश्ती رحمة الله عليه अफगानिस्तान के एक गांव सजिस्तान में सन ५३७ हिजरी में पैदा हुए, इसी की तरफ़ निस्बत करते हुए संजरी कहा जाता है, आप رحمة الله عليه सिलसिल-ए-चिश्तिया के बानी हैं, बीस साल तक अपने पीर व मुर्शिद हज़रत उस्मान हारुनी رحمة الله عليه की खिदमत में रहे, फिर खिलाफ़त मिलने के बाद हिंदुस्तान का रुख किया, उस वक्त पूरे हिंदुस्तान में कुफ्र व शिर्क का बोल बाला था, लोग खुदाए वाहिद को छोड़ कर ईंट, पत्थर, दरख्त, जानवर, गाय और गोबर की पूजा करते थे, ऐसे तारीक माहौल में एक खुदा की आवाज़ लगाई, वाज़ व नसीहत के साथ साथ दावत व तबलीग के लिए दूर दराज़ का सफ़र किया और पूरे हिंदुस्तान में इस्लाम के पैगाम को आम किया, जिस के नतीजे में आप رحمة الله عليه के दस्ते मुबारक पर हज़ारों की तादाद में लोग जोक दर जोक इस्लाम में दाखिल हुए, मुल्क के गोशे गोशे से अल्लाहु अकबर की आवाज़ आने लगी और लोग भी इस दावती तहरीक को पूरे हिंदुस्तान में पहुँचाने लगे, तकरीबन आधी सदी तक दावत व तबलीग और तालीम व तर्बियत का काम करने के बाद ९० साल की उम्र में सन ६२७ हिजरी में वफ़ात पाई और अजमेर में ही मदफ़ून हुए।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — कंगारु

कंगारु, खरगोश की हम शक्ल एक बड़ा जानवर है। जो इन्सानी कद के बराबर होता है। उस के अगले पैर बहुत छोटे और पिछले पैर बहुत बड़े और मज़बूत होते हैं, इस की दुम भी काफ़ी लंबी और मोटी होती है, यह अपनी दुम पर बैठ जाता है। अजीब बात यह है के इस के पेट पर एक थैली होती है, कंगारु का बच्चा पैदाइश के वक्त सिर्फ़ दो इंच का होता है जिस की आँख भी बंद रहती है। इस के बावजूद वह अपनी माँ के जिस्म के बालों को पकड़ कर सीधा उस थैली में पहुँच जाता है और वहां दूध पी कर बड़ा होता है। जियादा वक्त इसी थैले मे गुजारता है और कंगारु उस को हर जगह लिये फिरता है खिलाता है पिलाता है। भला बताओ तो सही के इस छोटे से बच्चे को थैली का रास्ता कौन बताता है और बचपने से बड़ा होने तक कौन उस की हिफ़ाजत व पर्वरिश करता है। अल्लाह ही अपनी कुदरत से इन जानवरों की रहनुमाई फर्माता है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — शौहर पर बीवी का खर्चा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम पर वाजिब है के तुम औरतों के लिए कायदे के मुवाफ़िक रोज़ी और कपड़े का इन्तेज़ाम करो।"

[मुस्लिम : २९५०, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه]

फ़ायदा : शौहर पर वाजिब है के वह बीवी के लिए अपनी हैसियत के मुताबिक रोटी और कपड़े का इन्तेज़ाम करे।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में | दुआ के कलिमात को तीन बार कहना

रसूलुल्लाह ﷺ दुआ व इस्तिग़फ़ार के कलिमात को तीन तीन मर्तबा दोहराना पसंद फ़र्माते थे।

[अबू दाऊद : १५२४, अन बराअ बिन आज़िब رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | रात में सूर-ए-दुखान पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस शख्सने रात में "हा मीम अद दुखान" (यानी सूर-ए-दुखान) पढ़ी, उस के लिए सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इस्तिग़फ़ार करते हैं, दूसरी रिवायत में है के जिसने जुमा की रात में सूर-ए-दुखान पढ़ी उस के तमाम गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं।" [तिर्मिज़ी : २८८८-२८८९, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | कर्ज़ न लौटाने की निय्यत से लेना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स किसी से क़र्ज़ ले और दिल में यह पक्का इरादा कर रखे के कर्ज़ पूरा पूरा नहीं लौटाएगा, तो वह अल्लाह से एक चोर की हालत में मुलाकात करेगा।"

[इब्ने माजा : २४१०, अन सुहैब رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया खत्म और छूटने वाली है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "बन्दा कहता है मेरा माल मेरा माल, हालांके उस के लिए उस के माल में से तीन चीज़ें हैं : (१) वह जो खा कर खत्म कर दिया। (२) जो पहेन कर पुराना कर दिया। (३) वह जो (सदका) दे कर (आखिरत के लिए) ज़खीरह कर लिया और इस के अलावा जो कुछ है वह खत्म होने वाला और लोगों के लिए छोड़ने वाला है।" [मुस्लिम : ७४२२, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | कयामत का हाल

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : बेशक फैसले के दिन का वक्त मुतअय्यन है यानी जिस दिन सूर फूंका जाएगा फिर तुम लोग गिरोह दर गिरोह हो कर आओगे और आस्मान खोला जाएगा तो उस में दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएँगे और पहाड़ चलाए जाएँगे तो वह चमक्ते रेत हो जाएंगे।

[सूर-ए-नबा : १७ ता २०]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | जोड़ों के दर्द का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अंजीर खाओ क्योंकि यह बवासीर को खत्म करता है और जोड़ों के दर्द में मुफ़ीद है।" [कंज़ुल उम्माल : २८२७६, अन अबीज़र رضي الله عنه]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम को क्या हो गया के तुम अल्लाह के रास्ते में खर्च नहीं करते, हालांके आस्मान व ज़मीन की सब मीरास अल्लाह के लिए है। [सूर-ए-हदीद : १०]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(१६) ज़िल हिज्जा

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — सुलतान नूरुद्दीन ज़ंगी

सुलतान नूरुद्दीन ज़ंगी १७ शव्वाल सन ५११ हिजरी में पैदा हुए, बड़े ही नेक और इबादत गुज़ार थे। अपने वालिद इमादुद्दीन ज़ंगी के बाद मुल्के शाम के बादशाह बने। अपनी हुकूमत में उन्होंने शाम के तमाम बड़े बड़े शहरों में मदरसे बनवाए। उलमा और अहले दीन की बहुत ताज़ीम करते थे। सदकात व खैरात भी खूब करतेथे। बड़े अमानतदार और कनाअत शिआर थे। एक मर्तबा उन की अहलिया ने तंगी की शिकायत की, तो उन्होंने अपनी तीन दुकानें जिन की सालाना आमदनी बीस दीनार थी, उन को खर्च के लिए देदीं। जब बीवी ने उस को कम समझा, तो उन्होंने कहा के इस के अलावा मेरे पास कुछ नहीं है और जो कुछ तुम मेरे पास देखती हो, वह सब मुसलमानों का है,मैं तो महज़ खजान्ची हूँ मैं तुम्हारी खातिर इस अमानत में खयानत कर के जहन्नम में जाना नहीं चाहता । उन की सब से बड़ी आरज़ू "बैतुल मकदिस" को फ़तह करना था, मगर उन की तमन्ना पूरी नहीं हो सकी और सन ५६९ हिजरी में उन का इन्तेकाल हो गया; लेकिन बैतुल मकदिस को उन के सिपह सालार सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सन ५८३ हिजरी में फतह कर लिया । इब्ने असीर लिखते हैं के खुलफ़ाए राशिदीन और उमर इब्ने अब्दुल अज़ीज़ के बाद नूरुद्दीन से बेहतर सीरत और उन से ज़ियादा आदिल इन्सान मेरी नज़र से नहीं गुज़रा ।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — गूंगे का अच्छा होना

रसूलुल्लाह ﷺ हज्जतुल विदाअ में जब जमर-ए-अक्बा की रमी कर के वापस होने लगे, तो एक औरत अपने एक छोटे बच्चे को ले कर हाज़िरे खिदमत हुई और अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मेरे इस बच्चे को ऐसी बीमारी लग गई है के बात भी नहीं कर सकता, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने एक बर्तन में पानी मंगवाया और दोनों हाथों को धोया और कुल्ली की और फिर वह बरतन उस औरत के हवाले करने के बाद फ़र्माया : "इस में से बच्चे को पिलाती रहना और थोड़ा थोड़ा इस पर छिड़कती रहना और अल्लाह तआला से शिफा की दुआ करती रहना।" हज़रत उम्मे जुंदुब رضي الله عنها फ़र्माती हैं के एक साल बाद मेरी उस औरत से मुलाकात हुई, तो मैं नें पूछा : बच्चे का क्या हाल है ? तो उस ने कहा : (अल्हम्दुलिल्लाह) ठीक हो गया और इतनी ज़ियादा समझ आ गई के जितनी बड़े लोगों में भी नहीं होती।

[इब्ने माजा : ३५३२, उम्मे जुंदुब رضي الله عنها]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — मज़दूर को पूरी मज़दूरी देना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मैं कयामत के दिन तीन लोगों का मुकाबिल बन कर उन से झगड़ूगा, (उन्हीं में से एक) वह शख्स है, जिस ने किसी को मज़दूरी पर रखा और उस से पूरा पूरा काम लिया, मगर उस को पूरी मज़दूरी नहीं दी ।"

[इब्ने माजा : २४४२, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

खुलासा : मज़दूर को मुकम्मल मज़दूरी देना वाजिब है ।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — नफ़ा बख्श इल्म के लिए दुआ

हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه फर्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ फ़र्माते थे :

((اَللّٰهُمَّ انْفَعْنِيْ بِمَا عَلَّمْتَنِيْ وَعَلِّمْنِيْ مَا يَنْفَعُنِيْ وَزِدْنِيْ عِلْمًا))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! जो इल्म तू ने मुझे दिया है इस से नफ़ा अता फ़र्मा और मुझे नफ़ा बख्श इल्म अता फ़र्मा और मेरे इल्म में ज़ियादती अता फ़र्मा । [तिर्मिज़ी : ३५९९]

नंबर (५) : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	यतीम की पर्वरिश करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मुसलमानों में बेहतरीन घर वह है, जिस में कोई यतीम हो और उस से अच्छा सुलूक किया जाए और मुसलमानों में बदतरीन घर वह है जिस में कोई यतीम हो और उस के साथ बुरा सुलूक किया जाए ।" [इब्ने माजा : ३६७९, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (६) : एक गुनाह के बारे में	कंजूसी करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो लोग अल्लाह तआला के अता कर्दा माल व दौलत को (खर्च करने में) बुख्ल करते हैं, वह बिलकुल इस गुमान में न रहें के (उन का यह बुख्ल करना) उन के लिए बेहतर है, बल्के वह उन के लिए बहुत बुरा है, कयामत के दिन उन के जमा कर्दा माल व दौलत को तौक बना कर गले में पहना दिया जाएगा और आस्मान व ज़मीन का मालिक अल्लाह तआला ही है और अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल से बाखबर है । [सूर-ए-आले इमरान : १८०]

नंबर (७) : दुनिया के बारे में	दुनिया की चीज़ें चंद रोज़ा

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो कुछ भी तुम को दिया गया है, वह सिर्फ़ चंद रोज़ा ज़िंदगी के लिए है और वह उस की रौनक है और जो कुछ अल्लाह तआला के पास है, वह उस से कहीं बेहतर और बाकी रहने वाला है । क्या तुम लोग इतनी बात भी नहीं समझते ? [सूर-ए-कसस : ६०]

नंबर (८) : आखिरत के बारे में	मोमिन के साथ कब्र का सुलूक

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब मोमिन बन्दे को दफ्न किया जाता है, तो कब्र उस से कहती है: तुम्हारा आना मुबारक हो, मेरी पुश्त पर चलने वालो में तुम मुझे सब से ज़ियादा महबूब थे, जब तुम मेरे हवाले कर दिए गए और मेरे पास आ गए, तो तुम आज मेरा हुस्ने सुलूक देखोगे, तो जहां तक नज़र जाती है, कब्र कुशादा हो जाती है और उस के लिए जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया जाता है।"

[तिर्मिज़ी : २४६०, अन अबी सईद खुदरी ﷺ]

नंबर (९) : तिब्बे नब्वी से इलाज	दिल की कमज़ोरी का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम लोग संतरे को इस्तेमाल किया करो, क्योंकि यह दिल को मज़बूत बनाता है ।" [कंज़ुल उम्माल : २८२५३, अन अब्दुर्रहमान बिन दलहम ﷺ]

नंबर (१०) : नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस शख्स को हदिया दिया जाए, अगर उस के पास भी देने के लिए कुछ हो, तो उस को बदले में हदिया देने वाले को दे देना चाहिए और अगर कुछ न हो तो (बतौरे शुक्रिया) देने वाले की तारीफ़ करनी चाहिए, क्यों कि जिस ने तारीफ़ की उस ने शुक्रिया अदा कर दिया और जिस ने छुपाया उस ने नाशुक्री की ।" [अबू दाऊद : ४८१३, अन जाबिर ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

१७ ज़िल हिज्जा

नंबर (१): इस्लामी तारीख — सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी رحمة الله عليه जिन्हें फ़ातिहे बैतुल मुकद्दस कहा जाता है, छटी सदी हिजरी के बड़े ही नामवर और काम्याब बादशाह गुज़रे हैं। वालिद की तरफ़ निसबत करते हुए उन्हें "अय्यूबी" कहा जाता है। उन की पर्वरिश एक दर्मियानी दर्जे के शरीफ़ ज़ादा खानदान में सिपाही की हैसियत से हुई। बादशाह बनने के बाद उन्हों ने अपनी पूरी ज़िंदगी बड़े ही मुजाहदे और सब्र के साथ गुज़ारी। उन्हों ने अपनी ज़िंदगी का मक्सद सिर्फ़ एक ही बना लिया था के दुनिया में अल्लाह का नाम कैसे बलंद हो। उन के कारनामों में सब से बड़ा कारनामा यह है के उन्होंने क़िबल-ए-अव्वल यानी बैतुल मुकद्दस को आज़ाद कराया, जो तकरीबन नव्वे साल से इसाइयों के कब्ज़े में था। यह वही क़िबल-ए-अव्वल है जहाँ हुज़ूर ﷺ ने अम्बियाए किराम عليهم السلام की इमामत की थी और फिर वहाँ से आसमान का सफ़र किया था, इसाइयों ने जब बैतुल मुकद्दस पर कब्ज़ा किया था, तो मुसलमानों पर ज़ुल्म व सितम की इन्तिहा कर दी थी, मगर उसी बैतुल मुकद्दस पर नव्वे साल के बाद जब मुसलमानों का दोबारा कब्ज़ा हुआ, तो सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उन से बदला लेने के बजाए यह एलान करा दिया के जो बूढ़े आदमी फ़िद्या की रकम नहीं दे सकते, वह आज़ाद किए जाते हैं के वह जहाँ चाहें चले जाएँ। उस के बाद सुब्ह से शाम तक वह लोग अमन के साथ शहर से निकलते रहे। इस के साथ साथ उन को बैतुल मुकद्दस की ज़ियारत की भी आम इजाज़त दे दी। सुलतान सलाहुद्दीन का यह वह एहसान व करम था जिस को ईसाई दुनिया आज भी नहीं भुला सकती है।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — बर्फ़ीले पहाड़

बाज़ ऊँचे इलाकों और बलंद पहाड़ों पर सर्द मौसम की वजह से बर्फ़ जम जाती है और पहाड़ों की चोटी बर्फ़ से ढक जाती है, जब के ज़मीन की सतह से बलंद और सूरज के क़रीब होने की वजह से सख़्त गर्मी होनी चाहिए थी और पानी भी ठंडा होने के बजाए गर्म होता, लेकिन इस के बावजूद पहाड़ों पर सख़्त बर्फ़ जमी रहती है और सर्द माहौल रहता है। यही नहीं, बल्के जितना ऊपर जाएँ और ज़ियादा सर्दी महसूस होगी। इन पहाड़ों की चोटियों पर बर्फ का जमाना और सर्द माहौल का बनाना अल्लाह की कितनी अज़ीम कुदरत है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सुब्ह की नमाज़ अदा करने पर हिफ़ाज़त का ज़िम्मा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने सुब्ह (यानी फ़ज्र) की नमाज़ अदा की, वह अल्लाह की हिफ़ाज़त में है।"

[मुस्लिम : १४९३, अन जुंदुब बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — अपने बच्चों से प्यार व मुहब्बत करना

हज़रत अकरअ बिन हाबिस رضي الله عنه की मौजूदगी में रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत हुसैन बिन अली رضي الله عنه का

बोसा लिया। यह देख कर हज़रत अक़्रअ बिन हाबिस ﷺ ने कहा : मेरे दस बेटे हैं, मैं ने कभी किसी का बोसा नहीं लिया। रसूलुल्लाह ﷺ ने यह सुन कर फ़र्माया : "जो रहम नहीं करता उस पर रहम भी नहीं किया जाता।" [अबू दाऊद : ५२१८, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | क़ुर्आन की तिलावत करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : क़ुर्आन शरीफ़ की तिलावत किया करो, इस लिए के क़यामत के दिन यह अपने साथी (यानी पढ़ने वाले) की शफ़ाअत करेगा। [मुस्लिम : १८७४, अन अबी उमामा ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | रिश्वत ले कर ना हक फ़ैसला करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स कुछ (रिश्वत) ले कर ना हक फ़ैसला करे, तो अल्लाह तआला उसे इतनी गहरी जहन्नम में डालेगा, के पाँच सौ बरस तक बराबर गिरते चले जाने के बावजूद, उस की तह तक न पहुँच पाएगा।" [तर्गीब व तर्हीब : ३१७६, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | कामयाब कौन है?

रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़र्माया : "कामयाब हो गया वह शख्स जिस ने इस्लाम क़बूल किया और उस को ज़रूरत के ब क़द्र रोज़ी मिली और अल्लाह तआला ने उस को दी हुई रोज़ी पर कनाअत करने वाला बना दिया।" [मुस्लिम : २४२६, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | अहले जन्नत का इकराम

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : यक़ीनन नेक लोग आराम में होंगे, मसहरियों पर बैठे हुए नज़ारा कर रहे होंगे, तुम उन के चेहरों से जन्नत के ऐश व आराम का अंदाज़ा कर लोगे। उन को सील बंद ख़ालिस शराब पिलाई जाएगी, उस पर मुश्क की मुहर लगी होगी, ऐसी पाकिज़ा शराब के लिए रग़बत करने वालों को रग़बत करनी चाहिए, उस शराब में तस्नीम के पानी की मिलावट होगी, वह एक ऐसा चश्मा है, जिस में से नेक बन्दे पियेंगे। [सूर-ए-मुतफ़्फ़िफ़ीन : २२ ता २८]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | गाय के दूध का फ़ायदा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "गाय का दूध इस्तेमाल किया करो, क्योंकि वह हर क़िस्म के पौदों को चरती है (इस लिए) उस के दूध में हर बीमारी से शिफ़ा है।" [मुस्तदरक : ८२२४, अन इब्ने मसऊद ﷺ]

नंबर (१०): क़ुर्आन की नसीहत

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : क्या ईमान वालों के लिए अभी तक ऐसा वक्त नहीं आया, के उन के दिल अल्लाह की नसीहत और जो दीने हक़ नाज़िल हुआ है, उस के सामने झुक जाएँ और वह उन लोगों की तरह न हो जाएँ जिन को उन से पहले किताब दी गई थी। यानी वह वक्त आ चुका है के मुसलमानों के दिल क़ुर्आन और अल्लाह की याद और उस के सच्चे दीन के सामने झुक जाएँ। [सूर-ए-हदीद : १६]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | दुआ करना बेकार नहीं जाता

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: "बे शक तुम्हारा रब शर्म व हया करने वाला और बड़ा सखी है। वह अपने बन्दे से इस बात पर शर्माता है के बंदा उस की तरफ अपने हाथ उठाए और वह उसे ख़ाली लौटाए।"

[तिर्मिज़ी : ३५५६, अन सलमान फ़ारसी رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | यतीमों का माल मत खाओ

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : यतीमों के माल उन को देते रहा करो और पाक माल को नापाक माल से न बदलो और उन का माल अपने माल के साथ मिला कर मत खाओ; ऐसा करना यकीनन बहुत बड़ा गुनाह है।

[सूर-ए-निसा : २]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | माल व औलाद कुर्बे आखिरत का ज़रिया नहीं

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद ऐसी चीज़ नहीं, जो तुम को दर्जे में हमारा मुकर्रब बना दे, मगर हाँ ! जो ईमान लाए और नेक अमल करता रहे तो ऐसे लोगों को उन के आमाल का दो गुना बदला मिलेगा और वह जन्नत के बाला खानों में आराम से रहेंगे।

[सूर-ए-सबा : ३७]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | गुनहगारों के साथ कब्र का सुलूक

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब गुनहगार या काफ़िर बन्दे को दफ़्न किया जाता है, तो कब्र उस से कहती है : तेरा आना ना मुबारक हो, मेरी पीठ पर चलने वालों में तुम मुझे सब से ज़ियादा ना पसंद थे, जब तुम मेरे हवाले कर दिए गए और मेरे पास आ गए, तो तुम आज मेरी बद सुलूकी देखोगे, फिर कब्र उस को दबाती है और उस पर मुसल्लत हो जाती है, तो उस की पसलियाँ एक दूसरे में घुस जाती हैं।"

[तिर्मिज़ी : २४६०, अन अबी सईद رضي الله عنه]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | खरबूज़े के फ़वाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "खाने से पहले खरबूज़ा का इस्तेमाल पेट को बिल्कुल साफ़ कर देता है और बीमारी को जड़ से खत्म कर देता है।"

[इब्ने असाकिर : ६/१०२]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

हज़रत अनस رضي الله عنه की वालिदा ने सरकारे दो आलम ﷺ की खिदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया : मुझे कुछ वसिय्यत फ़र्माइये। आप ﷺ ने इर्शाद फ़र्माया : "गुनाहों को छोड़ देना बेहतरीन हिजरत है, फ़राइज़ की हिफ़ाज़त करना बेहतरीन जिहाद है और ज़िक्रे इलाही ब कसरत करती रहो, इस लिए के तुम अल्लाह के यहाँ इस से ज़ियादा महबूब चीज़ ले कर नहीं आ सकती हो।"

[तबरानी कबीर : २०८२१]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

१९ ज़िल हिज्जा

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत मौलाना जलालुद्दीन रूमी رحمة الله عليه

आप का नाम मुहम्मद, लक़ब जलालुद्दीन और मौलाना रुम के नाम से मशहूर हैं, बल्ख में ६ रबीउल अव्वल सन ६०४ हिजरी को पैदा हुए, आप के वालिद शेख मुहम्मद बहाउद्दीन अपने ज़माने के बड़े आलिम और मशहूर बुज़ुर्ग थे, इब्तिदाई तालीम अपने वालिद से हासिल की, बादशाहे वक्त के किसी बात से नाराज़ हो कर वहाँ से शेख बहाउद्दीन अपने बेटे जलालुद्दीन को ले कर कौनिया चले गए, उस वक्त जलालुद्दीन रुमी की उम्र अट्ठारा या उन्नीस साल थी, आप ने कौनिया में तकरीबन आठ साल मुख्तलिफ़ असातिज़ा से इल्म हासिल करते हुए मुल्के शाम के इल्मी शहर "हल्ब" का रुख किया और मदरसा हलाविया में रह कर शेख उमर बिन अहमद और बाज़ दूसरे मदारिस के माहिर व मुमताज़ उलमा की खिदमत में रह कर तमाम उलूम में मुकम्मल महारत हासिल कर ली, उस वक्त मौलाना जलालुद्दीन की उम्र चालीस साल हो चुकी थी, जब उन के वालिदे मोहतरम की वफ़ात पर सय्यद बुरहानुद्दीन तिर्मिज़ से उन की ताज़ियत के लिए तशरीफ़ लाए, तो उन का इम्तेहान ले कर फ़र्माया के बस अब इल्मे बातिन रह गया है, तुम्हारे वालिद की यह "अमानत" अब मैं तुम्हारे हवाले करना चाहता हूँ। चुनान्चे नौ साल तक मौलाना रुमी ने उन की सोहबत में रह कर इल्मे बातिन और मारिफ़त व सुलूक के मरातिब तय कर लिए।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — सितारे

रात में खुले आस्मान पर बेशुमार सितारे चमकते हुए नज़र आते हैं। इन सितारों की चमक और रौशनी से आसमान बड़ा खूब सूरत दिखाई देता है। खुद अल्लाह तआला फ़र्माता है : हम ने आसमाने दुनिया को रौशन चरागों से ज़ीनत अता फ़र्माई। यह कितनी अजीब बात है के हज़ारों साल से करोड़ों सितारे आसमान पर ऐसे जगमगा रहे हैं के कभी रौशनी खत्म नहीं होती। लोग इन सितारों के ज़रिए रास्ते और मंज़िल की सिम्त मालूम कर लेते हैं। आज के तरक़्क़ी याफ़्ता ज़माने में भी रात में जहाज़ के कपतान सितारों की मदद से रुख मालूम करते हैं। इन सितारों का बराबर चमकना और वक्ते मुकर्ररा पर निकलना अल्लाह की कुदरत की अज़ीम निशानी है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — तकदीर पर ईमान लाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हर चीज़ तकदीर से है, यहाँ तक के आदमी का नाकारा और नाक़ाबिल होना और क़ाबिल व होशियार होना (भी तक़दीर ही से है)।"

[मुस्लिम : ६७५१, अन अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه]

फ़ायदा : तकदीर कहते हैं, के दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है, अच्छा हो या बुरा, वह सब अल्लाह तआला के हुक्म और उस की मशिय्यत से है, जिस को अल्लाह तआला पहले ही तय कर चुका है, हमारे ऊपर इस का यकीन रखना और इस पर ईमान लाना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	ख़ुशबू को रद नहीं करना चाहिए

रसूलुल्लाह ﷺ को जब खूशबू का हदिया दिया जाता, तो आप ﷺ उस को रद नहीं फ़र्माते थे।
[तिर्मिज़ी : २७८९, अन अनस बिन मालिक رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	हाजी से मुलाकात करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब किसी हाजी से मुलाक़ात हो, तो उस को सलाम करो और उस से मुसाफ़ा करो और उस से घर में दाखिल होने से पहले अपने लिए दुआए मग़फ़िरत की दरख्वास्त करो, क्योंकि वह अपने गुनाहों से पाक व साफ़ हो कर आया है।" [मुस्नदे अहमद : ५३४८, अन इब्ने उमर رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	मुसलमानों के कत्ल में मदद करने की सज़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स किसी मुसलमान को कत्ल करने में मदद करे, अगरचे एक लफ़्ज़ बोल कर ही हो, तो वह क़यामत के दिन इस हालत में आएगा, के उस की पेशानी पर लिखा होगा के यह शख्स अल्लाह की रहमत से महरूम है।" [इब्ने माजा : २६२०, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया से बे रग़बती पैदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "मौत का (ज़िक्र) दुनिया से बे रग़बत करने और आखिरत की तलब के लिए काफ़ी है।" [शोअबुल ईमान : १०१५९, अर रबीअ बिन अनस رضي الله عنه]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	अहले जन्नत का इन्आम

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : उस दिन बहुत से चेहरे तर व ताज़ा होंगे अपने (नेक) आमाल की वजह से खुश होंगे ऊँचे ऊँचे बागों में होंगे। वह उन बागों में कोई बेहुदा बात नहीं सुनेंगे। उन में चश्में बह रहे होंगे। [सूर-ए-गाशिया : ८ ता १२]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	तल्बीना से इलाज

हज़रत आयशा رضي الله عنها बीमार के लिए तल्बीना तय्यार करने का हुक्म देती थीं और फ़र्माती थीं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फर्माते हुए सुना के "तल्बीना बीमार के दिल को सुकून पहुँचाता है और रंज व गम को दूर करता है।" [बुखारी : ५६८९, अन आयशा رضي الله عنها]

फ़ायदा : जौ (Barley) को कूट कर दूध में पकाने के बाद मिठास के लिए उस में शहद डाला जाता है; जिसे तल्बीना कहते हैं।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और हर शख्स को इस बात पर गौर करना चाहिए के उस ने कल (आखिरत) के लिए क्या आगे भेजा है और अल्लाह से डरते रहो और अल्लाह तआला को तुम्हारे सब आमाल की खबर है। [सूर-ए-हश्र : १८]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुरआन व हदीस की रौशनी में)

② ज़िल हिज्जा

नंबर ①: इस्लामी तारीख — हज़रत जलालुद्दीन रुमी رحمۃ اللہ علیہ की इल्मी खिदमात

मौलाना जलालुद्दीन रुमी رحمۃ اللہ علیہ चालीस साल में तमाम उलूमे इस्लामिया की तकमील कर के दर्स व तदरीस वाज़ व नसीहत, फ़त्वा नवेसी और इल्मे दीन की खिदमत में मशगूल थे, के शम्स तबरेज़ को उन के शेख कमालुद्दीन जुन्दी ने हुक्म दिया के रुम जा कर एक दिल जले को रौशन कर आओ, वह हुक्म सुनते ही चल दिए और रात के वक्त एक सराए में ठहर गए, सामने ही बलंद चबूतरे पर शहर के बड़े लोग तफ़रीह के लिए बैठते थे, हज़रत शम्स भी उसी चबूतरे पर बैठा करते, मौलाना रुम ने यहीं उन से मुलाकात की और एक दूसरे को पहचाना, दोनों बुज़ुर्ग छे महीने तक सलाहुद्दीन ज़रकोब के हुजरे में मुजाहदा करते रहे, इस के बाद आप पढ़ना पढ़ाना छोड़ कर शम्स की खिदमत में रहने लगे, एक लम्हे के लिए भी जुदा नहीं होते थे, पूरे शहर में शोर बरपा हो गया के एक दीवाने ने मौलाना पर ऐसा जादू कर दिया है के अब वह किसी काम के नहीं रहे, शम्स तबरेज़ फ़ितने के खौफ़ से चुपके से निकल कर दिमश्क चले गए । जुदाई के इस ग़म में जलालुद्दीन रुमी किसी से कुछ नहीं बोलते थे, जब कभी ज़बान खुलती तो अशआर पढ़ते, तो शागिर्द उन को लिख लिया करते जमा हो कर यही अशआर मस्नवी बन गए । जिन के ज़रिए अकाइद व कलाम की बहस, मुअ्जिज़ा व तसव्वुफ़, तौहीद व इबादत, फ़ल्सफ़ा व अख्लाक और साइन्स जैसे उलूम की दिलकश अन्दाज़ में तशरीह की गई है । इन उलूम से पता चलता है के मस्नवी सिर्फ़ तसव्वुफ़ ही की किताब नहीं, बल्के इल्मे कलाम का भी बेहतरीन मजमुआ है। बिल आखिर पाँच जमादिस सानी सन ६७२ हिजरी इतवार के दिन इल्म का यह आफ़ताब भी हमेशा के लिए गुरुब हो गया ।

नंबर ②: हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — कंकरियों से तस्बीह की आवाज़ का आना

हज़रत अबू ज़र رضی اللہ عنہ फ़र्माते हैं के हम एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ के साथ बैठे हुए थे। आप ﷺ के हाथ में चंद कंकरियाँ थीं, अचानक उन से तस्बीह की आवाज़ आने लगी जिस को सारी मजलिस सुन रही थी, फिर हुज़ूर ﷺ ने वह कंकरियाँ बारी बारी हज़रत अबू बक्र رضی اللہ عنہ फिर हज़रत उमर رضی اللہ عنہ और फिर हज़रत उस्मान رضی اللہ عنہ के हाथ में दी, तो उन के हाथों में भी तस्बीह पढ़ती थीं, लेकिन जब इन के अलावा लोगों को दी, तो कंकरियों ने तस्बीह पढ़ना बंद कर दिया ।

[दलाइलुन्नुबुव्वह लिल असफ़हानी : ३२७, अन अबी ज़र رضی اللہ عنہ]

नंबर ③: एक फ़र्ज़ के बारे में — जमात के इरादे से मस्जिद जाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स अच्छी तरह वुज़ू करे फ़िर मस्जिद में नमाज़ के लिए जाए और वहाँ पहुँच कर मालूम हो के जमात हो चुकी, फिर भी उस को जमात की नमाज़ का सवाब होगा और उस सवाब की वजह से उन लोगों के सवाब में कुछ कमी नहीं होगी, जिन्होंने जमात से नमाज़ पढ़ी है।"

[अबू दाऊद : ५६४, अन अबी हुरैरह رضی اللہ عنہ]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	मौत तक दीन पर जमे रहने की दुआ

हज़रत उम्मे सलमा ﷵ ने फ़र्माया : रसूलुल्लाह ﷺ अक्सर यह दुआ मांगते थे :

((يَامُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِيْ عَلٰى دِيْنِكَ))

तर्जमा : ऐ दिलों के फेरने वाले ! मेरे दिल को अपने दीन पर इस्तिकामत नसीब फ़र्मा । [तिर्मिज़ी : ३५२२]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	अल्लाह ही के लिए मुहब्बत करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स अल्लाह ही के लिए मुहब्बत करे और अल्लाह ही के लिए नफ़रत करे और अल्लाह ही के लिए खैरात करे और अल्लाह ही के लिए देने से रुक जाए, तो उस शख्स ने ईमान मुकम्मल कर लिया ।" [अबू दाऊद : ४६८१, अन अबी उमामा ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	अल्लाह और उस के रसूल ﷺ की ना फ़र्मानी

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो शख्स अल्लाह और उस के रसूल की ना फ़र्मानी करेगा और उस की (मुकर्रर की हुई) हदों से आगे बढ़ेगा, तो अल्लाह तआला उस को आग में दाखिल करेगा जिस में वह हमेशा रहेगा और उस को ज़लील व रूस्वा करने वाला अज़ाब होगा। [सूर-ए-निसा : १४]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनियावी ज़िंदगी एक धोका है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ लोगो ! बेशक अल्लाह तआला का वादा सच्चा है, तो कहीं तुम को दुनियवी ज़िंदगी धोके में न डाल दे और तुम को धोके बाज़ शैतान किसी धोके में न डाल दे, यकीनन शैतान तुम्हारा दुश्मन है, तुम भी उसे अपना दुश्मन ही समझो ! वह तो अपने गिरोह (के लोगों को) इस लिए बुलाता है के वह भी दोज़ख वालों में शामिल हो जाएँ। [सूर-ए-फ़ातिर : ५ ता ६]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	क़यामत में मुँह पर मुहर लगा दी जाएगी

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "तुम जब कयामत के दिन पेश होंगे, तो तुम्हारे मुँह पर मुहर लगा दी जाएगी और आदमी की सब से पहली चीज़ जो बात करेगी, वह उस की रान और हथेली होगी।" [मुस्नदे अहमद : १९५२२, मुआविया बिन हैदा ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	मेदे की सफ़ाई

हज़रत अली ﷺ ने फ़र्माया : "अनार को उस के अंदरुनी छिल्के समेत खाओ, क्योंकि यह मेदे को साफ़ करता है।" [मुस्नदे अहमद : २२७२६]

फ़ायदा : अल्लामा इब्ने कय्यिम رحمه الله फ़र्माते हैं अनार जहाँ मेदे को साफ़ करता है, वहीं पुरानी खांसी के लिए भी बड़ा कार आमद फल है ।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "लोगों को अच्छी बातों का हुक्म करो और बुरी बातों से रोको, वरना करीब है के अल्लाह तआला तुम पर अपनी तरफ़ से कोई अज़ाब नाज़िल करे और तुम दुआ करो तो तुम्हारी दुआ कबूल न हो ।" [तिर्मिज़ी : २१६९, अन हुज़ैफा बिन यमान ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

(२१) ज़िल हिज्जा

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया رحمة الله عليه

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया رحمة الله عليه चिश्तिया सिलसिले के मशहूर बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। आप का आबाई वतन बुखारा है मगर पैदाइश बदायूं में सन ६३६ हिजरी में हुई। पाँच साल के थे के वालिद का इन्तेकाल हो गया, वालिदा ने आप की पर्वरिश और तर्बियत फ़र्माई। उलूमे ज़ाहिरी में कमाल हासिल करने के बाद उलूमे बातिनी के लिए हज़रत फ़रीद गंज की खिदमत में हाज़िर हुए और बैअत व खिलाफ़त से सरफराज़ हुए, फिर दावते दीन को ज़िंदगी का मक्सद बना लिया। अहदे अलाई के आखरी चंद सालों में शराब व कबाब, फ़िस्क व फुजूर, किमार बाज़ी और बेशुमार दीगर बुराइयाँ बिल्कुल आम थीं, लेकिन आप की मेहनत के ज़रिए हिंदुस्तान के अक्सर मुसलमान इबादत, तसव्वुफ़ और जुहद की तरफ़ माइल हो गए थे, आप की खानक़ाह में इस क़द्र लोग आते के बादशाह के दरबार में भी इतनी भीड़ न होती। बादशाहों से मेल जोल और मुलाकात पसंद नहीं फ़र्माते, हत्ता के एक मर्तबा सुलतान अलाउद्दीन खिलजी ने मुलाकात के लिए बहुत इसरार किया, तो फ़र्माया के फ़कीर के यहां दो दरवाज़े हैं, अगर बादशाह एक दरवाज़े से आएगा, तो फ़कीर दूसरे दरवाज़े से निकल जाएगा, इन्तेकाल से चालीस दिन पहले खाना, पीना बिल्कुल छोड़ दिया था, हर वक्त रोते रहते, आँसू थमते ही न थे। सन ७२५ हिजरी में आप का इन्तेकाल हो गया।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — रंग

रंगों के ज़रिये हम बहुत सी चीज़ों को पहचान लेते हैं, अगर सब चीज़ों का एक ही रंग होता, तो उन के दर्मियान फ़र्क करना बहुत मुश्किल हो जाता। क्योंकि बाज़ चीज़ों की शक्ल एक जैसी होती है लेकिन रंग की वजह से वह पहचान ली जाती है। उन चीज़ों का फ़र्क रंगों ही से मालूम होता है। जरा भी गौर करो तो हर फल का रंग अंदर और बाहर से एक दम अलग अलग है जिस से फल वगैरह का पहचानना आसान हो जाता है और कच्चे पक्के का पता चल जाता है। मुख्तलिफ रंगों का पाया जाना अल्लाह की कुदरत की ज़बरदस्त अलामत है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — सच्ची गवाही देना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ ईमान वालो ! इन्साफ़ पर कायम रहते हुए अल्लाह के लिए गवाही दो, चाहे वह तुम्हारी ज़ात, वालिदैन और रिश्तेदारों के खिलाफ़ ही (क्यों न) हो।

[सूर-ए-निसा : १३५]

फ़ायदा : सच्ची गवाही देना और झूटी गवाही देने से बचना ज़रुरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — अंगूठी दाहिने हाथ में पहनना

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه कहते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा के अंगूठी दाहिने हाथ में पहने हुए थे।

[तिर्मिज़ी : १७४२, अन इब्ने अब्बास رضي الله عنه]

नंबर (१): इस्लामी तारीख — हज़रत मुजद्दिद अल्फे सानी शेख अहमद सरहिंदी رحمة الله عليه

हज़रत मुजद्दिद अल्फे सानी सरहिंदी رحمة الله عليه गयारहवीं सदी हिजरी के हिंदुस्तान के बलंद पाया आलिम, दाई इलल्लाह और मुजाहिद थे, आप की पैदाइश सन ९७१ हिजरी में पंजाब के इलाके सरहिंद में हुई, आप हज़रत उमर رضي الله عنه की नस्ल से हैं। तालीम की इब्तिदा हिफ़्ज़े कुर्आन से की और वालिद साहब की खिदमत में ही तालीम का सिलसिला जारी रहा और सतरा साल की उम्र में फ़ारिगुत तहसील हो गए। शुरु में वालिद साहब से तरीक-ए-चिशतिय्या में बैअत की फिर सिलसिल-ए-कादिरिय्या भी हासिल किया, वालिद साहब की वफात के बाद हज़रत ख्वाजा बाकी बिल्लाह से बैअत हुए और खिलाफत अता हुई । उस के बाद दावत व तबलीग में मशगूल हो गए, सुन्नत व बिदअत, शरीअत व फ़ल्सफ़ा और तसव्वुफ़े इस्लामी व रहबानियत के फ़र्क को वाज़ेह किया। दीन की खातिर उन को कैद खाने की मशक्कत भी झेलना पड़ी उन के ज़रिए अल्लाह तआला ने बादशाह अक्बर के दीने इलाही के नाम से बनाए हुए उस फितने का खात्मा किया। जिसे उस ने बहुत से मज़हबों की रसमों को मिला कर बनाया था । आप की वफ़ात सन १०३४ हिजरी में ६३ साल की उम्र में हुई और अपने वतन सरहिंद में ही मदफ़ून हुए । हज़रत शेख अहमद सरहिंदी رحمة الله عليه की सब से बड़ी इल्मी, इस्लाही और तजदीदी यादगार उन के मकतूबात हैं आप के तजदीदी काम की बुनियाद पर आप को मुजद्दिद अल्फे सानी का लकब दिया गया ।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — घी में बरकत

हज़रत हम्ज़ह बिन अम्र अस्लमी رضي الله عنه फ़र्माते हैं के गज़्व-ए-तबूक के सफर में घी की मशक की ज़िम्मेदारी मेरी थी। दौराने सफ़र मैं ने उस में से थोड़ा सा घी निकाला और हुज़ूर ﷺ के लिए खाना तय्यार किया और मशक में देखा तो घी बहुत ही कम बचा था। मैं ने वह मश्क धूप में रख दी और मैं सो गया, अचानक मैं ने घी के बहने की आवाज़ सुनी, तो मेरी आँख खुल गई, देखा तो घी बह रहा था । मैं जल्दी से खड़ा हुआ और मशक का मुंह पकड़ लिया हुज़ूर ﷺ ने मुझे देख कर फर्माया : "अगर उस को छोड़ देते तो पूरी वादी घी से बहने लगती ।"

[दलाइलुन्नुबुव्वह लिल असफ़हानी : ३३४, अन हम्ज़ह बिन अम्र असलमी رضي الله عنه]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — वसिय्यत पूरी करना

कुर्आन में अल्लाह तआला ने चंद वारिसों के हिस्सों का ज़िक्र करने के बाद फ़र्माया : (यह सब वर्सा के हिस्सों की तक्सीम) मय्यत की वसिय्यत की हुई चीज़ों को पूरा करने और कर्ज़ अदा करने के बाद की जाएगी।

[सूर-ए-निसा:१२]

फायदा : मय्यत ने अगर किसी के हक में कुछ वसिय्यत की हो,तो वारिसों को उन का हिस्सा देने से पहले मय्यत के छोड़े हुए माल के तिहाई हिस्से से वसिय्यत पूरी करना वाजिब है ।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — औलाद को नमाज़ी बनाने की दुआ

अपनी औलाद को नमाज़ का पाबंद बनाने के लिए इस दुआ का एहतेमाम करना चाहिए। यह हज़रत इब्राहीम عليه السلام की दुआ है । जो उन्होंने अपनी औलाद को मक्का मुकर्रमा में छोड़ते

वक्त पढ़ी थी : ﴿رَبِّ اجْعَلْنِىْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِىْ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ۝﴾

तर्जमा : ऐ मेरे रब ! मुझ को और मेरी औलाद को नमाज़ी बना दे। ऐ मेरे रब ! (हमारी) दुआओं को कबूल फ़र्मा ले।

[सूर-ए- इब्राहीम : ४०]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | अज़ान शुरु होते ही दुआ पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स मोअज़्ज़िन को अज़ान देते हुए सुने और यह कहे:

((اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَبِمُحَمَّدٍ رَّسُوْلًا وَبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا))

तो उस के गुनाह माफ़ कर दिए जाएँगे।"

[मुस्लिम : ८५१, अन सअद बिन अबी वक्कास ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | सूद खोर से जंग का एलान

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : अगर तुम (सूद लेने से) बाज़ नहीं आए, तो अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ से जंग का एलान सुन लो। लिहाज़ा हर मुसलमान को सूद से बचना चाहिये।

[सूर-ए- बकरा : २७९]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | अल्लाह ही रोज़ी तकसीम करते हैं

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : दुनियावी ज़िंदगी में उन की रोज़ी हम ने ही तकसीम कर रखी है और एक दूसरे पर मर्तबे के एतेबार से फ़ज़ीलत दे रखी है, ताके एक दूसरे से काम लेता रहे और आप के रब की रहमत इस (दुनियावी माल) से कहीं ज़ियादा बेहतर है, जिस को यह लोग जमा करते फ़िरते हैं।

[सूर-ए- ज़ुखरुफ़ : ३२]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | ज़मीन गवाही देगी

आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फ़र्माई ﴿يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا۝﴾ (उस दिन ज़मीन अपनी सब बातें बयान कर देगी) फिर इर्शाद फ़र्माया : "तुम जानते हो ज़मीन क्या खबरें बयान करेगी? "सहाबा ﷺ ने अर्ज़ किया : अल्लाह और उस के रसूल खूब जानते हैं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़र्माया : "उस की खबरें यह हैं, के वह हर मर्द और औरत के मुतअल्लिक उस अमल की गवाही देगी, जो उस की पीठ पर किया गया था, वह कहेगी : इस ने ऐसा और ऐसा अमल फ़लाँ फलाँ दिन किया था।"

[तिर्मिज़ी : २४२९, अन अबी हुरैरह ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | खत्ना के फ़वाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "पाँच चीज़ें फ़ितरत में से हैं, उन में से एक खत्ना करना है।"

[मुस्लिम : ५९८, अन अबी हुरैरह ﷺ]

फायदा : खत्ना करने से शर्म गाह के कॅन्सर, एगज़ीमा जैसी बीमारियों से हिफ़ाज़त होती है।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "हसद से बचो, क्यों कि हसद आदमी की नेकियों को इस तरह खा जाता है, जिस तरह आग लकड़ी को खा जाती है।"

[अबू दाऊद : ४९०३, अन अबी हुरैरह ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

२३ ज़िल हिज्जा

नंबर १: इस्लामी तारीख — औरंगज़ेब आलमगीर رحمه الله

औरंगज़ेब आलमगीर رحمه الله शाह जहाँ के तीसरे बेटे पंद्रह ज़ीकादा सन १०२७ हिजरी में अर्जुमंद बानो (मुमताज़ महल) के बत्न से पैदा हुए, इब्तिदाई तालीम शेख अबुल वाइज़ हरगामी से और इल्म व अदब मौलवी सय्यद मुहम्मद क़न्नौजी से हासिल किया और दीगर असातिज़ा से दीनी उलूम में महारत हासिल की, इन्होंने सिर्फ़ एक साल में कुर्आनि करीम हिफ़्ज़ कर लिया, उलमा और बुज़ुर्गों से हुस्ने अकीदत और वालेहाना मुहब्बत रखते थे, जब किसी जगह तशरीफ़ ले जाते, तो वहाँ के उलमा व मशाइख की मजलिस में हाज़िर हो कर इल्म व मारिफ़त की बातें सुनते और उन्हें कीमती तोहफ़ा व तहाइफ़ से नवाज़ते, हज़रत ख्वाजा मुहम्मद मासूम और उन के साहब ज़ादे सैफुद्दीन से इल्मे सुलूक व मारिफ़त हासिल किया, उन की इताअत व इबादत का यह हाल था के सुबहे सादिक से पहले उठ कर तहज्जुद पढ़ते और मस्जिद में पहुँच कर फ़ज्र की अज़ान के इन्तेज़ार में किबला रु हो कर बैठे रहते, अज़ान के फ़ौरन बाद सुन्नत अदा फ़र्माते, बा जमात नमाज़ पढ़ कर तिलावते कुर्आन और मुताल-ए-हदीस में मशगूल हो जाते और चाश्त की नमाज़ पढ़ कर खल्वत गाह में तशरीफ़ ले जाते, हमेशा बा वुज़ू रहते, कलिम-ए-तय्यिबा और दीगर वज़ाइफ़ पाबंदी से अदा करते, पीर, जुमेरात और जुमा को रोज़ा रखते और औलिया अल्लाह के साथ ज़िक्र व इबादत में मसरुफ़ रहते।

नंबर २: अल्लाह की कुदरत — तेल

अल्लाह तआला ने नारियल, मूंगफली, सूरज मुखी, सरसों वगैरह के ऐसे बेशुमार पेड़ पौदे बनाए हैं जिस के जरिए हमें मुख्तलिफ़ किस्म का खुशबूदार तेल हासिल होता है और हमारे खाने, लगाने और मालिश वगैरह की ज़रुरत पूरी होती है। गौर करने की बात है के इन पेड़ पौदों को तेल पैदा करने की सलाहियत कौन अता करता है और उन के दानों और बीजों से मुख्तलिफ़ किस्म के रंगों का ज़ाइकादार तेल कौन जमा करता है? यकीनन यह अल्लाह तआला ही की ज़ात है। जिस ने अपनी कुदरत से इन्सानों की ज़रुरत पूरी करने के लिए इतना अच्छा इन्तेज़ाम किया है।

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — बीमार की नमाज़

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "नमाज़ खड़े हो कर अदा करो, अगर ताकत न हो, तो बैठ कर अदा करो और अगर इस पर भी कुदरत न हो तो पहलू के बल लेट कर अदा करो।"

[बुखारी : १११७, अन इमरान बिन हुसैन رضي الله عنه]

फ़ायदा : अगर कोई बीमार हो और खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने पर कादिर न हो, तो रुकू व सजदे के साथ बैठ कर पढ़े; अगर रुकू व सजदे पर भी कादिर न हो तो इशारे से पढ़े और अगर बैठ कर पढ़ने की ताकत न रखता हो तो लेट कर पढ़े।

नंबर ४: एक सुन्नत के बारे में — दुआ के वक्त हाथों को उठाना

रसूलुल्लाह ﷺ दुआ के वक्त हाथों को इतना उठाते थे के आप ﷺ की बगल मुबारक ज़ाहिर हो जाती थी।

[बुखारी : १०३१, अन अनस رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | सुब्ह की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स दिन में एक बार यह दुआ पढ़े:

((اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَصْبَحْتُ اُشْهِدُكَ وَاُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَمَلَائِكَتِكَ وَجَمِيْعَ خَلْقِكَ اِنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ))

तो अल्लाह तआला उस के बदन का चौथा हिस्सा जहन्नम से आज़ाद कर देते हैं और जो दिन में दो बार पढ़े उस का आधा बदन आज़ाद कर देते हैं और जो तीन मर्तबा पढ़े उस के तीन हिस्से आज़ाद कर देते हैं और जो चार मर्तबा पढ़े उस को पूरा ही आज़ाद कर देते हैं।" [अबू दाऊद : ५०६९, अन अनस बिन मालिक ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | झूटी कसम खाने का वबाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स झूटी कसम खाए, ताके उस के ज़रिए किसी मुसलमान का माल हासिल कर ले, तो वह अल्लाह तआला से इस हाल में मुलाकात करेगा के अल्लाह तआला उस पर सख़्त नाराज़ होंगे।" [अबू दाऊद : ३२४३, अन इब्ने मसऊद ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया का कोई भरोसा नहीं

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "इस दुनिया की मिसाल उस कपड़े की सी है, जिस को शुरु से काट दिया जाए और अखीर में एक धागे पर लटका हुआ रह जाए, तो वह धागा कभी भी टूट सकता है। (इसी तरह इस दुनिया का कोई ठिकाना नहीं कभी भी खत्म हो जाएगी)।" [शोअबुल ईमान : ९८७५, अन अनस ﷺ]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | कयामत के दिन ज़मीन का लरज़ना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जब ज़मीन पूरी हरकत से हिला दी जाएगी और ज़मीन अपने बोझ (मुर्दे और खज़ाने) बाहर निकाल देगी और इन्सान कहेगा के इस ज़मीन को क्या हो गया है? उस दिन ज़मीन अपनी बातें बयान कर देगी, इस लिए के आप के रब ने उस को हुक्म दिया होगा। [सूर-ए-ज़िलज़ाल : १ ता ५]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | सिर्का के फ़वाइद

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "सिर्का क्या ही बेहतरीन सालन है।" [मुस्लिम : ५३५०, अन आयशा ﷺ]

फ़ायदा : सिर्का के बारे में मुहद्दिसीन हज़रात कहते हैं के यह तिल्ली के बढ़ने को रोकता है, जिस्म में वरम नहीं होने देता, खाने को हज़्म करता है और खून को साफ़ करता है और फोड़े फुंसियों को दूर करता है। [अल इलाजुन नब्वी]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ ईमान वालो ! तुम ऐसी बात क्यों कहते हो जो करते नहीं? यह बात अल्लाह के नज़दीक बड़ी नाराज़गी की है के तुम ऐसी बातें कहो जिन पर अमल न करो। [सूर-ए-सफ़ : २ ता ३]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२४ ज़िल हिज्जा

नंबर १ : इस्लामी तारीख — आलमगीर رحمة الله عليه का दौरे हुकूमत

औरंगज़ेब आलमगीर رحمة الله عليه खानदाने तैमूरिया के सब से ज़ियादा अक्लमंद, बहादुर, मुंसिफ़ मिज़ाज और हुकूमत व मुलकी इन्तेज़ाम की भरपूर सलाहियत रखते थे। वह सन १०६८ हिजरी में तख्त नशीन हुए, अगले साल तख्त नशीनी के मौके पर लोगों के तमाम टॅक्स माफ़ कर दिए और पच्चीस लाख रुपये ज़रुरतमंद लोगों में तक्सीम किए, छे : लाख तीस हज़ार रुपये के तोहफ़े मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा रवाना फ़र्माए, एक लाख साठ हज़ार रुपये की लागत से किले में संगे मर मर की मस्जिद तामीर कराई जगह जगह गरीबों के लिए लंगर खाने खुलवाए, आमलगीर رحمة الله عليه की हुकूमत कराची बंदरगाह से लेकर आसाम की मशरिकी हुदूद और कोहे हिमालिया से ले कर बहरे हिंद तक फैली हुई थी, उन्होंने मुलकी इन्तेज़ाम के तहत नशा आवर चीज़ों, नाच गाने और खिलाफ़ शरीअत कामों पर पाबंदी लगाई, रास्तों को लूट मार करने वालों से महफ़ूज़ किया, एक लाख चालीस हज़ार रुपये सालाना मोहताजों के लिए मुकर्रर किए, उन्होंने किसी मज़हबी मकाम को गिराने की कभी इजाज़त नहीं दी, हर तब्का व मज़हब के लोग खुशहाली और अमन व सुकून से रहते और आज़ादी के साथ अपने मज़हब की रसमों को अदा करते, वह हर छोटे बड़े की बात गौर से सुन कर फ़ैसला करते और हक बात के मुकाबले में किसी की सिफ़ारिश कबूल नहीं करते थे।

नंबर २ : हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — फरिश्तों की मदद

हज़रत अबू तल्हा رضي الله عنه फ़र्माते हैं के हम एक गज़्वे में रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे जब कुफ़्फ़ार से मुदभेड़ हुई, तो मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को यह दुआ (يَامَالِكَ يَوْمِ الدِّيْنِ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ) करते हुए सुना इस के बाद देखा के फरिश्तों ने कुफ़्फ़ार को आगे पीछे से मारना शुरू किया और एक एक कर के बहुत से कुफ़्फ़ार ज़मीन पर गिर पड़े।

[दलाइलिन्नुबुव्वह लिलअसफहानी : ३७३]

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — वारिसीन के दर्मियान वरासत तक्सीम करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "माल (वरासत) को किताबुल्लाह के मुताबिक हक़ वालों के दर्मियान तक्सीम करो।"

[मुस्लिम : ४१४३, अन इब्ने अब्बास رضي الله عنه]

फ़ायदा : अगर किसी का इन्तेकाल हो जाए और उस ने माल छोड़ा हो तो उस को तमाम हक़ वालों के दर्मियान तक्सीम करना वाजिब है बगैर किसी शरई वजह के किसी वारिस को महरुम करना या अल्लाह तआला के बनाए हुए हिस्से से कम देना जाइज़ नहीं है।

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — तीन चीज़ों से पनाह मांगना

रसूलुल्लाह ﷺ अक्सर यह दुआ किया करते थे : (اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنَ الشِّقَاقِ وَالنِّفَاقِ وَسُوْءِ الْأَخْلَاقِ)

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं आपस के इख्तेलाफ़, निफ़ाक और बुरे अख्लाक से तेरी पनाह चाहता हूँ।

[अबू दाऊद : १५४६, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	बाज़ार जाते वक्त दुआ पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स बाज़ार में दाखिल होते वक्त यह पढ़े :
((لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ))
तो अल्लाह तआला उस के लिए एक लाख नेकियाँ लिख देते हैं और एक लाख गुनाह खत्म कर देते हैं और एक लाख दरजात बलंद फ़र्माते हैं।" [तिर्मिज़ी : ३४२८, अन उमर बिन खत्ताब ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	किसी पर तोहमत लगाना गुनाहे अज़ीम है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो शख्स कोई छोटा या बड़ा गुनाह करे फिर उस की तोहमत किसी बेगुनाह पर लगा दे तो उस ने बहुत बड़ा बोहतान और खुले गुनाह का बोझ अपने ऊपर लाद लिया । [सूर-ए-निसा : ११२]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	जो कुछ खर्च करना है दुनिया ही में कर लो

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : हम ने तुम को जो कुछ दिया है, उस में से खर्च करो इस से पहले के तुम में से किसी को मौत आ जाए और फिर (मौत को देख कर) कहने लगे के ऐ मेरे रब ! तूने मुझ को और थोड़े दिनों की मोहलत क्यों न दी, ताके खूब खर्च कर के नेक लोगों में शामिल हो जाता । [सूर-ए-मुनाफ़िकून : १०]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	हज़रत मिकाईल ؑ की हालत

आप ﷺ ने हज़रत जिब्राईल ؑ से दर्याफ़्त फ़र्माया : "क्या बात है ? मैं ने मिकाईल को हंसते हुए नहीं देखा ?" अर्ज़ किया : जब से दोज़ख की पैदाइश हुई है, मिकाईल नहीं हंसे। [मुस्नदे अहमद : १२९३०, अन अनस बिन मालिक ؓ]

नंबर (९): कुर्आन से इलाज	मौसमी फलों के फ़वाइद

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ﴿كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ إِذَآ أَثْمَرَ﴾ तर्जमा : जब वह दरख्त फ़ल ले आएँ तो उन्हें खाओ । [सूर-ए-अन्आम : १४१]

फ़ायदा : मौसमी फलों का इस्तेमाल सेहत के लिए बेहद मुफ़ीद है और बहुत सी बीमारियों से हिफ़ाज़त का ज़रिया है, लिहाज़ा अगर गुंजाइश हो तो ज़रूर इस्तेमाल करना चाहिए ।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत	

हज़रत अबू ज़र ؓ बयान करते हैं के मुझे रसूलुल्लाह ﷺ ने सात चीज़ों की नसीहत फ़र्माई : (१) गरीब और मिस्कीन के करीब रहना और उन से मुहब्बत करना (२) माल व दौलत में अपने से कमतर की तरफ़ देखना न के अपने से ज़ियादा मालदार की तरफ़ (३) सिला रहमी करना अगरचे वह मुँह मोड़े (४) किसी से किसी चीज़ का सवाल न करना (५) हक बात कहना अगरचे (सामने वाले को) कड़वी मालूम हो (६) अल्लाह तआला के मामले में किसी की परवाह न करना । (७) ((لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ)) पढ़ते रहना। यह सब चीज़ें अर्श के नीचे एक खज़ाना है उस में से हैं। [मुस्नदे अहमद : २०९०६]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२५ ज़िल हिज्जा

नंबर (१): इस्लामी तारीख — आलमगीर رحمة الله عليه की दीनी व इल्मी खिदमात

आलमगीर رحمة الله عليه को इस्लामी व शरई उलूम से खास लगाव था, यूं तो उन के दौर में बहुत से दीनी और इल्मी काम अंजाम दिये गए और बहुत सारी किताबें शाए की गई, उन्हीं में से अल्लामा हसन की किताब "रद्देशीआ" और दूसरी किताब मौलाना मुहम्मद मुस्तफ़ा की "नजमुल फुर्कान" है, जो कुर्आन मजीद के अल्फाज़ की फहरिस्त (Index) है, इस के अलावा उन का गिरां कद्र इल्मी कारनामा यह है के उन्होने हिंदुस्तान के उलमा की एक जमात को हुक्म दिया के फ़िकह की तमाम किताबों से मसाइल मुन्तखब कर के एक ऐसी जामे किताब तय्यार की जाए, जो फ़िकह के तमाम पहलूओं पर हावी हो, शेख निज़ामुद्दीन को इस जमात का सद्र बनाया गया, चुनान्चे उलमा की आठ साला मेहनत के बाद "फ़तावा आलमगीरी शाही" तय्यार हुई, जिस पर उस ज़माने में दो लाख रुपये खर्च हुए, बादशाह का मामूल था के रोज़ाना इस किताब का एक सफ्हा शेख निज़ाम से पढ़वा कर उस पर गौर व फ़िक्र करते और फिर उलमा की मुत्तफ़का राय से उस को लिखा जाता। हकीकत में यह ऐसा इल्मी कारनामा है जिस ने उलमा व तलबा को फ़िकह की तमाम किताबों से बेनियाज़ कर दिया है। जब इस किताब को अरब उलमा ने पढ़ा, तो इसे बड़ी कद्र की निगाह से देखा और फिर अरब में फ़तावा हिंदिया के नाम से इस को शाए किया।

नंबर (२): अल्लाह की कुदरत — मच्छर

अल्लाह तआला ने छोटी बड़ी बेशुमार मखलूक पैदा फ़र्माई है कोई भी चीज़ कुदरत के कारखाने में निकम्मी और बेकार नहीं है। मच्छर ही पर गौर कीजिए तो उस की बनावट अल्लाह की कुदरत का करिश्मा मालूम होती है। वह जब इन्सान के जिस्म पर बैठता है तो अपनी सूंड जिल्द के मसामात में दाखिल कर देता है और पेट भर कर खून चुस लेता है और हैरत की बात के उस की सूंड इतनी बारीक होने के बावजूद नल्की (Pipe) की तरह होती है आखिर उस की इतनी बारीक सूंड में सूराख किस ने पैदा किया? बेशक यह अल्लाह ही की कुदरत की दलील है।

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — खड़े हो कर नमाज़ पढ़ना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : नमाज़ में अल्लाह के सामने आजिज़ बने हुए खड़े हुआ करो।

[सूर-ए-बकरा : २३८]

फ़ायदा : अगर कोई शख्स खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने की ताकत रखता हो, तो उस पर फ़र्ज़ और वाजिब नमाज़ को खड़े हो कर पढ़ना फ़र्ज़ है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करना

अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ी رضي الله عنه बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ कसरत से (अल्लाह का) ज़िक्र

फ़र्माते: बेजा बात न फ़र्माते, नमाज़ लम्बी पढ़ते, खुत्बा बहुत मुख्तसर देते और बेवाओं और मिस्कीनों की ज़रुरत पूरी करने के लिए चलने में आर और शर्म महसूस न फ़र्माते। [नसई : १४१५]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	जन्नत का खज़ाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "((لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ)) बकसरत पढ़ा करो, इस लिए के वह जन्नत के खज़ानों में से एक खज़ाना है।" [तिर्मिज़ी : ३६०१, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	ज़िना और नाप तौल में कमी करने का वबाल

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस कौम में ज़िना आम होता है, उस में ताऊन और ऐसी बीमारियां फैल जाती हैं जो पहले नहीं थीं और जो लोग नाप तौल में कमी करते हैं, तो वह लोग कहत साली, परेशानियों और बादशाह के ज़ुल्म के शिकार हो जाते हैं।" [इब्ने माजा : ४०१९, अन इब्ने उमर رضي الله عنه]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	अल्लाह तआला अपने बंदे से क्या कहता है

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ इब्ने आदम ! तू मेरी इबादत के लिए फ़ारिग हो जा, मैं तेरे सीने को मालदारी से भर दूंगा और तेरी मोहताजगी को खत्म कर दूंगा और अगर ऐसा नहीं करेगा, तो मैं तेरे सीने को मशगूली से भर दूंगा और तेरी मोहताजगी को बंद नहीं करूंगा।" [तिर्मिज़ी : २४६६, अन अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में	अहले जन्नत का लिबास

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "(अहले जन्नत) को सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और सब्ज़ रंग के बारीक और मोटे रेशमी लिबास पहनेंगे।" [सूर-ए-कहफ़ : ३१]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	खाने के बाद उंगलियां चाटने का फ़ायदा

रसूलुल्लाह ﷺ जब खाना खा लेते तो अपनी तीनों उंगलियों को चाटते। [मुस्लिम : ५२९६, अन कअब बिन मालिक رضي الله عنه]

फ़ायदा : अल्लामा इब्ने कय्यिम رحمه الله कहते हैं के खाना खाने के बाद उंगलियां चाटना हाज़मे के लिए इन्तेहाई मुफ़ीद है।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है: बिला शुबा यह कुर्आन एक नसीहत है तो जो शख्स चाहे अपने रब तक पहुँचने का रास्ता इख्तियार कर ले और तुम अल्लाह की मर्ज़ी के बगैर कुछ नहीं चाह सकते, अल्लाह तआला बड़े इल्म व हिकमत का मालिक है। [सूर-ए-दहर : २९ ता ३०]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — हज़रत शाह वली उल्लाह देहलवी رحمة الله عليه

हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी رحمة الله عليه की पैदाइश सन १११४ हिजरी में "कस्ब-ए-फुलत" ज़िला मुज़फ़्फ़र नगर में हुई, आप ने ५ साल की उम्र में तालीम शुरू कर के १५ साल की उम्र तक हिफ़्ज़े क़ुर्आन के साथ तमाम दरसी व दीनी उलूम हासिल कर लिये। इस के बाद अपने वालिद शाह अब्दुर्रहीम साहब से बैअत हुए और सत्रह साल की उम्र में ख़िलाफ़त भी मिल गई, फिर ३० साल की उम्र तक अपने वालिद मरहूम शाह अब्दुर्रहीम साहब की मुस्नदे दर्स और बैअत व इर्शाद से ख़लक़े ख़ुदा को नफ़ा पहुँचाया। सन ११४५ हिजरी में फ़रीज़-ए-हज अदा किया। मदीना मुनव्वरा के शेख़ अबू ताहिर मदनी से बुख़ारी शरीफ़ और मक्का मुकर्रमा और हिजाज़ के बहुत से उलमा से सिहाहे सित्ता की समाअत और दीगर कुतुबे अहादीस की इजाज़त ले कर हिन्दुस्तान वापस आए और ११४५ हिजरी में बा ज़ाब्ता दर्से हदीस शुरू फ़र्माया। इसी तरह देहली में दारूल उलूम रहीमिया की बुनियाद डाली। तालीम व तदरीस के साथ आप ने तक़रीबन ५० किताबें भी लिखीं। जिन में फ़तहुर रहमान नाम से फ़ारसी में क़ुर्आनि करीम का तर्जमा और अल फ़ौज़ुलकबीर में मुफ़स्सिरीन के तफ़सीरी निकात और उसूल व ज़वाबित को बयान फ़र्माया। हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा में शरीअत के असरार व रुमूज़ की उम्दा अन्दाज़ में तशरीह फ़र्माई। ग़र्ज़ आप ने हिन्दुस्तान की तारीख़ में क़ुर्आनि व हदीस की इशाअत, शरीअत के असरार व रुमूज़ बयान कर के वह नुमायाँ कारनामा अन्जाम दिया है जिसे हिन्दुस्तान के मुसलमान कभी नहीं भुला सकते। आख़िर सन ११७६ हिजरी में ६२ साल की उम्र में वफ़ात पाई और देहली के मशहूर क़ब्रस्तान "मेंहदियान" में अपने वालिद मरहूम के मज़ार से मुत्तसिल मदफ़ून हुए।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — आप ﷺ के जिस्म से ख़ुश्बू आना

हज़रत अनस رضي الله عنه फ़र्माते हैं के मैं ने कोई अंबर, कोई मुश्क और कोई ख़ुश्बूदार चीज़ रसूलुल्लाह ﷺ (के जिस्म) की महक से ज़ियादा ख़ुश्बूदार हरगिज़ नहीं सूंघी।

[मुस्लिम : ६०५३, अन अनस رضي الله عنه]

और हज़रत आयशा رضي الله عنها फ़र्माती हैं के आप ﷺ से जब कोई मुसाफ़ा करता, तो तमाम दिन उस शख़्स को मुसाफ़े की ख़ूश्बू आती रहती और जब कभी आप किसी बच्चे के सर पर हाथ रख देते, तो वह ख़ूश्बू के सबब दूसरे लड़कों में पहचाना जाता।

[बैहक़ी फ़ी दलाइलिन्नुबुव्वह: २३८]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — अमानत का वापस करना

क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : अल्लाह तआला तुम को हुक्म देता है के जिन की अमानतें हैं उन को लौटा दो।

[सूर-ए-निसा : ५८]

फ़ायदा : अगर किसी ने किसी शख़्स के पास कोई चीज़ अमानत के तौर पर रखी हो, तो मुतालबे के वक़्त उस का अदा करना ज़रुरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — चार चीज़ों से बचने की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ फ़र्माते थे :

((اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ قَلْبٍ لَا يَخْشَعُ وَمِنْ دُعَاءٍ لَا يُسْمَعُ وَمِنْ نَفْسٍ
لَا تَشْبَعُ وَمِنْ عِلْمٍ لَا يَنْفَعُ، اَعُوْذُبِكَ مِنْ هٰؤُلَاءِ الْاَرْبَعِ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं न डरने वाले दिल, क़बूल न होने वाली दुआ, सैर न होने वाले नफ़्स और नफ़ा न पहुँचाने वाले इल्म से तेरी पनाह चाहता हूँ, ऐ अल्लाह ! मैं इन चारों चीज़ों से बचने के लिए तेरी पनाह लेता हूँ।

[तिर्मिज़ी : ३४८२, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | सवाब की निय्यत से अज़ान देना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख़्स सात साल सवाब की निय्यत से अज़ान दे, तो उस के लिए जहन्नम से खलासी लिख दी जाती है ।"

[तिर्मिज़ी : २०६, अन इब्ने अब्बास ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | औलाद का क़त्ल गुनाहे कबीरा है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : गुर्बत के डर से अपनी औलाद को क़त्ल न करो, हम तुम को भी रिज़्क देते हैं और उन को भी ।

[सूर-ए-अन्आम : १५१]

खुलासा : रोज़ी का ज़िम्मा अल्लाह तआला पर है, लिहाज़ा रोज़ी की तंगी के डर से बच्चों को मार डालना या हमल गिराना जैसा के आज के दौर में हो रहा है यह बहुत ही बड़ा गुनाह और हराम है ।

नंबर (७): दुनिया के बारे में | दुनिया की मुहब्बत और आख़िरत से बे फ़िक्री

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : "यह लोग दुनिया से मुहब्बत रखते हैं और अपने आगे आने वाले एक भारी दिन को छोड़ बैठे हैं । (यानी दुनिया की मुहब्बत ने ऐसा अंधा कर रखा है के क़यामत के दिन की न तो कोई फ़िक्र है और न ही कोई तय्यारी है, हालांके दुनिया में आने का मक्सद ही आख़िरत के लिए तय्यारी करना है) ।"

[सूर-ए-दहर : २७]

नंबर (८): आख़िरत के बारे में | ईमान वालों का जहन्नम से निकलना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला क़यामत के दिन उन फरिश्तों को जो दोज़ख़ पर मुक़र्रर होंगे, हुक्म देगा के जिस ने मुझे कभी याद किया, या किसी मौक़े पर जो बंदा मुझ से डरा उस को दोज़ख़ से निकाल दिया जाए ।"

[तिर्मिज़ी : २५९४, अन अनस ﷺ]

नंबर (९): तिब्बे नबवी से इलाज | खजूर से इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "ज़चगी की हालत में तुम अपनी औरतों को तर खजूरें खिलाओ और अगर वह न मिलें तो सूखी खजूरें खिलाओ ।"

[मुस्नदे अबू यअ्ला : ४३४, अन अली ﷺ]

फ़ायदा : बच्चे की पैदाइश के बाद खजूर खाने से औरत के जिस्म का फ़ासिद खून निकल जाता है और बदन की कमज़ोरी ख़त्म हो जाती है ।

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "बुरे साथी के पास बैठने से तन्हाई बेहतर है और अच्छे साथी के पास बैठना तन्हाई से बेहतर है, नेक बात ज़बान से निकालना खामोशी से बेहतर है और खामोश रहना बुरी बात ज़बान से निकालने से बेहतर है ।"

[बैहक़ी फ़ी शोअबिल ईमान : ४७८४, अन अबी ज़र ﷺ]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२७ ज़िल हिज्जा

नंबर १ : इस्लामी तारीख़ — फ़तह अली टीपू सुलतान ﷫

फ़तह अली टीपू सुलतान ﷫ बरोज़े सनीचर २० ज़िल हिज्जा, सन ११६३ हिजरी, बमुताबिक १०, नवम्बर सन १७५० इस्वी, में बैंगलोर से ३३, किलो मीटर दूर शिमाल की जानिब एक कस्बे में पैदा हुए, वालिद का नाम हैदर अली और माँ का नाम फ़ातिमा बेगम है, जो फख्रुन्निसा से मशहुर थीं, वह अरब के खान्दान कुरैश से तअल्लुक रखते थे, पाँच बरस से ले कर उन्नीस साल की उम्र तक हिफ़्ज़े कुर्आन, दीनी उलूम और जंगी फुनून में मुख्तलिफ माहिरीने फ़न से मुकम्मल महारत हासिल कर ली और सिपह सालार बन कर जुरअत व बहादुरी के साथ दुश्मनों से मुकाबला कर के फ़तह अली खान बहादुर का खिताब हासिल कर लिया, जब सन १७६७, ईस्वी में दुश्मनों ने बाकायदा जंग छेड़ दी तो टीपू सुलतान भी सात हज़ार फ़ौज लेकर उन से लड़े और उन्हें शिकस्त देकर मैंगलोर के मज़बूत किले पर कब्ज़ा कर लिया, पूरे हिंदुस्तान में रियासते मैसूर ही ऐसी थी, जिस ने उन लोगों के खिलाफ़ चार जंगें लड़ीं, दो जंगों में उन को भागने पर मजबूर होना पड़ा या फिर जेल की हवा खानी पड़ी, जंगे आज़ादी में मुसलमान बादशाहों में से हैदर अली खान और टीपू सुलतान शहीद की कुर्बानी और जंगी हमलों को भुलाया नहीं जा सकता, टीपू सुलतान एक ऐसा मर्दे मुजाहिद था, जिस ने दीन और आज़ादीए वतन की ख़ातिर दुश्मनों के खिलाफ़ लड़ते हुए चार मई सन १७९९ इस्वी, को अपना पाकीज़ा खून बहा कर खाके वतन के ज़र्रों को रौशन कर दिया।

नंबर २ : अल्लाह की कुदरत — समुन्दरी मकड़ी

अल्लाह तआला ने ज़मीनी मकड़ी की तरह समुन्दर में भी मकड़ी पैदा फ़र्माई है, इसे अंग्रेज़ी में ऑक्टोपस (Octopus) कहते हैं, इस के आठ पैर होते हैं, इस के जिस्म में हड्डी नहीं होती, बल्के पूरा बदन गोश्त और खाल पर मुशतमिल होता है, इस की सिर्फ़ एक आँख होती है, वह दूर ही से अंदाज़ा कर के तेज़ रफ़्तारी के साथ अपने शिकार को पकड़ती है और खून चूस कर छोड़ देती है, समुन्दर में ऐसी मख़लूक का पैदा करना अल्लाह तआला की अजीब कुदरत है ।

नंबर ३ : एक फ़र्ज़ के बारे में — जुमा की नमाज़ अदा करना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जुमा की नमाज़ जमात के साथ अदा करना हर मुसलमान पर लाज़िम है, मगर चार लोगों पर (लाज़िम नहीं है) (१) वह गुलाम जो किसी की मिल्कियत में हो (२) औरत (३) ना बालिग बच्चा (४) बीमार।"

[अबू दाऊद : १०६७, अन तारिक बिन शिहाब ؓ]

फ़ायदा : जहाँ जुमा के शराइत पाए जाते हों, तो वहाँ जुमा की नमाज़ अदा करना हर सही व तंदरुस्त, आज़ाद और बालिग़ मुसलमान मर्द पर फ़र्ज़ है । लेकिन मुसाफ़िर पर फ़र्ज़ नहीं है ।

नंबर ४ : एक सुन्नत के बारे में — बच्चे की पैदाइश के बाद कान में अज़ान देना

जब हज़रत हसन ؓ की विलादत हुई, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन के कान में अज़ान दी।

[तिर्मिज़ी : १५१४, अन अबी राफे ؓ]

फ़ायदा : बच्चे के पैदा होने के बाद दाएँ कान में अज़ान देना और बाएँ कान में इकामत कहना सुन्नत है ।

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	नींद से जागने पर दुआ पढ़ना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स रात में बेदार हो और यह दुआ पढ़े :
((لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ، وَاللّٰهُ اَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ)) फिर यह कहे ((اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِي)) या दुआ मांगे, तो वह कबूल कर ली जाएगी और अगर वुज़ू कर के नमाज़ पढ़े तो उस की नमाज़ कबूल की जाएगी।"

[बुखारी : ११५४, अन उबादा बिन सामित ؓ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	हराम लुक्मे की नहूसत

हज़रत इब्ने अब्बास ؓ फ़र्माते हैं के सअद बिन अबी वक्कास ؓ ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मेरे लिए दुआ कर दीजिये, के मैं मुस्तजाबुद दावात हो जाऊँ। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अपने खाने को पाकीज़ा बना लो, तो मुस्तजाबुद दावात हो जाओगे। खुदा की कसम ! जब कोई शख्स हराम लुक्मा पेट में डालता है, तो अल्लाह तआला उस का कोई अमल चालीस दिन तक कबूल नहीं करता, जिस बंदे का जिस्म हराम माल से पला बढ़ा उस का बदला जहन्नम के अलावा कुछ नहीं।"

[तर्गीब व तर्हीब : २४८४]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया की मुहब्बत का नुकसान

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने अल्लाह से तअल्लुक कर लिया, अल्लाह उस की हाजतों का कफ़ील हो जाएगा और ऐसी जगह से रोज़ी देगा, जिस का वहम व गुमान नहीं होगा और जो शख्स दुनिया से तअल्लुक कर लेता है, तो अल्लाह तआला उस को दुनिया के हवाले कर देता है।"

[मुअजमुल औसत : ३४९०, इमरान बिन हुसैन ؓ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	आमाल का वज़न

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जिस शख्स (के आमाल का) पल्ला भारी होगा, तो वह शख्स ऐश व राहत की ज़िंदगी में होगा और जिस शख्स के आमाल का पल्ला हल्का होगा, तो उस का ठिकाना "हाविया" होगा और आप को मालूम है के "हाविया" क्या है ? वह दहेकती हुई आग है।

[सूर-ए-क़ारिआ : ६ ता ११]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	गुर्दे की बीमारियों का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "पहलू के दर्द का सबब गुर्दे की नस है, जब वह हरकत करती है तो इन्सान को तकलीफ़ होती है और उस का इलाज गर्म पानी और शहद से करो।"

[मुस्तदरक हाकिम : ८२३७, अन आयशा ؓ]

फ़ायदा : गुर्दे में जब पथरी वगैरह हो जाती है तो कूल्हों में दर्द होता है बल्के अक्सर उसी दर्द ही की वजह से इस बीमारी का पता चलता है इस का इलाज आप ﷺ ने यह बताया के गर्म पानी और शहद मिला कर पिलाया जाए।

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : खबरदार हो जाओ यह कुर्आन सरासर नसीहत है, जिस का जी चाहे इस से नसीहत हासिल करे।

[सूर-ए-मुद्दस्सिर : ५४ ता ५५]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२८ ज़िल हिज्जा

नंबर (१): इस्लामी तारीख़ — टीपू सुलतान की सीरत

टीपू सुलतान शहीद सच्चा मुहिब्बे वतन और तमाम तबके के लोगों के साथ अदल व इन्साफ़ करने वाला बादशाह था, उन के दौर में सब को अपने मज़हब के मुताबिक अमल करने की मुकम्मल आज़ादी हासिल थी, साथ ही शरीअत के हर एक हुक्म पर अमल किया करता था, उन के अन्दर इस्लामी मुआशरे के कयाम का भरपूर जज़्बा था, वह तकवा व परहेज़ गारी, शर्म व हया, रोज़ा व नमाज़ की पाबंदी और नमाज़े तहज्जुद की अदायगी का बड़ा एहतेमाम करते थे। दीनी उलूम में बड़ी महारत हासिल थी, बादशाह होने के बावजूद बहुत सी किताबें लिखीं और श्री रंगा पटनम में दीनी व असरी तालीम के लिए जामेउल उमूर नाम की एक युनीवर्सिटी कायम की। नीज़ अहले इल्म को हर मस्जिद में बच्चों की तालीम के लिए दीनी मदारिस कायम करने का हुक्म दिया। जब उन्होंने मैसूर की जामा मस्जिद तामीर कराई, तो मुल्क के बड़े बड़े उलमा व मशाइख की मौजूदगी में फ़र्माया : इस मस्जिद का इफ़्तेताह वह शख्स करे जिस की एक फ़र्ज़ नमाज़ भी कज़ा न हुई हो। जब कोई आगे नहीं बढ सका, तो नमाज़ पढ़ाने के लिए खुद आगे बढे और फ़र्माया : अल्हम्दुलिल्लाह आज तक मेरी एक भी फ़र्ज़ नमाज़ कज़ा नहीं हुई। मगर अफ़सोस! इतने बड़े शरीअत के पाबंद और अदल व इन्साफ़ करने वाले बादशाह की सारी खूबियों को छुपा कर, उन की सीरत व किरदार को गलत अंदाज़ में पेश किया जा रहा है।

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — रास्ते का खुशबू दार हो जाना

हज़रत जाबिर رضی اللہ عنہ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ जब भी किसी रास्ते से गुज़रते और कोई शख्स आप ﷺ की तलाश में जाता, तो वह खुशबू से पहचान लेता के आप ﷺ इस रास्ते से तशरीफ ले गए हैं, यह खुशबू इत्र वगैरह लगाए बगैर खुद आप ﷺ के बदन मुबारक से आती थी।

[सुनने दारमी : ६७, अन जाबिर رضی اللہ عنہ]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — शौहर की वरासत में बीवी का हिस्सा

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : उन औरतों के लिए तुम्हारे छोड़े हुए माल में चौथाई हिस्सा है, जबके तुम्हारी कोई औलाद न हो और अगर तुम्हारी औलाद हो तो उन के लिए तुम्हारे छोड़े हुए माल में आठवाँ हिस्सा है (उन को यह हिस्सा) तुम्हारी वसिय्यत और कर्ज़ को अदा करने के बाद मिलेगा।

[सूर-ए-निसा : १२]

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — सफ़र से वापसी की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ जब सफ़र से वापस लौटते, तो यह दुआ पढ़ते: ((آيِبُونَ تَائِبُونَ عَابِدُونَ لِرَبِّنَا حَامِدُونَ))
तर्जमा : हम वापस लौटने वाले हैं, तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं और अपने परवरदिगार की हम्द व सना करने वाले हैं।

[तिर्मिज़ी : ३४४०, अन बराअ बिन आज़िब رضی اللہ عنہ]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत | रोज़ा रखने का इन्आम

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो शख्स अल्लाह तआला की रज़ा के लिए एक दिन रोज़ा रखे, अल्लाह तआला उस को जहन्नम से सत्तर साल की मसाफ़त के ब क़द्र दूर फ़र्मा देते हैं।"

[तिर्मिज़ी : १६२२, अन अबी हुरैरह رضی اللہ عنہ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में | अहद तोड़ने वालों का अंजाम

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो लोग अल्लाह से पुख्ता अहेद करने के बाद तोड़ डालते हैं और जिन तअल्लुकात के जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया है, उन को तोड़ते हैं और ज़मीन में फ़साद फ़ैलाते हैं, उन्हीं लोगों पर अल्लाह की फिटकार होगी और आखिरत में उन के लिए बड़ी खराबी होगी।

[सूर-ए-रअ्द:२५]

नंबर (७): दुनिया के बारे में | माल व दौलत आज़माइश की चीज़ें हैं

कुर्आन कें अल्लाह तआला फ़र्माता हैं : (जब अल्लाह तआला) इन्सान को आज़माता है, तो (उस को ज़ाहिरन माल व दौलत देकर) उस का इकराम करता है, तो वह (बतौरे फख्र) कहने लगता है, के मेरे रब ने मेरी क़द्र बढ़ा दी। (हालांके यह उस की तरफ़ से उस की आज़माइश का ज़रिया है क्यों कि जितना ज़ियादा माल होगा, क़यामत के दिन हिसाब में उतनी ही परेशानी होगी)।

[सूर-ए-फ़ज्र : १५]

नंबर (८): आखिरत के बारे में | नेक औलाद का फ़ायदा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जन्नत में आदमी के दर्जात बलंद किए जाएँगे, तो वह कहेगा : मुझे यह मर्तबा कैसे मिल गया? फिर उसे बताया जाएगा के (यह मकाम) तुम को तुम्हारी औलाद के इस्तिग़फ़ार करने की वजह से मिला है।"

[इब्ने माजा : ३६६०, अन अबी हुरैरह رضی اللہ عنہ]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज | हर किस्म के दर्द का इलाज

हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ फ़र्माते हैं के नबीए करीम ﷺ सहाब-ए-किराम को बुखार और हर किस्म के दर्द से नजात हासिल करने के लिए यह दुआ सिखाते थे :

((بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ، اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ مِنْ شَرِّ كُلِّ عِرْقٍ نَعَّارٍ وَمِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ)) [तिर्मिज़ी : २०७५]

नंबर (१०): नबी ﷺ की नसीहत

हज़रत मुआज़ बिन जबल رضی اللہ عنہ फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे वसिय्यत फ़र्माई : "(१) अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करना, चाहे तुम क़त्ल कर दिए जाओ या जला दिए जाओ। (२) अपने माँ बाप की कभी ना फ़र्मानी मत करना, चाहे वह तुम को घर और माल व जायदाद छोड़ने का हुक्म दे। (३) फ़र्ज़ नमाज़ कभी भी जान बूझ कर मत छोड़ना, इस लिए के जो आदमी फ़र्ज़ नमाज़ जान बूझ कर छोड़ देता है, वह अल्लाह तआला के ज़िम्मे से निकल जाता है। (४) हरगिज़ शराब मत पीना, इस लिए के शराब तमाम बुराइयों की जड़ है।"

[मुस्नदे अहमद: २१५७०]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मदरसा
(कुर्आन व हदीस की रौशनी में)

२९ ज़िल हिज्जा

नंबर १: इस्लामी तारीख — टीपू सुलतान की शहादत

टीपू सुलतान की दुश्मनों से आखरी जंग के मौके पर सिक्रेट्री हबीबुल्लाह ने अर्ज़ किया : "हुज़ूर वक्त का तकाज़ा है के अपनी जान और अपने शहज़ादों की यतीमी पर रहम कीजिए", तो सुलतान ने कहा : "मैं अपनी ज़ात और औलाद को दीने मुहम्मदी पर कुर्बान करने का फ़ैसला कर चुका हूँ।" मीर सादिक की गद्दारी से दुश्मन की फ़ौज किले में दाखिल हो गई, बादशाह ने खाने का लुकमा उठाया ही था के अपने वफ़ादार फ़ौजी अब्दुल गफ़्फ़ार की शहादत की खबर सुन कर फ़र्माया : "हम भी अब कुछ देर के मेहमान हैं" यह कह कर मैदाने जंग में कूद पड़े और काफ़ी देर तक लड़ते रहे, यहाँ तक के किले पर दुश्मनों का कबज़ा हो गया, चुनान्चे उन के गद्दार खादिम राजा खान ने कहा : हुज़ूर अपनी जान की हिफ़ाज़त के लिए अपने आप को दुश्मन के हवाले कर दो, तो जलाल में आकर कहा : "मेरे नज़दीक शेर की एक दिन की ज़िंदगी गीदड़ की सौ साला ज़िंदगी से बेहतर है।" जिस्म पर कई गोली लगने के बावजूद शाम तक लड़ते रहे, एक गद्दार का टीपू सुलतान की तरफ़ इशारा कर के दुश्मनों के अफ़सर को खबर दार करना था, के चारों तरफ़ से गोलियों की बारिश होने लगी और सीने पर गोली लगते ही वह ज़मीन पर गिर गए, एक सिपाही ने मौका गनीमत पा कर उन की हीरों से जड़ी तलवार निकालने की कोशिश की, तो ऐसी नाज़ुक हालत में भी हमला कर के एक सिपाही को जहन्नम रसीद कर दिया। फिर सर पर गोली लगने की वजह से ४ मई सन १७९९ इस्वी को जामे शहादत नोश फ़र्माया। अगले दिन शाही एजाज़ के साथ अपने वालिद हैदर अली के पहलू में दफ़्न कर दिए गए।

नंबर २: अल्लाह की कुदरत — हवा में आवाज़

हवा इन्सानी ज़िंदगी के लिए ज़रुरी है, इस के बगैर कोई भी जानदार ज़िन्दा नहीं रह सकता। हवा ही की मदद से हम एक दूसरे की आवाज़ सुनते हैं। चाँद पर हवा न होने की वजह से आवाज़ नहीं सुनी जा सकती, हवा में लहरें होती हैं। यह आवाज़ की लहरें फ़ज़ा में फैल कर कानों के पर्दे से टकराती हैं, जिस से कान के पर्दे की पत्ली झिल्ली थर थराने लगती है, वह फ़ौरन दिमाग को उस की खबर देती है, हवा ही की मदद से आवाज़ पाँच सेकंड में एक मील की रफ़्तार से दौड़ती है, जब रेडियो और वायर लेस के ज़रिये आवाज़ को रेडियाई लहरों में बदल दी जाए, तो वह आवाज़ सूरज की रौशनी की रफ़्तार, यानी एक लाख छियासी हज़ार मील फी सेकंड के हिसाब से दूर दूर तक पहुँच जाती है, यह सब अल्लाह की कुदरत की एक निशानी है।

नंबर ३: एक फ़र्ज़ के बारे में — वालिदैन के साथ अच्छा बर्ताव करना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : तेरे रब ने हुक्म दे दिया है के तुम उस के अलावा किसी की इबादत मत करो और अपने माँ बाप के साथ अच्छा बर्ताव किया करो। [सूर-ए-बनी इसराईल : २३]

फ़ायदा : वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करना, उन की इताअत और फ़र्मांबरदारी करना और उन्हें तक्लीफ़ न पहुँचाना औलाद पर ज़रूरी है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में	इस्मिद सुर्मा लगाना

हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ फ़र्माते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ हर रात सोने से पहले तीन मरतबा इस्मिद सुर्मा लगाया करते थे। [मुस्तदरक : ८२४९]

नंबर (५): एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	दरख़्त लगाना

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जो भी मुसलमान दरख्त लगाता है या खेती करता है, फिर उस में से कोई परिंदा, इन्सान या जानवर खाता है तो वह उस के लिए सदका है (यानी सदके का सवाब मिलेगा)।" [बुखारी : २३२०, अन अनस ﷺ]

नंबर (६): एक गुनाह के बारे में	मुतकब्बिर की सज़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "कयामत के दिन तकब्बुर करने वाले च्यूँटियों के बराबर जिस्मों में उठाए जाएंगे ; उन की सूरतें इन्सान की होंगी, उन के लिए हर तरफ़ ज़िल्लत ही ज़िल्लत होगी और उन को जहन्नम में बूलस नामी एक जगह की तरफ़ घसीट कर ले जाया जाएगा, जहाँ पर एक सख्त आग उन को अपनी लपेट में लेलेगी और पीने के लिए जहन्नमियों का खून और पीप दिया जाएगा।" [तिर्मिज़ी : २४९२, अन अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ]

नंबर (७): दुनिया के बारे में	दुनिया में बरकत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला जिस के साथ भलाई का इरादा फ़र्माता है तो उस को दीन की समझ अता फ़र्माता है और बेशक यह दुनिया बड़ी मीठी और सर सब्ज़ व शादाब है पस जो इस को इस के हक़ के साथ (यानी हलाल) तरीके से लेगा, तो अल्लाह अज़्ज़ व जल उस के लिए इस में बरकत देगा।" [मुस्नदे अहमद : १६४०४, अन मुआविया बिन अबी सुफ़ियान ﷺ]

नंबर (८): आखिरत के बारे में	जन्नत का बाग

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो लोग ईमान लाए और नेक आमाल के पाबंद रहे, तो उन के लिए ऐसे बाग होंगे, जिन के नीचे नहरें जारी होंगी, यह बहुत बड़ी काम्याबी है। [सूर-ए-बुरूज : ११]

नंबर (९): तिब्बे नब्वी से इलाज	बुखार का इलाज

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जिसे बुखार आ जाए वह तीन दिन गुस्ल के वक्त यह दुआ पढ़े, तो उसे शिफ़ा हासिल होगी" : ((بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ إِنَّمَا اغْتَسَلْتُ رَجَاءَ شِفَائِكَ وَتَصْدِيْقَ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ ﷺ))

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं ने तेरे नाम से गुस्ल किया, शिफ़ा की उम्मीद करते हुए और तेरे नबी ﷺ की तस्दीक करते हुए। [इब्ने अबी शैबा : ७/१४५, अन मकहूल ﷺ]

नंबर (१०): कुर्आन की नसीहत	

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : शैतान की पैरवी न करो, वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है, शैतान तो तुम को बुराई और बेहयाई के काम का हुक्म करता है और अल्लाह की निस्बत ऐसी बातें कहने का हुक्म करता है, जिस का तुम्हें इल्म नहीं है। [सूर-ए-बक़रा : १६८ ता १६९]

सिर्फ़ पाँच मिनट का मद्रसा
(कुर्आन व हदीस की रौश्नी में)

(३०) ज़िल हिज्जा

नंबर (१): इस्लामी तारीख — तातारी फ़ितना और आलमे इस्लाम

जब इन्सान खुदा को भूल कर आज़ादाना ज़िंदगी गुज़ारने लगता है, तो अल्लाह तआला अपने अबदी कानून के तहत फ़ितनों और आज़माइशों का सैलाब भेज देता है, कुछ इसी तरह छटी सदी हिजरी में हुआ। जब लोगों में बुराइयाँ, ज़ुल्म व सितम, खाना जंगी और ऐश व इशरत का बाज़ार इतना गर्म हुआ के अल्लाह और उस के रसूल के बताए हुए दीन को भी भूल बैठे, पंज वक्ता नमाज़ तो दर किनार ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्हा की नमाज़ की भी परवाह नहीं करते, ऐसे हालात में अल्लाह तआला ने तातारियों की शक्ल में एक ज़बरदस्त फ़ितना बर्पा किया, चुनान्चे तातारी कौम ने चंगेज़ ख़ाँ की कयादत में ख़्वारज़म शाह की हुकूमत पर सन ६१६ हिजरी में पहला हमला किया, फिर सन ६२४ हिजरी में उस का इन्तेकाल हो गया, लेकिन उस के मकासिद की तकमील उस के बेटे और पोते ने ईरान, तुर्किस्तान, बुखारा, समरकंद, हमदान, कज़्वीन और नीशापूर वगै़रह में खून का दर्या बहाते हुए, उस का पोता हलाकू खाँ बग़दाद पहुँचा और उस की भी ईंट से ईंट बजा दी और चालीस दिन तक सिर्फ़ बगदाद में १८ लाख लोगों को कत्ल किया, साथ ही साथ इस्लामी निशानात भी मिटा दिए गए और लाइब्रेरी तबाह व बरबाद कर के किताबें दर्या में बहा दी गई, जिस के नतीजे में दर्या का पानी रौशनाई से काला हो गया था, इतना ज़बरदस्त हादसा मुसलमानों पर कभी नहीं आया था, लेकिन अल्लाह तआला की कुदरत देखिये के जिस कौम ने आलमे इस्लाम को तबाह व बरबाद किया था खूद उन्हीं को ईमान की तौफ़ीक दी और वह पूरी कौम मुसलमान हो कर इस्लाम की पासबान बन गई, अल्लाह तआला ने कुर्आन में सच फ़र्माया है : अगर तुम फिर जाओगे (और हमारे अहकाम की ना फ़र्मानी करोगे) तो वह तुम्हारी जगह दूसरी कौम को ले आएगा, जो तुम्हारी तरह (ना फ़र्मान) नहीं होगी। [सूर-ए-मुहम्मद: ३८]

नंबर (२): हुज़ूर ﷺ का मुअ्जिज़ा — रौशनी का तेज़ होना

हज़रत आयशा رضي الله عنها फ़र्माती हैं के आप ﷺ अंधेरे में इस तरह देखते थे, जिस तरह रौशनी और उजाले में देखते थे। [बैहकी फ़ी दलाइलिन्नुबुव्वह: २३२६]

नंबर (३): एक फ़र्ज़ के बारे में — नमाज़े जुमा के लिए जमात का होना

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : ऐ ईमान वालो ! जुमा के दिन जब (जुमा की) नमाज़ के लिए अज़ान दी जाए, तो (सब के सब) अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ पड़ो और ख़रीद व फ़रोख्त छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानते हो। [सूर-ए-जुमा: ९]

फ़ायदा : जुमा की अज़ान को सुन लेने के बाद खरीद व फ़रोख्त छोड़ कर अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ चल पड़ना और जमात के साथ नमाज़ अदा करना वाजिब है।

नंबर (४): एक सुन्नत के बारे में — वालिदैन और मुसलमानों के लिए दुआ

वालिदैन और तमाम मोमिनीन की मग़फ़िरत के लिए इस तरह दुआ करे :

﴿رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ۝﴾

तर्जमा : ऐ मेरे रब! मेरी,मेरे वालिदैन की और तमाम मोमिनीन की क़यामत के दिन मगफ़िरत फ़र्मा देना।

[सूर-ए-इब्राहीम : ४१]

नंबर ⑤ : एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	मोमिन की परेशानी में मगफ़िरत

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "किसी मोमिन को दर्द, थकन, बीमारी और ग़म लाहिक़ होता है और इस से उस को तक्लीफ़ होती है, तो उस के बदले उस के गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।"

[मुस्लिम : ६५६८, अन अबी सईद رضي الله عنه व अबी हुरैरह رضي الله عنه]

नंबर ⑥ : एक गुनाह के बारे में	बुरे कामों की सज़ा

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो लोग यह चाहते हैं के मुसलमानों में बेहयाई की बातों का चर्चा हो, तो उन के लिए दुनिया व आख़िरत में दर्द नाक अज़ाब होगा और (ऐसे फ़ित्ना करने वालों को) अल्लाह तआला खूब जानता है तुम नहीं जानते।

[सूर-ए-नूर : १९]

नंबर ⑦ : दुनिया के बारे में	दुनिया का माल वक्ती है

कुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है : जो शख्स (इन्तिहाई हिर्स व लालच से) माल जमा करता है और (फिर वह खुशी से) उस को बार बार गिनता है और समझता है के उस का यह माल उस के पास हमेशा रहेगा, हरगिज़ नहीं रहेगा, बल्के अल्लाह तआला उस को ऐसी आग में डालेगा जो हर चीज़ को तोड़ फोड़ कर रख देगी।

[सूर-ए-हुमज़ह : २ ता ४]

नंबर ⑧ : आख़िरत के बारे में	क़यामत के दिन जमा होना है

हज़रत अबू सईद बिन फ़ज़ाला رضي الله عنه बयान करते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को फ़र्माते हुए सुना के अल्लाह तआला जब लोगों को ऐसे दिन जिस में कोई शक नहीं (यानी क़यामत के दिन) जमा करेगा, तो एक पुकारने वाला पुकारेगा, के जिस ने कोई अमल अल्लाह तआला के लिए किया हो और उस में किसी को शरीक किया हो, (यानी रियाकारी की हो) तो वह शख्स उस से अपना सवाब मांग ले, इस लिए के अल्लाह तआला बड़े ही बेनियाज़ हैं।

[तिर्मिज़ी : ३१५४]

नंबर ⑨ : तिब्बे नब्वी से इलाज	नज़रे बद और शैतानी असर से हिफ़ाज़त

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه बयान करते हैं के रसूलुल्लाह हज़रत हसन رضي الله عنه और हज़रत हुसैन के लिये इन अलफ़ाज़ में दुआ फ़र्माते थे।

[तिर्मिज़ी : २०६०]

((أُعِيذُكُمَا بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّةِ، مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَّهَامَّةٍ، وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَامَّةٍ))

नंबर ⑩ : नबी ﷺ की नसीहत	

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : "जब तुम किसी को कोई चीज़ वज़न कर के दो, तो झुकता हुआ तोलो।"

[इब्ने माजा : २२२२, अन जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه]

फह्रिस्ते
मज़ामीन

उनावीन	सफ़हा नंबर
पहाड़ पर पानी का ज़ख़ीरा	३१९
हवा और पानी	३२३
पलकों में अल्लाह की हिकमत	३२७
इन्सान के होंट कुदरत की निशानी	३३१
मुंह में रतूबत (थूक)	३३५
ज़बान कुदरते इलाही की निशानी	३३९
इन्सान का सर कुदरत का शाहकार	३४३
दाँतों की बनावट	३४७
नरख़रा (गले की नाली)	३५१
लोमड़ी की चालाकी	३५५
गन्ने का रस	३५९
च्यूंटी के मकानात (बिल)	३६३
खजूर में अल्लाह की कुदरत	३६७
रजबुल मुरज्जब	
मुश्क अल्लाह के खज़ाने से आता है	३७३
बाल अल्लाह की दी हुई नेअ्मत है	३७७
मोर की खूबसूरती	३८१
ऊंचे ऊंचे पहाड़ किस ने बनाए	३८५
सूरज गहन और चाँद गहन	३८९
बारिश में कुदरती निज़ाम	३९३
ना समझ बच्चे से अक्लमंद इन्सान तक	३९७

उनावीन	सफ़हा नंबर
नींद अल्लाह की अज़ीम नेअ्मत	४०१
पानी अल्लाह की नेअ्मत	४०५
इन्सान की बनावट	४०९
चमगादड़	४१३
दिमाग़ी कुव्वत	४१७
गिरगिट	४२१
जानवरों की बोलियां	४२५
मिट्टी के अंदर चमकदार सोने का पैदा होना	४२९
शाबानुल मुअज़्ज़म	
जानवरों के फ़वाइद	४३५
हमारे जिस्म में खून कौन बनाता है	४३९
कुंवें का पानी	४४३
ज़मीन में रखे हुए खज़ाने	४४७
हुद हुद	४५१
आस्मान में तारे किस ने बनाए	४५५
तितली अल्लाह की निशानी	४५९
चुम्बक (Magnet)	४६३
बाज़ (शिकारी परिन्दा)	४६७
ज़मीन के खज़ाने	४७१
ज़िराफ	४७५
मुख़्तलिफ मौसम और फल	४७९

उनावीन	सफ़हा नंबर
रोज़े की फर्ज़ियत	४८५
बे नमाज़ी का इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं	४८७
हर मुसलमान पर रोज़ा रखना फर्ज़ है	४८९
बीवी को उस का महर देना	४९१
सजद-ए-सह्व करना	४९३
रमज़ानुल मुबारक	
इस्लाम की बुनियाद	४९७
नमाज़ व रोज़ा पिछले गुनाहों का कफ्फारा है	४९९
बा जमात इशा और फज्र की नमाज़ पढ़ना	५०१
रोज़े की फर्ज़ियत	५०३
बगैर वुज़ू के नमाज़ नहीं होती	५०५
वारिसीन के दर्मियान मीरास तकसीम करना	५०७
कज़ा नमाज़ों की अदायगी	५०९
हलाल पेशा इख्तियार करना	५११
रोज़े के फराइज़	५१३
नमाज़ का दर्जा	५१५
बीमारी या सफर की हालत के रोज़े	५१७
अज़ान सुन कर नमाज़ के लिए न जाना	५१९
ज़कात मुस्तहिक को देना ज़रूरी है	५२१
सुबह की नमाज़ अदा करने पर हिफाज़त का ज़िम्मा	५२३
रोज़े का कफ्फारा अदा करना	५२५

उनावीन	सफ़हा नंबर
जमात की पाबंदी न करने पर वईद	५२७
औरतों पर भी ज़कात देना फर्ज़ है	५२९
जमात छोड़ने पर वईद	५३१
वालिदैन के साथ अच्छा बर्ताव करना	५३३
सब से पहले नमाज़ का हिसाब होगा	५३५
औरतों पर रोज़ों की कज़ा करना	५३७
नमाज़ छोड़ने वाला कुफ्र के करीब हो जाता है	५३९
ज़मीन की पैदावार में ज़कात	५४१
रुकू व सजदा अच्छी तरह न करने पर वईद	५४३
हज की फर्ज़ियत	५४५
बीमार की नमाज़	५४७
सदक-ए-फित्र	५४९
बगैर किसी उज़्र के नमाज़ कज़ा करना	५५१
सदक-ए-फित्र किस पर वाजिब है	५५३
कज़ा नमाज़ों की अदायगी	५५५
शव्वालुल मुकर्रम	
अल्लाह तआला पूरी कायनात का रब है	५५९
नमाज़ों का सही होना ज़रूरी है	५६१
पानी न मिलने पर तयम्मुम करना	५६३
हज किन लोगों पर फर्ज़ है	५६५
नमाज़ छोड़ने पर वईद	५६७

उनावीन	सफ़हा नंबर
५ एक अहेम अमल की फ़ज़ीलत	

मुहर्रमुल हराम

सफ़रुल मुज़फ्फर

उनवान	सफ़्हा नंबर
६ एक गुनाह के बारे में	
मुहर्रमुल हराम	

उनावीन	सफ़्हा नंबर
रमज़ानुल मुबारक	

उनवान	सफ़हा नंबर
जुमादल ऊला	
दो आदतें	२५०
हलाक करने वाली चीज़ें	२५२
दो चीज़ों की ख़्वाहिश	२५४
दुनियावी ज़िन्दगी धोका है	२५६
दुनिया मोमिन के लिये क़ैद ख़ाना	२५८
दुनिया का सामान चंद रोज़ा है	२६०
पेट भर कर खाना खाना	२६२
दुनिया से बेहतर आख़िरत का घर है	२६४
सब से बड़ा तक़वे वाला कौन है	२६६
दुनिया की ज़ाहिरी हालत धोका है	२६८
दुनिया व आख़िरत की तलाश का अजीब मामला	२७०
दुनिया चाहने वालों के लिये नुक़सान	२७२
दुनिया मोमिनों के लिये क़ैद ख़ाना है	२७४
आख़िरत की कामयाबी दुनिया से बेहतर है	२७६
दुनिया की रग़बत का ख़ौफ़	२७८
नाफ़र्मानों से नेअ्मतें छीन ली जाती हैं	२८०
दुनिया में लगे रहने का वबाल	२८२
अपने बीवी बच्चों से होशियार रहो	२८४
हलाल रोज़ी कमाओ	२८६
दुनिया में खाना पीना चंद रोज़ा है	२८८

उनवान	सफ़हा नंबर
दुनिया का तज़्केरा न करो	२९०
दुनिया का धोका	२९२
दुनिया में चैन व सुकून नहीं है	२९४
माल व औलाद की मुहब्बत	२९६
दुनिया ही को मक़सद बनाना	२९८
सिर्फ़ दुनिया की नेअ्मतें माँगना	३००
काफ़िरों के माल पर तअज्जुब करना	३०२
आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया से राज़ी होना	३०४
बूढ़े आदमी की ख़्वाहिश	३०६
दुनिया का नफ़ा वक़्ती है	३०८
जुमादस्सानियह	
दुनिया अल्लाह को कितनी नापसन्द है	३१२
आख़िरत के मुक़ाब्ले में दुनिया से राज़ी होना	३१४
सब से जियादा ख़ौफ़ की चीज़	३१६
माल जमा कर के ख़ुश होना	३१८
दुनिया से बे रग़बती का इनाम	३२०
नाफ़र्मानी और बग़ावत का वबाल	३२२
दुनिया से बचो	३२४
दुनियावी ज़िन्दगी पर ख़ुश न होना	३२६
दुनिया में ख़ुद को मश्ग़ूल न करो	३२८
दुनिया की चीज़ें ख़त्म होने वाली हैं	३३०

उनवान	सफ़हा नंबर
८ आख़िरत के बारे में	
मुहर्रमुल हराम	
क़यामत में मुजरिमों की हालत	२
मुर्दे की हालत	४
मुसलमानों से जन्नत का वादा	६
क़ब्र के तीन सवाल	८
जहन्नम में हमेशा का अज़ाब	१०
मोमिन के लिये क़यामत के दिन की मिक़दार	१२
परहेज़गार लोगों के लिये खुशख़बरी	१४
सब से पहला सवाल	१६
जन्नत के फल	१८
रूस्वाई का अज़ाब	२०
क़यामत का ज़लज़ला	२२
जन्नतियों का हाल	२४
अहले जन्नत की नेअ्मत	२६
जहन्नम की गर्मी	२८
अहले जहन्नम की तमन्ना	३०
अहले जन्नत को खुश्ख़बरी	३२
क़यामत का होलनाक मंज़र	३४
जहन्नम के हथौड़े का वज़न	३६
अहले जन्नत का शुक्र अदा करना	३८

उनवान	सफ़हा नंबर
पुल सिरात से अल्लाह की रहमत से नजात	४०
अहले जहन्नम की फरियाद	४२
अदना दर्जे का जन्नती	४४
अहले जन्नत के लिये हूरें	४६
जहन्नम को क़ैद कर के पेश किया जाएगा	४८
अहले जहन्नम पर दर्दनाक अज़ाब	५०
क़ब्र से इन्सान किस हाल में उठेगा	५२
अहले जन्नत के उम्दा फर्श	५४
दोज़ख की गर्मी और बदबू की शिद्दत	५६
जहन्नम का गुस्सा	५८
जहन्नम की वादी	६०
सफरुल मुज़फ्फर	
क़यामत के दिन मुर्दों को ज़िन्दा किया जाएगा	६४
क़ब्र में ही ठिकाने का फैसला	६६
इन्साफ का तराज़ू	६८
जन्नत की इमारत	७०
मरने के बाद ज़िन्दा होना	७२
क़ब्र क्या कहती है	७४
जन्नत की सिफात	७६
आदिल हुकमराँ का हाल	७८
अल्लाह के वली की कामयाबी	८०

उनावीन	सफ़्हा नंबर
दोज़ख के लिबास की गर्मी	८२
अच्छे लोग कामयाब होंगे	८४
इब्लीस भी रहमत की उम्मीद करने लगेगा	८६
नेक लोग जन्नत में रहेंगे	८८
अहले जहन्नम के जिस्म की हालत	९०
अहले जन्नत का इस्तिक़बाल	९२
जहन्नम में आग कहाँ तक जलाएगी	९४
क़यामत के दिन मुन्किरों का मातम	९६
काफिर के लिये पचास हज़ार साल की क़यामत	९८
जन्नत के बाला ख़ाने किस के लिये ?	१००
दुनिया की आग जहन्नम की आग से डरती है	१०२
अहले ईमान का जन्नत में दाख़िला	१०४
जहन्नम का कुँवां	१०६
नेक आमाल का बदला जन्नत है	१०८
जन्नत के परिन्दे	११०
फैसले का दिन मुतअय्यन है	११२
ज़न्जीर की लम्बाई	११४
अहले जन्नत की बात चीत	११६
चालीस साल तक अज़ाब	११८
जन्नतियों को ख़ुशख़बरी	१२०
दाढ़ और चमड़े की मोटाई	१२२

उनावीन	सफ़्हा नंबर
रबीउल अव्वल	
क़यामत के दिन आमाल का बदला मिलेगा	१२६
जन्नती का ताज	१२८
मुत्तक़ी और परहेज़गारों का इनाम	१३०
दोज़ख की गहराई	१३२
इन्सान व जिन्नात पर काफिरों का गुस्सा	१३४
जन्नती अल्लाह का दीदार करेंगे	१३६
अहले जन्नत से अल्लाह की दोस्ती	१३८
दोज़खियों का सब से हलका अज़ाब	१४०
काफिर लोग अज़ाब की तसदीक़ करेंगे	१४२
दोज़ख का दरख़्त	१४४
जन्नत में कौन जाएगा	१४६
कम अज़ाब वाला दोज़खी	१४८
क़यामत का होलनाक मन्ज़र	१५०
क़यामत के दिन के सवालात	१५२
मुनाफिक़ और काफिर का ठिकाना जहन्नम है	१५४
जन्नत में सोने चाँदी के बाग़	१५६
क़यामत के दिन आसमान का फटना	१५८
कम दर्जे वाले जन्नती का इनाम	१६०
क़यामत का दिन बच्चों को बूढ़ा कर देगा	१६२
हूर की ख़ूबसूरती	१६४

उनवान	सफ़्हा नंबर

उनवान	सफ़्हा नंबर
ज़िल क़ादा	

उनावीन	सफ़्हा नंबर
	१२२

उनावीन	सफ़्हा नंबर
रबीउल अव्वल	
	१६४